स्वान का रास्ता

खोए हुए समय की खोज में - खंड 1

मार्सेल प्राउस्ट

मूल शीर्षक:
स्वान का रास्ता
अतीत की यादें - खंड I

अनुवादक: चार्ल्स केनेथ स्कॉट मोनक्रिफ़
चैटो एंड विंडस, लंदन, 1922

Table of Contents

समर्पण
अनुवादक का समर्पण
प्रस्ताव
कॉम्ब्रे
स्वान इन लव
जगह के नाम

समर्पण

इन श्रीमान के लिए।
गैस्टन कैलमेट
गहरी और स्नेहपूर्ण कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में
मार्सेल प्रॉस्ट

अनुवादक का समर्पण

ई. जे. सी. को

यहाँ, ग्रीष्म ऋतु ठहरी हुई है, मैं मंडराता रहता हूँ जबकि मुझे ग्रीष्म ऋतु के साथ चले जाना चाहिए था... जहाँ केवल लंदन ही आकाश को रोशन करता है, मैं वहाँ जाता हूँ, और मेरे साथ "स्वान" भी यात्रा करता है।

जिसके पन्नों का नीरस, श्रमसाध्य ताना-बाना, काम के समय के ताने-बाने को ढकता है, तुम्हारी छत के नीचे आग से जगमगाती रातों और तुम्हारे नींबू के पेड़ों के नीचे धूप से जगमगाते दिनों को।

जबकि, एक साथ या बारी-बारी से, तीखी जुबान वाले लेकिन चिकने, मक्खन लगे चाकुओं की तरह, हमने जानबूझकर बेफिक्री से अपने निजी जीवन की समस्याओं को सुलझाया;

वे छोटी-छोटी समस्याएं, घनी फिर भी स्पष्ट, चीनी शिल्प द्वारा बनाई गई हाथीदांत की गेंदों की तरह, छिद्रित (जहां प्रत्येक छेद ने एक आंसू को सोख लिया) और गोल (जहां सभा हँसी)।

क्या हमारी सारी हंसी ने दर्द को दबा दिया, क्या हमारी स्पष्टवादिता ने दिखावे का ढोंग किया? डरो मत। मैं फिर कभी नहीं आऊंगा तुम्हें उदासीनता से चिढ़ाने के लिए।

फिर भी मैं ओकहम के शिखर को निहार सकता हूँ जहाँ लंदन के सूरज

पानी की तरह फीके होकर डूबते हैं, और सपने देख सकता हूँ, जबकि लाल आग की लहरें कैटमोस घाटी पर धुआँ छोड़ते हुए बहती हैं।
सी. के. एस. एम. माइकलमास 1921

प्रस्ताव

बहुत समय तक मैं जल्दी सो जाता था। कभी-कभी, जब मैं मोमबत्ती बुझा देता था, तो मेरी आँखें इतनी जल्दी बंद हो जाती थीं कि मुझे "मैं सोने जा रहा हूँ" कहने का भी समय नहीं मिलता था। और आधे घंटे बाद, सोने का ख्याल ही मुझे जगा देता था; मैं उस किताब को रखने की कोशिश करता था, जो मुझे लगता था कि अभी भी मेरे हाथों में है, और रोशनी बुझाने की कोशिश करता था; सोते समय मैं लगातार उस किताब के बारे में सोचता रहता था जो मैं अभी पढ़ रहा था, लेकिन मेरे विचार अपनी ही एक अलग राह पर चल पड़ते थे, यहाँ तक कि मुझे ऐसा लगने लगता था मानो मैं सचमुच अपनी किताब का विषय बन गया हूँ: एक गिरजाघर, एक चौकड़ी, फ्रांस्वा प्रथम और चार्ल्स पंचम के बीच की प्रतिद्वंद्विता। यह अनुभूति जागने के कुछ क्षणों बाद तक बनी रहती थी; यह मेरे दिमाग को परेशान नहीं करती थी, लेकिन यह मेरी आँखों पर परदे की तरह छाई रहती थी और उन्हें इस तथ्य को समझने से रोकती थी कि मोमबत्ती अब नहीं जल रही है। फिर यह समझ से बाहर लगने लगता था, जैसे पुनर्जन्म लेने वाली आत्मा के लिए पिछले जन्म के विचार होते हैं; मेरी पुस्तक का विषय मुझसे अलग हो जाएगा, जिससे मुझे यह चुनने की स्वतंत्रता मिल जाएगी कि मैं उसका हिस्सा बनूँ या नहीं; और उसी समय मेरी दृष्टि वापस आ जाएगी और मैं स्वयं को अंधकार की अवस्था में

पाकर आश्चर्यचकित हो जाऊँगा, जो आँखों के लिए सुखद और विश्रामकारी होगी, और शायद मेरे मन के लिए उससे भी अधिक, जिसे यह समझ से परे, बिना किसी कारण के, वास्तव में एक अंधकारमय विषय प्रतीत होगा।

मैं खुद से पूछता कि कितना समय हो रहा होगा; मुझे ट्रेनों की सीटी सुनाई दे रही थी, जो कभी पास तो कभी दूर जाती हुई, जंगल में किसी पक्षी की चहचहाहट की तरह दूरी को दर्शाती हुई, मुझे उस सुनसान ग्रामीण इलाके का नजारा दिखा रही थी जिससे होकर कोई यात्री निकटतम स्टेशन की ओर तेजी से बढ़ रहा होगा: वह रास्ता जो उसने तय किया था, एक अनजान जगह पर होने के उत्साह, कुछ अनोखे काम करने की उत्सुकता, बातचीत के आखिरी शब्द, एक अपरिचित दीपक के नीचे दिए गए विदाई के शब्द जो रात के सन्नाटे में अभी भी उसके कानों में गूंज रहे थे; और एक बार फिर घर लौटने की सुखद संभावना से उसकी यादों में हमेशा के लिए बस गया था।

मैं अपने गालों को तकिए के मुलायम, कोमल गालों पर धीरे से टिका देता, जो बचपन के गालों की तरह गोल-मटोल और खिले हुए थे। या फिर मैं घड़ी देखने के लिए माचिस जलाता। लगभग आधी रात हो चुकी थी। वह समय जब एक बीमार व्यक्ति, जिसे यात्रा पर निकलना पड़ा हो और किसी अनजान होटल में सोना पड़ा हो, बीमारी के कारण अचानक जागता है और राहत की सांस लेता है जब उसे अपने शयनकक्ष के दरवाजे के नीचे से सूरज की रोशनी की एक किरण दिखाई देती है। ओह, कितनी खुशी की बात है! सुबह हो गई है। नौकर एक मिनट में आ जाएंगे: वह घंटी बजा सकता है, और कोई उसकी देखभाल करने आ जाएगा। आराम मिलने की उम्मीद उसे दर्द सहने की शक्ति देती है। उसे यकीन है कि उसने कदमों की आहट सुनी: वे पास आती हैं, और फिर दूर चली

जाती हैं। उसके दरवाजे के नीचे से आती रोशनी बुझ जाती है। आधी रात हो चुकी है; किसी ने गैस बंद कर दी है; आखिरी नौकर भी सोने चला गया है, और उसे पूरी रात दर्द में तड़पते रहना होगा, उसकी मदद करने वाला कोई नहीं है।

मैं सो जाता था, और अक्सर थोड़ी देर के लिए ही जागता था, बस इतनी देर के लिए कि दीवारों की नियमित चरमराहट सुन सकूँ, या अपनी आँखें खोलकर अँधेरे के बदलते रंगों को देख सकूँ, और पल भर के लिए उस नींद को महसूस कर सकूँ जो फर्नीचर, कमरे और पूरे परिवेश पर छाई हुई थी, जिसका मैं एक नगण्य हिस्सा था और जिसकी बेहोशी में मैं बहुत जल्द वापस लौट जाता था। या शायद, सोते-सोते मैं बिना किसी प्रयास के अपने जीवन के एक पुराने दौर में लौट गया था, जिसे मैं अब हमेशा के लिए पीछे छोड़ चुका था; और अपने बचपन के किसी डर के वश में आ गया था, जैसे कि मेरे परदादा द्वारा मेरे बालों को खींचने का पुराना डर, जो उस दिन पूरी तरह से दूर हो गया था - मेरे लिए एक नए युग की शुरुआत - जब मेरे बाल आखिरकार काट दिए गए थे। मैं नींद में उस घटना को भूल गया था; जैसे ही मैं अपने परदादा की उंगलियों से बचने के लिए खुद को जगाने में कामयाब हुआ, मुझे वह घटना तुरंत याद आ गई; फिर भी, एहतियात के तौर पर, मैं सपनों की दुनिया में लौटने से पहले अपना पूरा सिर तकिए में दबा लेता था।

कभी-कभी, जैसे आदम की पसली से हव्वा की रचना हुई थी, वैसे ही सोते समय मेरे अंगों की स्थिति में आए किसी तनाव से एक स्त्री का जन्म होता था। मेरी उस इच्छा से, जिसे मैं तृप्त करने ही वाला था, वह स्त्री ही थी, जैसा मैंने कल्पना की थी, जिसने मुझे वह तृप्ति प्रदान की। मेरा शरीर, इस बात से अवगत कि उसकी गर्माहट उसमें समा रही है, उसके साथ एक होने का प्रयास करता और मैं जाग जाता। शेष मनुष्य

जाति उस स्त्री की तुलना में बहुत दूर प्रतीत होती, जिसका साथ मैंने कुछ क्षण पहले ही छोड़ा था: मेरा गाल अभी भी उसके चुंबन से गर्म था, मेरा शरीर उसके भार से झुका हुआ था। यदि, जैसा कि कभी-कभी होता था, वह किसी ऐसी स्त्री के रूप में दिखाई देती जिसे मैं जागते समय जानता था, तो मैं पूरी तरह से उसकी खोज में लीन हो जाता, जैसे लोग किसी ऐसे शहर को अपनी आँखों से देखने के लिए यात्रा पर निकलते हैं जिसे वे हमेशा से देखना चाहते थे, और कल्पना करते हैं कि वे वास्तविकता में उस चीज़ का स्वाद चख सकते हैं जिसने उनकी कल्पना को मोहित कर लिया है। और फिर, धीरे-धीरे, उसकी स्मृति घुल जाती और लुप्त हो जाती, जब तक कि मैं अपने स्वप्न की उस कन्या को पूरी तरह से भूल नहीं जाता।

जब कोई व्यक्ति सो रहा होता है, तो उसके चारों ओर घंटों की श्रृंखला, वर्षों का क्रम और आकाशीय पिंडों का क्रम एक घेरे में होता है। सहज रूप से, जागने पर वह इन पर नज़र डालता है और पल भर में पृथ्वी की सतह पर अपनी स्थिति और नींद के दौरान बीते समय का अनुमान लगा लेता है; लेकिन यह क्रमबद्ध प्रक्रिया अक्सर गड़बड़ा जाती है और अपना क्रम तोड़ देती है। मान लीजिए कि सुबह के समय, अनिद्रा भरी रात के बाद, जब वह पढ़ रहा होता है, तो उसे नींद आ जाती है, उस स्थिति से बिल्कुल अलग जिसमें वह आमतौर पर सोता है। उसे केवल अपना हाथ उठाकर सूर्य को रोकना होता है और उसे वापस उसी दिशा में मोड़ना होता है, और जागने के क्षण में, उसे समय का कोई अंदाजा नहीं होगा, बल्कि वह यह निष्कर्ष निकालेगा कि वह अभी-अभी बिस्तर पर गया था। या मान लीजिए कि वह किसी और भी असामान्य स्थिति में ऊंघने लगता है; मान लीजिए, रात के खाने के बाद एक आरामकुर्सी पर बैठे हों: तब दुनिया अपनी कक्षा से उलट-पुलट हो जाएगी, जादुई कुर्सी उन्हें समय

और स्थान के पार पूरी गति से ले जाएगी, और जब वे फिर से अपनी आँखें खोलेंगे तो उन्हें लगेगा कि वे महीनों पहले किसी दूर देश में सो गए थे। लेकिन मेरे लिए इतना ही काफी था कि अपने बिस्तर पर मेरी नींद इतनी गहरी हो कि मेरी चेतना पूरी तरह से शिथिल हो जाए; क्योंकि तब मैं उस जगह का सारा होश खो देता था जहाँ मैं सोया था, और जब मैं आधी रात को जागा, तो मुझे पता नहीं था कि मैं कहाँ हूँ, और पहले तो मुझे यह भी यकीन नहीं था कि मैं कौन हूँ; मेरे पास अस्तित्व की केवल सबसे बुनियादी समझ थी, जैसी किसी जानवर की चेतना की गहराई में छिपी और झिलमिलाती रहती है; मैं गुफा में रहने वाले से भी अधिक मानवीय गुणों से रहित था; लेकिन फिर स्मृति, उस स्थान की नहीं जहाँ मैं था, बल्कि उन विभिन्न अन्य स्थानों की जहाँ मैं रह चुका था, और जहाँ मैं अब भी हो सकता था, स्वर्ग से नीचे डाली गई रस्सी की तरह आएगी और मुझे अस्तित्वहीनता की खाई से ऊपर खींच लाएगी, जिससे मैं स्वयं कभी नहीं निकल सकता था: एक पल में मैं सभ्यता की सदियों को पार कर जाऊंगा और तेल के दीयों की एक अर्ध-कल्पित श्रृंखला से, जिसके बाद कॉलर नीचे किए हुए कमीज आते हैं, धीरे-धीरे अपने अहंकार के घटकों को जोड़ लूंगा।

शायद हमारे आस-पास की चीज़ों की गतिहीनता उन पर हमारी इस दृढ़ धारणा के कारण थोपी गई है कि वे स्वयं हैं, और कुछ नहीं, और उनके बारे में हमारी धारणाओं की गतिहीनता के कारण भी। क्योंकि ऐसा हमेशा होता था कि जब मैं इस तरह जागता था, और मेरा मन यह पता लगाने की असफल कोशिश करता था कि मैं कहाँ हूँ, तो मेरे चारों ओर सब कुछ अँधेरे में गतिमान होता था: वस्तुएँ, स्थान, वर्ष। मेरा शरीर, नींद से इतना भारी कि हिल भी नहीं सकता था, अपनी थकान से उत्पन्न आकार को अपने विभिन्न अंगों की दिशा के रूप में समझने का प्रयास करता था,

ताकि दीवार कहाँ है और फर्नीचर कहाँ रखा है, इससे उस घर का नाम पता चल सके जिसमें वह रह रहा होगा। उसकी स्मृति, उसकी पसलियों, घुटनों और कंधों की मिली-जुली स्मृति, उसे उन कमरों की एक पूरी श्रृंखला दिखाती थी जिनमें वह कभी न कभी सोया था; जबकि अदृश्य दीवारें बदलती रहती थीं, स्वयं को उस कमरे के आकार में ढालती रहती थीं जिसे वह याद करता था, अँधेरे में पागलों की तरह घूमती रहती थीं। और इससे पहले कि मेरा दिमाग, घटनाओं के समय और उनके स्वरूप पर विचार करते हुए, कमरे की पहचान करने के लिए पर्याप्त छापें एकत्र कर पाता, मेरा शरीर, एक-एक करके हर कमरे से याद कर लेता कि बिस्तर कैसा था, दरवाजे कहाँ थे, खिड़कियों से दिन का प्रकाश कैसे आता था, क्या बाहर कोई रास्ता था, सोते समय मेरे मन में क्या था और जागने पर मुझे वहाँ क्या मिला। उदाहरण के लिए, मेरे शरीर के नीचे का कड़ा हिस्सा, अपनी स्थिति को ठीक करने की कोशिश में, खुद को दीवार की ओर मुंह करके, चंदवा वाले एक बड़े बिस्तर पर लेटा हुआ कल्पना करता; और तुरंत मैं खुद से कहता, "अरे, मैं तो सो ही गया था, और माँ तो शुभ रात्रि कहने भी नहीं आई!" क्योंकि मैं अपने दादाजी के साथ गाँव में था, जिनका कई साल पहले निधन हो गया था। और मेरा शरीर, जिस तरफ मैं लेटा हुआ था, अतीत की उस छाप को वफादारी से संजोए हुए था जिसे मेरा मन कभी नहीं भूल सकता था, मेरी आँखों के सामने बोहेमियन शैली के कांच के कटोरे में टिमटिमाती रात की रोशनी की लौ को वापस ले आया, जो एक कलश के आकार का था और छत से जंजीरों से लटका हुआ था, और कॉम्ब्रे में मेरे बेडरूम में सिएना संगमरमर की चिमनी, मेरी परदादी के घर में, उन दूर के दिनों में, जो जागने के क्षण में स्पष्ट रूप से परिभाषित किए बिना मौजूद प्रतीत हो रहे थे, लेकिन थोड़ी देर में जब मैं पूरी तरह से जाग जाऊंगा तो और अधिक स्पष्ट हो जाएंगे।

फिर एक नई स्थिति की याद आती; दीवार दूसरी दिशा में खिसक गई; मैं श्रीमती डी सेंट-लूप के देहाती घर में अपने कमरे में था; हे भगवान, दस बज गए होंगे, उन्होंने खाना खत्म कर लिया होगा! मैं शायद ज्यादा सो गया था, उस छोटी सी झपकी में जो मैं श्रीमती डी सेंट-लूप के साथ सैर से लौटने के बाद शाम के कपड़े पहनने से पहले हमेशा लेता हूँ। कॉम्ब्रे के दिनों को अब कई साल बीत चुके हैं, जब लंबी और देर रात की सैर से लौटने पर भी मैं अपने शयनकक्ष की खिड़की के शीशों में डूबते सूरज की चमकती रोशनी देख पाता था। अब श्रीमती डी सेंट-लूप के साथ टैन्सनविले में जीवन बिल्कुल अलग है, और शाम को ही सैर करने से, चांदनी रात में उन गलियों में घूमने से, जहाँ मैं बचपन में धूप में खेला करता था, मुझे एक अलग ही तरह का आनंद मिलता है; जबकि वह शयनकक्ष, जिसमें मैं रात के खाने के लिए तैयार होने के बजाय अभी सो जाऊंगा, दूर से मैं उसे देख सकता हूं, जब हम अपनी सैर से लौट रहे होते हैं, तो उसकी दीपक खिड़की से चमकती हुई, रात में एक अकेली रोशनी की तरह।

स्मृति के ये बदलते और उलझे हुए झोंके कुछ ही सेकंड से ज़्यादा नहीं टिकते थे; अक्सर ऐसा होता था कि, अपनी स्थिति को लेकर अनिश्चितता के इस दौर में, मैं उस अनिश्चितता से जुड़े क्रमिक सिद्धांतों में अंतर नहीं कर पाता था, ठीक वैसे ही जैसे हम किसी दौड़ते हुए घोड़े को देखते समय उसके शरीर की क्रमिक स्थितियों को बायोस्कोप पर अलग-अलग नहीं देख पाते। लेकिन मैंने अपने जीवनकाल में जिन कमरों में सोया था, उनमें से पहले एक और फिर दूसरा कमरा देखा था, और अंत में मैं अपने जागृत स्वप्न के लंबे क्रम में उन सभी कमरों में फिर से जाता था: सर्दियों के कमरे, जहाँ बिस्तर पर जाते ही मैं अपना सिर एक घोंसले में गाड़ देता था, जो विभिन्न सामग्रियों से बना होता था - मेरे तकिए का कोना, मेरे

कंबल का ऊपरी हिस्सा, शॉल का एक टुकड़ा, मेरे बिस्तर का किनारा और एक शाम के अखबार की प्रति - इन सभी चीजों को मैं पक्षियों के घोंसले बनाने के असीम धैर्य के साथ एक साथ जोड़कर एक संपूर्ण रूप देता था; ऐसे कमरे जहाँ कड़ाके की ठंड में, मुझे बाहरी दुनिया से अलग-थलग रहने की संतुष्टि का अनुभव होता था (जैसे समुद्री अबाबील जो एक अंधेरी सुरंग के अंत में घोंसला बनाती है और आसपास की मिट्टी से गर्म रहती है), और जहाँ, रात भर आग जलती रहती थी, मैं मानो गर्म और सुगंधित हवा के एक बड़े लबादे में लिपटा हुआ सोता था, जो फिर से लपटों में जलने वाली लकड़ियों की चमक से जगमगाती थी: एक प्रकार के बिना दीवारों वाले आले में, कमरे के हृदय से खोदी गई गर्मी की एक गुफा, गर्मी का एक क्षेत्र जिसकी सीमाएँ लगातार तापमान में बदलती रहती थीं क्योंकि हवा के झोंके कमरे के कोनों से, या खिड़की के पास या चिमनी से दूर के हिस्सों से, जो इसलिए ठंडे रहते थे, मेरे चेहरे पर ताज़ा प्रहार करते थे—या गर्मियों के कमरे, जहाँ मुझे गर्म शाम का हिस्सा होने का आनंद मिलता था, जहाँ आधे खुले शटरों पर पड़ने वाली चाँदनी मेरे बिस्तर के चरणों तक अपनी जादुई सीढ़ी बना देती थी; जहां मैं सो जाता था, मानो खुली हवा में, एक चिड़िया की तरह जिसे हवा सूरज की किरण के केंद्र में स्थिर रखती है—या कभी-कभी लुई सोलहवीं शताब्दी का कमरा, इतना खुशनुमा कि मैं उसमें अपनी पहली रात भी कभी वास्तव में दुखी महसूस नहीं कर पाता था: वह कमरा जहां छत को हल्के से सहारा देने वाले पतले खंभे बड़ी ही खूबसूरती से अलग हो जाते थे, यह दिखाने के लिए कि बिस्तर कहां है और उसे अलग रखने के लिए; कभी-कभी फिर से वह छोटा कमरा जिसकी ऊंची छत दो अलग-अलग मंजिलों से पिरामिड के आकार में खोखली की गई थी, और आंशिक रूप से महोगनी की दीवारों से बनी थी, जिसमें पहले ही पल से मेरा मन फूलों वाली घासों

की अपरिचित सुगंध से मदहोश हो जाता था, बैंगनी पर्दों की शत्रुता और उस घड़ी की उद्दंड उदासीनता से आश्वस्त हो जाता था जो अपनी पूरी आवाज में ऐसे बजती रहती थी मानो मैं वहां मौजूद ही न हूँ; कमरे के एक कोने में खड़ा एक विचित्र और निर्दयी चौकोर पैरों वाला दर्पण, मेरे सामान्य दृष्टि क्षेत्र के शांत परिवेश में एक ऐसी जगह बना रहा था जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी: वह कमरा जिसमें मेरा मन, घंटों तक खुद को अपनी सीमाओं से बाहर निकलने, ऊपर की ओर फैलने और कमरे का सटीक आकार लेने के लिए मजबूर करते हुए, उस विशालकाय फ़नल के शिखर तक पहुँचने के लिए, कई बेचैन रातें गुज़ार चुका था, जब मेरा शरीर बिस्तर पर लेटा रहता था, मेरी आँखें ऊपर की ओर टकटकी लगाए रहती थीं, मेरे कान तनाव में रहते थे, मेरी नाक बेचैनी से सूंघती रहती थी और मेरा दिल धड़कता रहता था; जब तक कि आदत ने पर्दों का रंग नहीं बदल दिया, घड़ी को शांत नहीं कर दिया, शीशे के क्रूर, तिरछे चेहरे पर दया का भाव नहीं ला दिया, फूलों वाली घासों की सुगंध को छिपा नहीं दिया या पूरी तरह से गायब नहीं कर दिया, और छत की स्पष्ट ऊँचाई को कम नहीं कर दिया। आदत! वह कुशल लेकिन धीमी प्रबंधक जो अपने अस्थायी प्रबंधों से हफ्तों तक मन को यातना देकर शुरुआत करती है; इन सबके बावजूद, मन को इन्हें खोजने का सौभाग्य प्राप्त होता है, क्योंकि रीति-रिवाज की सहायता के बिना वह अपने स्वयं के प्रयासों से किसी भी कमरे को रहने योग्य बनाने में कभी सफल नहीं हो पाता।

अब मैं पूरी तरह जाग चुका था; मेरा शरीर आखिरी बार करवट बदल चुका था और होश में आने के लिए मेरे आस-पास की सभी चीज़ें स्थिर हो गई थीं, मुझे मेरे पलंग के नीचे, मेरे शयनकक्ष में लिटा दिया था, और धुंधली रोशनी में मेरी दराजों वाली अलमारी, मेरी लेखन-मेज, मेरी चिमनी, सड़क की ओर खुलने वाली खिड़की और दोनों दरवाज़ों को लगभग उनकी सही

जगह पर स्थिर कर दिया था। लेकिन यह जानकर कोई फायदा नहीं था कि मैं उन घरों में से किसी में भी नहीं था, जिन्हें जागने के मूर्खतापूर्ण क्षण में, अगर मैंने ठीक से नहीं देखा था, तो भी मैं उनकी मौजूदगी पर विश्वास कर सकता था; क्योंकि अब मेरी यादें चलने लगी थीं; आम तौर पर मैं तुरंत सोने की कोशिश नहीं करता था, बल्कि रात का ज़्यादातर हिस्सा कॉम्ब्रे में अपनी बड़ी चाची के साथ बिताए पुराने दिनों, बालबेक, पेरिस, डोनसिएरेस, वेनिस और बाकी जगहों की यादों में बिताता था; उन सभी जगहों और लोगों को याद करता था जिन्हें मैं जानता था, जो मैंने वास्तव में देखा था, और जो दूसरों ने मुझे बताया था।

कॉम्ब्रे में, हर दोपहर ढलते ही, सोने के समय से बहुत पहले, जब मुझे अपनी माँ और दादी से दूर, बिना सोए लेटे रहना पड़ता था, मेरा शयनकक्ष ही वह केंद्र बन जाता था जहाँ मेरे उदास और चिंता भरे विचार केंद्रित होते थे। किसी ने मुझे शाम के समय, जब मैं असामान्य रूप से दुखी महसूस करता था, मेरा ध्यान भटकाने के लिए एक जादुई लालटेन देने का सुखद विचार किया था, जिसे हम रात के खाने का इंतज़ार करते समय मेरे लैंप के ऊपर रखते थे: गोथिक काल के कुशल कारीगरों और चित्रकारों की तरह, यह मेरी दीवारों के धुंधलेपन की जगह एक अगोचर इंद्रधनुषी चमक, अनेक रंगों की अलौकिक घटना, को बिखेर देता था, जिसमें कहानियाँ चित्रित होती थीं, मानो किसी बदलती और क्षणिक खिड़की पर। लेकिन मेरे दुख और भी बढ़ गए, क्योंकि प्रकाश के इस बदलाव ने, जैसा कि कोई और चीज़ नहीं कर सकती थी, मेरे कमरे की उस सामान्य छवि को नष्ट कर दिया, जिसके कारण कमरा, उसमें सोने की पीड़ा को छोड़कर, काफी सहनीय हो गया था। फिलहाल मैं इसे पहचान नहीं पा रहा था, और मैं बेचैन हो गया, मानो मैं किसी होटल या सुसज्जित आवास के कमरे में हूँ, एक ऐसी जगह पर जहाँ मैं पहली बार

ट्रेन से पहुँचा हूँ।

एक कुख्यात योजना में डूबा हुआ गोलो, लड़खड़ाती चाल से घोड़े पर सवार होकर, एक सुविधाजनक पहाड़ी की ढलान को गहरे हरे रंग में रंगे छोटे से तीन कोनों वाले जंगल से निकला और तेज़ी से गरीब जेनेवीव डी ब्राबेंट के महल की ओर बढ़ा। यह महल एक घुमावदार रेखा से कटा हुआ था, जो वास्तव में स्लाइड में लगे पारदर्शी अंडाकारों में से एक की परिधि थी, जिन्हें लालटेन के एक खांचे से अंदर धकेला गया था। यह महल का केवल एक हिस्सा था, और इसके सामने एक बंजर भूमि फैली हुई थी, जिस पर जेनेवीव नीली कमरबंद पहने, चिंतन में डूबी खड़ी थी। महल और बंजर भूमि पीले रंग के थे, लेकिन मैं उन्हें देखे बिना ही उनका रंग बता सकता था, क्योंकि स्लाइड के दिखाई देने से पहले ही ब्राबेंट का पुराना, सुरीला नाम मुझे एक स्पष्ट संकेत दे चुका था। गोलो एक पल के लिए रुका और मेरी परदादी द्वारा पढ़े गए छोटे से भाषण को उदास मन से सुना, जिसे वह पूरी तरह समझ गया था, क्योंकि उसने अपने हावभाव को विनम्रता और गरिमा के साथ पाठ में दिए गए निर्देशों के अनुरूप ढाल लिया; फिर वह उसी धीमी चाल से आगे बढ़ गया। और कोई भी उसकी धीमी गति को रोक नहीं सका। अगर लालटेन को हिलाया जाता तो मैं अब भी गोलो के घोड़े को खिड़की के पर्दों के पार बढ़ते हुए देख सकता था, जो अपनी वक्रता के साथ फैलते और तहों में समाते जा रहे थे। गोलो का शरीर, जो उसके घोड़े के समान ही अलौकिक पदार्थ से बना था, सभी भौतिक बाधाओं को पार कर लेता था—हर उस चीज़ को जो उसके रास्ते में रुकावट लगती थी—प्रत्येक को एक कंकाल की तरह ग्रहण करके उसे अपने भीतर समाहित कर लेता था: उदाहरण के लिए, दरवाज़े का हैंडल, जिस पर वह तुरंत ढलकर अजेय रूप से उसका लाल लबादा या उसका पीला चेहरा तैरता रहता था, कभी अपनी गरिमा या उदासी नहीं खोता था,

और इस रूपांतरण से कभी कोई परेशानी नहीं दिखाता था।
और सचमुच, मुझे इन चमकदार आकृतियों में बहुत आकर्षण मिला, जो मानो सीधे मेरोविंगियन युग से आई हों और मेरे चारों ओर उस प्राचीन इतिहास की झलक बिखेर रही हों। लेकिन मैं उस बेचैनी को शब्दों में बयान नहीं कर सकता जो मुझे उस रहस्य और सुंदरता के ऐसे अतिक्रमण से हुई, जिसे मैंने अपने व्यक्तित्व से इस कदर भर दिया था कि मैं कमरे को अपने आप से ज़्यादा कुछ नहीं समझता था। रिवाज़ का सुन्न कर देने वाला असर खत्म होते ही, मैं बहुत उदास बातें सोचने और महसूस करने लगता। मेरे कमरे का दरवाज़े का हैंडल, जो मेरे लिए दुनिया के बाकी सभी दरवाज़ों के हैंडलों से अलग था, क्योंकि ऐसा लगता था कि वह अपने आप खुल जाता है, बिना मुझे उसे घुमाए, उसका इस्तेमाल इतना सहज हो गया था; और देखो, अब वह गोलो के लिए एक आकाशीय पिंड बन गया था। और जैसे ही खाने की घंटी बजती, मैं दौड़कर खाने के कमरे में जाता, जहाँ बड़ा सा लटका हुआ दीपक, गोलो और ब्लूबीयर्ड से अनजान, लेकिन मेरे परिवार और गोमांस के स्ट्यूड से भली-भांति परिचित, हर शाम की तरह ही रोशनी बिखेरता था; और मैं अपनी माँ की बाहों में गिर जाता, जिनके लिए जेनेवीव डी ब्राबेंट की विपत्तियों ने मुझे और भी प्रिय बना दिया था, ठीक उसी तरह जैसे गोलो के अपराधों ने मुझे अपने अंतरात्मा की सामान्य से कहीं अधिक सावधानीपूर्वक जांच करने के लिए प्रेरित किया था।
लेकिन अफसोस, रात के खाने के बाद मुझे माँ को छोड़कर जाना पड़ता था, जो बाकी लोगों से बातें करती रहती थीं। अगर मौसम अच्छा होता तो मैं बगीचे में होती, और जब बारिश होती तो उस छोटे से बैठक कमरे में, जहाँ सब लोग शरण लेते थे। मेरी दादी को छोड़कर, जो मानती थीं कि "गाँव में घर के अंदर बंद रहना दुख की बात है," और सबसे ज़्यादा बारिश

वाले दिनों में भी मेरे पिताजी से घंटों बातें करती रहती थीं, क्योंकि वे मुझे बाहर रहने देने के बजाय किताब लेकर मेरे कमरे में भेज देते थे। वे उदास होकर कहतीं, "यह उसे मज़बूत और चुस्त बनाने का तरीका नहीं है, खासकर इस छोटे बच्चे को, जिसे हर तरह की ताकत और हिम्मत की ज़रूरत है।" मेरे पिताजी कंधे उचकाकर बैरोमीटर देखते रहते थे, क्योंकि उन्हें मौसम विज्ञान में रुचि थी, जबकि मेरी माँ उन्हें परेशान न करने के लिए चुपचाप बैठी रहतीं और उन्हें प्यार भरी नज़रों से देखती रहतीं, लेकिन ज़्यादा सख्ती से नहीं, क्योंकि वे उनके तीक्ष्ण बुद्धि के रहस्यों को जानने की कोशिश नहीं करती थीं। लेकिन मेरी दादी, हर मौसम में, यहाँ तक कि जब मूसलाधार बारिश हो रही होती और फ्रांस्वा कीमती बेंत की कुर्सियों को भीगने से बचाने के लिए जल्दी से घर के अंदर ले आई होती, तब भी आप उन्हें तूफान से झुलसे सुनसान बगीचे में टहलते हुए देखते, अपने बिखरे हुए भूरे बालों को पीछे करते हुए ताकि उनकी भौंहें हवा और बारिश की जीवनदायिनी हवाओं को सोख सकें। वह कहतीं, "आखिरकार चैन की साँस ले पा रही हूँ!" और वह भीगे रास्तों पर इधर-उधर दौड़ती रहती थी—जो उसे बहुत सीधे और समरूप लगते थे, क्योंकि नए माली में प्रकृति के प्रति कोई भावना नहीं थी, जिससे मेरे पिता सुबह से पूछते आ रहे थे कि क्या मौसम सुधरेगा—उसके तेज, झटकेदार छोटे कदम तूफान के नशे, स्वच्छता के दबाव, मेरी शिक्षा की मूर्खता और बगीचों की समरूपता के कारण उसकी आत्मा पर पड़े विभिन्न प्रभावों से नियंत्रित होते थे, न कि किसी चिंता से (क्योंकि यह उसके लिए बिल्कुल अज्ञात था) कि वह अपनी बैंगनी रंग की स्कर्ट को कीचड़ के धब्बों से बचाए, जिसके नीचे वह धीरे-धीरे इतनी गहराई में गायब हो जाती थी कि उसकी नौकरानी के लिए हमेशा एक नई समस्या खड़ी हो जाती थी और उसे नई निराशा से भर देती थी।

जब मेरी दादी रात के खाने के बाद टहलने निकलती थीं, तो एक बात उन्हें हमेशा घर वापस ले आती थी: वह यह थी कि (जब कभी चक्कर आने से उनकी चाल उन्हें पतंगे की तरह उस छोटे से कमरे में रखे लैंप के पास ले आती थी जहाँ ताश की मेज पर शराब रखी होती थी) मेरी बड़ी चाची उन्हें पुकारतीं: "बाथिल्डे! अंदर आओ और अपने पति को ब्रांडी पीने से रोको!" क्योंकि, उन्हें चिढ़ाने के लिए (उन्होंने मेरे पिता के परिवार में एक ऐसा अनोखा विचार ला दिया था कि हर कोई उसका मज़ाक उड़ाता था), मेरी बड़ी चाची मेरे दादाजी को, जिन्हें शराब पीने की मनाही थी, बस कुछ बूँदें पिला देती थीं। मेरी बेचारी दादी अंदर आतीं और अपने पति से ब्रांडी न चखने की भीख माँगतीं। और वह चिढ़ जाता और फिर भी अपनी कुछ बूँदें पी जाता, और वह उदास और निराश होकर फिर से बाहर चली जाती, लेकिन फिर भी मुस्कुराती रहती, क्योंकि वह इतनी विनम्र और इतनी प्यारी थी कि दूसरों के प्रति उसकी कोमलता, और स्वयं को और अपनी परेशानियों को लगातार अपने अधीन रखना, उसके चेहरे पर एक ऐसी मुस्कान में घुलमिल जाता था, जो अधिकांश मनुष्यों के चेहरों पर देखी जाने वाली मुस्कानों के विपरीत, उसमें व्यंग्य का कोई अंश नहीं होता था, सिवाय स्वयं के लिए, जबकि हम सभी के लिए उसकी आँखों से मानो चुंबन फूट पड़ते थे, जो अपने प्रियजनों को देखे बिना उन्हें भावुक स्पर्श देने की लालसा से भर नहीं सकती थी। मेरी परदादी द्वारा उस पर किए गए अत्याचार, मेरी दादी की व्यर्थ की विनतियों का दृश्य, उसकी कमजोरी का शुरू होने से पहले ही हार जाना, फिर भी मेरे दादाजी को शराब के गिलास से छुड़ाने का व्यर्थ प्रयास करना—ये सभी ऐसी बातें थीं, जिनसे बाद के वर्षों में कोई इतना अभ्यस्त हो जाता है कि उन पर मुस्कुराने लगता है, और अत्याचारी का पक्ष लेने लगता है। एक सुखद दृढ़ निश्चय जो मन को इस भ्रम में डाल देता है कि यह वास्तव में

कष्टदायक नहीं है; परन्तु उन दिनों इसने मुझे इतना भयभीत कर दिया था कि मैं अपनी परदादी को मार डालना चाहती थी। फिर भी, जैसे ही मैंने उनकी आवाज़ सुनी, "बाथिल्डे! अंदर आओ और अपने पति को ब्रांडी पीने से रोको!", कायरता में मैं तुरंत एक पुरुष बन गई, और वही किया जो हम सभी वयस्क पुरुष दुख और अन्याय का सामना करने पर करते हैं; मैंने उन्हें न देखना ही बेहतर समझा; मैं घर की छत पर भाग गई और स्कूल के कमरे के बगल में और छत के नीचे बने एक छोटे से कमरे में अकेले रोने लगी। उस कमरे में ऑरिस की जड़ की गंध आ रही थी, और साथ ही जंगली करंट की झाड़ी की भी खुशबू फैली हुई थी जो बाहरी दीवार के पत्थरों के बीच से चढ़कर आधी खुली खिड़की से अपनी एक फूलदार शाखा अंदर डाल रही थी। यह कमरा, जिसका इस्तेमाल एक खास और नीच उद्देश्य के लिए किया जाता था, लंबे समय तक मेरा शरणस्थल रहा। इस कमरे से दिन के उजाले में मैं रौसैनविले-ले-पिन के किले तक देख सकता था। शायद इसलिए क्योंकि यही एकमात्र कमरा था जिसका दरवाजा मुझे बंद करने की अनुमति थी, जब भी मुझे किसी काम के लिए पूरी तरह से एकांत की आवश्यकता होती थी; चाहे पढ़ना हो या सपने देखना, छुपकर आंसू बहाना हो या तीव्र इच्छाओं का आवेग आना। अफसोस! मुझे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि मेरी इच्छाशक्ति की कमी, मेरा नाजुक स्वास्थ्य और परिणामस्वरूप मेरे भविष्य को लेकर अनिश्चितता, मेरी दादी के मन पर उनके पति द्वारा नियमों के किसी भी छोटे-मोटे उल्लंघन से कहीं अधिक भारी पड़ रही थी, उन अंतहीन दोपहर और शाम की सैरों के दौरान, जिनमें हम अक्सर ऊपर-नीचे आते-जाते देखते थे, उनका सुंदर चेहरा, जिसके भूरे और झुर्रीदार गाल, उम्र के साथ शरद ऋतु में जोते हुए खेतों के लगभग बैंगनी रंग के हो गए थे, यदि वह बाहर टहल रही होतीं तो आधे उठे हुए घूंघट से

ढके होते थे, और उन पर या तो ठंड या किसी उदास चिंतन के कारण हमेशा अनैच्छिक आंसू के सूखते निशान रह जाते थे।

रात को जब मैं ऊपर जाता था, तो मुझे बस यही तसल्ली रहती थी कि बिस्तर पर लेटने के बाद माँ आकर मुझे चूमती थीं। लेकिन यह सुखद रात बहुत कम समय के लिए ही रहती थी: वह इतनी जल्दी नीचे चली जाती थीं कि जिस पल मैं उन्हें सीढ़ियाँ चढ़ते सुनता था, और फिर नीले मलमल की उनकी बगीचे वाली पोशाक की सरसराहट सुनता था, जिसमें से बुनी हुई भूसी की छोटी-छोटी झालरें लटक रही थीं, जो दोहरे दरवाजे वाले गलियारे में सरसरा रही थी, वह मेरे लिए सबसे गहरे दुख का क्षण था। मुझे वह सुखद रात इतनी प्यारी थी कि मैं इस हद तक पहुँच गया था कि मैं चाहता था कि वह जितनी देर से आए, उतनी देर से आए, ताकि मुझे कुछ देर का आराम मिल सके और माँ न आएँ। कभी-कभी जब वह मुझे चूमने के बाद जाने के लिए दरवाज़ा खोलती, तो मेरा मन करता कि उसे वापस बुला लूँ, उससे कहूँ, "मुझे एक बार फिर चूम लो," लेकिन मैं जानता था कि तब वह तुरंत नाराज़ हो जाएगी, क्योंकि मेरी दयनीय और बेचैनी को देखते हुए, शांति का यह चुंबन लेकर मेरे पास आने की उसकी यह रियायत मेरे पिता को हमेशा परेशान करती थी, जो ऐसी रस्मों को बेतुका मानते थे, और वह मुझे इस ज़रूरत, इस रिवाज से बाहर निकालने की कोशिश करना चाहती थी, जो इस बात से बिल्कुल अलग था कि जब वह दहलीज पार कर रही हो तो मैं उससे एक और चुंबन माँगने की आदत विकसित कर लूँ। और उसका नाराज़ चेहरा देखना उस सारी शांति को नष्ट कर देता था जो उसने मुझे कुछ क्षण पहले दी थी, जब उसने अपना प्रेम भरा चेहरा मेरे बिस्तर पर झुकाया था, और उसे मेरे सामने एक पवित्र रोटी की तरह बढ़ाया था, मानो किसी पवित्र भोज में, जिसमें मेरे होंठ उसकी वास्तविक उपस्थिति का गहरा अहसास पी सकें, और उसके साथ

ही सोने की शक्ति प्राप्त कर सकें। लेकिन वो शामें जब माँ मेरे कमरे में बहुत कम समय के लिए रुकती थीं, उन शामों की तुलना में कहीं अधिक सुखद होती थीं जब हमारे घर में मेहमान आते थे, और इसलिए वो बिल्कुल नहीं आती थीं। हमारे 'मेहमान' लगभग एम. स्वान तक ही सीमित थे, जो कुछ अजनबियों के अलावा, कॉम्ब्रे स्थित घर में आने वाले लगभग एकमात्र व्यक्ति थे, कभी-कभी पड़ोसी के साथ भोजन करने के लिए (लेकिन उनकी दुर्भाग्यपूर्ण शादी के बाद से कम ही आते थे, क्योंकि मेरा परिवार उनकी पत्नी का स्वागत नहीं करता था) और कभी-कभी भोजन के बाद, बिना बुलाए। उन शामों में जब हम घर के सामने बड़े शाहबलूत के पेड़ के नीचे और लोहे की मेज के चारों ओर बैठे होते थे, और बगीचे के दूसरे छोर से हमें वो तेज़ और शोरगुल वाली घंटी नहीं सुनाई देती थी, जो बिना घंटी बजाए अंदर आने वाले किसी भी सदस्य को अपनी भारी, अंतहीन, जमी हुई आवाज़ से सूचित करती थी और बहरा कर देती थी, बल्कि आगंतुकों की घंटी की दोहरी गूंज सुनाई देती थी—धीमी, अंडाकार, सुनहरी—और हर कोई एक साथ कहता था, "एक आगंतुक! आखिर कौन हो सकता है?" लेकिन वे अच्छी तरह जानते थे कि यह केवल एम. स्वान ही हो सकते हैं। मेरी बड़ी चाची, एक उदाहरण पेश करने के लिए, ऊँची आवाज़ में, और अपनी आवाज़ को स्वाभाविक बनाने की कोशिश करते हुए, दूसरों को फुसफुसाने से मना करतीं; कि किसी अजनबी के लिए इससे ज़्यादा अप्रिय कुछ नहीं हो सकता, जिसे लगेगा कि लोग उसके बारे में ऐसी बातें कह रहे हैं जो उसे नहीं सुननी चाहिए; और फिर मेरी दादी को एक जासूस के रूप में भेजा जाता, जो बगीचे में एक और चक्कर लगाने का बहाना ढूंढकर हमेशा खुश रहतीं, जिसका उपयोग वह चुपके से गुजरते हुए एक-दो गुलाब के पेड़ों के डंडे हटाने के लिए करतीं, ताकि गुलाब थोड़े और प्राकृतिक लगें, जैसे एक माँ

अपने बेटे के बालों में हाथ फेरती है, जब नाई ने उन्हें संवारा हो, ताकि वे उसके सिर के चारों ओर ठीक से सेट हो जाएँ।

और हम सब वहीं बैठे रहते, दादी के मुख से निकलने वाले शब्दों को ध्यान से सुनते, जब वह हमें दुश्मन के बारे में रिपोर्ट देतीं, मानो संभावित आक्रमणकारियों की विशाल संख्या में कुछ अनिश्चितता रही हो। फिर, कुछ ही देर बाद, दादाजी कहते: "मुझे स्वान की आवाज़ सुनाई दे रही है।" और सचमुच, उन्हें केवल उनकी आवाज़ से ही पहचाना जा सकता था, क्योंकि धनुषाकार नाक और हरी आँखों वाले उनके चेहरे को पहचानना मुश्किल था, ऊँचे माथे पर सुनहरे, लगभग लाल बाल थे, और उन्होंने ब्रेसेंट शैली के कपड़े पहने थे, क्योंकि बगीचे में हम यथासंभव कम रोशनी का उपयोग करते थे, ताकि मच्छर आकर्षित न हों। और मैं चुपके से ऐसे निकल जाता जैसे किसी खास काम से नहीं जा रहा हूँ, उन्हें सिरप लाने के लिए कहने के लिए; क्योंकि दादी इस बात पर बहुत जोर देती थीं, और उन्हें लगता था कि यह 'ज़्यादा अच्छा' है, कि सिरप को कुछ भी असामान्य नहीं दिखना चाहिए, जिसे हम केवल मेहमानों के लिए रखते थे। हालाँकि एम. स्वान मुझसे काफ़ी छोटे थे, फिर भी वे मेरे दादाजी से बहुत लगाव रखते थे। मेरे दादाजी, स्वान के पिता के अपने समय में घनिष्ठ मित्र थे। उनके पिता एक उत्कृष्ट लेकिन सनकी व्यक्ति थे, जिनके मन में छोटी-छोटी बातों से भी अक्सर उत्साह कम हो जाता था और उनके विचार भटक जाते थे। साल में कई बार मैं दादाजी को भोजन के समय एम. स्वान सीनियर की पत्नी की मृत्यु पर उनके व्यवहार की कहानी सुनाते सुनता था, जो कभी नहीं बदलती थी। मेरी पत्नी के पास वे दिन-रात पहरा देते रहे थे। मेरे दादाजी, जिन्होंने उन्हें लंबे समय से नहीं देखा था, कॉम्ब्रे के बाहरी इलाके में स्वान परिवार की संपत्ति पर उनसे मिलने के लिए जल्दी से पहुँचे और उन्हें कुछ पल के लिए, फूट-फूटकर

रोते हुए, मृत्यु कक्ष से बाहर लाने में कामयाब रहे, ताकि वे शव को ताबूत में रखे जाने के समय उपस्थित न रहें। वे पार्क में थोड़ी देर घूमे, जहाँ हल्की धूप थी। अचानक एम. स्वान ने मेरे दादाजी का हाथ पकड़ लिया और रोते हुए बोलीं, "ओह, मेरे प्यारे पुराने दोस्त, हम कितने भाग्यशाली हैं कि इतने सुहावने दिन में यहाँ साथ-साथ चल रहे हैं! क्या आप नहीं देखते कि ये सारे पेड़ कितने सुंदर हैं—मेरे हॉथोर्न के पेड़, और मेरा नया तालाब, जिसके लिए आपने मुझे कभी बधाई नहीं दी? आप तो एकदम उदास लग रहे हैं। क्या आपको ये हल्की हवा महसूस नहीं हो रही? आह! आप चाहे जो कहें, फिर भी ज़िंदा रहना अच्छा है, मेरे प्यारे अमेडी!" और फिर, अचानक, उन्हें अपनी दिवंगत पत्नी की याद आ गई, और शायद यह सोचकर कि ऐसे समय में वे खुशी के आवेग में कैसे बह गए, उन्होंने वही हावभाव अपनाया जो वे अक्सर किसी भी उलझन भरे सवाल के आने पर अपनाते थे: उन्होंने अपना हाथ माथे पर फेरा, अपनी आँखें पोंछीं और अपने चश्मे को साफ किया। और उन्हें अपनी पत्नी के देहांत से कभी सांत्वना नहीं मिली, लेकिन अपनी पत्नी के बाद के दो वर्षों के दौरान वे अक्सर मेरे दादाजी से कहते थे, "यह अजीब बात है; मैं अपनी बेचारी पत्नी के बारे में बहुत सोचता हूँ, लेकिन एक ही समय में उसके बारे में ज़्यादा नहीं सोच पाता।" "अक्सर, लेकिन थोड़ा-थोड़ा करके, बेचारे स्वान की तरह," यह मेरे दादाजी का पसंदीदा मुहावरा बन गया था, जिसे वे हर तरह की बातों पर लागू करते थे। और मैं मान लेता कि स्वान के पिता एक राक्षस थे, अगर मेरे दादाजी, जिन्हें मैं खुद से बेहतर पारखी मानता था, जिनका वचन मेरे लिए कानून था और अक्सर अंततः मुझे उन अपराधों को क्षमा करने के लिए प्रेरित करता था जिनकी मैं निंदा करने को इच्छुक होता, ने यह न कहा होता, "लेकिन, आखिरकार, उनका दिल सोने का था।"

कई वर्षों तक, हालांकि—और विशेष रूप से अपनी शादी से पहले—एम. स्वान जूनियर अक्सर कॉम्ब्रे में उनसे मिलने आते थे, मेरी परदादी और दादा-दादी को कभी संदेह नहीं हुआ कि उन्होंने उस तरह के समाज में रहना पूरी तरह से बंद कर दिया था जिसमें उनका परिवार अक्सर जाता था, या यह कि, स्वान नाम ने उन्हें हमारे बीच जो गुमनामी दी थी, उसके तहत वे—एक ईमानदार सराय मालिकों के परिवार की पूरी मासूमियत के साथ, जिनके बीच कोई प्रतिष्ठित डाकू हो और उन्हें कभी पता न चले—जॉकी क्लब के सबसे चतुर सदस्यों में से एक, कॉम्टे डी पेरिस और प्रिंस ऑफ वेल्स के एक विशेष मित्र, और फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की कुलीन दुनिया में सबसे अधिक मांग वाले व्यक्तियों में से एक को शरण दे रहे थे। फैशन की दुनिया में स्वान की शानदार भूमिका के बारे में हमारी पूरी अज्ञानता, बेशक, आंशिक रूप से उनके अपने संयम और विवेक के कारण थी, लेकिन साथ ही इस तथ्य के कारण भी थी कि उन दिनों मध्यम वर्ग के लोग समाज के बारे में लगभग हिंदू दृष्टिकोण रखते थे, जिसे वे स्पष्ट रूप से परिभाषित जातियों में विभाजित मानते थे, जिसके अनुसार जन्म के समय प्रत्येक व्यक्ति को उस सामाजिक स्थिति में रहना पड़ता था जिसमें उसके माता-पिता पहले से ही थे, और एक शानदार करियर या एक 'अच्छे' विवाह के अवसर के अलावा कुछ भी आपको उस स्थिति से बाहर नहीं निकाल सकता था या आपको उच्च जाति में प्रवेश नहीं दिला सकता था। एम. स्वान, पिता, एक स्टॉकब्रोकर थे; और इसलिए 'युवा स्वान' खुद को जीवन भर के लिए एक ऐसी जाति में कैद पाते थे जहाँ किसी की संपत्ति, करदाताओं की सूची की तरह, आय की अलग-अलग सीमाओं के बीच बदलती रहती थी। हम उन लोगों को जानते थे जिनके साथ उनके पिता का संबंध था, और इसलिए हम उनके अपने सहयोगियों को भी जानते थे, वे लोग जिनके साथ उनका 'मेलजोल' था।

अगर वह हमारे अलावा और भी लोगों को जानता था, तो वे युवा परिचित थे जिन पर परिवार के पुराने दोस्त, जैसे मेरे रिश्तेदार, और भी अच्छे स्वभाव से आंखें मूंद लेते थे, क्योंकि स्वान खुद अनाथ होने के बाद भी नियमित रूप से हमसे मिलने आता था; लेकिन हम शर्त लगाने को तैयार थे कि हमारे परिचितों के अलावा स्वान जिन लोगों को जानता था, वे ऐसे लोग थे जिनसे अगर वह हमारे साथ चलते हुए मिलता तो शायद सलाम भी नहीं करता। अगर स्वान को उसके पिता की स्थिति के अन्य सभी स्टॉकब्रोकरों के बेटों से अलग एक विशेष सामाजिक मापदंड देने का कोई निर्णय होता, तो उसका मापदंड उनसे कहीं कम होता, क्योंकि वह बहुत ही सादा जीवन जीता था और हमेशा से ही 'पुरातन वस्तुओं' और चित्रों का शौकीन था। अब वह एक पुराने घर में रहता था और अपना संग्रह जमा करता था, जहाँ मेरी दादी जाने के लिए तरसती थीं, लेकिन वह क्वाई डी'ऑरलियन्स पर स्थित था, एक ऐसा इलाका जहाँ मेरी परदादी रहना बेहद अपमानजनक समझती थीं। “क्या अब तुम सचमुच कला पारखी बन गए हो?” वह उससे कहतीं; “मैं तुम्हारे भले के लिए पूछ रही हूँ, क्योंकि हो सकता है कि व्यापारी तुम्हें नकली चीज़ें बेच दें,” क्योंकि वास्तव में वह उसे कला की परखने की क्षमता नहीं देती थीं और उस व्यक्ति की बुद्धिमत्ता के बारे में उनकी कोई खास राय नहीं थी जो बातचीत में गंभीर विषयों से बचता था और बहुत ही नीरस सटीकता दिखाता था, न केवल रसोई के नुस्खे बताते समय, बल्कि छोटी-छोटी बातों में उलझकर भी, और यहाँ तक कि जब मेरी दादी की बहनें उससे कला के बारे में बात करती थीं। जब वे उससे राय देने या किसी चित्र की प्रशंसा करने के लिए कहतीं, तो वह लगभग अभद्र तरीके से चुप रहता और फिर (यदि संभव हो तो) उस गैलरी के बारे में कोई तथ्य बताकर या उसके बनने की तारीख बताकर अपनी गलती सुधारता। लेकिन आम तौर

पर वह हमें अपने नवीनतम कारनामे की कहानी सुनाकर हमारा मनोरंजन करने में ही संतुष्ट हो जाते थे—और हर बार उनके पास हमारे लिए एक नई कहानी होती थी—जिसमें कोई न कोई ऐसा व्यक्ति शामिल होता था जिसे हम खुद जानते थे, जैसे कि कॉम्ब्रे का केमिस्ट, या हमारा रसोइया, या हमारा कोचवान। ये कहानियाँ मेरी बड़ी चाची को खूब हँसाती थीं, लेकिन वह कभी यह नहीं समझ पाती थीं कि हँसी का कारण स्वान द्वारा हमेशा निभाए जाने वाले हास्यास्पद किरदार थे, या फिर उन्हें सुनाते समय दिखाई देने वाली उनकी चतुराई। "यह आसानी से देखा जा सकता है कि आप एक बड़े ही दिलचस्प व्यक्ति हैं, श्रीमान स्वान!"

चूंकि वह हमारे परिवार की इकलौती सदस्य थीं जिन्हें थोड़ा 'आम' कहा जा सकता था, इसलिए जब भी स्वान का ज़िक्र होता, वह अजनबियों से हमेशा यह कहना नहीं भूलती थीं कि अगर वह चाहते तो आसानी से बुलेवार्ड हौसमैन या एवेन्यू डे ल'ओपेरा में रह सकते थे, और वह बूढ़े श्रीमान स्वान के बेटे हैं जिन्होंने चार-पाँच मिलियन फ़्रैंक छोड़े होंगे, लेकिन यह उनका एक शौक था। इतना ही नहीं, उन्हें लगता था कि यह शौक दूसरों को इतना हंसाएगा कि पेरिस में, जब श्रीमान स्वान नए साल के दिन उनके लिए मैरॉन्स ग्लेसेस का एक छोटा पैकेट लेकर आए, तो अगर कमरे में कोई अजनबी होता, तो वह उनसे यह कहना नहीं भूलती थीं: "अच्छा, श्रीमान स्वान, और क्या आप अभी भी बॉन्डेड वॉल्ट्स के बगल में रहते हैं, ताकि ल्योंस जाते समय आपकी ट्रेन न छूट जाए?" और वह अपने चश्मे के ऊपर से तिरछी नज़र से दूसरे मेहमानों को देखती रहती थीं।

लेकिन अगर किसी ने मेरी चाची को यह सुझाव दिया होता कि यह स्वान, जो पुराने एम. स्वान के पुत्र होने के नाते, पेरिस के सबसे सम्मानित बैरिस्टरों और सॉलिसिटरों जैसे 'उच्च मध्यम वर्ग' के किसी भी व्यक्ति

द्वारा स्वागत किए जाने के लिए 'पूरी तरह से योग्य' था (हालाँकि वह शायद इस वंशानुगत विशेषाधिकार को कुछ समय के लिए निलंबित करने के लिए थोड़ा सा प्रवृत्त था), एक बिल्कुल अलग तरह का एक लगभग गुप्त जीवन भी जीता था: कि जब वह पेरिस में हमारे घर से यह कहकर निकलता था कि उसे घर जाकर सोना है, तो जैसे ही वह कोने पर मुड़ता, वह रुक जाता, अपने कदम पीछे हटाता और किसी ऐसे ड्राइंग रूम में चला जाता जिसकी तरह का कमरा किसी स्टॉकब्रोकर या स्टॉकब्रोकरों के सहयोगी ने कभी नहीं देखा था—तो यह बात मेरी चाची को उतनी ही असाधारण लगती जितनी कि एक व्यापक पठन-पाठन करने वाली महिला के लिए अरिस्टायस के साथ घनिष्ठ संबंध होने का विचार, यह जानना कि जब वह उससे अपनी बातचीत समाप्त कर लेगा, तो वह थेतिस के साम्राज्य में गहराई से उतर जाएगा, एक ऐसे साम्राज्य में जो नश्वर आँखों से छिपा हुआ है, जिसमें वर्जिल ने उसे खुले हाथों से स्वागत करते हुए चित्रित किया है; या फिर—उस छवि से संतुष्ट होने के लिए जो उसके मन में आने की अधिक संभावना थी, क्योंकि उसने इसे कॉम्ब्रे में बिस्कुट के लिए इस्तेमाल की जाने वाली प्लेटों पर चित्रित देखा था—अली बाबा को रात के खाने पर बुलाने का विचार, जो जैसे ही खुद को अकेला और किसी की नजरों से छिपा हुआ पाता, गुफा में चला जाता, जो अपने अनपेक्षित खजानों से जगमगा रही थी।

एक दिन जब वह पेरिस में रात के खाने के बाद हमसे मिलने आए और शाम के कपड़े न पहनने के लिए क्षमा मांगी, तो उनके जाने के बाद फ्रांस्वा ने हमें बताया कि उन्हें उनके कोचवान से पता चला था कि उन्होंने "एक राजकुमारी" के साथ भोजन किया था। "एक सुंदर राजकुमारी," मेरी चाची ने धीमी आवाज़ में कहा; "मैं उन्हें जानती हूँ," और उन्होंने अपनी बुनाई से नज़रें हटाए बिना, शांत भाव से व्यंग्यात्मक अंदाज़ में अपने कंधे

उचका दिए।

कुल मिलाकर, मेरी चाची उनके साथ बहुत कम औपचारिकता से पेश आती थीं। चूंकि उनका मानना था कि उन्हें हमारे निमंत्रणों से प्रसन्न होना चाहिए, इसलिए उन्होंने उचित समझा कि जब भी वह गर्मियों में हमसे मिलने आएं तो अपने बगीचे से आड़ू या रसभरी की टोकरी लाए बिना न आएं, और इटली की अपनी प्रत्येक यात्रा से मेरे लिए कुछ पुरानी कलाकृतियों की तस्वीरें अवश्य लाएं।

इसलिए, जब भी हमें किसी खास चटनी या अनानास के सलाद की रेसिपी चाहिए होती, तो उसे ही भेजना स्वाभाविक लगता था। हम अपनी किसी बड़ी डिनर पार्टी में उसे आमंत्रित नहीं करते थे, क्योंकि वह इतना महत्वपूर्ण नहीं लगता था कि उसे उन नए मेहमानों को बताया जाए जो शायद पहली बार हमारे घर आए हों। अगर बातचीत फ्रांस के राजकुमारों पर आ जाती, तो मेरी बड़ी चाची स्वान से तीखे लहजे में कहतीं, "सज्जनों, हम दोनों को कभी पता नहीं चलेगा, है ना, और हम जानना भी नहीं चाहते, है ना?" शायद स्वान की जेब में ट्विकेनहैम का कोई पत्र होता था। वह उसे शाम को मेरी दादी की बहन के गाने के दौरान संगत बजाने और संगीत पलटने के लिए कहतीं; इस व्यक्ति को, जो अन्य समयों और स्थानों पर इतना दुर्लभ और परिष्कृत होता था, एक बच्चे की तरह सहजता से संभालतीं, जो अलमारी से किसी पुरानी चीज को ऐसे खेलता है जैसे वह कोई खिलौना हो। उन दिनों के सभी क्लबों में एक जाना-पहचाना चेहरा रहे स्वान, मेरी परदादी के मन में बसी स्वान की छवि से बिलकुल अलग थे। एक शाम, कॉम्ब्रे स्थित हमारे छोटे से बगीचे में, द्वार से दो धीमी घंटियों की आवाज़ आने के बाद, वह स्वान परिवार के बारे में सुनी हर बात को उस धुंधली और अपरिचित आकृति में भर देती थीं, जो मेरी दादी के साथ परछाइयों की पृष्ठभूमि में उभरने लगती थी,

और अंत में उसकी आवाज़ से पहचानी जा सकती थी। लेकिन फिर भी, हमारे दैनिक जीवन के सबसे छोटे-छोटे विवरणों में भी, हममें से कोई भी एक ऐसी भौतिक इकाई नहीं है, जो सबके लिए एक जैसी हो, और जिसे किसी खाते की किताब या वसीयत के पन्ने की तरह पलटकर देखा जा सके; हमारा सामाजिक व्यक्तित्व दूसरे लोगों के विचारों से बनता है। यहाँ तक कि जिस साधारण क्रिया को हम "किसी परिचित को देखना" कहते हैं, वह भी कुछ हद तक एक बौद्धिक प्रक्रिया है। हम किसी भी प्राणी के शारीरिक आकार को अपने मन में पहले से बनी हुई सभी धारणाओं से भर देते हैं, और हमारे मन में उसकी जो संपूर्ण छवि बनती है, उसमें निश्चित रूप से उन धारणाओं का ही प्रमुख स्थान होता है। अंततः वे धारणाएँ उसके गालों की गोलाई को इतनी पूर्णता से भर देती हैं, उसकी नाक की रेखा का इतनी सटीकता से अनुसरण करती हैं, और उसकी आवाज़ में इतनी सामंजस्यपूर्ण रूप से घुलमिल जाती हैं कि वे एक पारदर्शी आवरण मात्र प्रतीत होती हैं, जिससे हर बार जब हम उसका चेहरा देखते हैं या उसकी आवाज़ सुनते हैं, तो हम उसके बारे में अपनी ही धारणाओं को पहचानते हैं और उन्हीं को सुनते हैं। और इसलिए, निस्संदेह, मेरे परिवार ने अपने स्वार्थ के लिए स्वान की जो छवि बनाई थी, उसमें उन्होंने अपनी अज्ञानता में फैशन की दुनिया में उसके दैनिक जीवन के कई विवरणों को छोड़ दिया था, वे विवरण जिनके माध्यम से अन्य लोग, जब उससे मिलते थे, तो उसके चेहरे पर विराजमान सभी सौंदर्यों को देखते थे और उसकी धनुषाकार नाक की रेखा पर एक प्राकृतिक सीमा की तरह रुक जाते थे; लेकिन उन्होंने उस चेहरे में भी एक भाव भर दिया, जिसकी विशिष्टता छिन गई थी, एक ऐसा चेहरा जो खाली और सूना था, मानो कोई निर्जन मकान हो। उन्होंने उसकी अनमोल आँखों की गहराई में एक स्थाई भावना, अनिश्चित लेकिन अप्रिय नहीं, आधी

स्मृति और आधा विस्मरण, हमारे साप्ताहिक रात्रिभोज के बाद साथ बिताए गए खाली पलों की, ताश की मेज के आसपास या बगीचे में, हमारे सौहार्दपूर्ण ग्रामीण जीवन के दौरान, रोपित कर दी। हमारे मित्र का शरीर इस भावना और अपने परिवार की विभिन्न पुरानी यादों से इतना सुशोभित था कि उनका अपना विशेष स्वान मेरे लोगों के लिए एक पूर्ण और जीवंत प्राणी बन गया था। इसलिए अब भी मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी जाने-पहचाने व्यक्ति को छोड़कर किसी बिल्कुल अलग व्यक्ति के पास जा रहा हूँ, जब मैं स्मृतियों में पीछे मुड़कर देखता हूँ और बाद में और अधिक घनिष्ठता से जानने वाले स्वान से इस शुरुआती स्वान की ओर बढ़ता हूँ—यह शुरुआती स्वान जिसमें मैं अपने बचपन की मनमोहक गलतियों को देख सकता हूँ, और जो संयोगवश, अपने उत्तराधिकारी से कम और उस समय मेरे जानने वाले अन्य लोगों से अधिक मिलता-जुलता है, मानो किसी का जीवन कई दीर्घाओं की एक श्रृंखला हो जिसमें किसी भी काल के सभी चित्रों में एक स्पष्ट पारिवारिक समानता हो, एक ही (कहने को) रंगत हो—यह शुरुआती स्वान फुर्सत से भरपूर, विशाल शाहबलूत के पेड़ की सुगंध से महकता हुआ, रसभरी की टोकरियों और तारगन की एक टहनी की खुशबू से भरा हुआ।

और फिर भी एक दिन, जब मेरी दादी एक महिला से कोई काम करवाने गई थीं, जिनसे वह सैक्रे कोउर में मिली थीं (और जिनके साथ, हमारी जातिगत विचारधारा के कारण, कई समान रुचियों के बावजूद उन्होंने किसी भी प्रकार की घनिष्ठता बनाए रखने की परवाह नहीं की थी), प्रसिद्ध बौइलन परिवार की मार्क्विज़ डी विलेपारिसिस, तो उस महिला ने उनसे कहा:

"मुझे लगता है कि आप एम. स्वान को बहुत अच्छी तरह जानते हैं; वह मेरे भतीजों, डेस लाउम्स के बहुत अच्छे दोस्त हैं।"

मेरी दादी घर से लौटकर उस घर की बहुत प्रशंसा कर रही थीं, जो कुछ बगीचों के सामने था, और जिसमें श्रीमती डी विलेपारिसिस ने उन्हें एक फ्लैट किराए पर लेने की सलाह दी थी; और साथ ही एक दर्जी और उसकी बेटी की भी, जिनकी आंगन में एक छोटी सी दुकान थी, जहाँ वह अपनी स्कर्ट में एक टांका लगवाने गई थीं, जो सीढ़ियों पर फट गई थी। मेरी दादी को ये दोनों बेहद आकर्षक लगे: उन्होंने कहा कि लड़की एक रत्न थी, और दर्जी एक बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति, सबसे उत्तम जिसे उन्होंने कभी देखा था। क्योंकि उनकी नज़र में प्रतिष्ठा सामाजिक स्थिति से पूरी तरह स्वतंत्र थी। दर्जी ने माँ से जो कहा, उसके एक जवाब पर वह बहुत प्रसन्न थीं:

"सेविग्ने इससे बेहतर नहीं कह सकती थी!" और, इसके विपरीत, श्रीमती डी विलेपारिसिस के एक भतीजे के बारे में, जिनसे वह घर पर मिली थीं:

"मेरे प्यारे, वह तो बिल्कुल साधारण है!"

अब, स्वान के बारे में उस टिप्पणी का प्रभाव यह हुआ कि मेरी परदादी की नज़र में उनका सम्मान नहीं बढ़ा, बल्कि श्रीमती डी विलेपारिसिस का सम्मान कम हो गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरी दादी के कहने पर श्रीमती डी विलेपारिसिस के प्रति हमारा जो आदर था, उसने उन पर यह दायित्व डाल दिया था कि वे ऐसा कुछ भी न करें जिससे वे हमारे सम्मान के पात्र कम हो जाएँ, और स्वान के अस्तित्व से अवगत न होकर और अपने परिवार के सदस्यों को उनसे मेलजोल रखने की अनुमति न देकर वे अपने कर्तव्य में विफल रहीं। "वह स्वान को कैसे जानती होंगी? एक ऐसी महिला, जिसके बारे में आप हमेशा कहते थे कि वह मार्शल मैकमोहन से संबंधित है!" स्वान के सामाजिक परिवेश के बारे में मेरे परिवार में जो धारणा थी, वह बाद में एक निम्न वर्ग की महिला से उनकी शादी से पुष्ट होती प्रतीत हुई, आप लगभग कह सकते हैं कि वह एक 'चालबाज'

महिला थीं, जिनसे, उनके साथ न्याय करने के लिए, उन्होंने कभी भी हमारा परिचय कराने का प्रयास नहीं किया, क्योंकि वे अकेले ही हमारे पास आते रहे, हालाँकि उनकी आने की आवृत्ति पहले से कहीं कम होती जा रही थी; लेकिन उन्हें लगा कि वे इस धारणा के आधार पर, कि उसने उसे वहीं पाया था, उस अज्ञात समूह का पता लगा सकते हैं, जिसमें वह आमतौर पर घूमता था।

लेकिन एक बार मेरे दादाजी ने अखबार में पढ़ा कि एम. स्वान ड्यूक डी X द्वारा आयोजित रविवार के भोज में सबसे नियमित उपस्थित रहने वालों में से एक थे, जिनके पिता और चाचा लुई फिलिप के शासनकाल में हमारे सबसे प्रमुख राजनेताओं में से थे। अब मेरे दादाजी मोल, ड्यूक पास्कियर या ड्यूक डी ब्रोगली जैसे लोगों के निजी जीवन के बारे में छोटी-छोटी जानकारियाँ जानने के लिए उत्सुक थे। उन्हें यह जानकर बहुत खुशी हुई कि स्वान उन लोगों के साथ उठते-बैठते थे जो उन्हें जानते थे। हालाँकि, मेरी बड़ी चाची ने इस खबर को स्वान के लिए अपमानजनक माना; क्योंकि जो कोई भी अपने जन्म और पालन-पोषण से बाहर के लोगों से दोस्ती करता है, अपनी 'उचित स्थिति' से बाहर के लोगों से, वह उनकी नज़र में घोर अपमानित होता है। उन्हें ऐसा लगा कि ऐसा व्यक्ति प्रतिष्ठित लोगों के साथ उन मैत्रीपूर्ण संबंधों का लाभ उठाने का अपना अधिकार खो देता है, जिन्हें समझदार माता-पिता अपने बच्चों के हित के लिए संजोकर रखते हैं। मेरी परदादी ने वास्तव में उस वकील के बेटे से मिलना-जुलना बंद कर दिया था, जिसे हम जानते थे, क्योंकि उसने एक 'राजकुमारी' से शादी कर ली थी और इस तरह उनकी नज़र में वह एक वकील के बेटे की सम्मानजनक स्थिति से गिरकर उन साहसी, उद्दंड नौकरों या अस्तबल के लड़कों की श्रेणी में आ गया था, जिनके बारे में हमने पढ़ा है कि रानियाँ कभी-कभी उन पर कृपा दृष्टि रखती हैं। इसलिए

उन्होंने मेरे दादाजी की उस योजना का विरोध किया, जिसमें वे अगली बार जब स्वान हमारे साथ भोजन करने आए, तो उनसे उन लोगों के बारे में पूछताछ करने वाले थे, जिनके साथ उनकी मित्रता का हमें पता चला था। दूसरी ओर, मेरी दादी की दो बहनें, वृद्ध अविवाहित महिलाएँ, जो चरित्र में तो उनकी तरह ही कुलीन थीं, लेकिन बुद्धि में उनकी कमी थी, ने कहा कि वे समझ नहीं पा रही थीं कि उनके देवर को ऐसी तुच्छ बातों में क्या आनंद मिलता है। वे उच्च महत्वाकांक्षा वाली महिलाएं थीं, और इसी कारण वे जीवन की उन चीजों में जरा भी रुचि नहीं रखती थीं जिन्हें 'तुच्छ' चीजें कहा जा सकता है, भले ही उनका ऐतिहासिक महत्व हो, या सामान्य तौर पर कहें तो, ऐसी किसी भी चीज में जो किसी सौंदर्यपरक वस्तु से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी न हो। हमारे रोजमर्रा के जीवन का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हिस्सा लगने वाली किसी भी चीज में उनकी रुचि इतनी कम थी कि उनकी सुनने की क्षमता—जो धीरे-धीरे अपनी निरर्थकता को समझ चुकी थी जब खाने की मेज पर बातचीत का लहजा तुच्छ या केवल सांसारिक हो जाता था, और दोनों बुजुर्ग महिलाएं उसे अपने प्रिय विषय पर वापस लाने में असमर्थ होती थीं—अपने ग्रहणशील चैनलों को इस कदर निष्क्रिय कर देती थी कि वे वास्तव में क्षीण हो रहे थे। इसलिए यदि मेरे दादाजी दोनों बहनों का ध्यान आकर्षित करना चाहते थे, तो उन्हें कुछ ऐसे चेतावनी भरे संकेतों का उपयोग करना पड़ता था जैसे पागल डॉक्टर अपने विचलित रोगियों से निपटने के लिए अपनाते हैं; जैसे कि चाकू की धार से कांच पर कई बार प्रहार करना, साथ ही साथ तीखे शब्दों और दबाव भरी निगाहों से उन्हें जकड़ लेना, ये हिंसक तरीके हैं जिन्हें उक्त डॉक्टर अपने रोजमर्रा के जीवन में स्वस्थ लोगों के बीच अपनाते हैं, या तो पेशेवर आदत के कारण या इसलिए कि वे पूरी दुनिया को थोड़ा पागल समझते हैं।

हालाँकि, उनकी दिलचस्पी तब और बढ़ गई जब स्वान के हमारे साथ भोजन करने से एक दिन पहले, और जब उन्होंने उन्हें एस्टी का एक विशेष बॉक्स उपहार में दिया, तो मेरी बड़ी चाची, जिनके हाथ में फिगारो पत्रिका की एक प्रति थी, जिसमें कोरोट प्रदर्शनी में प्रदर्शित एक चित्र के नाम के आगे "एम. चार्ल्स स्वान के संग्रह से" शब्द जोड़े गए थे, ने पूछा: "क्या आपने देखा कि फिगारो में स्वान का 'उल्लेख' किया गया है?"

"लेकिन मैंने तुम्हें हमेशा यही बताया है," मेरी दादी ने कहा, "कि उसमें स्वाद की कोई कमी नहीं थी।"

मेरी बड़ी चाची ने पलटकर जवाब दिया, "तुम तो हमसे अलग दिखने के लिए कुछ भी कह दोगी ही।" क्योंकि वह जानती थी कि मेरी दादी कभी उससे सहमत नहीं होती थीं, और उसे पूरा भरोसा नहीं था कि हम सब उसकी राय से पूरी तरह सहमत हैं, इसलिए वह चाहती थी कि हम सब उसकी राय की पूरी तरह निंदा करें, और इस तरह वह हमें अपने विचारों के खिलाफ एकजुट होने के लिए मजबूर कर देगी।

लेकिन हम चुपचाप बैठे रहे। मेरी दादी की बहनों ने स्वान को फिगारो में उनके बारे में हुए इस ज़िक्र का ज़िक्र करने की इच्छा जताई थी, लेकिन मेरी बड़ी चाची ने उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया। जब भी उन्हें दूसरों में कोई ऐसी खूबी नज़र आती, चाहे वह कितनी भी मामूली क्यों न हो, जो उनमें खुद नहीं होती, तो वे खुद को समझा लेतीं कि यह कोई खूबी नहीं बल्कि एक कमी है, और उन पर तरस खातीं ताकि उन्हें ईर्ष्या न करनी पड़े।

"मुझे नहीं लगता कि इससे उन्हें जरा भी खुशी होगी; मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मुझे अखबार में अपना नाम इतने बड़े अक्षरों में छपा देखना बिल्कुल भी पसंद नहीं आएगा, और अगर कोई मुझसे इसके बारे में बात करे तो मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगेगा।"

हालाँकि, उन्होंने मेरी दादी की बहनों पर कोई खास दबाव नहीं डाला, क्योंकि वे अश्लीलता से घृणा करती थीं और उन्होंने चतुराई से घुमा-फिराकर बात करने में व्यक्तिगत बातों को इस कदर माहिर कर लिया था कि अक्सर जिसे संबोधित किया जा रहा था, उसे भी इसका पता नहीं चलता था। जहाँ तक मेरी माँ की बात है, उनका एकमात्र विचार यही था कि वे मेरे पिता को स्वान से बात करने के लिए मना लें, उनकी पत्नी के बारे में नहीं, बल्कि उनकी बेटी के बारे में, जिसे वे बहुत प्यार करते थे और जिसके लिए ही उन्होंने अंततः यह दुर्भाग्यपूर्ण विवाह किया था।
आपको बस एक शब्द कहना है; बस उससे पूछिए कि वह कैसी है। उसके लिए यह बहुत मुश्किल होगा।
लेकिन मेरे पिता नाराज हो गए: "नहीं, नहीं; तुम्हारे विचार बिल्कुल बेतुके हैं। यह तो सरासर हास्यास्पद होगा।"
लेकिन हम सब में से केवल मैं ही थी जिसके मन में स्वान के आने की आशंका से एक अप्रिय आशंका उत्पन्न होती थी। और ऐसा इसलिए था क्योंकि जिन शामों को घर में मेहमान होते थे, या केवल श्री स्वान ही होते थे, माँ मेरे कमरे में नहीं आती थीं। उस समय मैं परिवार के साथ भोजन नहीं करती थी: मैं भोजन के बाद बगीचे में जाती थी, और नौ बजे शुभ रात्रि कहकर सो जाती थी। लेकिन इन शामों को मैं दूसरों से पहले भोजन करती थी, और बाद में आकर आठ बजे तक मेज पर बैठती थी, जब यह समझा जाता था कि मुझे ऊपर जाना है; वह कोमल और अनमोल चुंबन जो माँ हमेशा मेरे होठों पर तब छोड़ती थीं जब मैं बिस्तर पर होती थी और सोने ही वाली होती थी, मुझे भोजन कक्ष से अपने कमरे तक ले जाना पड़ता था, और कपड़े उतारने में लगने वाले पूरे समय तक उसे बरकरार रखना पड़ता था, बिना उसके मीठे आकर्षण को टूटने दिए, बिना उसके क्षणभंगुर सार को फैलने और वाष्पित होने दिए; और ठीक उन्हीं शामों

को जब मुझे इसे उचित औपचारिकता के साथ प्राप्त करने के लिए सबसे अधिक सावधानी बरतनी पड़ती है, मुझे इसे झटपट और सार्वजनिक रूप से छीनना पड़ता है, बिना समय निकाले या ठीक से मुक्त हुए कि मैं अपने काम में उस सावधानी का प्रयोग कर सकूँ जो पागल लोग तब बरतते हैं जब वे दरवाजा बंद करते समय अपने दिमाग से अन्य सभी विचारों को निकाल देते हैं, ताकि जब अनिश्चितता की बीमारी उन पर फिर से हावी हो जाए तो वे उस सटीक क्षण की याद के साथ विजयी होकर उसका सामना कर सकें और उस पर विजय प्राप्त कर सकें जब दरवाजा बंद किया गया था।

हम सब बगीचे में थे जब द्वार की घंटी की दोहरी ध्वनि धीमी सी सुनाई दी। सबको पता था कि यह स्वान ही होगा, फिर भी सबने एक-दूसरे को जिज्ञासा भरी नजरों से देखा और मेरी दादी को खोजबीन के लिए भेजा।

"ध्यान रखना कि तुम उसे शराब के लिए समझदारी से धन्यवाद दो," मेरे दादाजी ने अपनी दोनों साली को चेतावनी दी; "तुम जानती हो कि यह कितनी अच्छी है, और यह एक बहुत बड़ा डिब्बा है।"

"अब फुसफुसाना शुरू मत करो!" मेरी बड़ी चाची ने कहा। "अगर तुम किसी घर में आओ और देखो कि सब आपस में बुदबुदा रहे हैं तो तुम्हें कैसा लगेगा?"

"अरे! ये रहे मिस्टर स्वान," मेरे पिता ने कहा। "चलो उनसे पूछते हैं कि क्या उन्हें लगता है कि कल मौसम ठीक रहेगा।"

मेरी माँ को लगा कि उनके एक शब्द से वह सारी नाराज़गी दूर हो जाएगी जो मेरे परिवार ने स्वान को उसकी शादी के बाद से महसूस करवाई थी। उन्होंने उसे एक पल के लिए अलग ले जाने का मौका ढूंढा। लेकिन मैं उनके पीछे-पीछे चली गई: मैं उन्हें अपने से दूर नहीं जाने दे सकती थी, क्योंकि मुझे डर था कि कुछ ही मिनटों में मुझे उन्हें भोजन कक्ष में

छोड़कर अपने बिस्तर पर जाना पड़ेगा, बिना इस तसल्ली भरे विचार के, जैसा कि आम शामों में होता है, कि वह बाद में आकर मुझे चूमेंगी।

"अब, श्रीमान स्वान," उसने कहा, "कृपया मुझे अपनी बेटी के बारे में बताएं; मुझे यकीन है कि वह अपने पिता की तरह ही अच्छी चीजों का शौक रखती है।"

"आइए, हमारे साथ बरामदे में बैठ जाइए," मेरे दादाजी ने उसके पास आते हुए कहा। मेरी माँ को अपनी खोज छोड़नी पड़ी, लेकिन उन्होंने इस प्रतिबंध से ही विचारों में और अधिक परिष्कार लाने में कामयाबी हासिल की, ठीक वैसे ही जैसे महान कवि तब करते हैं जब तुकबंदी उन्हें अपनी सर्वश्रेष्ठ पंक्तियों की खोज करने के लिए विवश करती है।

"जब हम अकेले होंगे तब हम उसके बारे में फिर से बात कर सकते हैं," उसने स्वान से कहा, या यूँ कहें कि फुसफुसाते हुए बोली। "इसे केवल एक माँ ही समझ सकती है। मुझे यकीन है कि उसकी माँ मेरी बात से सहमत होगी।"

और इस तरह हम सब लोहे की मेज के चारों ओर बैठ गए। मैं उस शाम को अपने कमरे में अकेले, बिना सोए, बिताई जाने वाली पीड़ा के घंटों के बारे में सोचना नहीं चाहती थी। मैंने खुद को समझाने की कोशिश की कि वे घंटे वास्तव में महत्वहीन हैं, क्योंकि मैं उन्हें अगली सुबह भूल जाऊंगी, और भविष्य के विचारों में अपना ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की जो मुझे एक पुल की तरह, मेरे पैरों के नीचे फैली उस भयानक खाई के पार ले जाएंगे। लेकिन इस आशंका से तनावग्रस्त मेरा मन, मेरी माँ को दी गई मेरी नज़र की तरह, किसी और विचार को प्रवेश नहीं करने दे रहा था। विचार, वास्तव में, मेरे मन में आए, लेकिन इस शर्त पर कि वे अपने पीछे सुंदरता या विचित्रता का हर वह तत्व छोड़ दें जिससे मैं विचलित या मोहित हो सकती थी। जैसे कोई शल्य चिकित्सक, स्थानीय एनेस्थेटिक

की सहायता से, ऑपरेशन होते हुए भी पूरी चेतना के साथ देख सकता है और उसे कुछ भी महसूस नहीं होता, वैसे ही मैं अपने मन में कुछ पसंदीदा पंक्तियाँ दोहरा सकता था, या अपने दादाजी को स्वान से ड्यूक डी'ऑड्रिफ़ेट-पास्कियर के बारे में बात करने का प्रयास करते हुए देख सकता था, बिना किसी में कोई भावना जगाए या दूसरे में कोई मनोरंजन पैदा किए। मेरे दादाजी ने उस वक्ता के बारे में स्वान से सवाल करना शुरू ही किया था कि मेरी दादी की बहनों में से एक, जिनके कानों में वह सवाल एक गंभीर लेकिन असमय चुप्पी की तरह गूंज रहा था, जिसे उनकी स्वाभाविक विनम्रता ने तोड़ने के लिए मजबूर किया, ने दूसरी से कहा:

"वाह, फ्लोरा! आज मेरी मुलाकात एक युवा स्वीडिश गवर्नेंस से हुई, जिसने मुझे स्कैंडिनेविया में सहकारी आंदोलन के बारे में कुछ बेहद रोचक बातें बताईं। हमें उसे किसी शाम यहाँ भोजन पर अवश्य आमंत्रित करना चाहिए।"

“बिल्कुल!” उसकी बहन फ्लोरा ने कहा, “लेकिन मैंने भी अपना समय व्यर्थ नहीं जाने दिया। एम. विंटेइल के यहाँ मेरी मुलाकात एक बहुत ही समझदार बुजुर्ग से हुई जो मौबंट को अच्छी तरह जानते हैं, और मौबंट ने उन्हें अपने किरदारों की तैयारी के बारे में हर छोटी-बड़ी बात बताई। यह अब तक की सबसे दिलचस्प बात है जो मैंने सुनी है। वह एम. विंटेइल के पड़ोसी हैं, और मुझे यह कभी पता नहीं था; और वह बहुत ही अच्छे इंसान भी हैं।”

"एम. विंटेइल अकेले ऐसे नहीं हैं जिनके पड़ोसी अच्छे हैं," मेरी चाची सेलीन ने झिझकते हुए कहा। उनकी आवाज़ तेज़ लग रही थी क्योंकि वे बहुत शर्मीली थीं, और बनावटी भी लग रही थी क्योंकि उन्होंने इस छोटे से भाषण की बहुत तैयारी की थी; बोलते-बोलते उन्होंने स्वान की ओर

एक 'खास नज़र' डाली। और मेरी चाची फ्लोरा, जो समझ गईं कि सेलीन का यह छिपा हुआ कथन स्वान को अस्ती के लिए स्पष्ट रूप से धन्यवाद देने का तरीका था, उन्होंने स्वान को बधाई और व्यंग्य के मिले-जुले भाव से देखा, शायद इसलिए कि वे अपनी बहन के इस छोटे से व्यंग्य को रेखांकित करना चाहती थीं, या इसलिए कि उन्हें स्वान से ईर्ष्या थी क्योंकि उन्होंने ही उन्हें यह व्यंग्य लिखने के लिए प्रेरित किया था, या शायद इसलिए कि उन्हें लगा कि स्वान शर्मिंदा हो गए हैं, और वे उन पर थोड़ा मज़ाक करने से खुद को रोक नहीं पाईं।

फ्लोरा ने आगे कहा, "मुझे लगता है कि इस बुजुर्ग सज्जन को रात के खाने पर बुलाना सार्थक रहेगा। जब आप उन्हें मौबंट या श्रीमती मटेर्ना के बारे में बात करने का मौका देंगी, तो वे घंटों तक बोलते रहेंगे।"

"यह तो बहुत आनंददायक होगा," मेरे दादाजी ने आह भरी, जिनके मन में दुर्भाग्यवश प्रकृति स्वीडन की महिलाओं के सहकारी आंदोलन या मौबंत द्वारा अपनी भूमिकाएँ निभाने के लिए अपनाए गए तरीकों में गहरी रुचि लेने की क्षमता को शामिल करना भूल गई थी, ठीक उसी तरह जैसे वह मेरी दादी की दोनों बहनों को उस अनमोल नमक का एक दाना देना भूल गई थी जिसे मोल या कॉम्टे डी पेरिस के निजी जीवन के वृत्तांत से कोई स्वाद निकालने के लिए स्वयं 'स्वादानुसार मिलाना' पड़ता है।

"अरे वाह!" स्वान ने मेरे दादाजी से कहा, "जो मैं आपको बताने जा रहा था, उसका आपके अभी पूछे गए सवाल से कहीं ज़्यादा संबंध है, जितना आप सोच रहे होंगे, क्योंकि कुछ मामलों में तो बहुत कम बदलाव आया है। आज सुबह मुझे सेंट-साइमन की किताब में एक ऐसा अंश मिला जो आपको ज़रूर पसंद आता। यह उस किताब में है जिसमें स्पेन में उनके मिशन का वर्णन है; यह उनकी सर्वश्रेष्ठ किताबों में से एक नहीं है, बल्कि एक डायरी से ज़्यादा कुछ नहीं है, लेकिन कम से कम यह एक अद्भुत ढंग

से लिखी गई डायरी है, जो इसे उस विनाशकारी पत्रकारिता से अलग करती है जिसे हम आजकल सुबह, दोपहर और रात पढ़ने के लिए मजबूर महसूस करते हैं।"

"मैं आपसे सहमत नहीं हूँ: कुछ दिन ऐसे होते हैं जब मुझे अखबार पढ़ना वाकई बहुत अच्छा लगता है!" मेरी चाची फ्लोरा ने बीच में टोकते हुए स्वान को दिखाया कि उन्होंने फिगारो में उनके कोरोट के बारे में लिखा नोट पढ़ लिया है।

"जी हां," आंटी सेलीन ने बात को और आगे बढ़ाते हुए कहा। "जब वे उन चीजों या लोगों के बारे में लिखते हैं जिनमें हमारी रुचि होती है।"

"मैं इससे इनकार नहीं करता," स्वान ने कुछ हैरानी से जवाब दिया। "मुझे हमारी पत्रकारिता में जो खामी नज़र आती है, वह यह है कि यह हमें हर दिन किसी न किसी नई तुच्छ बात में दिलचस्पी लेने के लिए मजबूर करती है, जबकि जीवन भर में केवल तीन या चार किताबें ही हमें कुछ ऐसा देती हैं जो वास्तव में महत्वपूर्ण हो। मान लीजिए कि हर सुबह, जब हम बुखार से तपते हाथों से अखबार का कवर फाड़ते हैं, तो एक रूपांतरण होता है, और हमें उसके अंदर मिलता है—ओह! मुझे नहीं पता; क्या हम इसे पास्कल के 'पेंसेज़' कह सकते हैं?" उन्होंने शीर्षक को व्यंग्यात्मक लहजे में उच्चारित किया ताकि वे विद्वतापूर्ण न लगें। “और फिर, उन सुनहरे और नक्काशीदार किताबों में, जिन्हें हम दस साल में एक बार खोलते हैं,” उन्होंने आगे कहा, दुनियावी चीज़ों के प्रति उस तिरस्कार को दिखाते हुए, जिसे दुनिया के कुछ लोग दिखावा करना पसंद करते हैं, “हम पढ़ते कि यूनानियों की रानी कान्स पहुँच गई हैं, या प्रिंसेस डी लियोन ने एक फैंसी ड्रेस बॉल का आयोजन किया है। इस तरह हम 'सूचना' और 'प्रचार' के बीच सही संतुलन पा लेंगे।” लेकिन तुरंत ही उन्हें इस बात का पछतावा हुआ कि उन्होंने मज़ाक में भी गंभीर विषयों पर

बात कर दी, और व्यंग्यपूर्वक कहा: “हमारी बातचीत बहुत मनोरंजक है; मुझे समझ नहीं आता कि हम इन ऊँची-ऊँची बातों पर क्यों चढ़ रहे हैं,” और फिर मेरे दादाजी की ओर मुड़कर बोले: “खैर, सेंट-साइमन बताते हैं कि कैसे मौलेवियर ने अपने बेटों को शादी का प्रस्ताव देने की हिम्मत की थी। आपको याद होगा कि वह मौलेवियर के बारे में कैसे कहते हैं, 'मैंने उस बदतमीज़ इंसान में बदमिजाज़ी, असभ्यता और मूर्खता के अलावा कुछ नहीं पाया।'”

"भले ही यह साधारण हो, मैं ऐसी बोतलों को पहचानती हूँ जिनमें कुछ बहुत ही अलग होता है!" फ्लोरा ने फुर्ती से कहा, स्वान और अपनी बहन दोनों को धन्यवाद देना उसका कर्तव्य था, क्योंकि अस्ती का उपहार उन दोनों के लिए ही था। सेलीन हंसने लगी।

स्वान असमंजस में थी, लेकिन उसने अपनी बात जारी रखी: "'मैं यह नहीं कह सकती कि यह उसकी अज्ञानता थी या कोई जाल,' सेंट-साइमन लिखते हैं; 'वह मेरे बच्चों को अपना हाथ देना चाहता था। मैंने समय रहते इसे भांप लिया और उसे रोक दिया।'"

मेरे दादाजी पहले से ही "अज्ञानता या जाल" को लेकर भावुक थे, लेकिन मिस सेलीन - सेंट-साइमन का नाम, जो एक 'साहित्यकार' थे और जिन्होंने अपनी श्रवण शक्ति के पूर्ण पक्षाघात को रोक लिया था - क्रोधित हो गई थीं।

"क्या! आप इसकी तारीफ़ करते हैं? ठीक है, यह काफ़ी चालाकी भरा है! लेकिन इसका मतलब क्या है? क्या उसका मतलब यह है कि एक आदमी दूसरे से कमतर है? इससे क्या फ़र्क पड़ता है कि वह ड्यूक है या नौकर, जब तक वह बुद्धिमान और नेक है? आपके संत-साइमन, उन्होंने अपने बच्चों की परवरिश बहुत अच्छे तरीके से की, अगर उन्होंने उन्हें सभी ईमानदार लोगों से हाथ मिलाना नहीं सिखाया। सचमुच, यह घिनौना है।

और आप इसे उद्धृत करने की हिम्मत करते हैं!"
और मेरे दादाजी, पूरी तरह से निराश होकर, यह महसूस करते हुए कि इस विरोध के सामने स्वान से उन कहानियों को सुनने का प्रयास कितना व्यर्थ होगा जो उन्हें मनोरंजक लगतीं, मेरी माँ से धीरे से बोले: "बस मुझे अपनी वह पंक्ति फिर से कह दो जो ऐसे अवसरों पर मुझे हमेशा बहुत सुकून देती है। ओह, हाँ:
हे प्रभु, तू हमें किन-किन गुणों से घृणा करना सिखाता है!
अच्छा, मतलब बहुत अच्छा।
मैंने अपनी माँ से नज़रें नहीं हटाईं। मुझे पता था कि जब वे खाने की मेज पर होंगी तो मुझे पूरे खाने के समय तक वहाँ रहने की अनुमति नहीं होगी, और माँ, मेरे पिता को नाराज़ करने के डर से, मुझे सबके सामने उतने चुंबन देने की अनुमति नहीं देंगी जितने वह मेरे कमरे में देतीं। इसलिए मैंने खुद से वादा किया कि भोजन कक्ष में, जैसे ही वे खाना-पीना शुरू करेंगी और जैसे ही मुझे समय नज़दीक आता महसूस होगा, मैं इस चुंबन में, जो कि बहुत संक्षिप्त और चुपके से होने वाला था, अपनी पूरी कोशिश करूँगा: मैं पहले बहुत ध्यान से उनके गाल पर वह सटीक जगह देखूँगा जहाँ मैं अपना चुंबन दूँगा, और अपने विचारों को इस तरह तैयार करूँगा कि इन मानसिक तैयारियों की बदौलत, मैं उस पूरे पल को, जब तक माँ मुझे अनुमति देंगी, अपने होठों पर उनके गाल के स्पर्श के लिए समर्पित कर सकूँ, ठीक वैसे ही जैसे एक चित्रकार जो थोड़े समय के लिए ही अपने विषय को देखता है, अपनी पैलेट तैयार करता है, और जो कुछ उसे याद है और मोटे-मोटे नोट्स से वह सब कुछ पहले से तैयार कर लेता है जो वह मॉडल की अनुपस्थिति में कर सकता है। लेकिन आज रात, खाने की घंटी बजने से पहले ही, मेरे दादाजी ने अनजाने में ही क्रूरता से कहा: "छोटा लड़का थका हुआ लग रहा है; उसे बिस्तर पर चले जाना चाहिए।

वैसे भी, आज रात हम देर से खाना खाएंगे।"
और मेरे पिता, जो संधि के शब्दों का पालन करने में मेरी दादी या माँ की तुलना में कम ईमानदार थे, आगे बोले: "हाँ, जाओ; बिस्तर पर चलते हैं।"
मैं उसी समय माँ को चूम लेता, लेकिन उसी क्षण खाने की घंटी बज गई।
"नहीं, नहीं, अपनी माँ को अकेला छोड़ दो। तुमने काफी बार शुभ रात्रि कह दी है। ये प्रदर्शनियाँ बेतुकी हैं। ऊपर जाओ।"
और इसलिए मुझे बिना भोजन के ही निकलना पड़ा; कहावत के अनुसार, मुझे सीढ़ियों का हर पायदान 'अपने दिल के विरुद्ध' चढ़ना पड़ा, अपने दिल की इच्छा के विपरीत, जो मेरी माँ के पास लौटना था, क्योंकि उसने अपने चुंबन से मेरे दिल को मेरे साथ जाने की अनुमति नहीं दी थी। वह घृणित सीढ़ी, जिस पर मैं हमेशा इतने डर के साथ चढ़ता था, वार्निश की गंध देती थी जिसने कुछ हद तक उस विशेष प्रकार के दुख को सोख लिया था, उसे निश्चित और स्थिर कर दिया था जो मैं हर शाम महसूस करता था, और शायद मेरी संवेदनशीलता के लिए इसे और भी क्रूर बना दिया था क्योंकि, जब यह गंधीय रूप धारण कर लेती थी, तो मेरी बुद्धि इसका विरोध करने में असमर्थ हो जाती थी। जब हम असहनीय दांत दर्द के साथ सो जाते हैं और हमें इसका एहसास केवल एक छोटी बच्ची की तरह होता है जिसे हम बार-बार पानी से निकालने की कोशिश करते हैं, या मोलियर की एक पंक्ति की तरह जिसे हम लगातार दोहराते रहते हैं, तो जागना एक बड़ी राहत होती है, ताकि हमारी बुद्धि दांत दर्द के विचार को किसी भी कृत्रिम वीरता या लयबद्ध ताल से अलग कर सके। मुझे जो राहत महसूस हुई, वह ठीक इसके विपरीत थी, जब अपने कमरे में जाने की मजबूरी से उपजे मेरे मन में एक बहुत ही तीव्र, लगभग क्षणिक, और कपटी तथा क्रूर तरीके से घर कर गई, जब मैंने उस सीढ़ी पर लगे वार्निश की अजीब गंध को साँस के साथ अंदर लिया - जो किसी भी नैतिक

अंतर्दृष्टि से कहीं अधिक जहरीली चीज थी।
अपने कमरे में पहुँचते ही मुझे हर संभव कोशिश करनी पड़ी, खिड़कियों के शटर बंद करने पड़े, चादरें ठीक करते हुए खुद को अपनी कब्र खोदनी पड़ी, और नाइटशर्ट में खुद को लपेटना पड़ा। लेकिन लोहे के पलंग में खुद को दफनाने से पहले, जो वहाँ इसलिए रखा गया था क्योंकि गर्मियों की रातों में चारपाई के पर्दे के बीच मुझे बहुत गर्मी लगती थी, मेरे मन में विद्रोह की भावना जागी और मैंने एक सज़ा पाए कैदी की तरह हताशा भरी चाल चलने की कोशिश की। मैंने अपनी माँ को पत्र लिखकर उनसे ऊपर आने की विनती की, एक ज़रूरी कारण से जिसे मैं लिखकर नहीं बता सकती थी। मुझे डर था कि मेरी चाची की रसोइया फ्रांस्वा, जो कॉम्ब्रे में मेरे रहने के दौरान मेरी देखभाल करती थी, मेरा पत्र लेने से मना कर सकती है। मुझे शक था कि उसकी नज़र में, कमरे में किसी अजनबी के होते हुए माँ को संदेश देना बिलकुल असंभव होगा, ठीक वैसे ही जैसे किसी थिएटर के द्वारपाल के लिए मंच पर मौजूद अभिनेता को पत्र देना असंभव होता है। जिन चीजों को किया जा सकता था या नहीं किया जा सकता था, उनके लिए उसके पास एक ऐसा नियम-कानून था जो एक साथ ही बाध्यकारी, व्यापक, सूक्ष्म और उन बिंदुओं पर भी अडिग था जो स्वयं अगोचर या अप्रासंगिक थे, जिससे यह उन प्राचीन कानूनों से मिलता-जुलता था जिनमें शिशुओं को स्तनपान कराते समय मारने जैसे क्रूर अध्यादेशों के साथ-साथ "बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में उबालने" या "जांघ के खोखले भाग पर स्थित नस खाने" जैसे अतिरंजित प्रतिबंधों का संयोजन होता था। यदि कोई हमारे कुछ निर्देशों का पालन करने से इनकार करने में उसके अचानक हठ को देखकर इसका अंदाजा लगा सकता था, तो ऐसा प्रतीत होता था कि इस नियम-कानून ने सामाजिक जटिलताओं और फैशन की बारीकियों को पहले ही भांप लिया

था, जो फ्रांकोइस के परिवेश या एक ग्रामीण घर में नौकरानी के रूप में उसके करियर में उसके दिमाग में नहीं आ सकती थीं। और हमें यह मान लेना पड़ा कि फ्रांस के प्राचीन इतिहास में उसका कोई अतीत रहा होगा, जो महान और कम समझा गया होगा, ठीक वैसे ही जैसे उन विनिर्माण शहरों में है जहां पुरानी हवेलियां अभी भी अपने पूर्व दरबारी दिनों की गवाही देती हैं, और रासायनिक श्रमिक थियोफिलस के चमत्कार या क्वात्रे फिल्स आयमोन के नाजुक रूप से गढ़ी गई दृश्यों के बीच काम करते हैं।

इस विशेष मामले में, उनके आचरण का वह अनुच्छेद, जिसके कारण यह अत्यधिक असंभव था कि—आग लगने की घटना को छोड़कर—फ्रांकोइस नीचे जाकर माँ को परेशान करेंगी, जबकि एम. स्वान वहाँ मौजूद थे, मेरे जैसे एक महत्वहीन व्यक्ति के लिए, वह सम्मान उनके द्वारा न केवल परिवार के प्रति (मृतकों, पादरियों या राजघराने के प्रति) बल्कि हमारे द्वार के भीतर आए अजनबी के प्रति भी दिखाया गया था; एक ऐसा सम्मान जिसे शायद मैं किसी किताब में मार्मिक पाता, लेकिन जो उनके मुख से निकलने पर मुझे हमेशा चिढ़ाता था, क्योंकि वह इसे गंभीर और कोमल स्वर में बोलती थीं, और जिसने मुझे आज शाम को सामान्य से अधिक चिढ़ाया, क्योंकि रात्रिभोज को उन्होंने जो पवित्र दर्जा दिया था, उसके कारण शायद वह इसकी रस्मों को भंग करने से इनकार कर देतीं। लेकिन सफलता की एक भी उम्मीद रखने के लिए मैंने बिना किसी झिझक के झूठ बोल दिया। मैंने उससे कहा कि माँ को पत्र लिखने की इच्छा मुझे नहीं थी, बल्कि माँ को थी। माँ ने मुझे शुभ रात्रि कहते हुए मुझसे विनती की थी कि मैं उन्हें उस चीज़ का जवाब भेजना न भूलूँ जो उन्होंने मुझे ढूंढने के लिए कहा था, और यह भी कहा था कि अगर यह पत्र उन तक नहीं पहुँचाया गया तो वे बहुत नाराज़ होंगी। मुझे लगता है

कि फ्रांस्वा ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया, क्योंकि उन आदिम मनुष्यों की तरह जिनकी इंद्रियाँ हमारी तुलना में कहीं अधिक तीव्र थीं, वह हम सभी के लिए अदृश्य संकेतों से ही किसी भी बात की सच्चाई या झूठ का तुरंत पता लगा सकती थी जिसे हम उससे छिपाना चाहते थे। उसने पाँच मिनट तक लिफाफे को ऐसे देखा मानो कागज़ और मेरी लिखावट को देखकर ही उसे अंदर लिखी बातों का पता चल जाएगा, या उसे पता चल जाएगा कि उसे अपने कानून के किस अनुच्छेद के तहत इस मामले को देखना चाहिए। फिर वह एक हताश भाव से बाहर चली गई, मानो वह कह रही हो: "माता-पिता के लिए ऐसे बच्चे का होना कितना भयानक होता है!"

कुछ देर बाद वह लौटकर बोली कि वे अभी भी बर्फ़ जमा रहे हैं और बटलर के लिए सबके सामने तुरंत नोट देना असंभव है; लेकिन जब खाने के कटोरे रख दिए जाएँगे तो वह माँ के हाथ में नोट देने का कोई न कोई तरीका निकाल लेगा। मेरी चिंता तुरंत शांत हो गई; अब वह बात नहीं रही (जैसा कि कुछ देर पहले था) कि मैं कल तक अपनी माँ को नहीं खोऊँगी, क्योंकि मेरी छोटी सी बात—निस्संदेह उन्हें परेशान करेगी, और इसलिए भी क्योंकि इस तरकीब से मैं स्वान की नज़रों में हास्यास्पद बन जाऊँगी —लेकिन फिर भी मुझे चुपके से और अदृश्य रूप से उनके कमरे में ले जाएगी, मेरे कान में फुसफुसाएगी; उस वर्जित और अमित्र भोजन कक्ष के लिए, जहाँ कुछ क्षण पहले तक जले हुए मेवों से भरी बर्फ और फिंगर बाउल मुझे ऐसे लग रहे थे मानो वे किसी शरारती और गहरे दुख से भरे सुख को छुपा रहे हों, क्योंकि माँ उनका स्वाद ले रही थीं और मैं बहुत दूर था, अब उसने मेरे लिए अपने द्वार खोल दिए थे और एक पके फल की तरह जो अपनी त्वचा को फाड़कर बाहर निकलता है, मेरे मदहोश हृदय में माँ के स्नेह की उमंग भर देने वाला था, जब वह मेरे लिखे हुए को पढ़ रही

थीं। अब मैं उनसे अलग नहीं था; सारी बाधाएँ हट गई थीं; एक कोमल धागा हमें बाँध रहा था। और इतना ही नहीं, माँ अवश्य ही आएँगी।

जिस पीड़ा से मैं अभी गुज़रा था, उसके बारे में मैंने सोचा था कि अगर स्वान ने मेरा पत्र पढ़ा होता और उसका उद्देश्य समझ लिया होता, तो वह उस पर दिल खोलकर हँसता; जबकि, इसके विपरीत, जैसा कि मुझे बाद में पता चला, ऐसी ही पीड़ा कई वर्षों से उसके जीवन का अभिशाप रही थी, और शायद उस समय मेरी भावनाओं को उससे बेहतर कोई नहीं समझ सकता था; उसके लिए, यह पीड़ा कि जिसे हम प्यार करते हैं वह किसी ऐसे आनंदमय स्थान पर है जहाँ हम नहीं हैं और न ही जा सकते हैं —उसके लिए वह पीड़ा प्रेम से उत्पन्न होती है, जिसके लिए यह एक अर्थ में पूर्वनिर्धारित है, जिसके द्वारा इसे सुसज्जित और अनुकूलित किया जाना चाहिए; लेकिन जब, जैसा कि मेरे साथ हुआ था, ऐसी पीड़ा किसी की आत्मा को प्रेम के आने से पहले ही जकड़ लेती है, तब वह प्रेम के आने की प्रतीक्षा में, अस्पष्ट और स्वतंत्र रूप से, बिना किसी निश्चित लगाव के, भटकती रहती है, आज एक भावना के अधीन, कल दूसरी, पितृभक्ति या किसी साथी के प्रति स्नेह के अधीन। और जिस खुशी से मैंने पहली बार प्रशिक्षु बनने का वादा किया था, जब फ्रांस्वा ने लौटकर मुझे बताया कि मेरा पत्र पहुंचा दिया गया है; स्वान भी उस झूठी खुशी को अच्छी तरह जानता था जो एक दोस्त या हमारी प्रेमिका के किसी रिश्तेदार से मिल सकती है, जब वह उस घर या थिएटर में पहुंचता है जहां वह किसी बॉल या पार्टी या 'फर्स्ट नाइट' के लिए आई होती है और हमें बाहर भटकते हुए देखता है, उससे बात करने के किसी मौके की बेसब्री से प्रतीक्षा करते हुए। वह हमें पहचान लेता है, हमारा आत्मीयता से अभिवादन करता है और पूछता है कि हम वहां क्या कर रहे हैं। और जब हम उसके रिश्तेदार या दोस्त को कोई ज़रूरी संदेश देने का बहाना बनाते

हैं, तो वह हमें यकीन दिलाता है कि इससे ज़्यादा आसान कुछ नहीं हो सकता, हमें अंदर ले जाता है और वादा करता है कि वह उसे पांच मिनट में हमारे पास भेज देगा। हम उससे कितना प्यार करते हैं—जैसे उस पल मैंने फ्रांस्वा से प्यार किया था—वह नेक दिल मध्यस्थ जिसने एक शब्द से उस अकल्पनीय, नरक जैसी खुशी के दृश्य को सहनीय, मानवीय, लगभग अनुकूल बना दिया, जिसके बीच हम दुश्मनों के झुंड की कल्पना कर रहे थे, विकृत और मोहक, जो हमसे दूर ले जा रहे थे, यहाँ तक कि हम पर हँस रहे थे, उस महिला पर जिसे हम प्यार करते हैं। अगर हम उनके बारे में उससे, इस रिश्तेदार से, जिसने हमसे बात की है और जो खुद उन क्रूर रहस्यों का ज्ञाता है, आकलन करें, तो अन्य मेहमान इतने राक्षसी नहीं हो सकते। वे दुर्गम और यातनापूर्ण घंटे जिनमें वह अज्ञात सुखों का स्वाद चखने गई थी—देखो, दीवार में एक दरार, और हम उससे पार हो गए। देखो, उन क्षणों में से एक जिनकी श्रृंखला उनका योग बनाएगी, एक ऐसा क्षण जो बाकी क्षणों जितना ही वास्तविक है, बल्कि वास्तव में हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारी प्रेमिका इसमें अधिक गहराई से शामिल है; हम इसकी कल्पना अपने मन में करते हैं, इसे अपना बना लेते हैं, इसमें दखल देते हैं, मानो हमने इसे रच ही दिया हो: यानी वह पल जब वह उसे यह बताने जाता है कि हम नीचे उसका इंतज़ार कर रहे हैं। और संभवतः पार्टी के बाकी पल भी कुछ खास अलग नहीं होंगे, उनमें ऐसा कुछ और नहीं होगा जो इतना मनमोहक हो या हमें इतना पीड़ा पहुँचा सके, क्योंकि इस भले दोस्त ने हमें भरोसा दिलाया है कि "बेशक, वह नीचे आकर बहुत खुश होगी! ऊपर बोर होने से कहीं ज़्यादा मज़ेदार होगा आपसे बात करना।" अफसोस! स्वान ने अपने अनुभव से सीखा था कि किसी तीसरे व्यक्ति के अच्छे इरादे उस औरत को काबू में नहीं कर सकते जो इस बात से नाराज़ हो जाती है कि एक

ऐसा आदमी उसका पीछा कर रहा है जिसे वह प्यार नहीं करती, यहाँ तक कि बॉल रूम तक भी। अक्सर, वह भले दोस्त अकेले ही वापस नीचे आ जाता है।

मेरी माँ प्रकट नहीं हुईं, लेकिन मेरे आत्मसम्मान की रक्षा करने का कोई प्रयास किए बिना (जो इस बात पर निर्भर था कि वह यह झूठ बोलती रहें कि उन्होंने मुझसे किसी चीज़ की खोज के परिणाम के बारे में बताने के लिए कहा था) फ्रांस्वा ने मुझसे स्पष्ट शब्दों में कहा, "कोई उत्तर नहीं है"—ये शब्द मैंने तब से कई बार 'हवेलियों' के हॉल-पोर्टर्स और जुआघरों के चापलूसों को किसी बेचारी लड़की से दोहराते हुए सुना है, जो हैरानी से जवाब देती है: "क्या! उसने कुछ नहीं कहा? यह संभव नहीं है। आपने उसे मेरा पत्र दिया था, है ना? ठीक है, मैं थोड़ी देर और इंतज़ार करूँगी।" और जैसे ही वह हमेशा की तरह विरोध करती है कि उसे अतिरिक्त गैस की ज़रूरत नहीं है जो पोर्टर उसे जलाने के लिए देता है, और वहीं बैठी रहती है, आगे कुछ नहीं सुनती, सिवाय मौसम पर कभी-कभार की गई टिप्पणी के जो पोर्टर एक संदेशवाहक के साथ करता है जिसे वह समय देखकर अचानक किसी ग्राहक की शराब बर्फ पर रखने के लिए भेज देता है; इसलिए, फ्रांस्वा के मुझे चाय बनाकर देने या मेरे पास रुकने के प्रस्ताव को ठुकराते हुए, मैंने उसे नौकरों के हॉल में वापस जाने दिया, और लेटकर अपनी आँखें बंद कर लीं, और बगीचे में कॉफी पी रहे अपने परिवार की आवाज़ों को न सुनने की कोशिश की।

लेकिन कुछ ही क्षणों में मुझे एहसास हुआ कि माँ को वह पंक्ति लिखकर, उनके नाराज़ होने के जोखिम पर भी उनके इतने करीब जाकर, जहाँ मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं हाथ बढ़ाकर उस पल को थाम सकता हूँ जब मैं उन्हें फिर से देख सकूँ, मैंने खुद को तब तक सोने की संभावना से वंचित कर दिया था जब तक मैं वास्तव में उन्हें देख नहीं लेता। मेरा

दिल और भी दर्द से धड़कने लगा क्योंकि मैं खुद को शांत रहने और अपनी बदकिस्मती को स्वीकार करने का आदेश देकर अपनी बेचैनी बढ़ा रहा था। फिर अचानक, मेरी चिंता शांत हो गई, एक तीव्र खुशी की भावना मुझमें दौड़ गई, जैसे कोई तेज़ दवा असर करने लगती है और दर्द गायब हो जाता है: मैंने माँ को देखे बिना सोने की हर कोशिश छोड़ने का संकल्प कर लिया था, और हर कीमत पर उन्हें चूमने का फैसला कर लिया था, भले ही मुझे यह पता था कि जब वह खुद बिस्तर पर आएंगी तो मुझे लंबे समय तक उनके सामने शर्मिंदा होना पड़ेगा। मेरी पीड़ा के बाद जो शांति आई, उसने मुझे बेहद सतर्क कर दिया, मेरी उम्मीद, मेरी प्यास और खतरे के डर से कम नहीं।

मैंने चुपचाप खिड़की खोली और अपने पलंग के पास बैठ गया; हिलने की हिम्मत भी नहीं हो रही थी, कहीं नीचे से कोई मुझे सुन न ले। बाहर की चीज़ें भी मानो मौन प्रतीक्षा में स्थिर थीं, मानो चाँदनी को भंग न कर रही हों। चाँदनी हर चीज़ को प्रतिबिंबित कर रही थी और अपनी घनी और ठोस छाया से उसे पीछे धकेल रही थी, जिससे पूरा परिदृश्य एक साथ पतला और लंबा प्रतीत हो रहा था, मानो कोई नक्शा मोड़ने के बाद ज़मीन पर फैला दिया गया हो। जो हिलना था—जैसे शाहबलूत के पेड़ का पत्ता—वह हिल रहा था। लेकिन उसका सूक्ष्म कंपन, पूर्ण, सूक्ष्मतम विवरण तक और अत्यंत कोमलता से, दृश्य के बाकी हिस्सों से बेमेल नहीं था, फिर भी उसमें विलीन नहीं हुआ, स्पष्ट रूप से रेखांकित बना रहा। इस खामोशी की सतह पर, जो उनसे कुछ भी अवशोषित नहीं करती थी, सबसे दूर की आवाज़ें, जो निश्चित रूप से शहर के सुदूर छोर पर स्थित बगीचों से आ रही होंगी, इतनी सटीकता से पहचानी जा सकती थीं कि दूर से आने का उनका आभास केवल उनके अत्यंत धीमे वादन के कारण ही प्रतीत होता था, ठीक वैसे ही जैसे संगीत रचना के दौरान

कंजर्वेटरी के ऑर्केस्ट्रा द्वारा म्यूट स्ट्रिंग्स पर इतनी कुशलता से बजाए गए वे स्वर, कि यद्यपि कोई एक भी स्वर नहीं चूकता, फिर भी ऐसा लगता है कि वे कहीं बाहर, कॉन्सर्ट हॉल से बहुत दूर बजाए जा रहे हैं, इसलिए सभी पुराने ग्राहक, और मेरी दादी की बहनें भी, जब स्वान ने उन्हें अपनी सीटें दी थीं, अपने कान ऐसे गड़ाए रहते थे मानो उन्होंने मार्च करती हुई सेना की दूर से आती हुई आहट सुन ली हो, जो अभी तक रुए डे ट्रेविस के कोने से नहीं गुजरी थी।

मुझे भली-भांति पता था कि मैंने खुद को ऐसी स्थिति में डाल दिया है जिससे मेरे माता-पिता मुझे इससे भी गंभीर परिणाम भुगतने पर मजबूर कर सकते हैं; ऐसे परिणाम जो किसी अजनबी की कल्पना से भी कहीं अधिक गंभीर होंगे, और ऐसे परिणाम (जैसा कि वह सोचता) केवल किसी बेहद शर्मनाक गलती के बाद ही हो सकते हैं। लेकिन जिस शिक्षा प्रणाली में मुझे पढ़ाया गया था, उसमें गलतियों को अन्य बच्चों की तरह वर्गीकृत नहीं किया गया था, और मुझे सिखाया गया था कि सूची में सबसे ऊपर उन गलतियों को रखूं (निस्संदेह इसलिए क्योंकि गलतियों का कोई और वर्ग नहीं था जिससे मुझे अधिक सावधानी से बचाने की आवश्यकता थी) जिनमें अब मैं यह सामान्य विशेषता देख सकता हूं कि व्यक्ति किसी भावनात्मक आवेग के आगे झुककर उनके वश में हो जाता है। लेकिन ये अंतिम शब्द मेरे सामने कभी नहीं बोले गए थे; किसी ने भी अभी तक मेरे प्रलोभनों का ऐसा कारण नहीं बताया था जिससे मुझे यह विश्वास हो सके कि उनके आगे झुकने का कोई बहाना है, या वास्तव में मैं उनका सामना करने में असमर्थ हूं। फिर भी, मैं इस तरह के अपराधों को उनके पहले होने वाली मानसिक पीड़ा और उनके बाद मिलने वाली कठोर सजा से आसानी से पहचान सकता था; और मैं जानता था कि मैंने जो किया था वह उन कुछ अन्य पापों की श्रेणी में आता था जिनके लिए मुझे

कड़ी सजा मिली थी, हालांकि यह उनसे कहीं अधिक गंभीर था। जब मैं अपनी माँ से मिलने बाहर गया, जब वह खुद बिस्तर पर आई थीं, और जब उन्होंने देखा कि मैं गलियारे में उन्हें फिर से शुभ रात्रि कहने के लिए जागा रहा, तो मुझे एक दिन भी घर में रहने की अनुमति नहीं दी जाएगी, मुझे अगली सुबह स्कूल भेज दिया जाएगा; यह निश्चित था। बहुत अच्छा: अगर मुझे अगले ही पल खिड़की से कूदना पड़ता, तब भी मैं उस भाग्य को ही चुनता। क्योंकि अब मुझे माँ चाहिए थी, और उन्हें शुभ रात्रि कहना था। मैं इस इच्छा की पूर्ति की ओर ले जाने वाले रास्ते पर इतना आगे बढ़ चुका था कि अब पीछे हटना संभव नहीं था।

मुझे अपने माता-पिता के कदमों की आहट सुनाई दे रही थी जब वे स्वान के साथ गए; और जब गेट की खड़खड़ाहट से मुझे यकीन हो गया कि वह सचमुच चला गया है, तो मैं खिड़की के पास चुपके से गया। माँ मेरे पिताजी से पूछ रही थीं कि उन्हें लॉबस्टर कैसा लगा, और क्या मिस्टर स्वान ने कॉफी और पिस्ता वाली आइसक्रीम खाई थी। "मुझे तो यह ठीक-ठाक लगी," वह कह रही थीं; "अगली बार हमें कोई दूसरा फ्लेवर आज़माना होगा।"

मेरी बड़ी चाची ने कहा, "मैं आपको बता नहीं सकती, स्वान में कितना बदलाव आया है! वह बिल्कुल पुराने ख्यालों का हो गया है!" उन्हें स्वान को हमेशा किशोरावस्था के एक ही दौर में देखने की इतनी आदत हो गई थी कि उसे अचानक अपनी उम्र से कम जवान देखकर उन्हें गहरा सदमा लगा। और बाकी लोग भी स्वान में वह असामान्य, हद से ज़्यादा, शर्मनाक बुढ़ापा देखने लगे थे, जो केवल एक अविवाहित व्यक्ति में ही देखने को मिलता है, उस वर्ग के व्यक्ति में जिसके लिए ऐसा लगता है कि आने वाला दिन दूसरों की तुलना में लंबा होगा, क्योंकि उसके लिए यह उम्मीदों से परे है, और इसकी शुरुआत से ही पल लगातार जमा होते

रहते हैं, बिना उसके बच्चों में बँटवाए।
"मुझे लगता है कि उसे अपनी उस बदकिस्मत पत्नी से बहुत परेशानी है, जो एक खास मिस्टर डी चार्लस के साथ 'रहती' है, जैसा कि कॉम्ब्रे के सभी लोग जानते हैं। यही बात पूरे शहर में चर्चा का विषय है।"
मेरी माँ ने गौर किया कि इन सब के बावजूद, वह हाल के दिनों में पहले से काफी कम दुखी दिख रहा था। "और वह अब अपने पिता की तरह आँखें पोंछने और माथे पर हाथ फेरने की अपनी आदत भी पहले की तरह बार-बार नहीं करता। मुझे लगता है कि वह अपने मन ही मन अपनी पत्नी से अब प्यार नहीं करता।"
“क्यों, बिलकुल नहीं,” मेरे दादाजी ने उत्तर दिया। “उन्होंने मुझे इस बारे में बहुत पहले एक पत्र लिखा था, जिस पर मैंने जानबूझकर ध्यान नहीं दिया, लेकिन उससे उनके भावों के बारे में कोई संदेह नहीं रह गया, उनकी पत्नी के प्रति उनके प्रेम का तो जिक्र ही नहीं। अरे! तुम दोनों; तुमने उन्हें अस्ती के लिए धन्यवाद भी नहीं दिया!” उन्होंने अपनी साली की ओर मुड़ते हुए कहा।
"क्या! हमने उन्हें धन्यवाद नहीं दिया? मुझे लगता है, सच कहूँ तो, मैंने उन्हें यह बात बड़े ही सलीके से कह दी थी," मेरी चाची फ्लोरा ने जवाब दिया।
"हां, तुमने इसे बहुत अच्छे से संभाला; मैं इसके लिए तुम्हारी प्रशंसा करती हूं," मेरी चाची सेलीन ने कहा।
"लेकिन आपने इसे बहुत खूबसूरती से भी किया।"
"हां; मुझे 'अच्छे पड़ोसियों' के बारे में अपनी अभिव्यक्ति पसंद आई।"
"क्या! इसे धन्यवाद कहना कहते हो?" मेरे दादाजी चिल्लाए। "मैंने सुना तो सही, लेकिन मुझे बिल्कुल नहीं पता कि ये स्वान के लिए था। तुम यकीन मानो, उसने इस पर ध्यान ही नहीं दिया होगा।"

"अरे, अरे; स्वान बेवकूफ नहीं है। मुझे पूरा यकीन है कि उसे तारीफ अच्छी लगी होगी। आपने मुझसे यह उम्मीद नहीं की होगी कि मैं उसे बोतलों की संख्या बताऊं या यह अनुमान लगाऊं कि उसने उनके लिए कितना भुगतान किया।"

मेरे माता-पिता अकेले रह गए और थोड़ी देर के लिए बैठ गए; फिर मेरे पिता ने कहा: "अच्छा, क्या हम सोने चलें?"

"जैसी आपकी इच्छा, प्रिय, हालांकि मुझे बिल्कुल भी नींद नहीं आ रही है। पता नहीं क्यों; ये कॉफी की वजह से तो नहीं हो सकता—बर्फ वाली कॉफी इतनी तेज़ नहीं थी कि मुझे इस तरह जगाए रखे। लेकिन मुझे नौकरों के हॉल में एक रोशनी दिख रही है: बेचारी फ्रांस्वा मेरे लिए जाग रही है, इसलिए मैं उससे कहूँगी कि वो मुझे खोल दे, जबकि आप जाकर कपड़े उतार लें।"

मेरी माँ ने हॉल से सीढ़ियों की ओर जाने वाला जालीदार दरवाज़ा खोला। थोड़ी देर में मैंने उन्हें ऊपर आकर खिड़की बंद करते सुना। मैं चुपचाप गलियारे में चला गया; मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि मैं मुश्किल से हिल पा रहा था, लेकिन कम से कम अब वह चिंता से नहीं, बल्कि डर और खुशी से धड़क रहा था। मैंने सीढ़ियों के बीच में ऊपर की ओर आती हुई रोशनी देखी, जो माँ की मोमबत्ती से आ रही थी। फिर मैंने माँ को देखा: मैं उन पर गिर पड़ा। एक पल के लिए उन्होंने मुझे हैरानी से देखा, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो गया है। फिर उनके चेहरे पर गुस्से का भाव आ गया। उन्होंने मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा; और वैसे भी, मैं इससे कहीं कम गलतियों के लिए भी कई दिनों तक बिना बात किए रह जाता था। माँ का एक शब्द भी इस बात की स्वीकारोक्ति होती कि मुझसे आगे बातचीत संभव है, और शायद यह मुझे और भी भयानक लगता, क्योंकि इससे पता चलता कि मेरे लिए जो सज़ा तय थी,

उसके सामने सिर्फ़ चुप्पी और यहाँ तक कि गुस्सा भी बचकाना था।
उस समय उसके एक शब्द से उस झूठी शांति का आभास होता, जो किसी नौकर से बातचीत करते समय दिखाई जाती है, जिसे अभी-अभी नोटिस देने का फैसला किया गया हो; उस चुंबन का आभास जो किसी बेटे को दिया जाता है जिसे सेना में भर्ती होने के लिए भेजा जा रहा हो, जो उसे नहीं दिया जाता अगर बात सिर्फ कुछ दिनों के लिए उससे नाराज़ होने की होती। लेकिन उसने मेरे पिता को ड्रेसिंग रूम से आते हुए सुना, जहाँ वे अपने कपड़े उतारने गए थे, और मुझे देखकर होने वाले 'तमाशे' से बचने के लिए, उसने गुस्से से दबी हुई आवाज़ में कहा: "तुरंत भाग जाओ। अपने पिता को तुम्हें वहाँ पागल औरत की तरह खड़े मत देखने दो!"
लेकिन मैं डर के मारे उससे फिर विनती करने लगी, "आओ और मुझे शुभ रात्रि कहो!" मैं अपने पिता की मोमबत्ती की रोशनी को दीवार पर चढ़ते देख बहुत भयभीत थी, और साथ ही उनके आने का फायदा उठाकर उन्हें ब्लैकमेल करने की कोशिश कर रही थी। मुझे उम्मीद थी कि मेरी माँ, जो नहीं चाहती थी कि वह मुझे वहाँ देखें (क्योंकि अगर वह आनाकानी करती रही तो वह मुझे ज़रूर देख लेंगे), मेरी बात मान लेंगी और कहेंगी: "अपने कमरे में वापस जाओ। मैं आती हूँ।"
बहुत देर हो चुकी थी: मेरे पिता हम पर टूट पड़े थे। सहज ही मैंने धीरे से कहा, हालांकि किसी ने नहीं सुना, "मैं तो गया काम से!"
लेकिन मैं ऐसा नहीं था। मेरे पिता मुझे वे काम करने से लगातार रोकते थे जो मेरी माँ और दादी द्वारा मुझे दिए गए उदार अधिकारों के अनुसार स्पष्ट रूप से जायज़ थे, क्योंकि वे 'सिद्धांतों' पर ध्यान नहीं देते थे और उनकी नज़र में 'मानवाधिकार' जैसी कोई चीज़ नहीं थी। किसी बेतुके कारण से, या बिना किसी कारण के, वे आखिरी क्षण में मुझे किसी विशेष सैर पर

जाने से रोक देते थे, जो मेरे लिए इतनी नियमित और पवित्र थी कि उससे मुझे वंचित करना विश्वासघात के समान था; या फिर, जैसा कि उन्होंने आज शाम किया, तय समय से बहुत पहले ही वे गुस्से में कहते: "अभी बिस्तर पर जाओ; कोई बहाना नहीं चलेगा!" लेकिन फिर भी, चूंकि वे सिद्धांतों से रहित थे (मेरी दादी के अनुसार), इसलिए उन्हें सही मायने में कठोर नहीं कहा जा सकता था। उसने कुछ पल के लिए झुंझलाहट और हैरानी भरे भाव से मेरी तरफ देखा, और फिर जब माँ ने उसे कुछ शर्मिंदगी के साथ बताया कि क्या हुआ था, तो उसने माँ से कहा: "ठीक है, उसके साथ जाओ; तुमने अभी कहा था कि तुम्हें नींद नहीं आ रही है, तो थोड़ी देर उसके कमरे में ही रहो। मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

"लेकिन प्यारे," मेरी माँ ने झिझकते हुए उत्तर दिया, "मुझे नींद आ रही है या नहीं, यह मुद्दा नहीं है; हमें बच्चे को इसकी आदत नहीं डालनी चाहिए..."

“उसे आदत डालने का तो सवाल ही नहीं उठता,” मेरे पिता ने कंधे उचकाते हुए कहा; “तुम अच्छी तरह देख सकते हो कि बच्चा नाखुश है। आखिर हम जेलर तो हैं नहीं। तुम उसे बीमार ही कर दोगे, और उससे क्या फायदा होगा। उसके कमरे में दो पलंग हैं; फ्रांस्वा से कहो कि वह तुम्हारे लिए बड़ा पलंग तैयार कर दे, और तुम रात भर उसके पास ही रहना। मैं तो वैसे भी सोने जा रहा हूँ; मैं तुम्हारी तरह घबराया हुआ नहीं हूँ। शुभ रात्रि।”

मेरे लिए अपने पिता को धन्यवाद देना असंभव था; मेरी भावुकता उन्हें और भी क्रोधित कर देती। मैं वहाँ खड़ी रही, हिलने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी; वे अब भी हमारे सामने थे, अपनी सफेद नाइटशर्ट में एक विशालकाय आकृति, भारतीय कश्मीरी ऊन के गुलाबी और बैंगनी दुपट्टे से सिर ढके हुए, जिसमें वे नसों के दर्द से पीड़ित होने के बाद से अपना

सिर बाँधते थे, बेनोज़्ज़ो गोज़ोली की उस नक्काशी में अब्राहम की तरह खड़े थे जो एम. स्वान ने मुझे दी थी, सारा से कह रहे थे कि उसे इसहाक से खुद को अलग करना होगा। उस रात को कई साल बीत चुके हैं। सीढ़ियों की वह दीवार, जिस पर मैंने उनकी मोमबत्ती की रोशनी को धीरे-धीरे चढ़ते देखा था, बहुत पहले ही ध्वस्त हो चुकी है। और मेरे भीतर भी, कई चीजें नष्ट हो चुकी हैं, जिनके बारे में मैंने सोचा था कि वे हमेशा रहेंगी, और नई संरचनाएं खड़ी हो गई हैं, नए दुखों और नए सुखों को जन्म दे रही हैं, जिनकी उन दिनों मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी, ठीक वैसे ही जैसे अब पुरानी बातें समझना मुश्किल है। बहुत समय हो गया है जब मेरे पिता माँ से कह पाए हैं, "बच्चे के साथ जाओ।" अब मेरे लिए ऐसे पल फिर कभी मुमकिन नहीं होंगे। लेकिन हाल ही में, अगर मैं ध्यान से सुनूँ, तो मुझे वो सिसकियाँ सुनाई देने लगी हैं जिन्हें मैं अपने पिता की मौजूदगी में बड़ी मुश्किल से रोक पाती थी, और जो सिर्फ़ माँ के साथ अकेले होने पर फूट पड़ती थीं। असल में, उनकी गूँज कभी बंद नहीं हुई: बस अब मेरे आस-पास का जीवन धीरे-धीरे शांत होता जा रहा है, इसलिए मुझे वो फिर से सुनाई देने लगी हैं, ठीक वैसे ही जैसे मठ की घंटियाँ जो दिन के समय सड़कों के शोर में इतनी दब जाती हैं कि ऐसा लगता है मानो हमेशा के लिए बंद हो गई हों, जब तक कि वो शांत शाम की हवा में फिर से सुनाई न देने लगें।

माँ ने वह रात मेरे कमरे में बिताई: जब मैंने एक ऐसा घोर पाप किया था जिसके लिए मुझे घर से निकाल दिया जाना तय था, तब भी मेरे माता-पिता ने मुझे एक ऐसी रियायत दी जो मुझे किसी अच्छे कर्म के इनाम के रूप में कभी नहीं मिल सकती थी। यहाँ तक कि जब यह असीम दया मेरे सामने प्रकट हुई, तब भी मेरे पिता का व्यवहार कुछ हद तक मनमाना था, और मेरे कर्मों की परवाह नहीं करता था, जैसा कि उनका स्वभाव था और

इसका कारण यह था कि उनके कार्य आम तौर पर किसी औपचारिक योजना के बजाय आकस्मिक परिस्थितियों से प्रेरित होते थे। और शायद, जब वे मुझे सोने भेजते थे, तो जिसे मैं उनकी सख्ती कहता था, वह वास्तव में मेरी माँ या दादी के रवैये से कम उचित थी, क्योंकि उनका स्वभाव, जो कुछ मामलों में मुझसे और उनकी माँ के स्वभाव से अधिक भिन्न था, शायद उन्हें तब तक यह समझने से रोक रहा था कि मैं हर शाम कितना दुखी होता था, एक ऐसी बात जो मेरी माँ और दादी अच्छी तरह जानती थीं; लेकिन वे मुझसे इतना प्यार करती थीं कि वे मुझे उस पीड़ा से बचाना नहीं चाहती थीं, जिसे वे मुझे सिखाना चाहती थीं ताकि मैं उस पर काबू पा सकूँ, मेरी मानसिक संवेदनशीलता को कम कर सकूँ और मेरी इच्छाशक्ति को मजबूत कर सकूँ। मेरे पिता, जिनका मेरे प्रति स्नेह एक अलग ही प्रकार का था, मुझे संदेह है कि वे इतना साहस दिखा पाते, क्योंकि जैसे ही उन्हें पता चला कि मैं दुखी हूँ, उन्होंने मेरी माँ से कहा: "जाओ और उसे दिलासा दो।" माँ पूरी रात मेरे कमरे में रहीं, और ऐसा लगा कि वे उन पलों को दोषारोपण से खराब नहीं करना चाहती थीं, जो मेरी उम्मीदों से बिल्कुल अलग थे; क्योंकि जब फ्रांस्वा (जिन्होंने माँ को मेरे पास बैठे, मेरा हाथ पकड़े और मुझे बेहिचक रोने देते हुए देखकर समझ लिया था कि कुछ असाधारण हुआ होगा) ने उनसे पूछा: "लेकिन, मैडम, छोटा मास्टर क्यों रो रहा है?" तो उन्होंने जवाब दिया: "अरे, फ्रांस्वा, उसे खुद नहीं पता: यह उसकी घबराहट है। मेरे लिए बड़ा पलंग जल्दी से लगा दो और फिर तुम अपने कमरे में जाओ।" और इस तरह पहली बार मेरी उदासी को अब एक ऐसी गलती नहीं माना गया जिसके लिए मुझे दंडित किया जाना चाहिए, बल्कि एक अनैच्छिक बुराई के रूप में देखा गया जिसे आधिकारिक तौर पर एक तंत्रिका संबंधी स्थिति के रूप में मान्यता दी गई थी जिसके लिए मैं किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं

थी: मुझे यह तसल्ली मिली कि अब मुझे अपने आंसुओं की कड़वाहट के साथ आशंकाओं और संकोचों को नहीं मिलाना पड़ेगा; मैं अब से बिना किसी पाप के रो सकती थी। मुझे फ्रैंचाइज़ की उपस्थिति में मानवीय परिस्थितियों में लौटने पर बहुत गर्व भी महसूस हुआ, जिसने, माँ के मेरे कमरे में आने से इनकार करने और मुझे सोने का तिरस्कारपूर्ण संदेश भेजने के एक घंटे के भीतर ही, मुझे एक वयस्क व्यक्ति की गरिमा तक पहुँचाया, मुझे अचानक दुख की एक तरह की किशोरावस्था में ले आया, आंसुओं से मुक्ति दिला दी। तब मुझे खुश होना चाहिए था; मैं नहीं थी। मुझे यह एहसास हुआ कि मेरी माँ ने अभी-अभी एक ऐसी बात मान ली है जो उनके लिए बहुत कष्टदायक रही होगी, कि यह मेरे लिए उनके द्वारा बनाए गए आदर्श से एक कदम पीछे हटना था, और पहली बार उन्हें, अपने पूरे साहस के साथ, अपनी हार स्वीकार करनी पड़ी। मुझे यह एहसास हुआ कि अगर मैंने कोई जीत हासिल की है तो वह उन्हीं पर है; कि मैं उनकी इच्छाशक्ति को कमज़ोर करने में, उनके निर्णय को बदलने में सफल हो गई हूँ, जैसे बीमारी, दुख या बुढ़ापा सफल हो सकते हैं; कि यह शाम एक नए युग की शुरुआत है, और कैलेंडर में एक काला अध्याय बनकर रह जाएगी। और अगर अब मुझमें हिम्मत होती, तो मैं माँ से कहती: "नहीं, मुझे आपकी ज़रूरत नहीं है; आपको यहाँ नहीं सोना चाहिए।" लेकिन मैं उस व्यावहारिक बुद्धिमत्ता से अवगत थी, जिसे आजकल यथार्थवाद कहा जाता है, जिससे मेरी दादी के स्वभाव के प्रबल आदर्शवाद को उन्होंने संतुलित किया था, और मैं जानती थी कि अब जब समस्या हल हो चुकी है तो वह मुझे अपनी संगति के सुख का आनंद लेने देना पसंद करेंगी, और मेरे पिता को फिर से परेशान नहीं करना चाहेंगी। उस शाम मेरी माँ के सुंदर चेहरे पर मानो फिर से जवानी की चमक आ गई थी, जब वह मेरे हाथ थामे बैठी मेरे आँसू पोंछने की कोशिश कर रही

थीं; लेकिन, बस इसी वजह से मुझे लगा कि ऐसा नहीं होना चाहिए था; उनका गुस्सा सहना इस नई दयालुता से कहीं ज़्यादा मुश्किल होता, जिसे मैंने अपने बचपन में कभी नहीं जाना था; मुझे लगा जैसे मैंने किसी अपवित्र और गुप्त उंगली से उनकी आत्मा पर पहली झुर्री बना दी हो और उनके सिर पर पहला सफ़ेद बाल ला दिया हो। इस विचार से मेरा रोना और तेज़ हो गया, और फिर मैंने देखा कि माँ, जिन्होंने कभी मेरे प्रति इतनी कोमलता नहीं दिखाई थी, अचानक मेरे आँसुओं से अभिभूत हो गईं और उन्हें अपने आँसू रोकने के लिए संघर्ष करना पड़ा। फिर, जब उसने देखा कि मैंने यह बात नोटिस कर ली है, तो उसने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा: "अरे, मेरे प्यारे बच्चे, मेरे नन्हे प्यारे बच्चे, अगर ऐसा ही चलता रहा तो वह माँ को भी अपने जैसा ही बेवकूफ बना देगा। देखो, क्योंकि तुम्हें नींद नहीं आ रही है, और माँ को भी नहीं, तो हमें इस तरह बेवकूफी भरे तरीके से नहीं जीना चाहिए; हमें कुछ करना होगा; मैं तुम्हारी कोई किताब ले आती हूँ।" लेकिन मेरे पास वहाँ कोई किताब नहीं थी। "क्या तुम चाहते हो कि मैं अभी वे किताबें निकाल लूँ जो तुम्हारी दादी तुम्हें जन्मदिन पर देने वाली हैं? पहले सोच लो, और अगर तुम्हें कुछ नया न मिले तो निराश मत होना।"

मैं बहुत प्रसन्न हुआ, और माँ किताबों का एक पार्सल लेने गईं। जिस कागज़ में वह लिपटा हुआ था, उसके कारण मैं उसकी चौकोर आकृति और आकार के अलावा कुछ भी नहीं पहचान पा रहा था, लेकिन पहली झलक में ही, चाहे वह संक्षिप्त और धुंधली ही क्यों न हो, ऐसा लग रहा था मानो वह पिछले नए साल के दिन के रंग के डिब्बे और उससे पिछले साल के रेशम के कीड़ों को भी पीछे छोड़ देगी। उसमें ला मारे औ डियाबल, फ्रांस्वा ले शैम्पी, ला पेटिट फडेट और लेस मैत्रे सोनर्स थीं। बाद में मुझे पता चला कि मेरी दादी ने पहले मुसेल की कविताएँ, रूसो की

एक किताब और इंडियाना को चुना था; क्योंकि जहाँ वह हल्की-फुल्की किताबों को मिठाई और केक की तरह ही अस्वास्थ्यकर मानती थीं, वहीं उन्होंने यह नहीं सोचा था कि प्रतिभा की प्रबल शक्ति बच्चे की आत्मा पर ताजी हवा और ग्रामीण हवाओं के प्रभाव से कहीं अधिक खतरनाक और कम स्फूर्तिदायक प्रभाव डालती है। लेकिन जब मेरे पिता को उन किताबों के नाम पता चले जो वह मुझे देने वाली थी, तो उन्हें लगा कि वह लगभग पागल हो गई हैं, इसलिए वह अकेले ही जौई-ले-विकॉन्टे में पुस्तक विक्रेता के पास वापस चली गईं, ताकि मुझे समय पर मेरा उपहार न मिलने का कोई डर न रहे (वह बहुत गर्म दिन था, और वह इतनी अस्वस्थ होकर घर आई थीं कि डॉक्टर ने मेरी माँ को चेतावनी दी थी कि उन्हें फिर से इस तरह से खुद को थकाने न दें), और वहाँ उन्होंने जॉर्ज सैंड के चार देहाती उपन्यासों का सहारा लिया।

"मेरी प्यारी," उसने माँ से कहा था, "मैं बच्चे को कुछ भी ऐसा देने की अनुमति नहीं दे सकती थी जो अच्छी तरह से लिखा हुआ न हो।"

सच तो यह था कि वह कभी भी ऐसी कोई चीज़ खरीदने का मन नहीं बना पाती थी जिससे कोई बौद्धिक लाभ न मिले, और सबसे बढ़कर, वह लाभ जो अच्छी चीज़ें हमें सांसारिक धन की निरर्थक संतुष्टि के अलावा कहीं और सुख तलाशना सिखाकर देती हैं। यहाँ तक कि जब उसे किसी को 'उपयोगी' उपहार देना होता था, जब उसे कोई आरामकुर्सी, चांदी की मेज या छड़ी देनी होती थी, तब भी वह 'पुरातन' वस्तुएँ ही चुनती थी, मानो उनके लंबे समय तक अप्रचलित रहने से उनकी उपयोगिता का कोई अंश ही मिट गया हो और वे हमें बीते युग के लोगों के जीवन के बारे में सिखाने के लिए ही बनी हों, न कि हमारी आज की आम ज़रूरतों को पूरा करने के लिए। वह चाहती थी कि मेरे कमरे में प्राचीन इमारतों या सुंदर स्थानों की तस्वीरें हों। लेकिन उन्हें खरीदते समय, और भले ही तस्वीर का

अपना एक सौंदर्य मूल्य हो, उसे लगता था कि फोटोग्राफी द्वारा उनके यांत्रिक पुनरुत्पादन के कारण उनमें अश्लीलता और उपयोगिता बहुत अधिक हावी हो गई है। वह छल-कपट से, यदि उनकी व्यावसायिक नीरसता को पूरी तरह समाप्त नहीं कर पाती, तो कम से कम उसे कम करने का प्रयास करती, उसके स्थान पर कलात्मकता को प्रस्तुत करती, मानो कला की कई परतें जोड़ रही हो; चार्ट्रेस कैथेड्रल, सेंट-क्लाउड के फव्वारों या वेसुवियस की तस्वीरों के बजाय वह स्वान से पूछती कि क्या किसी महान चित्रकार ने उनकी तस्वीरें नहीं बनाई हैं, और मुझे कोरोट की शैली में बने 'चार्ट्रेस कैथेड्रल', ह्यूबर्ट रॉबर्ट की शैली में बने 'सेंट-क्लाउड के फव्वारों' और टर्नर की शैली में बने 'वेसुवियस' की तस्वीरें देना पसंद करती, जो कला के पैमाने पर एक उच्च स्तर की थीं। लेकिन यद्यपि फोटोग्राफर को उत्कृष्ट कृतियों या प्रकृति की सुंदरता को सीधे चित्रित करने से रोक दिया गया था, और यदि उसकी जगह किसी महान कलाकार को नियुक्त किया गया था, तो कलाकार की व्याख्या को चित्रित करने की बात आने पर वह अपनी घृणित स्थिति में वापस आ जाता था। इसलिए, फिर से अश्लीलता का सामना करते हुए, मेरी दादी संपर्क के क्षण को और भी आगे टालने का प्रयास करती थीं। वह स्वान से पूछती थीं कि क्या चित्र उत्कीर्णित नहीं था, और संभव हो तो पुरानी उत्कीर्णित कृतियों को प्राथमिकता देती थीं, जिनमें कुछ विशेष रुचि हो, जैसे कि उदाहरण के लिए, वे नक्काशी जो हमें किसी उत्कृष्ट कृति को उस अवस्था में दिखाती हैं जिसे हम आज नहीं देख सकते, जैसे कि लियोनार्डो के 'सेनाकोलो' का मॉर्गन का प्रिंट, जो जीर्णोद्धार से पहले नष्ट हो गया था। यह स्वीकार करना होगा कि उपहार देने की कला की व्याख्या करने की इस विधि के परिणाम हमेशा सुखद नहीं रहे। टिटियन के एक चित्र से, जिसमें लैगून पृष्ठभूमि में होने का अनुमान है, वेनिस के

बारे में मेरी जो धारणा बनी थी, वह निश्चित रूप से साधारण तस्वीरों से प्राप्त धारणा से कहीं कम सटीक थी। परिवार में हम उन सभी आरामकुर्सियों की गिनती नहीं रख सकते थे (जब मेरी परदादी ने मेरी दादी पर आरोप लगाने की कोशिश की) जो उन्होंने युवा और वृद्ध विवाहित जोड़ों को उपहार में दी थीं, और जो बैठने के पहले ही प्रयास में प्राप्तकर्ता के भार से टूट गई थीं। लेकिन मेरी दादी को यह बात तुच्छ लगती कि कोई भी फर्नीचर के किसी भी टुकड़े की मजबूती पर इतना ध्यान दे जिसमें अतीत की कोई झलक, कोई मुस्कान या कोई साहसिक कल्पना अभी भी दिखाई देती हो। और यहाँ तक कि ऐसी वस्तुओं में जो भौतिक आवश्यकता को पूरा करती थी, क्योंकि वह उस तरीके से करती थी जिससे हम अब अभ्यस्त नहीं हैं, वह भी उन्हें उतनी ही आकर्षक लगती थी जितनी कि पुरानी भाषा की वे शैलियाँ जिनमें आज भी रूपक के निशान दिखाई देते हैं, जिसका सूक्ष्म अर्थ हमारी आधुनिक भाषा के कठोर प्रयोग से मिट गया है। ठीक इसी तरह जॉर्ज सैंड के देहाती उपन्यास, जो वह मुझे मेरे जन्मदिन पर दे रही थीं, प्राचीन फर्नीचर के भंडार की तरह थे, ऐसे भावों से भरे हुए जो अब अप्रचलित हो चुके हैं और कल्पना के रूप में वापस आ गए हैं, जैसे कि अब केवल ग्रामीण बोलियों में ही मिलते हैं। और मेरी दादी ने अन्य पुस्तकों की तुलना में इन्हें प्राथमिकता दी थी, ठीक वैसे ही जैसे वह एक ऐसा घर लेना पसंद करतीं जिसमें एक गॉथिक शैली का कबूतरखाना हो, या कोई अन्य ऐसी प्राचीन वस्तु हो जो मन पर सुखद प्रभाव डाले, और उसे समय के दायरे में असंभव यात्राओं के लिए एक उदासीन लालसा से भर दे।

माँ मेरे बिस्तर के पास बैठ गईं; उन्होंने फ़्रांस्वा ले चैम्पी को चुना था, जिसका लाल आवरण और अस्पष्ट शीर्षक मेरी नज़र में उसे एक अलग पहचान और रहस्यमयी आकर्षण प्रदान करता था। तब तक मैंने कोई

वास्तविक उपन्यास नहीं पढ़े थे। मैंने सुना था कि जॉर्ज सैंड एक विशिष्ट उपन्यासकार हैं। इसने मुझे पहले से ही यह कल्पना करने के लिए तैयार कर दिया था कि फ़्रांस्वा ले चैम्पी में कुछ अवर्णनीय आनंद छिपा है। कथा का प्रवाह, जहाँ यह जिज्ञासा जगाता था या दया से भर देता था, अभिव्यक्ति के कुछ ऐसे तरीके जो पाठक को विचलित या दुखी करते हैं, और जिन्हें थोड़े अनुभव से वह उपन्यासों में 'सामान्य रूप' के रूप में पहचान सकता है, तब मुझे विशिष्ट प्रतीत होते थे—क्योंकि मेरे लिए एक नई किताब कई समान वस्तुओं में से एक नहीं थी, बल्कि एक अद्वितीय व्यक्ति की तरह थी, जिसका अस्तित्व स्वयं के अलावा किसी और कारण से नहीं था—फ़्रांस्वा ले चैम्पी के विशिष्ट सार की एक मदहोश कर देने वाली महक। रोजमर्रा की घटनाओं, आम विचारों और घिसे-पिटे शब्दों के नीचे, मैं एक लयबद्ध उच्चारण सुन या छुपकर सुन सकता था, जो सूक्ष्म और विचित्र था। कहानी शुरू हुई: मुझे यह और भी अस्पष्ट लग रही थी क्योंकि उन दिनों, जब मैं खुद पढ़ता था, तो पन्ने पलटते हुए अक्सर किसी और ही चीज़ का सपना देखता था। और इस आदत से कहानी के मेरे ज्ञान में जो कमियाँ रह गई थीं, उनमें यह बात भी जुड़ गई कि जब माँ मुझे पढ़कर सुनाती थीं, तो वे सभी प्रेम दृश्यों को छोड़ देती थीं। और इसलिए चक्कीवाले की पत्नी और लड़के के बीच संबंधों में होने वाले सभी विचित्र बदलाव, जिन्हें केवल प्रेम के जन्म और विकास से ही समझाया जा सकता है, मुझे एक रहस्य में डूबे हुए प्रतीत हुए, जिसकी कुंजी (जैसा कि मैं आसानी से मान सकता था) चम्पी के उस विचित्र और मधुर नाम में थी, जो उस लड़के को, न जाने क्यों, अपने चमकीले बैंगनी रंग में लिपटा हुआ था। यदि मेरी माँ नियमित पाठक नहीं थीं, तब भी वे किसी ऐसी रचना को पढ़ते समय प्रशंसनीय थीं, जिसमें वे अपने सम्मानजनक सरल व्याख्या और मधुर एवं कोमल स्वर से सच्ची भावना

का भाव प्रकट करती थीं। यही बात उनके दैनिक जीवन में भी झलकती थी, जब वे कलाकृतियों के बजाय उन पुरुषों और महिलाओं के प्रति दया या प्रशंसा का भाव रखती थीं: यह देखना मार्मिक था कि वे कितनी विनम्रता से अपने स्वर, अपने हाव-भाव, अपनी पूरी बातचीत से उस आनंद के भाव को दूर कर देती थीं, जो किसी ऐसे माता को दुखी कर सकता था जिसने बहुत पहले अपना बच्चा खो दिया हो, कभी किसी घटना या वर्षगांठ की याद को, जो किसी वृद्ध सज्जन को उनके जीवन के बोझ की याद दिला सकता था, कभी घरेलू चर्चा को, जो किसी साहित्यकार युवक को ऊब सकती थी। और इसी प्रकार, जब वे जॉर्ज सैंड की गद्य रचनाएँ पढ़ती थीं, जो उस उदारता और नैतिक विशिष्टता से परिपूर्ण है, जिसे माँ ने मेरी दादी से जीवन के सभी गुणों से ऊपर रखना सीखा था, और जिसे मैंने उन्हें बहुत बाद में सिखाया कि साहित्य में भी उसी तरह से सभी गुणों से ऊपर न रखें; अपनी आवाज़ से किसी भी प्रकार की कमजोरी या बनावट को दूर करने के लिए अथक प्रयास करते हुए, जो भाषा के उस शक्तिशाली प्रवाह को अवरुद्ध कर सकती थी, उन्होंने उन वाक्यों में वह सारी स्वाभाविक कोमलता और भरपूर मिठास भर दी, जिनकी उन्हें आवश्यकता थी। ये वाक्य मानो उनकी आवाज़ के लिए ही रचे गए थे और एक तरह से उनकी क्षमता के भीतर थे। वह उनके पास उस स्वर में आईं जिसकी उन्हें आवश्यकता थी, उस सौहार्दपूर्ण लहजे में जो उनके अस्तित्व में आने से पहले ही मौजूद था, जो उन्हें निर्देशित करता था, लेकिन जो शब्दों में स्वयं नहीं पाया जाता था। इस प्रकार, पढ़ते समय उन्होंने क्रियाओं के काल में किसी भी प्रकार की कठोरता या असंगति को दूर कर दिया, अपूर्ण और भूतकाल को उदारता की सारी मिठास और प्रेम की सारी उदासी से भर दिया। वाक्य के अंत की ओर बढ़ते हुए, वाक्य की शुरुआत की ओर बढ़ते हुए, अक्षरों की गति

को कभी तेज तो कभी धीमा करते हुए, ताकि उनकी मात्रा में अंतर के बावजूद, वे एकसमान लय में आ जाएं, और इस साधारण गद्य में एक प्रकार का जीवन, निरंतरता और भावना से परिपूर्णता भर दें।

मेरी पीड़ा शांत हो गई; मैंने खुद को उस शांत रात की धारा में बहने दिया जिसमें मेरी माँ मेरे साथ थीं। मैं जानती थी कि ऐसी रात दोबारा नहीं आएगी; दुनिया में मेरी सबसे प्रबल इच्छा, यानी अंधेरे के उन दुख भरे पलों में अपनी माँ को अपने कमरे में रखना, आम ज़रूरतों और दूसरों की इच्छाओं के बिल्कुल विपरीत थी, इसलिए आज शाम मुझे जो रियायत मिली थी, वह महज़ एक दुर्लभ और आकस्मिक अपवाद ही थी। कल रात मैं फिर से पीड़ा की शिकार होऊंगी और माँ मेरे साथ नहीं रहेंगी। लेकिन जब ये पीड़ा के तूफान शांत हुए, तो मैं उनके अस्तित्व को महसूस नहीं कर पाई; इसके अलावा, कल शाम अभी बहुत दूर थी; मैंने खुद को याद दिलाया कि मेरे पास अभी भी सोचने का समय है, भले ही समय की यह राहत मुझे कोई शक्ति न दे सके, भले ही आने वाली घटना मेरी इच्छाशक्ति पर निर्भर न हो, और यह पूरी तरह से अपरिहार्य इसलिए नहीं लग रही थी क्योंकि यह अभी भी मुझसे इस छोटे से अंतराल से अलग थी।

* * *

और इस तरह, काफी समय बाद तक, जब मैं रात को जागता रहता और कॉम्ब्रे की पुरानी यादों को ताजा करता, तो मुझे बस एक चमकदार पैनल दिखाई देता था, जो एक धुंधली और छायादार पृष्ठभूमि के सामने स्पष्ट रूप से परिभाषित था, ठीक वैसे ही जैसे बंगाल फायर या कोई बिजली का संकेत किसी इमारत के सामने के हिस्से को रोशन और विभाजित कर देता है, जिसके बाकी हिस्से अंधेरे में डूबे रहते हैं: आधार पर काफी चौड़ा, छोटा सा बैठक कक्ष, भोजन कक्ष, उस रास्ते की मोहक छायाएँ जिस पर

से एम. स्वान आते थे, जो मेरे कष्टों के अचेतन लेखक थे, वह हॉल जिससे होकर मैं उस सीढ़ी के पहले पायदान तक जाता था, जिस पर चढ़ना बहुत मुश्किल था, जो अपने आप में एक अनियमित पिरामिड की नुकीली 'ऊंचाई' का निर्माण करती थी; और, शिखर पर, मेरा शयनकक्ष, उस छोटे से मार्ग के साथ जिसके कांच के दरवाजे से माँ प्रवेश करती थीं; संक्षेप में, हमेशा एक ही शाम के समय दिखाई देने वाला, अपने आस-पास के सभी वातावरणों से अलग-थलग, अपने धुंधले परिवेश के बीच अकेला और विरक्त, मेरे कपड़े उतारने के नाटक के लिए आवश्यक न्यूनतम दृश्य (जैसे किसी पुराने नाटक के मंचन के लिए प्रांतों में छपा हुआ दृश्य) मानो पूरा कॉम्ब्रे केवल एक पतली सीढ़ी से जुड़े दो मंजिलों से बना हो, और मानो वहाँ रात के सात बजे के अलावा कोई समय ही न हो। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैं किसी भी प्रश्नकर्ता को आश्वस्त कर सकता था कि कॉम्ब्रे में अन्य दृश्य भी थे और यह इन समयों के अलावा अन्य समयों में भी अस्तित्व में था। लेकिन चूंकि उस समय मुझे जो तथ्य याद आते, वे केवल इच्छाशक्ति, मेरी बौद्धिक स्मृति के प्रयोग से ही उत्पन्न होते, और चूंकि उस प्रकार की स्मृति हमें अतीत की जो तस्वीरें दिखाती है, वे स्वयं अतीत का कुछ भी नहीं बचातीं, इसलिए मुझे कॉम्ब्रे के इस अवशेष पर विचार करने की कभी कोई इच्छा नहीं होती। मेरे लिए यह वास्तव में पूरी तरह से मृत था।

क्या वह हमेशा के लिए मर गया? बहुत संभव है।

इन मामलों में जोखिम का एक बड़ा तत्व मौजूद है, और दूसरा जोखिम, यानी हमारी अपनी मृत्यु का जोखिम, अक्सर हमें पहले वाले के उपकारों की लंबे समय तक प्रतीक्षा करने से रोकता है।

मुझे लगता है कि सेल्टिक मान्यता में बहुत सच्चाई है कि जिन लोगों को हमने खो दिया है, उनकी आत्माएं किसी निम्न प्राणी, किसी जानवर,

किसी पौधे या किसी निर्जीव वस्तु में कैद रहती हैं, और इस प्रकार हमसे तब तक विमुख रहती हैं जब तक कि (जो कई लोगों के लिए कभी नहीं आता) हम उस पेड़ के पास से न गुजरें या उस वस्तु को प्राप्त न कर लें जिसमें वे कैद हैं। तब वे चौंक जाती हैं और कांपने लगती हैं, वे हमें हमारे नाम से पुकारती हैं, और जैसे ही हम उनकी आवाज पहचान लेते हैं, जादू टूट जाता है। हमने उन्हें मुक्त कर दिया है: उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है और हमारे जीवन में वापस आ गई हैं।

और यही बात हमारे अतीत पर भी लागू होती है। इसे पुनः प्राप्त करने का प्रयास व्यर्थ है: हमारी बुद्धि के सभी प्रयास निष्फल सिद्ध होंगे। अतीत कहीं हमारे दायरे से बाहर, बुद्धि की पहुँच से परे, किसी भौतिक वस्तु में (उस भौतिक वस्तु से उत्पन्न होने वाली अनुभूति में) छिपा है, जिसके बारे में हमें कोई आशंका नहीं है। और जहाँ तक उस वस्तु की बात है, यह संयोग पर निर्भर करता है कि हम अपनी मृत्यु से पहले उस तक पहुँच पाते हैं या नहीं।

कई साल बीत गए थे, और कॉम्ब्रे में मेरे लिए थिएटर और वहाँ सोने के नाटक के अलावा कुछ भी मायने नहीं रखता था। फिर एक दिन सर्दियों में, जब मैं घर आया, तो मेरी माँ ने मुझे ठंड लगते देख मुझे चाय पीने के लिए दी, जो मैं आमतौर पर नहीं पीता था। पहले तो मैंने मना कर दिया, लेकिन फिर बिना किसी खास वजह के, मेरा मन बदल गया। उन्होंने 'पेटिट मेडेलिन' नाम की एक छोटी, गोल-मटोल केक मंगवाई, जो देखने में ऐसी लगती थी मानो किसी तीर्थयात्री के शंख के खांचे में ढाली गई हो। और जल्द ही, नीरस दिन और उदास कल की आशंका से थका हुआ, मैंने चाय का एक चम्मच अपने होठों तक उठाया, जिसमें मैंने केक का एक टुकड़ा भिगोया था। गर्म तरल और उसके साथ केक के टुकड़े मेरे तालू से छूते ही, मेरे पूरे शरीर में एक सिहरन दौड़ गई, और मैं रुक गया,

अपने अंदर हो रहे असाधारण बदलावों को समझने की कोशिश कर रहा था। एक अद्भुत आनंद ने मेरी इंद्रियों को घेर लिया था, लेकिन यह व्यक्तिगत, पृथक और इसके स्रोत का कोई संकेत नहीं था। और पल भर में जीवन के उतार-चढ़ाव मेरे लिए उदासीन हो गए, उसकी आपदाएँ हानिरहित, उसकी क्षणभंगुरता भ्रामक लगने लगी—इस नई अनुभूति ने मुझ पर ऐसा प्रभाव डाला जैसे प्रेम मुझे एक अनमोल सार से भर देता है; या यूँ कहें कि यह सार मुझमें नहीं था, बल्कि मैं स्वयं था। अब मैं साधारण, आकस्मिक और नश्वर महसूस करना छोड़ चुका था। यह सर्वशक्तिमान आनंद मुझे कहाँ से मिला? मैं जानता था कि यह चाय और केक के स्वाद से जुड़ा है, लेकिन यह उन स्वादों से कहीं अधिक श्रेष्ठ था, वास्तव में, उनका स्वरूप उनसे भिन्न हो सकता था। यह कहाँ से आया? इसका क्या अर्थ है? मैं इसे कैसे समझूँ और परिभाषित करूँ?

मैं दूसरा घूंट पीता हूँ, जिसमें मुझे पहले घूंट से ज़्यादा कुछ नहीं मिलता; तीसरा घूंट पीता हूँ, जिसमें पहले घूंट से भी कुछ कम ही मिलता है। अब रुकने का समय आ गया है; इस पेय का जादू खत्म हो रहा है। यह स्पष्ट है कि मेरी खोज का उद्देश्य, सत्य, प्याले में नहीं, बल्कि मुझमें ही निहित है। चाय ने मेरे भीतर एक भावना जगाई है, लेकिन वह स्वयं उसे समझ नहीं पाती, और केवल धीरे-धीरे शक्ति खोते हुए उसी गवाही को अनिश्चित काल तक दोहराती रहती है; जिसे मैं भी व्याख्या नहीं कर सकता, हालाँकि मुझे कम से कम यह आशा है कि मैं चाय से फिर से उस भावना को जगा सकूँ और उसे वहाँ, पूर्ण रूप से और मेरे उपयोग में पा सकूँ, ताकि मुझे अंतिम ज्ञान प्राप्त हो सके। मैं अपना प्याला नीचे रखता हूँ और अपने मन का विश्लेषण करता हूँ। सत्य का पता लगाना मेरे ही काम है। लेकिन कैसे? अनिश्चितता का कितना बड़ा अथाह सागर है जब मन को लगता है कि उसका कोई हिस्सा अपनी सीमाओं से बाहर भटक

गया है; जब वह, साधक, एक साथ वह अंधकारमय क्षेत्र बन जाता है जिससे उसे होकर गुजरना पड़ता है, जहाँ उसके सारे उपकरण उसके किसी काम नहीं आते। खोज? उससे कहीं अधिक: सृजन। यह किसी ऐसी चीज के आमने-सामने है जो अभी तक अस्तित्व में नहीं है, जिसे केवल यही वास्तविकता और सार प्रदान कर सकता है, जिसे केवल यही दिन के उजाले में ला सकता है।

और मैं फिर से खुद से पूछने लगता हूँ कि वह क्या रहा होगा, वह भूली हुई अवस्था जिसका कोई तार्किक प्रमाण नहीं था, बस यह एहसास था कि वह एक सुखद अवस्था थी, एक वास्तविक अवस्था थी जिसकी उपस्थिति में चेतना की अन्य अवस्थाएँ पिघल कर गायब हो जाती थीं। मैं उसे फिर से प्रकट करने का प्रयास करने का निश्चय करता हूँ। मैं अपने विचारों को उस क्षण तक ले जाता हूँ जब मैंने चाय का पहला चम्मच पिया था। मुझे फिर से वही अवस्था मिलती है, बिना किसी नई रोशनी के। मैं अपने मन को एक और प्रयास करने के लिए विवश करता हूँ, उस क्षणिक अनुभूति का अनुसरण करने और उसे फिर से पकड़ने के लिए। और ताकि कोई भी चीज़ उसके मार्ग में बाधा न डाले, मैं हर बाधा, हर बाहरी विचार को दूर कर देता हूँ, मैं अपने कान बंद कर लेता हूँ और बगल के कमरे से आने वाली सभी आवाज़ों पर ध्यान नहीं देता। और फिर, यह महसूस करते हुए कि मेरा मन बिना किसी सफलता के थक रहा है, मैं उसे एक बदलाव के लिए उस ध्यान भटकाने का आनंद लेने के लिए विवश करता हूँ जिसे मैंने अभी-अभी उससे छीन लिया था, अन्य चीजों के बारे में सोचने के लिए, अंतिम प्रयास से पहले आराम करने और खुद को तरोताज़ा करने के लिए। और फिर दूसरी बार मैं उसके सामने एक खाली जगह बनाता हूँ। मैं अपने मन में उस पहले निवाले के अभी-अभी ताज़ा स्वाद को संजोता हूँ, और मुझे अपने भीतर कुछ हलचल महसूस होती है,

कुछ ऐसा जो अपने विश्राम स्थान को छोड़कर ऊपर उठने का प्रयास करता है, कुछ ऐसा जो एक लंगर की तरह गहराई में धंसा हुआ है; मुझे अभी पता नहीं है कि यह क्या है, लेकिन मैं इसे धीरे-धीरे बढ़ते हुए महसूस कर सकता हूँ; मैं प्रतिरोध को माप सकता हूँ, मैं तय की गई विशाल दूरियों की गूँज सुन सकता हूँ।

निःसंदेह, मेरे अंतर्मन की गहराइयों में जो कुछ धड़क रहा है, वह छवि, वह दृश्य स्मृति है जो उस स्वाद से जुड़ी होने के कारण मेरे चेतन मन में उसका अनुसरण करने का प्रयास कर रही है। परन्तु उसका संघर्ष बहुत दूर है, बहुत उलझा हुआ है; मैं उस रंगहीन प्रतिबिंब को मुश्किल से ही देख पा रहा हूँ जिसमें दीप्तिमान रंगों का अकल्पनीय, घूमता हुआ मिश्रण समाहित है, और मैं उसके रूप को पहचान नहीं पा रहा हूँ, उसे एकमात्र संभावित व्याख्याकार के रूप में आमंत्रित नहीं कर पा रहा हूँ कि वह मुझे उसके समकालीन, उसके अविभाज्य प्रेमी, चाय में भीगे केक के स्वाद का प्रमाण दे; मैं उससे यह नहीं पूछ पा रहा हूँ कि वह मुझे बताए कि यह कौन सी विशेष परिस्थिति है, मेरे अतीत के किस काल की बात है।

क्या यह स्मृति, यह पुराना, मृत क्षण, जिसे एक समान क्षण के चुंबकत्व ने इतनी दूर तक सफ़र करके परेशान किया है, विचलित किया है, मेरे अस्तित्व की गहराइयों से उभारा है, अंततः मेरी चेतना की निर्मल सतह तक पहुँच पाएगा? मैं नहीं कह सकता। अब जब मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है, तो यह रुक गया है, शायद फिर से अपने अंधकार में डूब गया है, जिससे कौन कह सकता है कि यह कभी उठेगा या नहीं? मुझे दस बार फिर से इस कार्य को करना होगा, इस खाई के ऊपर झुकना होगा। और हर बार वह स्वाभाविक आलस्य जो हमें हर कठिन कार्य, हर महत्वपूर्ण काम से रोकता है, मुझे इस काम को छोड़ देने, अपनी चाय पीने और केवल आज की चिंताओं और कल की आशाओं के बारे में

सोचने के लिए प्रेरित करता है, जिन पर बिना किसी प्रयास या मानसिक कष्ट के मनन किया जा सकता है।

और अचानक यादें लौट आती हैं। स्वाद उस मेडेलिन के छोटे टुकड़े जैसा था, जिसे कॉम्ब्रे में रविवार की सुबह (क्योंकि उन सुबहों में मैं चर्च जाने से पहले बाहर नहीं जाता था), जब मैं अपनी चाची लियोनी को उनके कमरे में नमस्कार करने जाता था, तो वह मुझे अपनी चाय में डुबोकर दिया करती थीं। उस छोटे मेडेलिन को देखकर मुझे कुछ याद नहीं आया था, जब तक मैंने उसे चखा नहीं था; शायद इसलिए कि मैंने इस बीच ऐसी चीजें अक्सर देखी थीं, बिना चखे, पेस्ट्री बनाने वालों की दुकानों की ट्रे में, कि उनकी छवि उन कॉम्ब्रे के दिनों से अलग होकर हाल की अन्य यादों में समा गई थी; शायद इसलिए कि उन यादों के कारण, जो इतने लंबे समय से भुला दी गई थीं और दिमाग से निकल गई थीं, अब कुछ भी नहीं बचा था, सब कुछ बिखर गया था; वस्तुओं के रूप, जिनमें पेस्ट्री के छोटे से खोल जैसे आकार की आकृति भी शामिल है, जो अपने कठोर, धार्मिक आवरणों के भीतर अत्यंत कामुक प्रतीत होती है, या तो मिट गई थीं या इतने लंबे समय तक निष्क्रिय रही थीं कि उनमें विस्तार की वह शक्ति खो गई थी जो उन्हें मेरी चेतना में पुनः स्थान प्राप्त करने देती। लेकिन जब सुदूर अतीत से कुछ भी शेष नहीं रहता, लोगों की मृत्यु के बाद, वस्तुओं के टूटने और बिखर जाने के बाद, फिर भी, अकेली, अधिक नाजुक, लेकिन अधिक जीवंतता के साथ, अधिक सारहीन, अधिक दृढ़, अधिक वफादार, वस्तुओं की गंध और स्वाद लंबे समय तक स्थिर रहते हैं, आत्माओं की तरह, हमें याद दिलाने के लिए तैयार, अपने क्षण की प्रतीक्षा और आशा करते हुए, शेष सभी के खंडहरों के बीच; और अपने सार की छोटी और लगभग अगोचर बूंद में, स्मृति की विशाल संरचना को अडिग रखते हैं।

और एक बार जब मैंने मेडेलिन के उस टुकड़े का स्वाद पहचान लिया, जो मेरी चाची मुझे नींबू के फूलों के काढ़े में भिगोकर दिया करती थीं (हालाँकि तब तक मुझे यह पता नहीं था और मुझे यह जानने में काफी समय लगेगा कि यह याद मुझे इतनी खुशी क्यों देती थी), तो तुरंत ही गली में स्थित वह पुराना धूसर रंग का घर, जहाँ उनका कमरा था, किसी थिएटर के दृश्य की तरह उभर आया और उस छोटे से मंडप से जुड़ गया, जो बगीचे की ओर खुलता था और मेरे माता-पिता के लिए उसके पीछे बनाया गया था (वह अलग-थलग हिस्सा जो उस क्षण तक मुझे दिखाई देता था); और उस घर के साथ ही शहर, सुबह से रात तक और हर मौसम में, वह चौक जहाँ मुझे दोपहर के भोजन से पहले भेजा जाता था, वे गलियाँ जिन पर मैं काम से जाया करता था, और वे ग्रामीण सड़कें जिन पर हम अच्छे मौसम में चलते थे। और जिस प्रकार जापानी लोग चीनी मिट्टी के कटोरे में पानी भरकर उसमें कागज के छोटे-छोटे टुकड़े भिगोकर अपना मनोरंजन करते हैं, जो तब तक आकारहीन होते हैं, लेकिन जैसे ही वे गीले होते हैं, वे फैलते और मुड़ते हैं, रंग और विशिष्ट आकार धारण कर लेते हैं, फूल, घर या लोग बन जाते हैं, स्थायी और पहचानने योग्य, ठीक उसी क्षण हमारे बगीचे के सभी फूल, एम. स्वान के पार्क के फूल, विवोन नदी पर खिले जल लिली, गांव के भले लोग, उनके छोटे-छोटे घर, पैरिश चर्च और पूरा कॉम्ब्रे और उसके आसपास का इलाका, अपने उचित आकार धारण करते हुए और ठोस रूप धारण करते हुए, मेरे चाय के प्याले से अस्तित्व में आ गए, शहर और बगीचे, सब कुछ।

कॉम्ब्रे

बीस मील की दूरी से, जैसा कि हम हर साल पवित्र सप्ताह में वहाँ पहुँचने पर रेलवे लाइन से देखते थे, कॉम्ब्रे एक चर्च से अधिक कुछ नहीं था जो शहर का प्रतीक था, उसका प्रतिनिधित्व करता था, क्षितिज तक उसके बारे में और उसके लिए बोलता था, और जैसे-जैसे कोई पास आता, खुले मैदान में हवा से बचाव करते हुए, एक चरवाहे की तरह अपनी भेड़ों को इकट्ठा करते हुए, उसके ऊनी भूरे रंग के घरों की पीठें उसके लंबे, काले आवरण में सिमटती हुई दिखाई देती थीं, जिन्हें उसके मध्ययुगीन प्राचीरों के एक टुकड़े ने जगह-जगह घेर रखा था, एक ऐसे सटीक गोलाकार रूपरेखा में जैसे किसी प्राचीन चित्रकला में एक छोटा सा शहर हो। कॉम्ब्रे में रहना थोड़ा निराशाजनक था, ठीक उसकी गलियों की तरह, जिनके घर, देहात के काले पत्थरों से बने थे, जिनके सामने बाहरी सीढ़ियाँ थीं, नीचे की ओर लंबी छाया डालने वाले छज्जों से ढके थे, इतने अंधेरे थे कि सूरज ढलते ही बैठक कक्ष की खिड़कियों के पर्दे हटाने पड़ते थे; संतों के नाम पर बसी गलियाँ, जिनमें से कई का कॉम्ब्रे के शुरुआती सामंतों के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान था, जैसे कि रू सेंट-हिलैरे, रू सेंट-जैक्स, जिसमें मेरी चाची का घर था, रू सेंट-हिल्डेगार्ड, जो उनकी बाड़ के पास से गुजरती थी, और रू डू सेंट-एस्पिरिट, जिस पर छोटा सा बगीचे का द्वार खुलता था; और कॉम्ब्रे की ये गलियाँ मेरी स्मृति के इतने दूर के कोने में मौजूद हैं, उन रंगों से इतनी भिन्न रंगों में रंगी हुई हैं जिनसे आज की दुनिया मुझे सजी हुई है, कि वास्तव में उनमें से एक और सभी, और चौक में उनके ऊपर स्थित चर्च, अब मुझे मेरी मैजिक-लैंटर्न की छवियों से भी अधिक निरर्थक प्रतीत होते हैं; हालांकि कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि सेंट-हिलैरे स्ट्रीट को फिर से पार कर पाना, ओइसो स्ट्रीट में ओइसो फ्लेशे के पुराने सराय में एक कमरा किराए पर लेना, जिसकी खिड़कियों से फुटपाथ पर खाना पकाने की खुशबू आती थी जो आज भी मेरे मन में

कभी-कभी उसी सुखद गर्माहट के झोंकों के साथ उठती है, अदृश्य दुनिया के साथ एक ऐसा संपर्क स्थापित करना होगा जो गोलो से परिचित होने और जेनेवीव डी ब्राबेंट के साथ बातचीत करने से कहीं अधिक अद्भुत और अलौकिक होगा।

मेरे दादाजी की चचेरी बहन—जो शिष्टाचारवश मेरी परदादी थीं—जिनके साथ हम अक्सर रहते थे, वही आंटी लियोनी की माँ थीं, जिन्होंने अपने पति (मेरे चाचा ऑक्टेव) की मृत्यु के बाद से धीरे-धीरे अपना घर, फिर अपना कमरा और अंत में अपना बिस्तर छोड़ना बंद कर दिया था; और जो अब कभी भी शांत नहीं होती थीं, बल्कि अनिश्चित शोक, शारीरिक थकावट, बीमारी, जुनून और धार्मिक अनुष्ठानों की अवस्था में ही रहती थीं। उनका कमरा सेंट-जैक्स गली की ओर खुलता था, जो आगे ग्रैंड-प्रे (जो पेटिट-प्रे से अलग था, पेटिट-प्रे शहर के केंद्र में एक हरा-भरा स्थान था जहाँ तीन सड़कें मिलती थीं) में जाकर समाप्त होती थी। यह गली नीरस और धूसर थी, जिसके लगभग हर दरवाजे के सामने पत्थर की तीन ऊँची सीढ़ियाँ थीं, और ऐसा लगता था मानो किसी गोथिक मूर्तिकार ने उसी पत्थर के टुकड़े में गहरी खाई खोदी हो जिससे उसने कलवारी या चरनी की मूर्ति बनाई हो। मेरी चाची का जीवन अब व्यावहारिक रूप से दो सटे हुए कमरों तक ही सीमित हो गया था, जिनमें से एक में वह दोपहर में आराम करती थीं जबकि दूसरे कमरे में हवा आने-जाने की व्यवस्था की जाती थी। वे उस देहाती शैली के कमरे थे जो (ठीक वैसे ही जैसे कुछ जलवायु क्षेत्रों में हवा या समुद्र के पूरे क्षेत्र असंख्य प्रोटोजोआ द्वारा प्रकाशित या सुगंधित होते हैं जिन्हें हम देख नहीं सकते) अपनी विशेष विशेषताओं, ज्ञान, आदतों, जीवन की एक पूरी गुप्त प्रणाली, अदृश्य, अतिप्रचुर और गहन नैतिक, जो उनके वातावरण में समाहित है, से उत्पन्न होने वाली अनगिनत गंधों से हमारी गंध इंद्रियों को मोहित कर लेते हैं; यह

महक सचमुच काफी प्राकृतिक है, और आसपास के ग्रामीण इलाकों की तरह ही परिस्थितियों से रंगी हुई है, लेकिन पहले से ही मानवीय, घरेलू, सीमित, एक उत्कृष्ट, कुशल, निर्मल जेली की तरह, जो मौसम के उन सभी फलों को मिलाती है जो बाग से भंडारगृह में चले गए हैं, साल के साथ बदलती हुई महक, लेकिन तृप्त करने वाली, घरेलू महक, जो पाले की तीखीपन को गर्म रोटी के मीठे स्वाद से संतुलित करती है, गांव की घड़ी की तरह सुस्त और समय की पाबंद महक, भटकती हुई महक, पवित्र महक; एक ऐसी शांति में आनंदित जो केवल चिंता बढ़ाती है, और एक ऐसी नीरसता में जो उनके बीच से गुजरने वाले अजनबी के लिए कविता का एक गहरा स्रोत बन जाती है, भले ही वह उनके बीच कभी रहा न हो। उन कमरों की हवा एक ऐसी खामोशी की मधुर सुगंध से सराबोर थी जो इतनी पोषण देने वाली, इतनी रसीली थी कि मैं उनमें एक प्रकार के लालची आनंद के बिना प्रवेश नहीं कर सकता था, विशेष रूप से ईस्टर की छुट्टियों की उन पहली ठंडी सुबहों में, जब मैं इसका अधिक पूर्ण रूप से अनुभव कर सकता था, क्योंकि मैं तब ही कॉम्ब्रे पहुंचा था: अपनी चाची को शुभ दिन कहने के लिए अंदर जाने से पहले मुझे बाहरी कमरे में थोड़ी देर इंतजार करना पड़ता था, जहां सूरज, एक सर्द सूरज, आग के सामने खुद को गर्म करने के लिए अंदर आ चुका था, जो पहले से ही अपनी दो ईंटों की दीवारों के बीच जल रही थी और पूरे कमरे और उसमें मौजूद हर चीज को कालिख की गंध से भर रही थी, जिससे कमरा उन विशाल खुली भट्टियों में से एक जैसा लग रहा था जो ग्रामीण इलाकों में पाई जाती हैं, या पुराने महलों में चंदवादार मेंटलपीस में से एक जैसा, जिसके नीचे बैठकर कोई यह उम्मीद करता है कि बाहर की दुनिया में बारिश या बर्फबारी हो रही हो, लगभग एक विनाशकारी बाढ़ की उम्मीद करता है जो एक आरामदायक आश्रय के आराम में आश्रय और सुरक्षा

का रोमांस जोड़ दे; मैं प्रार्थना-मंच और मखमली कढ़ाई वाली कुर्सियों के बीच बार-बार आता-जाता रहता था, जिनमें से प्रत्येक हमेशा अपने बुने हुए एंटीमैकासर कंबल से ढकी रहती थी। आग कमरे की हवा में फैली स्वादिष्ट सुगंधों को, जो सुबह की ओस भरी और धूप वाली ताजगी से पहले ही 'उभार' चुकी थीं और 'जमने' लगी थीं, पाई की तरह पका रही थी, और उन्हें फुलाकर, चमकाकर, खांचे बनाकर, फुलाकर एक अदृश्य लेकिन स्पष्ट देहाती केक, एक विशाल पफ-पेस्ट्री में बदल रही थी। अलमारी, दराजों की पेटी और पैटर्न वाले वॉलपेपर की अधिक कुरकुरी, अधिक नाज़ुक, अधिक सम्मानजनक, लेकिन साथ ही अधिक सूखी गंधों का स्वाद लेने के लिए मुश्किल से प्रतीक्षा करते हुए, मैं हमेशा एक अनकहे लालच के साथ वापस लौट आता था और खुद को फूलों वाली रजाई की साधारण, रालयुक्त, नीरस, अपचनीय और फल जैसी गंध में डुबो देता था।

अगले कमरे में मुझे मेरी चाची की धीमी आवाज़ में बात करने की आवाज़ सुनाई दी। वह कभी भी धीमी आवाज़ में ही बोलती थीं, क्योंकि उनका मानना था कि उनके सिर में कुछ टूटा हुआ है और इधर-उधर भटक रहा है, जो ज़ोर से बोलने पर कहीं हिल न जाए; लेकिन वह अकेले में भी ज़्यादा देर तक चुप नहीं रहती थीं, क्योंकि उनका मानना था कि इससे उनके गले को आराम मिलेगा और रक्त संचार ठीक रहेगा, जिससे उन्हें घुटन और अन्य दर्द कम होंगे। इसके अलावा, अपने निष्क्रिय जीवन में वह अपनी छोटी से छोटी संवेदना को भी असाधारण महत्व देती थीं, उन्हें एक ऐसी सर्वव्यापकता का दर्जा देती थीं जिससे उन्हें गुप्त रखना मुश्किल हो जाता था, और अगर कोई ऐसा व्यक्ति न होता जिससे वह अपनी बातें साझा कर सकें, तो वह उन्हें लगातार अपने आप से बड़बड़ाती रहती थीं, जो उनकी एकमात्र गतिविधि थी। दुर्भाग्यवश, ज़ोर से सोचने की आदत

के कारण, वह हमेशा यह ध्यान नहीं रखती थी कि बगल के कमरे में कोई और तो नहीं है, और मैं अक्सर उसे खुद से कहते हुए सुनती थी: "मुझे यह नहीं भूलना चाहिए कि मैं एक पल भी नहीं सोई"—क्योंकि "एक पल भी नहीं सोना" उसकी विशिष्टता का बड़ा दावा था, और हमारे घर की शब्दावली में यह एक स्वीकार्य और सम्मानित बात थी; सुबह फ्रांस्वा उसे 'बुलाती' नहीं थी, बल्कि सीधे उसके पास 'आ जाती' थी; दिन में, जब मेरी चाची झपकी लेना चाहती थी, तो हम बस यही कहते थे कि वह 'शांत रहना' या 'आराम करना' चाहती है; और जब बातचीत में वह इतनी बेसुध हो जाती कि "किस बात से मेरी नींद खुली" या "मैंने सपना देखा था" कह देती, तो वह शर्म से लाल हो जाती और तुरंत अपनी गलती सुधार लेती।

एक मिनट इंतजार करने के बाद, मैं अंदर जाकर उसे चूमता; फ्रांस्वा उसके लिए चाय बना रही होती; या, अगर मेरी चाची 'परेशान' होतीं, तो वह अपनी 'टिसेन' (हल्की चाय) मांगतीं, और मेरा फर्ज होता कि मैं केमिस्ट के छोटे पैकेट से एक प्लेट में नींबू के फूल की उतनी मात्रा निकालूँ जितनी उबलते पानी में डालने के लिए आवश्यक होती। तनों के सूखने से वे एक अद्भुत जाली की तरह मुड़ गए थे, जिसके बीच-बीच में हल्के फूल खिलते थे, मानो किसी चित्रकार ने उन्हें वहाँ सबसे सजावटी ढंग से सजाया हो। पत्तियाँ, जिन्होंने अपना असली रूप खो दिया था या बदल लिया था, उनकी जगह सबसे बेमेल चीजें धारण कर लेती थीं, मानो मक्खियों के पारदर्शी पंख या लेबल के खाली किनारे या गुलाब की पंखुड़ियाँ इकट्ठा करके कूटी गई हों, या पक्षियों द्वारा अपने घोंसले के लिए सामग्री बुनने की तरह आपस में बुनी गई हों। हजारों छोटी-छोटी बारीकियाँ—एक रसायनज्ञ की मनमोहक उदारता—ऐसी बारीकियाँ जिन्हें कृत्रिम तैयारी से हटा दिया जाता, मुझे एक ऐसी किताब की तरह आनंदित कर रही थीं जिसमें किसी परिचित व्यक्ति का नाम पढ़कर

आश्चर्य होता है। यह जानकर मुझे खुशी हुई कि ये वास्तव में असली नींबू के फूल थे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने एवेन्यू डे ला गारे में ट्रेन से उतरते समय देखे थे। बदले हुए, लेकिन केवल इसलिए कि वे नकल नहीं बल्कि वही फूल थे जो पुराने हो चुके थे। और जैसे प्रत्येक नया रूप किसी पुरानी चीज का रूपांतरण मात्र होता है, इन छोटी-छोटी धूसर गेंदों में मैंने समय से पहले तोड़ी गई हरी कलियों को पहचाना; लेकिन इन सबसे बढ़कर, वह गुलाबी, चाँदनी जैसी कोमल चमक जो कमजोर तनों के जंगल में खिले फूलों को रोशन कर रही थी, जिनसे वे छोटे सुनहरे गुलाबों की तरह लटक रहे थे—जैसे किसी पुरानी दीवार पर चमक किसी लुप्त भित्तिचित्र के स्थान को चिह्नित करती है, पेड़ के उन हिस्सों के बीच अंतर बताती है जो खिले थे और जो नहीं खिले थे—मुझे यह दिखा रही थी कि ये वे पंखुड़ियाँ थीं जिन्हें खिलने से पहले ही, रसायनज्ञ के पैकेट ने वसंत की गर्म शामों में संरक्षित कर दिया था। वह गुलाबी मोमबत्ती की रोशनी अभी भी उनका रंग थी, लेकिन आधी बुझ चुकी और मुरझाई हुई, उस कमज़ोर जीवन में जो अब उनका था, और जिसे फूल का गोधूलि कहा जा सकता है। कुछ देर बाद मेरी चाची उबलते हुए काढ़े में, जिसमें वह मुरझाए या सूखे फूल का स्वाद लेती थीं, एक छोटी मेडेलिन डुबोने में सक्षम हुईं, जिसका एक टुकड़ा वह मुझे तब देतीं जब वह काफी नरम हो जाती थी।

उसके बिस्तर के एक तरफ नींबू की लकड़ी से बनी एक बड़ी पीली दराजों वाली अलमारी थी, और एक मेज थी जो एक साथ औषधालय और वेदी दोनों का काम करती थी। उस मेज पर, आवर लेडी की एक मूर्ति और विची-सेलेस्टिन्स की एक बोतल के नीचे, उसकी प्रार्थना-पुस्तिकाएँ और दवाइयों के नुस्खे रखे होते थे - वह सब कुछ जिसकी उसे बिस्तर पर लेटे-लेटे अपने शरीर और आत्मा के प्रति कर्तव्यों का पालन करने, पेप्सिन और शाम की प्रार्थना के लिए उचित समय का ध्यान रखने के लिए

आवश्यकता होती थी। उसके बिस्तर के दूसरी तरफ खिड़की थी: उसकी आँखों के सामने सड़क थी, और वह सुबह से शाम तक उसमें बैठकर अपने जीवन की नीरसता को दूर करने के लिए, एक फारसी राजकुमार की तरह, कॉम्ब्रे के दैनिक लेकिन चिरस्थायी इतिहास पढ़ती थी, जिस पर वह बाद में फ्रांस्वा के साथ विस्तार से चर्चा करती थी।

मैं अपनी चाची के साथ पाँच मिनट भी नहीं बिता पाता कि वो मुझे तुरंत भगा देतीं, कहीं मैं उन्हें थका न दूँ। वो मुझे अपने उदास, पीले और बेजान माथे को चूमने के लिए आगे बढ़ातीं, जिस पर इस सुबह-सुबह उन्होंने नकली बाल भी नहीं लगाए होते और जिसकी हड्डियाँ काँटों के ताज की नोकों की तरह चमक रही होतीं—या यूँ कहें कि माला के मोतियों की तरह—और फिर मुझसे कहतीं: "अब, मेरे प्यारे बच्चे, तुम्हें जाना होगा; जाओ और प्रार्थना के लिए तैयार हो जाओ; और अगर नीचे फ्रांस्वा दिखें, तो उनसे कहना कि वे तुम्हारे साथ ज़्यादा देर तक समय बर्बाद न करें; उन्हें जल्दी ही ऊपर आना होगा यह देखने के लिए कि मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है।"

फ्रांस्वा, जो कई वर्षों से मेरी चाची की सेवा में थी और उस समय उसे यह बिल्कुल भी नहीं पता था कि एक दिन उसका तबादला पूरी तरह से हमारे घर में हो जाएगा, उन महीनों के दौरान जब हम उनकी चाची के घर में रहते थे, तो उसका मन कुछ-कुछ उनसे विदा लेने का करता था। मेरे बचपन में, जब हम पहली बार कॉम्ब्रे गए थे और मेरी चाची लियोनी अपनी माँ के साथ पेरिस में सर्दियाँ बिताया करती थीं, तब मैं फ्रांस्वा को इतना कम जानता था कि नए साल के दिन, अपनी बड़ी चाची के घर जाने से पहले, मेरी माँ ने मेरे हाथ में पाँच फ़्रैंक का सिक्का थमा दिया और कहा: "अब, सावधान रहना। कोई गलती मत करना। जब तक मैं 'सुप्रभात, फ्रांस्वा' न कहूँ और तुम्हारा हाथ छू न लूँ, तब तक इंतज़ार

करना, फिर उसे देना।" जैसे ही हम मेरी चाची के अँधेरे हॉल में पहुँचे, हमने उस धुंध में, बर्फ़ से ढकी एक टोपी की झालरों के नीचे, जो मानो चीनी से बनी हो, मानो सख्त और नाज़ुक हो, कृतज्ञता की एक उभरती हुई मुस्कान देखी। यह फ्रांस्वा थी, गलियारे के छोटे से द्वार में स्थिर और सीधी खड़ी, मानो किसी संत की मूर्ति अपने आले में रखी हो। जब हम इस धार्मिक अंधकार के अभ्यस्त हो गए, तो हम उसके चेहरे पर समस्त मानवता के प्रति निस्वार्थ प्रेम देख सकते थे, जो 'उच्च वर्ग' के प्रति कोमल आदर से ओतप्रोत था और उसके हृदय के सबसे पवित्र कोने में अपने उचित पुरस्कार की आशा जगाता था। माँ ने मेरी बांह को जोर से चुटकी काटी और ऊँची आवाज़ में बोली: "सुप्रभात, फ्रांस्वा।" इस इशारे पर मेरी उंगलियाँ खुल गईं और मैंने सिक्का गिरा दिया, जो एक भ्रमित लेकिन फैले हुए हाथ में जा गिरा। लेकिन जब से हमने कॉम्ब्रे जाना शुरू किया था, फ्रांस्वा से बेहतर मैं किसी को नहीं जानता था। हम उसके लाडले थे, और कम से कम शुरुआती वर्षों में, हालांकि वह हमारे प्रति मेरी चाची के समान ही स्नेह दिखाती थी, फिर भी वह हमें और भी अधिक पसंद करती थी, क्योंकि परिवार के सदस्य होने के नाते हमारी गरिमा के अलावा (क्योंकि रक्त संबंध के उन अदृश्य बंधनों के प्रति उसका उतना ही सम्मान था जितना किसी यूनानी त्रासदीकार का), हमें यह नया आकर्षण भी प्राप्त था कि हम उसके नियमित नियोक्ता नहीं थे। और इसलिए वह कितनी खुशी से हमारा स्वागत करती थी, और कितनी उदासी से शिकायत करती थी कि हमारे आगमन के दिन, ईस्टर से ठीक पहले, जब अक्सर बर्फीली हवा चलती थी, मौसम अभी भी हमारे लिए इतना खराब था; जबकि माँ अपनी बेटी और भतीजों के बारे में पूछती थी, और यह भी कि क्या उसका पोता सुंदर है, और वे उसे क्या बनाएंगे, और क्या वह अपनी नानी जैसा दिखता है।

बाद में, जब कमरे में कोई और नहीं होता था, तो माँ, जो जानती थी कि फ्रांस्वा अभी भी अपने माता-पिता के लिए शोक मना रही है, जिनकी मृत्यु कई वर्षों पहले हो गई थी, उनके बारे में प्यार से बात करती थी, और उनसे और उनके जीवन के बारे में उससे अनगिनत छोटे-छोटे सवाल पूछती थी।

उन्हें अंदाज़ा था कि फ्रांस्वा अपने दामाद को ज़्यादा पसंद नहीं करती थी, और वह अपनी बेटी से मिलने जाने पर मिलने वाले आनंद को कम कर देता था, क्योंकि उसके वहाँ होने पर दोनों खुलकर बात नहीं कर पाती थीं। इसलिए एक दिन, जब फ्रांस्वा कॉम्ब्रे से कुछ मील दूर अपने घर जा रही थी, तो माँ ने मुस्कुराते हुए उससे कहा: "बताओ, फ्रांस्वा, अगर जूलियन को जाना पड़ा, और सारा दिन मार्गरेट तुम्हारे साथ रहे, तो तुम्हें बहुत दुख होगा, लेकिन तुम इसका पूरा फ़ायदा उठाओगी, है ना?"

और फ्रांस्वा ने हंसते हुए उत्तर दिया: "मैडम सब जानती हैं; मैडम तो उन एक्स-रे से भी बदतर हैं" (उसने 'एक्स' का उच्चारण बनावटी ढंग से और एक अनपढ़ महिला के वैज्ञानिक शब्द का प्रयोग करने की हिम्मत पर तिरस्कार भरी मुस्कान के साथ किया) "जो मैडम ऑक्टेव के लिए लाए गए थे, जो दिल की बात जान लेते हैं"—और वह चली गई, इस बात से परेशान कि कोई उसकी परवाह कर रहा है, शायद इस बात से चिंतित कि हम उसे रोते हुए न देखें: माँ ही वह पहली व्यक्ति थीं जिन्होंने उसे यह सुख दिया था कि उसका साधारण सुख-दुखों से भरा किसान जीवन, किसी और के लिए भी रुचिकर हो सकता है, किसी के लिए दुख या सुख का स्रोत हो सकता है।

मेरी चाची ने हमारी मुलाकातों के दौरान फ्रांस्वा के बिना काम चलाने की बात मान ली थी, क्योंकि वह जानती थीं कि मेरी माँ उस जैसी सक्रिय और बुद्धिमान नौकरानी की सेवाओं की कितनी सराहना करती थीं। वह

सुबह पाँच बजे भी अपनी रसोई में, चीनी मिट्टी की बनी हुई चमकदार और कड़क झालरों वाली टोपी के नीचे, उतनी ही सजी-धजी दिखती थीं, जितनी कि चर्च जाने के लिए तैयार होने पर; वह हर काम सही तरीके से करती थीं, चाहे वह स्वस्थ हों या बीमार, बिना शोर मचाए, बिना कुछ करने का दिखावा किए, घोड़े की तरह मेहनत करती थीं; मेरी चाची की नौकरानियों में से वह अकेली थीं जो माँ के गर्म पानी या काली कॉफी माँगने पर सचमुच उबलता हुआ लाती थीं; वह उन नौकरानियों में से एक थीं जो किसी अजनबी को घर में पहली नज़र में सबसे कम संतोषजनक लगती हैं, निस्संदेह इसलिए क्योंकि वे उसे जीतने की कोई कोशिश नहीं करतीं और उसे कोई विशेष ध्यान नहीं देतीं, यह जानते हुए कि उन्हें उसकी कोई वास्तविक आवश्यकता नहीं है, और उसे घर में बुलाना जल्द ही बंद हो जाएगा, जितनी जल्दी उन्हें घर से निकाल दिया जाएगा। दूसरी ओर, वे उन गुरुओं और स्वामिनियों के प्रति अत्यंत निष्ठा रखते हैं जिन्होंने उनकी वास्तविक क्षमता का परीक्षण और उसे सिद्ध किया है, और वे उस सतही प्रतिक्रियाशीलता, उस दासतापूर्ण सौहार्द की तलाश नहीं करते हैं, जो किसी अजनबी को अनुकूल रूप से प्रभावित कर सकती है, लेकिन अक्सर आत्मा की पूर्ण बंजरता को छुपाती है जिसमें किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण व्यक्तित्व का जरा सा भी निशान पैदा नहीं कर सकता है।

जब फ्रांस्वा ने यह देखकर कि मेरे माता-पिता के पास उनकी जरूरत की सभी चीजें हैं, सबसे पहले मेरी चाची को उनका पेप्सिन देने और उनसे यह पता लगाने के लिए ऊपर गई कि वह दोपहर के भोजन में क्या लेंगी, तो शायद ही कोई ऐसी सुबह बीतती थी जब उसे किसी महत्वपूर्ण घटना के संबंध में राय देने या स्पष्टीकरण देने के लिए नहीं बुलाया जाता था।

"ज़रा सोचो, फ़्रांस्वा, श्रीमती गौपिल अपनी बहन को लेने के लिए पंद्रह मिनट से भी ज़्यादा देर से गईं: अगर रास्ते में उन्हें और समय की कमी

होती है तो मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं होगा अगर वह एलिवेशन के बाद पहुँचें।"

"खैर, इसमें कुछ भी अद्भुत नहीं होगा," यह उत्तर होगा। या:

"फ्रांकोइस, अगर तुम पाँच मिनट पहले आई होतीं, तो तुमने देखा होता कि श्रीमती इम्बेर्ट कुछ शतावरी लेकर जा रही थीं जो माँ कैलोट की शतावरी से दोगुनी बड़ी थीं: उनकी रसोइया से पता लगाने की कोशिश करो कि उन्हें ये कहाँ से मिलीं। तुम्हें पता है कि तुम इस वसंत में अपनी सभी चटनी में शतावरी डाल रही हो; शायद तुम हमारे मेहमानों के लिए भी कुछ ऐसी ही शतावरी ला सको।"

"अगर वे क्यूरे के यहाँ से आए हों तो मुझे आश्चर्य नहीं होना चाहिए," फ्रांस्वा कहतीं, और:

"मुझे यकीन है कि तुम ऐसा नहीं करोगी, मेरी बेचारी फ्रांस्वा," मेरी चाची कंधे उचकाते हुए जवाब देतीं। "क्यूरे के यहाँ से, सच में! तुम अच्छी तरह जानती हो कि वह कभी भी शतावरी की पतली-पतली टहनियों के अलावा कुछ नहीं उगा सकता, शतावरी तो बिल्कुल भी नहीं। मैं तुम्हें बता रही हूँ, ये टहनियाँ मेरी बांह जितनी मोटी थीं। तुम्हारी बांह नहीं, बल्कि मेरी—बेचारी बांह, जो इस साल फिर से बहुत पतली हो गई है।" या:

"फ्रांकोइस, क्या तुमने अभी वो घंटी नहीं सुनी! उससे मेरा सिर फट गया।"

"नहीं, श्रीमती ऑक्टेव।"

"अरे, बेचारी बच्ची, तुम्हारी खोपड़ी तो बहुत मोटी होगी; इसके लिए भगवान का शुक्रिया अदा करो। मैगुएलॉन डॉक्टर पाइपरॉड को लेने आई थी। वह तुरंत उसे लेकर बाहर आया और वे रू डे ल'ओइसो के रास्ते चले गए। लगता है कोई बच्चा बीमार है।"

"ओह, बेचारा छोटा जीव!" फ्रांकोइस आह भरते हुए कहती थी, जो किसी

अनजान व्यक्ति पर आई विपत्ति के बारे में सुनकर, चाहे वह दुनिया के किसी दूरदराज के हिस्से में ही क्यों न हो, विलाप किए बिना नहीं रह सकती थी। या:

"फ्रांकोइस, अभी किसके लिए शोक की घंटी बजी? अरे हाँ, यह तो श्रीमती रूसो के लिए ही होगी। और मुझे याद ही नहीं आ रहा था कि उनका देहांत पिछली रात हो गया। सच में, अब समय आ गया है कि भगवान मुझे भी अपने पास बुला लें; मुझे नहीं पता कि मेरी प्यारी ऑक्टेव के जाने के बाद से मेरा दिमाग कहाँ चला गया है। लेकिन मैं तुम्हारा समय बर्बाद कर रही हूँ, मेरी प्यारी बच्ची।"

"जी नहीं, श्रीमती ऑक्टेव, मेरा समय इतना कीमती नहीं है; जिसने भी हमारा समय बनाया है, उसने इसे हमें बेचा नहीं है। मैं बस यह सुनिश्चित करने जा रही हूँ कि मेरी ऊर्जा बुझ न जाए।"

इस तरह, फ्रांस्वा और मेरी चाची सुबह के इन सत्रों के दौरान दिन की शुरुआती घटनाओं का गहन विश्लेषण करती थीं। लेकिन कभी-कभी ये घटनाएँ इतनी रहस्यमय या इतनी भयावह हो जाती थीं कि मेरी चाची को लगता था कि वह फ्रांस्वा के ऊपर आने का इंतज़ार नहीं कर सकतीं, और फिर घर में एक ज़ोरदार और चौगुनी गूँज उठती थी।

"लेकिन, मैडम ऑक्टेव, अभी आपके पेप्सिन पीने का समय नहीं है," फ्रांकोइस शुरू करतीं। "क्या आपको चक्कर आ रहे हैं?"

"नहीं, धन्यवाद, फ्रांस्वा," मेरी चाची जवाब देतीं, "हाँ; क्योंकि तुम अच्छी तरह जानती हो कि ऐसा बहुत कम ही होता है जब मुझे कमजोरी महसूस न हो; एक दिन मैं भी श्रीमती रूसो की तरह इस दुनिया से चली जाऊँगी, इससे पहले कि मुझे पता चले कि मैं कहाँ हूँ; लेकिन मैंने इसलिए फोन नहीं किया था। क्या तुम विश्वास करोगी कि मैंने अभी-अभी श्रीमती गौपिल को एक ऐसी छोटी बच्ची के साथ देखा है जिसे मैं बिल्कुल नहीं

जानती थी, ठीक वैसे ही जैसे मैं तुम्हें देख रही हूँ। जाओ और कैमस से एक पैसे का नमक ले आओ। ऐसा अक्सर नहीं होता कि थियोडोर किसी व्यक्ति को न पहचान पाए।"

"लेकिन वह एम. पुपिन की बेटी ही होगी," फ्रांस्वा कहती, वह तुरंत स्पष्टीकरण देना पसंद करती, क्योंकि वह उस सुबह शायद दो बार पहले ही कैमस की दुकान में जा चुकी थी।

"एम. पुपिन की बेटी! ओह, ये तो बड़ी मनगढ़ंत कहानी है, मेरी बेचारी फ्रांस्वा। क्या तुम्हें लगता है कि मुझे एम. पुपिन की बेटी को नहीं पहचानना चाहिए था!"

"लेकिन मेरा मतलब बड़ी वाली से नहीं है, मैडम ऑक्टेव; मेरा मतलब छोटी लड़की से है, जो जौई के स्कूल में पढ़ती है। मुझे लगता है मैंने उसे आज सुबह एक बार देखा है।"

“ओह, अगर यही बात है!” मेरी चाची कहतीं, “वह छुट्टियों में आई होंगी। जी हाँ, यही बात है। पूछने की ज़रूरत नहीं, वह छुट्टियों में ही आई होंगी। लेकिन फिर हम जल्द ही श्रीमती सज़ेरत को आते और अपनी बहन के घर दोपहर के भोजन के लिए घंटी बजाते देखेंगे। बस यही बात है! मैंने गैलोपिन के यहाँ से एक लड़के को टार्ट लेकर जाते देखा। आप देखेंगे कि वह टार्ट श्रीमती गौपिल के लिए था।”

"एक बार जब श्रीमती गौपिल के घर में कोई आ जाएगा, श्रीमती ऑक्टेव, तो आपको जल्द ही उनके सभी लोग दोपहर के भोजन के लिए अंदर जाते हुए दिखाई देंगे, क्योंकि अब उतना जल्दी नहीं है जितना पहले था," यह उत्तर होता, क्योंकि फ्रांस्वा, जो हमारे भोजन की देखभाल के लिए नीचे जाने के लिए उत्सुक थी, मेरी चाची को इस तरह के व्यवधान की संभावना के साथ छोड़ने के लिए दुखी नहीं थी।

"ओह! दोपहर से पहले नहीं!" मेरी चाची हताश स्वर में जवाब देतीं, घड़ी

पर एक बेचैन नज़र डालतीं, लेकिन चुपके से, ताकि किसी को पता न चले कि उन्होंने, जिन्होंने सांसारिक सुखों का त्याग कर दिया था, फिर भी यह जानकर गहरी संतुष्टि महसूस की कि श्रीमती गौपिल दोपहर के भोजन के लिए मेहमानों की प्रतीक्षा कर रही हैं, हालांकि, अफसोस, उन्हें इस नजारे का आनंद लेने के लिए अभी एक घंटे से थोड़ा अधिक इंतजार करना पड़ेगा। "और यह मेरे दोपहर के भोजन के बीच में आएगा!" वह मन ही मन बुदबुदातीं। उनका दोपहर का भोजन ही इतना व्यस्त होता था कि उन्हें किसी और का उसी समय आना पसंद नहीं था। "कम से कम, आप मुझे मेरे क्रीम वाले अंडे सपाट प्लेटों में से एक में देना नहीं भूलेंगी?" ये एकमात्र प्लेटें थीं जिन पर चित्र बने होते थे और मेरी चाची हर भोजन के समय उन प्लेटों पर लिखे विवरण को पढ़कर अपना मनोरंजन करती थीं जो उनके लिए भेजी जाती थीं। वह अपना चश्मा लगाती और बोलती: "अली बाबा और चालीस चोर," "अलादीन, या जादुई चिराग," और मुस्कुराती और कहती, "बहुत बढ़िया।"

"मैं कैमस की ओर ही क्यों न चली जाऊं..." फ्रांस्वा ने यह सोचकर जोखिम उठाया, क्योंकि मेरी चाची का अब उसे वहां भेजने का कोई इरादा नहीं था।

"नहीं, नहीं; अब यह उचित नहीं है; यह निश्चित रूप से पुपिन वाली लड़की ही होगी। मेरी बेचारी फ्रांस्वा, मुझे खेद है कि मैंने तुम्हें बेवजह ऊपर बुलाया।"

लेकिन मेरी चाची को अच्छी तरह पता था कि उन्होंने फ्रांस्वा को फोन करना व्यर्थ नहीं था, क्योंकि कॉम्ब्रे में एक ऐसा व्यक्ति जिसे कोई 'बिल्कुल नहीं जानता' वह किसी पौराणिक देवता के समान ही अविश्वसनीय था, और यह बात अक्सर भुला दी जाती थी कि जब भी रू डू सेंट-एस्पिरिट या चौक में ऐसी कोई रहस्यमयी घटना प्रकट होती थी,

तो सावधानीपूर्वक और गहन शोध से वह काल्पनिक राक्षस हमेशा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में सामने आता था जिसे कोई 'जानता' था, चाहे व्यक्तिगत रूप से या अमूर्त रूप से, कॉम्ब्रे के किसी परिवार से उसके सामाजिक संबंध के रूप में। पता चलता था कि वह श्रीमती सौटन का सेना से सेवानिवृत्त बेटा था, या एब्बे पेर्ड्रेउ की भतीजी जो अपने मठ से घर लौटी थी, या क्यूरे का भाई, जो शैतोडुन में कर-संग्रहकर्ता था और पेंशन पर सेवानिवृत्त हुआ था या छुट्टियों के लिए कॉम्ब्रे आया था। उन्हें पहली बार देखकर आप इस विचार से प्रभावित हुए होंगे कि कॉम्ब्रे में ऐसे लोग हो सकते हैं जिन्हें आप 'बिल्कुल नहीं जानते', क्योंकि आप उन्हें तुरंत पहचान नहीं पाए थे। जबकि बहुत पहले ही श्रीमती सॉटन और क्यूरे ने चेतावनी दी थी कि वे अपने 'अजनबियों' की उम्मीद कर रहे हैं। शाम को, जब मैं अंदर आया और अपनी चाची को हमारी सैर की घटनाओं के बारे में बताने के लिए ऊपर गया, तो अगर मैंने उनसे यह कहने की हिम्मत की कि हम पोंट-विएक्स के पास एक ऐसे व्यक्ति से मिले जिसे मेरे दादाजी नहीं जानते थे:

“एक ऐसा आदमी जिसे दादाजी बिल्कुल नहीं जानते थे!” वह हैरानी से कहतीं। “यह तो मनगढ़ंत कहानी है।” फिर भी, वह इस खबर से थोड़ी परेशान होतीं, वह पूरी जानकारी सही-सही जानना चाहतीं, इसलिए दादाजी को बुलाया जाता। “चाचा जी, पोंट-विएक्स के पास से आप जिस आदमी को देखकर गुज़रे, वह कौन था? एक ऐसा आदमी जिसे आप बिल्कुल नहीं जानते थे?”

"क्यों, बिल्कुल मैंने किया था," मेरे दादाजी जवाब देते थे; "वह प्रॉस्पर था, जो श्रीमती बौइलेबोफ के माली का भाई था।"

“अरे वाह!” मेरी चाची फिर शांत होकर, लेकिन चेहरे पर हल्की सी लाली लिए कहतीं; “और उस लड़के ने मुझे बताया कि तुम एक ऐसे आदमी के

पास से गुज़री जिसे तुम बिल्कुल नहीं जानती थीं!" इसके बाद मुझे सावधान किया जाता कि मैं सोच-समझकर बोलूँ और बिना सोचे-समझे कही गई बातों से चाची को परेशान न करूँ। कॉम्ब्रे में हर कोई इतना जाना-पहचाना था, चाहे वो जानवर हों या इंसान, कि अगर मेरी चाची किसी ऐसे कुत्ते को देखतीं जिसे वो 'बिल्कुल नहीं जानती थीं', तो वो लगातार उसके बारे में सोचती रहतीं, और उस अनसुलझी समस्या को सुलझाने में अपनी सारी बुद्धि और खाली समय लगा देतीं।

"वह श्रीमती सैज़ेरत का कुत्ता होगा," फ्रांस्वा बिना किसी ठोस विश्वास के, लेकिन शांति की उम्मीद में, और ताकि मेरी चाची का सिर न फूट जाए, सुझाव देती।

"जैसे कि मैं श्रीमती सजेरत के कुत्ते को नहीं जानती थी!"—क्योंकि मेरी चाची का आलोचनात्मक मन किसी भी नए तथ्य को इतनी आसानी से स्वीकार नहीं करता था।

"अरे, लेकिन यह तो वह नया कुत्ता होगा जिसे एम. गैलोपिन लिसीक्स से उसके लिए लाए हैं।"

"ओह, अगर यही बात है तो!"

"लगता है, यह एक बहुत ही आकर्षक जानवर है," थियोडोर से कहानी सुनने के बाद फ्रांस्वा आगे कहती, "एक ईसाई की तरह चतुर, हमेशा अच्छे स्वभाव का, हमेशा मिलनसार, हमेशा हर तरह से अच्छा। इतनी कम उम्र में इतना अच्छा व्यवहार करने वाला जानवर कम ही देखने को मिलता है। श्रीमती ऑक्टेव, अब मुझे आपके यहाँ से जाना चाहिए; मैं यहाँ बैठकर अपना मनोरंजन नहीं कर सकती; देखिए, लगभग दस बज चुके हैं और मैंने अभी तक आग नहीं जलाई है, और मुझे अभी भी शतावरी को पकाना है।"

"क्या, फ्रांस्वा, और अधिक शतावरी! इस साल तुम्हें शतावरी की एक

आम बीमारी हो गई है: तुम हमारे पेरिसवासियों को इससे बीमार कर दोगी।"

"नहीं, नहीं, मैडम ऑक्टेव, उन्हें यह काफी पसंद है। वे चर्च से जल्द ही शिकारियों की तरह भूखे लौटेंगे, और वे इसे चम्मच के पिछले हिस्से से नहीं खाएंगे, आप देख लेंगी।"

"चर्च! अरे, वे तो अभी तक वहाँ पहुँच ही गए होंगे; आपको ज़रा भी समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। जाइए और अपने दोपहर के भोजन का इंतज़ाम कीजिए।"

जब मेरी चाची फ्रांस्वा के साथ इस तरह गपशप कर रही थीं, तब मैं अपने माता-पिता के साथ चर्च जाया करता था। मुझे यह कितना पसंद था: मुझे आज भी वह दृश्य कितना स्पष्ट दिखाई देता है, कॉम्ब्रे में हमारा चर्च! वह पुराना बरामदा जिससे हम अंदर जाते थे, काला और छलनी की तरह छेदों से भरा हुआ, आकार में ढल चुका था और किनारों पर गहरी लकीरें थीं (जैसा कि वह पवित्र जल पात्र भी था जहाँ तक वह हमें ले जाता था), मानो चर्च में जाने वाली किसान महिलाओं के लबादों का कोमल स्पर्श और पानी में उनकी उंगलियों का डूबना, सदियों से बार-बार दोहराए जाने से एक विनाशकारी शक्ति प्राप्त कर चुका हो, पत्थर पर अपनी छाप छोड़ चुका हो, उस पर ऐसे निशान बना चुका हो जैसे बैलगाड़ी के पहिए पत्थर के खंभों पर बनाते हैं जिनसे वे हर दिन टकराते हैं। इसके स्मारक पत्थर, जिनके नीचे कॉम्ब्रे के मठाधीशों की पवित्र अस्थियां दफ़न थीं, जो वहां दफन थे, और जिन्होंने गायन कक्ष को एक प्रकार का आध्यात्मिक आधार प्रदान किया था, समय के साथ नरम और मधुर हो जाने के कारण अब कठोर और निर्जीव पदार्थ नहीं रह गए थे। समय ने उन्हें नरम और मधुर बना दिया था, और उन्हें शहद की तरह पिघलाकर अपनी सीमाओं से परे बहने दिया था; या फिर वे दूधिया, झागदार लहर की तरह उमड़कर, एक

अलंकृत गोथिक स्तंभ को उसके स्थान से बहा ले जाते थे, और संगमरमर के फर्श पर बिछे सफेद बैंगनी फूलों को डुबो देते थे; या फिर अपनी सीमाओं में समाहित होकर, एक संकरे लैटिन शिलालेख को और भी संकुचित कर देते थे, और उसके संक्षिप्त अक्षरों की व्यवस्था में कल्पना का एक नया स्पर्श जोड़ते थे, किसी शब्द के दो अक्षरों को एक साथ जोड़ते थे, जिसके बाकी अक्षर असमान रूप से बिखरे हुए थे। इसकी खिड़कियां उन दिनों में सबसे अधिक चमकदार होती थीं जब सूरज मुश्किल से चमकता था, इसलिए यदि बाहर मौसम खराब होता, तो आप चर्च में सुहावने मौसम का निश्चित रूप से आनंद ले सकते थे। उनमें से एक खिड़की ऊपर से नीचे तक एक अकेली आकृति से भरी हुई थी, जैसे ताश के पत्ते पर राजा, जो पृथ्वी और स्वर्ग के बीच, पत्थर की अपनी छतरी के नीचे रहता था; और इसकी तिरछी छाया की नीली रोशनी में, कभी-कभी सप्ताह के दिनों में, दोपहर के समय, जब कोई प्रार्थना सभा नहीं होती थी (उन दुर्लभ क्षणों में से एक जब हवादार, खाली चर्च, किसी तरह अधिक मानवीय और सूर्य की रोशनी में अपने सभी समृद्ध साज-सज्जा को प्रदर्शित करते हुए अधिक भव्य प्रतीत होता था, लगभग एक रहने योग्य वातावरण रखता था, जैसे किसी मध्ययुगीन हवेली का हॉल - जो पूरी तरह से तराशे हुए पत्थर और रंगीन कांच से बना हो), आप श्रीमती सजेरत को एक पल के लिए घुटने टेकते हुए देख सकते थे, अपनी कुर्सी के बगल वाली कुर्सी पर छोटे केक का एक करीने से बंधा हुआ पार्सल रखते हुए, जिसे उन्होंने अभी-अभी बेकरी से खरीदा था और अपने दोपहर के भोजन के लिए घर ले जा रही थीं। एक अन्य दृश्य में, गुलाबी बर्फ का एक पहाड़, जिसके चरणों में एक युद्ध लड़ा जा रहा था, ऐसा प्रतीत होता था मानो उसने खिड़की को भी जमा दिया हो, जिसे उसने अपने बादलों जैसी बर्फ़ीली बारिश से फुलाकर विकृत कर दिया था,

मानो कोई शीशा जिस पर बर्फ के टुकड़े गिरकर चिपक गए हों, लेकिन सूर्योदय से प्रकाशित टुकड़े—निस्संदेह, वही रंग जिसने वेदी के पीछे की दीवार को इतने ताज़े बैंगनी रंग से रंग दिया था कि ऐसा लगता था मानो बाहर से आती किसी रोशनी ने क्षण भर के लिए उस पर बिखेरा हो और जल्द ही बुझने वाला हो, न कि पत्थर पर चित्रित और स्थायी रूप से जमा हुआ हो। और वे सभी इतने पुराने थे कि आप जगह-जगह उनकी चांदी जैसी प्राचीनता को सदियों की धूल से चमकते हुए देख सकते थे और उनकी फीकी चमक में उनके सुंदर कांच के ताने-बाने की डोरियाँ दिखाई दे रही थीं। उनमें से एक लंबा पैनल था जो सौ छोटी आयताकार खिड़कियों से बना था, मुख्य रूप से नीले रंग की, मानो राजा चार्ल्स VI को लुभाने के लिए रची गई धैर्य की एक बड़ी परीक्षा हो; लेकिन, या तो सूर्य की एक किरण के छनकर आने के कारण या मेरी बदलती दृष्टि के कारण खिड़की पर, जिसके रंग बारी-बारी से फीके पड़ते और फिर से प्रज्वलित होते थे, एक दुर्लभ और क्षणिक आग दिखाई दी—अगले ही पल उसने मोर की पूंछ की तरह इंद्रधनुषी चमक धारण कर ली, फिर एक ज्वलंत और अद्भुत बौछार में कांप उठी और लहरा गई, जो अंधेरे और चट्टानी गुंबद के गर्त से नम दीवारों पर टपकती हुई प्रतीत हुई, मानो मैं घुमावदार स्टैलेक्टाइट्स की किसी इंद्रधनुषी गुफा के तल पर अपने माता-पिता का अनुसरण कर रहा था, जो मेरे आगे चल रहे थे, उनके हाथों में उनकी प्रार्थना-पुस्तकें थीं; एक क्षण बाद छोटी हीरे के आकार की खिड़कियों ने किसी विशाल कवच पर जड़े नीलमों की तरह गहरी पारदर्शिता और अटूट कठोरता धारण कर ली; लेकिन उससे परे, उन सभी खजानों से कहीं अधिक प्रिय, सूर्य की एक क्षणिक मुस्कान थी, जिसे यहाँ भी देखा और महसूस किया जा सकता था, उस नीले और कोमल प्रवाह में जिसमें वह चिनाई को धोता था, जैसे चौक के फुटपाथ पर या

बाजार के भूसे पर; और यहाँ तक कि हमारे पहले रविवारों को भी, जब हम ईस्टर से पहले नीचे आते थे, तो यह मुझे बाहर की धरती के अंधकार और बंजरपन से सांत्वना देता था, जैसे कि सेंट लुई के वंशजों के बीच पुराने इतिहास में किसी वसंत ऋतु में, कांच में जड़े हुए फॉरगेट-मी-नॉट के इस चमकदार और सुनहरे कालीन को खिलाकर।

उच्च ताने से बुनी दो टेपेस्ट्री एस्तेर के राज्याभिषेक को दर्शाती थीं (परंपरा के अनुसार, बुनकर ने अहासुएरस को फ्रांस के एक राजा का रूप दिया था और एस्तेर को गुएरमांटेस की एक महिला का रूप दिया था, जिसका वह प्रेमी था); उनके रंग आपस में इस तरह घुलमिल गए थे कि चित्रों में भाव, उभार और प्रकाश का संचार हो रहा था। एस्तेर के होठों पर लाल रंग की एक हल्की सी झलक उनकी रूपरेखा से परे चली गई थी; उसके वस्त्र पर पीला रंग इतनी चिकनाई और उभार के साथ फैला हुआ था कि उसमें एक प्रकार की मजबूती आ गई थी और वह धुंधले वातावरण से स्पष्ट रूप से उभर रहा था; जबकि वृक्षों का हरा रंग, जो पैनल के निचले हिस्सों में रेशम और ऊन में अभी भी चमकीला था, लेकिन ऊपर की ओर पूरी तरह से गायब हो गया था, गहरे तनों के ऊपर एक हल्के रंग में अलग हो गया था, पीली पड़ती ऊपरी शाखाएँ, एक अदृश्य सूर्य की तेज लेकिन तिरछी किरणों से टैन और आधी धुंधली हो गई थीं। ये सभी चीजें और इनसे भी कहीं अधिक, वे खजाने जो उन व्यक्तियों से चर्च को प्राप्त हुए थे जो मेरे लिए लगभग पौराणिक हस्तियां थे (जैसे कि संत एलोई द्वारा निर्मित और डागोबर्ट द्वारा भेंट किया गया स्वर्ण क्रॉस, और पोर्फिरी और एनामेल्ड तांबे में लुई द जर्मेनिक के बेटों का मकबरा), जिनके कारण जब हम अपनी कुर्सियों की ओर जा रहे होते थे तो मैं चर्च में ऐसे प्रवेश करता था जैसे किसी परी-प्रेतवाधित घाटी में, जहां देहाती एक चट्टान, एक पेड़, एक दलदल पर आम लोगों के अलौकिक मार्ग के मूर्त प्रमाणों को विस्मय

से देखता है - इन सभी चीजों ने मेरे लिए चर्च को शहर के बाकी हिस्सों से पूरी तरह से अलग बना दिया था; एक ऐसी इमारत जो, एक तरह से, अंतरिक्ष के चार आयामों में व्याप्त थी—चौथे आयाम का नाम समय था —जो उस पुराने गलियारे के साथ सदियों का सफर तय कर चुकी थी, जहाँ एक के बाद एक खाड़ी, एक के बाद एक चैपल, न केवल कुछ गज जमीन पर, बल्कि हर उस युग पर फैले हुए और उसे अपने कब्जे में लिए हुए प्रतीत होते थे, जिससे पूरी इमारत विजयी होकर उभरी थी, ग्यारहवीं शताब्दी की खुरदरी बर्बरता को अपनी मोटी दीवारों में छिपाए हुए, जिनके माध्यम से भारी मेहराबों का कुछ भी दिखाई नहीं देता था, जो लंबे समय से मोटे पत्थरों से बंद और ढके हुए थे, सिवाय उस जगह के जहाँ बरामदे के पास, मीनार की सीढ़ी द्वारा एक दीवार में एक गहरी खांच बनाई गई थी; और वहाँ भी बर्बरता सुंदर गोथिक मेहराबों से ढकी हुई थी जो उस पर नखरे से सटी हुई थी, मानो बड़ी हो चुकी बहनों की एक पंक्ति हो जो उसे अजनबियों की नजरों से छिपाने के लिए, एक देहाती, असभ्य और खराब कपड़े पहने छोटे भाई के सामने मुस्कुराते हुए खड़ी हो जाती हैं; चौक के ऊपर आकाश में एक मीनार खड़ी थी जिसने सेंट लुई को नीचे देखा था, और ऐसा प्रतीत होता था कि वह अब भी उसे देख रही है; और अपनी तहखाने के साथ मेरोविंगियन रात के अंधेरे में धंसते हुए, जिसके माध्यम से, हमें छायादार गुंबद के नीचे, पत्थर के एक विशाल चमगादड़ के पंख की तरह मजबूत पसलियों वाले, उंगलियों से टटोलते हुए मार्गदर्शन करते हुए, थियोडोर या उसकी बहन हमें मोमबत्ती से सिगेबर्ट की छोटी बेटी की कब्र को रोशन करते थे, जिसमें एक गहरा छेद, एक जीवाश्म के बिस्तर की तरह, खोदा गया था, या ऐसा कहा जाता था, "एक क्रिस्टल दीपक द्वारा, जिस रात फ्रैंकिश राजकुमारी की हत्या की गई थी, उसने अपनी मर्जी से उन सोने की जंजीरों को छोड़ दिया था जिनसे वह उस जगह पर

लटका हुआ था जहां आज एप्स है - और न तो क्रिस्टल टूटा और न ही प्रकाश बुझा, वह पत्थर में खुद को दफन कर लिया था, जिसके माध्यम से उसने धीरे से अपना रास्ता बनाया था।"

और फिर कॉम्ब्रे का एप्स: उसके बारे में मैं क्या कहूँ? वह इतना भद्दा, कलात्मक सुंदरता से रहित, यहाँ तक कि धार्मिक भावना से भी पूरी तरह खाली था। बाहर से, क्योंकि जिस सड़क पर वह स्थित था वह निचले स्तर पर थी, उसकी विशाल दीवार बिना पॉलिश किए पत्थरों से बने तहखाने से ऊपर की ओर उठी हुई थी, जिसमें चकमक पत्थर जड़े हुए थे, और उसमें कुछ भी विशेष रूप से धार्मिक नहीं था; खिड़कियाँ असामान्य ऊँचाई पर बनी हुई प्रतीत होती थीं, और उसका पूरा रूप किसी गिरजाघर की दीवार जैसा नहीं, बल्कि जेल की दीवार जैसा था। और निश्चित रूप से बाद के वर्षों में, यदि मैं उन सभी भव्य एप्स को याद करूँ जो मैंने देखे थे, तो कॉम्ब्रे के एप्स की तुलना उनमें से किसी से भी करने का विचार मेरे मन में कभी नहीं आएगा। बस, एक दिन, किसी ग्रामीण कस्बे की एक छोटी सी गली से मुड़ते हुए, मैं तीन गलियों में पहुँचा जो एक-दूसरे से मिलती थीं, और उनके सामने एक पुरानी दीवार थी, घिसी-पिटी, टूटी-फूटी, और असामान्य रूप से ऊँची; जिसमें बहुत ऊपर खिड़कियाँ बनी हुई थीं और कॉम्ब्रे के एप्स की तरह ही उसका भी असममित रूप था। और उस क्षण मैंने मन ही मन यह नहीं कहा, जैसा कि मैंने चार्ट्रेस या रीम्स में किया होगा, कि इसके निर्माण में धार्मिक भावना को कितनी प्रबलता से व्यक्त किया गया है, बल्कि सहज रूप से मैंने कहा, "यह चर्च है!"

चर्च! एक प्रिय, परिचित मित्र; सेंट-हिलैरे गली में, जहाँ इसका उत्तरी द्वार खुलता था, अपने दो पड़ोसियों, श्रीमती लोइसो के घर और श्री रैपिन की फार्मेसी से सटा हुआ, जिसकी दीवारें बिना किसी अंतराल के उससे सटी हुई थीं; कॉम्ब्रे की एक साधारण नागरिक, जिसका नंबर गली में होता

अगर कॉम्ब्रे की गलियों में नंबर होते, और जिसके दरवाजे पर ऐसा लगता था कि डाकिया को अपनी सुबह की ड्यूटी के दौरान श्रीमती लोइसो के घर जाने से पहले और श्री रैपिन के यहाँ से निकलने के बाद रुकना चाहिए; फिर भी, चर्च और कॉम्ब्रे में चर्च के अलावा हर चीज़ के बीच एक स्पष्ट सीमा रेखा थी जिसे मैं अपने मन से कभी मिटा नहीं पाया। श्रीमती लोइसो का प्रयास व्यर्थ ही रहा। लोइसो ने अपनी खिड़कियों की चौखटों को फुकसिया के फूलों से सजाया था, जिनमें यह बुरी आदत पड़ गई थी कि उनकी शाखाएँ हर समय और हर दिशा में, सिर नीचे की ओर लटकती रहती थीं, और जब वे जीवन के सुखों का स्वाद चखने लायक बड़े हो गए, तो उनके फूलों का एकमात्र काम चर्च के अंधेरे अग्रभाग पर जाकर अपने बैंगनी, घने गालों को ठंडा करना था; मेरे लिए ऐसा व्यवहार फुकसिया को बिल्कुल भी पवित्र नहीं बनाता था; फूलों और उन काले पत्थरों के बीच, जिनकी ओर वे झुके हुए थे, यदि मेरी आँखें कोई अंतर नहीं देख पातीं, तो भी मेरे मन में एक खाई का आभास बना रहता था।

दूर से ही सेंट-हिलैरे के शिखर को पहचाना जा सकता था, जो क्षितिज पर अपनी अविस्मरणीय आकृति उकेर रहा था, जिसके नीचे कॉम्ब्रे अभी तक दिखाई नहीं दिया था; जब ईस्टर के समय पेरिस से हमें लाने वाली ट्रेन से मेरे पिता ने इसे देखा, जैसे-जैसे यह आकाश की हर तह में समाता गया, इसका छोटा सा लोहे का शिखर लगातार सभी दिशाओं में घूमता रहा, तो वे कहते: "चलो, अपने कपड़े समेट लो, हम पहुँच गए हैं।" और कॉम्ब्रे से हमारी सबसे लंबी पैदल यात्राओं में से एक में एक ऐसा स्थान था जहाँ संकरी सड़क अचानक एक विशाल मैदान में खुलती थी, जो क्षितिज पर जंगल की पट्टियों से घिरा हुआ था, जिसके ऊपर सेंट-हिलैरे के शिखर का सूक्ष्म बिंदु अकेला खड़ा था, लेकिन इतना तीक्ष्ण और इतना गुलाबी कि ऐसा लगता था मानो किसी चित्रकार ने अपनी उंगली के नाखून से

आकाश पर उकेरा हो, जो ऐसे परिदृश्य को, प्रकृति के इतने शुद्ध टुकड़े को, कला का यह छोटा सा चिह्न, मानव अस्तित्व का यह एकमात्र संकेत देने के लिए उत्सुक था। जैसे ही कोई इसके पास पहुंचा और इसके बगल में खड़े आधे खंडहर हो चुके चौकोर टावर के अवशेषों को देख सका, जो ऊंचाई में इसकी बराबरी नहीं कर सकता था, तो सबसे पहले इसकी पत्थरों की लालिमा और उदासी ने ध्यान आकर्षित किया; और शरद ऋतु की धुंध भरी सुबह में, अंगूर के बागों के बैंगनी बादलों के ऊपर उठते हुए इसे देखकर, कोई इसे बैंगनी रंग का खंडहर कह सकता था, जो लगभग जंगली बेल के रंग जैसा था।

अक्सर चौक में, जब हम घर लौटते थे, तो मेरी दादी मुझे रुककर उसे ऊपर देखने के लिए कहती थीं। मीनार की खिड़कियाँ, जो दो-दो करके एक के ऊपर एक लगी थीं, उनकी दूरी में वह सही और मौलिक अनुपात था जिससे न केवल मनुष्य के चेहरे अपनी सुंदरता और गरिमा पाते हैं। उनसे नियमित अंतराल पर कौवों के झुंड निकलते थे, जो थोड़ी देर के लिए चक्कर लगाते और कांव-कांव करते, मानो वे प्राचीन पत्थर, जिन्होंने उन्हें इस तरह खेलने दिया और कभी उन्हें देखा तक नहीं, अचानक निर्जन हो गए हों और किसी असीम रूप से परेशान करने वाले तत्व को उत्सर्जित करके उन्हें बाहर निकाल दिया हो। फिर शाम की हवा के बैंगनी मखमली रंग में हर जगह अपनी आकृति बनाते हुए, अचानक शांत होकर, वे लौट आते और मीनार में समा जाते, अब घातक नहीं बल्कि सौम्य। कुछ यहाँ-वहाँ बुर्जों के बिंदुओं पर बैठते (ऐसा प्रतीत नहीं होता कि वे हिल रहे हैं, लेकिन शायद किसी गुजरते हुए कीड़े को झपट्टा मारकर निगल रहे हैं), जैसे कोई समुद्री पक्षी मछुआरे की तरह स्थिर होकर लहर की चोटी पर बैठता है। बिना ठीक से जाने ही, मेरी दादी को सेंट-हिलैरे के शिखर में वह अश्लीलता, आडंबर और नीचता का अभाव मिला, जिसने

उन्हें प्रकृति से प्रेम करने और उसे लाभकारी प्रभावों से भरपूर मानने के लिए प्रेरित किया, जब तक कि मनुष्य के हाथों ने, जैसा कि मेरी परदादी के माली ने किया था, उसे छाँटा न हो, और न ही प्रतिभा की कृतियों को। और निश्चित रूप से, चर्च का हर हिस्सा एक प्रकार की सामान्य भावना से इसे किसी भी अन्य इमारत से अलग करता था, लेकिन शिखर में ही चर्च स्वयं की चेतना प्रदर्शित करता प्रतीत होता था, अपने व्यक्तिगत और उत्तरदायी अस्तित्व की पुष्टि करता था। शिखर ही चर्च के लिए बोलता था। मुझे लगता है कि मेरी दादी ने कॉम्ब्रे के शिखर में एक भ्रमित तरीके से वह पाया जो उन्हें दुनिया में किसी भी चीज़ से अधिक प्रिय था, अर्थात्, एक प्राकृतिक आभा और एक विशिष्टता की आभा। वास्तुकला से अनभिज्ञ, वह कहती थीं:

"मेरे प्यारे, अगर आप चाहें तो मुझ पर हंस सकते हैं; यह पारंपरिक रूप से सुंदर नहीं है, लेकिन इसके विचित्र पुराने चेहरे में कुछ ऐसा है जो मुझे भाता है। अगर यह पियानो बजा सकता, तो मुझे यकीन है कि यह सचमुच बजाता।" और जब वह इसे निहारती, जब उसकी आंखें इसकी पथरीली ढलानों के कोमल तनाव, उस जोशीले झुकाव का अनुसरण करतीं जो प्रार्थना में जुड़े हाथों की तरह ऊपर उठते हुए एक साथ आती थीं, तो वह शिखर के उस प्रवाह में इतनी मग्न हो जाती कि उसकी निगाहें मानो उसके साथ ऊपर की ओर उछल पड़तीं; उसी समय उसके होंठ उन घिसे-पिटे पुराने पत्थरों के लिए एक दोस्ताना मुस्कान में मुड़ जाते, जिन पर ढलता सूरज अब केवल सबसे ऊपरी चोटियों को ही रोशन कर रहा था, जो सूर्य के प्रकाश के उस क्षेत्र में प्रवेश करते ही और उससे कोमल और मधुर होकर, अचानक बहुत ऊंचे उठ खड़े हुए प्रतीत होते, मानो सचमुच दूर हो गए हों, जैसे कोई गीत जिसका गायक संगत धुन से एक सप्तक ऊपर ऊँची आवाज़ में गाने लगता है।

यह सेंट-हिलैरे का शिखर ही था जिसने शहर के हर व्यवसाय, दिन के हर घंटे और हर दृश्य को आकार दिया, सुशोभित किया और पवित्र किया। मेरे शयनकक्ष की खिड़की से मैं इसके आधार के अलावा और कुछ नहीं देख पा रहा था, जिसे हाल ही में स्लेटों से ढका गया था; लेकिन जब रविवार को मैं इन्हें गर्मी की सुबह की चिलचिलाती धूप में काले सूरज की तरह चमकते हुए देखता, तो मैं मन ही मन कहता: "हे भगवान! नौ बज गए! मुझे तुरंत प्रार्थना के लिए तैयार होना होगा, तभी मुझे अंदर जाकर आंटी लियोनी को चूमने का समय मिलेगा।" और मैं चौक पर सूर्य की रोशनी का रंग ठीक-ठीक जान पाता था। मैं बाजार की गर्मी और धूल महसूस कर सकता था, उस दुकान के पर्दों के पीछे की छाया, जिसमें शायद माँ प्रार्थना के लिए जाती होंगी, बिना धुले कैलिको की गंध को भेदते हुए, एक रूमाल या कुछ और खरीदने के लिए, जिसका सामान खुद दुकानदार कमर झुकाकर उन्हें दिखाता था: जो दुकान बंद करने के लिए सब कुछ तैयार करने के बाद, अभी-अभी पीछे वाली दुकान में अपना संडे कोट पहनने और हाथ धोने गया था, जो उसकी आदत थी, हर कुछ मिनटों में और यहाँ तक कि सबसे दुखद अवसरों पर भी, उद्यम, चालाकी और सफलता के भाव से एक हाथ को दूसरे से रगड़ना।

और फिर, प्रार्थना के बाद, जब हमने थियोडोर को सामान्य से बड़ी रोटी लाने के लिए कहा क्योंकि हमारे चचेरे भाई-बहन अच्छे मौसम का फायदा उठाकर थिबरज़ी से दोपहर के भोजन के लिए आए थे, तो हमारे सामने चर्च का शिखर था, जो एक बड़ी 'पवित्र रोटी' की तरह पका हुआ और भूरा था, जिस पर सूर्य की किरणों की बूंदें और चिपचिपी बूंदें थीं, और उसकी नुकीली नोक नीले आकाश में चुभ रही थी। और शाम को, जब मैं अपनी सैर से लौटी और उस पल के बारे में सोचने लगी जब मुझे अपनी माँ को शुभ रात्रि कहना होगा और उन्हें फिर कभी नहीं देखना होगा, तो

दिन ढलने पर वह शिखर इतना सौम्य लग रहा था कि मैं कल्पना करती थी कि वह एक भूरे मखमली तकिए की तरह, फीके आकाश में धंसा हुआ है, जो उसके दबाव में थोड़ा झुक गया है, उसके लिए जगह बनाने के लिए थोड़ा नीचे चला गया है, और उसी अनुपात में दोनों ओर उठ गया है; जबकि इसके चारों ओर चक्कर लगाते पक्षियों की चीखें इसकी खामोशी को और भी तीव्र करती हुई प्रतीत हो रही थीं, इसके शिखर को और भी लंबा कर रही थीं, और इसे शब्दों की शक्ति से परे एक गुणवत्ता प्रदान कर रही थीं।

यहां तक कि जब हमारे काम चर्च के पीछे ऐसी जगहों पर होते थे जहां से चर्च दिखाई नहीं देता था, तब भी दृश्य हमेशा चर्च के शिखर को ध्यान में रखकर ही रचा गया प्रतीत होता था, जो घरों के बीच कहीं यहां, कहीं वहां दिखाई देता था, और शायद चर्च के बिना इस तरह दिखाई देने पर और भी अधिक मनमोहक लगता था। और वास्तव में, ऐसे कई अन्य दृश्य हैं जो इस तरह देखने पर सबसे अच्छे लगते हैं, और मुझे कॉम्ब्रे की नीरस गलियों से बनी कलाकृतियों से बिल्कुल अलग श्रेणी की कला में शामिल घरों की छतों पर बने शिखरों के छोटे-छोटे चित्र याद आते हैं। मैं बालबेक से कुछ ही दूरी पर स्थित एक विचित्र नॉर्मन कस्बे में स्थित अठारहवीं शताब्दी के दो आकर्षक मकानों को कभी नहीं भूल पाऊंगा, जो मुझे बहुत प्रिय और अनेक कारणों से आदरणीय हैं। जब कोई नदी तक सीढ़ियों के रूप में उतरते एक सुंदर बगीचे से इन मकानों की ओर देखता है, तो एक चर्च का गोथिक शिखर (जो स्वयं मकानों से छिपा हुआ है) आकाश में इस प्रकार ऊंचा उठता है मानो उनके अग्रभागों को सुशोभित और पूर्ण कर रहा हो, लेकिन उसकी सामग्री इतनी भिन्न, इतनी कीमती, इतनी अलंकृत, इतनी गुलाबी, इतनी पॉलिश की हुई है कि वह तुरंत ही उनका हिस्सा प्रतीत नहीं होती, मानो दो सुंदर कंकड़ अगल-बगल पड़े हों, जिनके

बीच वह समुद्र तट पर बहकर आया हो, जैसे किसी समुद्री सीप का बैंगनी, झुर्रीदार शिखर बुर्ज की तरह चमक रहा हो। पेरिस में भी, शहर के सबसे बदसूरत इलाकों में से एक में, मुझे एक ऐसी खिड़की याद है जहाँ से अस्त-व्यस्त छतों की पहली, दूसरी और यहाँ तक कि तीसरी परत के पार, गली-गली, एक बैंगनी घंटी दिखाई देती है, कभी लाल, कभी वातावरण द्वारा बनाई गई सबसे बारीक 'छापों' में, राख जैसे काले रंग की; जो वास्तव में सेंट-ऑगस्टिन का गुंबद है, और जो पेरिस के इस दृश्य को रोम के पिरानेसी के कुछ दृश्यों का चरित्र प्रदान करता है। लेकिन चूंकि इन छोटी-छोटी नक्काशी में से कोई भी, चाहे मेरी स्मृति ने उनके निर्माण में जो भी रुचि दिखाई हो, वह तत्व नहीं जोड़ पाई जो मैं बहुत पहले खो चुका हूँ, वह भावना जो हमें किसी चीज को केवल एक तमाशा के रूप में देखने के बजाय, उसमें एक अद्वितीय प्राणी की तरह विश्वास करने के लिए प्रेरित करती है, इसलिए उनमें से कोई भी मेरे अंतर्मन के उस पूरे हिस्से को अपने ऊपर नहीं रखती जितना कि चर्च के पीछे की गलियों से कॉम्ब्रे के शिखर के उन दृश्यों की स्मृति रखती है। चाहे कोई इसे शाम पांच बजे डाकघर में चिट्ठियाँ लेने जाते समय देखे, जो आपके घर से कुछ ही दूरी पर बाईं ओर स्थित है, और अपनी अकेली चोटी के साथ घरों की छतों की कतार को अचानक ऊपर उठाता हुआ दिखाई देता है; या फिर, जब आपको अंदर जाकर श्रीमती सजेरत का हालचाल पूछना होता है, तो आपकी निगाहें उस रेखा का पीछा करती हैं जहाँ वह आगे ढलान पर फिर से नीचे चली जाती है, और आपको पता चल जाता है कि यह चर्च के शिखर के बाद दूसरा मोड़ होगा; या फिर, यदि आप और आगे बढ़ते हुए स्टेशन की ओर जाते हैं, तो इसे तिरछे रूप से देखा जा सकता है, जो एक ठोस पिंड की तरह अपने घूर्णन में किसी अज्ञात बिंदु पर आश्चर्यचकित होकर, नए कोणों और सतहों को प्रदर्शित करता है। या फिर, विवोन नदी

के किनारे से, एप्स, जो बलपूर्वक एक साथ खींचा गया था और परिप्रेक्ष्य में ऊंचा दिखाई देता था, ऐसा प्रतीत होता था मानो वह शिखर को स्वर्ग के हृदय में फेंकने के प्रयास से ऊपर की ओर उछल रहा हो: हमेशा शिखर की ओर ही लौटना पड़ता था, हमेशा वही जो बाकी सब पर हावी था, अप्रत्याशित शिखर के साथ इमारतों को समेटे हुए, मेरे सामने ईश्वर की उंगली की तरह उठा हुआ, जिसका शरीर नीचे मानव शरीरों की भीड़ में छिपा हो सकता था, इस डर के बिना कि मैं उसे, इस कारण से, उनके साथ भ्रमित कर दूंगा। और इसलिए आज भी किसी भी बड़े प्रांतीय शहर में, या पेरिस के किसी ऐसे इलाके में जिसे मैं अच्छी तरह से नहीं जानता, अगर कोई राहगीर जो मुझे 'सही रास्ते पर ले जा रहा है' मुझे दूर से किसी अस्पताल के घंटाघर या किसी मठ के शिखर को, जो उस गली के कोने पर अपनी धार्मिक टोपी की चोटी उठा रहा हो, जिसे मुझे लेना है, दिखाता है, तो मेरी स्मृति को बस उस प्रिय और लुप्त हो चुके आकार की कुछ धुंधली सी झलक मिल जाती है, और राहगीर, अगर वह यह सुनिश्चित करने के लिए पीछे मुड़ता है कि मैं भटक तो नहीं गया, तो वह मुझे, अपने आश्चर्य के साथ, उस रास्ते से बेखबर, जहाँ मुझे जाना था, घंटों तक उस शिखर के सामने स्थिर खड़ा देखेगा, बिना हिले-डुले, याद करने की कोशिश करते हुए, अपने भीतर उस मिट्टी के टुकड़े को महसूस करते हुए जो लेथे नदी के पानी से वापस ली गई थी और धीरे-धीरे सूख रही थी जब तक कि उस पर इमारतें फिर से खड़ी नहीं हो गईं; और फिर निःसंदेह, और फिर अभी-अभी जब मैंने उससे रास्ता पूछा था, उससे भी अधिक बेचैनी से, मैं अपना रास्ता फिर से खोजूंगा, मैं एक मोड़ लूंगा...लेकिन... लक्ष्य मेरे दिल में है...

चर्च में प्रार्थना सभा से लौटते समय हमारी अक्सर एम. लेग्रैंडिन से मुलाकात होती थी, जो इंजीनियर के रूप में अपने पेशेवर कर्तव्यों के

कारण पेरिस में ही रहते थे और (नियमित छुट्टियों के मौसम को छोड़कर) केवल शनिवार शाम से सोमवार सुबह के बीच ही अपने कॉम्ब्रे स्थित घर जा पाते थे। वे उन गिने-चुने लोगों में से थे, जिन्होंने वैज्ञानिक पेशे के अलावा, जिसमें वे शानदार सफलता प्राप्त कर सकते थे, एक बिल्कुल अलग तरह की साहित्यिक या कलात्मक संस्कृति विकसित की थी, जिसका वे अपने पेशे के विशेष कार्य में उपयोग नहीं करते थे, लेकिन जिससे उनकी बातचीत को लाभ मिलता था। कई साहित्यकारों से कहीं अधिक 'साहित्यिक' (उस समय हमें यह जानकारी नहीं थी कि एम. लेग्रैंडिन एक लेखक के रूप में प्रतिष्ठित थे, इसलिए यह जानकर हमें बहुत आश्चर्य हुआ कि एक प्रसिद्ध संगीतकार ने उनकी कुछ कविताओं को संगीतबद्ध किया था), कई चित्रकारों की तुलना में अधिक सहजता से काम करने वाले, वे मानते हैं कि जिस जीवन को जीने के लिए वे बाध्य हैं, वह उनके लिए वास्तव में उपयुक्त नहीं है, और वे अपने नियमित कार्यों के प्रति या तो एक अजीब सी उदासीनता या एक निरंतर और उदात्त समर्पण, तिरस्कारपूर्ण, कड़वाहट और कर्तव्यनिष्ठा का भाव रखते हैं। लंबा कद, सुगठित शरीर, सुंदर, विचारशील चेहरा, झुकी हुई सुनहरी मूंछें, नीली आँखों में निराशा का भाव, शिष्टाचार का अतिरंजित रूप; ऐसा वक्ता जैसा हमने पहले कभी नहीं सुना था; मेरे परिवार की नज़र में, जो हमेशा उन्हें एक आदर्श उदाहरण के रूप में उद्धृत करता था, वे एक ऐसे सज्जन व्यक्ति का आदर्श थे, जो जीवन को अत्यंत गरिमामय और शालीन तरीके से जीते थे। केवल मेरी दादी को ही उनमें थोड़ी सी खटकती थी कि वे कुछ ज़्यादा ही सधे हुए लवालियर टाई और कुछ ज़्यादा ही किताबी भाषा का प्रयोग करते थे, और उनकी शब्दावली उतनी स्वाभाविक नहीं थी जितनी उनकी ढीली-ढाली लवालियर टाई और उनका छोटा, सीधा, लगभग स्कूली बच्चे जैसा कोट। वे इस बात से भी चकित

थीं कि वे हमेशा अभिजात वर्ग, फैशनेबल जीवन और 'घमंड' पर कितने तीखे हमले करते थे—वे कहते थे, "निस्संदेह, यह वही पाप है जिसके बारे में संत पॉल तब सोच रहे थे जब वे उस पाप की बात करते हैं जिसके लिए कोई क्षमा नहीं है।"

सांसारिक महत्वाकांक्षा एक ऐसी चीज थी जिसे मेरी दादी न तो समझ पाती थीं और न ही महसूस कर पाती थीं, इसलिए उन्हें इसकी कड़ी निंदा करना व्यर्थ लगता था। इसके अलावा, उन्हें यह बात भी ठीक नहीं लगती थी कि एम. लेग्रैंडिन, जिनकी बहन की शादी बालबेक के पास लोअर नॉर्मंडी के एक ग्रामीण सज्जन से हुई थी, कुलीनों पर इतने हिंसक हमले करें और यहाँ तक कि क्रांति को भी दोषी ठहराएँ कि उसने उन सभी को गिलोटिन से क्यों नहीं मारा।

"आपसे मिलकर अच्छा लगा, मेरे दोस्तों!" वह हमारी ओर आते हुए कहता। "आप भाग्यशाली हैं कि आप यहाँ इतना समय बिता रहे हैं; कल मुझे पेरिस वापस जाना है, अपनी जगह पर फिर से काम शुरू करना है।"

"ओह, मैं मानता हूँ," वह अपनी खास, हल्की व्यंग्यात्मक, निराश और अस्पष्ट मुस्कान के साथ आगे बोले, "मेरे घर में दुनिया की हर बेकार चीज़ है। बस एक ही चीज़ की कमी है, और वो है ज़रूरी चीज़, इस तरह का खुला आसमान। नन्हे बच्चे, हमेशा अपने जीवन के ऊपर आसमान का एक टुकड़ा रखने की कोशिश करो," उन्होंने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा। "तुम्हारे अंदर एक अनमोल आत्मा है, एक कलाकार का स्वभाव; इसे कभी भी ज़रूरतों की कमी से भूखा मत रहने देना।"

जब हम घर पहुँचते और मेरी चाची हमसे पूछतीं कि क्या श्रीमती गौपिल वाकई प्रार्थना के लिए देर से आई हैं, तो हममें से कोई भी उन्हें यह नहीं बता पाता। इसके बजाय, हम उन्हें यह कहकर उनकी चिंता और बढ़ा देते कि चर्च में एक चित्रकार गिल्बर्ट द बैड की खिड़की की नकल बना रहा

है। फ्रांस्वा को तुरंत किराने की दुकान पर भेजा गया, लेकिन थियोडोर के न होने के कारण वह खाली हाथ लौट आई। थियोडोर एक गायक मंडली का सदस्य होने के साथ-साथ चर्च की देखरेख में भी मदद करता था और किराने की दुकान में सहायक भी था, जिससे न केवल उसके समाज के सभी वर्गों से संबंध थे, बल्कि उनके मामलों का उसे व्यापक ज्ञान भी था।
"आह!" मेरी चाची आह भरते हुए कहतीं, "काश यूलाली के आने का समय हो जाता। वही एकमात्र ऐसी व्यक्ति हैं जो मुझे सही बात बता पाएंगी।"
यूलाली एक लंगड़ाती, ऊर्जावान, बहरी अविवाहित महिला थीं, जिन्होंने श्रीमती डे ला ब्रेटोनरी की मृत्यु के बाद 'सेवानिवृत्त' हो गई थीं, जिनके यहाँ उन्होंने बचपन से सेवा की थी। उन्होंने चर्च के बगल में एक कमरा ले लिया था, जहाँ से वे अक्सर बाहर आती थीं, या तो किसी धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने के लिए, या जब कोई अनुष्ठान नहीं होता था, तो अकेले प्रार्थना करने के लिए या थियोडोर की मदद करने के लिए। बाकी समय वे मेरी चाची लियोनी जैसे बीमार लोगों से मिलने में बिताती थीं, जिन्हें वे प्रार्थना सभा या संध्या प्रार्थना में हुई हर बात बताती थीं। अपने पुराने मालिकों के परिवार द्वारा उन्हें दी जाने वाली थोड़ी-सी आमदनी में वे कभी-कभी अतिरिक्त जेब खर्च भी जोड़ लेती थीं, जिसके लिए वे समय-समय पर पादरी के कपड़ों की देखभाल करती थीं, या कॉम्ब्रे के पादरी जगत के किसी अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति के कपड़ों की देखभाल करती थीं। काले कपड़े की चादर के ऊपर उन्होंने एक छोटी सी सफेद टोपी पहन रखी थी, जो मानो उन्हें किसी धार्मिक संप्रदाय से जोड़ती थी। त्वचा की कमजोरी के कारण उनके गालों और टेढ़ी नाक का कुछ हिस्सा बाम के चमकीले लाल रंग से रंगा हुआ था। उनका आना मेरी चाची लियोनी के जीवन का एकमात्र बड़ा मनोरंजन था, जो अब आदरणीय पादरी के

अलावा शायद ही किसी और से मिलती थीं। मेरी चाची ने धीरे-धीरे अपने आगंतुकों की सूची से हर दूसरे व्यक्ति का नाम मिटा दिया था, क्योंकि उनकी नज़र में वे सभी उन दो श्रेणियों में आते थे जिनसे उन्हें सबसे ज़्यादा नफ़रत थी। एक समूह, जो दोनों में सबसे बुरा था और जिससे उसने सबसे पहले छुटकारा पाया, उन लोगों का था जो उसे अपनी इतनी देखभाल न करने की सलाह देते थे और (भले ही नकारात्मक रूप से और कभी-कभार असहमति भरी चुप्पी या संदेह भरी मुस्कान के अलावा कोई बाहरी संकेत दिए बिना) यह विध्वंसक सिद्धांत फैलाते थे कि धूप में एक तेज सैर और एक अच्छा लाल बीफ़स्टीक उसके लिए (उसके लिए, जिसने चौदह घंटे तक पेट में विची पानी के दो भयानक घूंट ही लिए थे!) उसकी सभी दवाइयों की बोतलों और बिस्तर से कहीं अधिक फायदेमंद होगा। दूसरा वर्ग उन लोगों का था जो मानते थे कि वह जितना सोचती है उससे कहीं अधिक गंभीर रूप से बीमार है, वास्तव में वह उतनी ही गंभीर रूप से बीमार थी जितना वह कहती थी। और इसलिए उनमें से कोई भी, जिन्हें उसने काफी हिचकिचाहट के बाद और फ्रैंचाइज़ के आग्रह पर अपने कमरे में ऊपर आने की अनुमति दी थी, और जिन्होंने अपनी मुलाकात के दौरान यह कहकर अपनी अयोग्यता प्रदर्शित की थी कि वे उस सम्मान के लायक नहीं थे जो उन्हें दिया गया था: "क्या आपको नहीं लगता कि अगर आप वास्तव में अच्छे दिनों में थोड़ा बाहर निकलें तो...?" या फिर, दूसरी ओर, जब उसने उनसे कहा: "मैं बहुत उदास हूँ, बहुत उदास; अंत निकट है, प्रिय मित्रों!" तो उन्होंने जवाब दिया: "अरे हाँ, जब किसी के पास कोई शक्ति नहीं बचती! फिर भी, आप कुछ समय और जी सकते हैं"; हर पक्ष को यह निश्चित हो सकता था कि उसके दरवाजे उनके लिए फिर कभी नहीं खुलेंगे। और अगर फ्रांस्वा को मेरी चाची के चेहरे पर घबराहट का भाव देखकर हंसी आती थी, जब भी वह अपने बिस्तर से सेंट-एस्पिरिट

गली में इन लोगों में से किसी को देखती थी, जो मानो उससे मिलने आ रहे हों, या अपनी घंटी बजती सुनती थी, तो वह मेरी चाची की उन युक्तियों (जो कभी विफल नहीं होती थीं) पर कहीं अधिक दिल खोलकर हंसती थी, जिनसे वह उन्हें भगा देती थी, और उनके चेहरे पर निराशा देखकर जब उन्हें बिना देखे वापस लौटना पड़ता था; और वह अपनी मालकिन के लिए मन ही मन प्रशंसा से भर जाती थी, जिसे वह इन सभी अन्य लोगों से श्रेष्ठ मानती थी, क्योंकि वह उनसे न मिलने का प्रबंध कर सकती थी और करती भी थी। संक्षेप में, मेरी चाची ने एक ही समय में यह शर्त रखी कि जो भी उनसे मिलने आए, उसे उनके जीवन जीने के तरीके को स्वीकार करना होगा, उनके कष्टों में उनके प्रति सहानुभूति दिखानी होगी और उन्हें अंततः स्वस्थ होने का आश्वासन देना होगा।

इन सबमें यूलाली सबसे आगे थी। मेरी चाची उससे एक मिनट में बीस बार कहतीं: "अंत आ ही गया, मेरी बेचारी यूलाली!", और यूलाली बीस बार जवाब देती: "आपकी बीमारी को देखते हुए, श्रीमती ऑक्टेव, आप सौ साल तक जिएंगी, जैसा कि श्रीमती साज़ेरिन ने कल ही मुझसे कहा था।" यूलाली की सबसे गहरी मान्यताओं में से एक, जिसे उसके अनुभव से उत्पन्न हुई तमाम गलतियों के बावजूद मिटाना असंभव था, यह थी कि श्रीमती साज़ेरत का असली नाम श्रीमती साज़ेरिन था।

"मैं सौ साल तक जीने की कामना नहीं करती," मेरी चाची कहा करती थीं, क्योंकि वह अपने जीवन के दिनों की कोई निश्चित सीमा तय नहीं करना चाहती थीं।

और इसके अलावा, यूलाली को यह बात किसी और से बेहतर पता थी कि मेरी चाची को बिना थकाए उनका ध्यान कैसे भटकाया जाए। इसलिए, हर रविवार को नियमित रूप से होने वाली उनकी मुलाक़ातें, जब तक कि कोई अप्रत्याशित घटना उन्हें रोक न दे, मेरी चाची के लिए एक

ऐसा आनंद थीं जिसकी प्रतीक्षा में वे उन दिनों उत्सुक रहती थीं। शुरुआत में तो यह उत्सुकता काफी लुभावनी लगती थी, लेकिन अगर यूलाली एक मिनट भी देर से आतीं तो यह उत्सुकता अतृप्त भूख की पीड़ा में बदल जाती थी। क्योंकि, अगर प्रतीक्षा बहुत लंबी हो जाती, तो यूलाली के आने का आनंद एक यातना बन जाता, और मेरी चाची लगातार समय देखती रहतीं, जम्हाई लेती रहतीं और बारी-बारी से अपनी हर परेशानी का बखान करती रहतीं। अगर दिन के बिल्कुल अंत में, जब उन्हें इसकी उम्मीद नहीं होती थी, दरवाजे की घंटी बजती, तो वे लगभग बीमार पड़ जातीं। दरअसल, रविवार को वह इस मुलाकात के अलावा और कुछ नहीं सोचती थी, और जैसे ही हमारा दोपहर का भोजन समाप्त होता, फ्रांस्वा बेचैन हो जाती कि हम भोजन कक्ष से निकल जाएं ताकि वह ऊपर जाकर मेरी चाची के साथ समय बिता सके। लेकिन—और यह बात उस दिन से और भी ज़्यादा स्पष्ट हो गई जब कॉम्ब्रे में मौसम सुहाना हो गया—दोपहर का वह गौरवशाली समय, सेंट-हिलैरे के शिखर से उतरता हुआ, जो एक पल के लिए अपने बारह नुकीले शिखरों से जगमगा उठता था, हमारी मेज पर, चर्च के बाद हमेशा की तरह परोसी गई 'पवित्र रोटी' के साथ, लंबे समय तक गूंजता रहता था; और हम तब भी अपनी 'अरेबियन नाइट्स' की प्लेटों के सामने बैठे होते, दिन की गर्मी से बोझिल, और उससे भी ज़्यादा अपने भारी भोजन से। अंडे, कटलेट, आलू, जैम और बिस्कुट के स्थायी आधार पर, जिनकी मेज पर उपस्थिति की सूचना वह अब हमें नहीं देती थी, फ्रांस्वा खेतों और बागों की मेहनत, ज्वार की फसल, बाजारों की किस्मत, पड़ोसियों की दयालुता और अपनी प्रतिभा के अनुसार व्यंजन जोड़ती रहती थी; और इतनी प्रभावी ढंग से कि हमारा भोजन, तेरहवीं शताब्दी में गिरजाघरों के बरामदों पर उकेरे गए क्वाट्रफॉइल की तरह, कुछ हद तक ऋतुओं के परिवर्तन और मानव जीवन की घटनाओं को

प्रतिबिंबित करता था - एक ब्रिल मछली, क्योंकि मछली बेचने वाली ने इसकी ताजगी की गारंटी दी थी; एक टर्की, क्योंकि उसने रूसैनविले-ले-पिन के बाजार में एक सुंदर टर्की देखी थी; मज्जा के साथ कार्डून, क्योंकि उसने पहले कभी हमारे लिए उन्हें इस तरह नहीं बनाया था; भुना हुआ मटन का पैर, क्योंकि ताजी हवा से भूख लगती थी और रात के खाने से पहले सात घंटों में इसे 'पचने' के लिए पर्याप्त समय होता था; बदलाव के तौर पर पालक; खुबानी, क्योंकि वे अभी भी मुश्किल से मिलती थीं। आंवले, क्योंकि दो सप्ताह बाद एक भी नहीं बचेगा; रसभरी, जो एम. स्वान विशेष रूप से लाए थे; चेरी, जो चेरी के पेड़ से पहली बार आई थीं, जिस पर पिछले दो वर्षों से कोई चेरी नहीं लगी थी; क्रीम चीज़, जो उन दिनों मुझे बहुत पसंद थी; बादाम का केक, क्योंकि उन्होंने पिछली शाम को एक केक मंगवाया था; एक सुंदर पाव रोटी, क्योंकि पवित्र रोटी 'अर्पित' करने की हमारी बारी थी। और जब ये सब खा लिया जाता, तो एक ऐसी रचना जो विशेष रूप से हमारे लिए बनाई गई थी, लेकिन विशेष रूप से मेरे पिता को समर्पित थी, जिन्हें ऐसी चीजों का बहुत शौक था, एक चॉकलेट क्रीम, जो फ्रांकोइस के हाथों से उनके मन की प्रेरणा से बनी थी, हमारे सामने परोसी जाती, संगीत की किसी क्षणिक रचना की तरह हल्की और क्षणभंगुर, जिसमें उन्होंने अपनी पूरी प्रतिभा उड़ेल दी थी। जो कोई भी इसे खाने से इनकार करते हुए कहता, "नहीं, धन्यवाद, मेरा पेट भर गया है; मुझे भूख नहीं है," वह तुरंत उन फिलिस्तीनियों के स्तर पर पहुँच जाता, जो किसी कलाकार द्वारा भेंट की गई कलाकृति का वजन और सामग्री जाँचते हैं, जबकि असल में मूल्यवान तो रचनाकार का इरादा और उसके हस्ताक्षर होते हैं। थाली में एक छोटा सा टुकड़ा भी छोड़ देना उतना ही असभ्य व्यवहार माना जाता जितना कि संगीत के बजते रहने के दौरान, और संगीतकार की आँखों के सामने, उठकर हॉल से चले जाना।

अंत में मेरी माँ मुझसे कहतीं: "अब, सारा दिन यहीं मत रहो; अगर बाहर बहुत गर्मी लग रही हो तो अपने कमरे में जा सकते हो, लेकिन पहले थोड़ी ताजी हवा ले लो; खाना खाने के तुरंत बाद पढ़ना शुरू मत कर देना।"
और मैं जाकर पंप और उसके कुंड के पास बैठ जाता, जो जगह-जगह से सजा हुआ था, मानो किसी गोथिक शैली के फ़ॉन्ट में सैलामैंडर बना हो, जिसकी पतली, प्रतीकात्मक आकृति टूटे हुए पत्थरों की पृष्ठभूमि पर उभरी हुई थी; बिना पीठ वाली बेंच पर, बकाइन के पेड़ की छाया में, बगीचे के उस छोटे से कोने में, जो एक सेवा द्वार से रू डू सेंट-एस्पिरिट से जुड़ा था, और जिसकी उपेक्षित मिट्टी से दो चरणों में एक हिस्सा घर से बाहर निकला हुआ था और एक अलग इमारत, मेरी चाची की पिछली रसोई, दिखाई देती थी। उसकी लाल टाइलों का फर्श पोर्फिरी की तरह चमकता हुआ दिखाई देता था। वह फ्रांस्वा की गुफा से ज़्यादा वीनस के एक छोटे मंदिर जैसा लगता था। वह दूधवाले, फलवाले, सब्ज़ीवाले की भेंटों से भरा रहता था, जो कभी-कभी दूर-दराज के गाँवों से यहाँ अपने खेतों की पहली फसलें चढ़ाने आते थे। और उसकी छत पर हमेशा कबूतर की गुटरगू सुनाई देती थी।
पहले के दिनों में मैं इस मंदिर के चारों ओर फैले पवित्र उपवन में नहीं रुकता था, क्योंकि ऊपर पढ़ने जाने से पहले मैं चुपके से उस छोटे से बैठक कक्ष में चला जाता था, जिसे मेरे चाचा एडोल्फ़, जो मेरे दादाजी के भाई और एक पुराने सैनिक थे और मेजर के पद से सेवानिवृत्त हो चुके थे, भूतल पर इस्तेमाल करते थे। वह कमरा, भले ही उसकी खुली खिड़कियों से गर्मी अंदर आती थी, भले ही सूरज की किरणें सीधे अंदर न आती हों, जो शायद ही कभी इतनी दूर तक पहुँच पाती थीं, फिर भी एक धुंधली और ताज़गी भरी सुगंध बिखेरता था, जो एक साथ खुले वातावरण और पुराने ज़माने के जीवन का एहसास दिलाती थी, जो किसी बंद पड़े

तोपखाने में जाने पर नाक को सपनों की दुनिया में ले जाती है। लेकिन कुछ वर्षों से मैं अपने चाचा एडोल्फ़ के कमरे में नहीं गया था, क्योंकि मेरे और मेरे परिवार के बीच मेरे कारण हुए झगड़े की वजह से वे अब कॉम्ब्रे नहीं आते थे, और परिस्थितियाँ इस प्रकार थीं: महीने में एक या दो बार, मुझे पेरिस में उन्हें पैसे देने के लिए भेजा जाता था। मैं उनसे मिलने तब जाता था जब वे अपना दोपहर का भोजन समाप्त कर रहे होते थे, एक सादा अल्पाका कोट पहने हुए, और उनका नौकर बैंगनी और सफेद धारीदार लिनेन की वर्किंग जैकेट पहने उनकी सेवा कर रहा होता था। वे शिकायत करते थे कि मैं उनसे लंबे समय से मिलने नहीं आया था; कि उनकी उपेक्षा हो रही है; वे मुझे एक मार्चपेन या एक संतरा भेंट करते थे, और हम एक ऐसे कमरे से होकर गुजरते थे जिसमें कभी कोई नहीं बैठता था, जिसकी आग कभी नहीं जलती थी, जिसकी दीवारें सुनहरी नक्काशी से सजी थीं, जिसकी छत आकाश की नकल में नीले रंग से रंगी थी, और जिसका फर्नीचर मेरे दादा-दादी के घर की तरह साटन से गद्दीदार था, बस पीले रंग का; फिर हम उस कमरे में प्रवेश करते जिसे वे अपना 'अध्ययन कक्ष' कहते थे, एक ऐसा कमरा जिसकी दीवारों पर ऐसी तस्वीरें टंगी थीं जिनमें गहरे रंग की पृष्ठभूमि पर एक गोल-मटोल और गुलाबी देवी को रथ चलाते हुए, या ग्लोब पर खड़े हुए, या अपने माथे पर तारा पहने हुए दिखाया गया था; द्वितीय साम्राज्य के दौरान लोकप्रिय रहीं ये तस्वीरें, जिनमें पोम्पेई की झलक दिखाई देती थी, उस समय आम तौर पर तिरस्कृत थीं, और अब लोग इन्हें एक ही कारण से (चाहे वे कोई भी अन्य कारण बताएं) फिर से इकट्ठा करने लगे हैं, यानी कि ये द्वितीय साम्राज्य की याद दिलाती हैं। और मैं वहाँ अपने चाचा के साथ तब तक रहता जब तक उनका नौकर कोचवान का संदेश लेकर नहीं आ जाता, यह पूछने के लिए कि उन्हें गाड़ी किस समय चाहिए। मेरे चाचा तब ध्यानमग्न हो जाते,

जबकि उनका चकित नौकर वहाँ खड़ा रहता, ज़रा सी भी हरकत से उन्हें परेशान करने की हिम्मत नहीं करता, आश्चर्य से उनके उत्तर की प्रतीक्षा करता, जो कभी नहीं बदलता था। अंत में, अत्यधिक संकोच के बाद, मेरे चाचा अचूक रूप से कहते: "सवा दो बजे," जिसे नौकर आश्चर्य से दोहराता, लेकिन बिना किसी विवाद के: "सवा दो बजे! बहुत अच्छा, महोदय... मैं जाकर उन्हें बता देता हूँ..."

उस समय मैं रंगमंच का शौकीन था: मजबूरीवश एक प्लेटोनिक प्रेमी, क्योंकि मेरे माता-पिता ने मुझे अभी तक रंगमंच में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी थी, और रंगमंच में मिलने वाले सुखों की जो छवि मैंने अपने लिए बनाई थी, वह इतनी गलत थी कि मुझे लगभग यह विश्वास हो गया था कि प्रत्येक दर्शक एक स्टीरियोस्कोप में देखने की तरह, एक ऐसे मंच और दृश्यों को देख रहा है जो केवल उसी के लिए मौजूद हैं, हालांकि वे अन्य हजारों दृश्यों से काफी मिलते-जुलते हैं जो बाकी दर्शकों को व्यक्तिगत रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं।

हर सुबह मैं मोरिस कॉलम की ओर दौड़ता था यह देखने के लिए कि उसमें कौन से नए नाटकों की घोषणा की गई है। इन घोषणाओं से मेरे मन में उमड़ने वाले सपनों से अधिक निस्वार्थ या सुखद कुछ भी नहीं हो सकता था, वे सपने जो नाटक के शीर्षक बनाने वाले शब्दों के अपरिहार्य जुड़ावों और उन नोटों के रंग से आकार लेते थे, जो अभी भी गीले और पेस्ट से सिकुड़े हुए होते थे, जिन पर वे शब्द उभरे होते थे। सिवाय उन अजीबोगरीब शीर्षकों के जैसे कि टेस्टामेंट डे सेसर गिरोडॉट, या ओडिप-रोई, जो ओपेरा-कॉमिक के हरे नोटों पर नहीं, बल्कि कॉमेडी-फ्रांसेज़ के वाइन-रंग के नोटों पर अंकित होते थे, मुझे ऐसा कुछ भी नहीं लगता था जो डायमंड्स डे ला कौरॉन के चमकदार सफेद पंख से डोमिनो नोइर के चिकने, रहस्यमय साटन से अधिक गहराई से भिन्न हो; और चूंकि मेरे

माता-पिता ने मुझे बताया था कि थिएटर में अपनी पहली यात्रा के लिए मुझे इन दो नाटकों में से एक को चुनना होगा, इसलिए मैं एक नाटक के शीर्षक और दूसरे के शीर्षक का गहन अध्ययन करता (क्योंकि मुझे दोनों के बारे में केवल यही पता था), प्रत्येक से उस आनंद की झलक पाने की कोशिश करता जो वह मुझे प्रदान करेगा, और इस आनंद की तुलना दूसरे नाटक में निहित आनंद से करता, जब तक कि अंत में मेरे सामने एक ओर चकाचौंध भरी अहंकार से भरी नाटक और दूसरी ओर एक कोमल, मखमली नाटक की इतनी सजीव, इतनी सम्मोहक तस्वीरें नहीं बन गईं कि मेरे लिए यह तय करना उतना ही मुश्किल हो गया कि मुझे कौन सा नाटक देखना चाहिए, जितना कि अगर खाने की मेज पर मुझे राइस ए ल'इम्पेरेट्रीस और प्रसिद्ध क्रीम ऑफ चॉकलेट में से किसी एक को चुनने के लिए मजबूर किया गया हो।

मेरे सहपाठियों के साथ मेरी सारी बातचीत अभिनेताओं पर केंद्रित होती थी, जिनकी कला, हालांकि अभी तक मुझे इसका कोई अनुभव नहीं था, कला के उन असंख्य रूपों में से पहली थी जिनके माध्यम से मैं इसके आनंद की कल्पना कर सकता था। एक अभिनेता की स्वर-शैली और लहजे में अंतर और दूसरे की बारीकियों में मामूली अंतर भी मुझे अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीत होता था। और उनके बारे में जो कुछ मुझे बताया गया था, उसके आधार पर मैं उनकी प्रतिभा के अनुसार सूचियाँ बनाता था जिन्हें मैं दिन भर अपने मन में दोहराता रहता था: अंततः ये सूचियाँ मेरे दिमाग में जम गईं और मेरे लिए झुंझलाहट का कारण बन गईं, क्योंकि इन्हें मिटाना असंभव था।

और बाद में, मेरे स्कूली दिनों में, जब भी मैं कक्षा में किसी नए मित्र से बात करने के लिए निकलता, जब शिक्षक का ध्यान कहीं और होता, तो मैं हमेशा उससे पूछता कि क्या उसने थिएटर जाना शुरू कर दिया है, और

क्या वह इस बात से सहमत है कि हमारा सबसे महान अभिनेता निस्संदेह गॉट है, हमारा दूसरा डेलाने, इत्यादि। और यदि, उसके विचार में, फेब्रे थिरोन से नीचे है, या डेलाने कोक्वेलिन से नीचे है, तो कोक्वेलिन का नाम, अपनी कठोरता को त्यागकर, मेरे मन में जो अचानक अस्थिरता पैदा करता, जिससे वह दूसरे स्थान पर आ जाता, और डेलाने का नाम, जो अचानक जीवंतता से भर जाता, जिससे वह चौथे स्थान पर खिसक जाता, मेरे मस्तिष्क को जीवन के विकास और खिलने की अनुभूति से भर देता।

लेकिन अगर अभिनेताओं का ख्याल मुझ पर इतना भारी पड़ सकता था, अगर एक दोपहर थिएटर-फ्रांसे से बाहर आते हुए मौबंट को देखकर मैं निराशा भरे प्यार की पीड़ा में डूब गया था, तो थिएटर के दरवाजों के बाहर चमकते हुए एक 'सितारे' का नाम देखकर कितना कुछ और हुआ होगा, सड़क पर मेरे पास से गुजर रही एक बग्घी की खिड़की से देखकर, जिसके माथे पर गुलाबों जैसे खिले बाल थे, उस महिला का चेहरा, जिसे मैं शायद एक अभिनेत्री समझता था, मेरे मन में एक स्थायी बेचैनी, उसके निजी जीवन की एक तस्वीर बनाने का एक व्यर्थ और दर्दनाक प्रयास छोड़ गया होगा।

मैंने प्रतिभा के क्रम में सबसे विशिष्ट अभिनेत्रियों को वर्गीकृत किया: सारा बर्नहार्ट, बर्मा, बार्टेट, मेडेलीन ब्रोहन, जीन समरी; लेकिन मेरी रुचि उन सभी में थी। मेरे चाचा उनमें से कई को व्यक्तिगत रूप से जानते थे, और साथ ही एक अलग वर्ग की महिलाओं को भी, जो मेरी नज़र में अभिनेत्रियों से स्पष्ट रूप से भिन्न नहीं थीं। वे उन्हें अपने घर पर आमंत्रित करते थे। और अगर हम उनसे केवल कुछ निश्चित दिनों में ही मिलने जाते थे, तो इसका कारण यह था कि अन्य दिनों में ऐसी महिलाएं आ सकती थीं जिनसे उनके परिवार का शायद ही कभी कोई परिचय रहा हो। कम से

कम हम तो यही सोचते थे; जहाँ तक मेरे चाचा की बात है, सुंदर विधवाओं (जिनका शायद कभी विवाह नहीं हुआ था) और काउंटेस (जिनकी ऊँची-ऊँची उपाधियाँ शायद केवल दिखावटी थीं) को मेरी दादी से मिलवाने या उन्हें हमारे पारिवारिक गहने भेंट करने की उनकी अत्यावश्यकता ने उन्हें मेरे दादाजी के साथ एक से अधिक बार विवाद में डाल दिया था। अक्सर, अगर बातचीत में किसी अभिनेत्री का नाम आता, तो मैं अपने पिता को मुस्कुराते हुए माँ से कहते सुनता: "तुम्हारे चाचा की एक दोस्त," और मैं उस थका देने वाले शुरुआती दौर के बारे में सोचता, जिससे शायद सालों तक एक बड़ा आदमी, यहाँ तक कि एक बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति भी, गुज़रता होगा, किसी ऐसी महिला के दरवाजे पर इंतज़ार करते हुए, जबकि वह उसके पत्रों का जवाब देने से इनकार कर देती और अपने नौकर से उसे भगा देती; और कल्पना करता कि मेरे चाचा ने मुझ जैसे नासमझ को इन सभी कष्टों से मुक्ति दिला दी, मुझे अपने घर में उस अभिनेत्री से मिलवाकर, जो दुनिया के लिए पहुँच से बाहर थी, लेकिन उनके लिए एक घनिष्ठ मित्र थी।

और इसलिए—इस बहाने से कि किसी पाठ का समय बदल दिया गया था और अब वह ऐसे असुविधाजनक समय पर होता था कि इसकी वजह से मैं अपने चाचा से कई बार नहीं मिल पाया था, और आगे भी मिलता रहेगा—एक दिन, उन दिनों में से एक दिन नहीं जो उन्होंने हमारी मुलाकातों के लिए तय किए थे, मैंने इस बात का फायदा उठाया कि मेरे माता-पिता ने दोपहर का भोजन सामान्य से पहले कर लिया था; मैं चुपके से बाहर निकल गया और उनके कॉलम में नाटक के विज्ञापन पढ़ने जाने के बजाय, जिसके लिए मुझे अकेले बाहर जाने की अनुमति थी, मैं दौड़कर उनके घर पहुँच गया। मैंने उनके दरवाजे के सामने एक घोड़ागाड़ी देखी, जिसके घोड़ों की आँखों पर और कोचवान के बटनहोल में लाल

कार्नेशन लगे थे। जैसे ही मैं सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, मुझे हँसी और एक महिला की आवाज़ सुनाई दी, और जैसे ही मैंने घंटी बजाई, सन्नाटा छा गया और दरवाजे बंद होने की आवाज़ आई। मुझे अंदर आने देने वाला नौकर शर्मिंदा लग रहा था और उसने कहा कि मेरे चाचा बहुत व्यस्त हैं और शायद मुझसे मिल नहीं पाएंगे; लेकिन वो मेरे आने की सूचना देने के लिए अंदर गया, और वही आवाज़ जो मैंने पहले सुनी थी, फिर बोली: "ओह, हाँ! उसे अंदर आने दीजिए; बस एक पल के लिए; बहुत मज़ा आएगा। क्या आपकी मेज़ पर उसकी तस्वीर है? और उसके बगल में उसकी माँ (आपकी भतीजी, है ना?)? बिल्कुल उसकी ही छवि है, है ना? मैं उस नन्हे बच्चे को बस एक पल के लिए देखना चाहता हूँ।"

मुझे अपने चाचा के बड़बड़ाने और गुस्से में आने की आवाज सुनाई दे रही थी; आखिरकार नौकर ने मुझे अंदर आने को कहा।

मेज पर वही हमेशा की तरह मार्चपेन्स की प्लेट रखी थी; मेरे चाचा ने वही रोज़ाना वाला अल्पाका कोट पहना हुआ था; लेकिन उनके सामने, गुलाबी रेशमी पोशाक और गले में मोतियों का बड़ा हार पहने एक युवती बैठी थी जो एक संतरा खा रही थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसे मैडम कहूँ या मैडमोजेल, इसलिए मैं शरमा गया। उसकी तरफ देखने की हिम्मत न करते हुए, कहीं मुझे उससे बात न करनी पड़े, मैं जल्दी से उसके पास गया और अपने चाचा को चूमा। उसने मेरी तरफ देखा और मुस्कुराई; मेरे चाचा ने बिना मेरा नाम बताए और बिना उसका नाम लिए कहा, "मेरा भतीजा!" शायद इसलिए क्योंकि दादाजी के साथ हुए मतभेदों के बाद से उन्होंने यथासंभव अपने परिवार को इस दूसरे वर्ग के लोगों से दूर रखने की कोशिश की थी।

"वह बिल्कुल अपनी मां जैसा है," महिला ने कहा।

"लेकिन तुमने मेरी भतीजी को तस्वीरों के अलावा कभी नहीं देखा," मेरे

चाचा ने गुस्से भरे लहजे में जल्दी से बात काटते हुए कहा।
"माफ़ कीजिए, प्रिय मित्र, पिछले साल जब आप बहुत बीमार थे, तब मैं सीढ़ियों पर उनसे मिली थी। यह सच है कि मैंने उन्हें बस एक पल के लिए देखा था, और आपकी सीढ़ियाँ थोड़ी अंधेरी हैं; लेकिन मैंने इतना तो देख लिया था कि वह कितनी सुंदर थीं। इस युवक की आँखें भी उनकी तरह ही सुंदर हैं, और यह भी," उन्होंने अपनी उंगली से माथे के निचले हिस्से पर एक रेखा खींचते हुए कहा। "बताइए," उन्होंने मेरे चाचा से पूछा, "क्या आपकी भतीजी श्रीमती -— हैं; क्या उनका नाम आपके नाम जैसा ही है?"
“वह अपने पिता की तरह दिखता है,” मेरे चाचा ने बुदबुदाते हुए कहा, जो माँ का नाम ज़ोर से दोहराकर दोनों को आमने-सामने मिलाने की बजाय अप्रत्यक्ष रूप से परिचय कराने के लिए ज़्यादा उत्सुक नहीं थे। “वह बिलकुल अपने पिता जैसा है, और मेरी बेचारी माँ जैसा भी।”
गुलाबी पोशाक पहने महिला ने थोड़ा सिर झुकाते हुए कहा, "प्रिय, मैं उनके पिता से नहीं मिली हूँ, और मैंने तुम्हारी बेचारी माँ को कभी नहीं देखा। तुम्हें याद होगा कि तुम्हारे इस बड़े दुख के ठीक बाद ही हम एक-दूसरे को जानने लगे थे।"
मुझे कुछ निराशा हुई, क्योंकि यह युवती घर पर समय-समय पर देखी जाने वाली अन्य सुंदर महिलाओं से बिल्कुल अलग नहीं थी, खासकर हमारे एक चचेरे भाई की बेटी से, जिसके घर मैं हर नए साल के दिन जाता था। बस उसके कपड़े थोड़े बेहतर थे; अन्यथा मेरे चाचा की सहेली की नज़रें वैसी ही तेज़ और दयालु थीं, उसका व्यवहार भी वैसा ही स्पष्ट और दोस्ताना था। मुझे उसमें अभिनेत्रियों की तस्वीरों में दिखने वाली नाटकीयता का कोई अंश नहीं मिला, न ही उसके चेहरे पर वह शैतानी भाव था जो उसके जीवन के अनुरूप होता। मुझे यह विश्वास करना

मुश्किल हो रहा था कि यह 'उन महिलाओं' में से एक है, और निश्चित रूप से मैं उसे 'सुंदर महिलाओं' में से एक नहीं मानता अगर मैंने उसकी गाड़ी, गुलाबी पोशाक, मोतियों का हार न देखा होता, और यह भी न जाना होता कि मेरे चाचा केवल सबसे अच्छी महिलाओं को ही जानते थे। लेकिन मैंने खुद से पूछा कि वह करोड़पति जिसने उसे गाड़ी, फ्लैट और गहने दिए, उसे इतनी सरल और सभ्य दिखने वाली महिला पर अपना पैसा लुटाने में क्या खुशी मिल सकती है। फिर भी, जब मैंने उसके जीवन के बारे में सोचा, तो उसकी अनैतिकता ने मुझे शायद उससे भी अधिक परेशान किया, जितना कि अगर वह मेरे सामने किसी ठोस और पहचानने योग्य रूप में मौजूद होती, अपनी गोपनीयता और अदृश्यता के कारण, किसी उपन्यास के कथानक की तरह, एक ऐसे घोटाले की छिपी हुई सच्चाई जिसने उसे उसके मध्यमवर्गीय माता-पिता के घर से निकाल दिया था और जिसने उसे समस्त मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था, जिसने उसकी सुंदरता को चरम पर पहुँचाया था, जिसने इस महिला को प्रसिद्धि या बदनामी दिलाई थी, जिसके चेहरे की अदा, जिसकी आवाज का उतार-चढ़ाव, कई अन्य लोगों की तरह जिन्हें मैं पहले से जानता था, मुझे उसे, अनजाने में ही, एक अच्छे परिवार की युवती मानने पर मजबूर कर देता था, वह जो अब किसी परिवार की सदस्य नहीं थी।

तब तक हम 'अध्ययन कक्ष' में जा चुके थे, और मेरे चाचा, जो मेरी उपस्थिति से थोड़े असहज प्रतीत हुए, ने उन्हें एक सिगरेट की पेशकश की।

“नहीं, धन्यवाद, प्रिय मित्र,” उसने कहा। “आप जानते हैं कि मैं केवल वही सिगरेट पीती हूँ जो ग्रैंड ड्यूक मुझे भेजते हैं। मैं उनसे कहती हूँ कि ये सिगरेटें आपको ईर्ष्या दिलाती हैं।” और उसने एक सिगरेट के डिब्बे से सिगरेट निकाली जिस पर सोने के अक्षरों में किसी विदेशी भाषा में लिखा

था। “जी हाँ,” वह अचानक फिर से बोलने लगी। “बेशक, मैं इस युवक के पिता से आपके साथ मिली हूँ। क्या वह आपका भतीजा नहीं है? मैं भला कैसे भूल सकती थी? वह मेरे साथ बहुत अच्छे और मिलनसार थे,” वह विनम्रता और भावुकता से बोलती रही। लेकिन जब मैंने मन ही मन सोचा कि वास्तव में वह अभिवादन कितना असभ्य रहा होगा (जिसे उसने इतना आकर्षक बताया था), तो मैं, जो अपने पिता के ठंडेपन और संकोच को जानता था, चौंक गया, मानो उनकी ओर से किसी असभ्यता पर, उस पर दी गई अत्यधिक प्रशंसा और उनके कभी भी पर्याप्त न होने वाले सौहार्द के बीच के विरोधाभास पर। तब से मुझे इन आलसी, परिश्रमी महिलाओं द्वारा जीवन में निभाई गई भूमिका का एक सबसे मार्मिक पहलू यह लगा है कि वे अपनी सारी उदारता, अपनी सारी प्रतिभा, भावुक सौंदर्य के अपने हस्तांतरणीय सपनों (क्योंकि, सभी कलाकारों की तरह, वे कभी भी उन सपनों के मूल्य को साकार करने या उन्हें रोजमर्रा की जिंदगी के चार-चौकोर ढांचे में बंद करने की कोशिश नहीं करती हैं), और अपने सोने को, जिसका कोई खास महत्व नहीं है, पुरुषों के घिसे-पिटे, खरोंच लगे और बेढंगे जीवन के लिए एक सुंदर और कीमती आवरण गढ़ने में लगा देती हैं। और जिस तरह इस महिला ने धूम्रपान कक्ष को, जहाँ मेरे चाचा अपने अल्पाका कोट में उनका मनोरंजन कर रहे थे, अपने आकर्षक व्यक्तित्व, गुलाबी रेशम की पोशाक, मोतियों और एक ग्रैंड ड्यूक के साथ घनिष्ठता से उत्पन्न परिष्कार से भर दिया था, उसी तरह, उन्होंने मेरे पिता की किसी आकस्मिक टिप्पणी को लिया, उसे नाजुकता से गढ़ा, उसे एक 'मोड़' दिया, एक कीमती शीर्षक दिया, उसमें अपनी आँखों की एक अनमोल निगाह का रत्न जड़ा, एक उत्कृष्ट रत्न, जो विनम्रता और कृतज्ञता से मिश्रित था; और इस तरह उन्होंने इसे एक रत्न, एक कलाकृति, एक बेहद आकर्षक चीज में परिवर्तित करके वापस दे

दिया था।
"देखो मेरे बेटे, अब तुम्हारे जाने का समय आ गया है," मेरे चाचा ने कहा।
मैं उठा; गुलाबी पोशाक वाली महिला का हाथ चूमने की तीव्र इच्छा को रोकना मेरे लिए मुश्किल था, लेकिन मुझे लगा कि ऐसा करने के लिए उतनी ही हिम्मत चाहिए होगी जितनी कि उसका जबरन अपहरण करने के लिए। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था और मैं मन ही मन सोच रहा था, "क्या मुझे ऐसा करना चाहिए, या नहीं?" फिर मैंने यह पूछना बंद कर दिया कि मुझे क्या करना चाहिए, बस कुछ तो करना चाहिए। अंधाधुंध, जोश में, पागलों की तरह, अब तक मिले सभी कारणों को दरकिनार करते हुए, मैंने उसका बढ़ाया हुआ हाथ पकड़ा और उसे अपने होठों तक ले गया।
"कितना प्यारा है! अभी से ही लड़कियों का चहेता है; बिलकुल अपने चाचा जैसा है। एकदम सच्चा सज्जन बनेगा," उसने दांत भींचते हुए कहा, मानो शब्द को अंग्रेज़ी लहजे में कह रही हो। "क्या वो कभी मेरे पास 'चाय पीने' नहीं आ सकता, जैसा कि चैनल के उस पार हमारे दोस्त कहते हैं; उसे बस सुबह मुझे एक 'ब्लू' भेजना है?"
मुझे 'नीला' शब्द का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था। महिला के आधे शब्द भी मुझे समझ नहीं आ रहे थे, लेकिन इस डर से कि कहीं उनमें कोई ऐसा सवाल न छिपा हो जिसका जवाब न देना असभ्यता होगी, मैं अपना ध्यान उन शब्दों से हटा नहीं पा रहा था, और मुझे बहुत थकान महसूस होने लगी थी।
“नहीं, नहीं; यह असंभव है,” मेरे चाचा ने कंधे उचकाते हुए कहा। “वह सारा दिन घर पर व्यस्त रहता है; उसके पास करने के लिए बहुत काम होता है। वह अपने स्कूल से सारे पुरस्कार लेकर आता है,” उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, ताकि मैं यह झूठ न सुन लूँ और बीच में टोककर इसका

खंडन न करूँ। “आप कह नहीं सकते; हो सकता है वह थोड़ा विक्टर ह्यूगो जैसा बन जाए, एक तरह का वाउलाबेल, क्या आपको नहीं पता?”
"ओह, मुझे कलात्मक लोग बहुत पसंद हैं," गुलाबी पोशाक वाली महिला ने जवाब दिया; "महिलाओं को समझने में उनका कोई मुकाबला नहीं। वे और आप जैसे वाकई अच्छे पुरुष। लेकिन कृपया मेरी नासमझी के लिए मुझे माफ कर दीजिए। कौन, कौन है वाउलाबेल? क्या ये आपके ड्राइंग रूम में कांच के छोटे से डिब्बे में रखी सोने की परत चढ़ी किताबें हैं? आपको याद है आपने मुझे उन्हें उधार देने का वादा किया था; मैं उनका बहुत ध्यान रखूंगी।"
मेरे चाचा, जिन्हें लोगों को किताबें उधार देना बिल्कुल पसंद नहीं था, कुछ नहीं बोले और मुझे बाहर हॉल में ले गए। गुलाबी पोशाक वाली महिला से मेरा दिल मोह लिया था, इसलिए मैंने अपने चाचा के तंबाकू से सने गालों पर प्यार भरे चुंबन बरसाए। हालांकि उन्होंने (बिना कुछ कहे) मुझे यह जता दिया कि मैं अपने माता-पिता को इस मुलाकात के बारे में न बताऊं, लेकिन मैंने आंखों में आंसू लिए उन्हें यकीन दिलाया कि उनकी दयालुता ने मुझ पर इतना गहरा प्रभाव डाला है कि एक दिन मैं निश्चित रूप से उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करने का कोई न कोई तरीका ढूंढ लूंगी। मुझ पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा था कि दो घंटे बाद, कुछ रहस्यमयी बातें कहने के बाद, जिनसे मुझे नहीं लगा कि मेरे माता-पिता को यह स्पष्ट हो पाएगा कि मुझे कितनी अहमियत दी जा रही है, मुझे लगा कि दोपहर में हुई उस मुलाकात का पूरा ब्यौरा, बिना कोई बात छोड़े, उन्हें देना ही सबसे आसान होगा। ऐसा करते समय मैंने अपने चाचा को किसी भी तरह की परेशानी पहुंचाने के बारे में सोचा तक नहीं था। भला मैं ऐसा सोच भी कैसे सकती थी, क्योंकि मैं ऐसा चाहती ही नहीं थी। और मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि मेरे माता-पिता को उस मुलाकात में कोई बुराई

दिखेगी जिसमें मुझे खुद कोई बुराई नहीं दिखती। क्या हमारे जीवन में हर दिन कोई न कोई दोस्त हमसे किसी ऐसी महिला से माफी मांगने के लिए नहीं कहता, जिसे वह पत्र नहीं लिख पाया हो? और क्या हम ऐसा करना भूल नहीं जाते, यह सोचकर कि वह महिला हमारी चुप्पी को ज्यादा महत्व नहीं देगी, जबकि हम खुद चुप हैं? मैंने भी, बाकी सब लोगों की तरह, यही सोचा था कि दूसरे लोगों के दिमाग बेजान और दब्बू होते हैं, जिनमें किसी भी उत्तेजना पर प्रतिक्रिया करने की कोई क्षमता नहीं होती; और मुझे जरा भी शक नहीं था कि जब मैं अपने माता-पिता को अपने चाचा के घर हुई मुलाकात की खबर दूंगा, तो साथ ही साथ मैं उन्हें उस मुलाकात के बारे में अपनी सकारात्मक राय भी बता दूंगा। दुर्भाग्य से, मेरे माता-पिता ने मेरे चाचा के व्यवहार का आकलन करते समय उन सिद्धांतों से बिल्कुल अलग सिद्धांत अपनाए जो मैंने उन्हें अपनाने को कहा था। मुझे अप्रत्यक्ष रूप से पता चला कि मेरे पिता और दादा ने उनसे बहुत तीखी बहस की थी। कुछ दिनों बाद, जब मैं अपने चाचा को खुली गाड़ी में सड़क से गुज़रते हुए देख रहा था, तो मुझे एक साथ वो सारा दुख, कृतज्ञता और पछतावा महसूस हुआ जो मैं उन्हें व्यक्त करना चाहता था। इन भावनाओं की विशालता के आगे, मैंने सोचा कि केवल उन्हें सलाम करना भी अनुचित और तुच्छ होगा, और इससे उन्हें लग सकता है कि मैं उनके प्रति केवल शिष्टाचार का ही पालन कर रहा हूँ। मैंने इस अपर्याप्त भाव से बचने का फैसला किया और अपना सिर दूसरी ओर मोड़ लिया। मेरे चाचा ने सोचा कि ऐसा करके मैं अपने माता-पिता के आदेशों का पालन कर रहा हूँ; उन्होंने उन्हें कभी माफ नहीं किया; और यद्यपि उनकी मृत्यु कई वर्षों बाद हुई, हममें से किसी ने भी उन्हें फिर कभी नहीं देखा।

और इसलिए मैं अपने चाचा एडोल्फ़ के छोटे से बैठक कक्ष (जो अब बंद रहता था) में जाना बंद कर दिया था; इसके बजाय, मैं रसोई के पिछले

हिस्से के बाहरी किनारे पर तब तक इंतज़ार करता रहता जब तक फ़्रांस्वा दहलीज पर आकर यह घोषणा नहीं करती: "मैं रसोई की नौकरानी को कॉफ़ी परोसने और गर्म पानी लाने के लिए कह रही हूँ; अब मुझे मैडम ऑक्टेव के पास जाना है।" फिर मैं अंदर जाने का फ़ैसला करता और सीधे ऊपर अपने कमरे में पढ़ने चला जाता। रसोई की नौकरानी एक अमूर्त व्यक्तित्व थी, एक स्थायी संस्था जिसके अपरिवर्तनीय गुण उस व्यक्तित्व के अस्थाई मानवीय रूपों की लंबी श्रृंखला में एक प्रकार की स्थिरता, निरंतरता और पहचान सुनिश्चित करते थे; क्योंकि हमें वहाँ लगातार दो साल तक एक ही लड़की कभी नहीं मिली। जिस साल हमने इतनी मात्रा में शतावरी खाई, उस साल रसोई की नौकरानी, जिसका काम उन्हें पकाना था, एक कमजोर और बीमार महिला थी। जब हम ईस्टर के लिए कॉम्ब्रे पहुँचे, तब वह गर्भावस्था के कारण कुछ हद तक बीमार थी। यह वाकई आश्चर्य की बात थी कि फ्रांस्वा ने उसे शहर में इतने सारे काम और घर में इतना सारा काम करने की इजाज़त कैसे दे दी, क्योंकि उसे अपने सामने उस रहस्यमय पेट को संभालना मुश्किल होता जा रहा था, जो हर दिन बड़ा और भारी होता जा रहा था, जिसकी शानदार आकृति उसकी चौड़ी फ्रॉक की सिलवटों से झलकती थी। ये फ्रॉक मुझे जियोटो की पेंटिंग्स में कुछ प्रतीकात्मक आकृतियों को ढकने वाले लबादों की याद दिलाती थीं, जिनकी तस्वीरें एम. स्वान ने मुझे दी थीं। उन्होंने ही इस समानता की ओर इशारा किया था, और जब वे रसोई की नौकरानी के बारे में पूछते, तो कहते: "अच्छा, जियोटो की 'दानशीलता' पेंटिंग कैसी चल रही है?" और सचमुच, गर्भावस्था के कारण उसका पूरा शरीर, यहाँ तक कि चेहरा भी, फूल गया था और उसके गालों की चौकोर, सीधी आकृतियाँ भी वैसी ही लग रही थीं, जैसी उन कुंवारी कन्याओं की याद दिलाती थीं, जो इतनी बलवान और मर्दाना थीं कि मानो

किसी संभ्रांत महिला जैसी दिखती हों, जिनमें एरेना चैपल में सद्गुणों का अवतार है। और अब मैं देख सकता हूँ कि पडुआ के वे सद्गुण और अवगुण एक और मामले में भी उससे मिलते-जुलते थे। जिस प्रकार इस लड़की की आकृति उसके शरीर में मौजूद अतिरिक्त प्रतीक से और भी बड़ी हो गई थी, मानो वह उसका अर्थ समझती हो, उसके चेहरे के भावों में उसकी सारी सुंदरता और आध्यात्मिक महत्व झलकता हो, बल्कि वह उसे एक साधारण और भारी बोझ की तरह ढो रही हो, ठीक उसी प्रकार, 'कैरीटास' लेबल के नीचे अरीना में चित्रित शक्तिशाली गृहिणी, जिसकी एक प्रति मेरे कॉम्ब्रे स्थित स्कूल के कमरे की दीवार पर टंगी थी, बिना किसी स्पष्ट संदेह के उस सद्गुण का साक्षात रूप धारण कर लेती है, क्योंकि यह असंभव लगता है कि दान का कोई विचार कभी उसके साधारण और ऊर्जावान चेहरे पर प्रकट हो सकता है। चित्रकार की कल्पनाशीलता के एक सूक्ष्म स्पर्श से वह पृथ्वी के सभी खजानों को अपने पैरों तले बिखेर रही है, ठीक वैसे ही जैसे वह रस निकालने के लिए अंगूरों को रसदानी में रौंद रही हो, या उससे भी अधिक, जैसे वह खुद को ऊपर उठाने के लिए बोरियों के ढेर पर चढ़ गई हो; और वह अपना धधकते दिल को ईश्वर के सामने प्रकट कर रही है, या यूँ कहें कि उन्हें सौंप रही है, ठीक वैसे ही जैसे कोई रसोइया अपने भूमिगत रसोईघर की रोशनदान से ऊपर से किसी ऐसे व्यक्ति को कॉर्कस्क्रू दे दे जिसने ऊपर से उसे माँगने के लिए आवाज़ लगाई हो। 'ईर्ष्या' के चेहरे पर ईर्ष्या का भाव होना चाहिए था। लेकिन इस भित्तिचित्र में भी, यह प्रतीक इतना विशाल है और इतने यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया गया है; ईर्ष्या के होठों के बीच फुफकारता हुआ सर्प इतना विशाल है, और उसके खुले मुँह को पूरी तरह से भर देता है कि उसके चेहरे की मांसपेशियाँ खिंची हुई और विकृत हैं, जैसे कोई बच्चा अपनी साँस से गुब्बारा भर रहा हो, और ईर्ष्या, और हम

स्वयं भी, जब उसे देखते हैं, क्योंकि उसका और हमारा सारा ध्यान उसके होठों की हरकत पर केंद्रित होता है, तो हमारे पास ईर्ष्यापूर्ण विचारों के लिए लगभग समय ही नहीं बचता।

एम. स्वान भले ही गियोटो की इन आकृतियों के प्रति कितनी भी प्रशंसा व्यक्त करें, लेकिन मुझे अपने स्कूल के कमरे में (जहाँ उनकी लाई हुई प्रतियाँ टंगी थीं) उस दानशीलता से रहित दया, उस ईर्ष्या जो किसी चिकित्सा पुस्तक में छपी तस्वीर जैसी दिखती थी, जिसमें जीभ में ट्यूमर या किसी यंत्र के प्रयोग से स्वरयंत्र या तालु के दबने को दर्शाया गया हो, और उस न्याय की छवि को देखकर आनंद आने में बहुत समय लगा, जिसके भूरे और साधारण चेहरे ठीक वैसे ही थे जैसे कॉम्ब्रे की कुछ नेक, धर्मपरायण और थोड़ी मुरझाई हुई महिलाओं के चेहरे होते थे, जिन्हें मैं प्रार्थना सभा में देखा करता था, जिनमें से कई लंबे समय से अन्याय की आरक्षित सेना में शामिल थीं। लेकिन बाद के वर्षों में मुझे समझ आया कि इन भित्तिचित्रों की सम्मोहक विचित्रता, इनकी विशेष सुंदरता, इनमें से प्रत्येक में प्रतीकों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका में निहित थी। साथ ही, यह तथ्य कि इन्हें प्रतीकों के रूप में नहीं (क्योंकि प्रतीकात्मक विचार कहीं भी व्यक्त नहीं किया गया था), बल्कि वास्तविक वस्तुओं के रूप में, जिन्हें वास्तव में महसूस किया गया था या भौतिक रूप से स्पर्श किया गया था, इनके अर्थ को अधिक सटीक और शाब्दिक बनाता है, और इनके द्वारा दिए गए पाठ को अधिक ठोस और प्रभावशाली बनाता है। और यहाँ तक कि उस बेचारी रसोई की नौकरानी के मामले में भी, क्या हमारा ध्यान उसके पेट पर भरे बोझ के कारण लगातार उसकी ओर आकर्षित नहीं होता था? और ठीक उसी तरह, क्या मृत्यु की पीड़ा में डूबे पुरुषों और महिलाओं के विचार अक्सर मृत्यु के व्यावहारिक, दर्दनाक, अस्पष्ट, आंतरिक, आंतों के पहलू की ओर, मृत्यु के उस 'घिनौने पक्ष' की

ओर नहीं मुड़ते, जो वास्तव में वही पक्ष है जिसे मृत्यु उनके सामने प्रस्तुत करती है और उन्हें महसूस करने के लिए मजबूर करती है? एक ऐसा पक्ष जो मृत्यु के अमूर्त विचार की तुलना में एक कुचलने वाले बोझ, सांस लेने में कठिनाई, एक विनाशकारी प्यास से कहीं अधिक मिलता-जुलता है, जिसे हम मृत्यु का नाम देने के आदी हैं?

पडुआ के उन सद्गुणों और अवगुणों में वास्तविकता का एक प्रबल तत्व अवश्य रहा होगा, क्योंकि वे मुझे गर्भवती नौकरानी की तरह ही सजीव प्रतीत हुए, जबकि वह स्वयं भी उनसे कम प्रतीकात्मक नहीं थी। और, संभवतः, किसी व्यक्ति की आत्मा द्वारा अपने विशेष सद्गुण के महत्वपूर्ण चिह्नों में भागीदारी की यह कमी (या प्रतीत होने वाली कमी), अपने सौंदर्यपरक अर्थ के अलावा, एक ऐसी वास्तविकता रखती है, जिसे यदि विशुद्ध रूप से मनोवैज्ञानिक न भी कहा जाए, तो कम से कम शारीरिक बनावट से संबंधित कहा जा सकता है। बाद में, अपने जीवन के दौरान, जब मुझे उदाहरण के लिए मठों में, व्यावहारिक दान के सचमुच संत जैसे उदाहरणों से मिलने का अवसर मिला, तो उनमें आम तौर पर एक व्यस्त सर्जन की तरह चुस्त, दृढ़, अविचलित और कुछ हद तक क्रूर भाव दिखाई दिया, ऐसा चेहरा जिसमें कोई सहानुभूति, पीड़ित मानवता को देखकर कोई कोमलता या उसे चोट पहुँचाने का कोई भय नहीं दिखता, ऐसा चेहरा जो कोमलता या सहानुभूति से रहित है, सच्ची अच्छाई का उदात्त चेहरा।

फिर जब रसोई की नौकरानी—जो अनजाने में ही फ्रांस्वा के श्रेष्ठ गुणों को और भी निखार रही थी, ठीक वैसे ही जैसे त्रुटि, विरोधाभास के बल पर, सत्य की विजय को बढ़ाती है—कॉफी लेकर आती थी जो (मम्मा के अनुसार) केवल गर्म पानी थी, और फिर हमारे कमरों में मुश्किल से गुनगुना पानी लेकर जाती थी, तब मैं अपने बिस्तर पर लेटा होता था, हाथ में एक किताब लिए, अपने कमरे में जो दोपहर के सूरज से अपनी

नाजुक, पारदर्शी ठंडक को बचाने के प्रयास में कांप रहा होता था, अपने लगभग बंद शटरों के पीछे, जिनसे हालांकि, सूर्य के प्रकाश का एक प्रतिबिंब अपने सुनहरे पंखों पर फिसलने में कामयाब हो गया था, कांच और लकड़ी के बीच, एक कोने में, फूल पर बैठी तितली की तरह स्थिर पड़ा हुआ था। पढ़ने के लिए पर्याप्त रोशनी नहीं थी, और दिन की चमक और वैभव का मेरा एहसास केवल नीचे, रू डे ला क्यूरे में, कैमस द्वारा कुछ पुराने पैकिंग-केसों पर किए गए प्रहारों से प्राप्त हुआ था (जिनके बारे में फ्रांस्वा ने आश्वासन दिया था कि मेरी चाची 'आराम' नहीं कर रही थीं और इसलिए वह शोर कर सकते हैं)। इन पैकिंग-केसों से वास्तव में धूल के अलावा कुछ भी नहीं उड़ता, हालांकि गर्म मौसम के साथ आने वाले गूंजते वातावरण में उनका शोर, मानो खून जैसे लाल तारों की बारिश बिखेर रहा हो; और उन मक्खियों से जो मेरे मनोरंजन के लिए अपने छोटे से संगीत कार्यक्रम में प्रदर्शन कर रही थीं, मानो यह गर्मियों का चैम्बर संगीत हो। मक्खियों का संगीत गर्मी और प्रकाश का एहसास बिल्कुल अलग तरीके से कराता है, जबकि मानव संगीत, जिसे आपने किसी सुहावनी गर्मी के दौरान सुना हो, वह हमेशा उस गर्मी की याद दिलाता है। यह संगीत मौसम से एक घनिष्ठ, अधिक जीवंत बंधन से जुड़ा है - धूप भरे दिनों में जन्मा और उन्हीं के साथ पुनर्जन्म लेने वाला नहीं, बल्कि उनके मूल स्वभाव को समाहित करने वाला, यह न केवल हमारी स्मृति में उनकी छवि को जगाता है, बल्कि हमें यह आश्वासन भी देता है कि वे वास्तव में मौजूद हैं, हमारे आस-पास हैं, तुरंत सुलभ हैं।

मेरे कमरे की यह धुंधली ताजगी सड़क के उजाले के लिए वैसी ही थी जैसे सूर्य की किरण के लिए परछाई होती है, यानी दोनों बराबर ही चमकदार थीं, और मेरी कल्पना में ग्रीष्म ऋतु का संपूर्ण दृश्य प्रस्तुत करती थीं, जिसे अगर मैं बाहर टहल रहा होता तो मेरी इंद्रियां केवल

टुकड़ों में ही चख और आनंद ले पातीं; और इस प्रकार यह मेरी विश्राम की अवस्था के साथ पूर्ण सामंजस्य में थी, जो (मेरी किताबों में वर्णित रोमांचों के कारण, जिन्होंने इसे अभी-अभी उत्तेजित किया था) बहते पानी की धारा में स्थिर पड़े हाथ की तरह, गतिविधि और जीवन की एक धारा के झटके और जीवंतता को धारण किए हुए थी।

लेकिन मेरी दादी, चाहे मौसम बहुत गर्म होने के बाद अचानक बदल जाए और तूफान या हल्की बारिश शुरू हो जाए, फिर भी आकर मुझसे बाहर जाने की विनती करतीं। और चूंकि मैं अपनी किताब पढ़ना नहीं छोड़ना चाहती थी, इसलिए मैं बगीचे में, शाहबलूत के पेड़ के नीचे, कैनवास और चटाई से बने एक छोटे से कमरे में बैठकर उसे पढ़ती रहती थी। उस कमरे के सबसे कोने में बैठकर मैं यह महसूस करती थी कि मैं परिवार से मिलने आने वाले किसी भी व्यक्ति की नजरों से छिपी हुई हूँ।

और फिर मेरे विचार, क्या वे भी एक समान प्रकार का छुपने का स्थान नहीं बनाते थे, जिसकी गहराई में मुझे ऐसा लगता था कि मैं खुद को दफन कर सकता हूँ और बाहर की गतिविधियों को देखते हुए भी अदृश्य रह सकता हूँ? जब मैं कोई बाहरी वस्तु देखता था, तो उसे देखने की मेरी चेतना मेरे और उसके बीच बनी रहती थी, उसे एक पतले, निराकार आवरण में घेर लेती थी जो मुझे कभी भी उसके भौतिक रूप के सीधे संपर्क में आने से रोकती थी; क्योंकि मेरे छूने से पहले ही वह किसी न किसी तरह वाष्पीकृत हो जाती थी, ठीक वैसे ही जैसे कोई प्रज्वलित वस्तु किसी गीली वस्तु की ओर ले जाने पर वास्तव में कभी नमी को नहीं छूती, क्योंकि उससे पहले हमेशा वाष्पीकरण का एक क्षेत्र होता है। मेरी चेतना पढ़ते समय धीरे-धीरे एक ऐसी स्क्रीन पर, जो विभिन्न अवस्थाओं और छापों से सजी होती थी, और जो मेरे हृदय की सबसे गहरी छिपी आकांक्षाओं से लेकर बगीचे के तल पर मेरी आँखों के सामने फैले क्षितिज

के पूरी तरह से बाहरी दृश्य तक फैली होती थी, उस पर जो शुरू से ही मेरा सबसे स्थायी और सबसे अंतरंग हिस्सा था, वह उत्तोलक जिसकी निरंतर गति बाकी सब कुछ नियंत्रित करती थी, वह थी उस पुस्तक की दार्शनिक समृद्धि और सुंदरता में मेरा विश्वास जिसे मैं पढ़ रहा था, और इन गुणों को अपने भीतर समाहित करने की मेरी इच्छा, चाहे वह पुस्तक कोई भी हो। क्योंकि भले ही मैंने इसे कॉम्ब्रे में खरीदा होता, बोरेंज की दुकान के बाहर इसे देखकर, जिसकी किराने की दुकान हमारे घर से इतनी दूर थी कि फ्रांस्वा वहाँ कैमस की तरह लेन-देन नहीं कर सकती थी, लेकिन स्टेशनरी और किताबों की दुकान के रूप में उसे बेहतर ग्राहक मिलते थे; अगर मैंने उसे देखा भी होता, जो उसके दरवाजे के दोनों ओर सजे मासिक पत्रिकाओं और पर्चों के ढेर में अपनी जगह पर रखने के लिए रस्सी से बंधा हुआ था, एक ऐसा दरवाजा जो किसी गिरजाघर के दरवाजे से भी कहीं अधिक रहस्यमय और संकेतों से भरा हुआ था, तो भी मैं उसे वहीं देख लेता और खरीद लेता, क्योंकि मैंने उसे उस पुस्तक के रूप में पहचान लिया था जिसकी मेरे सामने स्कूल के शिक्षक या स्कूल के मित्र ने बहुत प्रशंसा की थी, जो उस समय मुझे सत्य और सौंदर्य के रहस्य का ज्ञाता प्रतीत होता था, ऐसी चीजें जिन्हें मैं आधा महसूस करता था, आधा समझ से परे था, और जिनकी पूर्ण समझ मेरे विचारों का अस्पष्ट लेकिन स्थायी विषय थी।

इस केंद्रीय विश्वास के साथ-साथ, जो पढ़ते समय मेरे भीतर से बाहरी दुनिया की ओर, सत्य की खोज की ओर निरंतर गति प्रदान करता था, उन घटनाओं से उत्पन्न भावनाएँ भी जुड़ी हुई थीं जिनमें मैं भाग ले रहा था। ये दोपहरें इतनी नाटकीय और सनसनीखेज घटनाओं से भरी होती थीं कि अक्सर पूरे जीवनकाल में भी इतनी घटनाएं नहीं घटित होतीं। ये वही घटनाएँ थीं जो उस पुस्तक में घटित हुई थीं जिसे मैं पढ़ रहा था। यह सच

है कि उनमें शामिल लोग वे नहीं थे जिन्हें फ्रांस्वा 'वास्तविक लोग' कहतीं। लेकिन किसी 'वास्तविक' व्यक्ति के सुख-दुख से उत्पन्न होने वाली भावनाएँ केवल उन सुख-दुखों या दुर्भाग्य की मानसिक छवि के माध्यम से ही जागृत हो सकती हैं; और प्रथम उपन्यासकार की प्रतिभा इस समझ में निहित थी कि, चूंकि छवि हमारी भावनाओं की जटिल संरचना का एकमात्र आवश्यक तत्व है, इसलिए 'वास्तविक' लोगों को पूरी तरह से हटाकर इसे सरल बनाना एक निश्चित सुधार होगा। एक 'वास्तविक' व्यक्ति, भले ही हम उसके प्रति कितनी ही गहरी सहानुभूति रखें, काफी हद तक केवल हमारी इंद्रियों के माध्यम से ही अनुभव किया जा सकता है, यानी वह अस्पष्ट रहता है, एक ऐसा बोझ होता है जिसे हमारी संवेदनाएं उठाने में असमर्थ होती हैं। यदि उस पर कोई विपत्ति आती है, तो उसके बारे में हमारे मन में जो संपूर्ण धारणा होती है, उसके केवल एक छोटे से हिस्से में ही हम कोई भावना महसूस कर पाते हैं; वास्तव में, स्वयं के बारे में उसकी संपूर्ण धारणा के केवल एक छोटे से हिस्से में ही वह कोई भावना महसूस कर पाता है। उपन्यासकार की सुखद खोज यह थी कि मानव आत्मा के लिए अगम्य उन अस्पष्ट हिस्सों के स्थान पर अमूर्त भागों, अर्थात् ऐसी वस्तुओं को प्रतिस्थापित किया जाए जिन्हें आत्मा आत्मसात कर सके। इसके बाद यह मायने नहीं रखता कि प्राणियों की इस नई श्रेणी के कार्य और भावनाएँ हमें सत्य के वेश में दिखाई देती हैं, क्योंकि हमने उन्हें अपना बना लिया है, क्योंकि वे हमारे भीतर ही घटित हो रही हैं, वे हमें वश में कर रही हैं, जबकि हम बेचैनी से पुस्तक के पन्ने पलटते रहते हैं, हमारी साँसें तेज़ होती जाती हैं और आँखें टकटकी लगाए रहती हैं। और एक बार जब उपन्यासकार हमें उस अवस्था में ले आता है, जिसमें, सभी विशुद्ध मानसिक अवस्थाओं की तरह, प्रत्येक भावना दस गुना बढ़ जाती है, जिसमें उसकी पुस्तक हमें एक सपने की तरह परेशान

करती है, लेकिन एक ऐसा सपना जो नींद में आने वाले सपनों से कहीं अधिक स्पष्ट और स्थायी प्रभाव वाला होता है; तो फिर, एक घंटे के लिए वह हमारे भीतर दुनिया के सभी सुख-दुखों को मुक्त कर देता है, जिनमें से कुछ को ही जानने में हमें अपने वास्तविक जीवन के कई वर्ष लग जाते, और सबसे तीव्र, सबसे गहन सुख-दुख कभी हमारे सामने प्रकट नहीं होते क्योंकि उनके विकास की धीमी प्रक्रिया हमारी अनुभूति को रोक देती है। जीवन में भी यही होता है; हृदय बदलता है, और यही हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य है; लेकिन हमें इसके बारे में केवल पढ़ने या कल्पना से ही पता चलता है; क्योंकि वास्तव में इसका परिवर्तन, कुछ प्राकृतिक घटनाओं की तरह, इतना क्रमिक होता है कि, भले ही हम क्रमिक रूप से इसकी प्रत्येक अलग-अलग अवस्था को पहचान सकें, फिर भी हमें परिवर्तन की वास्तविक अनुभूति नहीं हो पाती है।

मेरे भीतर के इस मानवीय तत्व के निकट, लेकिन उससे कहीं कम अंतरंग, मेरे सामने उस देश का दृश्य उभरता था, जहाँ कहानी की घटनाएँ घटित हो रही थीं। यह दृश्य मेरे मन पर उस वास्तविक परिदृश्य की तुलना में कहीं अधिक गहरा प्रभाव डालता था, जो मेरी किताब से नज़रें उठाने पर मुझे दिखाई देता था। इस तरह, लगातार दो गर्मियों तक मैं अपने कॉम्ब्रे के बगीचे की धूप में बैठा रहता था, उस किताब से प्रेरित एक ऐसी तड़प से व्याकुल, जहाँ पहाड़ और नदियाँ हों, जहाँ मैं आरा मिलों का एक अंतहीन नज़ारा देख सकूँ, जहाँ निर्मल धाराओं के नीचे जलकुंभी के बीच लकड़ी के टुकड़े सड़ रहे हों; और पास ही, नीची दीवारों के किनारे बैंगनी और लाल फूल गुच्छों में फैले हों। और चूंकि मेरे मन में हमेशा एक ऐसी स्त्री का सपना रहता था जो मुझे अपने प्रेम से समृद्ध करे, इसलिए उन दो गर्मियों में वह सपना बहते पानी की ताजगी और शीतलता से और भी जीवंत हो उठता था। और वह जो भी हो, जिस महिला की छवि मेरे मन में

आई, उसके दोनों ओर बैंगनी और लाल फूल एक साथ पूरक रंगों की तरह खिल उठते थे।

ऐसा सिर्फ इसलिए नहीं था कि हमारे सपनों की छवि हमेशा के लिए विशिष्ट बनी रहती है, बल्कि इसलिए भी था कि हमारे मानसिक चित्र में उसके चारों ओर मौजूद अन्य रंगों के मेल से वह और भी सुशोभित और समृद्ध हो जाती है; बल्कि इसलिए कि मैंने जिन किताबों को पढ़ा, उनमें वर्णित दृश्य मेरे लिए केवल ऐसे दृश्य नहीं थे जिन्हें मेरी कल्पना ने कॉम्ब्रे द्वारा प्रस्तुत किसी भी दृश्य से कहीं अधिक सजीव रूप से चित्रित किया हो, बल्कि अन्य मायनों में भी वे उसी प्रकार के थे। लेखक द्वारा किए गए चयन के कारण, और उस आस्था की भावना के कारण जिसमें मेरा मन उनके मुद्रित शब्दों से आगे बढ़कर उनका अनुमान लगाता था, मानो किसी रहस्योद्घाटन की व्याख्या कर रहा हो, ये दृश्य मुझे यह आभास देते थे—ऐसा आभास जो मुझे शायद ही कभी किसी ऐसी जगह से मिलता था जहाँ मैं कभी गया होऊँ, और हमारे बगीचे से तो कभी नहीं, जो माली की उस रूढ़िवादी कल्पना का एक साधारण उत्पाद था जिसे मेरी दादी बहुत नापसंद करती थीं—कि वे वास्तव में प्रकृति का ही हिस्सा हैं, और अध्ययन और अन्वेषण के योग्य हैं।

यदि मेरे माता-पिता मुझे किसी पुस्तक को पढ़ने के बाद उस देश की यात्रा करने की अनुमति देते, जिसका वर्णन उसमें किया गया है, तो मुझे सत्य की परम विजय की ओर एक बहुत बड़ा कदम उठाने का अहसास होता। क्योंकि भले ही हमें हमेशा अपनी आत्मा में समाए रहने का अहसास होता है, फिर भी यह एक स्थिर और अचल कारागार प्रतीत नहीं होती; बल्कि ऐसा लगता है कि हम इसके साथ बहते जा रहे हैं, और इससे आगे निकलने, दुनिया में प्रवेश करने के लिए निरंतर संघर्ष कर रहे हैं, निरंतर निराशा के साथ क्योंकि हम अपने चारों ओर अंतहीन रूप से

उस अपरिवर्तनीय ध्वनि को सुनते हैं जो बाहर से प्रतिध्वनि नहीं है, बल्कि भीतर से कंपन की गूंज है। हम उन वस्तुओं में, जो हमें इस कारण से प्रिय लगती हैं, उस आध्यात्मिक आकर्षण को खोजने का प्रयास करते हैं जो हमने स्वयं उन पर डाला है; हम निराश हो जाते हैं, और सीखते हैं कि वे स्वयं में बंजर और उस आकर्षण से रहित हैं जो हमारे मन में कुछ विचारों के जुड़ाव के कारण उनमें उत्पन्न हुआ था; कभी-कभी हम अपनी सारी आध्यात्मिक शक्तियों को एक चमकदार रूप में इकट्ठा कर लेते हैं ताकि उन दूसरे मनुष्यों को प्रभावित और वश में कर सकें जो, जैसा कि हम भली-भांति जानते हैं, हमसे परे स्थित हैं, जहाँ हम कभी नहीं पहुँच सकते। इसलिए, अगर मैंने हमेशा अपनी प्रेमिका को उन जगहों के परिवेश में कल्पना की, जहाँ मैं उस समय जाने की सबसे अधिक इच्छा रखता था; अगर मेरी गुप्त इच्छाओं में वही थी जिसने मुझे उन जगहों की ओर आकर्षित किया, जिसने मेरे लिए एक अज्ञात संसार का द्वार खोला, तो यह महज़ विचारों के संयोग से नहीं था; नहीं, ऐसा इसलिए था क्योंकि यात्रा और प्रेम के मेरे सपने केवल क्षण थे—जिन्हें मैं आज कृत्रिम रूप से अलग करता हूँ, मानो मैं पानी की एक धारा में अलग-अलग ऊँचाइयों पर खंड काट रहा हूँ, इंद्रधनुष की तरह चमकती हुई लेकिन प्रवाह या गतिहीन प्रतीत होती है—वे मेरे जीवन की सभी शक्तियों के एक ही, अविचल, अदम्य प्रवाह में केवल बूँदें थीं।

और फिर, जैसे-जैसे मैं अपनी चेतना में समाहित इन अंतरंग छापों के बाहरी प्रवाह का पता लगाता रहता हूँ, और इससे पहले कि मैं उन्हें घेरने वाले वास्तविकता के क्षितिज तक पहुँचूँ, मुझे एक अलग तरह का सुख मिलता है - आराम से बैठने का, हवा में फैली अच्छी सुगंध का आनंद लेने का, किसी भी आगंतुक से परेशान न होने का; और, जब सेंट-हिलैरे के शिखर से एक घंटा बजता है, तो दोपहर के बीते हुए समय को बूंद-बूंद

करके गिरते हुए देखने का, जब तक कि मैंने आखिरी घंटी नहीं सुनी जिससे मैं कुल योग जोड़ सका, जिसके बाद की खामोशी मेरे ऊपर नीले आकाश में, दिन के उस लंबे हिस्से की शुरुआत का संकेत देती प्रतीत हुई जो मुझे पढ़ने के लिए अभी भी उपलब्ध था, जब तक कि फ्रांकोइस द्वारा तैयार किया जा रहा स्वादिष्ट भोजन मेरी किताब के पन्नों में इसके नायक की कठिन खोज के बाद मुझे शक्ति और ताजगी न दे दे। और, जैसे ही प्रत्येक घंटा बजता, मुझे ऐसा लगता कि पिछले घंटे के बाद से केवल कुछ सेकंड ही बीते हैं; नवीनतम घंटा अपने पूर्ववर्ती के निकट आकाश की सतह पर अंकित हो जाता, और मैं यह विश्वास नहीं कर पाता कि साठ मिनट उन दो सुनहरी आकृतियों के बीच बने नीले रंग के छोटे से चाप में समा सकते हैं। कभी-कभी तो ऐसा भी होता कि यह आद्य घंटा पिछले घंटे से दो घंटे अधिक बजता; तब अवश्य ही कोई ऐसा घंटा रहा होगा जिसकी ध्वनि मैंने नहीं सुनी; कुछ ऐसा घटित हुआ था जो मेरे लिए घटित नहीं हुआ था; मेरी पुस्तक का आकर्षण, जो गहरी नींद के समान ही शक्तिशाली जादू था, मेरे मंत्रमुग्ध कानों को रोक चुका था और चारों ओर फैली खामोशी की नीली सतह से उस सुनहरी घंटी की ध्वनि को मिटा चुका था। हमारे कॉम्ब्रे गार्डन में शाहबलूत के पेड़ के नीचे बिताई गई मीठी रविवार की दोपहरें, जहाँ से मैंने अपने वास्तविक जीवन की हर सामान्य घटना को सावधानीपूर्वक मिटा दिया था, और उनकी जगह जीवंत धाराओं से सिंचित भूमि में विचित्र रोमांच और महत्वाकांक्षाओं से भरे एक करियर को बसा लिया था, जब भी मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ तो तुम मुझे उन रोमांचों और महत्वाकांक्षाओं की याद दिलाती हो, और तुम उन्हें धीरे-धीरे अपने चारों ओर समेटकर और समाहित करके उनमें समाहित और संरक्षित करती हो (जबकि मैं अपनी किताब पढ़ता रहा और दिन की गर्मी कम होती गई), धीरे-धीरे क्रिस्टलीकरण करते हुए, धीरे-धीरे रूप बदलते

हुए और शाहबलूत के पत्तों के पैटर्न से सजे हुए, तुम्हारे शांत, मधुर, सुगंधित, निर्मल क्षणों में।

कभी-कभी दोपहर के समय, माली की बेटी पागलों की तरह दौड़ती हुई आती और मेरी किताब से मेरा ध्यान भटका देती। वह गमले में लगे संतरे के पेड़ को उलट देती, जिससे उसकी एक उंगली कट जाती, एक दांत टूट जाता और वह चिल्लाती, "वे आ रहे हैं, वे आ रहे हैं!" ताकि मैं और फ्रांस्वा भी दौड़ पड़ें और तमाशा देखना न भूलें। ऐसा उन दिनों होता था जब कॉम्ब्रे में तैनात घुड़सवार सेना किसी सैन्य अभ्यास के लिए निकलती थी, और आमतौर पर रू सैंट-हिल्डेगार्ड से होकर जाती थी। हमारे नौकर, बगीचे की रेलिंग के बाहर अपनी कुर्सियों पर कतार में बैठे, कॉम्ब्रे के लोगों को रविवार की सैर करते हुए देखते और बदले में उन्हें भी देखते, वहीं माली की बेटी एवेन्यू डे ला गारे में दूर स्थित दो घरों के बीच की जगह से हेलमेटों की चमक देख लेती। फिर नौकर अपनी कुर्सियाँ लेकर जल्दी से अंदर आ गए, क्योंकि जब सैनिक रू सैंट-हिल्डेगार्ड से होकर गुजरे तो उन्होंने उसे पूरी तरह से भर दिया, और उनके धक्का-मुक्की करते घोड़े घरों की दीवारों से रगड़ते हुए फुटपाथों को ढकते और डुबोते हुए ऐसे लग रहे थे जैसे कोई संकरा किनारा बाढ़ में डूबी नदी के लिए रास्ता बना रहा हो।

रेलिंग तक पहुँचने से पहले ही फ्रांस्वा रोते हुए बोली, "बेचारे बच्चे; बेचारे लड़के, जिन्हें घास के मैदान में घास की तरह काट दिया गया। यह सोचना ही कितना भयानक है," वह अपने दिल पर हाथ रखते हुए बोली, जहाँ शायद उसे गहरा सदमा लगा था।

"कितना बढ़िया नज़ारा है, है ना, श्रीमती फ्रांस्वा, ये सारे नौजवान अपनी जान की परवाह नहीं कर रहे?" माली उसे लुभाने के लिए पूछता। और उसका यह कहना व्यर्थ नहीं होता।

"क्या उन्हें अपनी जान की परवाह नहीं है? भला इस दुनिया में ऐसी कौन सी चीज है जिसकी हमें परवाह करनी चाहिए, सिवाय अपनी जान के, जो भगवान का एकमात्र उपहार है जो हमें दोबारा कभी नहीं मिलता? अरे बाप रे! फिर भी तुम सही कह रही हो; यह बिल्कुल सच है, उन्हें परवाह नहीं है! मुझे 70 के दशक के वे लोग याद हैं; उन भयानक युद्धों में उनमें मौत का कोई डर नहीं बचा था; वे पागलों से कम नहीं थे; और फिर तो उन्हें फांसी देने के लिए रस्सी की भी कीमत नहीं थी; वे अब इंसान नहीं रहे, वे शेर बन गए थे।" क्योंकि उनकी सोच के अनुसार, किसी इंसान की तुलना शेर से करना, जिसे वे 'लाइ-ऑन' कहती थीं, उस इंसान के लिए बिल्कुल भी सम्मानजनक नहीं था।

रू सैंट-हिल्डेगार्डे का मोड़ इतना तीखा था कि दूर से भी किसी को आते देखना हमारे लिए मुश्किल था। एवेन्यू डे ला गारे में उन दो घरों के बीच से ही हमें नए हेलमेट पहने लोग हमारी ओर दौड़ते हुए दिखाई दे रहे थे, जो धूप में चमक रहे थे। माली जानना चाहता था कि क्या अभी और भी लोग आने वाले हैं, और धूप से उसका सिर भी झुलस रहा था, इसलिए उसे प्यास भी लग रही थी। तभी अचानक उसकी बेटी किसी घिरे हुए शहर से निकली हुई सी लगती, भागती, गली का कोना मुड़ती और सौ गुना जोखिम उठाकर फिर प्रकट होती और मुलेठी के पानी का एक घड़ा लेकर हमें बताती कि थिबरज़ी और मेसेग्लिस की दिशा से कम से कम एक हज़ार लोग लगातार आ रहे हैं। फ्रांस्वा और माली, अपने मतभेद सुलझाकर, युद्ध की स्थिति में अपनाई जाने वाली रणनीति पर चर्चा करने लगे।

"क्या तुम नहीं समझती, फ्रांस्वा," वह कहता था। "क्रांति बेहतर होगी, क्योंकि तब किसी को भी अपनी इच्छा के बिना उसमें शामिल होने की ज़रूरत नहीं होगी।"

"ओह, हाँ, मैं इसे समझ सकता हूँ; यह अधिक सरल है।"
माली का मानना था कि युद्ध की घोषणा होते ही वे सभी रेलवे सेवाओं को रोक देंगे।
"हां, बिल्कुल; ताकि हम भाग न सकें," फ्रांस्वा ने कहा।
और माली इस बात से सहमत होते हुए कहता, "हाँ, वे तो धूर्त हैं," क्योंकि वह यह मानने को तैयार नहीं था कि युद्ध राज्य द्वारा जनता पर खेला जाने वाला एक प्रकार का छल मात्र है, या दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति है जो मौका मिलने पर इससे भाग न जाए।
लेकिन फ्रांस्वा मेरी चाची के पास जल्दी लौट जाती, और मैं अपनी किताब में वापस लग जाता, और नौकर फिर से द्वार के बाहर अपनी जगह ले लेते, फुटपाथ पर धूल जमने का इंतज़ार करते, और सैनिकों के आने-जाने से मची हलचल के शांत होने का इंतज़ार करते। व्यवस्था बहाल होने के काफी देर बाद भी, असामान्य रूप से उमड़ती भीड़ कॉम्ब्रे की गलियों को अंधेरा कर देती। और हर घर के सामने, यहाँ तक कि उन घरों के सामने भी जहाँ आमतौर पर भीड़ नहीं होती थी, नौकर, और कभी-कभी मालिक भी, बैठकर देखते रहते, अपने दरवाज़ों की चौखटों को एक गहरे, अनियमित झालर से सजाते, मानो तेज़ लहरों के बाद समुद्र तट पर सीपियों और समुद्री शैवाल की झालर हो, मानो समुद्र के पीछे हटने के बाद कढ़ाई वाले कपड़े से उसे सजाया गया हो।
वैसे तो ऐसे दिनों को छोड़कर, आम तौर पर मुझे शांति से पढ़ने दिया जाता था। लेकिन एक बार स्वान के आने से जो रुकावट आई और उन्होंने मेरी पढ़ाई में जो टिप्पणी जोड़ी, जिसकी वजह से मैं बर्गोट नाम के एक बिल्कुल नए लेखक की रचना से परिचित हुआ, उसका यह निश्चित परिणाम हुआ कि लंबे समय तक मुझे बैंगनी फूलों से सजी दीवार के सामने नहीं, बल्कि एक बिल्कुल अलग पृष्ठभूमि, एक गोथिक गिरजाघर

के बरामदे में, उन महिलाओं में से एक की आकृति दिखाई देती थी, जिनके सपने मैं देखता था।

मैंने बर्गोट के बारे में पहली बार अपने से बड़े एक मित्र से सुना था, जिसके लिए मेरे मन में बहुत सम्मान था, ब्लोच नाम का एक प्रतिभाशाली युवक। जब मैंने नुइट डी'ऑक्टोब्रे के प्रति अपने प्रेम का इज़हार किया, तो वह बिगुल की तरह ज़ोर से हँस पड़ा और मुझे चेतावनी देते हुए कहा: "तुम्हें ए. डी मुसेट, एस्क्वायर के प्रति अपने घृणित प्रेम पर काबू पाना होगा। वह एक घटिया इंसान है, सबसे बुरे लोगों में से एक, एक बेहद घृणित नमूना। फिर भी, मुझे यह स्वीकार करना होगा," उसने विनम्रता से कहा, "कि उसने और यहाँ तक कि रेसीन ने भी, अपने जीवन में एक बार ऐसी पंक्ति की रचना की है जो न केवल लयबद्ध है, बल्कि मेरी नज़र में उसका सबसे बड़ा गुण यह है कि उसका कोई अर्थ नहीं है।

सफेद ओलोसोन और सफेद कैमिरे,

और दूसरा

मिनोस और पासिफे की पुत्री।

मेरे प्रिय गुरु फादर लेकोम्टे, जो अमर देवताओं की दृष्टि में प्रिय हैं, के एक लेख में इन दो भगोड़ों के बचाव के प्रमाण के रूप में इन्हें मेरे विचार के लिए प्रस्तुत किया गया था। इसी कारण, यहाँ एक पुस्तक है जिसे पढ़ने का मेरे पास अभी समय नहीं है, और ऐसा लगता है कि उस महान विद्वान ने इसकी अनुशंसा की है। मुझे बताया गया है कि वे इसके लेखक, बर्गोट, एस्क्वायर को एक कुशल लेखक मानते हैं, वास्तव में किसी भी जंगली जानवर से अधिक कुशल; और यद्यपि वे कभी-कभी आलोचनात्मक शांतिवाद, मूर्खों के प्रति ऐसी कोमलता प्रदर्शित करते हैं जिसका कारण समझना असंभव है और जिसे स्वीकार करना कठिन है, फिर भी उनके वचन का मेरे लिए उतना ही महत्व है जितना कि डेल्फ़िक

ओरेकल का। तो आप इस गीतात्मक गद्य को पढ़िए, और यदि भगवत और लेवियर डी मैग्नस की रचना करने वाले लय के उस महारथी ने झूठ नहीं बोला है, तो अपोलो की कसम, आप भी, मेरे स्वामी, ओलंपस के अमृतमय आनंद का स्वाद चख सकते हैं।" उन्होंने मुझे उन्हें "मेरे स्वामी" कहकर पुकारने के लिए कहा था, और स्वयं भी मुझे "मेरे स्वामी" कहकर पुकारा था, यह व्यंग्यपूर्ण लहजे में था। लेकिन वास्तव में, हम दोनों को इस व्यवहार से कुछ हद तक संतुष्टि मिली, क्योंकि हम अभी भी उस उम्र में थे जिसमें हम मानते हैं कि किसी चीज को नाम देकर ही उसे वास्तविक अस्तित्व मिलता है।

दुर्भाग्य से, ब्लोच से आगे की बातचीत से, जिसमें मैं स्पष्टीकरण पर ज़ोर दे सकता था, मैं उन शंकाओं को दूर नहीं कर पाया जो उन्होंने मेरे मन में तब पैदा की थीं जब उन्होंने मुझसे कहा था कि कविता की सुंदर पंक्तियाँ (जिनसे, अगर आप चाहें तो, सत्य के रहस्योद्घाटन से कम कुछ भी उम्मीद नहीं करता था) और भी सुंदर होती हैं यदि उनका कोई अर्थ न हो। क्योंकि, जैसा कि हुआ, ब्लोच को फिर कभी घर पर आमंत्रित नहीं किया गया। पहले तो उनका वहाँ अच्छा स्वागत हुआ था। यह सच है कि मेरे दादाजी ने यह बात कही थी कि जब भी मैं अपने किसी मित्र से गहरा लगाव रखता था और उसे अपने साथ घर लाता था, तो वह मित्र हमेशा एक यहूदी होता था; जिस पर वे सैद्धांतिक रूप से आपत्ति नहीं करते—वास्तव में उनका अपना मित्र स्वान यहूदी मूल का था—यदि उन्हें यह पता न चलता कि जिन यहूदियों को मैं मित्र बनाता था वे आमतौर पर अच्छे स्वभाव के नहीं होते थे। और इसलिए मैं शायद ही कभी किसी नए दोस्त को घर ला पाता था, बिना मेरे दादाजी के ला जुइव से "ओ, गॉड ऑफ अवर फादर्स" या फिर "इजराइल, ब्रेक दाई चेन" की धुन गुनगुनाए, बेशक अकेले ही "उम-टी-तुम-टी-तुम, ट्रा-ला" की ताल पर; लेकिन मुझे डर

लगता था कि मेरा दोस्त उस आवाज़ को पहचान लेगा और शब्दों को फिर से याद कर लेगा।

उन्हें देखने से पहले ही, केवल उनके नाम सुनकर, जिनमें अक्सर कुछ भी विशेष रूप से हिब्रू नहीं होता था, वह न केवल मेरे उन मित्रों के यहूदी मूल का अनुमान लगा लेता था जो वास्तव में चुने हुए लोगों में से हो सकते थे, बल्कि उनके परिवार में छिपे किसी गहरे रहस्य का भी अंदाजा लगा लेता था।

"और आज शाम को आने वाले आपके दोस्त को वे क्या कहते हैं?"

"डूमोंट, दादाजी।"

"डूमोंट! ओह, मुझे डूमोंट से डर लगता है।"

और वह गाता था:

तीरंदाजों, सावधान रहो!

बिना रुके, बिना आवाज किए देखते रहो।

और फिर, कुछ चतुराई भरे सवालों के बाद, वह "सावधान! सावधान!" चिल्लाते, या यदि पीड़ित स्वयं ही आ चुका होता और मेरे दादाजी की सूक्ष्म पूछताछ से अनजाने में अपनी उत्पत्ति स्वीकार करने के लिए बाध्य हो जाता, तो मेरे दादाजी, हमें यह दिखाने के लिए कि उन्हें अब कोई संदेह नहीं है, केवल हमारी ओर देखते और लगभग सुनाई न देने वाली धुन गुनगुनाते।

क्या! क्या तुम पैरों को इधर ले जा रहे हो?

इस डरपोक इस्राएली के बारे में?

या का

हेब्रोन की प्यारी घाटी, प्रिय पैतृक खेत,

या, शायद, का

हाँ, मैं चुनी हुई जाति का हूँ।

मेरे दादाजी की ये छोटी-मोटी सनकें मेरे दोस्तों के प्रति किसी भी प्रकार की दुर्भावना नहीं दर्शाती थीं। लेकिन ब्लोच ने अन्य कारणों से मेरे परिवार को नाराज़ कर दिया था। उन्होंने मेरे पिता को परेशान करना शुरू कर दिया था, जिन्होंने उन्हें गीले कपड़ों में आते देख बड़ी उत्सुकता से उनसे पूछा था:

"श्रीमान ब्लोच, मौसम में बदलाव क्यों आया है? क्या बारिश हुई है? मुझे समझ नहीं आ रहा; बैरोमीटर तो 'साफ' दिखा रहा है।"

जिससे ब्लोच से इससे अधिक शिक्षाप्रद कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ कि "महोदय, मैं आपको यह बताने में बिल्कुल असमर्थ हूं कि बारिश हुई है या नहीं। मैं भौतिक आकस्मिकताओं से इतना दृढ़तापूर्वक अलग रहता हूं कि मेरी इंद्रियां अब मुझे उनके बारे में सूचित करने की जहमत नहीं उठातीं।"

ब्लोच के जाने के बाद मेरे पिता ने कहा, "बेचारा बेटा, तुम्हारा दोस्त पागल हो गया है। अरे, वह तो मुझे मौसम के बारे में भी नहीं बता सका। मानो इससे ज़्यादा दिलचस्प कुछ हो ही नहीं सकता! वह तो बिल्कुल मूर्ख है।"

इसके बाद, ब्लोच ने मेरी दादी को इसलिए नाराज कर दिया क्योंकि दोपहर के भोजन के बाद, जब उन्होंने तबीयत खराब होने की शिकायत की, तो उसने अपनी सिसकी को दबाया और अपनी आंखों से आंसू पोंछे। "आप यह कल्पना भी नहीं कर सकते कि वह ईमानदार है," उसने मुझसे कहा। "वह मुझे जानता ही नहीं। जब तक कि वह पागल न हो, तब तक तो यही सच है।"

और अंत में, जब वह दोपहर के भोजन के लिए डेढ़ घंटा देरी से पहुँचा और सिर से पैर तक कीचड़ से सना हुआ था, तो उसने पूरे घर को परेशान कर दिया। उसने ज़रा भी माफ़ी नहीं माँगी और बस इतना कहा: "मैं अपने आप को न तो वायुमंडलीय गड़बड़ी से और न ही समय के नाम

पर होने वाले मनमाने विभाजन से ज़रा भी प्रभावित होने देता हूँ। मैं खुशी-खुशी समाज में चीन की अफ़ीम की पाइप या मलाया की क्रिस को फिर से शुरू कर दूँगा, लेकिन छाता और घड़ी जैसे कहीं अधिक हानिकारक (और साथ ही बेहद बुर्जुआ) उपकरणों के बारे में मुझे बिल्कुल भी जानकारी नहीं है।"

इन सब के बावजूद भी उनका कॉम्ब्रे में स्वागत हो जाता। बेशक, वो मेरे माता-पिता की पसंद के दोस्त नहीं थे; अंततः उन्होंने मान लिया था कि मेरी दादी की बीमारी की खबर सुनकर उन्होंने जो आंसू बहाए थे, वे सच्चे थे; लेकिन वे सहज ज्ञान से या अपने अनुभव से जानते थे कि हमारी प्रारंभिक आवेगपूर्ण भावनाएं हमारे बाद के कार्यों और जीवन के आचरण पर बहुत कम प्रभाव डालती हैं; और नैतिक दायित्वों का सम्मान, मित्रों के प्रति निष्ठा, काम पूरा करने में धैर्य, जीवन के नियमों का पालन, इन क्षणिक, जोशीले लेकिन निरर्थक आवेगों की तुलना में ठोस रूप से बनी और आँख बंद करके पालन की गई आदतों में कहीं अधिक मजबूत आधार रखते हैं। वे ब्लोच की जगह मेरे लिए ऐसे साथी चुनते जो मुझे उतना ही देते जितना मध्यमवर्गीय नैतिकता के नियमों के अनुसार लड़कों को एक-दूसरे को देना चाहिए, जो मुझे अचानक फलों की टोकरी न भेजते क्योंकि उस सुबह उन्हें मेरा ख्याल आया था, बल्कि जो अपनी कल्पना और भावनाओं के किसी भी आवेग से मेरे पक्ष में झुकने में असमर्थ थे, और दोस्ती के कर्तव्यों और दावों के सटीक संतुलन को बिगाड़ने में भी असमर्थ थे, इसलिए वे मेरे प्रति पक्षपात करने में भी असमर्थ थे। यहां तक कि हम उन्हें जो नुकसान पहुंचाते हैं, वह भी उनके हमारे प्रति कर्तव्य के मार्ग से आसानी से विचलित नहीं करेगा, उस पारंपरिक स्वभाव से जिसका उदाहरण मेरी परदादी थीं: जिन्होंने वर्षों तक अपनी भतीजी से झगड़ा करने के बाद, जिससे उन्होंने फिर कभी बात

नहीं की, फिर भी अपनी वसीयत में कोई बदलाव नहीं किया जिसमें उन्होंने अपनी सारी संपत्ति उस भतीजी के नाम कर दी थी, क्योंकि वह उनकी निकटतम रिश्तेदार थी, और ऐसा करना 'उचित' था।

लेकिन मुझे ब्लोच पसंद था; मेरे माता-पिता चाहते थे कि मैं खुश रहूँ; और ला फिल्ले डे मिनोस एट डे पासिफे की 'बिल्कुल अर्थहीन' सुंदरता जैसे ग्रंथों पर मैंने जो अनसुलझे सवाल खड़े किए, उनसे मैं और भी थक गया और बीमार हो गया, जितना कि उससे आगे की बातचीत के बाद होना चाहिए था, भले ही मेरी माँ को वे बातचीत कितनी भी अस्वास्थ्यकर क्यों न लगती हों। और एक बात को छोड़कर, कॉम्ब्रे में उनका स्वागत फिर भी हो जाता। उसी रात, खाने के बाद, उन्होंने मुझे बताया (एक ऐसी खबर जिसका मेरे बाद के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा, जिसने इसे एक समय खुशहाल और फिर अधिक दुखी बना दिया) कि कोई भी महिला प्रेम के अलावा किसी और चीज के बारे में नहीं सोचती, और उनमें से कोई भी ऐसी नहीं है जिसके प्रतिरोध को कोई पुरुष पार न कर सके, और उन्होंने मुझे यह भी आश्वासन दिया कि उन्होंने अचूक स्रोत से सुना है कि मेरी परदादी ने स्वयं अपने युवा दिनों में एक 'खुशहाल' जीवन व्यतीत किया था, और वह कुख्यात रूप से 'रखी हुई' थीं। मैं इतनी महत्वपूर्ण जानकारी अपने माता-पिता को बताने से खुद को रोक नहीं सका; अगली बार जब ब्लोच ने फोन किया तो उसे अंदर नहीं आने दिया गया, और बाद में, जब मैं उससे सड़क पर मिला, तो उसने मेरा अभिवादन अत्यंत ठंडेपन से किया।

लेकिन बर्गोट के मामले में उन्होंने सच ही कहा था।

पहले कुछ दिनों तक, मानो कोई धुन दिमाग में गूंज रही हो और जल्द ही उसे पागल कर दे, लेकिन जिस पर अभी तक पकड़ न बन पाई हो, बर्गोट की शैली में जिन चीजों से मुझे इतना गहरा लगाव होने वाला था, वे अभी

तक मेरी नजर में नहीं आई थीं। यह सच है कि मैं उनके जिस उपन्यास को पढ़ रहा था, उसे छोड़ नहीं पा रहा था, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरी दिलचस्पी सिर्फ कहानी में है, ठीक वैसे ही जैसे प्यार की पहली सुबह में, जब हम हर दिन किसी पार्टी या मनोरंजन में किसी महिला से मिलने जाते हैं, जिसके आकर्षण से हम आकर्षित होते हैं। फिर मैंने उन दुर्लभ, लगभग पुरातन वाक्यांशों पर ध्यान दिया जिन्हें वे कुछ खास जगहों पर इस्तेमाल करना पसंद करते थे, जहां सामंजस्य का एक छिपा हुआ प्रवाह, रचना में ही समाहित और छुपा हुआ एक प्रस्तावना, उनकी शैली को जीवंत और उन्नत कर देता था; और इन्हीं बिंदुओं पर वह "जीवन के व्यर्थ सपने", "सुंदर रूपों की अक्षय धारा", "समझ और प्रेम की बांझ, शानदार यातना", "गतिशील प्रतिमाओं जो हमारे गिरजाघरों के आकर्षक और पूजनीय अग्रभागों को हमेशा के लिए महान बनाती हैं" के बारे में बात करना शुरू कर देते थे; वह दर्शन की एक पूरी प्रणाली को, जो मेरे लिए नई थी, अद्भुत बिम्बों के प्रयोग से व्यक्त करते थे, जिसकी प्रेरणा से मैं स्वाभाविक रूप से उस वीणा की ध्वनि को जोड़ता जो मेरे कानों में गूंजने लगी थी, एक ऐसा संगत जिसमें वह बिम्ब कुछ अलौकिक और उदात्त जोड़ देता था। बर्गोट के इन अंशों में से एक, तीसरा या चौथा अंश जिसे मैंने बाकी अंशों से अलग कर लिया था, ने मुझे एक ऐसे आनंद से भर दिया जिसकी तुलना पहले अंश में मिले मामूली आनंद से नहीं की जा सकती थी, एक ऐसा आनंद जिसे मैंने अपनी आत्मा के किसी अंतर्देशीय कक्ष में अनुभव किया था, गहरा, अविभाजित, विशाल, जहाँ से सभी बाधाएँ और विभाजन मिट गए प्रतीत होते थे। दरअसल, इस अंश में मुझे वही असामान्य वाक्यांशों का स्वाद, वही संगीतमय प्रवाह और वही आदर्शवादी दर्शन दिखाई दिया, जो पहले के अंशों में भी मौजूद था, भले ही मैंने उन्हें अपने आनंद का स्रोत न माना हो। लेकिन अब मुझे ऐसा नहीं

लग रहा था कि मैं बर्गोट की किसी रचना के किसी विशेष अंश का सामना कर रहा हूँ, जो मेरे मन की सतह पर एक विशुद्ध द्वि-आयामी आकृति की रूपरेखा प्रस्तुत करता हो, बल्कि मुझे बर्गोट के उस 'आदर्श अंश' का आभास हो रहा था, जो उनकी हर पुस्तक में समान है, और जिसमें पहले के सभी समान अंश, अब विलीन होकर, एक प्रकार का घनत्व और आयतन जोड़ रहे थे, जिससे मेरी अपनी समझ विस्तृत होती प्रतीत हो रही थी।

मैं किसी भी तरह से बर्गोट का इकलौता प्रशंसक नहीं था; वह मेरी माँ की एक सहेली, एक अत्यंत साहित्यिक महिला, के भी पसंदीदा लेखक थे; जबकि डॉ. डू बोलबोन ने बर्गोट की नवीनतम पुस्तक पूरी होने तक अपने सभी रोगियों को प्रतीक्षा करवाई थी; और उन्हीं के परामर्श कक्ष से, और कॉम्ब्रे के पास एक पार्क में स्थित एक घर से, बर्गोट के प्रति उस रुचि के कुछ पहले बीज बोए गए थे, जो उन दिनों दुर्लभ थी, लेकिन अब इतनी व्यापक रूप से प्रचलित है कि यह पूरे यूरोप और अमेरिका में, और यहाँ तक कि छोटे से छोटे गाँवों में भी खिलती हुई पाई जाती है, अपनी परिष्कार में अभी भी दुर्लभ है, केवल इसी में। मेरी माँ की सहेली, और ऐसा प्रतीत होता है कि डॉ. डू बोलबोन को बर्गोट की रचनाओं में जो सबसे अधिक पसंद था, वही मुझे भी पसंद था - वही लयबद्ध प्रवाह, वही पुराने जमाने के वाक्यांश, और कुछ अन्य, जो काफी सरल और परिचित थे, लेकिन उन्होंने उन्हें इस तरह से प्रमुखता दी थी कि वे उनकी ओर से एक विशेष प्रकार की रुचि का संकेत देते थे; और उनकी रचनाओं के दुख भरे हिस्सों में एक तरह की खुरदरापन, एक ऐसा लहजा जो लगभग कठोर था। और वे स्वयं भी, निस्संदेह, इस बात को भलीभांति जानते थे कि यही उनकी मुख्य खूबियाँ थीं। क्योंकि अपनी बाद की रचनाओं में, यदि उन्हें कोई महान सत्य या किसी ऐतिहासिक गिरजाघर का नाम मिल

जाता, तो वे अपना वर्णन रोक देते और एक आह्वान, एक संबोधन, एक लंबी प्रार्थना के साथ, उस भावना को खुलकर प्रकट करते जो शुरुआती रचनाओं में उनके गद्य के रूप के नीचे दबी रहती थी, केवल उसकी सतह पर हल्की सी हलचल से ही प्रकट होती थी, और शायद तब और भी अधिक आनंददायक, अधिक सामंजस्यपूर्ण लगती थी जब वह आँखों से छिपी रहती थी, जब पाठक यह ठीक-ठीक नहीं बता पाता था कि भावना की गुनगुनाहट कहाँ से शुरू होती है या कहाँ समाप्त होती है। जिन अंशों में उन्हें आनंद आता था, वे हमारे भी प्रिय थे। मैं स्वयं तो उन्हें कंठस्थ जानता था। मुझे तो तब निराशा भी होती थी जब वे अपने वर्णन को फिर से शुरू करते थे। जब भी वे किसी ऐसी चीज़ का ज़िक्र करते, जिसकी सुंदरता मुझसे अब तक छिपी रही हो, चाहे वह चीड़ के जंगल हों, ओलावृष्टि हो, नोट्रे-डेम डी पेरिस हो, अथली हो या फ्रेड्रे, वे किसी न किसी कल्पना से उनकी सुंदरता को जीवंत कर देते और मुझे उसके सार से सराबोर कर देते। और इसलिए, यह धुंधला सा एहसास करते हुए कि ब्रह्मांड में अनगिनत तत्व समाहित हैं जिन्हें मेरी कमजोर इंद्रियाँ देख नहीं सकतीं, और अगर वे उन्हें मेरे सामने न लाते, तो मैं चाहता कि मुझे दुनिया की हर चीज़ पर, विशेषकर उन चीज़ों पर जिन्हें मैं कभी स्वयं देख सकूँ, उनकी राय, उनका कोई उपमा मिल जाए; और उनमें भी, विशेष रूप से फ्रांस की कुछ ऐतिहासिक इमारतों पर, समुद्र के कुछ दृश्यों पर, क्योंकि उनकी पुस्तकों में जिस ज़ोर से वे इनका ज़िक्र करते थे, उससे पता चलता था कि वे इन्हें महत्व और सुंदरता से भरपूर मानते थे। लेकिन, अफसोस, दुनिया की लगभग हर चीज़ पर उनकी राय मुझसे अनभिज्ञ थी। मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि यह मेरे विचारों से बिल्कुल भिन्न होगा, क्योंकि उनके विचार एक अज्ञात क्षेत्र से आए थे, जिसकी ओर मैं स्वयं को ऊपर उठाने का प्रयास कर रहा था; मुझे पूरा विश्वास था

कि मेरे विचार उस परिपूर्ण आत्मा के समक्ष सरासर मूर्खता ही प्रतीत होते, इसलिए मैंने उन्हें पूरी तरह से मिटा दिया था। यहाँ तक कि यदि मुझे उनकी किसी पुस्तक में कुछ ऐसा मिल जाता जो पहले ही मेरे मन में आ चुका होता, तो मेरा हृदय कृतज्ञता और गर्व से भर उठता, मानो किसी देवता ने अपनी असीम कृपा से उसे मुझे पुनः प्रदान कर दिया हो, उसे सुंदर और सही घोषित कर दिया हो। कभी-कभी ऐसा होता था कि बर्गोट के किसी पृष्ठ पर ठीक वही विचार व्यक्त होते थे जिनका उपयोग मैं अक्सर रात में, जब मुझे नींद नहीं आती थी, अपनी दादी और माँ को पत्र लिखने के लिए करता था, और इतने संक्षिप्त और सटीक ढंग से कि उनका पृष्ठ मेरे पत्रों के शीर्ष पर लगाने के लिए आदर्श वाक्यों के संग्रह जैसा प्रतीत होता था। और इसी तरह, बाद के वर्षों में, जब मैंने अपनी एक किताब लिखना शुरू किया, और मेरे कुछ वाक्य इतने अपर्याप्त लगे कि मैं आगे बढ़ने का फैसला नहीं कर पा रहा था, तो मुझे बर्गोट की रचनाओं में अपने वाक्यों के समतुल्य वाक्य मिल जाते थे। लेकिन तभी, जब मैं उन्हें उनके पन्नों में पढ़ता था, तो मुझे उनमें आनंद आता था; जब मैंने उन्हें खुद लिखा था, इस चिंता में कि वे मेरे मन में जो कुछ भी आया था उसे हूबहू प्रस्तुत करें, और इस डर में कि वे 'वास्तविक' न हों, मेरे पास खुद से यह पूछने का समय ही नहीं था कि जो मैं लिख रहा हूँ वह पढ़ने में सुखद होगा या नहीं! लेकिन वास्तव में, इन शब्दों के अलावा कोई और भाषा, कोई और विचार मुझे पसंद नहीं थे। मेरे उन्मुक्त और असंतोषजनक प्रयास ही मेरे प्रेम का प्रतीक थे, एक ऐसा प्रेम जिससे मुझे कोई सुख नहीं मिला, लेकिन फिर भी वह तीव्र और गहरा था। और इसलिए, जब मुझे अचानक किसी और के लेखन में ऐसे ही वाक्यांश मिले, यानी बिना किसी संकोच, दमन और आत्म-यातना के, तो मैं ऐसी चीजों के प्रति अपनी भूख को पूरी तरह से संतुष्ट करने के लिए स्वतंत्र हो

गया, ठीक वैसे ही जैसे एक रसोइया, जिसे कभी-कभार दूसरों के लिए खाना नहीं बनाना होता, तब खुद को भरपेट खिलाने का समय मिल जाता है। और इसलिए, जब एक दिन मुझे बर्गोट की एक किताब में एक पुराने पारिवारिक नौकर के बारे में एक चुटकुला मिला, जिसमें उनकी गंभीर और भव्य शैली ने बहुत व्यंग्य भर दिया था, लेकिन जो सिद्धांत रूप में वही था जो मैं अक्सर अपनी दादी से फ्रांस्वा के बारे में कहा करता था, और जब एक और बार मुझे पता चला कि वे अपने लेखन में, जो परम सत्य के दर्पण थे, एक ऐसी टिप्पणी को प्रतिबिंबित करने के योग्य समझते थे जो मैंने अपने मित्र एम. लेग्रैंडिन के बारे में की थी (और तो और, फ्रांस्वा और एम. लेग्रैंडिन पर मेरी टिप्पणियाँ उन टिप्पणियों में से थीं जिन्हें मैं बर्गोट के लिए पूरी दृढ़ता से त्याग देता, इस विश्वास में कि उन्हें उनमें कोई रुचि नहीं होगी); तब अचानक मुझे यह एहसास हुआ कि मेरा अपना साधारण अस्तित्व और सत्य के क्षेत्र उतने अलग नहीं थे जितना मैंने सोचा था, कि कुछ बिंदुओं पर वे वास्तव में संपर्क में थे; और अपने नए मिले आत्मविश्वास और खुशी में मैं उनके छपे हुए पृष्ठ पर ऐसे रोया जैसे किसी बिछड़े पिता की बाहों में।

उनकी किताबों से मेरे मन में बर्गोट की छवि एक कमज़ोर और निराश बूढ़े व्यक्ति की बनी थी, जिसने अपने बच्चों को खो दिया था और जिसे कभी कोई सांत्वना नहीं मिली थी। इसलिए मैं उनके वाक्यों को पढ़ता था, या यूँ कहूँ कि अपने मन में गुनगुनाता था, शायद उनकी अपनी इच्छा से कहीं अधिक मधुरता और धीमेपन के साथ, और उनका सबसे सरल वाक्य भी अपने लहजे में एक विशेष कोमलता और प्रेम के साथ मेरे कानों तक पहुँचता था। दुनिया में किसी भी चीज़ से बढ़कर मैं उनके दर्शन को प्रिय मानता था और जीवन भर के लिए उसके प्रति समर्पित होने का संकल्प लिया था। इसने मुझे उस उम्र तक पहुँचने के लिए बेचैन कर दिया जब मैं

स्कूल में 'दर्शनशास्त्र' नामक कक्षा में प्रवेश करने के योग्य हो जाऊँगा। मैं वहां कुछ और सीखना या करना नहीं चाहता था, बल्कि केवल अस्तित्व में रहना और पूरी तरह से बर्गोट के विचारों से निर्देशित होना चाहता था, और अगर मुझे तब बताया गया होता कि जिन तत्वज्ञानियों का मुझे वास्तव में वहां अनुसरण करना था, वे उनसे किसी भी तरह से मिलते-जुलते नहीं थे, तो मैं उस निराशा से टूट जाता जो एक युवा प्रेमी को जीवन भर वफादारी की शपथ लेने के बाद महसूस होती है, जब उसका एक दोस्त उसे भविष्य में उसकी अन्य प्रेमिकाओं के बारे में बताता है।

एक रविवार को, जब मैं बगीचे में पढ़ रहा था, तभी स्वान ने मुझे परेशान किया, जो मेरे माता-पिता से मिलने आया था।

"आप क्या पढ़ रहे हैं? क्या मैं देख सकता हूँ? अरे वाह, ये तो बर्गोट है! आपको उसके बारे में कौन बता रहा है?"

मैंने जवाब दिया कि इसके लिए ब्लोच जिम्मेदार था।

"ओह, हाँ, वो लड़का जिसे मैंने यहाँ एक बार देखा था, जो बेलिनी द्वारा बनाए गए मुहम्मद द्वितीय के चित्र से हूबहू मिलता-जुलता है। उसकी शक्ल बिल्कुल वैसी ही है; उसकी भौंहें, नाक और उभरी हुई गाल की हड्डियाँ भी वैसी ही हैं। जब उसकी दाढ़ी आ जाएगी तो वो खुद मुहम्मद ही लगेगा। खैर, उसकी पसंद अच्छी है, क्योंकि बर्गोट एक आकर्षक व्यक्ति है।" और यह देखकर कि मैं बर्गोट की कितनी प्रशंसा कर रहा था, स्वान, जो अपने जान-पहचान वालों के बारे में कभी बात नहीं करता था, ने मेरे पक्ष में एक अपवाद बनाया और कहा: "मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ; अगर आप चाहें कि वह आपकी किताब के शीर्षक पृष्ठ पर कुछ शब्द लिख दे तो मैं आपके लिए उससे पूछ सकता हूँ।"

मैंने ऐसा प्रस्ताव स्वीकार करने की हिम्मत नहीं की, लेकिन स्वान से उसके दोस्त के बारे में सवालों की बौछार कर दी। "क्या आप मुझे बता

सकते हैं कि उसका पसंदीदा अभिनेता कौन है?"
"अभिनेत्री? नहीं, मैं नहीं कह सकता। लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूँ: मंच पर ऐसा कोई पुरुष नहीं है जिसे वह बर्मा के बराबर समझता हो; वह उसे सबसे ऊपर रखता है। क्या आपने उसे देखा है?"
"नहीं महोदय, मेरे माता-पिता मुझे थिएटर जाने की अनुमति नहीं देते हैं।"
"यह तो अफ़सोस की बात है। आपको ज़ोर देना चाहिए। फ़ेद्रे में बर्मा, सिड में; खैर, वह तो बस एक अभिनेत्री है, अगर आप चाहें तो, लेकिन आप जानते हैं कि मैं कलाओं के 'पदानुक्रम' में ज़्यादा विश्वास नहीं करता।" जब वह बोल रहे थे, तो मैंने गौर किया, जो मुझे पहले भी मेरी दादी की बहनों के साथ उनकी बातचीत में अक्सर देखने को मिलता था, कि जब भी वे गंभीर विषयों पर बात करते थे, जब भी वे किसी ऐसे वाक्यांश का प्रयोग करते थे जिससे किसी महत्वपूर्ण विषय पर उनकी कोई निश्चित राय झलकती थी, तो वे उसे एक विशेष, यांत्रिक और व्यंग्यात्मक लहजे में अलग-थलग कर देते थे, मानो उन्होंने उस वाक्यांश या शब्द को अल्पविराम के बीच रखा हो, और उसकी कोई व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी लेने से बचना चाहते हों; जैसे भला कौन कहेगा "पदानुक्रम, क्या आप नहीं जानते, जैसा कि मूर्ख लोग इसे कहते हैं।" लेकिन फिर, अगर यह इतना बेतुका था, तो उन्होंने 'पदानुक्रम' क्यों कहा? कुछ देर बाद उन्होंने आगे कहा, "उनका अभिनय आपको दुनिया की किसी भी उत्कृष्ट कलाकृति की तरह ही प्रेरणा देगा, जैसे—ओह, मुझे नहीं पता—" और वे हंसने लगे, "क्या हम चार्ट्रेस की रानियों की बात करें?" तब तक मुझे लगता था कि गंभीर राय देने से उनका डर पेरिस की संस्कृति और परिष्कार का हिस्सा था, जो मेरी दादी की बहनों के प्रांतीय रूढ़िवाद के विपरीत था; और मैंने यह भी कल्पना की थी कि यह स्वान के परिवेश के जीवन के प्रति मानसिक दृष्टिकोण की विशेषता थी, जहां पिछली पीढ़ियों

के 'गीतात्मक' उत्साह की स्वाभाविक प्रतिक्रिया के रूप में, छोटे और सटीक तथ्यों को अत्यधिक महत्व दिया जाता था, जिन्हें पहले अशिष्ट माना जाता था, और 'वाक्य रचना' जैसी किसी भी चीज़ पर प्रतिबंध था। लेकिन अब मैं स्वान के इस रवैये से थोड़ा हैरान था, जिसे वे आम बातों का सामना करते समय हमेशा अपनाते थे। वे राय देने का जोखिम भी नहीं उठाना चाहते थे, और तभी सहज महसूस करते थे जब वे किसी सटीक लेकिन महत्वहीन विवरण को बड़ी सटीकता से प्रस्तुत कर सकें। लेकिन ऐसा करते हुए उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि यहाँ भी वे एक राय दे रहे थे, किसी बात का पक्ष ले रहे थे (जैसा कि कहते हैं), और उनके द्वारा दी गई जानकारी की सटीकता का अपना महत्व था। मुझे उस रात के खाने की याद फिर से आई, जब मैं बहुत दुखी थी क्योंकि माँ मेरे कमरे में नहीं आ रही थीं, और जब उन्होंने प्रिंसेस डी लियोन द्वारा आयोजित पार्टियों को महत्वहीन बता दिया था। और फिर भी, वे अपना जीवन इसी तरह के मनोरंजन में लगा रहे थे। आखिर किस तरह के जीवन के लिए वे चीजों के बारे में अपने विचारों को पूरी गंभीरता से व्यक्त करने, ऐसे निर्णय देने के कर्तव्यों को आरक्षित रखते, जिन्हें वे अल्पविराम के बीच में नहीं रखते; और वे कब उन कामों में खुद को लगाना बंद करेंगे जिन्हें वे साथ ही साथ बेतुका भी बताते हैं? मैंने स्वान के बर्गोट के बारे में मुझसे बात करने के तरीके में भी एक बात देखी, जो कि उनके साथ न्याय करते हुए, केवल उन्हीं की नहीं थी, बल्कि उस लेखक के सभी प्रशंसकों में समान थी, कम से कम मेरी माँ की सहेली और डॉ. डू बोल्बन में तो थी ही। स्वान की तरह, वे बर्गोट के बारे में कहते थे: "उनका दिमाग बहुत आकर्षक है, बिल्कुल अनोखा, उनकी बातें कहने का अपना ही एक तरीका है, जो थोड़ा अटपटा है, लेकिन बहुत ही सुखद है। आपको कभी भी शीर्षक पृष्ठ पर उनका नाम देखने की ज़रूरत नहीं पड़ती, आप उनकी

रचना को देखते ही पहचान सकते हैं।" लेकिन उनमें से किसी ने भी अभी तक यह नहीं कहा था कि "वे एक महान लेखक हैं, उनमें महान प्रतिभा है।" उन्होंने तो उन्हें प्रतिभा का श्रेय भी नहीं दिया। वे चुप रहे, क्योंकि वे इससे अनजान थे। हम एक नए लेखक की विशिष्ट शारीरिक बनावट में उस प्रकार को पहचानने में बहुत धीमे हैं जिसे हमारे सामान्य विचारों के भंडार में 'महान प्रतिभा' का दर्जा दिया जाता है। क्योंकि वह शारीरिक बनावट नई और विचित्र है, इसलिए हमें उसमें प्रतिभा से कोई समानता नहीं दिखती। हम उसे मौलिकता, आकर्षण, कोमलता और शक्ति कहते हैं; और फिर एक दिन हम इन सभी का योग करते हैं और पाते हैं कि यह केवल प्रतिभा ही है।

मैंने एम. स्वान से पूछा, "क्या ऐसी कोई किताबें हैं जिनमें बर्गोट ने बर्मा के बारे में लिखा हो?"

मुझे लगता है कि उन्होंने रेसीन पर लिखे उस छोटे से निबंध में इसका जिक्र किया है, लेकिन वह शायद अब छपा नहीं होगा। फिर भी, हो सकता है कि उसका दूसरा संस्करण भी छपा हो। मैं पता लगा लूंगी। खैर, अगली बार जब बर्गोट हमारे साथ भोजन करने आएंगे, तो मैं उनसे ही वह सब पूछ लूंगी जो आप जानना चाहते हैं। वह साल के अंत से दूसरे साल तक एक भी हफ्ता आना नहीं भूलते। वह मेरी बेटी के सबसे अच्छे दोस्त हैं। वे साथ-साथ घूमते हैं और पुराने शहर, गिरजाघर और किले देखते हैं।

चूंकि मैं सामाजिक पदानुक्रम के विभिन्न स्तरों से पूरी तरह अनभिज्ञ थी, इसलिए मेरे पिता के लिए स्वान की पत्नी और बेटी से मिलना असंभव था, इस तथ्य का मुझ पर लंबे समय तक विपरीत प्रभाव पड़ा। इससे मैं उन्हें अपने से एक विशाल खाई से अलग मानती रही, जिससे मेरी नज़रों में उनकी गरिमा और महत्व बहुत बढ़ गया। मुझे इस बात का दुख था कि

मेरी माँ ने अपने बाल नहीं रंगे और होंठ लाल नहीं किए, जैसा कि मैंने अपनी पड़ोसी, श्रीमती सज़ेरत को कहते सुना था कि श्रीमती स्वान ने अपने पति को नहीं बल्कि एम. डी चार्लस को प्रसन्न करने के लिए ऐसा किया था; और मुझे लगा कि हम उनके लिए तिरस्कार के पात्र होंगे, जिससे मुझे विशेष रूप से बेटी के कारण दुख हुआ, जो कि मैंने सुना था कि बहुत प्यारी बच्ची थी, और जिसके बारे में मैं अक्सर सपने देखती थी, हमेशा उसे उसी रूप-रंग के साथ देखती थी, जो मैंने उसे मनमाने ढंग से दिया था, लेकिन जिसका प्रभाव मनमोहक था। लेकिन आज दोपहर से, जब मुझे पता चला कि माइल... माइल स्वान एक ऐसी दुर्लभ और सौभाग्यशाली परिस्थिति में पली-बढ़ी थीं, मानो अपने प्राकृतिक परिवेश में ही इतने विशेषाधिकारों में डूबी हुई हों कि अगर वह अपने माता-पिता से पूछतीं कि क्या कोई रात के खाने पर आ रहा है, तो उन्हें दिव्य प्रकाश से जगमगाते उन दो शब्दों में उत्तर मिलता, और वह उस सुनहरे मेहमान का नाम सुनतीं जो उनके लिए उनके परिवार के एक पुराने मित्र से अधिक कुछ नहीं था, बर्गोट; उनके लिए मेज पर अंतरंग बातचीत, ठीक वैसे ही जैसे मेरी परदादी की बातचीत मेरे लिए होती थी, बर्गोट के उन सभी विषयों पर विचार होते थे जिन्हें वह अपने लेखन में नहीं लिख पाए थे, और जिन पर मैं उनसे ज्ञान की बातें सुनना चाहता था; और सबसे बढ़कर, जब वह दूसरे शहरों की यात्रा पर जातीं, तो वह उनके साथ-साथ चलते, पहचाने बिना और महिमामय, उन देवताओं की तरह जो प्राचीन काल में स्वर्ग से उतरकर मनुष्यों के बीच निवास करते थे: तब मुझे माइल स्वान जैसी एक असाधारण शख्सियत का दुर्लभ महत्व समझ में आया, और साथ ही यह भी कि मैं उनके सामने कितना असभ्य और अज्ञानी प्रतीत होता। और मुझे यह एहसास इतनी गहराई से हुआ कि उसका दोस्त बनना मेरे लिए कितना सुखद और फिर भी कितना असंभव होगा

कि मैं एक साथ तड़प और निराशा से भर गया। और आमतौर पर, उस समय से आगे, जब भी मैं उसके बारे में सोचता, तो मुझे वह किसी गिरजाघर के बरामदे के सामने खड़ी दिखाई देती, मुझे हर मूर्ति का अर्थ समझाती हुई, और एक ऐसी मुस्कान के साथ जो मेरी सर्वोच्च प्रशंसा थी, मुझे, अपने दोस्त के रूप में, बर्गोट से मिलवाती हुई। और हमेशा गिरजाघरों के विचार से मेरे मन में उत्पन्न होने वाली सभी कल्पनाओं का आकर्षण, हे डे फ्रांस की पहाड़ियों और घाटियों का और नॉर्मंडी के मैदानों का आकर्षण, माइल स्वान की मेरे मन में बनी छवि पर चमक और सुंदरता बिखेरता था; अब बस उसे जानना और उससे प्रेम करना ही बाकी था। एक बार जब हम यह मान लेते हैं कि किसी साथी प्राणी का किसी अज्ञात अस्तित्व में हिस्सा है जिसमें उस प्राणी का हमारे प्रति प्रेम हमें प्रवेश दिला सकता है, यानी प्रेम की सभी प्रारंभिक शर्तों में से वह शर्त जिसे वह सबसे अधिक महत्व देता है, वह शर्त जो उसे बाकी के प्रति उदार या उदासीन बनाती है। वे स्त्रियाँ भी जो यह दिखावा करती हैं कि वे किसी पुरुष को केवल उसके बाहरी रूप से परखती हैं, वास्तव में उसके बाहरी रूप में किसी विशेष जीवनशैली की झलक देखती हैं। और यही कारण है कि वे किसी सैनिक या अग्निशामक से प्रेम कर बैठती हैं, जिसकी वर्दी के कारण वे उसके चेहरे पर कम ध्यान देती हैं; वे उसे चूमती हैं और मानती हैं कि उस कठोर कवच के नीचे एक ऐसा हृदय धड़कता है जो बाकियों से अलग है, अधिक वीर, अधिक साहसी, अधिक कोमल; और इसी प्रकार एक युवा राजा या युवराज विदेशी देशों की यात्रा कर सकता है और सबसे संतोषजनक विजय प्राप्त कर सकता है, फिर भी उसमें वह नियमित और सुसंस्कृत व्यक्तित्व नहीं होता जो, मैं कह सकता हूँ, एक बाहरी व्यक्ति के लिए अपरिहार्य होता है।

जब मैं बगीचे में पढ़ रही थी, एक ऐसी चीज़ जिसे मेरी बड़ी चाची रविवार

के अलावा कभी नहीं समझ पातीं, क्योंकि रविवार वह दिन था जब किसी भी गंभीर काम में लगना गैरकानूनी था, और जिस दिन वह खुद सिलाई का काम छोड़ देती थीं (सप्ताह के दिनों में वह कहतीं, "तुम किताब से अपना मनोरंजन कैसे कर सकती हो; तुम्हें पता है, आज रविवार नहीं है!" 'मनोरंजन' शब्द में बचकानापन और समय की बर्बादी का भाव छिपा होता था), मेरी चाची लियोनी, यूलाली के आने तक फ्रांस्वा के साथ गपशप करती रहतीं। वह उसे बतातीं कि उन्होंने अभी-अभी श्रीमती गौपिल को "बिना छाते के, उस रेशमी पोशाक में जाते देखा है जो उन्होंने कुछ दिन पहले शैतोडुन में उनके लिए बनाई थी। अगर उन्हें शाम की प्रार्थना से पहले दूर जाना है, तो वह पूरी तरह भीग सकती हैं।"

इसका उत्तर था "बहुत संभावना है" (जिसका अर्थ "बहुत संभावना नहीं है" भी था), क्योंकि फ्रांस्वा एक सुखद विकल्प की संभावना को पूरी तरह से खारिज नहीं करना चाहती थी।

“देखो तो ज़रा,” मेरी चाची ने माथे पर हाथ मारते हुए कहा, “मुझे याद आया कि मुझे पता ही नहीं चला कि वो आज सुबह प्रार्थना से पहले चर्च गई थी या नहीं। मुझे यूलाली से पूछना होगा... फ्रांस्वा, ज़रा मीनार के पीछे उस काले बादल को देखो, और स्लेटों पर रोशनी कितनी कम है, यकीन मानो दिन ढलने से पहले बारिश ज़रूर होगी। ऐसे तो बारिश चलती नहीं रह सकती, बहुत गर्मी है। और जितनी जल्दी हो उतना अच्छा, क्योंकि जब तक तूफान नहीं रुकता, मेरा विची वॉटर (एक तरह का पेय) पचेगा नहीं,” उन्होंने अपनी बात खत्म करते हुए कहा, क्योंकि उनके मन में विची वॉटर को जल्दी पचाने की इच्छा, मैडम गौपिल की नई पोशाक के खराब होने के डर से कहीं ज़्यादा ज़रूरी थी।

"बहुत संभावना है।"

"और आप जानती हैं कि जब चौक में बारिश होती है तो ज़्यादा आश्रय

नहीं मिलता।" अचानक मेरी चाची का चेहरा पीला पड़ गया। "क्या, तीन बज गए!" वह चिल्लाईं। "लेकिन शाम की प्रार्थना तो शुरू हो चुकी होगी, और मैं अपनी पेप्सिन भूल गई! अब मुझे समझ आया कि वह विची का पानी मेरे पेट पर क्यों पड़ा था।" और बैंगनी मखमल से बंधी, सुनहरे हुक वाली एक प्रार्थना-पुस्तक पर झपट्टा मारते हुए, जिसमें से जल्दबाजी में उन्होंने पीले कागज की झालर से सजी छोटी-छोटी तस्वीरें गिरा दीं, जिनका इस्तेमाल वह चर्च के बड़े पर्वों के स्थानों को चिह्नित करने के लिए करती थीं, मेरी चाची ने अपनी बूंदों को निगलते हुए, पूरी गति से पवित्र ग्रंथ के शब्दों को बुदबुदाना शुरू कर दिया, जिसका अर्थ उनके दिमाग में थोड़ा धुंधला हो गया था क्योंकि उन्हें यह अनिश्चितता थी कि विची के इतने समय बाद ली गई पेप्सिन उसे पचा पाएगी या नहीं। "तीन बज गए! समय कितनी तेज़ी से बीतता है, यकीन नहीं होता।"

खिड़की पर हल्की सी दस्तक हुई, मानो किसी वस्तु ने उसे भेद दिया हो, फिर तेज़, लेकिन हल्की आवाज़ आई, मानो ऊपर की खिड़की से रेत की बौछार हो रही हो; फिर वह आवाज़ फैल गई, एक लय, एक ताल, तरल, तेज़, ढोल की थाप जैसी, संगीतमय, असंख्य, सार्वभौमिक हो गई। यह बारिश थी।

"देखो, फ्रांस्वा, मैंने तुमसे क्या कहा था? कितनी ज़ोर की बारिश हो रही है! लेकिन मुझे लगता है कि मैंने बगीचे के द्वार पर घंटी सुनी: जाओ और देखो कि इस मौसम में कौन बाहर रह सकता है।"

फ्रांस्वा गई और वापस लौटी। "ये श्रीमती अमेडी हैं" (मेरी दादी)। "उन्होंने कहा था कि वो टहलने जा रही हैं। वैसे भी बहुत तेज बारिश हो रही है।"

मेरी चाची ने आसमान की ओर देखते हुए कहा, "मुझे ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। मैंने हमेशा कहा है कि वह बाकी लोगों से बिलकुल अलग थी। खैर, मुझे खुशी है कि इस सब में बाहर वह है, मैं नहीं।"

"श्रीमती अमेडी हमेशा बाकियों से बिल्कुल विपरीत होती हैं," फ्रांस्वा ने बिना किसी दुर्भावना के कहा, और अन्य नौकरानियों के साथ अकेले होने तक अपनी इस धारणा को व्यक्त करने से परहेज किया कि मेरी दादी 'थोड़ी सनकी' थीं।

"आशीर्वाद का अनुष्ठान समाप्त हो गया! अब यूलाली कभी नहीं आएगी," मेरी चाची ने आह भरते हुए कहा। "मौसम ने ही उसे डराकर भगा दिया होगा।"

"लेकिन अभी पांच नहीं बजे हैं, मैडम ऑक्टेव, अभी तो सिर्फ साढ़े चार बजे हैं।"

"अभी साढ़े चार बजे हैं! और मैं यहाँ हूँ, छोटी-छोटी पर्दों को हटाकर बस थोड़ी सी रोशनी पाने के लिए। साढ़े चार बजे! रोगेशन दिवस से बस एक हफ़्ता पहले। आह, मेरी बेचारी फ़्रांस्वा, प्रभु हम पर बहुत नाराज़ होंगे। इन दिनों दुनिया हद से ज़्यादा आगे बढ़ रही है। जैसा कि मेरे प्यारे ऑक्टेव कहा करते थे, हम भगवान को बहुत बार भूल चुके हैं, और वह हम पर अपना बदला ले रहे हैं।"

मेरी चाची के गालों पर एक चमकीली लाली छा गई; यह यूलाली थी। दुर्भाग्यवश, उसके अंदर आते ही फ्रांस्वा फिर प्रकट हुई और मुस्कुराते हुए, मानो वह मेरी चाची को अपनी खबर से मिलने वाली खुशी में पूरी तरह से शामिल हो, हर शब्द को इस तरह स्पष्ट रूप से बोलते हुए कि भले ही उसे अप्रत्यक्ष शब्दों में अनुवाद करना पड़ रहा हो, वह एक अच्छे सेवक की तरह उन शब्दों को दोहरा रही थी जिन्हें नई आगंतुक ने कहने की कृपा की थी, बोली: "महोदय पादरी जी को बहुत प्रसन्नता होगी, वे मंत्रमुग्ध हो जाएंगे, यदि श्रीमती ऑक्टेव अभी आराम नहीं कर रही हों और उनसे मिल सकें। वे श्रीमती ऑक्टेव को परेशान नहीं करना चाहते। वे नीचे हैं; मैंने उनसे बैठक कक्ष में जाने को कहा है।"

अगर सच्चाई पता होती, तो क्यूरे के आने से मेरी चाची को उतना आनंद नहीं मिलता जितना फ्रांस्वा सोचती थी, और उनके आने की घोषणा करते समय उनके चेहरे पर जो खुशी झलकती थी, वह उनकी बीमार चाची की भावनाओं से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी। क्यूरे (एक उत्कृष्ट व्यक्ति, जिनसे मुझे अब अफसोस होता है कि मेरी उनसे और अधिक बातचीत नहीं हुई, क्योंकि कला में उनकी कोई रुचि न होते हुए भी, वे कई शब्दों की उत्पत्ति जानते थे), प्रतिष्ठित आगंतुकों को अपना चर्च दिखाने की आदत रखते थे (उन्होंने तो कॉम्ब्रे पैरिश का इतिहास संकलित करने की योजना भी बनाई थी), और अपनी अंतहीन व्याख्याओं से उन्हें थका देते थे, जो संयोगवश कभी बदलती नहीं थीं। लेकिन जब उनका आना यूलाली के आने के ठीक समय पर हुआ, तो मेरी चाची को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। वह यूलाली के साथ अधिक समय बिताना चाहती थीं, और नहीं चाहती थीं कि उनके सभी करीबी लोग एक ही समय में उनके आसपास हों। लेकिन वह पादरी को विदा करने की हिम्मत नहीं कर पाई और उसे यूलाली को यह इशारा करके संतोष करना पड़ा कि जब वह जाए तो वह न जाए, ताकि उसके जाने के बाद उसे थोड़ी देर के लिए यूलाली का साथ मिल सके।

"हे पिता, ये क्या सुन रहा हूँ कि एक चित्रकार ने आपके चर्च में अपना ईज़ल लगा रखा है और एक खिड़की की नकल बना रहा है? मैं बूढ़ा हो चुका हूँ, फिर भी मैं यकीन से कह सकता हूँ कि मैंने अपने पूरे जीवन में ऐसी बात कभी नहीं सुनी! पता नहीं दुनिया किस ओर जा रही है! और ये तो पूरे चर्च की सबसे बदसूरत चीज़ है।"

मैं यह तो नहीं कहूँगा कि यह सबसे बदसूरत है, क्योंकि सेंट-हिलैरे में कुछ चीज़ें देखने लायक हैं, लेकिन मेरी इस पुरानी बेसिलिका में कुछ चीज़ें बहुत पुरानी हो चुकी हैं, जो पूरे धर्मक्षेत्र में इकलौती ऐसी बेसिलिका है

जिसका कभी जीर्णोद्धार भी नहीं हुआ। भगवान ही जानते हैं, हमारा बरामदा गंदा और पुराना है; फिर भी, यह भव्य है; उदाहरण के लिए, एस्तेर की टेपेस्ट्रीज़ को ही ले लीजिए, हालाँकि व्यक्तिगत रूप से मैं उनके जोड़े के लिए एक पैसा भी नहीं दूँगा, लेकिन विशेषज्ञ उन्हें सेंस की टेपेस्ट्रीज़ के बाद दूसरे स्थान पर रखते हैं। मैं यह भी देख सकता हूँ कि कुछ विवरणों को छोड़कर, जो थोड़े यथार्थवादी हैं, वे ऐसी विशेषताएँ दर्शाते हैं जो अवलोकन की वास्तविक क्षमता को प्रमाणित करती हैं। लेकिन खिड़कियों के बारे में मुझसे बात मत कीजिए। क्या यह समझदारी है, मैं आपसे पूछता हूँ, उन खिड़कियों को खुला छोड़ देना जो दिन के उजाले को पूरी तरह रोक देती हैं, और रंग के धब्बे बिखेर कर आँखों को भ्रमित भी करती हैं, जिनका नाम देना मेरे लिए मुश्किल होगा, उस फर्श पर जहाँ दो स्लैब एक ही स्तर पर नहीं हैं? फिर भी वे मेरे लिए फर्श को बदलने से इनकार कर देते हैं, क्योंकि, अगर आप चाहें तो, वे कॉम्ब्रे के मठाधीशों और गुएरमांटेस के लॉर्ड्स, पुराने काउंट्स, ब्राबेंट के, वर्तमान ड्यूक डी गुएरमांटेस के प्रत्यक्ष पूर्वज, और उनकी डचेस के भी, क्योंकि वह गुएरमांटेस परिवार की महिला थीं और उन्होंने अपने चचेरे भाई से शादी की थी, की कब्रें हैं। (मेरी दादी, जिनका 'व्यक्तियों' में कोई दिलचस्पी न लेने का दृढ़ निश्चय ही सभी के नामों और उपाधियों को लेकर भ्रमित होने का कारण बन गया था, जब भी कोई डचेस डी गुएरमांटेस का जिक्र करता, तो वह कहतीं कि उनका संबंध मैडम डी विलेपारिसिस से होना चाहिए। तब पूरा परिवार ठहाके लगा लेता; और वह किसी बपतिस्मा या अंत्येष्टि के निमंत्रण का हवाला देकर खुद को सही ठहराने की कोशिश करतीं: "मुझे पूरा यकीन है कि उसमें कहीं न कहीं कोई गुएरमांटेस जरूर था।" और एक बार मैं दूसरों का साथ देता, और उनके खिलाफ जाता, यह मानने से इनकार कर देता कि उनकी

स्कूल की दोस्त और जेनेवीव डी ब्राबेंट के वंशज के बीच कोई संबंध हो सकता है।)

"रूसैनविले को देखो," क्यूरे ने आगे कहा। "आजकल यह महज़ किसानों का एक छोटा सा गाँव है, हालाँकि पुराने समय में यहाँ फेल्ट की टोपियों और घड़ियों के व्यापार के कारण काफ़ी महत्व रहा होगा। (वैसे, मुझे रौसैनविले नाम की उत्पत्ति के बारे में पक्का पता नहीं है। मैं यह सोचना चाहूँगा कि मूल रूप से इसका नाम रौविले रहा होगा, जो राडुल्फ़ी विला से आया है, जो चेटोरॉक्स, कैस्ट्रम राडुल्फ़ी के समान है, लेकिन हम इस बारे में किसी और समय बात करेंगे।) बहुत खूब; वहाँ के गिरजाघर में शानदार खिड़कियाँ हैं, लगभग सभी आधुनिक हैं, जिनमें लुई-फिलिप का कॉम्ब्रे में प्रवेश दर्शाने वाली वह बेहद प्रभावशाली खिड़की भी शामिल है, जो निश्चित रूप से कॉम्ब्रे में ही ज़्यादा उपयुक्त होती, और जो, जैसा कि मुझे पता चला है, चार्ट्रेस की प्रसिद्ध खिड़कियों जितनी ही अच्छी है। कल ही मेरी मुलाकात डॉ. पर्सेपीड के भाई से हुई, जिन्हें इन चीज़ों में रुचि है, और उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें यह एक बेहद खूबसूरत कलाकृति लगी। लेकिन, जैसा कि मैंने इस कलाकार से कहा, जो वैसे तो बहुत ही सभ्य व्यक्ति लगते हैं, और ऐसा लगता है कि वह अपने ब्रश के साथ एक कुशल कलाकार हैं; मैंने उनसे कहा, आखिर इस खिड़की में आपको ऐसा क्या असाधारण लगता है, जो बाकी खिड़कियों की तुलना में थोड़ी धुंधली है?

मेरी चाची ने हताश स्वर में कहा, "मुझे पूरा यकीन है कि अगर आप उनके लॉर्डशिप से पूछेंगे," क्योंकि उन्हें लगने लगा था कि वह 'थक' रही हैं, "तो वह आपको नई खिड़की देने से कभी इनकार नहीं करेंगे।"

"आप इस पर भरोसा कर सकती हैं, श्रीमती ऑक्टेव," पादरी ने उत्तर दिया। "दरअसल, खिड़की को लेकर हंगामा तो स्वयं उनके लॉर्डशिप ने ही

शुरू किया था, यह साबित करके कि उसमें गिलबर्ट द बैड को दर्शाया गया है, जो गुएरमांटेस के लॉर्ड और जेनेवीव डी ब्राबेंट के प्रत्यक्ष वंशज थे, जो गुएरमांटेस परिवार की बेटी थीं, और उन्हें सेंट हिलैरे से क्षमा प्राप्त करते हुए दिखाया गया है।"

"लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि सेंट हिलैरे का इसमें क्या रोल है।"

"जी हाँ, क्या आपने कभी खिड़की के कोने में पीले वस्त्र पहने एक महिला को नहीं देखा? बिल्कुल, वह संत हिलायर हैं, जिन्हें आप शायद याद रखें, देश के कुछ हिस्सों में संत इलियर्स, संत हेलियर और यहाँ तक कि जुरा में संत यली के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन संत हिलारियस के ये विभिन्न विकृत रूप धन्य संतों के नामों में घटी सबसे विचित्र घटनाओं में से नहीं हैं। उदाहरण के लिए, मेरी प्यारी यूलाली, अपनी संरक्षक संत, संत यूलालिया का मामला ही ले लीजिए; क्या आप जानती हैं कि बरगंडी में उनका क्या नाम हो गया है? संत एलोई, बस इतना ही! वह महिला एक सज्जन बन गई है। क्या आपने सुना है, यूलाली, आपके मरने के बाद वे आपको भी एक पुरुष बना देंगे!"

पिताजी के पास हमेशा अपने चुटकुले होंगे।

गिल्बर्ट का भाई, चार्ल्स द स्टैमरर, एक धर्मनिष्ठ राजकुमार था, लेकिन कम उम्र में ही अपने पिता, पेपिन द मैड, को खो देने के बाद, जिनकी मृत्यु मानसिक दुर्बलता के कारण हुई थी, उसने उस व्यक्ति के अहंकार के साथ सर्वोच्च सत्ता का प्रयोग किया जिसे युवावस्था में अनुशासन का पालन नहीं कराया गया था। उसका अहंकार इतना बढ़ गया था कि जब भी वह किसी कस्बे में किसी ऐसे व्यक्ति को देखता जिसका चेहरा उसे याद नहीं रहता था, तो वह उस पूरे कस्बे को, अंतिम निवासी तक, मार डालता था। चार्ल्स से बदला लेने की इच्छा से गिल्बर्ट ने कॉम्ब्रे के चर्च को जलवा दिया, यानी मूल चर्च को, जिसे थियोडेबर्ट ने, जब वह और उसका

दरबार पास के थिबरज़ी (जो कि थियोडेबेरियाकस है) में स्थित अपने निवास को छोड़कर बरगंडियनों से लड़ने के लिए निकले थे, तो संत हिलैरे की समाधि पर बनाने का वादा किया था, यदि संत उसे विजय दिलाते। अब उसका केवल तहखाना ही बचा है, जिसमें शायद थियोडोर आपको ले गया है, क्योंकि गिल्बर्ट ने बाकी सब कुछ जला दिया था। अंत में, उसने... दुर्भाग्यशाली चार्ल्स ने विलियम की सहायता से, जिसे पादरी 'विलियम' कहते थे, "विजेता" का खिताब हासिल किया, यही कारण है कि आज भी इतने सारे अंग्रेज इस जगह को देखने आते हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि वह कॉम्ब्रे के लोगों का स्नेह जीतने में सफल नहीं हो सका, क्योंकि जब वह प्रार्थना के बाद बाहर आ रहा था, तो लोगों ने उस पर हमला कर दिया और उसका सिर काट दिया। थियोडोर के पास एक छोटी सी किताब है, जो वह लोगों को उधार देता है, जिसमें पूरी कहानी बताई गई है।

"लेकिन हमारे चर्च की सबसे अद्भुत बात निस्संदेह घंटाघर से दिखने वाला नज़ारा है, जो भव्यता से भरपूर है। निश्चित रूप से, चूंकि आप बहुत मजबूत नहीं हैं, इसलिए मैं आपको हमारी 90 सीढ़ियाँ चढ़ने की सलाह कभी नहीं दूंगा, जो मिलान के प्रसिद्ध गिरजाघर की सीढ़ियों की आधी हैं। यह सबसे सक्रिय व्यक्ति के लिए भी काफी थकाने वाला है, खासकर जब आपको अपने हाथों और घुटनों के बल चलना पड़ता है, अगर आप अपना सिर फोड़ना नहीं चाहते हैं, और सीढ़ियों के सारे जाले आपके कपड़ों पर चिपक जाते हैं। वैसे भी, आपको अच्छे से कपड़े पहनने चाहिए," वह आगे बोलते रहे, मेरी चाची के इस सुझाव पर भड़कने पर ध्यान दिए बिना कि वह कभी भी उनके घंटाघर में चढ़ने में सक्षम हो सकती हैं, "क्योंकि ऊपर पहुँचने पर वहाँ तेज़ हवा चलती है। कुछ लोग तो मुझे यह भी बताते हैं कि उन्होंने वहाँ मौत की ठंड महसूस की है। कोई

बात नहीं, रविवार को हमेशा क्लब और समितियाँ आती हैं, जिनमें से कुछ दूर-दूर से हमारे सुंदर नज़ारे को निहारने आती हैं, और वे हमेशा मंत्रमुग्ध होकर घर लौटती हैं। रुको अब, अगले रविवार को, अगर मौसम ठीक रहा, तो आपको वहाँ रोगेशन-टाइड के लिए काफ़ी लोग ज़रूर मिलेंगे। आपको मानना ही पड़ेगा कि वहाँ से नज़ारा किसी परीकथा जैसा है, मैदान के किनारे फैले हुए ऐसे दृश्य जिनका अपना एक अलग ही आकर्षण है। साफ़ मौसम में आप वर्न्यूइल तक देख सकते हैं। और फिर एक और बात; आप एक ही समय में उन जगहों को भी देख सकते हैं जिन्हें आप आमतौर पर एक-दूसरे के बिना देखते हैं, जैसे कि विवोन नदी का प्रवाह और सेंट-असीसी-लेस-कॉम्ब्रे की खाइयाँ, जो वास्तव में ऊँचे पेड़ों की एक कतार से अलग होती हैं; या, एक और उदाहरण लें, जौई-ले-विकॉन्टे की सभी नहरें, जिसे गौडियाकस वाइसकॉमिटिस भी कहा जाता है, जैसा कि आप जानते ही होंगे। हर बार जब मैं जौई गया हूँ, मैंने एक जगह पर नहर का एक छोटा सा हिस्सा देखा है, फिर एक मोड़ मुड़ा और दूसरी नहर देखी, लेकिन जब मैंने दूसरी देखी तो पहली नहीं दिखी। मैंने कोशिश की यह कल्पना करना व्यर्थ था कि वे एक-दूसरे के बगल में कैसे लेटे होंगे; इसका कोई फायदा नहीं था। लेकिन, सेंट-हिलैरे की चोटी से, मामला बिल्कुल अलग है; पूरा इलाका आपके सामने नक्शे की तरह फैला हुआ है। बस, पानी दिखाई नहीं देता; ऐसा लगता है जैसे शहर में बड़ी-बड़ी दरारें हैं, जो इसे इतनी सफाई से काट रही हैं कि यह रोटी के एक टुकड़े जैसा दिखता है जो कटने के बाद भी जुड़ा रहता है। इसे पूरी तरह से समझने के लिए आपको एक ही समय में दोनों जगहों पर होना पड़ेगा; यहाँ सेंट-हिलैरे की चोटी पर और वहाँ जौई-ले-विकॉन्टे में।

पादरी ने मेरी चाची को इतना थका दिया था कि उनके जाते ही उन्हें यूलाली को भी विदा करना पड़ा।

"लो, मेरी प्यारी यूलाली," उसने कमजोर आवाज में कहा और अपने हाथ में रखे छोटे से पर्स से एक सिक्का निकाला। "यह बस एक छोटी सी चीज है ताकि तुम मुझे अपनी प्रार्थनाओं में न भूलो।"

"ओह, लेकिन, मैडम ऑक्टेव, मुझे नहीं लगता कि मुझे ऐसा करना चाहिए; आप अच्छी तरह जानती हैं कि मैं यहाँ इसके लिए नहीं आती!" यूलाली हर रविवार को उसी झिझक और शर्मिंदगी के साथ जवाब देती, मानो हर प्रलोभन पहला हो, और उसकी नाराज़गी भरी नज़र मेरी चाची को खुश कर देती, पर उन्हें कभी बुरा नहीं लगता था। क्योंकि अगर कभी ऐसा होता कि यूलाली पैसे लेते समय हमेशा की तरह थोड़ी कम रूठी हुई दिखती, तो मेरी चाची बाद में कहतीं, "मुझे समझ नहीं आ रहा कि यूलाली को क्या हो गया है; मैंने उसे वही मामूली रकम दी जो मैं हमेशा देती हूँ, और वह बिल्कुल भी खुश नहीं दिखी।"

“मुझे नहीं लगता कि उसे शिकायत करने की कोई खास वजह है,” फ्रांस्वा उदास भाव से आह भरती, क्योंकि उसकी यह प्रवृत्ति थी कि मेरी चाची उसे या उसके बच्चों के लिए जो कुछ भी देती थीं, उसे वह तुच्छ समझती थी, और यूलाली के हाथ में हर रविवार को आने वाले उन छोटे-छोटे सिक्कों को एक बिगड़ी हुई और कृतघ्न लाडली पर बेहिसाब लुटाने वाला खजाना समझती थी, जो इतनी सावधानी से दिए जाते थे कि फ्रांस्वा उन्हें कभी देख नहीं पाती थी। ऐसा नहीं था कि वह मेरी चाची द्वारा यूलाली को दिए गए पैसे को खुद के लिए रखना चाहती थी। वह पहले से ही मेरी चाची की संपत्ति से संतुष्ट थी, इस ज्ञान के साथ कि मालकिन की संपत्ति स्वतः ही नौकरानी को दुनिया की नजरों में ऊंचा और गौरवशाली बना देती है; और वह स्वयं कॉम्ब्रे, जौई-ले-विकॉन्टे और अन्य प्रमुख शहरों में अपनी प्रसिद्धि और प्रशंसा के पात्र थीं, मेरी चाची के कई खेतों, पादरी के बार-बार और लंबे दौरों, और उनके द्वारा उपभोग की जाने वाली विची

जल की आश्चर्यजनक मात्रा के कारण। फ्रांस्वा केवल मेरी चाची के लिए लालची थीं; यदि मेरी चाची की संपत्ति पर उनका नियंत्रण होता (जो उनकी सर्वोच्च महत्वाकांक्षा को भी पूरा कर देता), तो वह उसे अजनबियों के हमलों से एक मातृत्व भाव से बचातीं। हालाँकि, मेरी चाची, जिन्हें वह जानती थीं कि वे असाध्य रूप से उदार थीं, द्वारा दिए गए दान में उन्हें कोई बड़ी हानि नहीं दिखती, यदि वह केवल उन लोगों को दान देतीं जो पहले से ही धनी थे। शायद उन्हें लगता था कि ऐसे लोग, जिन्हें वास्तव में मेरी चाची के उपहारों की आवश्यकता नहीं थी, उन पर इस कारण से स्नेह का दिखावा करने का संदेह नहीं किया जा सकता था। इसके अलावा, श्रीमती सज़ेरत, श्री स्वान, श्री लेग्रैंडिन और श्रीमती जैसे अत्यधिक धनवान और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को दिए गए उपहार... फ्रांस्वा को लगता था कि गौपिल, मेरी चाची के समान वर्ग के लोगों के लिए, जो स्वाभाविक रूप से उनके साथ घुलते-मिलते थे, धनी लोगों के उस विचित्र और शानदार जीवन की सजावटी परंपराओं में शामिल थे, जहाँ लोग शिकार करते थे, दावतें देते थे और घर-घर जाते थे, एक ऐसा जीवन जिसे वह प्रशंसा भरी मुस्कान के साथ निहारती थी। लेकिन यह बिल्कुल भी वैसा नहीं था अगर मेरी चाची शिष्टाचार के इस शाही आदान-प्रदान के बदले केवल दान का सहारा लेतीं, अगर उनके लाभार्थी उस वर्ग के होते जिन्हें फ्रांस्वा "मुझ जैसे लोग" या "मुझसे बेहतर नहीं" कहतीं, ऐसे लोग जिनसे वह और भी अधिक घृणा करतीं अगर वे उन्हें हमेशा "श्रीमती फ्रांस्वा" कहकर संबोधित नहीं करते, सिर्फ यह दिखाने के लिए कि वे खुद को "उतना अच्छा नहीं" समझते। और जब उसने देखा कि उसकी तमाम चेतावनियों के बावजूद, मेरी चाची अपनी मनमर्जी से काम करती रही और (कम से कम फ्रांकोइस का यही मानना था) अयोग्य लोगों पर बेहिसाब पैसा लुटाती रही, तो उसे लगने लगा कि मेरी चाची से मिले उपहार

यूलाली पर लुटाए गए काल्पनिक धन के मुकाबले बहुत कम थे। कॉम्ब्रे के आस-पास कोई भी ऐसा समृद्ध और महत्वपूर्ण खेत नहीं था जिस पर फ्रांकोइस को शक हो कि यूलाली मेरी चाची के यहाँ आने-जाने से कमाए गए धन से बिना सोचे समझे उसे खरीद लेगी। यह भी बताना ज़रूरी है कि यूलाली ने भी फ्रांकोइस के विशाल और गुप्त धन भंडार का ठीक ऐसा ही अनुमान लगाया था। इसलिए, हर रविवार, यूलाली के जाने के बाद, फ्रांकोइस निर्दयता से उसके पतन की भविष्यवाणी करती थी। वह यूलाली से नफरत करती थी, लेकिन साथ ही उससे डरती भी थी, और इसलिए यूलाली के सामने उसे 'सौहार्दपूर्ण व्यवहार' करना पड़ता था। लेकिन दूसरे के जाने के बाद वह इसकी भरपाई कर देती; यह सच है कि वह कभी उसका नाम लेकर ज़िक्र नहीं करती, बल्कि सिबिली की भविष्यवाणियों में या उपदेशक एक्लेज़ियास्ट की तरह व्यापक कथनों में उसका संकेत देती, लेकिन इस तरह से कि उनका विशेष अर्थ मेरी चाची से छिपा न रह सके। यह देखने के लिए कि यूलाली ने सामने का दरवाज़ा बंद किया है या नहीं, वह पर्दे के किनारे से झाँकती; "चापलूसी करने वाले जानते हैं कि कैसे अपना स्वागत करवाना है और जूठे टुकड़े बटोरने हैं; लेकिन धैर्य रखो, धैर्य रखो; हमारा ईश्वर ईर्ष्यालु ईश्वर है, और एक दिन वह उनसे बदला लेगा!" वह योआश की तिरछी, व्यंग्यात्मक नज़र से कहती, केवल अथलिया के बारे में सोचते हुए जब वह कहता है कि
दुष्टों की समृद्धि तेज धारा की तरह बहती है, और जल्द ही समाप्त हो जाती है।

लेकिन उस यादगार दोपहर को, जब पादरी भी आ गए थे, और उनकी अंतहीन मुलाकातों ने मेरी चाची की सारी ताकत छीन ली थी, तो फ्रांस्वा ने यूलाली के पीछे कमरे से बाहर जाते हुए कहा: "श्रीमती ऑक्टेव, मैं आपको आराम करने के लिए छोड़ देती हूँ; आप पूरी तरह से थकी हुई

लग रही हैं।"
मेरी चाची ने उसे एक शब्द भी नहीं कहा, एक ऐसी धीमी आह भरी जो मानो उनकी आखिरी आह हो, और आँखें बंद करके वहीं लेटी रहीं, मानो मर चुकी हों। लेकिन जैसे ही फ्रांस्वा नीचे पहुँची, एक घंटी की चार घंटियाँ, पूरी ताकत से बजाई गईं, पूरे घर में गूँज उठीं, और मेरी चाची, अपने बिस्तर पर सीधी बैठी हुई, चिल्लाईं: "क्या यूलाली चली गई? यकीन मानो; मैं उससे पूछना भूल गई कि क्या श्रीमती गौपिल प्रार्थना से पहले चर्च पहुँची थीं। जल्दी से उसके पीछे भागो!"
लेकिन यूलाली से आगे निकलने में नाकाम रहने के बाद फ्रांस्वा अकेली लौट आई। मेरी चाची ने सिर हिलाते हुए कहा, "यह बहुत निराशाजनक है। यही एक ज़रूरी बात थी जो मुझे उससे पूछनी थी।"
इस तरह मेरी चाची लियोनी का जीवन हमेशा एक जैसा ही बीतता रहा, उस सौम्य एकरूपता में जिसे वह दिखावटी विनम्रता से, लेकिन गहरे स्नेह से, अपनी 'छोटी सी सैर' कहती थीं। उनका सम्मान सभी करते थे, न केवल उनके अपने घर में, जहाँ हम सभी ने किसी भी स्वस्थ जीवनशैली की सलाह देने की निरर्थकता को समझकर धीरे-धीरे उसका पालन करना सीख लिया था, बल्कि गाँव में भी, जहाँ तीन गलियाँ दूर, एक व्यापारी जिसे पैकिंग बॉक्स में कीलें ठोकनी होती थीं, वह पहले फ्रांस्वा को यह सुनिश्चित करने के लिए भेजता था कि मेरी चाची 'आराम' तो नहीं कर रही हैं—फिर भी, इसी वर्ष एक बार उनकी 'छोटी सी सैर' में बेरहमी से खलल पड़ गया। जैसे कोई फल अपने पत्तों के बीच छिपा हुआ, मनुष्य की नज़र से बचकर बढ़ता और पकता है, जब तक कि वह अपने आप गिर न जाए, एक रात रसोई की नौकरानी का प्रसव हमारे सामने आ गया। उनका दर्द असहनीय था, और कॉम्ब्रे में कोई दाई न होने के कारण, फ्रांस्वा को भोर से पहले थिबरज़ी से एक दाई लाने के लिए निकलना पड़ा। बच्ची के रोने

की वजह से मेरी चाची को आराम नहीं मिल पा रहा था, और हालाँकि दूरी कुछ भी नहीं थी, फ्रांस्वा को लौटने में बहुत देर हो गई, इसलिए उनकी कमी बहुत खल रही थी। और इसलिए, सुबह के दौरान, मेरी माँ ने मुझसे कहा: "ऊपर जाओ, और देखो कि तुम्हारी चाची को किसी चीज़ की ज़रूरत है या नहीं।"

मैं उसके दो कमरों में से पहले कमरे में गया, और दूसरे कमरे के खुले दरवाजे से मैंने अपनी चाची को करवट लेकर सोते हुए देखा। मैं उसकी साँसें सुन सकता था, जो लगभग खर्राटे जैसी लग रही थीं। मैं बस चुपके से निकलने ही वाला था कि किसी चीज़ ने, शायद मेरे प्रवेश की आवाज़ ने, उसकी नींद तोड़ दी, और उसकी नींद की रफ़्तार बदल दी, जैसा कि आजकल मोटरगाड़ियों के बारे में कहते हैं, क्योंकि उसके खर्राटों की आवाज़ एक पल के लिए रुकी और फिर धीमी हो गई; फिर वह जाग उठी, और उसने अपना चेहरा आधा घुमाया, जिसे मैं पहली बार देख पाया; उसके चेहरे पर एक तरह का डर अंकित था; स्पष्ट रूप से वह किसी भयानक सपने से बचकर निकली थी। वह जहाँ लेटी थी वहाँ से मुझे नहीं देख सकती थी, और मैं वहाँ खड़ा रहा, यह नहीं समझ पा रहा था कि मुझे आगे बढ़ना चाहिए या पीछे हट जाना चाहिए; लेकिन अचानक ही वह वास्तविकता में लौट आई, और उन डरावने सपनों की सच्चाई को समझ गई जिन्होंने उसे भयभीत कर दिया था; ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव लिए, उनके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान थी, और अपने आप से बात करने की आदत के चलते, जब वह खुद को अकेला समझती थीं, तो वह धीरे से बोलीं: "प्रभु की जय हो! यहाँ हमें रसोई की नौकरानी के बच्चे के अलावा कोई परेशान नहीं कर रहा है। और मैं सपना देख रही थी कि मेरा बेचारा ऑक्टेव फिर से जीवित हो गया है, और मुझे हर दिन सैर पर ले जाने की कोशिश कर रहा है!" उन्होंने अपनी माला की

ओर हाथ बढ़ाया, जो छोटी मेज पर पड़ी थी, लेकिन नींद फिर से उन पर हावी हो रही थी, और उन्हें माला तक पहुँचने की शक्ति नहीं दे रही थी; वह शांत और संतुष्ट होकर सो गईं, और मैं दबे पांव कमरे से बाहर निकल गया, बिना उन्हें या किसी और को यह बताए कि मैंने उस दिन से आज तक क्या देखा और सुना था।

जब मैं कहती हूँ कि इस तरह के दुर्लभ मौकों को छोड़कर, मेरी चाची की 'छोटी-मोटी दिनचर्या' में कभी कोई बदलाव नहीं आया, तो मैं उन बदलावों को शामिल नहीं कर रही हूँ जो नियमित अंतराल पर और एक ही रूप में दोहराए जाते थे, और वास्तव में उनके जीवन की एकरूपता पर एक समान पैटर्न की छाप छोड़ने से ज्यादा कुछ नहीं करते थे। उदाहरण के लिए, हर शनिवार को, क्योंकि फ्रांस्वा को दोपहर में रूसैनविले-ले-पिन के बाज़ार जाना होता था, इसलिए पूरे घर को दोपहर का भोजन एक घंटा पहले करना पड़ता था। और मेरी चाची को अपनी सामान्य आदतों के इस साप्ताहिक अपवाद की इतनी आदत हो गई थी कि वे इसे बाकी आदतों की तरह ही गंभीरता से लेती थीं। जैसा कि फ्रांस्वा कहती थीं, वे इस आदत की इतनी आदी हो गई थीं कि अगर किसी शनिवार को उन्हें दोपहर के भोजन के लिए तय समय तक इंतजार करना पड़ता, तो उन्हें उतना ही बुरा लगता जितना कि किसी आम दिन दोपहर के भोजन को शनिवार के समय पर करना पड़ता। संयोगवश, दोपहर के भोजन में इस तेजी ने हम सभी के लिए शनिवार को एक अनोखा, सौम्य और आकर्षक रूप दे दिया। जिस क्षण, आमतौर पर, भोजन के समय से पहले एक घंटा बाकी होता था, हम सभी जानते थे कि कुछ ही सेकंड में हमें एंडाइव्स (एक प्रकार का मीठा पत्ता) समय से पहले पकते हुए दिखाई देंगे, जिसके बाद एक विशेष उपहार के रूप में ऑमलेट, एक बेवजह का स्टेक मिलेगा। इस विषम शनिवार की वापसी उन छोटी-छोटी घटनाओं में से एक थी, जो

आंतरिक, स्थानीय, लगभग नागरिक थीं, जो नीरस जीवन और स्थिर सामाजिक व्यवस्था में एक प्रकार की राष्ट्रीय एकता का निर्माण करती हैं, और बातचीत, हंसी-मजाक और किस्सों का पसंदीदा विषय बन जाती हैं, जिन्हें कथावाचक अपनी इच्छानुसार बढ़ा-चढ़ाकर बता सकता है; यदि हममें से किसी के पास महाकाव्य जैसी बुद्धि होती, तो यह एक पौराणिक चक्र के लिए एक तैयार आधार प्रदान कर सकता था। भोर होते ही, कपड़े पहनने से पहले ही, बिना किसी कारण के, केवल अपनी एकजुटता को साबित करने की खुशी में, हम एक-दूसरे को हँसी-मज़ाक, सौहार्द और देशभक्ति से पुकारते, "जल्दी करो; समय बर्बाद करने का समय नहीं है; मत भूलो, आज शनिवार है!" वहीं मेरी चाची, फ्रांस्वा के साथ गपशप करते हुए और यह सोचते हुए कि आज का दिन सामान्य से भी लंबा होगा, कहतीं, "शनिवार है तो तुम उनके लिए थोड़ा सा बढ़िया बछड़े का मांस पका सकती हो।" अगर साढ़े दस बजे, कोई अनमने ढंग से घड़ी निकालकर कहता, "मुझे लगता है, दोपहर के भोजन में अभी डेढ़ घंटा बाकी है," तो बाकी सब तुरंत जवाब देने में सक्षम होने पर खुशी से झूम उठते: "अरे, क्या सोच रहे हो? क्या तुम भूल गए हो कि आज शनिवार है?" और पंद्रह मिनट बाद भी हम हँसते रहते और खुद को याद दिलाते कि चाची लियोनी को इस बेतुकी गलती के बारे में बताने के लिए ऊपर जाना है, ताकि उनका मनोरंजन हो सके। आकाश का स्वरूप ही बदल गया। दोपहर के भोजन के बाद, शनिवार का दिन होने के कारण सूर्य एक घंटा अधिक चमकता। जब कोई यह सोचकर कि हमें टहलने के लिए निकलने में देर हो गई है, कहता, "क्या, अभी तो सिर्फ़ दो बजे हैं!" सेंट-हिलैरे के चर्च के दो झटकों की तेज़ गड़गड़ाहट को महसूस करते हुए (जो आमतौर पर उस समय राजमार्गों पर किसी को दिखाई नहीं देता था, क्योंकि सड़कें दोपहर के भोजन या उसके बाद की झपकी के लिए

सुनसान होती थीं, या फिर उस चमकीले और सदा बहने वाले झरने के किनारे, जिसे मछुआरे भी छोड़ चुके थे, और जो अब अकेले ही खाली आकाश में विलीन हो गया था, जहाँ केवल कुछ मंडराते बादल ही उनका स्वागत करने के लिए बचे थे), तो पूरा परिवार एक साथ जवाब देता: "अरे, आप भूल रहे हैं; हमने एक घंटा पहले दोपहर का भोजन कर लिया था; आपको अच्छी तरह पता है कि आज शनिवार है।"

एक 'बर्बर' (हम शनिवार के विशेष रीति-रिवाजों से अपरिचित हर किसी को यही कहते थे) जो ग्यारह बजे मेरे पिता से बात करने आया था और हमें मेज पर बैठा हुआ देखकर हैरान रह गया, वह घटना फ्रांस्वा को शायद जीवन में हुई किसी भी घटना से ज़्यादा आनंद देती थी। और अगर उसे यह बात मज़ेदार लगती थी कि वह अचंभित आगंतुक पहले से यह नहीं जानता था कि शनिवार को हम एक घंटा पहले दोपहर का भोजन कर लेते हैं, तो उससे भी ज़्यादा मज़ेदार बात यह थी कि मेरे पिता (हालांकि वह उनके कट्टर पुरुषवादी रवैये से पूरी तरह सहानुभूति रखती थी) ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वह बर्बर इतनी सरल बात से अनभिज्ञ हो सकता है, और इसलिए उन्होंने हमें भोजन कक्ष में पहले से ही देखकर दूसरे की हैरानी पर कोई स्पष्टीकरण दिए बिना जवाब दिया: "देखिए, आज शनिवार है।" कहानी के इस मोड़ पर पहुँचकर, फ्रांस्वा अपनी आँखों से खुशी के आँसू पोंछने के लिए रुक जाती, और फिर, अपने आनंद को और बढ़ाने के लिए, संवाद को आगे बढ़ाती, उस आगंतुक के लिए एक और जवाब गढ़ती जिसे 'शनिवार' शब्द का कोई अर्थ समझ नहीं आया था। और इन अतिरिक्त वाक्यों पर आपत्ति जताने के बजाय, हमें लगता कि कहानी अभी पूरी नहीं हुई है, और हम उसे यह कहकर प्रोत्साहित करते: "अरे, लेकिन उसने कुछ और भी कहा होगा। जब तुमने पहली बार यह कहानी सुनाई थी, तब तो इससे भी कुछ ज़्यादा था।"

मेरी परदादी खुद अपना काम छोड़कर, अपना सिर ऊपर उठाकर चश्मे के ऊपर से हमारी ओर देखती थीं।

उस दिन की एक और खास बात यह थी कि मई के महीने में हम शनिवार शाम को खाना खाने के बाद 'महीना ऑफ मैरी' की प्रार्थना सभाओं में जाया करते थे।

वहाँ हमारी मुलाक़ात एम. विंटेउइल से होने की संभावना थी, जो "युवाओं की दयनीय अव्यवस्था, जिसे आजकल बढ़ावा दिया जा रहा है" के बारे में बहुत सख्त विचार रखते थे। इसलिए, मेरी माँ पहले यह देखतीं कि मेरी वेशभूषा में कोई गड़बड़ी न हो, और फिर हम चर्च के लिए निकल पड़ते। मुझे याद है कि 'महीना ऑफ़ मैरी' की इन्हीं प्रार्थना सभाओं में मुझे पहली बार नागफनी के फूलों से प्रेम हो गया था। नागफनी केवल चर्च में ही नहीं होती थी, क्योंकि वहाँ, पवित्र भूमि होने के कारण, हम सभी को प्रवेश का अधिकार था; बल्कि, वेदी पर ही सजी हुई, उन अनुष्ठानों से अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई, जिनके उत्सव में वह भाग ले रही थी, वह मोमबत्तियों और पवित्र पात्रों के बीच अपनी शाखाओं की पंक्तियों को क्षैतिज रूप से एक दूसरे से बांधे हुए, एक सख्त, उत्सवपूर्ण सजावट में फैला देती थी; और गहरे पत्तों की लहरदार आकृति से वे और भी सुंदर बन जाती थीं, जिन पर दुल्हन के लबादे की तरह, चमकदार सफेदी वाली कलियों के छोटे-छोटे गुच्छे बहुतायत में बिखरे होते थे। हालाँकि मैं उन्हें केवल अपनी उंगलियों के बीच से देखने की हिम्मत कर रहा था, फिर भी मैं महसूस कर सकता था कि औपचारिक संरचना सजीव वस्तुओं से बनी थी, और यह स्वयं प्रकृति ही थी जिसने पत्तियों के आकार को संवारकर और उन बर्फीली कलियों के मुकुटनुमा आभूषण को जोड़कर, सजावट को एक साथ सार्वजनिक उत्सव और एक गंभीर रहस्य के योग्य बनाया था। वेदी पर थोड़ा ऊपर, एक फूल लापरवाही से खिल उठा था, मानो अंतिम,

लगभग वाष्पशील सजावट की तरह, अपने पतले, रेशमी परागकोषों के गुच्छे को इतनी बेफिक्री से थामे हुए था, जिसने फूल को ही एक सफेद धुंध में ढक लिया था। जब मैं अपनी आँखों से उनका पीछा कर रहा था, अपने भीतर कहीं न कहीं उनके खिलने की क्रिया की नकल करने की कोशिश कर रहा था, तो मैंने कल्पना की कि यह सफेद पोशाक पहने एक युवा लड़की द्वारा सिर का एक तेज और विचारहीन आंदोलन है, जिसकी सिकुड़ी हुई पुतलियों से मोहक निगाहें पड़ रही हैं, जो लापरवाह और जीवंत है।

एम. विंटेइल अपनी बेटी के साथ आए और हमारे पास बैठ गए। वे एक अच्छे परिवार से थे और एक समय मेरी नानी की बहनों के संगीत शिक्षक रह चुके थे; इसलिए जब पत्नी के निधन और कुछ संपत्ति विरासत में मिलने के बाद वे कॉम्ब्रे के पड़ोस में रहने लगे, तो हम अक्सर उन्हें अपने घर बुलाते थे। लेकिन अपनी अत्यधिक संकोचशीलता के कारण उन्होंने आना छोड़ दिया था, ताकि उन्हें स्वान से न मिलना पड़े, जिसने उनके अनुसार "आजकल के चलन के अनुसार एक बेहद अनुपयुक्त विवाह" किया था। मेरी माँ ने जब सुना कि वे 'संगीत रचना' करते हैं, तो उन्होंने प्रशंसा के तौर पर उनसे कहा कि जब वे उनसे मिलने आएँ, तो वे उन्हें अपनी कोई रचना सुनाएँ। एम. विंटेइल इससे बेहतर कुछ नहीं चाहते थे, लेकिन वे दूसरों के प्रति इतनी विनम्रता और सम्मान रखते थे कि हमेशा खुद को उनकी जगह पर रखते थे, कि उन्हें डर था कि अगर वे अपनी इच्छाओं को पूरा करते या उन्हें जरा भी शक होने देते, तो वे उन्हें ऊब देंगे या अहंकारी प्रतीत होंगे। जिस दिन मेरे माता-पिता उनसे मिलने गए थे, मैं उनके साथ गया था, लेकिन उन्होंने मुझे बाहर ही रहने दिया था। एम. विंटेइल का घर, मोंटजोवेन, झाड़ियों से ढकी एक खड़ी पहाड़ी को काटकर बनाई गई जगह पर बना था, जिसके बीच मैं छिप गया था। इस

तरह मैं उनके ड्राइंग रूम के ठीक सामने, ऊपर की मंजिल पर, खिड़की से कुछ ही फीट की दूरी पर पहुँच गया था। जब एक नौकर ने उन्हें मेरे माता-पिता के आने की सूचना दी, तो मैंने देखा कि एम. विंटेइल दौड़कर पियानो के पास गए और उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए संगीत की एक शीट बिछा दी। लेकिन जैसे ही वे कमरे में दाखिल हुए, उन्होंने उसे झट से छीन लिया और एक कोने में छिपा दिया। उन्हें शायद डर था कि कहीं वे यह न सोच लें कि उन्हें देखकर खुशी सिर्फ इसलिए हुई है क्योंकि इससे उन्हें अपनी कुछ रचनाएँ सुनाने का मौका मिल जाएगा। और जब भी मेरी माँ अपनी यात्रा के दौरान उनके पियानो बजाने के विषय पर लौटतीं, तो वह जल्दी से विरोध करते हुए कहते: "मुझे समझ नहीं आता कि इसे पियानो पर किसने रखा है; यह इसके लिए बिल्कुल भी उचित स्थान नहीं है," और बातचीत को अन्य विषयों की ओर मोड़ देते, क्योंकि वे विषय उनके लिए कम रुचिकर थे।

उनकी एकमात्र चाहत उनकी बेटी थी, और वह, अपने कुछ हद तक लड़के जैसे दिखने के बावजूद, इतनी स्वस्थ और तंदुरुस्त थीं कि उनके पिता द्वारा उनकी सेहत के लिए बरती जाने वाली सावधानियों को देखकर मुस्कान रोकना मुश्किल हो जाता था, जैसे कि उनके कंधों पर लपेटने के लिए हमेशा अतिरिक्त शॉल तैयार रहते थे। मेरी दादी ने हमारा ध्यान उस कोमल, नाजुक, लगभग शर्मीले भाव की ओर दिलाया था जो अक्सर इस शांत स्वभाव वाली बच्ची के चेहरे पर झलक जाता था, जो झाइयों से भरा हुआ था। जब वह बोलतीं, तो वह तुरंत अपने शब्दों को उसी अर्थ में लेतीं जिस अर्थ में उनके श्रोताओं ने उन्हें समझा होगा, वह गलतफहमी की संभावना से चिंतित हो जातीं, और कोई भी स्पष्ट रूप से, मानो किसी पारदर्शी सतह पर, उनके 'नेक स्वभाव' के मर्दाना चेहरे के नीचे, आँसुओं में डूबी एक युवती के कोमल भावों को देख सकता था।

जब मैं गिरजाघर से निकलने से पहले वेदी के सामने घुटने टेककर प्रणाम कर रहा था, तभी अचानक उठते ही मुझे लगा कि बबूल के फूलों से बादाम की मीठी-कड़वी खुशबू मेरी ओर आ रही है। फिर मैंने देखा कि फूलों पर मलाई जैसे रंग के छोटे-छोटे धब्बे थे, जिनमें शायद यह खुशबू छिपी हुई है, जैसे बादाम केक का स्वाद उसके जले हुए हिस्सों में या माइल विंटेइल के गालों की मिठास उनके धब्बों के नीचे छिपी होती है। बबूल की घनी, स्थिर खामोशी के बावजूद, खुशबू के ये झोंके मुझ तक एक तीव्र जीवंतता की गुनगुनाहट की तरह पहुंचे, जिससे पूरी वेदी सड़क के किनारे की उस झाड़ी की तरह कांप रही थी, जिसे जीवित एंटीना खोज रहे हों। कुछ लगभग लाल रंग के पुंकेसरों को देखकर मुझे इसकी याद आई, जिनमें वसंत ऋतु की उग्रता, डंक मारने वाले कीड़ों की जलन पैदा करने वाली शक्ति अब फूलों में बदल गई थी।

चर्च के बाहर, बरामदे में हम एम. विंटेइल से कुछ देर बातें करते। चौक में लड़के आपस में झगड़ते रहते, और वे बीच-बचाव करते, छोटों का पक्ष लेते और बड़ों को उपदेश देते। अगर उनकी बेटी अपनी मीठी, मीठी आवाज़ में कहती कि हमें देखकर उसे कितनी खुशी हुई, तो तुरंत ऐसा लगता मानो उसके भीतर छिपी कोई बड़ी और संवेदनशील बहन इस नासमझ, बचकानी बात पर शरमा गई हो, जिससे शायद हमें लगा हो कि वह घर आने का न्योता मांग रही है। तब उसके पिता उसके कंधों पर एक चादर डाल देते, वे दोनों एक छोटी सी गाड़ी में बैठ जाते जिसे वह खुद चलाती थी, और वे दोनों मोंटजोवेन में अपने घर चले जाते। अगले दिन रविवार होने के कारण, सुबह जल्दी उठकर प्रार्थना करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। अगर रात चांदनी से भरी और सुहावनी होती, तो मेरे पिता, अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा की लालसा में, हमें तुरंत घर ले जाने के बजाय, कलवरी के चारों ओर लंबी सैर पर ले जाते। मेरी माँ को दिशा का

बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था, यहाँ तक कि उन्हें यह भी नहीं पता था कि वे किस सड़क पर हैं, इसलिए वे इसे पिता की रणनीतिक प्रतिभा की जीत मानते थे। कभी-कभी हम पुल तक चले जाते, जो रेलवे स्टेशन पर अपने लंबे पत्थर के खंभों पर खड़ा होता था, और मेरे लिए सभ्यता की अंतिम सीमाओं से परे निर्वासन की सारी दयनीयता का प्रतीक था। क्योंकि हर साल, जब हम पेरिस से आते थे, तो हमें चेतावनी दी जाती थी कि कॉम्ब्रे पहुँचने पर विशेष सावधानी बरतें, स्टेशन न चूकें, ट्रेन रुकने से पहले तैयार रहें, क्योंकि ट्रेन दो मिनट में फिर से चलने लगेगी और पुल पार करके ईसाई जगत से बाहर निकल जाएगी, जिसकी कॉम्ब्रे मेरे लिए अंतिम सीमा थी। हम बुलेवार्ड डे ला गारे से लौटेंगे, जहाँ कस्बे के सबसे खूबसूरत विला थे। उनके बगीचों में चाँदनी, ह्यूबर्ट रॉबर्ट की कला की नकल करते हुए, सफेद संगमरमर की टूटी हुई सीढ़ियों, पानी के फव्वारों और मोहक ढंग से खुले दरवाजों पर बिखरी हुई थी। उसकी कड़ियों ने टेलीग्राफ कार्यालय को मिटा दिया था। उसका केवल एक आधा टूटा हुआ स्तंभ ही बचा था, जो एक ऐसे खंडहर की सुंदरता को संजोए हुए था जो हमेशा के लिए कायम रहता है। अब तक मैं अपने थके हुए अंगों को घसीट रहा होता और नींद से बेहाल होता; नींबू के पेड़ों की सुखदायक सुगंध एक ऐसी सांत्वना प्रतीत होती जो मुझे केवल अत्यधिक कष्ट और थकावट की कीमत पर ही मिल सकती थी, और यह प्रयास के लायक नहीं थी। दूर-दूर स्थित फाटकों से, सन्नाटे में हमारे कदमों की आहट से जागकर, पहरेदार कुत्ते एक दूसरे के विपरीत भौंकना शुरू कर देते थे, जैसा कि मैं आज भी कभी-कभी शाम को उन्हें भौंकते हुए सुनता हूँ, और यह उन्हीं की देखरेख में है (जब इसकी जगह पर कॉम्ब्रे के सार्वजनिक उद्यान बनाए गए थे) कि बुलेवार्ड डे ला गारे ने शरण ली होगी, क्योंकि मैं जहाँ भी रहूँ, जैसे ही वे बारी-बारी से चुनौती और स्वीकृति देना शुरू करते

हैं, मैं इसे फिर से अपने सभी चूने के पेड़ों और चाँदनी में चमकते हुए फुटपाथ के साथ देख सकता हूँ।

अचानक मेरे पिता हमें रोक देते और मेरी माँ से पूछते, "हम कहाँ हैं?" पैदल चलने से पूरी तरह थक चुकी, लेकिन अपने पति पर गर्व करती हुई, वह प्यार से कहती कि उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है। वह कंधे उचकाते और हँसते। और फिर, मानो चाबी के साथ, उनकी जैकेट की जेब से फिसलकर, वह हमें हमारे बगीचे का पिछला दरवाज़ा दिखाते, जो हमारी आँखों के सामने था। यह दरवाज़ा सेंट-एस्पिरिट गली के परिचित कोने के साथ मिलकर हमारा इंतज़ार कर रहा था, अनजान रास्तों पर हमारी यात्रा के अंत में हमारा स्वागत कर रहा था। मेरी माँ प्रशंसा से बुदबुदाती, "आप सचमुच अद्भुत हैं!" और उस पल से मुझे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ाना पड़ता था; उस बगीचे में, जहाँ इतने लंबे समय से मेरे कार्यों को मेरी इच्छाशक्ति के किसी नियंत्रण या ध्यान की आवश्यकता नहीं थी, ज़मीन मेरे पैरों तले खिसकती चली आती थी। रिवाज़ मुझे अपनी बाहों में उठाती, मुझे मेरे बिस्तर तक ले जाती और मुझे वहाँ एक छोटे बच्चे की तरह लिटा देती।

हालांकि शनिवार, एक घंटा पहले शुरू होने और फ्रांस्वा की सेवाओं से वंचित होने के कारण, मेरी चाची के लिए अन्य दिनों की तुलना में धीमी गति से बीतता था, फिर भी, जैसे ही वह बीतता और नया सप्ताह शुरू होता, वह बेसब्री से उसके लौटने का इंतजार करतीं, मानो वह उस नवीनता और मनोरंजन का प्रतीक हो जिसे उनका दुर्बल और अस्वस्थ शरीर अभी भी सहन कर सकता था। हालांकि, इसका यह अर्थ नहीं था कि वह कभी-कभी और भी अधिक बदलाव की लालसा नहीं करती थीं, कि वह उन असामान्य क्षणों से नहीं गुजरती थीं जिनमें व्यक्ति अपने पास जो है उससे कुछ अलग पाने के लिए तरसता है, जब ऊर्जा या कल्पना

की कमी के कारण अपने भीतर कोई प्रेरक शक्ति उत्पन्न करने में असमर्थ लोग, घड़ी की टिक-टिक या डाकिया के दस्तक देते ही, समाचार (भले ही वह बुरी खबर हो), किसी भावना (यहां तक कि शोक की भी) के लिए अपनी उत्सुकता में चिल्लाते हैं; जब समृद्धि द्वारा खामोश कर दी गई हृदय की धड़कनें, एक किनारे रखे वीणा की तरह, किसी के हाथों से, यहां तक कि एक क्रूर हाथ से भी, फिर से छेड़े जाने और बजने के लिए तड़पती हैं, भले ही इससे वे टूट जाएं; जब इच्छाशक्ति, जिसने बड़ी मुश्किल से अपने आवेग को वश में किया है, अपनी अनियंत्रित इच्छाओं और परिणामस्वरूप होने वाले कष्टों के प्रति समर्पण के अधिकार को त्याग दिया है, परिस्थितियों के हाथों में अपनी बागडोर सौंपने को बेताब हो जाती है, चाहे वे परिस्थितियाँ कितनी भी बाध्यकारी और शायद क्रूर क्यों न हों। बेशक, मेरी चाची की शक्ति, जो थोड़ी सी भी मेहनत से पूरी तरह समाप्त हो जाती थी, उनकी विश्राम की ऊर्जा में बूंद-बूंद करके ही लौटती थी, इसलिए यह भंडार बहुत धीरे-धीरे भरता था, और महीनों बीत जाते थे उस अतिरिक्त ऊर्जा तक पहुँचने में, जिसे अन्य लोग अपनी दैनिक गतिविधियों में खर्च कर देते हैं, लेकिन जिसके बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं थी—और वे कभी यह तय नहीं कर पाईं कि इसका उपयोग कैसे करें। और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि तब—ठीक वैसे ही जैसे बदलाव के तौर पर आलू को बेचेमेल सॉस के साथ खाने की इच्छा, अंततः उन मसले हुए आलूओं के दैनिक पुनः प्रकट होने से मिलने वाले आनंद से उत्पन्न होती, जिनसे वह कभी 'ऊबती' नहीं थी—वह उन नीरस दिनों के संचय से (जिन पर वह बहुत निर्भर थी) किसी घरेलू प्रलय की तीव्र अपेक्षा उत्पन्न करती, जो तात्कालिक रूप से घटित होती, लेकिन इतनी हिंसक होती कि उसे उन परिवर्तनों में से एक को हमेशा के लिए लागू करने के लिए विवश कर देती, जिनके बारे में वह जानती थी

कि वे उसके स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होंगे, लेकिन जिनके बारे में वह किसी ऐसी प्रेरणा के बिना कभी निर्णय नहीं ले सकती थी। वह वास्तव में हमसे बहुत प्यार करती थी; वह हमारी असामयिक मृत्यु पर लंबे समय तक रोने का आनंद लेती; जब वह 'स्वस्थ' महसूस कर रही थी और उसे पसीना भी नहीं आ रहा था, तब यह खबर आई कि घर आग से नष्ट हो रहा है, जिसमें हम सभी पहले ही मर चुके थे, एक ऐसी आग जो कुछ ही समय में सब कुछ तबाह कर देगी, लेकिन जिससे उसके पास बिना जल्दबाजी किए बचने के लिए अभी भी पर्याप्त समय होगा, बशर्ते कि वह तुरंत अपने बिस्तर से उठ जाए। यह संभावना उसके सपनों में अक्सर आती रही होगी, क्योंकि यह दो छोटे लाभों के साथ जुड़ी हुई थी: एक तो उसे वर्षों के शोक में हमारे प्रति अपने स्नेह का पूरा स्वाद चखने का मौका मिलेगा, और दूसरा जब वह हमारे अंतिम संस्कार में भाग लेने के लिए निकलेगी, तो पूरे गाँव में सन्नाटा छा जाएगा, टूटी हुई लेकिन साहसी, मरणासन्न लेकिन दृढ़, और सबसे महत्वपूर्ण और अनमोल वरदान यह था कि उसे सही समय पर, बिना समय गंवाए, बिना किसी हिचकिचाहट के, अपने मनमोहक मिरौग्रेन फार्म में जाकर गर्मी बिताने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, जहाँ एक झरना था। चूंकि इस तरह की कोई घटना पहले कभी घटी नहीं थी, हालांकि वास्तव में उसने अकेले में धैर्य के अपने अंतहीन खेलों में लीन रहते हुए अक्सर इस तरह के दांव-पेच की सफलता पर विचार किया होगा (और हालांकि इसके अहसास के पहले ही क्षण से, उन छोटी-छोटी अनपेक्षित घटनाओं में से पहली घटना से, विपत्तिपूर्ण समाचार के पहले शब्द से, जिसके स्वर कभी स्मृति से मिटाए नहीं जा सकते, हर वह चीज जो वास्तविक, शारीरिक मृत्यु की छाप लिए हुए है, जो इसकी संभावना के तार्किक अमूर्तता से इतनी भयानक रूप से भिन्न है, वह निराशा में डूब गई होगी), वह समय-समय पर अपने जीवन में रुचि

जोड़ने के लिए, अन्य छोटी-मोटी आपदाओं की कल्पना करने लगती थी, जिनका वह जुनून के साथ पीछा करती थी। वह खुद को इस अचानक संदेह से बहलाती थी कि फ्रांस्वा ने उसे लूटा है, कि उसने निश्चित होने के लिए एक जाल बिछाया है, और अपने धोखेबाज को रंगे हाथों पकड़ लिया है; और अपनी आदत के अनुसार, जब वह अकेले ही ताश का खेल खेलती, तो अपने और अपने प्रतिद्वंद्वी के पत्ते एक साथ खेलती। वह पहले फ्रांस्वा की अटपटी माफी को हकलाते हुए दोहराती, और फिर इतने उग्र आक्रोश से जवाब देती कि हममें से कोई भी अगर उस समय वहाँ पहुँच जाता, तो उसे पसीने से तर, आँखों में धधकती हुई, नकली बाल बिखरे हुए और माथे के गंजेपन को उजागर करते हुए पाता। फ्रांस्वा अक्सर अगले कमरे से अपने ऊपर किए गए इन तीखे व्यंग्यों को सुनती होगी, जिन्हें केवल शब्दों में व्यक्त करने से मेरी चाची की भावनाओं को पर्याप्त राहत नहीं मिलती, अगर उन्हें केवल अमूर्त रूप में ही रहने दिया जाता, बिना उस सार और वास्तविकता के जो वह उन्हें आधे-ऊँचे स्वर में बुदबुदाकर उनमें जोड़ती थी। हालाँकि, कभी-कभी ये दिखावटी नाटक भी मेरी चाची को संतुष्ट नहीं करते थे; उन्हें अपना काम मंच पर देखना ही होता था। और इस तरह, एक रविवार को, जब सारे दरवाजे रहस्यमय तरीके से बंद होते, वह यूलाली से फ्रांस्वा की ईमानदारी पर संदेह और उससे छुटकारा पाने के अपने दृढ़ संकल्प के बारे में बात करती, और किसी और दिन वह फ्रांस्वा से यूलाली की बेवफाई के बारे में अपने संदेह बताती, जिसके लिए वह जल्द ही हमेशा के लिए दरवाजा बंद कर देती। कुछ और दिनों में, अपनी इस नई विश्वासपात्र से तंग आकर, वह फिर से उस गद्दार के साथ गहरी दोस्ती कर लेती, और अगले नाटक से पहले, दोनों एक बार फिर अपनी भूमिकाएँ बदल लेतीं। लेकिन यूलाली के मन में कभी-कभार पैदा होने वाले संदेह तिनके की आग से ज्यादा कुछ नहीं

थे, जो ईंधन की कमी के कारण जल्द ही बुझ जाते, क्योंकि यूलाली उसके साथ घर में नहीं रहती थी। मामला बिल्कुल अलग था जब शक फ्रांस्वा पर था, जिसकी मौजूदगी का मेरी चाची को हमेशा डर सताता रहता था। ठंड लगने के डर से, अगर वह बिस्तर से उठती तो कभी नीचे रसोई में जाने की हिम्मत नहीं करती, ताकि खुद देख सके कि उसके शक में कोई सच्चाई है या नहीं। धीरे-धीरे, उसका मन बस यही सोचता रहता था कि दिन के हर पल फ्रांस्वा क्या कर रही है, क्या छुपा रही है। वह फ्रांस्वा के चेहरे की हर छोटी से छोटी हरकत को पकड़ लेती, उसकी बातों में कुछ विरोधाभास देखती, कोई ऐसी इच्छा जिसे वह छुपाने की कोशिश कर रही होती। और वह एक ही शब्द से उसे बेनकाब कर देती, जिससे फ्रांस्वा का चेहरा पीला पड़ जाता, और मेरी चाची को अपनी उस बेचारी नौकरानी के दिल में वह शब्द चुभोकर एक क्रूर संतुष्टि मिलती थी। और अगले ही रविवार को यूलाली के खुलासे ने—ठीक वैसे ही जैसे अचानक कोई ऐसी खोज हो जाए जिससे किसी अनपेक्षित क्षेत्र में नए विज्ञान का विकास हो जाए, जो अब तक केवल पुराने रास्तों पर ही चल रहा था—मेरी चाची को यह साबित कर दिया कि उनके सबसे बुरे संदेह भी भयावह सच्चाई से बहुत दूर थे। "लेकिन फ्रांस्वा को तो यह पता होना चाहिए," यूलाली ने कहा, "अब जब आपने उसे गाड़ी दे दी है।"

"अब जब मैंने उसे एक गाड़ी दे दी है!" मेरी चाची ने हांफते हुए कहा।

"अरे, मुझे तो पता नहीं था; मैंने तो बस ऐसा सोचा था; मैंने कल उसे अपनी खुली गाड़ी में, आर्टाबन की तरह गर्व से, रूसैनविले बाजार जाते हुए देखा था। मुझे लगा कि यह उसे श्रीमती ऑक्टेव ने ही दी होगी।"

धीरे-धीरे, फ्रांकोइस और मेरी चाची, शिकारी और शिकार की तरह, एक-दूसरे की योजनाओं को नाकाम करने की कोशिश में लगी रहती थीं। मेरी माँ को डर था कि कहीं फ्रांकोइस को मेरी चाची से सचमुच नफरत न हो

जाए, जो उसे परेशान करने के लिए हर संभव कोशिश कर रही थीं। चाहे जो भी हो, फ्रांकोइस मेरी चाची के हर शब्द और हावभाव पर बहुत ध्यान देने लगी थी। जब उसे उनसे कुछ माँगना होता, तो वह पहले काफी देर तक सोचती, कि शुरुआत कैसे करें। और जब वह अपनी बात कह देती, तो वह चुपके से मेरी चाची को देखती, उनके चेहरे के भाव से यह समझने की कोशिश करती कि वे क्या सोच रही हैं और क्या जवाब देंगी। और इस तरह—जबकि सत्रहवीं शताब्दी के संस्मरणों को पढ़ने वाला एक कलाकार, जो महान लुई के करीब आना चाहता था, यह मानता कि वह उस दिशा में प्रगति कर रहा है जब वह एक वंशावली बनाता है जो किसी ऐतिहासिक परिवार से उसके अपने वंश का पता लगाती है, या जब वह यूरोप के किसी शासक सम्राट के साथ पत्राचार करता है, और इस प्रकार वह केवल बाहरी रूपों की एक सटीक और इसलिए निर्जीव प्रतिलिपि बनाकर समानता स्थापित करने की कोशिश में अपनी गलती को अनदेखा कर देता है—एक छोटे से ग्रामीण कस्बे में रहने वाली एक अधेड़ उम्र की महिला, केवल अपनी अनियंत्रित विलक्षणताओं और अपने जीवन की पूर्ण निष्क्रियता से उत्पन्न शरारत की भावना का पूरी तरह से पालन करके, लुई XIV के बारे में कभी सोचे बिना, अपने दैनिक जीवन के सबसे तुच्छ कामों, सुबह की वेशभूषा, दोपहर के भोजन, दोपहर की झपकी को, उनकी निरंकुश विलक्षणता के कारण, उस रुचि का कुछ अंश ग्रहण करते हुए देख सकती है जो सेंट-साइमन जिसे कहते थे उसमें पाई जाती थी। वर्साय में जीवन की 'व्यवस्था'; और वह खुद को यह समझाने में भी सक्षम थी कि उसकी चुप्पी, उसके चेहरे पर थोड़ी सी प्रसन्नता या अहंकार की झलक, फ्रांस्वा को एक ऐसी मानसिक टिप्पणी के लिए सामग्री प्रदान करेगी जो जुनून और आतंक से भरी होगी, ठीक वैसे ही जैसे राजा की चुप्पी, प्रसन्नता या अहंकार तब होता था जब कोई दरबारी,

या यहां तक कि उसके सबसे बड़े रईस, वर्साय में एक रास्ते के मोड़ पर उसे एक याचिका प्रस्तुत करते थे।

एक रविवार को, जब मेरी चाची के घर पर क्यूरे और यूलाली दोनों एक साथ आए थे, और उसके बाद उन्हें आराम करने के लिए अकेला छोड़ दिया गया था, तो पूरा परिवार उन्हें शुभ रात्रि कहने के लिए ऊपर गया, और माँ ने उस दुर्भाग्यपूर्ण संयोग पर उनके प्रति संवेदना व्यक्त करने का साहस किया जिसके कारण हमेशा दोनों आगंतुक एक ही समय पर उनके दरवाजे पर आ जाते थे।

"मैंने सुना है कि आज फिर कुछ गड़बड़ हो गई, लियोनी," उसने नरमी से कहा, "तुम्हारे सारे दोस्त एक साथ यहाँ आ गए हैं।"

और मेरी बड़ी चाची ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "बहुत सारी अच्छी बातें..." क्योंकि अपनी बेटी की बीमारी के बाद से, वह खुद को उसका कर्तव्य मानती थीं कि वह हमेशा उसका ध्यान चीजों के सकारात्मक पहलू की ओर आकर्षित करके उसे यथासंभव खुश रखें। लेकिन मेरे पिताजी बोलने लगे थे।

उन्होंने कहा, "पूरे परिवार के यहाँ एक साथ होने का फायदा उठाकर मैं आप सबको एक कहानी सुनाना चाहता हूँ, ताकि मुझे हर किसी को अलग-अलग कहानी सुनानी न पड़े। मुझे लगता है कि हम एम. लेग्रैंडिन की नज़र में अच्छे नहीं हैं; उन्होंने आज सुबह मुझसे 'आप कैसे हैं' भी नहीं कहा होगा।"

मैंने अपने पिता की कहानी का अंत सुनने का इंतजार नहीं किया, क्योंकि प्रार्थना सभा के बाद जब हम एम. लेग्रैंडिन के पास से गुजरे थे, तब मैं खुद उनके साथ था; इसके बजाय, मैं नीचे रसोई में गया और अपने रात के खाने का मेनू मांगा, जिसमें मुझे प्रतिदिन अखबार की खबरों की तरह नई दिलचस्पी होती थी और यह मुझे आने वाले उत्सव के कार्यक्रम की

तरह उत्साहित करता था।

जब हम चर्च से लौट रहे थे, तो एम. लेग्रैंडिन हमारे पास से गुज़रे, वे पड़ोस में एक ग्रामीण घर की मालकिन, जिन्हें हम केवल देखकर ही जानते थे, के साथ चल रहे थे। मेरे पिता ने चलते-चलते बिना ही उन्हें दोस्ताना और संयमित ढंग से अभिवादन किया; एम. लेग्रैंडिन ने मुश्किल से ही हमारी इस शिष्टाचार का जवाब दिया, और फिर आश्चर्य के भाव से, मानो उन्होंने हमें पहचाना ही न हो, और उस दूर की नज़र से, जो उन लोगों की विशेषता होती है जो मिलनसार नहीं बनना चाहते, और जिनकी आँखों की गहराई अचानक पीछे हट जाती है, मानो उन्होंने आपको एक अंतहीन सीधी सड़क के दूर छोर पर, इतनी दूरी से देखा हो कि वे आपके गुड़िया जैसे आकार के अनुपात में लगभग अगोचर रूप से सिर हिलाकर ही संतुष्ट हो जाते हैं।

अब, लेग्रैंडिन के साथ चल रही महिला सदाचार की प्रतीक थी, जानी-मानी और बेहद सम्मानित; यह तो संभव ही नहीं था कि वह प्रेम प्रसंग के लिए निकला हो और पकड़े जाने पर नाराज़ हो; और मेरे पिता ने खुद से पूछा कि आखिर वह हमारे मित्र को कैसे नाराज़ कर सकता था।

उन्होंने कहा, "मुझे और भी दुख होगा अगर मुझे लगे कि वह हमसे नाराज़ थे, क्योंकि उन सभी लोगों के बीच, जो रविवार के कपड़ों में थे, उनमें कुछ खास बात थी - उनका छोटा सा कटा हुआ कोट और मुलायम टाई, जो उन्हें बिल्कुल भी सजे-धजे नहीं दिखाते थे, बल्कि उन्हें वास्तव में सरल दिखाते थे; उनमें एक मासूमियत का भाव था, जो सचमुच आकर्षक था।"

लेकिन परिवार की सर्वसम्मति से यह राय बनी कि मेरे पिता ने यह सब कल्पना की थी, या लेग्रैंडिन उस समय किसी और बात में मग्न थे। खैर, मेरे पिता का डर अगली शाम तक दूर हो गया। लंबी सैर से लौटते समय

हमने पोंट-विएक्स के पास खुद लेग्रैंडिन को देखा, जो छुट्टियों के कारण कुछ और दिन कॉम्ब्रे में बिता रहे थे। वे हाथ बढ़ाते हुए हमारे पास आए और मुझसे पूछा, "क्या आप जानते हैं, पुस्तक प्रेमी, पॉल डेसजार्डिन्स की इस रचना को?"

अब तो जंगल पूरी तरह से काले हो गए हैं, लेकिन आसमान अभी भी नीला है।

क्या यह ऐसे क्षण का बेहतरीन चित्रण नहीं है? शायद आपने पॉल डेसजार्डिन्स को कभी नहीं पढ़ा होगा। उन्हें पढ़ो, मेरे बच्चे, उन्हें पढ़ो; आजकल, जैसा कि मुझे बताया गया है, वे एक उपदेशक साधु बन गए हैं, लेकिन उनके हाथों में पहले जलरंग की तरह मनमोहक कला थी।

अब तो जंगल पूरी तरह से काले हो गए हैं, लेकिन आसमान अभी भी नीला है।

मेरे युवा मित्र, तुम हमेशा अपने सिर के ऊपर नीला आकाश देखते रहो; और फिर, जब वह समय आएगा, जो अब मेरे लिए आ रहा है, जब जंगल घने अंधेरे में डूब जाएंगे, जब रात तेजी से छाने लगेगी, तब तुम भी मेरी तरह आकाश की ओर देखकर खुद को सांत्वना दे पाओगे।" उसने अपनी जेब से एक सिगरेट निकाली और काफी देर तक क्षितिज पर टकटकी लगाए खड़ा रहा। "अलविदा, दोस्तों!" उसने अचानक कहा और हमें छोड़कर चला गया।

जिस समय मैं आमतौर पर रात के खाने में क्या बना है यह जानने के लिए नीचे जाता था, तब तक उसकी तैयारी शुरू हो चुकी होती थी, और फ्रांस्वा, एक कर्नल जिसके अधीनस्थ प्रकृति की सारी शक्तियों से लैस थे, परियों की कहानियों की तरह जहाँ दैत्य रसोई के नौकर के रूप में काम करते हैं, कोयलों को हिला रही होती, आलू को भाप में पका रही होती, और सही समय पर, आग पर उन पाक कला की उत्कृष्ट कृतियों

को अंतिम रूप दे रही होतीं, जिन्हें पहले बर्तनों की विशाल श्रृंखला में तैयार किया गया होता था, जो कुम्हार की कला की विजय थीं, जिनमें टब, बॉयलर, कड़ाही और मछली के बर्तनों से लेकर शिकार के लिए जार, पेस्ट्री के लिए सांचे और क्रीम के लिए छोटे पैनकिन तक शामिल थे, और हर आकार और प्रकार के बर्तनों और कड़ाही का पूरा संग्रह शामिल था। मैं मेज पर रुक जाता, जहाँ रसोई की नौकरानी ने उन्हें छीला होता, मटर की पलटन का निरीक्षण करने के लिए, पंक्तियों में सजी और क्रमांकित, छोटे हरे कंचों की तरह, खेल के लिए तैयार; लेकिन जिस चीज़ ने मुझे सबसे ज़्यादा मोहित किया, वह थी शतावरी, जो गहरे नीले और गुलाबी रंग से रंगी हुई थी और उनके ऊपरी भाग से शुरू होकर, बैंगनी और नीले रंग की बारीक बिंदियों से युक्त, सूक्ष्म परिवर्तनों की एक श्रृंखला से गुज़रते हुए, उनके सफेद पैरों तक जाती थी, जो अभी भी उनकी क्यारी की मिट्टी से थोड़े सने हुए थे: एक इंद्रधनुषी सुंदरता जो इस दुनिया की नहीं थी। मुझे लगा कि ये दिव्य रंग उन अद्भुत जीवों की उपस्थिति का संकेत दे रहे हैं जिन्होंने वनस्पति रूप धारण करने की कृपा की थी, जिन्होंने अपने ठोस और खाने योग्य मांस को ढकने वाले इस वेश के माध्यम से मुझे भोर की इस चमक में, इन इंद्रधनुषों के संकेतों में, इन नीले संध्याकालीन रंगों में, उस अनमोल गुण को पहचानने की अनुमति दी, जिसे मैं फिर से पहचानूंगा जब, उनके भोजन के बाद पूरी रात, वे (शेक्सपियर के 'ड्रीम' की परियों की तरह अपने मज़ाक में गीतात्मक और अशिष्ट) मेरे साधारण कमरे को सुगंधित इत्र के एक मंडप में बदल रहे थे। बेचारी गियोटो की दानशीलता, जैसा कि स्वान ने उसे नाम दिया था, जिसे फ्रांस्वा ने मेज के लिए उन्हें तैयार करने का काम सौंपा था, उन्हें अपने पास एक टोकरी में रखे हुए होती; उदास भाव से बैठी होती, मानो दुनिया के सारे दुख उस पर आ पड़े हों; और गुलाबी आवरण के ऊपर

शतावरी की कलियों को सजाने वाले नीले रंग के हल्के मुकुट, तारे-दर-तारे, बारीकी से और अलग-अलग रेखांकित होते, जैसे गियोटो के भित्तिचित्र में माथे के चारों ओर फूल बंधे होते हैं, या पडुआ में उनकी सद्गुण की टोकरी का पैटर्न होता है। और, इस बीच, फ्रांस्वा उन मुर्गियों में से एक को सीख पर भून रही होती, जिन्हें केवल वही भूनना जानती थी, वे मुर्गियां जो कॉम्ब्रे से दूर-दूर तक उसकी खूबियों की मीठी सुगंध बिखेरती थीं, और जिन्हें वह मेज पर हमें परोसते समय, मेरे मन में उसके चरित्र की निजी धारणा में दयालुता का गुण क्षण भर के लिए हावी हो जाता था; उस पके हुए मांस की सुगंध, जिसे वह इतनी चिकनी और कोमल बनाना जानती थी, मुझे उसकी कई खूबियों में से एक की उचित सुगंध से अधिक कुछ नहीं लगती थी।

लेकिन जिस दिन मेरे पिता लेग्रैंडिन के साथ हमारी अजीब मुलाकात के बारे में अपने परिवार से सलाह मशवरा कर रहे थे, मैं रसोई में गई, वह उन दिनों में से एक था जब जियोटो की चैरिटी, हाल ही में प्रसव के बाद बहुत कमजोर और बीमार होने के कारण, बिस्तर से उठने में असमर्थ थी; फ्रांस्वा, बिना किसी सहायता के, काम में पिछड़ गई थी। जब मैं अंदर गई, तो मैंने उसे आंगन में खुलने वाली पिछली रसोई में एक मुर्गी को मारते हुए देखा; मुर्गी के बेताब और स्वाभाविक प्रतिरोध के कारण, जिसे फ्रांस्वा गुस्से से बेकाबू होकर कान के नीचे से उसका गला काटने की कोशिश कर रही थी, और "गंदा प्राणी! गंदा प्राणी!" चिल्ला रही थी, हमारी नौकरानी की पवित्र दया और स्नेह अगले दिन रात के खाने के समय उतना स्पष्ट नहीं रहा, जब वह एक सुनहरे कढ़ाई वाले वस्त्र में प्रकट हुई, और उसका कीमती रस एक प्याले से बूंद-बूंद करके बह रहा था। जब वह मर गया, तो फ्रांस्वा ने उसके बहते खून को साफ किया, लेकिन उसने अपने द्वेष को उसमें डूबने नहीं दिया, क्योंकि उसने क्रोध का

एक और विस्फोट किया, और अपने दुश्मन के शव को नीचे देखते हुए, अंतिम बार कहा, "घिनौना प्राणी!"

मैं कांपते हुए रसोई से चुपके से निकलकर ऊपर चली गई; उस समय मैं फ्रांस्वा को तुरंत बर्खास्त करने की प्रार्थना कर सकती थी। लेकिन कौन मेरे लिए इतने गरमागरम रोल बनाता, इतनी खुशबूदार कॉफी उबालता और यहाँ तक कि इतने चिकन भूनता? और संयोगवश, बाकी सभी को भी यही कायरतापूर्ण फैसला लेना पड़ा था। मेरी चाची लियोनी जानती थीं (हालाँकि मैं अभी भी इस बात से अनजान थी) कि फ्रांस्वा, जो अपनी बेटी या भतीजों के लिए बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी जान दे देती, बाकी दुनिया के साथ अपने व्यवहार में एक अनोखी निर्दयता दिखाती थी। इसके बावजूद मेरी चाची ने उसे अपने पास रखा हुआ था, क्योंकि उसकी क्रूरता से अवगत होते हुए भी, वह उसकी सेवाओं की सराहना करती थीं। मुझे धीरे-धीरे यह एहसास होने लगा कि फ्रांस्वा की दयालुता, उसका पश्चाताप, उसके सद्गुणों का सार, रसोई के भीतर घटी कई त्रासदियों को छुपाए हुए था, ठीक वैसे ही जैसे इतिहास हमें बताता है कि जिन राजाओं और रानियों को गिरजाघरों की खिड़कियों में हाथ जोड़कर घुटने टेकते हुए चित्रित किया जाता है, उनका शासनकाल भी दमन और रक्तपात से कलंकित था। मैंने इस बात पर ध्यान दिया था कि अपने रिश्तेदारों के अलावा, मानवता के कष्टों के प्रति उसके मन में करुणा की भावना जागृत होती थी, जो पीड़ितों से उसकी दूरी के अनुपात में बढ़ती जाती थी। जब वह अखबार में अनजान लोगों के दुर्भाग्य के बारे में पढ़ती थी, तो उसकी आँखों से जो आँसू बहते थे, वे पीड़ितों की अधिक सटीक मानसिक छवि बन जाने पर तुरंत रुक जाते थे। एक रात, प्रसव के कुछ ही समय बाद, रसोई की नौकरानी को अत्यंत भयानक पीड़ा हुई; माँ ने उसकी कराहें सुनीं और उठकर फ्रांस्वा को जगाया। फ्रांस्वा बिल्कुल भी विचलित नहीं

हुई और बोली कि सारा रोना-धोना सिर्फ़ बहाना है, लड़की घर में 'मालकिन बनने का नाटक' करना चाहती है। डॉक्टर को ऐसे ही किसी दौरे का डर था, इसलिए उन्होंने हमारे पास मौजूद मेडिकल डिक्शनरी में उस पृष्ठ पर निशान लगा दिया था जहाँ लक्षणों का वर्णन था, और हमें वह पृष्ठ खोलने को कहा था जहाँ हमें प्राथमिक उपचार के उपाय मिलेंगे। मेरी माँ ने फ्रांस्वा को किताब लाने भेजा और उसे चेतावनी दी कि निशान को गिरने न दे। एक घंटा बीत गया, और फ्रांस्वा वापस नहीं लौटी; मेरी माँ को लगा कि वह वापस बिस्तर पर चली गई है, और वे नाराज़ हो गईं, और मुझे खुद किताबों की अलमारी में जाकर किताब लाने को कहा। मैंने ऐसा ही किया, और वहाँ मुझे फ्रांस्वा मिली, जो यह जानने की उत्सुकता में थी कि उस निशान का क्या अर्थ है, और उसने प्रसवोत्तर पीड़ाओं के नैदानिक विवरण को पढ़ना शुरू कर दिया था। अब जब यह एक ऐसी बीमारी का मामला था जिससे वह परिचित नहीं थी, तो वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। लेखक द्वारा बताए गए प्रत्येक दर्दनाक लक्षण पर वह कहती: "हे पवित्र कुंवारी, क्या यह संभव है कि ईश्वर किसी अभागी मनुष्य को इतना कष्ट सहने की इच्छा रखता हो? हे बेचारी!"

लेकिन जब मैंने उसे बुलाया और वह जियोटो की 'चैरिटी' की मूर्ति के पास लौट आई, तो उसके आँसू तुरंत रुक गए; उसे उस सुखद कोमलता और दया की भावना का कोई कारण नहीं मिल रहा था जिसे वह अच्छी तरह जानती थी, क्योंकि अखबार पढ़ते समय वह अक्सर इससे प्रभावित हो जाती थी; न ही उसे आधी रात को रसोई की नौकरानी के लिए बिस्तर से उठने की थकान और चिड़चिड़ाहट में कोई और सुख मिल रहा था; इसलिए, उन्हीं कष्टों को देखकर, जिनके छपे हुए विवरण ने उसे रुला दिया था, उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं था सिवाय चिड़चिड़ेपन और कड़वे व्यंग्य से भरी बड़बड़ाहट के, और जब उसे लगा कि हम उसकी

सुनने की सीमा से बाहर चले गए हैं, तो उसने कहा: "खैर, उसे वह सब करने की ज़रूरत ही नहीं थी जो उसने यह सब करने के लिए किया! मुझे यकीन है कि उसे यह काफी सुखद लगा होगा! अब उसे कोई दिखावा नहीं करना चाहिए। फिर भी, वह युवक ज़रूर भगवान का मारा हुआ होगा जो उसके पीछे गया। हे भगवान, यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा मेरी गरीब माँ के देश में कहा जाता था।"

स्नैप्स और स्नेल्स और पिल्लों की पूंछें,
और गंदी वेश्याओं की भरमार है।
नौजवानों की नाक में गुलाब से भी मीठी खुशबू
जब हृदय इक्कीस वर्ष का होता है।"

हालांकि, जब उनके पोते को मामूली सर्दी-जुकाम होता था, तो वह रात में, भले ही वह खुद बीमार होतीं, सोने के बजाय यह देखने के लिए निकल जाती थीं कि उसे सब कुछ मिल गया है या नहीं, और भोर होने से पहले दस मील पैदल चलकर अपना काम शुरू करने के लिए समय पर पहुंच जाती थीं। अपने लोगों के प्रति यही प्रेम और अपने परिवार की भावी महानता को एक ठोस नींव पर स्थापित करने की उनकी इच्छा, अन्य नौकरों के प्रति उनकी नीति में एक अटल सिद्धांत के रूप में झलकती थी, जो यह था कि उनमें से किसी को भी मेरी चाची के कमरे में कदम नहीं रखने दिया जाए; वास्तव में, मेरी चाची के पास किसी और को न आने देने में उन्हें एक प्रकार का गर्व महसूस होता था, और जब वह स्वयं बीमार होती थीं, तो रसोई की नौकरानी को अपनी मालकिन के पास आने देने के बजाय, खुद बिस्तर से उठकर उन्हें विची जल पिलाना पसंद करती थीं। फैब्रे द्वारा देखी गई हाइमेनोप्टेरा की एक प्रजाति है, बिल खोदने वाली ततैया, जो अपनी मृत्यु के बाद अपने बच्चों के लिए ताज़ा मांस की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए, अपनी सहज क्रूरता के

संसाधनों को बढ़ाने के लिए शरीर रचना विज्ञान का सहारा लेती है, और घुन और मकड़ियों का संग्रह करके, अद्भुत ज्ञान और कौशल के साथ उस तंत्रिका केंद्र को भेदती है जिस पर उनकी चलने-फिरने की शक्ति (लेकिन उनके अन्य किसी भी महत्वपूर्ण कार्य पर नहीं) निर्भर करती है, ताकि लकवाग्रस्त कीट, जिसके पास उसका अंडा दिया जाता है, अंडे से निकलने पर लार्वा को एक पालतू और हानिरहित शिकार प्रदान करे, जो न तो उड़ने में सक्षम हो और न ही प्रतिरोध करने में, लेकिन भंडार के लिए पूरी तरह से ताज़ा हो: ठीक उसी तरह, फ्रांस्वा ने घर को किसी अन्य नौकर के लिए निर्दयी बनाने के अपने स्थायी और अडिग संकल्प को पूरा करने के लिए, कई धूर्त और निर्दयी रणनीतियाँ अपनाई थीं। कई साल बाद हमें पता चला कि अगर उस पूरे मौसम में हमें दिन-प्रतिदिन शतावरी खिलाई गई थी, तो इसका कारण यह था कि पौधों की गंध से बेचारी रसोई की नौकरानी, जिसे उन्हें तैयार करना पड़ता था, को अस्थमा के इतने गंभीर दौरे पड़ते थे कि अंततः उसे मेरी चाची की नौकरी छोड़नी पड़ी।

अफसोस! हमें एम. लेग्रैंडिन के बारे में अपनी राय बदलनी ही पड़ी। पोंट-विएक्स पर उनसे हुई हमारी मुलाकात के बाद, जिसके बाद मेरे पिता को अपनी गलती स्वीकार करनी पड़ी, एक रविवार को जब प्रार्थना सभा समाप्त होने वाली थी, और धूप और बाहरी दुनिया के शोर के बीच, चर्च में कुछ और ही छा गया, एक ऐसा वातावरण जो पवित्रता से इतना दूर था कि श्रीमती गौपिल, श्रीमती... (वास्तव में, वे सभी लोग जो कुछ क्षण पहले, जब मैं थोड़ा देर से पहुँचा था, बिना हिले-डुले बैठे थे, उनकी आँखें अपनी प्रार्थना-पुस्तकों पर टिकी थीं; जिनके बारे में मुझे लग सकता था कि उन्होंने मुझे अंदर आते हुए नहीं देखा, यदि उनके पैर थोड़ा सा न हिले होते और उस छोटी सी घुटने टेकने वाली मेज को न हटाते जो मुझे मेरी

कुर्सी तक पहुँचने से रोक रही थी) ऊँची आवाज़ में हमसे तरह-तरह के सांसारिक विषयों पर चर्चा करने लगे, मानो हम पहले से ही चौक में बाहर हों। तभी हमने देखा कि बरामदे की धूप से तपती सीढ़ियों पर, बाज़ार के रंग-बिरंगे कोलाहल में, लेग्रैंडिन स्वयं खड़े थे, जिन्हें पिछली बार उनके साथ देखी गई महिला के पति, जिले के एक अन्य बड़े जमींदार की पत्नी से मिलवाने जा रहे थे। लेग्रैंडिन के चेहरे पर असाधारण उत्साह और जीवंतता झलक रही थी; उन्होंने एक गहरा प्रणाम किया, साथ ही एक सहायक पीछे की ओर गति भी की जिससे उनकी रीढ़ की हड्डी अपनी शुरुआती स्थिति से पीछे की ओर तेज़ी से ऊपर उठ गई, एक ऐसा हावभाव जिसमें उन्हें उनकी बहन, श्रीमती के पति द्वारा प्रशिक्षित किया गया होगा। डी कैम्ब्रेमर। इस तीव्र पुनर्प्राप्ति के कारण लेग्रैंडिन के कूल्हों पर एक प्रकार की तनावपूर्ण मांसपेशीय लहर दौड़ उठी, जो मुझे इतनी मांसल नहीं लग रही थी; मैं नहीं कह सकता क्यों, लेकिन शुद्ध पदार्थ का यह उतार-चढ़ाव, यह पूर्णतः कामुक प्रवाह, जिसमें आध्यात्मिक महत्व का जरा सा भी संकेत नहीं था, यह लहर जो एक लगन और निम्नतम प्रकार की चापलूसी की हवा से उग्र हो गई थी, ने अचानक मेरे मन को उस लेग्रैंडिन से बिल्कुल अलग लेग्रैंडिन की संभावना की ओर जगा दिया जिसे हम जानते थे। महिला ने अपने कोचवान के लिए उसे कुछ संदेश दिया, और जब वह उसकी गाड़ी में उतर रहा था, तो उसके चेहरे पर अभी भी आनंद, संकोच और भक्ति का भाव था, जो परिचय ने उस पर अंकित कर दिया था। एक प्रकार के सपने में खोया हुआ, वह मुस्कुराया, फिर वह महिला की ओर वापस तेजी से चलने लगा; वह सामान्य से तेज चल रहा था, और उसके कंधे सबसे बेतुके ढंग से आगे-पीछे, दाएं-बाएं हिल रहे थे; वह पूरी तरह से उसी में डूबा हुआ लग रहा था, मानो उसने अपने सारे विचार भुला दिए हों, मानो वह अपनी ही खुशी की बेजान और तार से

खींची जाने वाली कठपुतली हो। इसी बीच हम बरामदे से बाहर आ रहे थे; हम उसके बिल्कुल पास से गुज़र रहे थे; वह इतना सभ्य था कि अपना सिर घुमा नहीं सकता था; लेकिन उसकी आँखें, जो अचानक किसी द्रष्टा की तरह गहरी दृष्टि में खो गई थीं, क्षितिज के इतने दूर बिंदु पर टिकी हुई थीं कि वह हमें देख नहीं पा रहा था, और इसलिए हमारी उपस्थिति को स्वीकार भी नहीं कर रहा था। उसका चेहरा, अभी भी मासूमियत से भरा हुआ, उसके सीधे और लचीले कोट से बाहर निकला, जो ऐसा लग रहा था मानो अनजाने में ही भटक गया हो और एक घृणित वैभव के परिवेश में डूब गया हो। और चौक की हवाओं से लहराती हुई एक चित्तीदार टाई, लेग्रैंडिन के सामने, उसकी गौरवशाली एकांतता, उसकी महान स्वतंत्रता के प्रतीक की तरह लहराती रही। जैसे ही हम घर पहुँचे, मेरी माँ को पता चला कि हम 'सेंट-होनोरे' लाना भूल गए हैं, और उन्होंने मेरे पिताजी से मुझे साथ वापस जाकर उन्हें तुरंत भेजने के लिए कहा। चर्च के पास हमारी मुलाकात लेग्रैंडिन से हुई, जो उसी महिला के साथ हमारी ओर आ रहे थे, जिसे वे उसकी गाड़ी तक ले जा रहे थे। वे हमारे पास से गुज़रे, और उन्होंने महिला से जो कह रहे थे उसे रोका नहीं, बल्कि अपनी नीली आँख के कोने से हमें एक छोटा सा इशारा किया, जो मानो उनकी पलकों के भीतर ही शुरू और खत्म हो गया, और क्योंकि इसमें उनके चेहरे की मांसपेशियों की ज़रा भी हलचल नहीं हुई, इसलिए महिला उसे देख ही नहीं पाई; लेकिन, अपनी भावनाओं की तीव्रता को व्यक्त करने के लिए सीमित दायरे की भरपाई करने की कोशिश में, उन्होंने उस नीली आँख के कोने को, जो हमारे लिए अलग थी, सौहार्द की पूरी जीवंतता से चमका दिया, जो केवल चंचलता से कहीं अधिक थी, और लगभग शरारत की सीमा रेखा को छू रही थी; उसने सौहार्द की बारीकियों को मिलीभगत के इशारे, संकेत, छिपे अर्थ, गुप्त समझ, साजिश में संलिप्तता के सभी

रहस्यों में बदल दिया, और अंततः मित्रता के अपने आश्वासनों को स्नेह की अभिव्यक्ति, यहां तक कि प्रेम की घोषणा के स्तर तक पहुंचा दिया, हमारे लिए, और केवल हमारे लिए, एक गुप्त और मंद लौ से जगमगा उठा, जो उसके दूसरी ओर बैठी महान महिला को दिखाई नहीं दे रही थी, एक बर्फीले चेहरे में एक मुग्ध शिष्य।

इससे ठीक एक दिन पहले ही उन्होंने मेरे माता-पिता से मुझे इसी रविवार शाम को उनके साथ भोजन करने के लिए भेजने का अनुरोध किया था। उन्होंने मुझसे कहा था, "आओ और अपने वृद्ध मित्र का साथ दो।" जैसे कोई यात्री हमें किसी ऐसे देश से फूलों का गुलदस्ता भेजता है जहाँ हम फिर कभी नहीं जा सकेंगे, वैसे ही आओ और मुझे तुम्हारे किशोरावस्था के उस दूर देश से उन बसंत के फूलों की सुगंध लेने दो, जिनके बीच मैं भी कई साल पहले घूमा करता था। प्रिमरोज़ के साथ आओ, कैनन की दाढ़ी के साथ आओ, सोने के प्याले के साथ आओ; स्टोन-क्रॉप के साथ आओ, जिससे बाल्ज़ाकियन फ्लोरा में प्रेम के वादे के रूप में गुलदस्ते बनते हैं; पुनरुत्थान की सुबह के उस फूल, ईस्टर डेज़ी के साथ आओ; गिल्डर-रोज़ के बर्फ के गोलों के साथ आओ, जो तुम्हारी परदादी के बगीचे की गलियों को अपनी सुगंध से महकाने लगते हैं, इससे पहले कि लेंट की आखिरी बर्फ उसकी मिट्टी से पिघल जाए। लिली के शानदार रेशमी वस्त्र के साथ आओ, जो सुलेमान के लिए उपयुक्त वस्त्र है, और पैंसी के बहुरंगी तामचीनी के साथ आओ, लेकिन सबसे बढ़कर, उस बसंत की हवा के साथ आओ, जो अभी भी वायरियर के आखिरी पाले से ठंडी है, बहती हुई। उन दो तितलियों की खातिर, जो सुबह से बाहर इंतजार कर रही थीं, पहले यरूशलेम के बंद द्वार खुल गए।"

घर में यह सवाल उठा कि क्या सभी बातों पर विचार करने के बाद भी मुझे एम. लेग्रैंडिन के साथ भोजन करने के लिए भेजा जाना चाहिए।

लेकिन मेरी दादी ने यह मानने से इनकार कर दिया कि वह असभ्य हो सकते थे।

“तुम खुद मानते हो कि वह वहाँ चर्च में बिल्कुल सादे कपड़े पहने हुए दिखाई देता है; वह किसी फैशनेबल आदमी जैसा बिल्कुल नहीं दिखता।” उसने आगे कहा कि, खैर, अगर सबसे बुरी बात यह भी हो कि वह जानबूझकर असभ्य था, तो हमारे लिए यह दिखावा करना कहीं बेहतर था कि हमने कुछ देखा ही नहीं। और वास्तव में मेरे पिता स्वयं, हालांकि लेग्रैंडिन के रवैये से हम सब से ज़्यादा नाराज़ थे, फिर भी शायद उसके असली अर्थ को लेकर उनके मन में कुछ अनिश्चितता बनी हुई थी। यह हर उस रवैये या हरकत की तरह था जो किसी व्यक्ति के गहरे और छिपे हुए चरित्र को उजागर करता है; उनका उसके पहले कहे गए शब्दों से कोई संबंध नहीं होता, और हम अपराधी के सबूतों से अपने संदेह की पुष्टि नहीं कर सकते, क्योंकि वह कुछ भी स्वीकार नहीं करेगा; हम अपनी इंद्रियों के प्रमाण पर निर्भर हो जाते हैं, और स्मृति के इस असंबद्ध और असंगत टुकड़े के सामने हम खुद से पूछते हैं कि क्या वास्तव में हमारी इंद्रियाँ किसी भ्रम का शिकार तो नहीं हो गईं; परिणामस्वरूप, ऐसे रवैये, और केवल यही चरित्र को दर्शाने में महत्वपूर्ण होते हैं, हमें सबसे ज़्यादा उलझन में डाल देते हैं।

मैंने लेग्रैंडिन के घर की छत पर चांदनी रात में उनके साथ भोजन किया। उन्होंने मुझसे कहा, "इस खामोशी में एक अलग ही आकर्षण है, है ना? मेरे जैसे ज़ख्मी दिलों के लिए, एक उपन्यासकार, जिसे तुम आगे चलकर पढ़ोगे, कहता है कि खामोशी और अंधेरे के सिवा कोई इलाज नहीं है। और देखो, मेरे बच्चे, जीवन में एक ऐसा समय आता है, जिसकी ओर तुम्हें अभी लंबा सफर तय करना है, जब थकी हुई आंखें सिर्फ एक ही तरह की रोशनी सहन कर सकती हैं, वह रोशनी जो इस तरह की सुहावनी

शाम अंधेरे के सन्नाटे में हमारे लिए तैयार करती है, जब कान चांदनी की खामोशी की बांसुरी जैसी मधुर ध्वनि के अलावा कोई संगीत नहीं सुन सकते।"

मैं एम. लेग्रैंडिन की बातें सुन सकता था; उनकी हर बात आकर्षक लग रही थी; लेकिन मुझे एक महिला की याद सता रही थी जिसे मैंने हाल ही में पहली बार देखा था; और यह सोचकर कि अब जब मुझे पता चल गया था कि लेग्रैंडिन स्थानीय कुलीन वर्ग के कई लोगों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रखते हैं, तो शायद वह महिला भी उनकी परिचितों में से एक हो, मैंने हिम्मत जुटाकर उनसे कहा: "बताइए महोदय, क्या आप संयोगवश उस महिला को जानते हैं—गुएरमांटेस की महिलाओं को?" और मुझे खुशी हुई क्योंकि नाम का उच्चारण करके, मैंने उस पर एक प्रकार का अधिकार प्राप्त कर लिया था, केवल उसे अपने सपनों से निकालकर मौखिक रूप से उसे एक ठोस अस्तित्व प्रदान करके।

लेकिन, गुएरमांटेस शब्द सुनते ही, मैंने अपने मित्र की नीली आँखों के बीचोंबीच एक छोटा सा भूरा गड्ढा देखा, मानो किसी अदृश्य सुई की नोक से चुभ गया हो। वहीं, सदमे से उसकी पुतलियाँ भी नीले रंग से भर उठीं। उसकी पलकें गहरी हो गईं और झुक गईं। उसका मुँह, जो कड़वाहट से कठोर और झुलसा हुआ था, सबसे पहले ठीक हुआ और मुस्कुराया, जबकि उसकी आँखें अभी भी दर्द से भरी हुई लग रही थीं, मानो किसी सुंदर शहीद की आँखें हों जिसका शरीर तीरों से छलनी हो गया हो।

"नहीं, मैं उन्हें नहीं जानता," उन्होंने कहा, लेकिन इतनी सरल जानकारी को, जिसमें मुझे आश्चर्यचकित करने वाली कोई बात नहीं थी, स्वाभाविक और बातचीत के लहजे में कहने के बजाय, उन्होंने प्रत्येक शब्द पर अलग से जोर देते हुए, आगे झुककर, सिर झुकाकर, उस जोश के साथ कहा जो एक व्यक्ति किसी अत्यंत असंभव कथन पर विश्वास दिलाने के लिए देता

है (जैसे कि यह तथ्य कि वह गुएरमांटे परिवार को नहीं जानता, केवल किसी अजीब संयोग के कारण हो सकता है) और उस जोर के साथ जो एक ऐसे व्यक्ति में होता है जो अपने लिए एक दर्दनाक स्थिति के बारे में चुप नहीं रह सकता, इसलिए वह इसे जोर से घोषित करना चुनता है, ताकि सुनने वालों को विश्वास दिला सके कि वह जो स्वीकारोक्ति कर रहा है वह उसे शर्मिंदा नहीं कर रही है, बल्कि सहज, सुखद और स्वाभाविक है, और यह स्थिति, इस मामले में गुएरमांटे परिवार के साथ संबंधों का अभाव, शायद जबरदस्ती नहीं थोपी गई हो, बल्कि वास्तव में लेग्रैंडिन द्वारा स्वयं योजनाबद्ध हो, या किसी पारिवारिक परंपरा या नैतिक कारण से उत्पन्न हुई हो। वह सिद्धांत या रहस्यमय प्रतिज्ञा जिसमें स्पष्ट रूप से उन्हें उनकी संगति में जाने से मना किया गया था।

“नहीं,” उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए, अपने शब्दों के लहजे से स्पष्ट किया। “नहीं, मैं उन्हें नहीं जानता; मैंने उन्हें कभी जानना नहीं चाहा; मैंने हमेशा अपनी पूर्ण स्वतंत्रता बनाए रखने को प्राथमिकता दी है; जैसा कि आप जानते हैं, मैं दिल से थोड़ा कट्टरपंथी हूँ। लोग अक्सर मुझसे इस बारे में बात करते हैं, कहते हैं कि मैं गुएरमांटेस न जाकर गलती कर रहा हूँ, कि मैं खुद को असभ्य, गंवार, बूढ़ा भालू जैसा दिखाता हूँ। लेकिन इस तरह की छवि मुझे डरा नहीं सकती; यह बिल्कुल सच है! अपने दिल की गहराई में, अब मुझे दुनिया में कुछ गिरजाघरों, दो-तीन किताबों, तस्वीरों (शायद कुछ ज़्यादा), और चाँद की रोशनी के अलावा किसी और चीज़ की परवाह नहीं है, जब जवानी की ताज़ी हवा (आपकी तरह) मेरी नाक तक उन बागों की खुशबू पहुँचाती है जिनके फूलों को मेरी बूढ़ी आँखें अब पहचान नहीं पातीं।”

मुझे यह बात पूरी तरह समझ में नहीं आई कि अनजान लोगों के घरों में जाने से बचने के लिए अपनी स्वतंत्रता को इतना महत्व देना क्यों जरूरी

है, और न ही यह कि इससे कोई जंगली या भालू जैसा कैसे दिख सकता है। लेकिन मैं यह जरूर समझ गया था कि लेग्रैंडिन ने जब कहा था कि उन्हें सिर्फ चर्च, चांदनी और जवानी से मतलब है, तो वह पूरी तरह सच नहीं बोल रहे थे; उन्हें देहाती घरों में रहने वाले लोगों से भी बहुत लगाव था, और उनकी संगति में उन्हें इतना डर लगता था कि कहीं वे नाराज न हो जाएं कि वे कभी उन्हें यह जताने की हिम्मत ही नहीं करते थे कि उनके दोस्तों में मध्यम वर्ग के लोग, वकीलों और स्टॉकब्रोकरों के परिवार भी शामिल हैं। सच कहें तो, वे यह पसंद करते थे कि यह बात उनकी गैरमौजूदगी में, जब वे आसपास न हों, तब पता चले, ताकि अगर फैसला उनके खिलाफ हो (अगर होना ही है तो) तो वह अपने आप ही गलत साबित हो जाएं: संक्षेप में, वे एक घमंडी थे। बेशक, वे यह सब या इनमें से कुछ भी उस काव्यात्मक भाषा में कभी स्वीकार नहीं करते, जिसकी मेरे परिवार और मैं इतनी प्रशंसा करते थे। और अगर मैं उनसे पूछता, "क्या आप गुएरमांटेस परिवार को जानते हैं?" तो बातूनी लेग्रैंडिन जवाब देते, "नहीं, मैंने उन्हें जानने की कभी परवाह नहीं की।" लेकिन दुर्भाग्य से, बातूनी अब एक दूसरे लेग्रैंडिन के अधीन हो गया था, जिसे उसने अपने दिल में बड़ी सावधानी से छिपा रखा था, जिसे वह कभी जानबूझकर प्रकट नहीं करता था, क्योंकि यह दूसरा लेग्रैंडिन हमारे अपने लेग्रैंडिन और उसके घमंड के बारे में ऐसी कहानियां सुना सकता था जो उसकी प्रतिष्ठा को हमेशा के लिए बर्बाद कर देतीं; और इस दूसरे लेग्रैंडिन ने मुझे उस घायल नज़र, उस कठोर मुस्कान, उन कुछ शब्दों को बोलते समय उसके लहजे की अनुचित गंभीरता, उन हजारों तीरों से जवाब दिया था जिनसे हमारे अपने लेग्रैंडिन को पल भर में छुरा घोंपा गया था और वह बीमार पड़ गया था, जैसे घमंड का संत सेबेस्टियन।

"ओह, तुमने मुझे कितना दुख पहुँचाया! नहीं, मैं गुएरमांटेस परिवार को

नहीं जानता। मुझे मेरे जीवन के उस बड़े दुख की याद मत दिलाओ।" और चूंकि यह दूसरा, यह अदम्य, दबंग, निरंकुश लेग्रैंडिन, भले ही उसमें हमारे लेग्रैंडिन जैसी आकर्षक शब्दावली की कमी थी, फिर भी वह 'प्रतिक्रिया' कहे जाने वाले तरीकों से खुद को व्यक्त करने में कहीं अधिक तत्परता दिखाता था, इसलिए यह स्वाभाविक था कि जब बोलने वाले लेग्रैंडिन ने उसे चुप कराने का प्रयास किया, तब तक वह बोल चुका था, और हमारे मित्र के लिए उसके दूसरे रूप के खुलासों से उत्पन्न बुरे प्रभाव पर खेद व्यक्त करना व्यर्थ था, क्योंकि अब वह उन्हें कम करने के प्रयास के अलावा और कुछ नहीं कर सकता था।

इसका यह अर्थ नहीं है कि एम. लेग्रैंडिन जब अभिमानियों की निंदा करते थे तो वे वास्तव में ईमानदार नहीं थे। वे (कम से कम अपने ज्ञान के आधार पर) इस बात से अवगत नहीं हो सकते थे कि वे स्वयं भी एक अभिमानी थे, क्योंकि हम वास्तव में दूसरों की भावनाओं से ही परिचित होते हैं, और हम अपने बारे में जो कुछ भी जान पाते हैं वह उससे अधिक कुछ नहीं हो सकता जो दूसरों ने हमें दिखाया है। ये भावनाएँ हम पर अप्रत्यक्ष रूप से, हमारी कल्पना के माध्यम से ही प्रभाव डालती हैं, जो हमारे वास्तविक, प्राथमिक उद्देश्यों के स्थान पर अन्य, गौण उद्देश्यों को स्थापित कर देती है, जो कम कठोर और इसलिए अधिक शालीन होते हैं। लेग्रैंडिन के अभिमान ने उन्हें कभी भी किसी डचेस से मिलने की आदत नहीं डाली। इसके बजाय, यह उनकी कल्पना को इस प्रकार प्रेरित करता था कि वे डचेस को लेग्रैंडिन की दृष्टि में सभी गुणों से परिपूर्ण पाते थे। वे डचेस की ओर आकर्षित होते थे, और साथ ही साथ यह विश्वास करते थे कि वे उसके मन और अन्य गुणों के आकर्षण के आगे झुक रहे हैं, जिन्हें अभिमानियों की नीच जाति कभी समझ नहीं सकती। केवल उनके जैसे ही संभ्रांत लोग जानते थे कि वह उन्हीं में से एक है, क्योंकि उनकी

कल्पनाशीलता के प्रयासों की सराहना करने में असमर्थता के कारण, उन्होंने लेग्रैंडिन की सामाजिक गतिविधियों और उनके प्राथमिक उद्देश्य को एक दूसरे के निकट समानांतर देखा।

घर पर, एम. लेग्रैंडिन के बारे में हमारी कोई भी भली-भांति धारणा नहीं रह गई थी, और उनके साथ हमारे संबंध काफी दूर हो गए थे। जब भी माँ उन्हें रंगे हाथों पकड़तीं, तो वे बहुत प्रसन्न होतीं, क्योंकि वे उन्हें घमंड का वह पाप कहते थे जिसे वे कभी माफ़ नहीं करते थे। मेरे पिता को लेग्रैंडिन के इस तरह के व्यवहार को हल्के में लेना मुश्किल लगता था, वे इसे इतने उदासीन भाव से स्वीकार नहीं कर पाते थे; और एक साल जब मुझे गर्मियों की लंबी छुट्टियाँ बालबेक में मेरी दादी के साथ बिताने के लिए भेजने की बात हुई, तो उन्होंने कहा: "मुझे लेग्रैंडिन को ज़रूर बताना चाहिए कि तुम बालबेक जा रहे हो, ताकि पता चले कि क्या वह तुम्हें अपनी बहन से मिलवाएँगे। शायद उन्हें याद नहीं होगा कि उन्होंने हमें बताया था कि वह उस जगह से एक मील की दूरी पर रहती हैं।"

मेरी दादी का मानना था कि जब कोई समुद्र किनारे जाए, तो उसे सुबह से शाम तक समुद्र तट पर रहना चाहिए, नमकीन हवाओं का आनंद लेना चाहिए, और वहाँ किसी से जान-पहचान नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि मुलाकातें, पार्टियाँ और सैर-सपाटा समुद्र की ताज़ी हवा के लिए सही मायने में समय की बर्बादी होती है। उन्होंने मेरी दादी से विनती की कि वे लेग्रैंडिन को हमारी योजनाओं के बारे में बिल्कुल भी न बताएं; क्योंकि उनके मन में यह बात बैठ गई थी कि जैसे ही हम मछली पकड़ने जाने वाले होंगे, लेग्रैंडिन की बहन, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर, अपनी गाड़ी से हमारे होटल के दरवाजे पर उतरेंगी और हमें दोपहर भर उनके मनोरंजन के लिए घर के अंदर ही रहना पड़ेगा। लेकिन मेरी माँ ने उनके डर को हँसकर टाल दिया, क्योंकि उन्हें खुद लगता था कि खतरा इतना बड़ा नहीं है, और

लेग्रैंडिन अपनी बहन से हमारा परिचय कराने में कोई खास उत्सुकता नहीं दिखाएगा। और संयोगवश, हममें से किसी को भी बालबेक के विषय को शुरू करने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि यह स्वयं लेग्रैंडिन ही थे, जिन्हें इस बात का जरा भी संदेह नहीं था कि हमारा कभी उन क्षेत्रों का दौरा करने का कोई इरादा था, और एक शाम जब हम उनसे विवोन नदी के किनारे टहलते हुए मिले, तो वे बिना बुलाए ही हमारे जाल में फंस गए। "आज शाम बादलों में बैंगनी और नीले रंग की छटा बिखरी हुई है, जो बहुत खूबसूरत हैं, है ना मेरे दोस्त?" उसने मेरे पिता से कहा। "खासकर वो नीला रंग जो वायुमंडलीय से कहीं अधिक पुष्पीय है, एक सिनेरिया नीला, जिसे आकाश में देखना आश्चर्यजनक है। और वो छोटा सा गुलाबी बादल, क्या उसमें किसी फूल, जैसे कार्नेशन या हाइड्रेंजिया का रंग नहीं है? शायद ही कहीं, इंग्लिश चैनल के तटों को छोड़कर, जहाँ नॉर्मंडी ब्रिटनी में विलीन हो जाता है, मुझे बादलों में वनस्पति जगत के इतने प्रचुर उदाहरण मिले हों। वहाँ, बालबेक के पास, उन सभी जगहों के बीच जो अभी भी इतनी असभ्य हैं, एक छोटी सी खाड़ी है, मनमोहक रूप से शांत, जहाँ औज घाटी के सूर्यास्त, वो लाल-सुनहरे सूर्यास्त (जिन्हें मैं बिल्कुल भी तुच्छ नहीं समझता) सामान्य और महत्वहीन लगते हैं; क्योंकि उस नम और सौम्य वातावरण में ये दिव्य फूलों की क्यारियाँ शाम के समय कुछ ही क्षणों में खिल उठती हैं, अतुलनीय रूप से सुंदर, और अक्सर मुरझाने से पहले घंटों तक टिकी रहती हैं। कुछ फूल अपने पत्ते एक साथ गिरा देते हैं, और तब आकाश को बिखरे हुए देखना और भी सुंदर होता है।" उनकी असंख्य पंखुड़ियाँ बिखरी हुई हैं, गंधक जैसी पीली और गुलाबी लाल। उस खाड़ी में, जिसे वे ओपल खाड़ी कहते हैं, सुनहरी रेत और भी मनमोहक लगती है, मानो सुंदर एंड्रोमेडा की तरह, आसपास के तट की उन भयानक चट्टानों से बंधी हुई हो, उस शोकग्रस्त किनारे से, जो अपने अनगिनत

जहाज़ों के मलबे के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ हर सर्दियों में कई बहादुर जहाज़ समुद्र के खतरों का शिकार हो जाते हैं। बालबेक! हमारी मिट्टी के नीचे स्थित भूवैज्ञानिक ढांचे की सबसे पुरानी हड्डी, सच्चा आर्मोर, समुद्र, भूमि का अंत, वह शापित क्षेत्र जिसे एनाटोल फ्रांस—एक जादूगर जिसकी रचनाएँ हमारे युवा मित्र को अवश्य पढ़नी चाहिए—ने अपने शाश्वत कोहरे के नीचे इतनी खूबसूरती से चित्रित किया है, मानो वह वास्तव में ओडिसी में सिमेरियनों की भूमि हो। बालबेक; हाँ, वे अब वहाँ होटल बना रहे हैं, उन्हें उसकी प्राचीन और मनमोहक मिट्टी पर थोप रहे हैं, जिसे वे बदलने में असमर्थ हैं; वहाँ नीचे, एक ही बार में इतने आदिम और इतने मंत्रमुग्ध कर देने वाला।"

"जी हां! और क्या आप बालबेक में किसी को जानते हैं?" मेरे पिता ने पूछा। "यह युवक अपनी दादी के साथ कुछ महीने वहां बिताने जा रहा है, और शायद मेरी पत्नी भी।"

लेग्रैंडिन, उस समय अचानक पूछे गए प्रश्न से चौंक गए जब वे सीधे मेरे पिता की ओर देख रहे थे। वे अपनी दृष्टि हटा नहीं पाए और धीरे-धीरे बढ़ती तीव्रता के साथ, उदास मुस्कान के साथ, प्रश्नकर्ता की आँखों में देखते रहे। उनका ध्यान मित्रतापूर्ण, स्पष्टवादी और निडर भाव से प्रश्नकर्ता के चेहरे पर देखने जैसा था, मानो वे मेरे पिता की खोपड़ी में प्रवेश कर गए हों, मानो वह कांच की गेंद हो, और उस क्षण उसके पीछे दूर तक एक चमकीले रंग का बादल देख रहे हों। इससे उन्हें एक मानसिक बहाना मिल गया और वे यह सिद्धांत स्थापित कर सके कि जब उनसे पूछा जा रहा था कि क्या वे बालबेक में किसी को जानते हैं, तब वे किसी और बात में व्यस्त थे, इसलिए उन्होंने प्रश्न नहीं सुना। आमतौर पर इस तरह की तरकीबें प्रश्नकर्ता को यह पूछने पर मजबूर कर देती हैं, "क्यों, आप क्या सोच रहे हैं?" लेकिन मेरे पिता, जिज्ञासु, चिढ़े और

कठोर, ने दोहराया: "क्या उस इलाके में आपके दोस्त हैं, जो आप बालबेक को इतनी अच्छी तरह जानते हैं?"

अंतिम और हताश प्रयास में, लेग्रैंडिन की मुस्कुराती निगाहों ने अपनी कोमलता, अस्पष्टता, स्पष्टवादिता और विचलितता की चरम सीमाओं तक संघर्ष किया; फिर, निस्संदेह, यह महसूस करते हुए कि अब उनके पास उत्तर देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था, उन्होंने हमसे कहा: "मेरे मित्र पूरी दुनिया में हैं, जहाँ कहीं भी वृक्षों के समूह हैं, जो पीड़ित हैं लेकिन पराजित नहीं हुए हैं, जो एक साथ मिलकर, दयनीय हठ के साथ, उस निर्दयी आकाश से एक सामान्य प्रार्थना कर रहे हैं जो उन पर कोई दया नहीं दिखाता।"

"मेरा मतलब वो नहीं था," मेरे पिता ने बीच में ही टोकते हुए कहा, जो पेड़ की तरह अड़ियल और आकाश की तरह निर्दयी थे। "मैंने तुमसे इसलिए पूछा था कि अगर मेरी सास को कुछ हो जाए और वो उस सुनसान जगह पर, जहाँ वो बिल्कुल अकेली न हों, तो क्या तुम वहाँ के किसी व्यक्ति को जानते हो?"

"वहां भी और अन्य जगहों पर भी, मैं सबको जानता हूं और किसी को नहीं जानता," लेग्रैंडिन ने उत्तर दिया, जो अभी आत्मसमर्पण करने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं था; "जगहों को मैं अच्छी तरह जानता हूँ, लोगों को बहुत कम। लेकिन, वहाँ नीचे, जगहें मुझे बिल्कुल इंसानों जैसी लगती हैं, दुर्लभ और अद्भुत इंसान, एक नाजुक गुण वाले जो जीवन के उपहार से भ्रष्ट और बर्बाद हो गए होते। शायद यह एक महल है जो आपको चट्टान के किनारे पर मिलता है; सड़क के किनारे खड़ा, जहाँ यह शाम के गुलाबी आसमान के सामने अपने दुखों पर विचार करने के लिए रुका है, जिसके बीच से एक सुनहरा चाँद ऊपर चढ़ रहा है; जबकि घर लौटती मछुआरे नावें, जलधारा के पानी से लथपथ रेशम को मोड़ते हुए,

अपने मस्तूलों पर इसका झंडा फहराती हैं और इसके रंग ले जाती हैं। या शायद यह एक साधारण सा घर है जो अकेला खड़ा है, बदसूरत, अगर कुछ भी कहूँ तो, डरपोक सा दिखता है लेकिन रोमांस से भरा हुआ है, हर किसी की नज़र से खुशी और मोहभंग के किसी अविनाशी रहस्य को छिपाए हुए है। वह भूमि जो सत्य को नहीं जानती," उसने मैकियावेली जैसी सूक्ष्मता से आगे कहा, "अनंत कल्पनाओं की वह भूमि किसी भी लड़के के लिए अच्छी नहीं है; और निश्चित रूप से यह वह नहीं है जिसे मैं अपने इस युवा मित्र के लिए चुनूँगा या सुझाऊँगा, जो पहले से ही उदासी की ओर इतना झुका हुआ है, एक ऐसा दिल जो पहले से ही इसके प्रभावों को ग्रहण करने के लिए तैयार है। प्रेम के रहस्यों और व्यर्थ पछतावों से भरी जलवायु मुझ जैसे बूढ़े और निराश व्यक्ति को शायद भा जाए; लेकिन एक ऐसे स्वभाव के लिए जो अभी पूरी तरह विकसित नहीं हुआ है, यह हमेशा घातक साबित होगी। "मेरा विश्वास करो," उन्होंने ज़ोर देकर कहा, "उस खाड़ी का पानी—जो नॉर्मन से ज़्यादा ब्रेटन जैसा है—एक ऐसे दिल पर शांत प्रभाव डाल सकता है, हालाँकि उसका भी मूल्य संदिग्ध है, जो मेरे जैसे अब टूटा हुआ नहीं है, एक ऐसा दिल जिसके घावों का अब कोई इलाज नहीं बचा है। लेकिन तुम्हारी उम्र में, मेरे बेटे, वह पानी तुम्हारे लिए ठीक नहीं है... शुभ रात्रि, पड़ोसियों," उन्होंने हमसे दूर जाते हुए उसी टालमटोल भरे अंदाज़ में कहा, जिसकी हमें आदत थी; और फिर, हमारी ओर मुड़कर, चेतावनी भरे अंदाज़ में एक चिकित्सक की उंगली उठाते हुए, उन्होंने परामर्श फिर से शुरू किया: "पचास साल की उम्र से पहले बालबेक मत जाना!" उन्होंने मुझे पुकारा, "और तब भी यह दिल की हालत पर निर्भर करेगा।"

मेरे पिता जब भी हम उनसे मिलते, इस बारे में उनसे बार-बार बात करते और सवालों की झड़ी लगा देते, लेकिन सब व्यर्थ था: उस विद्वान

धोखेबाज की तरह, जिसने जाली दस्तावेजों को गढ़ने में अपनी सारी कुशलता, ज्ञान और परिश्रम लगा दिया, जिसका सौवां हिस्सा भी उसे किसी अधिक लाभदायक—लेकिन सम्मानजनक—पेशे में स्थापित करने के लिए पर्याप्त होता, श्री लेग्रैंडिन, अगर हम और जोर देते, तो अंततः नैतिकता की एक पूरी प्रणाली और लोअर नॉर्मंडी का एक खगोलीय भूगोल तैयार कर लेते, बजाय इसके कि वे हमें यह स्वीकार करें कि बालबेक से एक मील के भीतर उनकी अपनी बहन अपने घर में रह रही थी; बजाय इसके कि वे हमें परिचय पत्र देने के लिए बाध्य हों, जिसकी संभावना से उन्हें इतना डर कभी नहीं लगता यदि वे पूरी तरह से निश्चित होते—जैसा कि मेरी दादी के चरित्र के बारे में उनके ज्ञान से उन्हें वास्तव में निश्चित होना चाहिए था—कि किसी भी परिस्थिति में हम इसका उपयोग करने का सपना भी नहीं देखेंगे।

* * *

हम हमेशा समय पर अपनी सैर से लौट आते थे ताकि रात के खाने से पहले चाची लियोनी से मिलने जा सकें। कॉम्ब्रे की छुट्टियों के शुरुआती हफ्तों में, जब दिन जल्दी खत्म हो जाते थे, तब भी जब हम रू डू सेंट-एस्पिरिट में मुड़ते थे, तो घर की खिड़कियों से पश्चिमी आकाश का प्रतिबिंब और कलवरी की तलहटी में बैंगनी रंग की एक पट्टी दिखाई देती थी, जो आगे तालाब में प्रतिबिंबित होती थी; एक ज्वलंत चमक, जो अक्सर जलन और चुभन वाली सर्दी के साथ आती थी, मेरे मन में उस आग की चमक से जुड़ जाती थी जिस पर उस समय चिकन भुन रहा होता था, जो मुझे मेरी सैर में मिले काव्यात्मक आनंद के स्थान पर, अच्छे भोजन, गर्मी और आराम के इंद्रिय सुख प्रदान करने वाला था। लेकिन गर्मियों में, जब हम घर लौटते थे, तो सूरज अस्त नहीं हुआ होता था; और जब हम ऊपर आंटी लियोनी से मिलने गए थे, तो उसकी किरणें, नीचे

उतरते हुए उनकी खिड़की की चौखट को छूती और उस पर टिक जातीं, फिर बड़े भीतरी पर्दों और उन्हें दीवार से बांधने वाली पट्टियों में फंसकर बिखर जातीं और छनकर फैल जातीं; और अंत में, उनकी दराजों वाली अलमारी की नींबू की लकड़ी पर पड़तीं और उस पर सोने के छोटे-छोटे टुकड़े जमा देतीं, कमरे को उसी नाजुक, तिरछी, छायादार किरणों से रोशन कर देतीं जो जंगल के पेड़ों के तनों के बीच गिरती हैं। लेकिन कभी-कभी, हालांकि बहुत कम ही, दराजों वाली अलमारी अपने क्षणिक अलंकरणों को बहुत पहले ही गिरा चुकी होती, और जब हम रू डू सेंट-एस्पिरिट में मुड़ते, तो खिड़की के शीशों की कतार पर पश्चिम के आकाश की कोई रोशनी नहीं दिखाई देती; कलवरी के नीचे स्थित तालाब की चमक फीकी पड़ चुकी होती, कभी-कभी तो वह दूधिया रंग में बदल चुका होता, जबकि चांदनी की एक लंबी किरण, पानी की सतह पर उठने वाली हर लहर से मुड़ती, टूटती और फैलती हुई, उस पर एक छोर से दूसरे छोर तक फैली होती। फिर, जैसे ही हम घर के पास पहुंचते, हमें दरवाजे पर एक आकृति खड़ी दिखाई देती, और माँ मुझसे कहतीं: "हे भगवान! फ्रांस्वा हमारा इंतज़ार कर रही है; तुम्हारी चाची चिंतित होंगी; इसका मतलब है कि हमें देर हो गई है।"

और अपना सामान उतारने में समय बर्बाद किए बिना, हम तुरंत ऊपर मेरी चाची लियोनी के कमरे में जाते, उन्हें आश्वस्त करने के लिए, अपनी शारीरिक उपस्थिति से उन्हें यह साबित करने के लिए कि उनकी सभी निराशावादी कल्पनाएँ झूठी थीं, कि इसके विपरीत, हमारे साथ कुछ भी नहीं हुआ था, बल्कि हम 'गुएरमांटेस के रास्ते' पर चले गए थे, और हे भगवान, जब कोई उस रास्ते पर चलता था, तो मेरी चाची अच्छी तरह जानती थीं कि कोई यह नहीं कह सकता कि वह किस समय घर लौटेगा।

"देखो, फ्रांस्वा," मेरी चाची कहती थीं, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि

वे ज़रूर गुएरमांटेस के रास्ते गए होंगे? हे भगवान! वे ज़रूर भूखे होंगे! और तुम्हारा स्वादिष्ट मटन का टुकड़ा अब तक तो बिल्कुल सूख गया होगा, इतने घंटों से इंतज़ार करने के बाद। अंदर आने का क्या ही समय है! अच्छा, तो तुम गुएरमांटेस के रास्ते चली गईं?"

"लेकिन, लियोनी, मुझे लगा था कि तुम जानती होगी," माँ जवाब देती। "मुझे लगा था कि फ्रांस्वा ने हमें छोटे से गेट से, रसोई-बगीचे से बाहर जाते हुए देख लिया था।"

क्योंकि कॉम्ब्रे के आसपास दो रास्ते थे जिनका इस्तेमाल हम सैर के लिए किया करते थे, और वे इतने विपरीत थे कि हम चुने हुए रास्ते के अनुसार घर से अलग-अलग दरवाज़ों से निकलते थे: एक रास्ता मेसेग्लिस-ला-विनेउज़ की ओर जाता था, जिसे हम 'स्वान का रास्ता' भी कहते थे, क्योंकि वहाँ पहुँचने के लिए एम. स्वान की जागीर की सीमा से होकर गुज़रना पड़ता था, और दूसरा 'गुएरमांटेस का रास्ता'। सच कहूँ तो, मेसेग्लिस-ला-विनेउज़ के बारे में मुझे उस रास्ते के अलावा और कुछ नहीं पता था, और उन अजनबी लोगों के बारे में भी नहीं जो रविवार को कॉम्ब्रे में ताज़ी हवा लेने आते थे, ऐसे लोग जिन्हें उस समय न तो मेरी चाची और न ही हममें से कोई 'बिल्कुल जानता था', और इसलिए हम उन्हें 'मेसेग्लिस से आए हुए लोग' मान लेते थे। जहाँ तक गुएरमांटेस की बात है, मैं उसे एक दिन अच्छी तरह जान जाऊँगा, लेकिन वह दिन अभी आना बाकी था; और, मेरे पूरे बचपन के दौरान, अगर मेसेग्लिस मेरे लिए क्षितिज की तरह दुर्गम था, जो दूर-दूर तक भी नज़रों से ओझल रहता था, उस देश की परतों में छिपा रहता था जो अब कॉम्ब्रे के आसपास के देश से ज़रा भी मिलता-जुलता नहीं था; दूसरी ओर, गुएरमांटेस मेरे लिए 'गुएरमांटेस मार्ग' के अंतिम लक्ष्य से अधिक कुछ नहीं था, जो वास्तविकता से ज़्यादा एक आदर्श था, एक प्रकार का अमूर्त भौगोलिक

शब्द, जैसे उत्तरी ध्रुव या भूमध्य रेखा। और इसलिए मेसेग्लिस तक पहुँचने के लिए 'गुएरमांटेस मार्ग अपनाना', या इसके विपरीत, मुझे उतना ही बेतुका लगता जितना पश्चिम पहुँचने के लिए पूर्व की ओर मुड़ना। मेरे पिता हमेशा 'मेसेग्लिस मार्ग' को मैदान के सबसे सुंदर दृश्य के रूप में और 'गुएरमांटेस मार्ग' को नदी के नज़ारों का प्रतीक बताते थे। इसलिए, मैंने इन दोनों को दो अलग-अलग हिस्सों के रूप में देखते हुए, उनमें एक ऐसा सामंजस्य और एकता स्थापित कर दी थी जो केवल मन की कल्पनाओं में ही पाई जाती है। इनमें से प्रत्येक मार्ग का छोटा सा विवरण भी मुझे अनमोल लगता था, जो पूरे दृश्य की विशेष उत्कृष्टता को दर्शाता था। वहीं, हमारी सैर के शुरुआती चरणों में, जब तक हम किसी एक मार्ग की पवित्र भूमि तक नहीं पहुँच जाते, उनके ठीक बगल में स्थित वे सड़कें, जिन्हें मैदान के आदर्श दृश्य और नदी के आदर्श नज़ारे के रूप में दर्शाया गया था, देखने लायक नहीं थीं, ठीक उसी तरह जैसे किसी उत्साही दर्शक और नाट्य कला प्रेमी के लिए थिएटर की दीवारों के पास से गुजरने वाली छोटी-छोटी गलियाँ देखने लायक नहीं होतीं। लेकिन सबसे बढ़कर, मैंने उनके बीच एक ऐसी दूरी स्थापित की, जो मीलों, गजों और इंचों में मापी जाने वाली दूरी से कहीं अधिक स्पष्ट थी, जो उन्हें एक-दूसरे से अलग करती थी। यह दूरी मेरे मस्तिष्क के उन दो हिस्सों के बीच थी जिनमें मैं उनके बारे में सोचता था। यह मन की उन दूरियों में से एक थी जिसे समय केवल बढ़ाता ही जाता है, जो चीजों को एक-दूसरे से अपरिवर्तनीय रूप से अलग कर देती है, उन्हें हमेशा के लिए अलग-अलग स्तरों पर रखती है। और यह अंतर और भी अधिक पूर्ण हो गया क्योंकि हमारी यह आदत थी कि हम कभी भी एक ही दिन या एक ही सैर के दौरान दोनों रास्तों पर नहीं जाते थे, बल्कि कभी 'मेसेग्लिस मार्ग' पर और कभी 'गुएरमांटेस मार्ग' पर जाते थे। इस आदत ने उन्हें, एक तरह से, बहुत दूर और एक-दूसरे के

अस्तित्व से अनजान, अलग-अलग दोपहरों के बंद पात्रों में कैद कर दिया था, जिनके बीच कोई संवाद संभव नहीं था।

जब हमने 'मेसेग्लिस मार्ग' से जाने का फैसला किया, तो हम (बिना किसी जल्दबाजी के, और भले ही आसमान में बादल छाए हों, क्योंकि पैदल रास्ता बहुत लंबा नहीं था और घर से ज्यादा दूर नहीं था) ऐसे चलते जैसे कहीं जा ही नहीं रहे हों, मेरी चाची के घर के सामने वाले दरवाजे से, जो रू डू सेंट-एस्पिरिट की ओर खुलता था। हमें बंदूक बनाने वाला मिलता, हम अपने पत्र बॉक्स में डालते, रास्ते में हम थियोडोर को फ्रांस्वा की ओर से बताते कि उसका तेल या कॉफी खत्म हो गया है, और हम एम. स्वान के पार्क की सफेद बाड़ के किनारे वाली सड़क से शहर से निकल जाते। वहाँ पहुँचने से पहले ही हमें उनके बकाइन के पेड़ों की खुशबू मिलती, जो अजनबियों का स्वागत करने के लिए खिले रहते थे। अपने हरे-भरे पत्तों के बीच से, लिली के पौधे पार्क की बाड़ के ऊपर उत्सुकता से अपने सफेद या बैंगनी फूलों के गुच्छे फैला रहे थे, जो छाया में भी, उस धूप में चमक रहे थे जिसमें वे नहाए हुए थे। उनमें से कुछ, स्वान के रखवाले के घर, जिसे आर्चर्स लॉज कहा जाता था, के पीछे आधे छिपे हुए, अपने गुलाबी मीनार से उस गॉथिक छत को भी छू रहे थे। वसंत की अप्सराएँ भी इन युवतियों के सामने भद्दी और साधारण लगतीं, जो इस फ्रांसीसी उद्यान में एक फारसी लघुचित्र के शुद्ध और जीवंत रंगों को बरकरार रखे हुए थीं। उनके कोमल शरीर को बाहों में भर लेने और उनके सुगंधित सिर पर सजे तारों जैसे सुनहरे बालों को अपनी ओर खींचने की मेरी तीव्र इच्छा के बावजूद, हम बिना रुके उनके पास से गुजर जाते थे, क्योंकि स्वान की शादी के बाद से मेरे माता-पिता ने टैनसनविले आना बंद कर दिया था, और ताकि ऐसा न लगे कि हम उनके पार्क में झाँक रहे हैं, हम उसकी सीमा के किनारे से गुजरने वाली और फिर सीधे खुले मैदानों तक चढ़ने

वाली सड़क के बजाय, दूसरा रास्ता चुनते थे, जो उसी दिशा में जाता था, लेकिन घुमावदार था, और हमें घर से काफी दूर ले जाता था।

एक दिन मेरे दादाजी ने मेरे पिताजी से कहा: "क्या आपको याद नहीं कि स्वान ने कल हमें बताया था कि उसकी पत्नी और बेटी रीम्स चली गई हैं और वह इस मौके का फायदा उठाकर एक-दो दिन पेरिस में बिताना चाहता है? हम पार्क से होकर जा सकते हैं, क्योंकि महिलाएं घर पर नहीं हैं; इससे हमारा समय थोड़ा कम लगेगा।"

हम बाड़ के पास एक पल के लिए रुके। बकाइन का मौसम लगभग समाप्त हो चुका था; कुछ पेड़ अभी भी ऊँचे बैंगनी झूमरों की तरह अपने छोटे-छोटे फूलों के गुच्छों को ऊपर उठाए हुए थे, लेकिन उनकी पत्तियों के बीच कई जगहों पर, जहाँ एक सप्ताह पहले तक वे सुगंधित झाग की लहरों की तरह खिले हुए थे, अब वे मुरझाए, सूखे और फीके पड़ चुके थे, एक खोखली सी परत की तरह, सूखे और गंधहीन। मेरे दादाजी ने मेरे पिताजी को बताया कि किन-किन मामलों में वह जगह अभी भी वैसी ही दिख रही थी, और अपनी पत्नी की मृत्यु के दिन बूढ़े एम. स्वान के साथ की गई सैर के बाद से उसमें कितना बदलाव आ गया था; और उन्होंने उस सैर की कहानी हमें एक बार फिर सुनाने का अवसर लिया।

हमारे सामने, नास्टर्टियम के फूलों से घिरा एक रास्ता सूरज की तेज रोशनी में घर की ओर ऊपर की ओर जा रहा था। लेकिन हमारे दाहिनी ओर, पार्क दूर तक समतल भूमि पर फैला हुआ था। चारों ओर खड़े ऊंचे पेड़ों की छाया में, स्वान के माता-पिता द्वारा एक 'सजावटी जलधारा' बनाई गई थी, लेकिन उनकी सबसे कृत्रिम रचनाओं में भी, प्रकृति ही वह सामग्री है जिस पर मनुष्य को काम करना पड़ता है; कुछ स्थान अपनी विशेष संप्रभुता के सानिध्य में घिरे रहेंगे, और पार्क के सभी 'सँवारे गए' दृश्यों के बीच अपने शाश्वत ध्वज को वैसे ही बुलंद रखेंगे, जैसे वे किसी

भी मानवीय हस्तक्षेप से दूर, एकांत में खड़े होते, जो हर जगह उन्हें घेरने के लिए लौटता है, उनकी खुली स्थिति की आवश्यकताओं से उत्पन्न होता है, और मनुष्य के हाथों के काम पर खुद को आरोपित करता है। और इस प्रकार, इस कृत्रिम झील की ओर जाने वाले मार्ग के तल पर, नीचे लटकते हुए फॉरगेट-मी-नॉट फूलों और ऊपर पेरीविंकल फूलों से बुनी हुई दो परतों में, जलपरियों के चमकदार, छायादार माथे को बांधने वाली प्राकृतिक, नाजुक, नीली माला देखी जा सकती थी; जबकि आइरिस, अपनी तलवारों की तरह हर दिशा में राजसी प्रचुरता में लहराते हुए, एग्रीमोनी और जल-उगने वाले राजा-कपों पर फैले हुए, झील के राज्य के पीले और बैंगनी रंग के चिथड़े-चिट्टे गौरवशाली लिली के राजदंडों को सुशोभित करते थे।

मैडम स्वान की अनुपस्थिति—जिसने मुझे किसी रास्ते पर उनके प्रकट होने और उस विशेषाधिकार प्राप्त छोटी लड़की द्वारा पहचाने जाने और तिरस्कृत किए जाने के भयानक खतरे से बचा लिया, जिसका बर्गोट मित्र था और जो उसके साथ गिरजाघरों का दौरा किया करती थी—ने टैनसनविले की खोज को, जो अब मुझे पहली बार करने की अनुमति मिली थी, मेरे लिए उदासीनता का विषय बना दिया, फिर भी मेरे दादा और पिता की दृष्टि में संपत्ति को एक नए और क्षणिक आकर्षण से भर दिया, और (पर्वतारोहण पर जाते समय बिल्कुल साफ आसमान की तरह) उस दिशा में टहलने के लिए दिन को असाधारण रूप से अनुकूल बना दिया; मैं चाहता था कि उनका अनुमान गलत साबित हो, किसी चमत्कार से मैडम स्वान अपने पिता के साथ हमारे इतने करीब आ जाएं कि हमें भागने का समय न मिले, और इसलिए हमें उनसे मिलना ही पड़े। और इसलिए, जब मैंने अचानक देखा कि पानी में तैरती हुई एक रस्सी के किनारे घास पर एक पुआल की टोकरी पड़ी हुई है, तो मैंने अपने पिता

और दादाजी का ध्यान दूसरी दिशा में बनाए रखने की पूरी कोशिश की, ताकि वे इस संकेत को न देख सकें कि शायद वह यहाँ रह रही हो। फिर भी, जैसा कि स्वान ने हमें बताया था कि उसे अभी नहीं जाना चाहिए, क्योंकि घर में कुछ लोग ठहरे हुए थे, हो सकता है कि वह रस्सी उन्हीं मेहमानों में से किसी एक की हो। किसी भी रास्ते पर किसी के कदमों की आहट सुनाई नहीं दे रही थी। कहीं किसी ऊँचे पेड़ पर, जो अपनी ऊँचाई में एक मंच जैसा लग रहा था, एक अदृश्य पक्षी, दिन को छोटा दिखाने की बेताब कोशिश में, एक लंबी, निरंतर ध्वनि के साथ चारों ओर फैले एकांत को खोज रहा था, लेकिन उसे तुरंत इतना सर्वसम्मत उत्तर मिला, मौन और स्थिरता की इतनी शक्तिशाली प्रतिध्वनि मिली कि, ऐसा लगता था मानो उसने उस क्षण को हमेशा के लिए रोक लिया हो जिसे वह जल्दी गुजारने की कोशिश कर रहा था। स्थिर आकाश से सूर्य की रोशनी इतनी तीव्र थी कि स्वाभाविक रूप से मन करता था कि उसकी किरणों से बचकर कहीं दूर चले जाएं। यहां तक कि शांत जल, जिस पर सतह के ऊपर मंडराते कीड़े लगातार हमला कर रहे थे, मानो किसी काल्पनिक भंवर का सपना देख रहा हो, उस तैरते हुए कॉर्क को देखकर मेरे मन में पैदा हुई बेचैनी को और बढ़ा रहा था, मानो वह उसे दर्पण जैसे शांत आकाश में पूरी गति से खींच रहा हो; अब लगभग सीधा खड़ा, ऐसा लग रहा था मानो वह आंखों से ओझल होने वाला हो, और मैं खुद से पूछने लगा था कि क्या उससे मिलने की लालसा और भय को एक तरफ रखकर, मैडम स्वान को यह बताना मेरा कर्तव्य नहीं था कि मछली चारा खा रही है—तभी मुझे अपने पिता और दादाजी के पीछे भागना पड़ा, जो मुझे पुकार रहे थे, और यह देखकर आश्चर्यचकित थे कि मैं उनके पीछे उस छोटे रास्ते पर क्यों नहीं गया, जो पहाड़ी पर चढ़कर खुले खेतों की ओर जाता था, जहां वे पहले ही मुड़ चुके थे। मुझे पूरा रास्ता नागफनी के फूलों

की सुगंध से सराबोर मिला। झाड़ीनुमा बाड़ किसी चैपल की श्रृंखला जैसी लग रही थी, जिनकी दीवारें वेदियों पर सजे फूलों के ढेर के नीचे दबकर दिखाई नहीं दे रही थीं; वहीं नीचे, सूरज की रोशनी ज़मीन पर एक चौकोर आकृति में पड़ रही थी, मानो किसी खिड़की से उन पर पड़ रही हो; उनसे आने वाली सुगंध इतनी समृद्ध और सीमित थी, मानो मैं देवी की वेदी के सामने खड़ा हूँ, और फूल, स्वयं भी सजे हुए, अपने-अपने चमकदार पुंकेसरों के छोटे-छोटे गुच्छों को लापरवाही से फैलाए हुए थे, वास्तुकला की भव्य शैली में महीन, विकिरण करती हुई 'नसें', जैसे कि चर्च में वे सीढ़ियाँ होती हैं या खिड़कियों की लंबवत नक्काशी को बंद करती हैं, लेकिन यहाँ वे रसीले सफेद रंग के तालाबों में फैली हुई थीं, जैसे वसंत ऋतु में स्ट्रॉबेरी के क्यारियां। इन सबके मुकाबले, कुछ ही हफ्तों में, सूरज की गर्मी में उसी पहाड़ी रास्ते पर चढ़ने वाले जंगली गुलाब कितने सरल और देहाती प्रतीत होंगे, जो अपने गुलाबी रंग के मुलायम रेशमी आवरण में लिपटे होंगे, जो हवा के पहले झोंके से खुल कर बिखर जाएंगे।

लेकिन नागफनी के पेड़ों के सामने रुकना, उनकी सुगंध को महसूस करना, उन्हें संजोना (जो समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे), व्यर्थ था! उनकी अदृश्य और अपरिवर्तनीय सुगंध को भूलकर फिर से महसूस करने की कोशिश, उनके फूलों की लय में लीन हो जाना, जो यौवन के हल्केपन के साथ इधर-उधर खिलते थे, और संगीत की लय की तरह अप्रत्याशित अंतरालों पर; उन्होंने मुझे उसी आकर्षण का अनंत विस्तार दिया, एक अटूट प्रचुरता में, लेकिन मुझे उसमें और गहराई से उतरने नहीं दिया, उन धुनों की तरह जिन्हें सौ बार लगातार बजाने पर भी उनके रहस्य के करीब नहीं पहुंचा जा सकता। मैं एक पल के लिए उनसे दूर हो गया ताकि नई शक्ति के साथ उनके पास लौट सकूं। मेरी निगाहें ढलान पर ऊपर की ओर गईं, जो बाड़ के बाहर खेतों की ओर तेज़ी से ऊपर उठ रही थी। एक

अफीम का फूल अपने साथियों से बिछड़कर खो गया था, या कुछ कॉर्नफ्लावर आलस से पीछे छूट गए थे, और जगह-जगह ज़मीन को अपने फूलों से इस तरह सजा रहे थे जैसे किसी टेपेस्ट्री का किनारा हो, जिसमें बीच-बीच में देहाती माहौल की झलक दिखाई देती हो, जो खुद पैनल में विजयी प्रतीत होता है; फिर भी, बिखरे हुए घरों की तरह दूर-दूर फैले हुए, जो हमें चेतावनी देते हैं कि हम किसी गाँव के पास पहुँच रहे हैं, वे मुझे ऊनी बादलों के नीचे लहराते हुए विशाल अनाज के मैदान का संकेत दे रहे थे। एक अकेला अफीम का फूल अपनी पतली रस्सियों पर लहराता हुआ, हवा के विपरीत अपना लाल झंडा थामे, उस उपजाऊ काली मिट्टी के टीले के ऊपर जहाँ से वह उगा था, उसे देखकर मेरा दिल ऐसे धड़क उठा जैसे किसी राहगीर का धड़कता है जब वह किसी निचले इलाके में एक पुरानी और टूटी हुई नाव को देखता है जिसकी मरम्मत की जा रही हो और उसे समुद्र में चलने लायक बनाया जा रहा हो, और चिल्लाता है, हालाँकि उसने अभी तक उसे देखा भी नहीं है, "समुद्र!"

फिर मैं अपने नागफनी के पौधों के पास लौट आया और उनके सामने ऐसे खड़ा हो गया जैसे कोई उन उत्कृष्ट चित्रकलाओं के सामने खड़ा होता है, जिन्हें देखकर लगता है कि क्षण भर के लिए किसी और चीज़ पर नज़र हटाने के बाद उन्हें बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा; लेकिन व्यर्थ ही मैंने अपनी उंगलियों को इस तरह से बांधने की कोशिश की कि मेरी आँखों के सामने केवल नागफनी के पौधे ही रहें; उनके द्वारा मेरे भीतर उत्पन्न भावना अस्पष्ट और धुंधली ही रही, खुद को मुक्त करने, फूलों के बीच तैरने और उनमें विलीन होने के लिए संघर्ष करती रही, लेकिन असफल रही। उन्होंने स्वयं मुझे कोई ज्ञान नहीं दिया, और मैं किसी अन्य फूल से इस रहस्यमय लालसा को शांत करने का आह्वान भी नहीं कर सका। और फिर, उस आनंद से भर उठे जो हमें अपने पसंदीदा चित्रकार की किसी

ऐसी कृति को देखकर होता है जो हम पहले से जानते हैं उससे बिल्कुल अलग हो, या उससे भी बेहतर, जब कोई हमें किसी ऐसे चित्र के सामने बिठा दे जिसका हमने अब तक केवल एक रेखाचित्र ही देखा हो, या जब कोई संगीत जिसे हमने पियानो पर बजते हुए सुना हो, एक ऑर्केस्ट्रा की पूरी भव्यता और परिपूर्णता के साथ हमारे कानों में फिर से गूंज उठे, मेरे दादाजी ने मुझे अपने पास बुलाया और टैनसनविले की झाड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा: "तुम्हें नागफनी के पेड़ बहुत पसंद हैं; इस गुलाबी वाले को देखो; क्या यह सुंदर नहीं है?"

और यह सचमुच एक नागफनी का पेड़ था, लेकिन इसके फूल गुलाबी थे, जो सफेद फूलों से भी कहीं अधिक सुंदर थे। यह भी उत्सव के माहौल में था, उन दिनों में से एक जो वास्तव में त्योहार होते हैं, धर्म के पवित्र दिन, क्योंकि वे किसी आकस्मिक संयोग से निर्धारित नहीं होते, जैसे कि धर्मनिरपेक्ष त्योहार निर्धारित होते हैं, ऐसे दिनों में जो विशेष रूप से ऐसे अनुष्ठानों के लिए निर्धारित नहीं होते, जिनमें कुछ भी उत्सव जैसा नहीं होता—लेकिन यह बाकियों से भी अधिक भव्य रूप से सजा हुआ था, क्योंकि इसकी शाखाओं पर एक के ऊपर एक इतने घने फूल लगे थे कि पेड़ का कोई भी हिस्सा बिना सजावट के नहीं बचा था, जैसे किसी रोकोको शैली की चरवाहे की कुंडी पर लटके हुए गुच्छे, वे सभी रंगीन थे, और इसलिए कॉम्ब्रे के सौंदर्य मानकों के अनुसार, साधारण फूलों की तुलना में श्रेष्ठ गुणवत्ता के थे, यदि चौक में स्थित दुकानों या कैमस की दुकान पर कीमतों के पैमाने को देखा जाए, जहाँ सबसे महंगे बिस्कुट वे थे जिनकी चीनी गुलाबी थी। और जहाँ तक मेरी बात है, मुझे क्रीम चीज़ तब ज़्यादा पसंद आती थी जब वह गुलाबी होती थी, जब मुझे उसमें कुचली हुई स्ट्रॉबेरी मिलाकर उसे रंगने की अनुमति दी जाती थी। और इन फूलों ने ठीक वही रंग चुना था जो किसी खाने योग्य और स्वादिष्ट चीज़ का होता

है, या किसी बड़े त्योहार के लिए किसी के पहनावे में जोड़े जाने वाले किसी सुंदर आभूषण का, और ये रंग, अपनी श्रेष्ठता का कारण स्पष्ट करते हुए, बच्चों की आँखों को सबसे ज़्यादा सुंदर लगते हैं, और इसी कारण से ये हमेशा अन्य रंगों की तुलना में अधिक जीवंत और प्राकृतिक प्रतीत होते हैं, भले ही बच्चे का मन यह समझ ले कि ये रंग भूख को संतुष्ट नहीं करते और इन्हें दर्जी ने नहीं चुना है। और सचमुच, मुझे वही अहसास हुआ जो मुझे सफेद फूलों के सामने हुआ था, लेकिन अब और भी अधिक आश्चर्य के साथ, कि इन फूलों का उत्सवपूर्ण उद्देश्य किसी कृत्रिम तरीके से, किसी मानवीय रचना से प्रकट नहीं हुआ था, बल्कि यह स्वयं प्रकृति थी जिसने सहज रूप से इसे व्यक्त किया था (किसी जुलूस के लिए सड़क के वेदी को सजाने में लगी एक गांव की दुकान की महिला की सादगी के साथ) झाड़ी को इन छोटे-छोटे गुलाबों से ढक कर, जो रंग में लगभग अति आकर्षक थे, यह देहाती 'पोम्पाडोर'। ऊँची शाखाओं पर, उन नन्हे-नन्हे गुलाब के पेड़ों की तरह, जिनके गमले कागज़ की जालीदार जैकेटों में ढके होते हैं, जिनकी पतली टहनियाँ बड़े त्योहारों पर वेदी से जंगल की तरह उगती हैं, हज़ार कलियाँ फूल रही थीं और खिल रही थीं, रंग में हल्की, लेकिन खिलते ही हर एक कलियाँ गुलाबी संगमरमर के प्याले की तलहटी की तरह अपना गहरा लाल रंग दिखा रही थी, और खिले हुए फूलों से भी कहीं अधिक मजबूती से उस नागफनी के पेड़ के विशेष, अप्रतिरोध्य गुण को दर्शा रही थी, जो जहाँ कहीं भी कली खिलती थी, जहाँ कहीं भी खिलने वाली होती थी, केवल गुलाबी फूलों से ही खिल सकती थी। झाड़ी में अपनी जगह लेते हुए, लेकिन बाकियों से इस तरह अलग जैसे त्योहारों के परिधान में सजी कोई युवती रोज़मर्रा के कपड़ों में घर पर बैठी, 'मेयर के महीने' के लिए तैयार, जिसका वह पहले से ही एक हिस्सा प्रतीत हो रही थी, अपने ठंडे, गुलाबी वस्त्रों में चमक रही थी और

मुस्कुरा रही थी, सचमुच एक कैथोलिक झाड़ी, और पूरी तरह से मनमोहक।

झाड़ी से हमें पार्क के अंदर एक गली की झलक मिली, जो चमेली, पैंसी और वर्बेना से घिरी हुई थी। इन फूलों के बीच स्टॉक के पौधे अपने ताज़े, भरे-पूरे गुच्छों की तरह खिले हुए थे, जिनका गुलाबी रंग पुराने स्पेनिश चमड़े की तरह सुगंधित और फीका था। वहीं बजरी वाले रास्ते पर एक लंबी, हरे रंग से रंगी हुई पानी की पाइप ज़मीन पर कुंडली मारकर जा रही थी, और उसके छेदों से फूलों पर पानी की बूंदें गिर रही थीं, जिनकी सुगंध उन छेदों से अंदर ली जा रही थी। ये बूंदें इंद्रधनुषी रंगों की थीं और एक ऊर्ध्वाधर, प्रिज्मीय पंखा बना रही थीं। अचानक मैं वहीं जम गया, हिलने में असमर्थ, जैसा कि तब होता है जब कोई ऐसी चीज़ दिखाई देती है जिसे देखने के लिए न केवल हमारी आँखों की ज़रूरत होती है, बल्कि एक गहरी अनुभूति की भी आवश्यकता होती है और जो हमारे पूरे अस्तित्व पर हावी हो जाती है। सुनहरे, लाल बालों वाली एक छोटी लड़की, जो टहलने से लौटती हुई प्रतीत हो रही थी, हाथ में एक खुरपी लिए हमारी ओर देख रही थी, और गुलाबी धब्बों से सजे अपने चेहरे को हमारी ओर उठा रही थी। उसकी काली आँखें चमक रही थीं, और उस समय मुझे यह नहीं पता था, और वास्तव में तब से मैं कभी भी किसी भी प्रबल प्रभाव को उसके वस्तुनिष्ठ तत्वों में समेटना नहीं सीख पाया हूँ, क्योंकि मेरे पास, जैसा कि वे कहते हैं, उनकी आँखों के रंग को अलग करने के लिए पर्याप्त 'अवलोकन शक्ति' नहीं थी। इसलिए, लंबे समय तक, जब भी मैं उसके बारे में सोचता, उन चमकीली आँखों की स्मृति तुरंत मेरे सामने एक जीवंत नीले रंग के रूप में उभर आती, क्योंकि उसका रंग गोरा था; इतना कि, शायद, अगर उसकी आँखें इतनी काली न होतीं—जो पहली मुलाकात में सबसे अधिक प्रभावित करने वाली बात थी

—तो मैं उनकी काल्पनिक नीली रंगत से इतना मोहित न होता जितना मैं हुआ था।

मैंने उसे निहारा, पहले उस नज़र से जो केवल आँखों का संदेशवाहक नहीं होती, बल्कि जिसकी खिड़की में सभी इंद्रियाँ एकत्रित होकर भयभीत और चिंतित होकर बाहर की ओर झुक जाती हैं, वह नज़र जो शरीर को छूना, पकड़ना, विजयपूर्वक अपने साथ ले जाना चाहती है, और आत्मा को भी शरीर के साथ ले जाना चाहती है; फिर (मैं इतना भयभीत था कि कहीं मेरे दादा और पिता, लड़की को देखकर, मुझे उससे छीन न लें और मुझे उनके आगे दौड़ने के लिए मजबूर न कर दें) एक और, अनजाने में विनती भरी नज़र से, जिसका उद्देश्य उसे मेरी ओर ध्यान देने, मुझे देखने, मुझे जानने के लिए विवश करना था। उसने मेरे दादा और पिता का जायजा लेने के लिए आगे और अगल-बगल एक नज़र डाली, और निस्संदेह उनके बारे में उसकी यही धारणा बनी कि हम सब मूर्ख लोग हैं, क्योंकि वह उदासीन और तिरस्कारपूर्ण भाव से मुँह फेर लिया, खुद को इस तरह पीछे कर लिया ताकि उसका चेहरा उनकी दृष्टि में रहने की शर्मिंदगी से बच सके; और जब वे उसे देखे बिना आगे बढ़ते रहे और मुझसे आगे निकल गए, तो उसने बिना किसी विशेष भाव के, बिना मुझे देखे, बल्कि एक तीव्र, अर्ध-छिपी मुस्कान के साथ, हमारे बीच की दूरी पर मेरी ओर अपनी निगाहें घुमाईं। शिष्टाचार के बारे में मुझे जो शिक्षा मिली थी, उसके अनुसार मैं इसे असीम घृणा के संकेत के अलावा और कुछ नहीं समझ सका; और उसी समय, उसके हाथ ने हवा में एक अभद्र इशारा किया, जिसका, जब सार्वजनिक रूप से किसी अपरिचित व्यक्ति के प्रति किया जाता है, तो मेरे मन में मौजूद शिष्टाचार के छोटे से शब्दकोश में केवल एक ही अर्थ निकलता है, अर्थात्, जानबूझकर किया गया अपमान।

"गिलबर्ट, मेरे साथ आओ; तुम क्या कर रही हो?" सफेद कपड़े पहने एक महिला ने, जिसे मैंने उस क्षण तक नहीं देखा था, अधिकारपूर्ण और तीखे स्वर में पुकारा, जबकि उससे थोड़ी दूरी पर, लिनेन के सूट में एक सज्जन, जिसे मैं भी नहीं जानता था, मुझे ऐसी निगाहों से घूर रहा था मानो उसकी आंखें उसके सिर से निकल आई हों; छोटी लड़की की मुस्कान अचानक गायब हो गई, और उसने अपना करनी उठाया और बिना मेरी ओर देखे, आज्ञाकारी भाव से, रहस्यमय और धूर्तता से चली गई।

और इस तरह मेरे कानों में गिलबर्ट का नाम गूंजा, मानो कोई ताबीज हो, जो शायद मुझे किसी दिन उसे फिर से खोजने में सक्षम बना दे, जिसे उसके शब्दों ने अभी-अभी एक निश्चित व्यक्तित्व प्रदान किया था, जबकि क्षण भर पहले वह केवल धुंधली सी दिखाई दे रही थी। तो यह नाम मुझ तक पहुंचा, स्टॉक और चमेली के फूलों के बीच से निकलता हुआ, हरी पानी की पाइप से गिरती बूंदों की तरह तीखा और ठंडा; उस शुद्ध हवा के क्षेत्र को भरते और रोशन करते हुए, जिससे यह गुजरा था, जिसे इसने अन्य सभी हवा से अलग और पृथक कर दिया था, उस रहस्य से जिसे इसके शब्द उन सुखी प्राणियों को दर्शाते थे जो उसके साथ रहते, चलते और यात्रा करते थे; गुलाबी नागफनी के मेहराब से, जो मेरे कंधे की ऊंचाई तक खुला था, उनके साथ उसकी आत्मीयता का सार प्रकट हुआ —जो मेरे लिए अत्यंत पीड़ादायक था—और उसके अस्तित्व के उस अज्ञात संसार से, जिसमें मैं कभी प्रवेश नहीं कर पाऊंगा।

एक पल के लिए (जब हम वहाँ से चले गए, और मेरे दादाजी धीरे से बोले: "बेचारा स्वान, ये लोग उसे कैसी जिंदगी दे रहे हैं; सोचो उसे दूर भेज दिया ताकि वो अपने चार्लस के साथ अकेली रह सके—क्योंकि वो चार्लस ही था: मैंने उसे तुरंत पहचान लिया! और बच्ची भी; उसकी उम्र

में, इन सब झंझटों में फँसना!") गिलबर्ट की माँ ने जिस निरंकुश लहजे में उससे बात की थी, बिना उसके जवाब दिए, उसे किसी और की आज्ञा मानने के लिए बाध्य दिखाया था, उसे पूरी दुनिया से श्रेष्ठ नहीं माना था, उस बात ने मेरे मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा। इससे मेरे दुख कुछ कम हुए, मुझमें कुछ उम्मीद जागी और मेरे प्यार का जोश ठंडा पड़ गया। लेकिन बहुत जल्द ही वो प्यार मुझमें फिर से उमड़ आया, जैसे कोई प्रतिक्रिया हो जिससे मेरा अपमानित हृदय गिलबर्ट के स्तर तक पहुँचने या उसे अपने स्तर तक नीचे खींचने की कोशिश कर रहा हो। मैं उससे प्यार करता था; मुझे इस बात का अफसोस था कि मुझे उसे अपमानित करने, उसे कुछ चोट पहुँचाने, उसे मेरी कोई याद रखने के लिए मजबूर करने का समय और प्रेरणा नहीं मिली। मैं जानता था कि वह इतनी सुंदर थी कि मैं अपने कदम पीछे हटाकर उस पर मुट्ठी तानकर चिल्लाना चाहता था, "मैं तुम्हें बदसूरत, भद्दा और बेहद घिनौना समझता हूँ!" लेकिन मैं वहाँ से चला गया, और अपने साथ उस पल और उसके बाद हमेशा के लिए, एक ऐसी खुशी के पहले उदाहरण के रूप में, जो प्रकृति के कुछ नियमों के कारण, जिन्हें तोड़ना असंभव था, मुझ जैसे छोटे लड़के के लिए अप्राप्य बना दी गई थी, एक लाल बालों वाली, गुलाबी धब्बों से सजी त्वचा वाली छोटी लड़की की तस्वीर लिए हुए, जिसके हाथ में एक करनी थी, और जो मुस्कुराते हुए मेरी ओर एक लंबी, सूक्ष्म और भावहीन निगाह से देख रही थी। और पहले से ही, उसके नाम का वो आकर्षण, जो अगरबत्ती के बादल की तरह, गुलाबी नागफनी के उस मेहराब को भर देता था, जिसके माध्यम से हम दोनों ने एक साथ उसकी ध्वनि सुनी थी, धीरे-धीरे हर उस चीज़ को जीतना, ढकना, संजोना और सुंदर बनाना शुरू कर रहा था जिससे उसका कोई संबंध था: उसके दादा-दादी, जिन्हें जानने का सौभाग्य मुझे मिला था, एक शेयरधारक का गौरवशाली पेशा, यहाँ तक

कि पेरिस में चैंप्स-एलिसी का उदास इलाका भी, जहाँ वह रहती थी। लौटते ही मेरे दादाजी ने कहा, "लियोनी, काश आज दोपहर तुम हमारे साथ होती। तुम टैनसनविले को कभी जान ही नहीं पातीं। अगर मुझमें हिम्मत होती तो मैं तुम्हारे लिए उस गुलाबी नागफनी की एक टहनी तोड़ लाता जो तुम्हें बहुत पसंद थी।" और इस तरह मेरे दादाजी ने उसे हमारी सैर की कहानी सुनाई, शायद उसे हंसाने के लिए, या शायद इसलिए कि अब भी कुछ उम्मीद थी कि वह बिस्तर से उठकर बाहर निकलेगी। क्योंकि पहले उसे टैनसनविले बहुत पसंद था, और इसके अलावा, स्वान की मुलाक़ातें ही आखिरी मुलाक़ातें थीं जो उसे मिलती रहीं, उस समय जब उसने दुनिया के लिए अपने दरवाजे बंद कर लिए थे। और जैसे, जब वह बाद के दिनों में उससे मिलने के लिए फोन करता (और वह हमारे घर में इकलौती वही थी जिससे वह मिलना चाहता था), तो वह नीचे संदेश भेजकर कहती कि वह इस समय थकी हुई है और आराम कर रही है, लेकिन किसी और दिन उससे मिलकर उसे खुशी होगी, वैसे ही आज शाम उसने मेरे दादाजी से कहा, "हाँ, किसी दिन जब मौसम अच्छा होगा तो मैं पार्क के गेट तक गाड़ी में घूमने जाऊंगी।" और यह कहते हुए वह पूरी तरह से सच्ची थी। वह स्वान और टैनसनविले को फिर से देखना चाहती थी; लेकिन ऐसा करने की इच्छा मात्र ही उसकी बची हुई सारी शक्ति के लिए काफी थी, जिसे पूरा करने से वह पूरी तरह से थक जाती। कभी-कभी अच्छे मौसम से उसे थोड़ी और ऊर्जा मिल जाती, वह उठकर कपड़े पहन लेती; लेकिन बाहरी कमरे तक पहुँचने से पहले ही वह फिर से 'थक' जाती और अपने बिस्तर पर वापस जाने की जिद करती। उनमें जो प्रक्रिया शुरू हुई थी—और हम सभी के लिए अनिवार्य रूप से आने वाली प्रक्रिया से कुछ ही समय पहले—वह बुढ़ापे में मृत्यु की तैयारी में किया जाने वाला महान और व्यापक त्याग था, जीवन का वह प्रारंभिक चरण,

जो जीवन के अनावश्यक रूप से लंबे होने पर हर जगह देखा जा सकता है; यहाँ तक कि उन पुराने प्रेमियों में भी जिन्होंने एक-दूसरे के लिए अत्यंत तीव्र प्रेम से जीवन व्यतीत किया है, और उन पुराने मित्रों में भी जो मानसिक सहानुभूति के घनिष्ठ बंधन से बंधे हैं, जो एक निश्चित वर्ष के बाद, आवश्यक यात्रा करना या एक-दूसरे को देखने के लिए गली पार करना भी बंद कर देते हैं, पत्र-व्यवहार करना बंद कर देते हैं, और अच्छी तरह जानते हैं कि वे इस दुनिया में अब और संवाद नहीं करेंगे। मेरी चाची को यह भलीभांति पता होगा कि वह स्वान को फिर कभी नहीं देख पाएंगी, कि वह अब कभी अपने घर से बाहर नहीं निकलेंगी, लेकिन इस अंतिम एकांत को उन्होंने और भी अधिक सहजता से स्वीकार कर लिया, ठीक उसी कारण से जो हमारे विचार में इसे और भी असहनीय बना देना चाहिए था; अर्थात्, ऐसा एकांतवास उस पर उसकी धीरे-धीरे और लगातार घटती हुई शक्ति के कारण विवश हो गया था, जिसका वह प्रतिदिन आकलन करने में सक्षम थी, जिसने उसके लिए हर क्रिया, हर गतिविधि को 'थका देने वाला' बना दिया था, भले ही वह वास्तव में दर्दनाक न हो, और इस प्रकार निष्क्रियता, अलगाव और मौन को विश्राम का एक धन्य, शक्तिवर्धक और ताजगी भरा आकर्षण प्रदान किया।

मेरी चाची झाड़ी में लगे गुलाबी नागफनी के फूल को देखने नहीं गईं, लेकिन दिन भर मैं अपने परिवार के बाकी सदस्यों से पूछता रहता था कि क्या वह नहीं जाएंगी, क्या वह कभी टैनसनविले अक्सर नहीं जाया करती थीं, और उन्हें माइल के बारे में बात करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश करता रहता था। स्वान के माता-पिता और दादा-दादी, जो मुझे देवताओं के समान महान और गौरवशाली प्रतीत होते थे। स्वान का नाम, जो मेरे लिए लगभग पौराणिक बन गया था—जब मैं अपने परिवार से बात करता था तो मुझे उन्हें यह नाम बोलते हुए सुनने की तीव्र इच्छा होती थी; मैं खुद

इसका उच्चारण करने की हिम्मत नहीं करता था, लेकिन मैं उन्हें ऐसी चर्चा में खींच लेता था जो स्वाभाविक रूप से गिल्बर्ट और उसके परिवार की ओर ले जाती थी, जिसमें वह शामिल थी, जिसके बारे में बात करते हुए मुझे ऐसा लगता था कि मैं उसकी संगति से बहुत दूर हो गया हूँ; और मैं अचानक अपने पिता को (उदाहरण के लिए, यह दिखावा करके कि मेरे दादाजी का व्यवसाय उनके जाने से पहले से ही हमारे परिवार में था, या यह कि गुलाबी नागफनी वाली वह बाड़ जिसे मेरी चाची लियोनी देखना चाहती थीं, सार्वजनिक भूमि पर थी) अपने कथनों को सुधारने के लिए मजबूर कर देता, मानो मेरे विरोध में और अपनी मर्जी से कहता: "नहीं, नहीं, वह व्यवसाय स्वान के पिता का था, वह बाड़ स्वान के पार्क का हिस्सा है।" और फिर मुझे सांस लेने के लिए रुकना पड़ता; उस नाम का दबाव इतना घुटन भरा होता, मेरे उस हिस्से पर जहाँ वह नाम हमेशा के लिए अंकित था, जो उस क्षण मुझे किसी भी अन्य नाम से अधिक व्यापक, अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत हुआ, क्योंकि वह उन सभी अवसरों के भार से बोझिल था जब मैंने उसे चुपके से अपने मन में उच्चारित किया था। इससे मुझे ऐसा आनंद मिला जिसे अपने माता-पिता से मांगने की हिम्मत करने में मुझे शर्म आती थी, क्योंकि यह इतना महान था कि इसे मेरे लिए प्राप्त करने में उन्हें अथक परिश्रम करना पड़ा होगा, और वह भी बिना किसी प्रतिफल के, क्योंकि उनके लिए उस ध्वनि में कोई आनंद नहीं था। इसलिए मैं समझदारी से बातचीत का रुख मोड़ देता था। और अंतरात्मा की आवाज से भी। स्वान शब्द की ध्वनि में जो भी अनोखे आकर्षण मैंने संजो रखे थे, वे उसके उच्चारण होते ही फिर से प्रकट हो जाते थे। और फिर अचानक मुझे एहसास हुआ कि मेरे माता-पिता भी निश्चित रूप से वही भावनाएं महसूस कर रहे होंगे, कि वे भी मेरे दृष्टिकोण से सहमत होंगे, कि वे भी मेरी भावनाओं को समझते होंगे, कि वे मेरी

कल्पनाओं को स्वीकार करते होंगे, कि वे भी मेरी इच्छाओं को गले लगाते होंगे, और मैं उतना ही दुखी था मानो मैंने उनके हृदय की पवित्रता को भंग कर दिया हो।

उस साल मेरे परिवार ने पेरिस लौटने का दिन सामान्य से थोड़ा पहले तय कर लिया था। प्रस्थान की सुबह मैंने फोटोग्राफर का सामना करने के लिए अपने बालों को कर्ल करवाया था, सिर पर एक नई टोपी बड़े ध्यान से रखी थी और मखमली जैकेट पहनी थी; थोड़ी देर बाद मेरी माँ ने मुझे हर जगह ढूंढने के बाद पाया कि मैं टैनसनविले के पास उस छोटी सी ढलान पर आँसुओं में डूबी खड़ी थी, अपने कंटीले पौधों को अलविदा कह रही थी, उनकी नुकीली शाखाओं को अपने सीने से लगाए हुए थी, और (किसी त्रासदी की राजकुमारी की तरह, अपने सारे बेमतलब के गहनों के बोझ तले दबी हुई) उस लापरवाह हाथ के प्रति कोई कृतज्ञता नहीं दिखा रही थी जिसने मेरे बालों को कर्ल करते समय इतनी मेहनत से मेरे सारे बालों को मेरे माथे पर इकट्ठा किया था; मेरे सिर से फाड़े गए कर्ल-पेपर और मेरी नई टोपी को पैरों तले रौंद दिया था। मेरी माँ मेरे आँसुओं से बिल्कुल भी प्रभावित नहीं हुईं, लेकिन मेरी फटी हुई टोपी और खराब जैकेट को देखकर वह अपनी चीखों को रोक नहीं पाईं। हालाँकि, मैंने उनकी आवाज़ नहीं सुनी। "ओह, मेरे प्यारे छोटे हॉथॉर्न," मैं सिसकते हुए उन्हें दिलासा दे रही थी, "तुम मुझे दुखी नहीं करना चाहते, मुझे तुमसे दूर जाने के लिए मजबूर नहीं करना चाहते। तुमने मुझे कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। इसलिए मैं तुम्हें हमेशा प्यार करूंगी।" और, अपनी आँखें पोंछते हुए, मैंने उनसे वादा किया कि जब मैं बड़ी हो जाऊंगी, तो मैं कभी भी दूसरे पुरुषों के मूर्खतापूर्ण उदाहरण का अनुकरण नहीं करूंगी, बल्कि पेरिस में भी, वसंत के सुहावने दिनों में, लोगों से मिलने और फिजूल की बातें सुनने के बजाय, मैं गाँव की सैर पर जाऊंगी ताकि खिलते हुए पहले

हॉथॉर्न के पेड़ों को देख सकूँ।

खेतों में पहुँचने के बाद, मेसेग्लिस की अपनी बाकी यात्रा के दौरान हमने उन्हें कभी नहीं छोड़ा। वे लगातार हवा से घिरे रहते थे, मानो अदृश्य यातायात की धाराएँ बह रही हों, जो मेरे लिए कॉम्ब्रे की संरक्षक शक्ति थी। हर साल, अपने आगमन के दिन, यह महसूस करने के लिए कि मैं वास्तव में कॉम्ब्रे में हूँ, मैं पहाड़ी पर चढ़ता था और हवा को अपने कपड़ों के बीच से फिर से बहते हुए पाता था, जो मुझे अपने पीछे दौड़ाती थी। 'मेसेग्लिस मार्ग' पर चलते समय, उस विशाल मैदान पर, जो मीलों तक फैला हुआ था, बिना किसी बाधा के अपनी कोमल आकृति को बदले, हवा हमेशा साथी होती थी। मुझे पता था कि मैडम स्वान अक्सर लाओन में कुछ दिन बिताने जाया करती थीं, और यद्यपि यह कई मील दूर था, लेकिन बीच में किसी बाधा के न होने के कारण दूरी का कोई आभास नहीं होता था; जब उमस भरी दोपहरों में, मैं दूर क्षितिज से आती हवा का एक झोंका देखता, जो दूर खेतों में अनाज की बालियों को झुका देता, उस विशाल मैदान पर बाढ़ की तरह बह निकलता, और अंत में मेरे पैरों के पास तिपतिया घास और सेन्फोइन के बीच गर्म और सरसराती हुई ठहर जाती, तो वह मैदान, जो हम दोनों के लिए साझा था, हमें एक साथ खींचता हुआ, हमें एकजुट करता हुआ प्रतीत होता; मैं कल्पना करता कि वही हवा उसके पास से भी गुजरी है, कि वह मुझसे कुछ फुसफुसा रही है, जिसे मैं समझ नहीं पा रहा हूँ, और मैं गुजरते ही उसे थाम लेता और चूम लेता। मेरे बाईं ओर शैम्पियू नामक एक गाँव था (क्यूरे के अनुसार कैम्पस पगानी)। मेरे दाईं ओर मैं अनाज के खेतों के पार सेंट-आंद्रे-डेस-शैम्प्स के दो नुकीले, देहाती शिखर देख सकता था, जो स्वयं गेहूँ की दो बालियों की तरह नुकीले, पपड़ीदार, परतदार, मधुकोशनुमा, पीले और खुरदुरे थे।

सेब के पेड़ अपने पत्तों की अनूठी सजावट के बीच, जो किसी अन्य फल के पेड़ के पत्तों से बिल्कुल अलग थे, नियमित अंतराल पर अपनी चौड़ी सफेद रेशमी पंखुड़ियाँ बिखेर रहे थे, या शर्मीले गुच्छों में अपनी न खिली, गुलाबी कलियों को लटकाए हुए थे। 'मेसेग्लिस मार्ग' पर चलते हुए ही मैंने पहली बार सेब के पेड़ों की धूप से जगमगाती ज़मीन पर पड़ने वाली गोलाकार छाया देखी, और साथ ही उन सुनहरे रेशमी धागों को भी देखा जिन्हें ढलता सूरज पत्तों के नीचे से तिरछी दिशा में बुनता था, और जिन्हें मैं अपने पिता को अपनी छड़ी से काटते हुए देखता था, लेकिन वे कभी भी अपने सीधे रास्ते से नहीं हटते थे।

कभी-कभी दोपहर के आकाश में एक सफेद चाँद एक छोटे बादल की तरह चुपके से, बिना किसी दिखावे के, ऊपर उठता था, मानो कोई अभिनेत्री हो जिसे अभी कुछ देर के लिए 'प्रवेश' करने की ज़रूरत नहीं है, और इसलिए वह अपने साधारण कपड़ों में कुछ पल के लिए बाकी लोगों को देखती है, लेकिन पृष्ठभूमि में ही रहती है, ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहती। मुझे किताबों और चित्रों में उसकी छवि देखकर खुशी हुई, हालाँकि ये कलाकृतियाँ बहुत अलग थीं—कम से कम मेरे शुरुआती वर्षों में, जब तक ब्लोच ने मेरी आँखों और मन को अधिक सूक्ष्म सामंजस्य के लिए अभ्यस्त नहीं किया था—उन कलाकृतियों से जिनमें चाँद आज मुझे सुंदर लगता है, लेकिन जिनमें मैं उसे तब पहचान नहीं पाता। उदाहरण के लिए, यह सेंटाइन का कोई उपन्यास हो सकता है, ग्लेयर का कोई परिदृश्य चित्र, जिसमें वह आकाश के सामने एक चाँदी की हँसिया के रूप में स्पष्ट रूप से उकेरी गई हो, कोई ऐसी रचना जो उतनी ही सरल और अधूरी हो जितनी उस समय मेरी अपनी धारणाएँ थीं, और जिसे देखकर मेरी दादी की बहनें क्रोधित हो जाती थीं। उनका मानना था कि बच्चों के सामने केवल ऐसी पुस्तकें और चित्र प्रस्तुत किए जाने चाहिए, जिनकी

प्रशंसा वे अपने परिपक्व होने पर भी करते रहें, और बच्चे भी उन्हीं पुस्तकों और चित्रों को पसंद करके अपनी स्वाभाविक रुचि प्रदर्शित करते हैं। निःसंदेह, वे सौंदर्य मूल्यों को ऐसी भौतिक वस्तुएँ मानते थे जिन्हें स्पष्ट दृष्टि से देखा जा सकता है, इसके लिए जीवन के अनुभवों का होना और हृदय में धीरे-धीरे परिपक्व होना आवश्यक नहीं है।

'मेसेग्लिस वे' पर, मोंटजोवेन में, एक बड़े तालाब के किनारे बने घर में, जिसके ऊपर एक खड़ी, झाड़ियों से ढकी पहाड़ी थी, श्री विन्ट्यूइल रहते थे। इसलिए हम अक्सर उनकी बेटी को सड़क पर अपनी ठेलागाड़ी तेज़ी से चलाते हुए देखते थे। एक साल बाद हमने उन्हें कभी अकेले नहीं देखा, बल्कि हमेशा एक सहेली के साथ देखा, जो उनसे उम्र में बड़ी थी और मोहल्ले में उसकी बदनामी थी। आखिरकार, एक दिन वह मोंटजोवेन में स्थायी रूप से बस गई। लोग कहते थे: "बेचारे श्री विन्ट्यूइल प्रेम में अंधे हो गए हैं, उन्हें समझ नहीं आ रहा कि लोग क्या कह रहे हैं, और अपनी बेटी को - एक ऐसा आदमी जो किसी शब्द का गलत अर्थ निकालने पर भी चिढ़ जाता है - ऐसी औरत को अपने घर में रहने देने के लिए मजबूर कर दिया। वह कहते हैं कि वह बहुत ही श्रेष्ठ महिला है, सोने के दिल वाली है, और अगर उसे प्रशिक्षण मिला होता तो वह असाधारण संगीत प्रतिभा दिखाती। उन्हें यकीन करना चाहिए कि वह उनकी बेटी को संगीत नहीं सिखा रही है।" लेकिन एम. विंटेउइल ने उन्हें आश्वस्त किया कि ऐसा ही है, और वास्तव में यह उल्लेखनीय है कि शारीरिक संबंध रखने वाले लोग अपने रिश्तेदारों के बीच अपने सामान्य गुणों की प्रशंसा जगाने में कभी असफल नहीं होते। शारीरिक वासना, जिसकी इतनी अनुचित निंदा की गई है, अपने शिकारों को अपने भीतर मौजूद निस्वार्थता और उदारता के हर अंश को प्रदर्शित करने के लिए विवश करती है, और इतनी प्रभावी ढंग से कि वे सभी देखने वालों की आँखों में चमक उठते हैं। डॉ. पर्सेपीड,

जिनकी बुलंद आवाज और घनी भौंहें उन्हें 'दोहरे व्यवहार वाले' की भूमिका को पूरी तरह निभाने में सक्षम बनाती थीं, एक ऐसी भूमिका जिसके लिए वे अन्यथा उपयुक्त नहीं थे, और बिना किसी हद तक एक दयालु बूढ़े व्यक्ति के रूप में अपनी अटूट और पूरी तरह से अनुचित प्रतिष्ठा को धूमिल किए, क्यूरे और बाकी सभी को अपनी कठोर आवाज में यह कहकर हंसा-हंसाकर रुला देते थे: "अब आप लोग इस बारे में क्या कहते हैं? लगता है कि वह अपने दोस्त माइल विंटेउइल के साथ संगीत बजाती है। यह आपको आश्चर्यचकित करता है, है ना? ओह, मुझे कुछ नहीं पता, बिल्कुल कुछ नहीं। कल पापा विंटेउइल ने ही मुझे इसके बारे में सब कुछ बताया था। आखिरकार, उस लड़की को संगीत पसंद करने का पूरा अधिकार है। मैं कभी किसी बच्चे की कलात्मक प्रतिभा को रोकने के बारे में सोच भी नहीं सकता; और लगता है कि विंटेउइल भी नहीं। और फिर वह भी अपनी बेटी की दोस्त के साथ संगीत बजाता है। हे भगवान, वह घर तो संगीत का अड्डा ही होगा! आप लोग क्यों हंस रहे हैं?" किसलिए? मुझे लगता है कि वे लोग बहुत ज्यादा संगीत बजा रहे हैं। मैंने कुछ दिन पहले कब्रिस्तान के पास पापा विन्ट्यूइल से मुलाकात की। वे बड़ी मुश्किल से अपने पैरों पर खड़े रह पा रहे थे।

हम जैसे जिन लोगों ने भी उस समय के आसपास एम. विंटेइल को देखा होगा, जो अपने परिचितों से बचते थे और उन्हें देखते ही मुंह फेर लेते थे, वे कुछ ही महीनों में एक बूढ़े व्यक्ति में बदल गए थे, दुखों के सागर में डूबे हुए, अपनी बेटी की खुशी के अलावा किसी और काम में असमर्थ, अपनी पत्नी की कब्र के पास पूरा दिन बिताते हुए, वे शायद ही इस बात को समझ पाए होंगे कि वे धीरे-धीरे टूटे हुए दिल से मर रहे थे, शायद ही यह अनुमान लगा पाए होंगे कि वे अपने आसपास फैल रही अफवाहों पर ध्यान नहीं दे रहे थे। वे जानते थे, शायद उन्होंने विश्वास भी किया होगा,

कि उनके पड़ोसी क्या कह रहे थे। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, चाहे उसका नैतिक आचरण कितना भी दृढ़ क्यों न हो, जो परिस्थितियों की जटिलता के कारण खुद को उसी बुराई के करीब न पाए, जिसकी उसने स्वयं खुलकर निंदा की है, बिना पहले उसे उस भेष में पहचाने, जो उसके सामने आकर उसे चोट पहुँचाने और उसे पीड़ा देने के लिए प्रकट होती है; एक शाम, उस व्यक्ति के अजीब शब्द, उसका समझ से परे रवैया, जिसे प्यार करने के उसके पास हज़ार कारण हैं। लेकिन एम. विंटेइल जैसे संवेदनशील व्यक्ति के लिए, किसी कठोर और अनुभवी व्यक्ति की तुलना में, उन परिस्थितियों में से एक को स्वीकार करना कहीं अधिक कष्टदायक रहा होगा, जिन्हें गलत तरीके से केवल बोहेमियन हलकों में ही घटित होने वाला माना जाता है; क्योंकि ये परिस्थितियाँ तब उत्पन्न होती हैं जब किसी बच्चे की आत्मा में प्रकृति द्वारा रोपित दुर्गुण को, उसके विकास के लिए आवश्यक सुरक्षा में स्थापित करने की आवश्यकता होती है, शायद केवल उसके माता-पिता के गुणों को मिलाकर, जैसे वह उनकी आँखों के रंगों को मिलाती है। और फिर भी, एम. विंटेइल अपनी बेटी के आचरण के बारे में कितना भी जानते हों, इससे यह निष्कर्ष नहीं निकला कि उसके प्रति उनका स्नेह कम हुआ। जीवन के तथ्य उस क्षेत्र में प्रवेश नहीं करते जहाँ हमारी मान्यताएँ पोषित होती हैं; क्योंकि वे तथ्य उन मान्यताओं को जन्म नहीं देते, इसलिए वे उन्हें नष्ट करने में असमर्थ हैं; वे उन पर निरंतर खंडन और खंडन के प्रहार कर सकते हैं, लेकिन उन्हें कमजोर नहीं कर सकते। और एक परिवार पर लगातार एक के बाद एक विपत्तियों और बीमारियों का सैलाब आ जाए, तो भी वह अपने ईश्वर की दया या अपने चिकित्सक की क्षमता पर से विश्वास नहीं खोएगा। लेकिन जब एम. विंटेइल ने अपनी बेटी और खुद को दुनिया और उनकी प्रतिष्ठा के नजरिए से देखा, जब उन्होंने खुद को पड़ोसियों की नजर में उनके

स्थान पर रखने की कोशिश की, तो उन्हें फैसला सुनाना पड़ा, खुद को और अपनी बेटी को ठीक उन्हीं शब्दों में सामाजिक रूप से दोषी ठहराना पड़ा, जिन शब्दों का इस्तेमाल कॉम्ब्रे का वह निवासी करता जो उनसे और उनकी बेटी का सबसे बड़ा दुश्मन था; उन्होंने खुद को और अपनी बेटी को 'नीचा', 'सबसे निचले स्तर' पर फंसा हुआ पाया; और हाल ही में उनके व्यवहार में वह विनम्रता, अपने से ऊंचे दर्जे के लोगों के प्रति वह सम्मान झलक रहा था, जिनकी ओर अब उन्हें देखना ही था (चाहे वे पहले कितने भी नीचे रहे हों), उनके स्तर तक फिर से उठने का कोई रास्ता खोजने की वह प्रवृत्ति, जो किसी भी मानवीय दुर्भाग्य का लगभग स्वाभाविक परिणाम है।

एक दिन, जब हम स्वान के साथ कॉम्ब्रे की एक गली में टहल रहे थे, तभी एम. विंटेइल दूसरी गली से अचानक हमारे सामने आ गए और उन्हें बचने का समय ही नहीं मिला। स्वान ने, एक ऐसे व्यक्ति की लगभग अहंकारी उदारता के साथ, जो अपने सभी नैतिक पूर्वाग्रहों को दरकिनार करते हुए, दूसरे की शर्मिंदगी को केवल उसके प्रति मित्रतापूर्ण व्यवहार करने का बहाना मानता है, जिसके बाहरी संकेत देने वाले के आत्मसम्मान को बढ़ाते और संतुष्ट करते हैं क्योंकि वह महसूस करता है कि वह व्यक्ति उसके लिए और भी अधिक मूल्यवान है, एम. विंटेइल से काफी देर तक बातचीत की, जिनसे उनका लंबे समय से मुश्किल से ही संपर्क था, और हमसे विदा लेने से पहले उन्हें अपनी बेटी को एक दिन टैनसनविले में खेलने के लिए भेजने का निमंत्रण दिया। यह एक ऐसा निमंत्रण था जो दो साल पहले एम. विंटेइल को क्रोधित कर देता, लेकिन अब उन्हें इतना कृतज्ञता से भर दिया कि उन्होंने इसे स्वीकार करने की नासमझी से खुद को रोक लिया। स्वान का अपनी बेटी के प्रति मैत्रीपूर्ण स्नेह उसे अपने आप में इतना सम्मानजनक, अपने उद्देश्य के लिए इतना अनमोल समर्थन

प्रतीत होता था कि उसे लगा कि शायद इसका उपयोग न करना ही बेहतर होगा, ताकि इसे सुरक्षित रखने की पूर्णतः प्लेटोनिक संतुष्टि प्राप्त हो सके।

स्वान के जाने के बाद, उन्होंने हमसे कहा, "कितना आकर्षक आदमी था!" उसी उत्साह और श्रद्धा के साथ, जिस उत्साह और श्रद्धा से मध्यम वर्ग की चतुर और सुंदर महिलाएं किसी डचेस के शारीरिक और बौद्धिक आकर्षण की शिकार हो जाती हैं, भले ही वह बदसूरत और मूर्ख ही क्यों न हो। "कितना आकर्षक आदमी था! कितना अफसोस की बात है कि उसने इतनी घटिया शादी की!"

और फिर, यहाँ तक कि सबसे ईमानदार लोगों में भी पाखंड का इतना प्रबल तत्व होता है कि वे किसी से बात करते समय उसके बारे में अपने वास्तविक विचार को त्याग देते हैं और उसके न रहने पर वही विचार व्यक्त करेंगे। मेरे परिवार ने भी एम. विंटेइल के साथ मिलकर स्वान के विवाह पर शोक व्यक्त किया, और उन सिद्धांतों और परंपराओं का हवाला दिया (खासकर इसलिए कि उन्होंने उनका हवाला स्वान के साथ मिलकर दिया, मानो हम सभी एक ही तरह के सच्चे दोस्त हों) जिनका मोंटजोवेन में किसी भी तरह से उल्लंघन नहीं हुआ था। एम. विंटेइल ने अपनी बेटी को स्वान से मिलने नहीं भेजा, जिसका सबसे अधिक खेद स्वान को हुआ। क्योंकि एम. विंटेइल से मिलने के बाद, उन्हें अक्सर याद आता था कि वे लंबे समय से उनसे अपने ही नाम के किसी व्यक्ति के बारे में पूछना चाहते थे, जो शायद उनका कोई रिश्तेदार था। और इस बार उन्होंने ठान लिया कि जब एम. विंटेइल अपनी बेटी के साथ टैनसनविले में आएंगे, तो वे उनसे जो कहना चाहते हैं, उसे नहीं भूलेंगे।

चूंकि 'मेसेग्लिस मार्ग' उन दो मार्गों में से छोटा था जिनका उपयोग हम कॉम्ब्रे के आसपास घूमने के लिए करते थे, और इसी कारण से इसे

अनिश्चित मौसम वाले दिनों के लिए आरक्षित रखा जाता था, इसलिए यह स्वाभाविक था कि मेसेग्लिस की जलवायु में असामान्य रूप से अधिक वर्षा होती थी, और हम रूसैनविले जंगल के किनारे को कभी भी अपनी दृष्टि से ओझल नहीं होने देते थे, ताकि हम किसी भी क्षण उसके घने पत्तों के नीचे आश्रय लेने के लिए दौड़ सकें।

अक्सर सूरज बादलों के पीछे छिप जाता था, बादल उसकी गोलाई को ढक लेते थे, लेकिन बदले में सूरज की सुनहरी रोशनी से बादल का किनारा जगमगा उठता था। दिन के उजाले जैसी रोशनी तो नहीं, लेकिन उस परिदृश्य से चमक गायब हो जाती थी, जहाँ मानो जीवन रुका हुआ सा लगता था। वहीं, रौसैनविले का छोटा सा गाँव आसमान पर अपनी छतों के सफेद ढाँचे को आश्चर्यजनक सटीकता से उकेरता हुआ दिखाई देता था। हवा का एक झोंका एक कौवे को उसकी जगह से उड़ा ले गया, जो दूर जाकर बैठ गया। वहीं, धुंधले होते आसमान के नीचे क्षितिज पर जंगल गहरे नीले रंग में रंग गए, मानो उन्हें उन चित्रों में चित्रित किया गया हो जो आज भी पुराने घरों की दीवारों को सजाते हुए दिखाई देते हैं।

लेकिन कभी-कभी बारिश शुरू हो जाती, जिसकी चेतावनी हमें चश्मे बनाने वाले के दरवाजे पर टंगे छोटे से बैरोमीटर से मिल जाती थी। उसकी बूँदें, जैसे प्रवासी पक्षी एक साथ उड़ जाते हैं, वैसे ही आसमान से एक सीधी कतार में गिरतीं। वे कभी अलग नहीं होतीं, अपनी तेज़ गति में बेतरतीब ढंग से नहीं हिलतीं, बल्कि हर बूँद अपनी जगह पर रहते हुए अपने पीछे आने वाली बूँद को खींच लाती, और आसमान इतना घना हो जाता जैसे दक्षिण की ओर उड़ती अबाबीलों से होता है। हम पेड़ों के बीच शरण लेते। और जब ऐसा लगता कि उनकी उड़ान पूरी हो गई है, तब भी कुछ आखिरी बूँदें, बाकी बूँदों से कमज़ोर और धीमी, गिरती रहतीं। लेकिन हम अपने आश्रय से बाहर निकल आते, क्योंकि बारिश अब शाखाओं के

बीच एक खेल खेल रही थी, और यहाँ तक कि जब पैरों के नीचे लगभग फिर से सूख जाती, तब भी एक-दो बूँदें, पत्ती के खोखले भाग में रुकी हुई, नीचे बहती और उसके सिरे से चमकती हुई लटकती रहतीं, जब तक कि अचानक पेड़ की पूरी ऊँचाई से हमारे ऊपर की ओर उठे चेहरों पर ज़ोर से छलक न जातीं।

अक्सर हम आश्रय के लिए जल्दी करते, पत्थरों से बनी संतों और कुलपतियों की मूर्तियों के बीच से होते हुए सेंट-आंद्रे-डेस-चैम्प्स के बरामदे में घुस जाते। वह चर्च कितना विशिष्ट फ्रांसीसी था! उसके दरवाजे पर संतों, हाथों में लिली लिए वीर राजाओं, विवाह और अंत्येष्टि के दृश्यों को इस तरह उकेरा गया था मानो फ्रांस्वा ने उनकी कल्पना की हो। मूर्तिकार ने अरस्तू और वर्जिल के कुछ किस्सों को भी उकेरा था, ठीक वैसे ही जैसे फ्रांस्वा अपनी रसोई में सेंट लुई के बारे में इस तरह बोलने लगती थी मानो वह उन्हें स्वयं जानती हो, आमतौर पर मेरे दादा-दादी को, जिन्हें वह कम 'धार्मिक' मानती थी, उनकी तुलना में नीचा दिखाने के लिए। यह देखा जा सकता था कि मध्ययुगीन कलाकार और मध्ययुगीन किसान (जो उन्नीसवीं शताब्दी में हमारे लिए खाना पकाने तक जीवित रहे) के शास्त्रीय और प्रारंभिक ईसाई इतिहास के बारे में जो विचार थे, जिनकी अशुद्धि उनकी ईमानदार सरलता से संतुलित थी, वे किताबों से नहीं, बल्कि एक ऐसी परंपरा से प्राप्त हुए थे जो एक साथ प्राचीन और प्रत्यक्ष, अटूट, मौखिक, पतित, अपरिचित और जीवंत थी। एक और कॉम्ब्रे व्यक्ति जिसे मैं सेंट-आंद्रे-डेस-चैम्प्स की गोथिक मूर्तियों में संभावित और विशिष्ट रूप से देख सका, वह युवा थियोडोर था, जो कैमस की दुकान में सहायक था। और वास्तव में, फ्रांस्वा स्वयं इस बात से भली-भांति परिचित थीं कि उनमें एक देहाती और समकालीन व्यक्ति है, क्योंकि जब मेरी चाची इतनी बीमार थीं कि फ्रांस्वा अकेले उन्हें बिस्तर से उठा या

कुर्सी तक नहीं ले जा सकती थीं, तो रसोई की नौकरानी को ऊपर बुलाकर शायद मेरी चाची पर 'प्रभाव डालने' देने के बजाय, वह थियोडोर को बुलवाती थीं। और यह लड़का, जिसे कस्बे में 'बुरे चरित्र' के रूप में देखा जाता था, और यह बिल्कुल सही था, उस भावना से इतना परिपूर्ण था जिसने सेंट-आंद्रे-डेस-चैंप्स के बरामदे को सुशोभित किया था, और विशेष रूप से उस सम्मान की भावना से जो फ्रैंचाइज़ की दृष्टि में सभी 'गरीब बीमारों' के प्रति, और सबसे बढ़कर अपनी 'बेचारी मालकिन' के प्रति, उसके भीतर इतनी प्रबल थी कि जब वह मेरी चाची का सिर तकिए से उठाने के लिए झुका, तो उसके चेहरे पर वही प्री-राफेलिट सरलता और उत्साह था जो बेस-रिलीफ में बने छोटे देवदूतों के चेहरे पर होता है, जो हाथों में मोमबत्तियाँ लिए हमारी लेडी के मृत्युशय्या के चारों ओर मंडराते हैं, मानो पत्थर के वे तराशे हुए चेहरे, सर्दियों में पेड़ों की तरह नग्न और भूरे, उन्हीं की तरह सो रहे हों, जीवन का संचय कर रहे हों और अनगिनत आम चेहरों में फिर से खिलने की प्रतीक्षा कर रहे हों, थियोडोर के चेहरे की तरह आदरणीय और चतुर, और पके सेबों की लालिमा से दमकते हुए।

वहाँ भी, नन्हे देवदूतों की तरह दीवार से बंधी न होकर, बरामदे से अलग, मनुष्य से कहीं अधिक विशाल, अपने आसन पर ऐसे खड़ी थी मानो किसी पायदान पर बैठी हो, जिसे वहाँ उसके पैरों को गीली ज़मीन के संपर्क से बचाने के लिए रखा गया था। उसके गाल भरे हुए थे, स्तन सुडौल थे जो वस्त्रों के भीतर पके अंगूरों के गुच्छे की तरह उभरे हुए थे, माथा संकरा था, नाक छोटी और दृढ़ थी, आँखें धँसी हुई थीं, और चेहरे पर दृढ़, बेबाक और साहसी भाव थे, जो उस क्षेत्र की देहाती महिलाओं के समान थे। यह समानता, जिसने मूर्ति को एक ऐसी सौम्यता प्रदान की जिसकी मुझे उसमें उम्मीद नहीं थी, अक्सर खेतों से आने वाली किसी

लड़की के आगमन से पुष्ट होती थी, जो हमारी ही तरह बरामदे के नीचे शरण लेने आती थी। वहाँ उसकी उपस्थिति—जैसे किसी लता के पत्ते पत्थर पर उकेरे गए पत्तों के बगल में उग आते हैं—ऐसा प्रतीत होता था मानो भाग्य ने हमें प्रकृति में उसके स्वरूप से परिचित कराकर कलाकृति की सत्यता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने का अवसर दिया हो। हमारी आँखों के सामने, दूर, एक वादा किया हुआ या शापित देश, रूसैनविले, जिसकी दीवारों के भीतर मैं कभी नहीं गया था, अब रूसैनविले, जब हमारे लिए बारिश थम गई थी, पुराने नियम के एक गाँव की तरह, तूफान के अनगिनत भाले और तीरों से दंडित हो रहा था, जो तिरछे ढंग से उसके निवासियों के घरों पर बरस रहे थे, या फिर सर्वशक्तिमान की क्षमा प्राप्त कर चुका था, जिसने उसे अपने सूर्य का प्रकाश लौटा दिया था, जो उस पर असमान लंबाई की किरणों के रूप में पड़ रहा था, जैसे किसी वेदी पर पवित्र पात्र की किरणें।

कभी-कभी, जब मौसम पूरी तरह से खराब हो जाता था, तो हमें घर वापस जाने और अंदर ही बंद रहने के लिए मजबूर होना पड़ता था। दूर-दूर तक फैले परिदृश्य में, जहाँ ढलती रोशनी और उमस भरे वातावरण के कारण समुद्र का दृश्य दिखाई देता था, कुछ एकाकी घर पहाड़ी की निचली ढलानों से चिपके हुए दिखाई देते थे, जिसकी चोटियाँ बादलों के घने अंधेरे में डूबी हुई थीं। वे छोटी नावों की तरह चमकते थे जिन्होंने अपने पाल समेट लिए हों और रात भर समुद्र पर लंगर डाले खड़ी रहें। लेकिन बारिश हो या तूफान, इससे क्या फर्क पड़ता है? गर्मियों में, खराब मौसम सतही बदमिजाजी का एक क्षणिक रूप मात्र होता है, जो स्थायी, अंतर्निहित सुहावने मौसम द्वारा व्यक्त किया जाता है; यह सर्दियों के परिवर्तनशील और अस्थिर 'सुहावने मौसम' से बिल्कुल अलग है, वास्तव में, इसका ठीक विपरीत है। क्या इसने (मिट्टी में दृढ़ता से स्थापित, जिस

पर इसने घने पत्तों के समूह में ठोस रूप धारण कर लिया है, जिस पर बारिश मूसलाधार बरस सकती है, लेकिन उनकी वास्तविक और स्थायी खुशी द्वारा प्रदान किए गए प्रतिरोध को कमजोर नहीं कर सकती) अपने रेशमी झंडे, बैंगनी और सफेद, पूरे मौसम में लहराते रहने के लिए, गांव की गलियों में, घरों की दीवारों पर और उनके बगीचों में नहीं फहराए हैं? छोटे से बैठक कक्ष में बैठकर, जहाँ मैं रात के खाने तक किताब के साथ समय बिताता था, मैं अपने शाहबलूत के पेड़ों से पानी टपकने की आवाज सुन सकता था, लेकिन मैं जानता था कि बारिश केवल उनके मोटे, सिकुड़े हुए पत्तों की हरियाली को चमकाएगी और उन्हें और भी चमकदार बनाएगी, और उन्होंने खुद गर्मियों के वादे की तरह, पूरी बरसात की रात वहीं रहने का वचन दिया था, ताकि मुझे अच्छे मौसम के जारी रहने का आश्वासन दे सकें; चाहे जितनी बारिश हो, लेकिन कल, टैनसनविले की सफेद बाड़ के ऊपर, हमेशा की तरह असंख्य, छोटे दिल के आकार के पत्तों का एक समुद्र उमड़ता और बहता रहेगा; और बिना किसी चिंता के मैं रू डेस पर्चेम्प्स में चिनार के पेड़ को दया की भीख मांगते हुए, तूफान के सामने हताशा में झुकते हुए देख सकता था; बिना किसी चिंता के मैं बगीचे के दूसरे छोर पर, हमारे बकाइन के पेड़ों के बीच गरजते हुए आखिरी बिजली के कड़कने की आवाज सुन सकता था।

अगर सुबह से ही मौसम खराब रहता, तो मेरा परिवार सैर पर जाने का विचार छोड़ देता और मैं घर पर ही रहती। लेकिन बाद में, मुझे ऐसे दिनों में अकेले बाहर जाने की आदत पड़ गई, और मैं मेसेग्लिस-ला-विनेउज़ की ओर पैदल जाती थी, उस शरद ऋतु में जब हमें मेरी चाची लियोनी की संपत्ति के बंटवारे के लिए कॉम्ब्रे आना पड़ा था; क्योंकि अंततः उनका निधन हो गया था, और उनके पड़ोसियों में दोनों ही पक्ष उनकी मृत्यु से विजयी हुए थे—वे लोग जो यह मानते थे कि उनकी जीवनशैली उन्हें

कमजोर कर रही थी और अंततः उनकी मृत्यु का कारण बनेगी, और वे लोग भी जो हमेशा से यह मानते थे कि वे किसी काल्पनिक नहीं बल्कि शारीरिक बीमारी से पीड़ित थीं, जिसके प्रत्यक्ष प्रमाण से सबसे संशयवादी भी उनकी मृत्यु के बाद आश्वस्त होने को विवश हो जाते; उनके जीवित बचे लोगों में से केवल एक को छोड़कर किसी को भी इससे गहरा दुख नहीं हुआ, लेकिन उस एक के लिए यह दुख अत्यंत प्रचंड था। मेरी चाची की अंतिम बीमारी के लंबे पखवाड़े के दौरान, फ्रांस्वा एक पल के लिए भी अपने कमरे से बाहर नहीं निकली, अपने कपड़े नहीं उतारे, किसी और को मेरी चाची के लिए कुछ भी करने की अनुमति नहीं दी, और जब तक उनका शरीर कब्र में नहीं चला गया, तब तक वह उनके पास से नहीं हटी। तब, अंततः, हम समझ गए कि मेरी चाची के कठोर शब्दों, उनके संदेह और उनके क्रोध के कारण फ्रांस्वा जिस भय में जी रही थी, उसने उसके भीतर एक ऐसी भावना विकसित कर दी थी जिसे हमने घृणा समझ लिया था, जबकि वास्तव में वह श्रद्धा और प्रेम था। उसकी सच्ची स्वामिनी, जिसके निर्णयों का अनुमान लगाना असंभव था, जिसकी चालों से बचना इतना कठिन था, जिसके अच्छे स्वभाव का लाभ उठाना इतना आसान था, उसकी संप्रभु, उसकी रहस्यमय और सर्वशक्तिमान सम्राट अब नहीं रहीं। ऐसी स्वामिनी की तुलना में हम बहुत कम महत्व रखते थे। वह समय बहुत पहले बीत चुका था जब हम पहली बार कॉम्ब्रे में छुट्टियां बिताने आए थे, तब फ्रांस्वा की नजरों में हम मेरी चाची के बराबर ही महत्वपूर्ण थे।

उस शरद ऋतु के दौरान, मेरे माता-पिता का दिन कानूनी औपचारिकताओं और वकीलों और किसानों के साथ चर्चाओं में इतना व्यस्त हो जाता था कि उनके पास सैर के लिए बहुत कम समय बचता था, और मौसम के कारण सैर करना भी मुश्किल हो जाता था। इसलिए उन्होंने मुझे उनके

बिना ही 'मेसेग्लिस मार्ग' पर जाने देना शुरू कर दिया, जहाँ मैं एक विशाल हाइलैंड प्लेड में लिपटा रहता था जो मुझे बारिश से बचाता था, और जिसे मैं अपने कंधों पर डालने के लिए और भी उत्सुक रहता था क्योंकि मुझे लगता था कि इसकी भड़कीली टार्टन की धारियाँ फ्रांस्वा को ठेस पहुँचाती थीं, जिसे यह समझाना असंभव था कि किसी के कपड़ों का रंग किसी मृत व्यक्ति के शोक से कोई संबंध नहीं रखता है, और जिसे मेरी चाची की मृत्यु पर हमने जो शोक दिखाया था वह बिल्कुल भी संतोषजनक नहीं लगा, क्योंकि हमने पड़ोसियों को कोई भव्य अंतिम संस्कार भोज नहीं दिया था, और उनके बारे में बात करते समय हमने कोई विशेष लहजा नहीं अपनाया था, जबकि मुझे कभी-कभी कोई धुन गुनगुनाते हुए सुना जा सकता था। मुझे पूरा यकीन है कि किसी किताब में—और इस हद तक मेरी भावनाएँ फ्रांस्वा की भावनाओं से काफी मिलती-जुलती थीं—रोलैंड के गीत और सेंट-आंद्रे-डेस-चैम्प्स के बरामदे में व्यक्त शोक का ऐसा वर्णन अत्यंत आकर्षक लगता। लेकिन जैसे ही फ्रांस्वा मेरे पास आतीं, कोई बुरी आत्मा मुझे उन्हें क्रोधित करने के लिए उकसाती, और मैं जरा सा बहाना ढूंढकर उनसे कहती कि मुझे अपनी चाची की मृत्यु का दुख है क्योंकि वे अपनी मूर्खताओं के बावजूद एक अच्छी महिला थीं, न कि इसलिए कि वे मेरी चाची थीं; कि वे मेरी चाची हो सकती थीं और फिर भी इतनी घृणित हो सकती थीं कि उनकी मृत्यु से मुझे एक पल का भी दुख नहीं होता; ये बातें, किसी किताब में, मुझे केवल बेतुकी लगतीं।

और अगर फ्रांस्वा, शोक, दुःख और पारिवारिक यादों पर उलझे हुए विचारों की बाढ़ से एक कवि की तरह प्रेरित होकर, मेरे सिद्धांतों का खंडन करने में अपनी असमर्थता जताते हुए कहे: "मैं खुद को व्यक्त करना नहीं जानती"—तो मैं डॉ. पर्सेपीड के योग्य व्यंग्यात्मक और क्रूर सामान्य ज्ञान से उस पर विजय प्राप्त कर लूँगा; और अगर वह आगे कहे: "फिर भी वह

एक भूगर्भीय रिश्तेदार थी; आपके भूविज्ञान का सम्मान तो हमेशा ही रहेगा," तो मैं अपने कंधे उचकाकर कहूँगा: "एक अनपढ़ बूढ़ी औरत से इस मामले पर चर्चा करना मेरे लिए वास्तव में बहुत अच्छा है जो अपनी भाषा भी नहीं बोल सकती," फ्रांस्वा पर निर्णय सुनाते हुए, मैं उस विद्वान के तुच्छ और संकीर्ण दृष्टिकोण को अपना लूँगा, जिसकी नकल वे लोग करने के लिए प्रवृत्त होते हैं जो अपने निष्पक्ष मन से उसका सबसे अधिक तिरस्कार करते हैं, जब उन्हें जीवन के सामान्य मंच पर एक भूमिका निभाने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

उस शरद ऋतु में मेरी सैर और भी आनंददायक होती थी क्योंकि मैं घंटों किताब पढ़ने के बाद सैर पर निकलती थी। जब मैं घर में पूरा दिन बिताने के बाद पढ़ने से थक जाती, तो अपना कंबल कंधों पर डालती और निकल पड़ती; मेरा शरीर, जो लंबे समय तक गतिहीन रहने के कारण ऊर्जा का भंडार जमा कर चुका था, अब एक लट्टू की तरह, जिसे घुमाकर छोड़ दिया जाता है, हर दिशा में ऊर्जा खर्च करने के लिए बाध्य था। घरों की दीवारें, टैनसनविले की बाड़, रूसैनविले के जंगल के पेड़, वे झाड़ियाँ जिनके सहारे मोंटजोवेन की पीठ टिकी थी, सभी को मेरी छड़ी या छाते की मार सहनी पड़ती थी, मेरी खुशी की चीखें सुननी पड़ती थीं, ये मार और चीखें वास्तव में उन उलझे हुए विचारों की अभिव्यक्ति मात्र थीं जो मुझे उत्साहित करते थे, और जो उस स्तर तक विकसित नहीं हो पाए थे जहाँ वे दिन के उजाले में आ सकें, इसलिए स्पष्टीकरण की धीमी और कठिन प्रक्रिया से गुजरने के बजाय, उन्हें तुरंत बाहर निकलना आसान और सुखद लगता था। और इस प्रकार, हमारी अंतर्मन की भावनाओं की जो अभिव्यक्ति प्रतीत होती है, उसका अधिकांश भाग उन भावनाओं के बोझ से हमें मुक्त करने के अलावा और कुछ नहीं करता, क्योंकि यह उन्हें एक अस्पष्ट रूप में हमसे विलीन होने देता है जो हमें यह नहीं सिखाता कि

उनकी व्याख्या कैसे की जानी चाहिए। जब मैं 'मेसेग्लिस मार्ग' के प्रति अपने सभी ऋणों का हिसाब लगाने का प्रयास करता हूँ, उन सभी विनम्र खोजों का, जिनके लिए यह या तो आकस्मिक पृष्ठभूमि थी या प्रत्यक्ष प्रेरणा और कारण, तो मुझे याद आता है कि उसी शरद ऋतु में, उन्हीं सैरों में से एक पर, मोंटजोवेन को पीछे से घेरने वाली झाड़ियों वाली चट्टान के पास, मुझे पहली बार हमारी अनुभूतियों और उनकी अभिव्यक्ति के सामान्य रूपों के बीच इस असामंजस्य का अहसास हुआ था। एक घंटे तक बारिश और तेज़ हवाओं का सामना करने के बाद, जब मैं मोंटजोवेन तालाब के किनारे पहुँचा और टाइलों से बनी एक छोटी सी झोपड़ी के पास पहुँचा, जिसमें एम. विंटेइल का माली अपने औज़ार रखता था, तो सूरज फिर से निकल आया। बारिश से धुली उसकी सुनहरी किरणें एक बार फिर आसमान में, पेड़ों पर, झोपड़ी की दीवार पर और छत की अभी भी गीली टाइलों पर चमक उठीं, जिस पर एक मुर्गी बैठी थी। हवा दीवार पर उगी जंगली घास और मुर्गी के मुलायम पंखों को अगल-बगल खींच रही थी, और ये दोनों चीज़ें हवा के झोंके के साथ पूरी तरह से तैर रही थीं, मानो किसी हल्की और निर्जीव वस्तु की तरह सहजता से। टाइलों वाली छत से तालाब पर, जिसका प्रतिबिंब अब सूरज की रोशनी में फिर से साफ़ दिखाई दे रहा था, गुलाबी संगमरमर का एक चौकोर टुकड़ा दिखाई दे रहा था, जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। और, पानी पर, जहाँ दीवार का प्रतिबिंब दिख रहा था, आसमान के मुस्कुराते रंग के जवाब में एक फीकी मुस्कान देखकर, मैं उत्साह में ज़ोर से चिल्लाया, अपना छाता लहराते हुए: "धिक्कार है, धिक्कार है, धिक्कार है, धिक्कार है!" लेकिन साथ ही मुझे यह भी महसूस हुआ कि मेरा कर्तव्य है कि मैं इन निरर्थक शब्दों से संतुष्ट न हो जाऊं, बल्कि अपने आनंद के स्रोतों को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने का प्रयास करूं।

और ठीक उसी क्षण—एक किसान की वजह से जो वहाँ से गुज़रा, जो पहले से ही काफ़ी नाराज़ लग रहा था, लेकिन जब मेरा छाता लगभग उसके चेहरे पर लगा तो उसका गुस्सा और बढ़ गया, और जिसने मेरे "वाह, कितना अच्छा दिन है! बाहर टहलने में मज़ा आ रहा है!" के जवाब में बिना किसी आत्मीयता के जवाब दिया—मुझे यह पता चला कि सभी मनुष्यों के दिलों में एक जैसी भावनाएँ एक ही समय पर, किसी पूर्व-निर्धारित क्रम में नहीं उत्पन्न होतीं। बाद में मुझे पता चला कि जब भी मैं बहुत देर तक पढ़ता रहता और बातचीत करने के मूड में होता, तो जिस मित्र से मैं कुछ कहना चाहता, वह उस समय तक बातचीत का आनंद लेना समाप्त कर चुका होता और अब उसे केवल बिना किसी बाधा के पढ़ने के लिए अकेला छोड़ दिया जाता। और अगर मैं अपने माता-पिता के प्रति स्नेह से सोच रहा होता और उन्हें प्रसन्न करने के लिए सबसे समझदारी भरी और उचित योजनाएँ बना रहा होता, तो वे उसी समय का उपयोग मेरी किसी ऐसी गलती को खोजने में कर रहे होते जिसे मैं पहले ही भूल चुका होता, और जैसे ही मैं उन्हें चूमते हुए उन पर टूट पड़ता, वे मुझे बुरी तरह डांटना शुरू कर देते।

कभी-कभी अकेलेपन से मिलने वाले आनंद में एक और भावना जुड़ जाती थी, जिससे मैं यह तय नहीं कर पाता था कि मुझे किस भावना को प्राथमिकता देनी चाहिए; यह भावना एक किसान लड़की को अपनी बाहों में भर लेने की इच्छा से उत्पन्न होती थी। अचानक, और कई अलग-अलग विचारों के बीच इसके स्रोत का पता लगाने का समय दिए बिना, इस इच्छा से मिलने वाला आनंद मेरे अन्य विचारों से कहीं अधिक श्रेष्ठ प्रतीत होता था। उस क्षण मेरे मन में जो कुछ भी था, मुझे उसमें एक अतिरिक्त गुण दिखाई देता था - टाइल वाली छत का गुलाबी प्रतिबिंब, दीवार पर उगी जंगली घास, रौसैनविले गाँव जिसमें मैं लंबे समय से प्रवेश

करना चाहता था, उसके जंगल के पेड़ और उसके गिरजाघर का शिखर। ये सभी भावनाएँ मेरे भीतर एक नई अनुभूति से उत्पन्न हुई थीं, जिसने उन्हें और अधिक आकर्षक बना दिया था, केवल इसलिए कि मुझे लगा कि इन्हीं ने इसे उत्पन्न किया है, और ऐसा प्रतीत होता था कि जब यह एक शक्तिशाली, अज्ञात और अनुकूल हवा से मेरे मन को भर देती थी, तो यह मुझे और तेज़ी से उनकी ओर ले जाना चाहती थी। लेकिन अगर किसी स्त्री के प्रकट होने की इस इच्छा ने मेरे लिए प्रकृति के आकर्षण से भी कहीं अधिक उदात्त कुछ जोड़ा, तो बदले में इसने उस चीज़ को विस्तारित किया जो स्त्री के आकर्षण में मुझे बहुत सीमित लग सकती थी। मुझे ऐसा लगा कि वृक्षों की सुंदरता भी उसकी है, और उन क्षितिजों की आत्मा, रौसैनविले गाँव की आत्मा, उन पुस्तकों की आत्मा जिन्हें मैं उस वर्ष पढ़ रहा था, उन सब पर उसका चुंबन ही मुझे अधिकार प्रदान करेगा; और, मेरी कल्पना मेरी कामुकता के संपर्क से शक्ति प्राप्त कर रही थी, मेरी कामुकता मेरी कल्पना के सभी क्षेत्रों में फैल रही थी, मेरी इच्छा की कोई सीमा नहीं रह गई थी। इसके अलावा—जैसे प्रकृति के चिंतन के क्षणों में, मन की सामान्य क्रियाएँ निलंबित हो जाती हैं, और चीजों के हमारे अमूर्त विचार एक तरफ रख दिए जाते हैं, हम उस स्थान की मौलिकता, उसके अनूठे अस्तित्व में गहरे विश्वास के साथ विश्वास करते हैं जहाँ हम मौजूद होते हैं—मेरी इच्छा से उत्पन्न होने वाली क्षणिक आकृति 'स्त्री' के सामान्य प्रकार का कोई एक उदाहरण नहीं, बल्कि मिट्टी की एक आवश्यक और स्वाभाविक उपज प्रतीत हुई। उस समय, मेरे लिए स्वयं के अलावा सब कुछ, पृथ्वी और उस पर रहने वाले जीव-जंतु, मुझे अधिक मूल्यवान, अधिक महत्वपूर्ण और वास्तविक प्रतीत होते थे, जबकि वयस्क पुरुषों को वे इतने वास्तविक नहीं लगते। और पृथ्वी और उसके जीवों में मैंने कोई भेद नहीं किया। मुझे मेसेग्लिस या रूसैनविले की

किसान-लड़की, बालबेक की मछुआरे-लड़की, दोनों के लिए उतनी ही चाहत थी जितनी बालबेक और मेसेग्लिस के लिए। उन लड़कियों से मिलने वाला आनंद मुझे कम वास्तविक लगता, और अगर मुझे अपनी इच्छा अनुसार उसकी शर्तों को बदलने की स्वतंत्रता होती, तो मेरा उस पर से विश्वास ही उठ जाता। पेरिस में बालबेक की किसी मछुआरे-लड़की या मेसेग्लिस की किसी किसान-लड़की से मिलना ऐसा होता मानो मुझे समुद्र तट पर कभी न देखी हुई कोई सीप या जंगल में कभी न पाया हुआ कोई फर्न उपहार में मिल जाए। इससे वह आनंद छिन जाता जो वह मुझे देने वाली थी, और वे सभी अन्य आनंद भी छिन जाते जिनमें मेरी कल्पना ने उसे लपेट रखा था। लेकिन रूसैनविले के जंगलों में बिना किसी किसान-लड़की को गले लगाए घूमना, उन जंगलों को देखना तो था, लेकिन उनके गुप्त खजाने, उनकी गहरी छिपी सुंदरता से अनभिज्ञ होना था। वह लड़की, जिसे मैंने कभी केवल उनके पत्तों की छाया में ही देखा था, मेरे लिए स्वयं एक स्थानीय पौधा थी, जो बाकियों से थोड़ी लंबी थी, और जिसकी संरचना मुझे उस भूमि के अंतरंग स्वाद के और भी करीब ले जाती जहाँ से वह निकली थी। मैं इस बात पर और भी आसानी से विश्वास कर सकता था (और यह भी कि जिन स्पर्शों से वह मेरे मन में वह आनंद भरती थी, वे अपने आप में एक विशेष प्रकार के थे, जिनसे मुझे ऐसा सुख मिलता था जो मुझे उसके सिवा किसी और से नहीं मिल सकता था), क्योंकि मैं अभी भी जीवन के उस दौर में था, और लंबे समय तक उसी दौर में रहना था, जब मैंने इस इंद्रिय सुख को उन विभिन्न स्त्रियों से अलग नहीं किया था जिनके साथ मैंने इसका अनुभव किया था, जब मैंने इसे एक सामान्य विचार में नहीं ढाला था जो मुझे उन्हें हमेशा एक ही सुख के परिवर्तनशील साधन के रूप में देखने पर मजबूर करता है। वास्तव में, वह सुख चेतना में अलग-थलग और सूत्रबद्ध रूप में

विद्यमान नहीं होता, न ही उस परम उद्देश्य के रूप में जिसके लिए कोई स्त्री का साथ चाहता है, या उस बेचैनी के कारण के रूप में जो प्रत्याशा में महसूस होती है। तब तो मैं अपने बारे में भी मुश्किल से ही सोचता हूँ, बल्कि केवल स्वयं से बचने के तरीके के बारे में सोचता हूँ। अस्पष्ट रूप से प्रतीक्षित, अंतर्निहित और गुप्त, यह उस क्षण में ऐसी तीव्र अनुभूति उत्पन्न करता है, जब अंततः यह स्वयं को प्रकट करता है, उन अन्य सुखों को जो हमें अपने साथ बैठी साथी की कोमल दृष्टि में, उसके चुंबन में मिलते हैं, कि यह हमें किसी भी अन्य चीज से बढ़कर, अपने साथी के हृदय की दयालुता और हमारे प्रति उसके स्नेहपूर्ण लगाव के लिए कृतज्ञता की एक प्रकार की अनुभूति कराता है, जिसे हम उन लाभों, उस खुशी से मापते हैं जो वह हम पर बरसाती है।

अफसोस, रूसेनविले के कारागार से मेरी विनती व्यर्थ ही हुई, मैंने उससे गुहार लगाई कि वह अपने गाँव की किसी बेटी को मुझसे मिलने भेजे, मानो मैं उसका एकमात्र विश्वासपात्र हूँ जिससे मैंने अपनी पहली इच्छा प्रकट की थी, जब कॉम्ब्रे स्थित हमारे घर की ऊपरी मंजिल से, उस छोटे से कमरे से, जिसमें ऑरिस-रूट की महक आती थी, मैंने बाहर झाँका था और मुझे केवल उसका टावर दिखाई दिया था, जो आधी खुली खिड़की के चौकोर फ्रेम में बना था। उस समय, एक अज्ञात देश की यात्रा पर निकले यात्री की तरह, या आत्म-विनाश के कगार पर खड़े एक हताश व्यक्ति की तरह, भावनाओं से व्याकुल होकर, मैंने अपने अनुभव की सीमाओं को पार करते हुए एक अनछुए रास्ते की खोज की थी, जिसके बारे में मेरा मानना था कि वह मुझे मृत्यु तक ले जा सकता है—जब तक कि मेरा जुनून शांत नहीं हो गया और मैं खिड़की से अंदर आती हुई खिलती हुई करंट की पत्तियों के बीच काँपता रह गया, जो मेरे शरीर पर बिखर गईं। अब भी मेरी पुकार व्यर्थ ही थी। मैंने व्यर्थ ही पूरे परिदृश्य को

अपने दृष्टि क्षेत्र में समेट लिया, एक गहन दृष्टि से उसे छान मारा, मानो उसमें से किसी स्त्री को खोज रहा हो। मैं अकेले ही सेंट-आंद्रे-डेस-चैम्प्स के बरामदे तक जा सकता था: लेकिन वहाँ मुझे वह लड़की कभी नहीं मिली जिससे मैं अपने दादाजी के साथ होता तो अवश्य मिलता, और इस प्रकार उससे बातचीत करने में असमर्थ होता। मैं अपनी आँखें अनंत काल तक दूर के एक पेड़ के तने पर टिकाए रखता, जिसके पीछे से वह प्रकट होकर मेरी ओर दौड़ती; मेरी गहन जाँच के बावजूद क्षितिज पहले की तरह बंजर ही रहा; रात हो रही थी; अब बिना किसी आशा के मैं अपना ध्यान केंद्रित करता, मानो उस बंजर मिट्टी, उस बासी और घिसी-पिटी भूमि पर छिपे प्राणियों को बाहर निकालने के लिए। और अब मन हल्का नहीं था, बल्कि उदास क्रोध से भरा हुआ था जब मैंने रौसैनविले के जंगल के पेड़ों पर प्रहार किए, जिनमें से कोई भी जीवित प्राणी दिखाई नहीं दे रहा था, मानो वे किसी पैनोरमा के कैनवास पर चित्रित पेड़ हों। जब मैं उस स्त्री को बाहों में लिए बिना घर लौटने की बात स्वीकार नहीं कर पा रहा था, जिसे मैं बहुत चाहता था, तो मुझे मजबूर होकर कॉम्ब्रे की ओर लौटना पड़ा और यह मानना पड़ा कि उसके मेरे रास्ते में आने की संभावना हर पल कम होती जा रही थी। और अगर वह आ भी जाती, तो क्या मैं उससे बात करने की हिम्मत कर पाता? मुझे लगा कि वह मुझे पागल समझेगी, क्योंकि सैर के दौरान मेरे मन में उठने वाली, लेकिन कभी पूरी न होने वाली उन इच्छाओं को मैं अब दूसरों की इच्छाएँ या मुझसे अलग कोई अस्तित्व नहीं मानता था। वे अब मुझे मेरे स्वभाव की विशुद्ध रूप से व्यक्तिपरक, शक्तिहीन, भ्रामक रचनाएँ ही लगती थीं। अब उनका प्रकृति से, वास्तविक चीजों की दुनिया से कोई संबंध नहीं रह गया था, जिसने अब से अपना सारा आकर्षण और महत्व खो दिया था, और मेरे जीवन में एक विशुद्ध रूप से पारंपरिक ढांचे से अधिक कुछ भी मायने नहीं रखता

था, ठीक उसी तरह जैसे किसी उपन्यास की कहानी रेलगाड़ी के डिब्बे में बुनी जाती है, जिसकी सीट पर बैठकर एक यात्री समय बिताने के लिए उसे पढ़ रहा होता है।

और शायद कुछ वर्षों बाद मोंटजोवेन में मुझे मिले एक अन्य अनुभव से, जो उस समय मेरे लिए अर्थहीन था, बहुत बाद में मेरे मन में मानवीय भावनाओं के उस क्रूर पहलू का विचार आया जिसे 'सैडिज्म' कहा जाता है। हम आगे देखेंगे कि एक बिल्कुल अलग कारण से इस अनुभव की स्मृति ने मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह बहुत गर्म मौसम के दौरान की बात है; मेरे माता-पिता, जो पूरे दिन के लिए बाहर गए हुए थे, ने मुझसे कहा था कि मैं जितनी देर चाहूँ बाहर रह सकता हूँ; और मोंटजोवेन तालाब तक जाकर, जहाँ मुझे झोपड़ी की टाइल वाली छत का प्रतिबिंब फिर से देखकर आनंद आया, मैं छाया में लेट गया और घर के पीछे की खड़ी ढलान पर झाड़ियों के बीच सो गया, ठीक उसी जगह जहाँ वर्षों पहले, एक दिन मैं अपने माता-पिता का इंतजार कर रहा था, जब वे एम. विंटेउइल से मिलने गए थे। जब मैं जागा तो लगभग अंधेरा हो चुका था, और मैं उठकर जाना चाहता था, लेकिन मैंने माइल को देखा। विंटेउइल (या कम से कम मुझे ऐसा लगा कि मैंने उसे पहचान लिया है, क्योंकि मैंने उसे कॉम्ब्रे में अक्सर नहीं देखा था, और तब भी केवल तब जब वह बच्ची थी, जबकि अब वह एक युवती बन रही थी), जो शायद अभी-अभी अंदर आई थी, मेरे सामने खड़ी थी, मुझसे कुछ ही फीट की दूरी पर, उस कमरे में जिसमें उसके पिता ने मेरे पिता का स्वागत किया था, और जिसे उसने अब अपने लिए एक छोटा सा बैठक कक्ष बना लिया था। खिड़की थोड़ी खुली थी; दीपक जल रहा था; मैं उसकी हर हरकत को देख सकता था बिना उसके मुझे देखे; लेकिन, अगर मैं चला जाता, तो झाड़ियों में सरसराहट की आवाज जरूर होती, वह मुझे सुन

लेती, और शायद सोचती कि मैं उस पर जासूसी करने के लिए वहां छिपा हुआ था।

वह गहरे शोक में डूबी हुई थी, क्योंकि उसके पिता का कुछ ही समय पहले निधन हो गया था। हम उससे मिलने नहीं गए थे; मेरी माँ ने जाने की परवाह नहीं की, क्योंकि उनमें मौजूद एकमात्र गुण, यानी उनकी विनम्रता, उनकी परोपकारिता की सीमा तय करती थी; लेकिन वह उस लड़की के प्रति हृदय से दया भाव रखती थीं। मेरी माँ एम. विंटेइल के जीवन के दुखद अंत को नहीं भूली थीं, उनकी पूर्ण तल्लीनता, पहले अपनी बेटी के लिए माँ और पालन-पोषण करने वाली की भूमिका निभाने में, और बाद में, उसके द्वारा उन्हें पहुँचाए गए कष्ट में; वह उस पीड़ादायक भाव को देख सकती थीं जो उन भयानक अंतिम वर्षों में उस बूढ़े व्यक्ति के चेहरे से कभी नहीं हटता था; वह जानती थीं कि उन्होंने अपने बाद के सभी कार्यों की साफ प्रतियाँ लिखने का काम निश्चित रूप से छोड़ दिया था, वे छोटे-छोटे टुकड़े, जैसा कि हमने कल्पना की थी, एक पुराने संगीत शिक्षक, एक सेवानिवृत्त गाँव के ऑर्गन वादक के, जिनका, जैसा कि हमने माना था, अपने आप में कोई खास मूल्य नहीं था, हालाँकि हमने उन्हें तुच्छ नहीं समझा, क्योंकि वे उनके लिए बहुत मूल्यवान थे और अपनी बेटी के लिए उन्हें समर्पित करने से पहले उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य थे; कुछ रचनाएँ, जिनमें से अधिकतर तो लिखी ही नहीं गई थीं, केवल उनकी स्मृति में ही दर्ज थीं, जबकि बाकी कागज़ों पर उकेरी गई थीं और बिल्कुल अपठनीय थीं, अब हमेशा के लिए अज्ञात ही रह जाएँगी; मेरी माँ ने उस दूसरे और भी अधिक क्रूर त्याग के बारे में भी सोचा, जिसके लिए श्री विन्ट्यूइल विवश हो गए थे, यानी अपनी बेटी को एक सुखद और सम्मानजनक भविष्य के साथ बसते हुए देखना; जब उन्हें मेरी चाची के पुराने संगीत शिक्षक पर आई इस घोर पीड़ा की याद आई, तो वे

बहुत दुखी हुईं और उस दूसरे दुख के बारे में सोचकर काँप उठीं, जो अपनी कड़वाहट में इतना अलग था, जिसे श्रीमती विन्ट्यूइल अब महसूस कर रही होंगी, अपने पिता को वस्तुतः मार डालने के पश्चाताप से भरा हुआ। "बेचारे श्री विन्ट्यूइल," मेरी माँ कहतीं, "वे अपनी बेटी के लिए जिए, और अब उसके लिए मर गए, बिना अपना प्रतिफल पाए। क्या उन्हें अब वह प्रतिफल मिलेगा, मुझे आश्चर्य है, और किस रूप में? वह उन्हें केवल उसी से मिल सकता है।"

मैडम विंटेइल के बैठक कक्ष के अंतिम छोर पर, शेल्फ पर, उनके पिता की एक छोटी सी तस्वीर रखी थी, जिसे लेने के लिए वह तुरंत दौड़ीं, तभी बाहर सड़क से गाड़ी के पहियों की आवाज सुनाई दी। फिर वह सोफे पर बैठ गईं और अपने बगल में एक छोटी सी मेज खींच ली, जिस पर उन्होंने तस्वीर रख दी, ठीक वैसे ही जैसे बहुत समय पहले, एम. विंटेइल ने उनके बगल में वह संगीत रखा था जिसे उनके पिता मेरे माता-पिता को सुनाना चाहते थे। तभी उनकी सहेली अंदर आईं। मैडम विंटेइल ने बिना उठे ही उनका अभिवादन किया, अपने हाथों को सिर के पीछे रखकर, और सोफे के एक तरफ हट गईं, मानो 'जगह बना रही हों'। लेकिन ऐसा करते ही उन्हें लगा कि शायद वह अपनी सहेली को किसी खास स्थिति का संकेत दे रही हैं, जिस पर उन्होंने जोर देकर कहा, जिसे शायद अनुचित माना जा सकता है। उन्होंने सोचा कि उनकी सहेली निस्संदेह उनसे कुछ दूरी पर, कुर्सी पर बैठना पसंद करेंगी; उन्हें लगा कि वह अनुचित थीं; उनका संवेदनशील हृदय भयभीत हो गया; सोफे पर फिर से लेटते हुए, उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और जम्हाई लेने लगी, मानो यह जता रही हो कि उसे सोने की इच्छा हो रही है, और बस यही एक कारण था कि वह वहाँ लेटी थी। हालाँकि वह अपने साथी के साथ असभ्य और धौंस जमाने वाले व्यवहार से पेश आ रही थी, फिर भी मैं उसमें उसके पिता की तरह ही

विनम्र और संकोची व्यवहार, अचानक संकोच और संयम देख सकता था। थोड़ी देर बाद वह उठी और खिड़की के पास आई, जहाँ उसने ऐसा दिखाया जैसे वह शटर बंद करने की कोशिश कर रही हो और सफल न हो पा रही हो।

"इन्हें खुला छोड़ दो," उसकी सहेली ने कहा। "मुझे गर्मी लग रही है।"

“पर ये तो बहुत भयानक है! लोग हमें देख लेंगे,” मैडम विंटेइल ने जवाब दिया। और फिर उन्होंने शायद अंदाज़ा लगाया होगा कि उनकी सहेली सोचेगी कि उन्होंने ये शब्द सिर्फ़ कुछ और शब्दों में जवाब पाने के लिए कहे हैं, जिन्हें वह सुनना तो चाहती थीं, लेकिन समझदारी से काम लेते हुए उन्होंने अपनी सहेली को पहले बोलने दिया। और इसलिए, हालाँकि मैं उनका चेहरा साफ़-साफ़ नहीं देख पाई, मुझे यकीन है कि उनके चेहरे पर वही भाव ज़रूर आया होगा जो मेरी दादी को कभी बहुत पसंद आया था, जब उन्होंने जल्दी से आगे कहा: “जब मैं कहती हूँ 'हमें देख लेंगे', तो मेरा मतलब है, ज़ाहिर है, हमें पढ़ते हुए देखना। ये सोचना कितना भयानक है कि आप जो भी छोटी-छोटी चीज़ें करते हैं, उनमें भी कोई आपको देख रहा हो सकता है।”

अपने सहज उदार स्वभाव और उस पर नियंत्रण से परे शिष्टाचार के चलते, उसने उन सोचे-समझे शब्दों को बोलने से परहेज किया, जो उसे अपनी इच्छा की पूर्ण पूर्ति के लिए अपरिहार्य लगते थे। और निरंतर, अपने अंतर्मन में, एक शर्मीली और याचना करने वाली युवती उस दूसरे तत्व, उस अनुभवी योद्धा के सामने घुटने टेकती, जो थका हुआ होते हुए भी विजयी था, उससे विनती करती और उसे पीछे हटने के लिए विवश करती।

"ओह, हाँ, इस घनी आबादी वाले इलाके में रात के इस समय लोग हमें देख रहे होंगे, इसकी बहुत ज़्यादा संभावना है!" उसकी सहेली ने कड़वी

व्यंग्य भरी आवाज़ में कहा। "और अगर वे देख भी रहे हों तो?" वह आगे बोली, मानो शरारती लेकिन स्नेह भरी मुस्कान के साथ इन शब्दों को दोहरा रही हो, मानो पहले से तैयार किया गया कोई पाठ हो, जिसे सुनकर मैडम विंटेउइल को अच्छा लगेगा। "और अगर वे देख भी रहे हों तो? और भी अच्छा है कि वे हमें देख लें।"

मैडम विंटेइल सिहर उठीं और खड़ी हो गईं। अपने संवेदनशील और संशयपूर्ण हृदय में उन्हें यह समझ नहीं आ रहा था कि उनके होठों से सहज रूप से कौन से शब्द निकलें, जिससे वह दृश्य उत्पन्न हो सके जिसकी उनकी उत्सुक इंद्रियाँ तड़प रही थीं। उन्होंने अपने वास्तविक चरित्र की सीमाओं को पार करते हुए उस भाषा को खोजने का भरसक प्रयास किया जो उस दुष्ट युवती के लिए उपयुक्त हो जैसा वह खुद को कहलवाना चाहती थीं, लेकिन जो शब्द, उनकी कल्पना में, ऐसी युवती ईमानदारी से बोल सकती थी, उनके अपने मुँह से अवास्तविक लग रहे थे। और जो कुछ उन्होंने स्वयं को बोलने की अनुमति दी, वह भी तनावपूर्ण स्वर में, जिसमें उनकी अंतर्निहित झिझक ने उनकी बोलने की स्वतंत्रता और साहस की प्रवृत्ति को पंगु बना दिया था; जबकि वह बार-बार खुद को रोकते हुए कह रही थीं: "क्या आपको ठंड तो नहीं लग रही? क्या आपको ज़्यादा गर्मी तो नहीं लग रही? क्या आप अकेले बैठकर पढ़ना नहीं चाहतीं?..."

"ऐसा लगता है कि आज शाम आपके विचार कुछ 'गर्मजोशी भरे' हैं," उसने यह कहते हुए अपनी बात समाप्त की, निस्संदेह वह एक ऐसे वाक्यांश को दोहरा रही थी जिसे उसने पहले किसी अवसर पर अपनी सहेली को इस्तेमाल करते हुए सुना था।

अपनी क्रेप की चोली के वी-आकार के खुले हिस्से में, मैडम विंटेइल को अपनी सहेली के अचानक चुंबन की चुभन महसूस हुई; वह हल्की सी

चीखी और भाग गई; फिर वे दोनों कमरे में एक-दूसरे का पीछा करने लगीं, फर्नीचर पर चढ़ती-उतरती रहीं, उनकी चौड़ी आस्तीनें पंखों की तरह फड़फड़ा रही थीं, और वे दो प्रेम में डूबे पक्षियों की तरह चहचहा रही थीं। अंत में मैडम विंटेइल थककर सोफे पर गिर पड़ीं, जहाँ उनकी सहेली के झुके हुए शरीर ने उन्हें मुझसे छिपा लिया। लेकिन अब उनकी सहेली ने उस छोटी मेज की ओर पीठ कर रखी थी जिस पर पुराने संगीत शिक्षक का चित्र रखा हुआ था। मैडम विंटेइल को एहसास हुआ कि जब तक उनका ध्यान इस ओर नहीं दिलाया जाएगा, उनकी सहेली इसे नहीं देख पाएगी, और इसलिए उन्होंने ऐसे कहा, मानो उन्होंने खुद इसे पहली बार देखा हो: "ओह! मेरे पिताजी की तस्वीर हमें देख रही है; मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसे यहाँ किसने रखा होगा; मुझे यकीन है कि मैंने उन्हें बीस बार कहा है कि यह इसके लिए सही जगह नहीं है।"

मुझे वे शब्द याद आ गए जो एम. विंटेइल ने मेरे माता-पिता से संगीत की एक आपत्तिजनक शीट के लिए माफी मांगते हुए कहे थे। यह तस्वीर, ज़ाहिर है, उनके धार्मिक अनुष्ठानों में आम थी, और रोज़ाना इसका अपमान होता था, क्योंकि दोस्त ने स्पष्ट रूप से धार्मिक शब्दों में जवाब दिया: "उसे वहीं रहने दो। वह अब हमें और परेशान नहीं कर सकता। क्या तुम्हें लगता है कि वह रोना-धोना शुरू कर देगा, क्या तुम्हें लगता है कि अगर वह तुम्हें अभी खिड़की खुली हुई देख ले, उस बदसूरत बूढ़े बंदर को, तो वह तुम्हें घर से बाहर निकाल देगा?"

इस पर मैडम विंटेइल ने जवाब दिया, "अरे, प्लीज़!"—यह एक सौम्य फटकार थी जो उनके स्वभाव की सच्ची अच्छाई की गवाही देती थी, ऐसा नहीं था कि यह उनके पिता के बारे में इस तरह की बातें सुनकर किसी आक्रोश से प्रेरित थी (क्योंकि यह एक ऐसी भावना थी जिसे उन्होंने लंबे समय तक वाक्पटुता के माध्यम से ऐसे क्षणों में अपने वश में रखना सीख

लिया था), बल्कि इसलिए कि यह वह लगाम थी जिसका उपयोग उन्होंने स्वयं अहंकार के किसी भी रूप से बचने के लिए उस संतुष्टि को नियंत्रित करने के लिए किया था जो उनकी मित्र उनके लिए प्राप्त करने का प्रयास कर रही थी। यह भी संभव था कि जिस मुस्कुराते हुए संयम के साथ उन्होंने इन ईशनिंदाओं का सामना किया और जवाब दिया, उससे यह कोमल और पाखंडी फटकार उनके स्पष्ट और उदार स्वभाव को जीवन के प्रति उस आपराधिक रवैये का एक विशेष रूप से शर्मनाक और लुभावना रूप लगी जिसे वह अपनाने का प्रयास कर रही थीं। लेकिन वह उस महिला द्वारा स्नेहपूर्ण व्यवहार किए जाने के आकर्षण का विरोध नहीं कर सकीं जिसने अभी-अभी असहाय मृतकों के प्रति इतनी निर्दयीता दिखाई थी; वह अपनी सहेली की गोद में उछल पड़ी और चूमने के लिए अपना निष्कलंक माथा आगे बढ़ा दिया; ठीक वैसे ही जैसे एक बेटी अपनी माँ के साथ करती है, इस बात से बेहद खुश होकर कि वे दोनों मिलकर एम. विंटेइल पर क्रूरता की आखिरी चोट कर रही हैं, मानो सचमुच उनकी कब्र को लूट रही हों, पितृत्व के पवित्र अधिकारों से उन्हें वंचित कर रही हों। उसकी सहेली ने लड़की का सिर अपने हाथों में लिया और उसके माथे पर चुंबन किया, यह चुंबन मैडम विंटेइल के प्रति उसके सच्चे स्नेह और एक अनाथ के नीरस और उदास जीवन में कुछ खुशी लाने की इच्छा से प्रेरित था।

"क्या आप जानते हैं कि मैं उस पुरानी भयानक चीज़ के साथ क्या करना चाहूँगी?" उसने तस्वीर उठाते हुए कहा। उसने मैडम विंटेइल के कान में कुछ फुसफुसाया जो मुझे समझ नहीं आया।

"अरे! तुम ऐसा करने की हिम्मत कभी नहीं करोगे।"

"इस पर थूकने की हिम्मत भी नहीं? उस पर?" दोस्त ने जानबूझकर क्रूरता से चिल्लाते हुए कहा।

इसके बाद मैंने कुछ और नहीं सुना, क्योंकि श्रीमती विन्ट्यूइल, जो अब थकी हुई, असहज, चिंतित, गंभीर और कुछ हद तक उदास लग रही थीं, खिड़की पर वापस आईं और शटर बंद कर दिए; लेकिन अब मैं जान गया था कि श्री विन्ट्यूइल को अपनी बेटी के कारण अपने जीवनकाल में जो भी कष्ट सहना पड़ा था, उसके बदले में उनकी मृत्यु के बाद उनसे क्या पुरस्कार मिला था।

फिर भी, मैंने बाद में सोचा कि अगर एम. विंटेइल उस दृश्य में मौजूद होते, तो शायद वे अब भी, और सब कुछ के बावजूद, अपनी बेटी के हृदय की अच्छाई पर विश्वास करते रहते, और शायद ऐसा करने में वे पूरी तरह गलत भी नहीं होते। यह सच था कि मैडम विंटेइल के सभी कार्यों में बुराई का इतना प्रबल और निरंतर रूप दिखाई देता था कि इसे इतनी पूर्णता से प्रदर्शित करना मुश्किल होता, सिवाय उस व्यक्ति के जिसे आजकल 'सैडिस्ट' कहा जाता है; पेरिस के थिएटर की चकाचौंध के पीछे, न कि किसी वास्तविक देहाती घर के साधारण दीपक के नीचे, कोई उम्मीद करता है कि एक लड़की अपनी सहेली को अपने पिता के चित्र पर थूकने के लिए उकसाएगी, जिसने केवल उसी के लिए जीवन जिया और मरा; और जब हम वास्तविक जीवन में नाटकीय प्रभाव की इच्छा पाते हैं, तो आमतौर पर इसके लिए 'सैडिस्ट' प्रवृत्ति ही जिम्मेदार होती है। यह संभव है कि 'सैडिज्म' की ओर जरा भी झुकाव न रखते हुए भी, एक लड़की मैडम विंटेइल जैसी ही क्रूरता दिखा सकती थी। अपने मृत पिता की स्मृति का अपमान करने और उनकी इच्छाओं की अवहेलना करने में विंटेउइल दोषी थीं, लेकिन उन्होंने जानबूझकर इतने क्रूर और सूक्ष्मता से रहित कृत्य के माध्यम से उन्हें व्यक्त नहीं किया होगा; उनके व्यवहार में आपराधिक तत्व अन्य लोगों और यहां तक कि स्वयं उन्हें भी कम स्पष्ट रहा होगा, क्योंकि उन्होंने स्वयं यह स्वीकार नहीं किया होगा कि वह गलत

कर रही हैं। लेकिन, बाहरी दिखावे से परे, मैडम विंटेउइल की आत्मा में, कम से कम प्रारंभिक अवस्था में, बुराई का तत्व संभवतः पूर्णतः समाहित नहीं था। उनके जैसी 'सैडिस्ट' बुराई की कलाकार होती हैं, जो एक पूर्णतः दुष्ट व्यक्ति नहीं हो सकता, क्योंकि उस स्थिति में बुराई बाहरी नहीं होती, वह उन्हें बिल्कुल स्वाभाविक लगती, और स्वयं से अलग भी नहीं होती; और जहाँ तक सद्गुण, मृतकों के प्रति सम्मान, पुत्रवत आज्ञाकारिता की बात है, चूंकि उन्होंने कभी इन चीजों का पालन नहीं किया होगा, इसलिए उन्हें इनके अपमान में कोई अधार्मिक आनंद नहीं आता। मैडम विंटेउइल के 'सैडिस्ट'... विंटेइल जैसे लोग इतने भावुक और स्वभाव से इतने गुणी होते हैं कि उन्हें इंद्रिय सुख भी बुरा लगता है, मानो वह दुष्टों का विशेषाधिकार हो। और जब वे क्षण भर के लिए भी इसका आनंद लेते हैं, तो वे स्वयं और अपने साथी अपराधियों के लिए दुष्टों का रूप धारण करने का प्रयास करते हैं, ताकि क्षणिक रूप से यह भ्रम प्राप्त कर सकें कि वे अपने कोमल और ईमानदार स्वभाव के नियंत्रण से परे जाकर आनंद की अमानवीय दुनिया में चले गए हैं। और मैं समझ सकता था कि जब मुझे एहसास हुआ कि उसके लिए ऐसा करना असंभव है, तो वह इस तरह के पलायन के लिए कितनी तरस रही होगी। जिस क्षण वह अपने पिता के बिल्कुल विपरीत दिखना चाहती थी, उसी क्षण उसने मुझे अपने विचार और वाणी में उस बेचारे बूढ़े संगीत शिक्षक के तौर-तरीकों की याद दिला दी। वास्तव में, उसकी तस्वीर कुछ भी नहीं थी; वास्तव में उसने जिस चीज़ का अपमान किया, जिसे उसने अपने सुखों की पूर्ति के लिए भ्रष्ट कर दिया, लेकिन जो चीज़ उनके और उसके बीच बनी रही और उसे उनका प्रत्यक्ष आनंद लेने से रोकती रही, वह थी उसके और उसके चेहरे की समानता, उसकी माँ की नीली आँखें जो उसने उसे विरासत में दी थीं, मानो परिवार में सहेज कर रखने लायक कोई छोटी सी वस्तु हो, वे छोटी-

छोटी मैत्रीपूर्ण हरकतें और झुकाव जिन्होंने मैडम विंटेउइल की दुष्टता और उसके बीच एक ऐसी शब्दावली, एक ऐसी मानसिकता स्थापित कर दी जो बुराई के लिए नहीं बनी थी, जिसने उसे इसे उन अनगिनत छोटे सामाजिक कर्तव्यों और शिष्टाचारों से अलग नहीं माना, जिन्हें उसे हर दिन निभाना पड़ता था। यह बुराई नहीं थी जिसने उसे सुख का विचार दिया, जो उसे आकर्षक लगा; बल्कि, सुख ही था जो उसे बुरा लगा। और जैसे-जैसे, हर बार जब वह इसमें लिप्त होती, सुख उसके साथ ऐसे बुरे विचार लेकर आता, जिनका आमतौर पर उसके सदाचारी मन में कोई स्थान नहीं होता, अंततः उसने सुख में ही कुछ शैतानी देखा, उसे बुराई के साथ जोड़ दिया। शायद मैडम विन्ट्यूइल को लगा कि उसकी सहेली दिल से पूरी तरह बुरी नहीं थी, उन निंदनीय बातों को कहने में वह सचमुच ईमानदार नहीं थी। फिर भी, उसे माथे पर उन चुम्बनों, उन मुस्कानों, उन निगाहों का सुख मिला; शायद ये सब बनावटी थे, लेकिन उनकी नीच और दुष्ट अभिव्यक्ति उन भावों से मिलती-जुलती थी जो किसी ऐसे प्राणी के चेहरे पर दिखाई देते जो दया और सहनशीलता से नहीं, बल्कि स्वार्थ और क्रूरता से बना हो। वह एक पल के लिए खुद को यह भ्रम में डाल सकी कि वह सचमुच उस तरह से अपना मनोरंजन कर रही है, जैसे कोई लड़की, अपने पिता की यादों के प्रति उस भयानक घृणा का अनुभव करते हुए, अपने जैसे अस्वाभाविक साथी के साथ अपना मनोरंजन करती है। शायद वह दुष्टता को इतनी दुर्लभ, इतनी असामान्य, इतनी अनोखी अवस्था के रूप में नहीं देखती, जिसे देखना इतना ताजगी भरा होता है, यदि वह स्वयं में, और अपने सभी साथी पुरुषों और महिलाओं में, उन पीड़ाओं के प्रति उस उदासीनता को पहचान पाती, जिसे चाहे जो भी नाम दिया जाए, क्रूरता का एकमात्र सच्चा, भयानक और स्थायी रूप है।

यदि 'मेसेग्लिस मार्ग' इतना आसान था, तो 'गुएरमांटेस मार्ग' पर चलना

बिल्कुल अलग बात थी, क्योंकि इसका मतलब एक लंबी पैदल यात्रा थी, और हमें पहले मौसम की स्थिति सुनिश्चित करनी थी। जब मौसम सुहाना होने लगा था, और जब फ्रांस्वा, 'बेचारी फसलों' पर एक बूंद भी बारिश न होने से हताश होकर, आसमान की ओर देखती और वहाँ नीले रंग की शांत सतह पर इधर-उधर तैरते छोटे-छोटे सफेद बादल देखकर ज़ोर से कराह उठी और बोली: "ऐसा लगता है जैसे ये कुछ छोटी मछलियाँ हों जो इधर-उधर तैर रही हों और अपनी थूथन ऊपर उठा रही हों! आह, ये बेचारे मज़दूरों के लिए थोड़ी बारिश करने के बारे में कभी नहीं सोचतीं! और फिर जब सारा मक्का पक जाएगा, तो बारिश होगी, चारों ओर खड़खड़ाहट करती हुई, और उसे इस बात की परवाह नहीं होगी कि वह कहाँ गिर रही है, मानो वह समुद्र पर गिर रही हो!"—जब मेरे पिता की माली से की गई अपीलों का कई बार एक ही उत्साहवर्धक जवाब मिला, तब खाने के समय कोई कहता: "कल, अगर मौसम ठीक रहा, तो हम गुएरमांटेस के तरीके से जा सकते हैं।" दोपहर के भोजन के तुरंत बाद, हम छोटे से बगीचे के फाटक से निकलकर रू डेस पर्चेम्प्स में पहुँच जाते थे, जो संकरी और तीखे कोण पर मुड़ी हुई थी, घास के छोटे-छोटे टुकड़ों से भरी हुई थी, जिन पर दो-तीन ततैया दिनभर वनस्पतियों का अध्ययन करती रहती थीं। यह गली अपने नाम की तरह ही विचित्र थी, जिससे मुझे लगता था कि इसकी अनोखी विशेषताएँ और व्यक्तित्व उत्पन्न हुए थे; एक ऐसी गली जिसे आज के कॉम्ब्रे में व्यर्थ ही खोजा जा सकता है, क्योंकि अब उसकी जगह पर एक पब्लिक स्कूल बन गया है। लेकिन कॉम्ब्रे के अपने सपनों में (उन वास्तुकारों की तरह, जो वायलेट-ले-ड्यूक के शिष्य थे और यह सोचकर कि वे पुनर्जागरण काल के एक चबूतरे और अठारहवीं शताब्दी की वेदी के नीचे नॉर्मन गायन मंडली के निशान खोज सकते हैं, पूरे चर्च को उस अवस्था में बहाल कर देते हैं, जिस अवस्था में

वह संभवतः बारहवीं शताब्दी में था), मैं आधुनिक इमारत का एक भी पत्थर खड़ा नहीं छोड़ता, मैं उसे भेदकर रू डेस पर्चैम्प्स को 'पुनर्स्थापित' करता हूँ। और इस तरह के पुनर्निर्माण के लिए स्मृति मुझे सामान्यतः पुनर्स्थापकों के पास उपलब्ध मार्गदर्शन से कहीं अधिक विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान करती है; वे चित्र जो इसने संरक्षित किए हैं—शायद आज दुनिया में बचे हुए अंतिम चित्र, और जो जल्द ही बाकी के साथ विस्मृति में विलीन हो जाएंगे—जो मेरे बचपन के दिनों में कॉम्ब्रे कैसा दिखता था, उसे दर्शाते हैं; वे चित्र, केवल इसलिए कि पुराने कॉम्ब्रे ने ही मेरे मन में उनकी रूपरेखा अंकित की थी, उसके लुप्त होने से पहले, उतने ही मार्मिक हैं—यदि मैं एक साधारण परिदृश्य की तुलना उन शानदार कृतियों से करूँ, जिनकी प्रतिकृतियाँ मेरी दादी मुझे देना बहुत पसंद करती थीं—जितने कि 'सेनाकोलो' के वे पुराने उत्कीर्णन, या जेंटाइल बेलिनी की वह पेंटिंग, जिसमें लियोनार्डो की उत्कृष्ट कृति और सेंट मार्क के पोर्टिको को उस अवस्था में देखा जा सकता है, जिस अवस्था में वे अब मौजूद नहीं हैं।

हम रू डे ल'ओइसो से गुज़रते हुए ओइसो फ्लेशे के पुराने सराय के सामने से निकले, जिसके विशाल आंगन में कभी डचेस डी मोंटपेंसियर, डी गुएरमांटेस और डी मोंटमोरेंसी के रथ गड़गड़ाते हुए आते थे, जब उन्हें अपने किसानों के साथ किसी कानूनी मामले के लिए या उनसे सम्मान प्राप्त करने के लिए कॉम्ब्रे आना पड़ता था। अंत में हम मॉल पहुंचे, जिसके पेड़ों के बीच से मैं सेंट-हिलैरे के शिखर को देख सकता था। और मेरी इच्छा थी कि मैं वहाँ बैठकर पूरा दिन बिता सकूँ, पढ़ता रहूँ और घंटियों की आवाज़ सुनता रहूँ, क्योंकि वहाँ का वातावरण इतना मनमोहक और इतना शांत था कि जब एक घंटा बजता, तो आप यह नहीं कहते कि इसने दिन की शांति भंग की है, बल्कि ऐसा लगता कि इसने दिन की निरर्थकता को दूर कर दिया है, और जैसे किसी ऐसे व्यक्ति की सुस्त,

सावधानीपूर्वक और सटीक कार्यशैली के साथ, जिसके पास करने के लिए और कुछ नहीं है, मीनार ने गर्म धूप में धीरे-धीरे और स्वाभाविक रूप से जमा हुई कुछ सुनहरी बूंदों को निचोड़ने और गिराने के लिए, एक निश्चित क्षण में, मौन की फैली हुई सतह को दबा दिया हो।

'गुएरमांटेस' मार्ग का सबसे बड़ा आकर्षण यह था कि लगभग हर समय हमारे साथ विवोन नदी बहती रहती थी। घर से निकलने के दस मिनट बाद, हम सबसे पहले पोंट-वियू नामक एक पैदल पुल से इसे पार करते थे। और हर साल, जब हम ईस्टर की सुबह, प्रवचन के बाद, कॉम्ब्रे पहुँचते थे, अगर मौसम सुहावना होता, तो मैं दौड़कर वहाँ जाता था (एक बड़े त्योहार की सुबह फैली अव्यवस्था के बीच, जिसकी भव्य तैयारियों के कारण घर के रोज़मर्रा के बर्तन, जिन्हें हटाया नहीं जा सका है, पहले से कहीं अधिक गंदे लगते हैं) बहती नदी को देखने के लिए, जो किनारों के बीच पहले से ही आसमानी नीली होती थी, जिसके किनारे अभी भी काले और सूखे होते थे, उसके साथी केवल समय से पहले खिले हुए डैफ़ोडिल के गुच्छे, कुछ प्रिमरोज़, जो सबसे पहले खिले होते थे, और कहीं-कहीं वायलेट की नीली लौ चमकती रहती थी, जिसका तना उसके छोटे से सींग में जमा सुगंध की बूंद के भार से झुका होता था। पोंट-वियू नदी एक संकरे रास्ते की ओर जाती थी, जो गर्मियों में हेज़ल के पेड़ों की नीली पत्तियों से ढका रहता था। इस पेड़ के नीचे एक मछुआरा भूसे की टोपी पहने बैठा रहता था। कॉम्ब्रे में, जहाँ मैं सबको जानता था और किसी भी लोहार या दुकानदार के लड़के को उसके नौकर की वर्दी या गायक के चोगे में आसानी से पहचान लेता था, यह मछुआरा एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसे मैं कभी पहचान नहीं पाया। वह मेरे परिवार को ज़रूर जानता होगा, क्योंकि जब हम वहाँ से गुज़रते थे तो वह अपनी टोपी उठाता था; और मैं उसका नाम पूछने ही वाला होता था कि कोई मुझे चुप रहने का

इशारा कर देता था, वरना मछलियाँ डर जातीं। हम उस संकरे रास्ते पर चलते थे जो नदी से कई फीट ऊपर एक खड़ी ढलान के किनारे-किनारे चलता था। दूसरी तरफ की ज़मीन नीची थी और गाँव तक और दूर रेलवे स्टेशन तक चौड़े घास के मैदानों की एक श्रृंखला फैली हुई थी। इनके ऊपर, लंबी घास में आधे दबे हुए, कॉम्ब्रे के पुराने काउंट्स के किले के अवशेष बिखरे पड़े थे, जिन्होंने मध्य युग के दौरान, विवोन नदी के इस किनारे पर, गुएरमांटेस के लॉर्ड्स और मार्टिनविले के मठाधीशों के हमलों से बचाव के लिए एक बाधा और रक्षा का काम किया था। अब केवल कुछ मीनारों के ठूंठ, खेतों की चौड़ी सतह पर मुश्किल से दिखाई देने वाले टीले, टूटे हुए प्राचीर ही बचे थे, जिन पर कभी धनुर्धर पत्थर फेंकते थे, पहरेदार नोवेपोंट, क्लेयरफॉन्टेन, मार्टिनविले-ले-सेक, बैलेउ-ल'एक्ज़ेम्प्ट, सभी गुएरमांटेस की जागीरों पर नज़र रखते थे, एक ऐसा घेरा जिसमें कॉम्ब्रे कैद था; लेकिन अब घास के बीच गिरे हुए, ज़मीन के बराबर, क्रिश्चियन ब्रदर्स स्कूल के लड़कों द्वारा चढ़े और नियंत्रित किए जाते थे, जो वहां अपने खेल के समय में या पाठ्यपुस्तकों से नकल करने के लिए आते थे। एक ऐसे अतीत के प्रतीक जो धरती के नीचे धंसकर लगभग लुप्त हो चुका था, जो अब पानी के किनारे पड़ा था, मानो कोई आलसी व्यक्ति हवा में धुआँ उड़ा रहा हो, फिर भी मुझे गहन चिंतन के लिए प्रेरित कर रहा था, जिससे कॉम्ब्रे नाम मेरे लिए केवल आज के छोटे शहर का ही नहीं, बल्कि एक अत्यंत भिन्न ऐतिहासिक शहर का प्रतीक बन गया था, जो बटरकप के चमकीले आवरण के नीचे आधे छिपे अपने दूरस्थ, अकल्पनीय स्वरूपों से मेरी कल्पना को जकड़ लेता था। क्योंकि बटरकप उस स्थान पर अनगिनत उग आए थे जिसे उन्होंने घास के बीच अपने खेल के लिए चुना था, अकेले, जोड़ों में, पूरे समूहों में खड़े, अंडे की जर्दी की तरह पीले, और एक अतिरिक्त चमक से दमकते हुए, मुझे ऐसा लगा,

क्योंकि मैं अपने स्वाद से उस आनंद को पूर्ण करने में असमर्थ था जो उन्हें देखकर मुझे हमेशा मिलता था, मैं उसे तब तक संचित होने देता था जब तक कि मेरी आँखें उनके सुनहरे विस्तार पर घूमती रहती थीं, जब तक कि वह मेरे मन में पूर्ण, अनुत्पादक सुंदरता का एक नया उदाहरण बनाने की शक्ति प्राप्त न कर ले; और ऐसा मेरे बचपन से ही होता आया था, जब मैं नदी के किनारे से ही उनकी ओर बाहें फैला देता था, इससे पहले कि मैं उनका प्यारा नाम भी बोल पाता—एक ऐसा नाम जो किसी फ्रांसीसी परीकथा के राजकुमार के लिए उपयुक्त हो; शायद किसी सुदूर शताब्दी में एशिया से आए उपनिवेशी, लेकिन अब गाँव में हमेशा के लिए बस चुके, अपने सीमित क्षितिज से संतुष्ट, धूप और पानी के किनारे का आनंद लेते हुए, रेलवे स्टेशन की अपनी छोटी सी झलक के प्रति वफादार; फिर भी, हमारी कुछ पुरानी पेंटिंग्स की तरह, अपनी आम सादगी में, सुनहरे पूर्व की एक काव्यात्मक चमक बरकरार रखते हुए।

मैं लड़कों द्वारा विवोन नदी में छोटी मछलियाँ पकड़ने के लिए डाले जाने वाले कांच के जारों को देखकर अपना मनोरंजन करता था। नदी की धारा से भर जाने वाले ये जारे, जिनमें वे स्वयं भी समाहित होते थे, एक साथ ऐसे 'पात्र' थे जिनकी पारदर्शी सतहें जमे हुए पानी की तरह थीं और 'सामग्री' किसी और भी बड़े तरल, बहते क्रिस्टल जैसे पात्र में डूबी हुई थीं। ये जारों में रखे पानी की तुलना में कहीं अधिक सुखद और उत्तेजक शीतलता का आभास कराते थे, जो भोजन के लिए सजी मेज पर रखे पानी को निरंतर उस अगोचर पानी के बीच भागता हुआ प्रतीत होता था, जिसे मेरे हाथ पकड़ नहीं सकते थे, और उस अघुलनशील कांच के बीच, जिसका स्वाद मेरी जीभ नहीं ले सकती थी। मैंने निश्चय किया कि मैं वहाँ फिर से मछली पकड़ने के लिए एक कांटा लेकर आऊँगा; मैंने दोपहर के भोजन की टोकरी से रोटी का एक टुकड़ा माँगा और प्राप्त किया। और

विवोन में गोलियां फेंक दीं जिनमें, ऐसा प्रतीत होता था, रासायनिक अवक्षेपण लाने की शक्ति थी, क्योंकि पानी तुरंत उनके चारों ओर दुबले-पतले मेंढक के बच्चों के अंडाकार गुच्छों में जम गया, जिन्हें तब तक वह निस्संदेह घोल में अदृश्य रूप से धारण किए हुए था, लेकिन क्रिस्टलीकरण की अवस्था में प्रवेश करने के लिए तैयार और सतर्क था।
कुछ समय बाद विवोन नदी जलीय पौधों से भर गई। पहले तो वे अकेले-अकेले दिखाई देते थे, जैसे कि एक लिली, जो दुर्भाग्यवश धारा के बीचोंबीच उग आई थी और उसे एक पल के लिए भी चैन नहीं लेने देती थी। इस प्रकार, जैसे कोई नाव मशीनी रूप से चल रही हो, वह एक किनारे पर जाकर फिर दूसरे किनारे पर लौट आती, और इस तरह अपना दोहरा सफर बार-बार दोहराती रहती। किनारे की ओर धकेले जाने पर, उसका तना सीधा हो जाता, लंबा हो जाता, लगभग टूटने की कगार तक खिंच जाता, जब तक कि धारा उसे फिर से पकड़ न लेती। धारा उसे फिर से अपनी चपेट में ले लेती, उसके हरे-भरे तने वापस अपनी जगह पर आ जाते और उस अभागे पौधे को उसके आरंभिक बिंदु पर ले आती, क्योंकि उसका भाग्य यही लिखा था कि वह वहाँ एक पल भी आराम नहीं कर पाएगी और फिर से आगे बढ़ जाएगी। मैं उसे अब भी वहीं पाता, एक के बाद एक सैर पर, हमेशा उसी असहाय अवस्था में, जो न्यूरोस्थेनिया के कुछ पीड़ितों की याद दिलाती थी, जिनमें मेरे दादाजी मेरी चाची लियोनी को भी शामिल करते, जो बिना किसी बदलाव के, साल दर साल, अपनी अजीब और समझ से परे आदतों का तमाशा पेश करती हैं, जिन्हें वे हमेशा छोड़ने की कोशिश करती हैं, लेकिन जिन्हें वे अंत तक बनाए रखती हैं; अपनी ही बीमारियों और सनक के चक्रव्यूह में फंसी, उनसे बचने के उनके व्यर्थ प्रयास केवल उस चक्र को गति देते हैं, उनके अजीब, अपरिहार्य, घातक दैनिक चक्र को गतिमान रखते हैं। ऐसी ही थी कमल, और उन

अभागों में से एक, जिनकी विचित्र पीड़ाएँ अनंत काल तक बार-बार दोहराई जाती हैं, जिन्होंने दांते की जिज्ञासा जगाई थी, जो पीड़ितों से ही अधिक विस्तार से और पूरी जानकारी प्राप्त कर लेते, यदि वर्जिल आगे न बढ़ रहे होते, और उन्हें अपने पीछे पूरी गति से न दौड़ाते, जैसे मुझे अपने माता-पिता के पीछे दौड़ना पड़ता है।

लेकिन आगे जाकर धारा धीमी पड़ गई, जहाँ नदी एक ऐसी संपत्ति से होकर गुज़रती थी जिसे उसके मालिक ने जनता के लिए खोल दिया था। मालिक को जलीय बागवानी का शौक था, इसलिए विवोन नदी का पानी जिन छोटे तालाबों में मोड़ा गया था, वे कमल के फूलों से खिले हुए थे। इस स्थान पर किनारे घने पेड़ों से ढके होने के कारण, पेड़ों की घनी छाया ने पानी को एक ऐसा रंग दिया जो आमतौर पर गहरा हरा होता था, हालाँकि कभी-कभी, जब हम तूफानी दोपहर के बाद किसी शांत शाम को घर लौट रहे होते थे, तो मैंने इसकी गहराई में एक साफ, हल्का नीला रंग देखा था जो लगभग बैंगनी जैसा था, मानो जापानी क्लोइज़न की सतह हो। सतह पर कहीं-कहीं, स्ट्रॉबेरी की तरह शरमाते हुए, सफेद पंखुड़ियों के घेरे में जड़े हुए कमल के फूल का लाल रंग का दिल तैर रहा था।

इनके आगे फूल अधिक संख्या में थे, लेकिन फीके, कम चमकदार, अधिक घने बीजों वाले, अधिक कसकर मुड़े हुए, और संयोगवश इतने सुंदर मालाओं में सजे हुए थे कि मुझे ऐसा लगता था मानो वे किसी वाटो उत्सव में इस्तेमाल की गई सजावटों के नीरस रूप से उतारे जाने के बाद, ढीली मालाओं में लिपटे काई-गुलाबों की तरह धारा पर तैर रहे हों। कहीं और एक कोना आम किस्म की लिली के लिए आरक्षित प्रतीत होता था; रॉकेट के फूलों की तरह साफ गुलाबी या सफेद रंग की, जिन्हें गृहणी की देखभाल से चीनी मिट्टी की तरह साफ धोया गया हो; जबकि, थोड़ा और आगे, अन्य फूल एक तैरते हुए बगीचे की क्यारी में पास-पास दबे हुए थे,

मानो पैंसी तितलियों की तरह किसी बगीचे से उड़कर इस जलमयी सीमा की पारदर्शी छाया के ऊपर नीले और चमकीले पंखों के साथ मंडरा रहे हों; यह आकाशमय सीमा भी, क्योंकि इसने फूलों के नीचे एक ऐसी मिट्टी बिछाई थी जिसका रंग उनके अपने रंग से कहीं अधिक कीमती, अधिक मनमोहक था; और दोपहर में, जब यह लिली के नीचे एक शांत, बेचैन और सतर्क खुशी के बहुरंगी दृश्य में चमकता था, और शाम के समय, जब यह डूबते सूरज के गुलाबी सपनों से एक दूर के स्वर्ग की तरह भर जाता था, जो लगातार बदलते और हमेशा सामंजस्य में रहते थे, फूलों के अधिक स्थायी रंग के साथ, अत्यंत गहनता, क्षणभंगुरता और रहस्य के साथ - अनंतता के एक शांत संकेत के साथ; दोपहर हो या शाम, ऐसा लगता था मानो इसने उन्हें आकाश के हृदय में खिलने के लिए स्थापित कर दिया हो।

इस पार्क से निकलने के बाद विवोन नदी फिर से तेज़ बहने लगी। मैंने कितनी बार देखा है, और जब मुझे अपनी मर्ज़ी से जीने की आज़ादी मिली होती, तो मैं भी उसकी नकल करने की कितनी ही बार इच्छा करता, एक नाविक को जिसने अपने चप्पू किनारे रख दिए हों और अपनी नाव के तल पर पीठ के बल सिर नीचे करके लेटा हो, उसे धारा के साथ बहने दे रहा हो, उसे ऊपर चुपचाप सरकते आकाश के सिवा कुछ दिखाई न दे रहा हो, जो उसके चेहरे पर सुख और शांति की झलक दिखा रहा हो।

हम पानी के किनारे आइरिस के फूलों के बीच बैठ जाते। छुट्टियों के आसमान में एक सुस्त बादल अपनी पूरी लंबाई में फैला हुआ था। कभी-कभार, आलस्य के बोझ से चूर होकर, एक कार्प मछली बेचैनी भरी साँस के साथ पानी से बाहर निकलती। हमारे खाने का समय हो गया था। घर लौटने से पहले हम वहाँ काफी देर तक घास पर बैठकर फल, रोटी और चॉकलेट खाते, और हमारे कानों में सेंट-हिलैरे की घंटियों की धीमी,

लेकिन ठोस और धातु जैसी आवाज़ आती, जो उस वातावरण में बिल्कुल भी घुलती नहीं थी जिसमें वह गूंजने की आदी थी, बल्कि उनकी गूंजती हुई आवाज़ों के लगातार कंपन से टुकड़ों में टूटकर, हमारे पैरों के पास के फूलों को छूते हुए धड़कती थी।

कभी-कभी, नदी के किनारे और पेड़ों के बीच, हमें एक ऐसा घर दिखाई देता था जिसे 'मनोरंजन घर' कहा जाता था, एकांत में, दुनिया से कटा हुआ, सिवाय उस नदी के जो उसके पैरों को छूती थी। एक युवती, जिसका उदास चेहरा और फैशनेबल घूंघट उसके स्थानीय होने का संकेत नहीं देते थे, और जो निस्संदेह वहाँ, प्रचलित मुहावरे में, 'खुद को दफनाने' आई थी, उस कड़वी मिठास का स्वाद चखने के लिए कि उसका नाम, और उससे भी अधिक उस व्यक्ति का नाम जिसका दिल उसने कभी थाम लिया था, लेकिन रख नहीं पाई थी, वहाँ अज्ञात थी, एक खिड़की में खड़ी थी जहाँ से उसे अपने दरवाजे के पास बंधी नाव के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता था। उसने विचलित भाव से अपनी आँखें ऊपर उठाईं जब उसने नदी के किनारे लगे पेड़ों के बीच से राहगीरों की आवाज़ें सुनीं - जिनके बारे में, नज़र आने से पहले ही, वह निश्चित हो सकती थी कि उन्होंने कभी उस बेवफ़ा प्रेमी को नहीं जाना था, न ही जानेंगे, कि उनके पिछले जन्मों में उसका कोई निशान नहीं था, और न ही उनके भविष्य में कभी होगा। ऐसा प्रतीत हुआ मानो जीवन का त्याग करते हुए उसने स्वेच्छा से उन स्थानों को छोड़ दिया हो जहाँ वह कम से कम अपने प्रियतम को देख पाती, और उन स्थानों की ओर चल पड़ी जहाँ वह कभी गया ही नहीं था। और मैंने उसे देखा, जब वह किसी सड़क पर टहलने के बाद लौटी, जहाँ उसे पता था कि वह नहीं आएगा, और उसने अपनी विनम्र उंगलियों से एक कीमती, व्यर्थ ताबीज के लंबे दस्ताने निकाले।

'गुएरमांटेस मार्ग' पर अपनी सैर के दौरान, हम कभी भी विवोन नदी के

उद्गम स्थल तक नहीं पहुँच पाए, जिसके बारे में मैंने अक्सर सोचा था। मेरे मन में उसका एक ऐसा अमूर्त, एक आदर्श स्वरूप था कि जब किसी ने मुझे बताया कि वह वास्तव में उसी विभाग में और कॉम्ब्रे से कुछ मील की दूरी पर स्थित है, तो मुझे उतना ही आश्चर्य हुआ जितना उस दिन हुआ था जब मुझे पता चला कि पृथ्वी की सतह पर कहीं एक और निश्चित बिंदु है, जहाँ प्राचीन मान्यताओं के अनुसार नरक के द्वार खुलते हैं। और न ही हम कभी उस दूसरे लक्ष्य तक पहुँच पाए, जिसे पाने की मेरी इतनी तीव्र इच्छा थी, यानी स्वयं गुएरमांटेस तक। मुझे पता था कि यह इसके मालिकों, ड्यूक और डचेस डी गुएरमांटेस का निवास स्थान था, मुझे पता था कि वे वास्तविक व्यक्तित्व थे जो वास्तव में अस्तित्व में थे, लेकिन जब भी मैं उनके बारे में सोचता था, तो मैं उन्हें या तो टेपेस्ट्री में चित्रित करता था, जैसे कि 'एस्तेर का राज्याभिषेक' जो हमारे चर्च में लटका हुआ था, या फिर बदलते, इंद्रधनुषी रंगों में, जैसे कि गिल्बर्ट द बैड अपनी खिड़की में, जहाँ वह गोभी के हरे रंग से, जब मैं पवित्र जल के पात्र में अपनी उंगलियाँ डुबो रहा था, से लेकर बेर के नीले रंग तक, जब मैं कुर्सियों की हमारी पंक्ति तक पहुँच गया था, बदल जाता था, या फिर पूरी तरह से अगोचर, जैसे कि गुएरमांटेस परिवार की पूर्वज जेनेवीव डी ब्राबेंट की छवि, जिसे मैजिक लैंटर्न मेरे कमरे के पर्दों पर घुमाता था या छत पर ऊपर फेंक देता था - संक्षेप में, हमेशा मेरोविंगियन युग के रहस्य में लिपटा हुआ, और सूर्यास्त की तरह, गूंजते हुए अक्षर 'एंटेस' से निकलने वाली नारंगी रोशनी में नहाया हुआ। और इसके बावजूद, यदि वे मेरे लिए, ड्यूक और डचेस के रूप में, वास्तविक लोग थे, भले ही एक अपरिचित प्रकार के, तो यह ड्यूकल व्यक्तित्व बदले में बहुत अधिक विस्तारित, अमूर्त हो गया था, ताकि उस गुएरमांटेस को घेर सके और उसमें समाहित कर सके जिसके वे ड्यूक और डचेस थे, हमारी सैर का वह धूप से

जगमगाता 'गुएरमांटेस मार्ग', विवोन का मार्ग, उसके जल लिली और उसके छायादार पेड़, और गर्म गर्मी की दोपहरों की एक अंतहीन श्रृंखला। और मैं जानता था कि वे न केवल ड्यूक और डचेस डी गुएरमांटेस की उपाधियाँ धारण करते थे, बल्कि चौदहवीं शताब्दी से, जब युद्ध में इसके पूर्ववर्ती स्वामियों को जीतने के व्यर्थ प्रयासों के बाद, उन्होंने विवाह द्वारा स्वयं को संबद्ध कर लिया था, और इस प्रकार कॉम्ब्रे के काउंट बन गए थे, फलस्वरूप, उस स्थान के पहले नागरिक, और फिर भी इसके नागरिकों में एकमात्र ऐसे लोग जो इसमें निवास नहीं करते थे - कॉम्टेस डी कॉम्ब्रे, कॉम्ब्रे के स्वामी, इसे अपने नामों और उपाधियों की माला में पिरोते हुए, इसे अपने व्यक्तित्व में समाहित करते हुए, और निस्संदेह, अपने आप में उस विचित्र और धार्मिक उदासी को दर्शाते हुए जो कॉम्ब्रे की विशेषता थी; शहर के स्वामी, यद्यपि वहाँ किसी विशेष घर के नहीं; संभवतः, खुले में, सड़क पर, स्वर्ग और पृथ्वी के बीच में निवास करते हुए, गिल्बर्ट डी गुएरमांटेस की तरह, जिनकी छवि मुझे सेंट-हिलैरे के एप्स के रंगीन कांच में केवल 'दूसरी तरफ' धुंधले काले रंग में दिखाई देती थी, यदि मैं उन्हें खोजने के लिए अपनी आँखें ऊपर उठाता, जब मैं कामू के यहाँ नमक का एक पैकेट लेने जा रहा था।

फिर ऐसा हुआ कि, 'गुएरमांटेस के रास्ते' चलते हुए, मैं कभी-कभी अच्छी तरह से सींचे हुए छोटे-छोटे बगीचों की एक कतार के पास से गुज़रता था, जिनकी बाड़ों के ऊपर गहरे रंग के फूलों के गुच्छे खिले होते थे। मैं उनके सामने रुक जाता, इस उम्मीद में कि मेरे अनुभव में कुछ अनमोल इज़ाफ़ा हो जाए, क्योंकि ऐसा लगता था मानो मेरी आँखों के सामने उस नदी किनारे के देश का एक टुकड़ा हो, जिसे मैं अपने पसंदीदा लेखकों में से एक के वर्णन को पढ़ने के बाद से देखने और जानने के लिए तरस रहा था। और उसी कहानी-पुस्तक जैसी भूमि से, जिसकी काल्पनिक मिट्टी

सैकड़ों कलकल करते जलधाराओं से कटी हुई थी, गुएरमांटेस, मेरे मन में अपना रूप बदलते हुए, जुड़ गया, जब मैंने डॉ. पर्सेपीड को ड्यूकल पार्क में देखे जाने वाले फूलों और मनमोहक छोटी नदियों और फव्वारों के बारे में बात करते सुना। मैं सपने देखता था कि श्रीमती डी गुएरमांटेस, अचानक मुझ पर मोहित होकर, मुझे वहाँ आमंत्रित करती हैं, और सारा दिन मेरे साथ ट्राउट मछली पकड़ती रहती हैं। और जब शाम होती, तो वह मेरा हाथ थामे, अपने जागीरदारों के छोटे-छोटे बगीचों से गुज़रते हुए, मुझे उन फूलों की ओर इशारा करती, जिनकी लाल और बैंगनी कलियाँ नीची दीवारों के सहारे झुकी होतीं, और मुझे उनके सारे नाम बताती। वह मुझसे उन कविताओं के बारे में भी पूछती, जिन्हें मैं लिखने का इरादा रखता था। और इन सपनों ने मुझे याद दिलाया कि, चूंकि मैं एक दिन लेखक बनना चाहता था, इसलिए अब यह तय करने का सही समय था कि मैं किस तरह की किताबें लिखूंगा। लेकिन जैसे ही मैंने खुद से यह सवाल पूछा, और कुछ ऐसे विषय खोजने की कोशिश की, जिन्हें मैं असीम दार्शनिक महत्व दे सकूं, मेरा दिमाग घड़ी की तरह रुक जाता, मुझे अपने सामने खालीपन, कुछ भी नहीं दिखाई देता, मुझे या तो लगता कि मुझमें प्रतिभा बिल्कुल नहीं है, या शायद दिमाग की कोई बीमारी उसके विकास में बाधा डाल रही है। कभी-कभी मैं अपने पिता पर निर्भर रहता था कि वे मेरे लिए सब कुछ व्यवस्थित कर दें। वह इतना शक्तिशाली था, और प्रभावशाली लोगों के बीच इतना लोकप्रिय था कि उसने हमें उन कानूनों का उल्लंघन करने की अनुमति दे दी जिन्हें फ्रांस्वा ने मुझे जीवन और मृत्यु के कानूनों से भी अधिक अटल मानना सिखाया था, जैसे कि जब हमें पेरिस के उस हिस्से में सभी घरों में से केवल अपने घर की दीवारों की अनिवार्य रंगाई को एक वर्ष के लिए स्थगित करने की अनुमति दी गई थी, या जब उसने मंत्री से श्रीमती सजेरात के बेटे के लिए अनुमति प्राप्त की, जिसे किसी

शराबखाने में भेजा गया था, ताकि वह निर्धारित समय से दो महीने पहले अपनी डिग्री प्राप्त कर सके, उन उम्मीदवारों के बीच जिनके उपनाम 'ए' से शुरू होते थे, बजाय इसके कि उसे 'एस' के रूप में अपनी बारी का इंतजार करना पड़े। यदि मैं गंभीर रूप से बीमार पड़ जाता, यदि मुझे डाकुओं द्वारा पकड़ लिया जाता, और मुझे यह विश्वास होता कि सर्वोच्च शक्तियों के साथ मेरे पिता का समझौता इतना पूर्ण था कि सर्वशक्तिमान से उनके परिचय पत्र इतने अचूक थे कि मेरी बीमारी या कैद केवल व्यर्थ भ्रम ही साबित हो सकते थे, जिनमें वास्तव में कोई खतरा नहीं था, तो मैं पूर्ण शांति के साथ उस अपरिहार्य क्षण की प्रतीक्षा करता जब मैं आरामदायक वास्तविकताओं में लौट आता, गुलामी से मुक्त हो जाता या स्वस्थ हो जाता। शायद प्रतिभा की यह कमी, मेरे मन में जो काला गड्ढा था जब मैं अपने भविष्य के लेखन के विषय की तलाश में उसे खंगाल रहा था, वह भी एक निराधार भ्रम ही होता, और मेरे पिता के हस्तक्षेप से समाप्त हो जाता, जो सरकार और ईश्वर से यह व्यवस्था करते कि मैं अपने समय का पहला लेखक बनूँ। लेकिन कभी-कभी, जब मेरे माता-पिता मुझे उनके पीछे चलने के बजाय आलस करते देखकर अधीर हो जाते थे, तो मेरा वास्तविक जीवन, मेरे पिता द्वारा रची गई कृत्रिम रचना और जिसे वे अपनी इच्छानुसार बदल सकते थे, प्रतीत होने के बजाय, एक व्यापक वास्तविकता में समाहित प्रतीत होता था, जो मेरे लाभ के लिए नहीं बनाई गई थी, जिसके निर्णयों के विरुद्ध कोई अपील नहीं थी, जिसके हृदय में मैं असहाय, बिना मित्र या सहयोगी के बंधा हुआ था, और जिसके परे कोई और संभावना छिपी नहीं थी। तब मुझे यह स्पष्ट हो गया कि मैं अन्य सभी मनुष्यों के समान ही अस्तित्व में हूँ, कि मुझे बूढ़ा होना है, कि मुझे उनकी तरह मरना है, और उनके बीच मुझे केवल उन लोगों में से एक के रूप में पहचाना जाना है जिनमें लेखन की कोई प्रतिभा नहीं है। और इसलिए,

पूरी तरह से निराश होकर, मैंने ब्लोच द्वारा दिए गए प्रोत्साहनों के बावजूद, साहित्य का हमेशा के लिए त्याग कर दिया। यह अंतरंग, सहज भावना, मेरी बुद्धि की निरर्थकता का यह बोध, मुझ पर बरसाए जाने वाले सभी चापलूसी भरे भाषणों पर हावी हो गया, ठीक वैसे ही जैसे एक दुष्ट व्यक्ति, जब हर कोई उसके अच्छे कर्मों की प्रशंसा में शोर मचाता है, तो अंतरात्मा के गुप्त पश्चाताप से व्याकुल हो जाता है।

एक दिन मेरी माँ ने कहा: "तुम हमेशा श्रीमती डी गुएरमांटेस के बारे में बात करते रहते हो। खैर, चार साल पहले जब वह बीमार थीं, तब डॉक्टर परसेपीड ने उनकी बहुत देखभाल की थी, और इसीलिए वह अपनी बेटी की शादी के लिए कॉम्ब्रे आ रही हैं। तुम उन्हें चर्च में देख पाओगे।" संयोग से, मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस के बारे में सबसे ज़्यादा जानकारी डॉक्टर परसेपीड से ही सुनी थी, और उन्होंने हमें एक सचित्र अखबार का अंक भी दिखाया था जिसमें उन्हें उस पोशाक में दिखाया गया था जो उन्होंने प्रिंसेस डी लियोन द्वारा आयोजित एक फैंसी ड्रेस बॉल में पहनी थी।

अचानक, विवाह समारोह के दौरान, पुजारी एक तरफ हट गया, जिससे मुझे एक चैपल में बैठी एक महिला दिखाई दी, जिसके सुनहरे बाल और बड़ी नाक थी, नीली आँखें थीं, बैंगनी रेशम का लहराता हुआ स्कार्फ था, जो चमकदार, नया और चमकीला था, और नाक के कोने पर एक छोटा सा धब्बा था। और क्योंकि उसके चेहरे की सतह, जो लाल थी, मानो उसे बहुत गर्मी लगी हो, पर मैं धुंधली और मुश्किल से दिखाई देने वाली कुछ ऐसी बारीकियाँ देख सका जो मुझे दिखाए गए चित्र से मिलती-जुलती थीं; क्योंकि, विशेष रूप से, इस महिला में मैंने जो विशेष लक्षण देखे, यदि मैं उन्हें सूचीबद्ध करने का प्रयास करता, तो वे ठीक उसी रूप में सामने आते: - एक बड़ी नाक, नीली आँखें, जैसा कि डॉ. पर्सेपीड ने मेरे सामने डचेस डी गुएरमांटेस का वर्णन करते समय इस्तेमाल किया था,

मैंने मन ही मन कहा: "यह महिला डचेस डी गुएरमांटेस जैसी है।" अब जिस चैपल से वह समारोह देख रही थी, वह गिल्बर्ट द बैड का चैपल था; चपटे मकबरों के नीचे, जो पीले पड़ चुके थे और छत्ते में शहद की कोशिकाओं की तरह उभरे हुए थे, ब्राबेंट के पुराने काउंटों की हड्डियाँ दफ़न थीं; और मुझे याद आया कि मैंने सुना था कि यह चैपल गुएरमांटेस परिवार के लिए आरक्षित था, जब भी उनका कोई सदस्य कॉम्ब्रे में किसी समारोह में शामिल होने आता था; वास्तव में, श्रीमती डी गुएरमांटेस के चित्र से मिलती-जुलती केवल एक ही महिला थी जो उस दिन, जिस दिन उनके आने की उम्मीद थी, उस चैपल में बैठी हो सकती थी: वह वही थीं! मेरी निराशा बहुत बड़ी थी। यह इस बात से उत्पन्न हुई कि जब मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस के बारे में सोचा, तो मैंने यह ध्यान नहीं रखा कि मैं उन्हें अपने मन में एक टेपेस्ट्री या चित्रित खिड़की के रंगों में चित्रित कर रहा था, मानो वे किसी दूसरी सदी में जी रही हों, बाकी मानव जाति से अलग स्वभाव की हों। मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि उनका चेहरा लाल हो सकता है, श्रीमती सज़ेरत की तरह बैंगनी रंग का दुपट्टा हो सकता है; और उसके गालों की अंडाकार आकृति ने मुझे घर पर देखे गए लोगों की इतनी प्रबल याद दिला दी कि मेरे मन में यह संदेह उठा (हालाँकि यह तुरंत दूर हो गया) कि अपनी रचनात्मक संरचना में, अपने शारीरिक अणुओं में, यह महिला शायद मूल रूप से डचेस डी गुएरमांटेस नहीं थी, बल्कि उसका शरीर, लोगों द्वारा दिए गए नाम से अनभिज्ञ होकर, एक विशेष प्रकार की नारीत्व से संबंधित था जिसमें डॉक्टरों और व्यापारियों की पत्नियाँ भी शामिल थीं। "यह, यह अवश्य ही श्रीमती डी गुएरमांटेस हैं, और कोई नहीं!" ये शब्द उस ध्यानपूर्ण और विस्मयकारी भाव के पीछे छिपे थे जिसके साथ मैं इस छवि को निहार रहा था, जो स्वाभाविक रूप से उन छवियों से बिल्कुल अलग थी जो अक्सर 'श्रीमती डी गुएरमांटेस' के

नाम से मुझे सपनों में दिखाई देती थीं, क्योंकि यह छवि, अन्य छवियों की तरह, मेरे द्वारा मनमाने ढंग से नहीं बनाई गई थी, बल्कि अभी कुछ क्षण पहले ही, यहाँ चर्च में, पहली बार मेरी दृष्टि में प्रकट हुई थी; एक ऐसी छवि जो उसी प्रकृति की नहीं थी, जिसे इच्छा अनुसार रंगा नहीं जा सकता था, उन अन्य छवियों की तरह जो एक मधुर शब्दांश के नारंगी रंग को आत्मसात कर लेती थीं, बल्कि वह इतनी वास्तविक थी कि सब कुछ, यहाँ तक कि उसकी नाक के कोने पर स्थित वह छोटा सा धब्बा भी, जीवन के नियमों के प्रति उसके समर्पण का आश्वासन देता था, जैसे मंच पर एक रूपांतरण दृश्य में एक परी के वस्त्र की सिलवट, उसकी छोटी उंगली का कांपना, हमारी आँखों के सामने एक जीवित अभिनेत्री की भौतिक उपस्थिति को इंगित करता है, जबकि तब तक हम अनिश्चित थे कि कहीं हम केवल एक लालटेन से निकलने वाली प्रकाश की किरण को ही तो नहीं देख रहे थे।

इस बीच मैं इस छवि पर, जिसकी उभरी हुई नाक और तीखी आँखें मेरी दृष्टि में स्थिर और स्थूल थीं (शायद इसलिए कि सबसे पहले उन्हीं आँखों ने मेरी दृष्टि को प्रभावित किया था, मेरी सतह पर पहली छाप छोड़ी थी, इससे पहले कि मुझे यह सोचने का समय मिले कि मेरे सामने प्रकट होने वाली महिला कहीं श्रीमती डी गुएरमांटेस तो नहीं हैं), इस ताज़ा और अपरिवर्तनीय छवि पर यह विचार लागू करने का प्रयास कर रहा था: "यह श्रीमती डी गुएरमांटेस हैं"; लेकिन मैं केवल इस विचार को अपने और छवि के बीच से गुजारने में सफल रहा, मानो वे दो अलग-अलग तलों में गतिमान दो डिस्क हों, जिनके बीच एक खाली जगह हो। लेकिन यह श्रीमती... डी गुएरमांटेस, जिनके बारे में मैंने अक्सर सपने देखे थे, अब जब मैं देख सका कि उनका मुझसे स्वतंत्र एक वास्तविक अस्तित्व है, तो मेरी कल्पना पर उनका प्रभाव और भी बढ़ गया। एक ऐसी वास्तविकता

के संपर्क में आने से मेरी कल्पना क्षण भर के लिए स्तब्ध रह गई, जो मेरी अपेक्षाओं से बिल्कुल अलग थी, और फिर प्रतिक्रिया करने लगी और मेरे भीतर कहने लगी: "शार्लेमेन के दिनों से पहले महान और गौरवशाली, गुएरमांटेस को अपने जागीरदारों पर जीवन और मृत्यु का अधिकार था; डचेस डी गुएरमांटेस जेनेवीव डी ब्राबेंट की वंशज हैं। वह आज यहां मौजूद किसी भी व्यक्ति को नहीं जानतीं, और न ही जानना चाहेंगी।"

और फिर—अरे, मानवीय दृष्टि की अद्भुत स्वतंत्रता, जो मानवीय चेहरे से एक ऐसे ढीले, लंबे और लचीले धागे से बंधी है कि वह अकेले ही जहाँ चाहे भटक सकती है—जब श्रीमती डी गुएरमांटेस अपने मृत पूर्वजों की समाधियों के ऊपर बने चैपल में बैठी थीं, उनकी निगाहें यहाँ ठहरतीं, वहाँ भटकतीं, स्तंभों के शीर्षों तक पहुँचतीं और मुझ पर भी आकर टिक गईं, मानो सूर्य की एक किरण मुख्य हॉल में भटक रही हो, लेकिन सूर्य की वह किरण, जिस क्षण मुझे उसका स्पर्श मिला, ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह जानती हो कि वह कहाँ पड़ रही है। जहाँ तक श्रीमती डी गुएरमांटेस की बात है, वे वहाँ बिना हिले-डुले बैठी रहीं, एक ऐसी माँ की तरह जो अपने बच्चों के असभ्य या अटपटे व्यवहार को अनदेखा करने का दिखावा करती है, जो खेलते-खेलते उन लोगों से बात कर रहे हैं जिन्हें वह नहीं जानती, मेरे लिए यह निर्धारित करना असंभव था कि क्या वे अपने हृदय की उदासीनता में अपनी आँखों की इस भटकन को स्वीकार करती थीं या उसकी निंदा करती थीं।

मुझे लगा कि मेरे द्वारा उसे पर्याप्त समय तक निहारने से पहले उसका चर्च से न जाना महत्वपूर्ण है, मैंने खुद को याद दिलाया कि बीते वर्षों से मैं उसके दर्शन को अत्यंत वांछनीय मानता आया हूँ, और मैंने अपनी आँखें उस पर टिकाए रखीं, मानो उसे निहारने से मैं उसकी उस उभरी हुई नाक, उसके लाल गालों, और उसके चेहरे के उन सभी विवरणों की स्मृति को

अपने भीतर संजो सकूँ, जो मुझे अनमोल, प्रामाणिक और अद्वितीय जानकारी देते थे। और अब जब भी मैं उस चेहरे पर ध्यान केंद्रित करता हूँ —और विशेष रूप से, शायद, अपने उस आत्म-संरक्षण की सहज प्रवृत्ति पर, जिससे हम अपने भीतर की हर अच्छी चीज की रक्षा करते हैं, यह स्वीकार न करने के लिए कि मैं किसी भी तरह से धोखा खा गया था— तो मुझे वहाँ केवल सुंदरता ही दिखाई देती है; उसे एक बार फिर से (क्योंकि वे एक ही व्यक्ति थीं, मेरे सामने बैठी यह महिला और वह डचेस डी गुएरमांटेस, जिसे मैं तब तक एक काल्पनिक रूप में देखता आ रहा था) उस आम इंसान से अलग और ऊपर रखते हुए, जिसके साथ उसके साक्षात दर्शन ने मुझे एक पल के लिए भ्रमित कर दिया था, मैं क्रोधित हो गया जब मैंने अपने आस-पास के लोगों को यह कहते सुना: "वह श्रीमती सज़ेरत से अधिक सुंदर हैं" या "श्रीमती विंटेउइल से अधिक सुंदर हैं," मानो वह किसी भी तरह से उनके बराबर हों। और मेरी दृष्टि उसके सुनहरे बालों, उसकी नीली आँखों, उसकी गर्दन की रेखाओं पर टिकी हुई थी, और उन विशेषताओं को अनदेखा करते हुए जो मुझे अन्य महिलाओं के चेहरों की याद दिला सकती थीं, मैंने जानबूझकर अधूरे बनाए गए इस चित्र की प्रशंसा करते हुए मन ही मन कहा: "वह कितनी सुंदर हैं! क्या सच्ची कुलीनता है! यह वास्तव में एक गौरवशाली गुएरमांटेस हैं, जेनेवीव डी ब्राबेंट की वंशज, जो मेरे सामने हैं!" और मैंने अपना सारा ध्यान उसके चेहरे पर केंद्रित करने का जो प्रयास किया, उससे वह चेहरा मेरे मन में इस कदर बस गया कि आज जब मैं उस विवाह समारोह को याद करता हूँ, तो मुझे उसके और उस सेवक के अलावा वहाँ मौजूद किसी भी व्यक्ति की छवि नहीं दिखती, जिसने मेरे इस सवाल का सकारात्मक जवाब दिया था कि क्या वह महिला वास्तव में श्रीमती डी गुएरमांटेस थीं। लेकिन उसे, मैं आज भी स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ, खासकर उस क्षण में

जब जुलूस प्रार्थना कक्ष में प्रवेश कर रहा था, जो हवादार और बरसात के दिन की रुक-रुक कर आती तेज धूप से जगमगा रहा था, जहाँ श्रीमती डी गुएरमांटेस ने खुद को उन सभी कॉम्ब्रे लोगों के बीच पाया, जिनके नाम तक वह नहीं जानती थीं, लेकिन जिनकी हीनता ने उनकी श्रेष्ठता को इतनी जोर से घोषित किया कि बदले में उन्हें उनके लिए सच्ची, करुणामयी सहानुभूति महसूस हुई, और जिन्हें वह अपनी सादगी और स्वाभाविक आकर्षण के बल पर और भी अधिक प्रभावित कर सकती थीं। और फिर, चूंकि वह भीड़ में परिचित लोगों की ओर निर्देशित किए जाने वाले, निश्चित अर्थ से भरे, जानबूझकर दिए गए उन इशारों का प्रयोग नहीं कर सकती थी, बल्कि उसे अपने अस्पष्ट विचारों को अपनी आंखों से नीली रोशनी की बाढ़ की तरह लगातार बहने देना पड़ता था, जिस पर उसका कोई नियंत्रण नहीं था, इसलिए वह किसी भी तरह से दुखी नहीं होना चाहती थी, उन विनम्र मनुष्यों का अपमान नहीं करना चाहती थी जिन पर वह धारा बहती थी, जिनके द्वारा वह हर जगह रुक जाती थी। आज मैं फिर से देख सकता हूँ, उसके बैंगनी रंग के रेशमी और लहराते दुपट्टे के ऊपर, उसकी आँखों में कोमल आश्चर्य, जिसमें उसने किसी विशेष व्यक्ति को संबोधित करने का साहस किए बिना, बल्कि इस तरह से कि हर कोई इसका आनंद ले सके, एक ऐसी शाही महिला की लगभग शर्मीली मुस्कान जोड़ दी थी जो अपने प्रिय सेवकों के बीच अपनी उपस्थिति के लिए क्षमा मांग रही हो। यह मुस्कान मुझ पर भी टिकी थी, जिसने अपनी आँखों से उसका पीछा करना कभी नहीं छोड़ा था। और मुझे वो नज़र याद आ गई जो उसने पूजा के दौरान मुझ पर डाली थी, गिलबर्ट द बैड की खिड़की से छनकर आती सूरज की किरण की तरह नीली, और मैंने मन ही मन कहा, "ज़रूर, वो मेरे बारे में सोच रही है।" मुझे लगा कि मैं उसकी नज़रों में बस गया हूँ, कि चर्च से जाने के बाद भी वो

मेरे बारे में सोचती रहेगी, और शायद उस शाम गुएरमांटेस में मेरे लिए फिर से उदास हो जाएगी। और देखते ही देखते मुझे उससे प्यार हो गया, क्योंकि अगर कभी-कभी किसी औरत से प्यार करने के लिए इतना ही काफी होता है कि वो हमें तिरस्कार भरी नज़रों से देखे, जैसा कि मुझे लगता है मैडम स्वान ने किया होगा, जब हम सोचते हैं कि वो कभी हमारी नहीं हो सकती, तो कभी-कभी इतना भी काफी होता है कि वो हमें प्यार भरी नज़रों से देखे, जैसा कि मैडम डी गुएरमांटेस ने तब किया था, जब हम उसे लगभग अपनी ही समझने लगते हैं। उसकी आँखें नीले रंग के फूल की तरह चमक उठीं, जो मेरी पहुँच से बिल्कुल परे थीं, फिर भी उसने उन्हें मेरे लिए समर्पित कर दिया था; और सूरज, एक मंडराते बादल के पीछे से फिर फूट पड़ा और अपनी किरणों की पूरी शक्ति चौक और पूजा कक्ष पर बिखेर दी, जिससे शादी के लिए बिछाई गई लाल कालीन पर गेरेनियम जैसी चमक फैल गई, जिस पर श्रीमती डी गुएरमांटेस मुस्कुराते हुए आगे बढ़ीं, और उसकी ऊनी बनावट को गुलाबी मखमल की एक परत से ढक दिया, प्रकाश की एक चमक, जिसने उसे एक ऐसी कोमलता, एक आनंदमय उत्सव की भव्यता में एक गंभीर मिठास प्रदान की, जो लोहेनग्रिन के कुछ पन्नों, कार्पैसियो के कुछ चित्रों की विशेषता है, और हमें यह समझने में मदद करती है कि बॉडेलेयर तुरही की ध्वनि को 'स्वादिष्ट' विशेषण कैसे दे पाए।

उस दिन के बाद, 'गुएरमांटेस मार्ग' पर टहलते हुए, कितनी बार और कितने गहरे दुख के साथ मैंने साहित्यिक करियर के लिए अपनी योग्यता की कमी पर विचार किया, और इस बात पर कि मुझे एक प्रसिद्ध लेखक बनने की सारी आशा छोड़ देनी चाहिए। इस बात का जो अफसोस मुझे अकेले में कुछ पल सपने देखते हुए हुआ, उसने मुझे इतना तीव्र कष्ट दिया कि उस दर्द को महसूस न करने के लिए, मेरे मन ने दर्द के क्षण में एक

प्रकार के अवरोध के कारण, कविता, कथा लेखन, और उस काव्यात्मक भविष्य के बारे में सोचना पूरी तरह से बंद कर दिया, जिस पर प्रतिभा की कमी के कारण मैं भरोसा नहीं कर सकता था। फिर, उन सभी साहित्यिक व्यस्तताओं से बिल्कुल अलग, और किसी भी चीज़ से कोई निश्चित लगाव न रखते हुए, अचानक एक छत, पत्थर से परावर्तित सूर्य की एक किरण, सड़क की गंध मुझे थम जाने पर मजबूर कर देती, ताकि मैं उनमें से प्रत्येक से मिलने वाले विशेष आनंद का अनुभव कर सकूँ, और इसलिए भी क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था कि वे मेरी आँखों के सामने जो कुछ देख सकती थीं, उसके नीचे कुछ छिपा रही थीं, जिसे वे मुझे पास आने और उनसे प्राप्त करने के लिए आमंत्रित कर रही थीं, लेकिन जिसे, मेरे सभी प्रयासों के बावजूद, मैं कभी खोज नहीं पाया। जैसे ही मुझे लगता कि वह रहस्यमय वस्तु उनमें ही छिपी है, मैं उनके सामने स्थिर खड़ा रहता, निहारता, साँस लेता, अपने मन से देखी या सूंघी गई वस्तु से परे जाने का प्रयास करता। और यदि मुझे तब अपने दादाजी के पीछे जल्दी जाना होता, अपने रास्ते पर आगे बढ़ना होता, तब भी मैं अपनी आँखें बंद करके उनके प्रति अपनी संवेदना को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करता; मैं छत की रेखा और पत्थर के रंग को ठीक से याद करने पर ध्यान केंद्रित करता था, जो मुझे समझ में न आने के बावजूद, मानो किसी खजाने से भरे हुए, खुलने को तैयार और उस गुप्त खजाने को प्रकट करने को तैयार प्रतीत होते थे, जिसके वे स्वयं मात्र बाहरी आवरण थे। निश्चित रूप से इस प्रकार की कोई भी अनुभूति लेखक और कवि बनने की मेरी खोई हुई आशा को बहाल नहीं कर सकती थी, क्योंकि उनमें से प्रत्येक किसी ऐसी भौतिक वस्तु से जुड़ी थी जिसका कोई बौद्धिक मूल्य नहीं था और जो किसी अमूर्त सत्य का संकेत नहीं देती थी। लेकिन कम से कम उन्होंने मुझे एक तर्कहीन आनंद दिया, मन की उर्वरता का भ्रम दिया; और

इस तरह मुझे उस नीरसता से, अपनी ही नपुंसकता की भावना से विचलित किया जो मैंने तब महसूस की थी जब मैंने किसी महान साहित्यिक कृति के लिए दार्शनिक विषय की खोज की थी। रूप, सुगंध या रंग के इन अनुभवों ने मेरे अंतरात्मा पर इतना अत्यावश्यक भार डाल दिया था कि मैं उनके भीतर छिपे रहस्य को समझने का प्रयास करता था। इसलिए मैं इस कठिन प्रयास से आराम पाने और थकान से बचने के लिए बहाना ढूंढने में देर नहीं लगाता था। सौभाग्य से, मेरे माता-पिता ने मुझे बुला लिया; मुझे लगा कि फिलहाल मेरे पास अपने शोध को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक शांत वातावरण नहीं है, और घर पहुँचने तक इस विषय पर और विचार न करना ही बेहतर होगा, ताकि इस बीच मैं व्यर्थ में खुद को थका न लूँ। और इसलिए मैंने उस रहस्य के बारे में सोचना बंद कर दिया जो किसी रूप या सुगंध में छिपा था, क्योंकि मैं उसे अपने साथ घर ले जा रहा था, उसके दृश्य और स्पर्शनीय आवरण से सुरक्षित, जिसके नीचे मुझे वह जीवित मिलेगा, ठीक उसी तरह जैसे मछली, जिसे मैं मछली पकड़ने जाने की अनुमति मिलने पर अपनी टोकरी में घास के ढेर में दबाकर लाता था, ताकि वह ठंडी और ताज़ी बनी रहे। घर में वापस आते ही मैं किसी और चीज़ के बारे में सोचने लगता, और मेरा मन (जैसे मेरा कमरा सैर के दौरान इकट्ठा किए गए फूलों या लोगों द्वारा दी गई छोटी-मोटी चीज़ों से भरा रहता था) सूर्य की रोशनी से परावर्तित होते पत्थर, छत, घंटी की आवाज़, गिरे हुए पत्तों की गंध, विभिन्न छवियों के एक उलझे हुए समूह से भर जाता, जिसके नीचे वह वास्तविकता बहुत पहले ही खो गई होगी जिसका मुझे कुछ आभास होता था, लेकिन जिसे खोजने और प्रकाश में लाने की मुझमें कभी हिम्मत नहीं हुई। हालाँकि, एक बार जब हम अपनी सैर को सामान्य सीमा से बहुत आगे ले गए थे, और घर के आधे रास्ते में, दोपहर ढलते ही शाम होते-

होते, डॉ. पर्सेपीड से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए, जो अपनी गाड़ी में पूरी गति से हमारे पास से गुज़रे, उन्होंने हमें देखा और पहचाना, रुके और हमें अपने बगल में बैठने के लिए कहा। मुझे इस तरह का एक आभास हुआ जिसे मैंने पहले थोड़ा और गहराई से जांचे बिना नहीं छोड़ा। मुझे कोचवान के बगल वाली डिब्बी पर बैठाया गया था। हम बहुत तेज़ी से जा रहे थे क्योंकि डॉक्टर को कॉम्ब्रे लौटने से पहले मार्टिनविले-ले-सेक में एक मरीज़ के घर जाना था, जिसके दरवाज़े पर उन्होंने हमें उनका इंतज़ार करने को कहा था। सड़क के एक मोड़ पर, अचानक मुझे एक विशेष आनंद का अनुभव हुआ, जो किसी और आनंद से बिल्कुल अलग था, जब मेरी नज़र मार्टिनविले के दो ऊंचे शिखरों पर पड़ी, जिन पर डूबते सूरज की रोशनी पड़ रही थी, और गाड़ी की गति और सड़क के घुमावों के कारण ऐसा लग रहा था मानो वे लगातार अपनी जगह बदल रहे हों; और फिर तीसरा शिखर, वियूविक का, जो हालांकि एक पहाड़ी और घाटी से अलग था और दूरी पर थोड़ी ऊँची ज़मीन से उठता हुआ दिखाई दे रहा था, फिर भी ऐसा लग रहा था मानो उनके बगल में ही खड़ा हो।

उनकी मीनारों के आकार, उनके स्वरूप में होने वाले बदलावों और उनकी सतहों की धूप से भरी गर्माहट का पता लगाने और उन्हें नोट करने में, मुझे लगा कि मैं अपने प्रभाव की पूरी गहराई तक नहीं पहुंच पा रहा हूं, कि उस गतिशीलता, उस चमक के पीछे कुछ और भी छिपा हुआ है, कुछ ऐसा जो उनमें एक साथ समाहित और छुपा हुआ प्रतीत होता है।

चर्च के शिखर इतने दूर दिखाई दे रहे थे, और हम खुद उनके इतने कम करीब आ पा रहे थे, कि कुछ मिनट बाद जब हम मार्टिनविले चर्च के बाहर पहुँचे तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। क्षितिज पर उन्हें देखकर मुझे जो आनंद मिला था, उसका कारण मुझे नहीं पता था, और उस कारण का पता लगाने की कोशिश करना मुझे थकाऊ लग रहा था; मैं बस धूप में

गतिमान उन मिलती हुई रेखाओं को अपने दिमाग में संजोकर रखना चाहता था, और फिलहाल उनके बारे में और सोचना नहीं चाहता था। और यह संभव है कि अगर मैंने ऐसा किया होता, तो वे दोनों शिखर हमेशा के लिए गायब हो जाते, पेड़ों, छतों, खुशबुओं और आवाजों के उस विशाल मिश्रण में, जिन्हें मैंने उनके द्वारा दिए गए अस्पष्ट आनंद के कारण देखा और अलग कर लिया था, लेकिन कभी भी उनका और अधिक गहन अध्ययन नहीं किया था। डॉक्टर के दोबारा आने का इंतजार करते हुए मैं अपने माता-पिता से बात करने के लिए गाड़ी से नीचे उतरा। फिर चलने का समय हो गया; मैं फिर से अपनी जगह पर चढ़ गया, पीछे मुड़कर अपने गिरजाघर के गुंबदों को एक बार फिर देखा, जिनकी एक झलक मुझे थोड़ी देर बाद सड़क के मोड़ पर मिली। कोचवान, जो बातचीत में कम ही दिलचस्पी रखता था और मेरी बातों का मुश्किल से ही जवाब दे पाया, इसलिए किसी और के न होने के कारण मुझे अकेले ही रहना पड़ा और अपने गुंबदों के दृश्य को फिर से संजोने की कोशिश करनी पड़ी। और देखते ही देखते उनकी रूपरेखा और धूप से जगमगाती सतह, मानो किसी छिलके की तरह, हट उठी; जो कुछ उन्होंने मुझसे छिपा रखा था, उसका कुछ अंश स्पष्ट हो गया; मेरे मन में एक विचार आया जो एक क्षण पहले तक मेरे लिए मौजूद नहीं था, मेरे दिमाग में शब्दों में ढल गया; और अभी-अभी उन्हें पहली बार देखकर जो आनंद मुझे मिला था, वह इतना बढ़ गया कि एक तरह के नशे में चूर होकर मैं उनके सिवा किसी और चीज के बारे में सोच ही नहीं पा रहा था। इस बिंदु पर, हालांकि हम मार्टिनविले से काफी दूर आ चुके थे, मैंने अपना सिर घुमाया और उन्हें फिर से देखा, इस बार वे बिल्कुल काले थे, क्योंकि सूरज डूब चुका था। कुछ मिनटों के अंतराल पर सड़क का एक मोड़ उन्हें आंखों से ओझल कर देता था; फिर वे आखिरी बार दिखाई देते थे, और उसके बाद मैंने उन्हें

फिर कभी नहीं देखा।

यह स्वीकार किए बिना कि मार्टिनविले के गिरजाघरों के भीतर जो कुछ छिपा हुआ है वह किसी मनमोहक वाक्यांश के समान ही होगा, क्योंकि यह शब्दों के रूप में ही मेरे सामने प्रकट हुआ था जिससे मुझे आनंद मिला था, मैंने डॉक्टर से एक पेंसिल और कुछ कागज उधार लिए और गाड़ी के झटकों के बावजूद, अपनी अंतरात्मा को शांत करने और अपने उत्साह को संतुष्ट करने के लिए, निम्नलिखित छोटा सा अंश लिखा, जिसे मैंने बाद में खोजा और अब थोड़ा-बहुत संशोधन करके यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मैदान की तलहटी से अकेले उठते हुए, और खुले मैदान के उस विशाल विस्तार में मानो खोए हुए, मार्टिनविले के जुड़वां शिखर आकाश की ओर चढ़ रहे थे। थोड़ी देर में हमें तीन शिखर दिखाई दिए: एक साहसिक छलांग लगाते हुए, तीसरा, एक धीमा शिखर, वियूविक का, उनके साथ जुड़ने के लिए आ रहा था। मिनट बीतते गए, हम तेजी से आगे बढ़ रहे थे, फिर भी तीनों शिखर हमेशा हमसे काफी आगे थे, मानो मैदान पर बैठे तीन पक्षी हों, सूर्य की रोशनी में स्थिर और स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हों। फिर वियूविक का शिखर पीछे हट गया, अपनी उचित दूरी पर आ गया, और मार्टिनविले के शिखर अकेले रह गए, डूबते सूरज की सुनहरी रोशनी से जगमगाते हुए, जो इतनी दूरी से भी, मैं उनकी ढलान वाली सतहों पर खेलती और मुस्कुराती हुई देख सकता था। हमें उनके पास पहुँचने में इतना समय लग गया था कि मैं उस समय के बारे में सोच रहा था जो अभी भी उन तक पहुँचने में लगेगा, तभी अचानक, गाड़ी एक मोड़ पर मुड़ी और हमें उनके चरणों में उतार दिया; और वे इतनी अचानक हमारे रास्ते में आ गए कि हमें चर्च के बरामदे से टकराने से पहले रुकने का मुश्किल से ही समय मिला।

हमने अपना मार्ग फिर से निर्धारित किया; मार्टिनविले को छोड़े हुए कुछ

ही समय हुआ था, और गाँव, कुछ सेकंड तक हमारा साथ देने के बाद, पहले ही ओझल हो चुका था, जब क्षितिज पर अकेले ठहरकर हमारी उड़ान को देखते हुए, उसके और वियूविक के शिखरों ने विदाई के प्रतीक के रूप में एक बार फिर अपने सूर्य-दीप्तिमान शिखरों को लहराया। कभी-कभी एक शिखर पीछे हट जाता, ताकि बाकी दो हमें कुछ पल के लिए देख सकें; फिर सड़क ने दिशा बदल दी, वे प्रकाश में तीन सुनहरे धुरों की तरह मुड़े, और मेरी निगाहों से ओझल हो गए। लेकिन, थोड़ी देर बाद, जब हम कॉम्ब्रे के करीब पहुँच चुके थे, और इस बीच सूरज डूब चुका था, मैंने उन्हें आखिरी बार दूर से देखा, और अब वे खेतों की निचली रेखा के ऊपर आकाश में चित्रित तीन फूलों से अधिक कुछ नहीं लग रहे थे। उन्होंने मुझे एक किंवदंती में वर्णित तीन युवतियों की याद दिला दी, जिन्हें एक सुनसान जगह पर छोड़ दिया गया था जहाँ रात छाने लगी थी; और जब हम सरपट दौड़ते हुए उनसे दूर जा रहे थे, तो मैं उन्हें डरते हुए अपना रास्ता तलाशते हुए देख सकता था, और उनकी गरिमामयी आकृतियों की कुछ अटपटी, लड़खड़ाती हरकतों के बाद, वे एक-दूसरे के करीब आते हुए, एक-दूसरे के पीछे सरकते हुए, अब शांत गुलाबी आकाश के सामने एक धुंधली आकृति के अलावा कुछ भी नहीं दिखा रहे थे, आकर्षक और शांत, और इस तरह रात में गायब हो गए।

मैंने उस पन्ने के बारे में फिर कभी नहीं सोचा, लेकिन जिस क्षण मैंने, उस कोने में बैठकर, जहाँ डॉक्टर का कोचवान मार्टिनविले बाजार से खरीदी गई मुर्गियों को टोकरी में रखने की आदत रखता था, उसे लिखना समाप्त किया, मुझे ऐसी खुशी का अहसास हुआ, ऐसा लगा जैसे मेरे मन से चर्च के गुंबदों का जुनून और उनमें छिपे रहस्य पूरी तरह से दूर हो गए हों, कि मानो मैं खुद एक मुर्गी हूँ और अभी-अभी अंडा दिया हो, मैं जोर-जोर से गाने लगी।

दिन भर इन सैरों के दौरान, मैं डचेस डी गुएरमांटेस की मित्रता में मिलने वाले आनंद, ट्राउट मछली पकड़ने में मिलने वाले सुख, विवोन नदी पर अकेले नाव में घूमने में मिलने वाले सुख के बारे में सोचता रहता था; और, सुख की लालसा में, ऐसे क्षणों में मैं जीवन से इससे अधिक कुछ नहीं चाहता था कि यह हमेशा आनंदमय दोपहरों की एक श्रृंखला से बना रहे। लेकिन जब, घर लौटते समय, सड़क के बाईं ओर, दो अन्य खेतों से कुछ दूरी पर, जो आपस में सटे हुए थे, मैंने एक खेत देखा, और जहाँ से कॉम्ब्रे लौटने के लिए, हमें केवल ओक के पेड़ों की एक कतार में मुड़ना था, जिसके एक तरफ बागों की एक श्रृंखला थी, जिनमें से प्रत्येक में नियमित अंतराल पर सेब के पेड़ लगाए गए थे - जिनकी छायाएँ, जब डूबते सूरज की रोशनी से जगमगाती थीं, तो जमीन पर जापानी शैली की छाया डालती थीं; फिर, अचानक, मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगता, मुझे पता चल जाता कि आधे घंटे में हम घर पहुँच जाएँगे, और वहाँ, जैसा कि उन दिनों होता था जब हम 'गुएरमांटेस तरीका' अपनाते थे और परिणामस्वरूप खाना सामान्य से देर से परोसा जाता था, मुझे सूप पीते ही बिस्तर पर भेज दिया जाएगा, ताकि मेरी माँ, जो मेज पर बैठी रहती थीं, मानो खाने पर कोई मेहमान आया हो, ऊपर आकर मुझे बिस्तर पर शुभ रात्रि न कहें। उदासी का वह दौर जिसमें मैं तब प्रवेश करता था, उस दूसरे दौर से बिल्कुल अलग था जिसमें मैं एक पल पहले खुशी से झूम रहा था, ठीक वैसे ही जैसे कभी-कभी आकाश में गुलाबी रंग की एक पट्टी, मानो किसी अदृश्य रेखा से खींची गई हो, हरे या काले रंग की पट्टी से अलग हो जाती है। आप गुलाबी रंग के ऊपर से उड़ते हुए एक पक्षी को देख सकते हैं; वह सीमा रेखा के पास आता है, उसे छूता है, प्रवेश करता है और काले रंग में विलीन हो जाता है। जिन इच्छाओं में मैं अभी-अभी डूबी हुई थी - गुएरमांटेस जाना, यात्रा करना, सुखमय जीवन जीना - अब

मैं उनसे इतनी दूर हो चुकी थी कि उनकी पूर्ति से मुझे कोई आनंद नहीं मिलता। मैं उन सबको कितनी आसानी से त्याग देती, बस माँ की बाहों में रात भर रोने के लिए! भावनाओं से कांपते हुए, मैं अपनी पीड़ा से भरी आँखों को अपनी माँ के चेहरे से नहीं हटा पा रही थी, जो उस शाम उस शयनकक्ष में दिखाई नहीं देने वाली थी जहाँ मैं कल्पना में खुद को लेटी हुई देख सकती थी; और मेरी बस यही इच्छा थी कि मैं मर चुकी होती। और यह अवस्था कल तक बनी रहती, जब सुबह की किरणें अपनी प्रकाश की किरणें, जैसे माली अपनी सीढ़ी को नास्टर्टियम से ढकी दीवार पर टिकाता है, जो मेरी खिड़की की चौखट तक चढ़ी हुई है, मैं बिस्तर से कूदकर तुरंत बगीचे की ओर दौड़ पड़ती, इस बात की परवाह किए बिना कि शाम को लौटना है, और उसके साथ ही वह समय भी आ जाएगा जब मुझे अपनी माँ को छोड़ना होगा। और इस प्रकार 'गुएरमांटेस के तरीके' से ही मैंने अपने मन में बारी-बारी से आने वाली उन अवस्थाओं के बीच अंतर करना सीखा, जो कुछ समय के लिए मेरे मन में इस कदर व्याप्त हो जाती थीं कि मैं अपना पूरा दिन उन्हीं में बाँट लेता था, और हर अवस्था दूसरी को बुखार और मलेरिया की नियमितता से विस्थापित कर देती थी: वे एक-दूसरे से सटी हुई होती थीं, फिर भी एक-दूसरे से इतनी अलग-थलग, संचार के साधनों से इतनी रहित कि मैं एक अवस्था में जो कुछ चाहता था, डरता था या करता था, उसे न तो समझ पाता था और न ही अपने मन में उसकी कल्पना कर पाता था।

इसलिए 'मेसेग्लिस का तरीका' और 'गुएरमांटेस का तरीका' मेरे लिए उन अनेक छोटी-छोटी घटनाओं से जुड़े हुए हैं जो उन सभी विविध जीवन में घटित होती हैं जिनकी समानांतर रेखाओं पर हम चलते हैं, जो भाग्य के अचानक उलटफेर से सबसे अधिक समृद्ध है, प्रसंगों से सबसे अधिक समृद्ध है; मेरा तात्पर्य है मन का जीवन। निःसंदेह यह हममें एक अगोचर

प्रगति करता है, और जिन सत्यों ने हमारे लिए इसका अर्थ और स्वरूप बदल दिया है, जिन्होंने हमारे सामने नए रास्ते खोल दिए हैं, हम उनकी खोज के लिए लंबे समय से तैयारी कर रहे थे; लेकिन वह तैयारी अचेतन थी; और हमारे लिए वे सत्य केवल उसी दिन, उसी क्षण से प्रकट हुए जब वे स्पष्ट हुए। उस समय घास के बीच खिलते फूल, धूप में लहराता पानी, और वह संपूर्ण परिदृश्य जो उनके प्रकट होने का वातावरण बना, आज भी उनकी स्मृति में अपने अचेतन या अनभिज्ञ भाव के साथ बसा हुआ है; और निश्चित रूप से, जब उस विनम्र राहगीर, उस स्वप्निल बच्चे द्वारा धीरे-धीरे उनका निरीक्षण किया गया—जैसे भीड़ में खोए हुए याचिकाकर्ता द्वारा राजा के चेहरे का निरीक्षण किया जाता है—प्रकृति के उस टुकड़े, बगीचे के उस कोने ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि उसी के कारण वे अपने सभी क्षणभंगुर विवरणों के साथ जीवित रहने के लिए चुने जाएंगे; और फिर भी नागफनी की वह सुगंध जो बाड़ के किनारे-किनारे भटकती है, जिसे कुछ ही समय में जंगली गुलाबों द्वारा मिटा दिया जाएगा, बजरी के रास्ते पर बिना प्रतिध्वनि के कदमों की आवाज, पानी के पौधे के किनारे धारा द्वारा बना एक बुलबुला, जो केवल फूटने के लिए बनता है—मेरे मन की उदात्तता ने उन्हें अपने साथ ढोया है, और उन्हें इन सभी क्रमिक वर्षों को पार कराने में सफल रही है, जबकि उनके चारों ओर एक बार चलने वाले रास्ते गायब हो गए हैं, जबकि उन रास्तों पर चलने वाले लोग, और यहां तक कि उन रास्तों पर चलने वालों की स्मृति भी मर चुकी है। कभी-कभी वर्तमान में समाहित परिदृश्य का वह अंश सभी स्मृतियों से इस कदर अलग हो जाता है कि वह मेरे मन में अनिश्चित रूप से तैरता रहता है, मानो डेलोस का कोई फूलों से भरा द्वीप हो, और मैं यह नहीं कह पाता कि वह किस स्थान से, किस समय से आया है—शायद, सीधे शब्दों में कहें तो, मेरे किस सपने से। लेकिन मैं मेसेग्लिस और

गुएरमांटेस के 'मार्गों' को मुख्यतः अपनी मानसिक भूमि की सबसे गहरी परत के रूप में, उन ठोस आधारों के रूप में देखता हूँ जिन पर मैं अभी भी निर्माण कर सकता हूँ। क्योंकि मैं उन मार्गों पर घूमते हुए कुछ चीजों, कुछ लोगों के बारे में सोचता था, इसलिए जिन चीजों, जिन लोगों को उन्होंने मुझे जानने का अवसर दिया, और केवल इन्हीं को मैं आज भी गंभीरता से लेता हूँ, और ये आज भी मुझे आनंद देते हैं। चाहे वह आस्था जो सृजन करती है, मुझमें विद्यमान न रही हो, या वास्तविकता केवल स्मृति में ही आकार लेती हो, जो फूल लोग मुझे आजकल पहली बार दिखाते हैं, वे मुझे कभी भी सच्चे फूल नहीं लगते। लिली, हॉथोर्न, कॉर्नफ्लावर, पॉपी और सेब के पेड़ों से भरा 'मेसेग्लिस मार्ग' और मेंढकों से भरी नदी, जल लिली और बटरकप से भरा 'गुएरमांटेस मार्ग' मेरे लिए उस भूमि का शाश्वत चित्र बन गए हैं जिसमें मैं अपना जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ, जिसमें मेरी एकमात्र इच्छा है कि मैं मछली पकड़ने जा सकूँ, नाव में आराम से बह सकूँ, घास में एक गोथिक किले के खंडहर देख सकूँ और खेतों के बीच - जैसे सेंट आंद्रे डेस चैम्प्स छिपा हुआ था - एक पुराना, भव्य, देहाती और चक्की के पत्थर की तरह पीला चर्च पा सकूँ; और कॉर्नफ्लावर, हॉथोर्न और सेब के पेड़ जो मुझे चलते-फिरते खेतों में मिल जाएँ, क्योंकि वे मेरे अतीत के स्तर पर, उसी गहराई पर स्थित हैं, तुरंत मेरे हृदय से जुड़ जाते हैं। फिर भी, चूंकि स्थानों में व्यक्तित्व का एक तत्व होता है, जब मुझे 'गुएरमांटेस मार्ग' को फिर से देखने की तीव्र इच्छा होती है, तो यह इच्छा तब भी पूरी नहीं होगी जब मुझे किसी ऐसी नदी के किनारे ले जाया जाए जहाँ विवोन नदी के लिली के फूलों की तरह या उससे भी अधिक सुंदर लिली के फूल हों, ठीक उसी तरह जैसे शाम को घर लौटते समय, जब मेरे भीतर वह पीड़ा जागृत होती है जो बाद में जीवन में प्रेम के जुनून में परिवर्तित हो जाती है, और शायद उसकी

अविभाज्य साथी भी बन जाती है, तो मैं किसी भी अजनबी माँ के आने और मुझे शुभ रात्रि कहने की कामना नहीं करूँगा, भले ही वह मेरी अपनी माँ से कहीं अधिक सुंदर और बुद्धिमान हो। नहीं: ठीक वैसे ही जैसे मुझे संतुष्ट होकर सोने के लिए (उस निर्मल शांति में जो बाद के वर्षों में कोई भी प्रेमिका मुझे नहीं दे पाई, क्योंकि जब हम उन पर विश्वास करते हैं तो हमें उन पर संदेह होने लगता है, और हम कभी भी उनके दिल को वैसे नहीं पा सकते जैसे मैं अपनी माँ के चुंबन में उनका दिल पाता था, पूर्ण, बिना किसी संकोच या संकोच के, केवल अपने प्रति किसी भी दायित्व से मुक्त) केवल यही आवश्यक था कि मेरी माँ आए, कि वह मेरी ओर अपना वह चेहरा झुकाए जिस पर, उसकी आँख के नीचे, कुछ ऐसा था जो, प्रतीत होता है, एक दोष था, और जिसे मैं बाकी सब चीजों की तरह ही प्यार करता था—ठीक वैसे ही मैं फिर से 'गुएरमांटेस मार्ग' को देखना चाहता हूँ जैसा कि मैं उसे जानता था, उस खेत के साथ जो ओक के रास्ते के प्रवेश द्वार पर, एक दूसरे से सटे हुए दो पड़ोसी खेतों से थोड़ा अलग था; वे घास के मैदान जिनकी सतह पर, जब सूरज की रोशनी से झील की तरह चमक उठती है, तो सेब के पेड़ों के पत्ते दिखाई देते हैं; वह संपूर्ण परिदृश्य, जिसकी विशिष्टता कभी-कभी, रात में, मेरे सपनों में, मुझे एक ऐसी शक्ति से बांध लेती है जो लगभग अकल्पनीय है, जिसका मुझे जागने पर कोई निशान नहीं मिलता।

इसमें कोई संदेह नहीं कि मेसेग्लिस और गुएरमांटे के 'मार्गों' ने मुझमें विभिन्न छापों के समूहों को स्थायी और अटूट रूप से जोड़ दिया, जिसका कारण केवल यह था कि उन्होंने मुझे एक ही समय में कई अलग-अलग चीजें महसूस करवाईं। इसी वजह से बाद के जीवन में मुझे बहुत निराशा और यहाँ तक कि कई गलतियों का भी सामना करना पड़ा। अक्सर मैं किसी व्यक्ति को फिर से देखना चाहता था, यह जाने बिना कि ऐसा

केवल इसलिए था क्योंकि वह व्यक्ति मुझे खिले हुए कंटीले पेड़ों की बाड़ की याद दिलाता था; और मुझे यह विश्वास दिलाया गया, और मैंने दूसरों को भी, कि स्नेह का परिणाम होता है, जबकि यह केवल यात्रा करने की इच्छा थी। लेकिन इन्हीं गुणों और आज भी मेरी उन छापों में उनकी निरंतरता के कारण, जिनसे वे जुड़ सकते हैं, ये दोनों 'मार्ग' उन छापों को एक आधार, गहराई और आयाम प्रदान करते हैं जो बाकी छापों में नहीं है। वे उन्हें एक ऐसा आकर्षण और महत्व भी प्रदान करते हैं जो केवल मेरे लिए है। जब गर्मी की एक शाम को, गूंजता हुआ आकाश एक भूरे शेर की तरह दहाड़ता है, और हर कोई तूफान की शिकायत कर रहा होता है, तो 'मेसेग्लिस मार्ग' पर ही मेरी कल्पना परमानंद में अकेली भटकती है, गिरती बारिश के शोर के बीच अदृश्य और निरंतर बकाइन के पेड़ों की सुगंध को साँस लेती है।

* * *

और इसलिए मैं अक्सर सुबह तक लेटा रहता, कॉम्ब्रे में बिताए पुराने दिनों के सपने देखता, वहाँ की अपनी उदास और जागती हुई शामों के; और उन दिनों के भी, जिनकी यादें हाल ही में मुझे चाय के एक प्याले के स्वाद से ताज़ा हो गई थीं—जिसे कॉम्ब्रे में 'इत्र' कहा जाता था—और यादों के एक जुड़ाव से, एक कहानी जो उस छोटी सी जगह को छोड़ने के कई वर्षों बाद मुझे सुनाई गई थी, एक प्रेम प्रसंग की जिसमें स्वान मेरे जन्म से पहले शामिल था; उस सटीक विवरण के साथ जो अक्सर उन लोगों के जीवन का अध्ययन करते समय प्राप्त करना आसान होता है जो सदियों पहले मर चुके हैं, बजाय इसके कि हम अपने सबसे करीबी दोस्तों के जीवन का इतिहास लिखने की कोशिश करें, एक ऐसी सटीकता जिसे प्राप्त करना उतना ही असंभव लगता है जितना कि एक शहर से दूसरे शहर में बात करना असंभव लगता था, इससे पहले कि हमें उस युक्ति

का पता चले जिससे उस असंभवता को दूर किया गया है। ये सभी यादें, एक के बाद एक, एक ही पदार्थ में समाहित हो गईं, लेकिन इतनी अच्छी तरह से एकीकृत नहीं हुईं कि मैं तीन स्तरों के बीच अंतर न कर सकूँ - मेरी सबसे पुरानी, मेरी सहज यादें, वे अन्य यादें जो हाल ही में किसी स्वाद या 'सुगंध' से प्रेरित थीं, और वे यादें जो वास्तव में किसी और की थीं, जिनसे मैंने उन्हें अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त किया था - कोई दरार नहीं, वास्तव में कोई भूवैज्ञानिक दोष नहीं, बल्कि कम से कम वे नसें, रंग की वे धारियाँ जो कुछ चट्टानों में, कुछ संगमरमर में, उत्पत्ति, आयु और निर्माण के अंतर को इंगित करती हैं।

यह सच है कि, जब सुबह होने वाली होती, तो मैं अपने जागते हुए सपने की संक्षिप्त अनिश्चितता को बहुत पहले ही दूर कर चुका होता, मुझे पता होता कि मैं वास्तव में किस कमरे में लेटा हुआ हूँ, मैंने अंधेरे में अपने चारों ओर उस कमरे की छवि बना ली होती, और—केवल स्मृति के सहारे या उस धुंधली रोशनी की सहायता से, जिसके नीचे मैंने पर्दे और खिड़की रखी थी—उस कमरे को उसके फर्नीचर सहित पूरी तरह से फिर से बना लिया होता, जैसे कोई वास्तुकार और असबाबवाला दरवाजों और खिड़कियों की मूल, त्यागी हुई योजना पर काम करते हुए करते हैं; मैंने दर्पणों को वापस लगा दिया होता और दराजों वाली अलमारी को उसके सामान्य स्थान पर रख दिया होता। लेकिन जैसे ही दिन का उजाला हुआ —और अब वह पीतल के पर्दे की छड़ पर बुझते हुए अंगारे की चमक नहीं थी, जिसे मैंने गलती से दिन का उजाला समझ लिया था—अंधेरे में, जैसे ब्लैकबोर्ड पर चाक की एक लकीर, अपनी पहली सफेद सुधारक किरण फैलाती, खिड़की, अपने पर्दों के साथ, उस दरवाजे के फ्रेम से बाहर निकल जाती, जिसमें मैंने उसे गलती से रख दिया था, और उसके लिए जगह बनाने के लिए, लेखन-मेज, जिसे मेरी स्मृति ने अनाड़ीपन से उस

जगह पर रख दिया था जहाँ खिड़की होनी चाहिए थी, पूरी गति से भाग जाती, मेंटलपीस को अपने आगे धकेलती और गलियारे की दीवार को हटा देती; आंगन का कुआँ उस जगह पर स्थापित हो जाता जहाँ एक क्षण पहले मेरा ड्रेसिंग रूम था, और वह निवास स्थान जिसे मैंने अंधेरे में अपने लिए बनाया था, उन सभी अन्य आवासों में मिल जाता जिनकी झलक मैंने जागृति के भंवर से देखी थी; मेरी खिड़की के ऊपर बने उस धुंधले निशान ने मुझे भगा दिया - दिन की उठी हुई तर्जनी उंगली द्वारा पर्दों पर खींचे गए उस निशान ने।

स्वान इन लव

वर्दुरिन परिवार के 'छोटे समूह', 'छोटे कबीले' में आपको प्रवेश देने के लिए एक ही शर्त काफी थी, लेकिन वह शर्त अनिवार्य थी; आपको एक ऐसे सिद्धांत का मौन पालन करना होगा जिसका एक मुख्य बिंदु यह था कि वह युवा पियानोवादक, जिसे श्रीमती वर्दुरिन ने उस वर्ष अपने संरक्षण में लिया था, और जिसके बारे में उन्होंने कहा था, "सचमुच, वैगनर को इतनी अच्छी तरह से बजाना तो असंभव है!", प्लांटे और रुबिनस्टीन दोनों को पीछे छोड़ देता था; जबकि डॉ. कॉटार्ड, पोटेन से कहीं अधिक प्रतिभाशाली निदानकर्ता थे। प्रत्येक 'नए सदस्य' को, जिसे वर्दुरिन परिवार यह समझाने में विफल रहा कि अन्य लोगों द्वारा अन्य घरों में बिताई गई शामें उनके घर की तुलना में नीरस होती हैं, तुरंत ही निष्कासित कर दिया जाता था। इस मामले में महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक विद्रोही होती हैं, वे सांसारिक जिज्ञासा और यह जानने की इच्छा को त्यागने में अधिक अनिच्छुक होती हैं कि क्या अन्य ड्राइंग रूम भी कभी-कभी उतने

ही मनोरंजक हो सकते हैं, और वर्दुरिन परिवार को यह भी लगता था कि यह आलोचनात्मक भावना और यह तुच्छता का दानव अपने संक्रामक प्रभाव से छोटे चर्च की रूढ़िवादिता के लिए घातक साबित हो सकता है, इसलिए उन्हें 'आस्थावान' महिलाओं में से सभी को एक-एक करके निष्कासित करने के लिए मजबूर होना पड़ा था।

डॉक्टर की युवा पत्नी के अलावा, उस सीज़न में वे लगभग पूरी तरह से एक युवा महिला तक ही सीमित रह गईं (हालाँकि श्रीमती वर्दुरिन स्वयं एक पूरी तरह से 'अच्छी' महिला थीं, और एक सम्मानित मध्यमवर्गीय परिवार से आती थीं, जो अत्यधिक धनी और पूरी तरह से साधारण था, जिससे उन्होंने धीरे-धीरे और अपनी मर्जी से सभी संबंध तोड़ लिए थे), जो लगभग 'एक निश्चित वर्ग' की थीं, श्रीमती डी क्रेसी, जिनसे श्रीमती वर्दुरिन ने अपने ईसाई नाम ओडेट से पुकारा और 'प्यार' कहा, और पियानोवादक की चाची को भी, जो देखने में ऐसी लग रही थीं मानो उन्होंने कभी 'घंटी का जवाब दिया हो': ये महिलाएं दुनियादारी से पूरी तरह अनजान थीं, जो अपनी सामाजिक सादगी में इतनी आसानी से यह मान लेती थीं कि प्रिंसेस डी सागन और डचेस डी गुएरमांटेस को अपने डिनर-पार्टियों में किसी को आमंत्रित करने के लिए अन्य गरीब लोगों को बड़ी रकम चुकानी पड़ती थी। अगर किसी ने उन्हें उन महान महिलाओं में से किसी के घर का निमंत्रण दिलाने की पेशकश की होती, तो बूढ़ी द्वारपाल और 'आलसी चरित्र' वाली महिला तिरस्कारपूर्वक अस्वीकार कर देतीं।

वर्दुरिन परिवार आपको कभी रात के खाने पर आमंत्रित नहीं करता था; वहाँ आपकी जगह पहले से तय होती थी। शाम के मनोरंजन के लिए कभी कोई कार्यक्रम निर्धारित नहीं होता था। युवा पियानोवादक तभी पियानो बजाता था जब उसका मन करता था, क्योंकि किसी पर कोई

दबाव नहीं होता था, और जैसा कि एम. वर्दुरिन कहा करते थे: "हम सब यहाँ दोस्त हैं। लिबर्टी हॉल, आप जानते ही हैं!"

अगर पियानोवादक वाल्कीरीज़ की सवारी या ट्रिस्टन की प्रस्तावना बजाने का सुझाव देता, तो श्रीमती वर्दुरिन विरोध करतीं। उनका विरोध इसलिए नहीं होता कि संगीत उन्हें अप्रिय लगता था, बल्कि इसके विपरीत, कि वह उन पर बहुत हिंसक प्रभाव डालता था। "तो क्या आप चाहते हैं कि मुझे सिरदर्द हो? आप अच्छी तरह जानते हैं, हर बार जब वह इसे बजाता है तो ऐसा ही होता है। मुझे पता है कि मेरा क्या हाल होने वाला है। कल जब मैं उठना चाहूँगी—कुछ भी संभव नहीं होगा!" अगर वह बजाने वाला नहीं होता, तो वे बातें करते, और दोस्तों में से कोई एक—आमतौर पर वह चित्रकार जो उस वर्ष वहाँ लोकप्रिय होता—जैसा कि श्री वर्दुरिन ने कहा, "एक बहुत ही मज़ेदार कहानी सुनाता जिससे सब लोग हँसी से लोटपोट हो जाते," और विशेष रूप से श्रीमती वर्दुरिन, जिनके लिए—अपनी भावनाओं के लाक्षणिक वर्णन को अक्षरशः लेने की उनकी आदत इतनी प्रबल थी—डॉ. कॉटार्ड, जो उस समय सामान्य चिकित्सा में नए-नए थे, को "एक दिन आकर उनका जबड़ा ठीक करना पड़ता, जो उन्होंने बहुत ज़्यादा हँसने से अपनी जगह से हटा लिया था।"

शाम की पोशाक पहनना मना था, क्योंकि आप सब 'अच्छे दोस्त' थे और 'उबाऊ लोगों' की तरह दिखना नहीं चाहते थे, जिनसे प्लेग की तरह दूर रहना चाहिए था और जिन्हें केवल खास शामों में ही बुलाया जाता था, जो कि बहुत कम होती थीं, और वह भी तभी जब इससे चित्रकार का मनोरंजन हो या संगीतकार की प्रसिद्धि बढ़े। बाकी समय आप लोग अंताक्षरी खेलकर और फैंसी ड्रेस में रात का खाना खाकर खुश रहते थे, और उस छोटे से 'समूह' में किसी अजनबी को शामिल करने की कोई ज़रूरत नहीं थी।

लेकिन जैसे-जैसे श्रीमती वर्दुरिन के जीवन में 'अच्छे दोस्त' अधिकाधिक महत्वपूर्ण होते गए, वैसे-वैसे 'उबाऊ' और 'परेशान करने वाले' लोगों की संख्या भी बढ़ती गई। ये परेशानियाँ और झंझटें उनके दोस्तों को उनसे दूर रखते थे, और कभी-कभी उन्हें 'पहले से तय कामों' का बहाना बनाना पड़ता था - एक की माँ होने के कारण, दूसरे के पेशेवर कर्तव्यों के कारण, और तीसरे के 'गाँव में छोटे से घर' के कारण। अगर डॉक्टर कॉटार्ड भोजन से उठते ही शुभ रात्रि कहना अपना कर्तव्य समझते, ताकि वे किसी गंभीर रूप से बीमार मरीज़ के पास वापस जा सकें, तो श्रीमती वर्दुरिन कहतीं, "मुझे नहीं पता, मुझे यकीन है कि अगर आप आज शाम उन्हें फिर से परेशान न करें तो उन्हें ज़्यादा आराम मिलेगा; वे आपके बिना अच्छी नींद सोएँगे; कल सुबह आप जल्दी जा सकते हैं और उन्हें ठीक पाएंगे।" दिसंबर की शुरुआत से ही उन्हें यह सोचकर बहुत बुरा लगता था कि क्रिसमस और नए साल के दिन उनके 'वफ़ादार' लोग उनका साथ नहीं देंगे। पियानोवादक की चाची ने जोर देकर कहा कि उसे उनके साथ उनकी मां के घर पर आयोजित पारिवारिक रात्रिभोज में अवश्य जाना चाहिए।

"तुम्हें क्या लगता है कि तुम्हारी माँ मर जाएगी," श्रीमती वर्दुरिन ने कड़वाहट से कहा, "अगर तुम प्रांतों के लोगों की तरह नए साल के दिन उसके साथ खाना नहीं खाओगे!"

पवित्र सप्ताह के दौरान उसकी बेचैनी फिर से जाग उठी: "डॉक्टर साहब, आप तो समझदार और खुले विचारों वाले व्यक्ति हैं; आप गुड फ्राइडे को भी तो आएंगे ही, जैसे बाकी दिनों में आते हैं?" उसने छोटे से 'केंद्र' के पहले वर्ष में कॉटार्ड से ऊँची और आत्मविश्वास भरी आवाज़ में कहा, मानो उसके जवाब में कोई संदेह ही न हो। लेकिन वह उसके जवाब का इंतज़ार करते हुए काँप रही थी, क्योंकि अगर वह नहीं आया तो उसे अकेले ही भोजन करना पड़ सकता था।

"मैं गुड फ्राइडे को आऊंगा—तुम्हें अलविदा कहने के लिए, क्योंकि हम छुट्टियां औवेर्गने में बिताने जा रहे हैं।"
"औवेर्गने में? पिस्सू और तरह-तरह के जीवों द्वारा खाए जाने के लिए! भला इससे क्या फायदा!" और कुछ देर रुकने के बाद: "अगर तुमने हमें बताया होता, तो हम एक टोली बनाकर आराम से वहाँ चले जाते।"
और इसी तरह, अगर किसी 'वफादार' महिला का कोई दोस्त होता, या किसी महिला का कोई युवक होता, जिसकी वजह से कभी-कभार उनकी शामें छूट जातीं, तो वर्दुरिन परिवार, जो किसी महिला के प्रेमी होने से ज़रा भी नहीं डरता था, बशर्ते कि वह उसे अपने साथ रखे, उसे अपने साथ पसंद करे और उसे अपनी कंपनी से ज़्यादा अहमियत न दे, कहता: "ठीक है, तो अपने दोस्त को ले आओ।" और फिर उसकी परीक्षा ली जाती, यह देखने के लिए कि क्या वह श्रीमती वर्दुरिन से कोई राज़ छिपाने को तैयार है, क्या वह 'छोटे समूह' में शामिल होने के योग्य है। अगर वह परीक्षा में पास नहीं होता, तो जिस वफादार महिला ने उसे मिलवाया था, उसे एक तरफ ले जाकर चतुराई से दोस्त या प्रेमिका से झगड़ा करवाया जाता। लेकिन अगर परीक्षा सफल होती, तो नए आने वाले को भी 'वफादारों' में शामिल कर लिया जाता। और इसी वर्ष जब वेश्या ने श्री वर्दुरिन को बताया कि उसकी मुलाकात श्री स्वान नामक एक आकर्षक सज्जन से हुई है और उसने संकेत दिया कि वह आना चाहेंगे, तो श्री वर्दुरिन ने तुरंत यह अनुरोध अपनी पत्नी को बता दिया। वह किसी भी विषय पर तब तक अपनी राय नहीं बनाते थे जब तक उनकी पत्नी अपनी राय न बना लें, क्योंकि उनका विशेष कर्तव्य था कि वे उनकी और आम तौर पर 'वफादार' लोगों की इच्छाओं को पूरा करें, जिसे उन्होंने असीम चतुराई से निभाया।
"मेरे प्रिय, श्रीमती डी क्रेसी आपसे कुछ कहना चाहती हैं। वह अपने एक

मित्र, श्री स्वान को यहाँ लाना चाहती हैं। आपका क्या विचार है?"
"अरे, भला भला भला ऐसी परिपूर्ण रचना को कैसे ठुकरा सकता है? चुप रहो; किसी ने तुमसे राय नहीं पूछी। मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम स्वयं परिपूर्ण रचना हो।"
"जैसा आपको पसंद हो," ओडेट ने बनावटी लहजे में जवाब दिया, और फिर आगे बोली: "आप जानते हैं कि मैं तारीफें बटोरने की कोशिश नहीं कर रही हूँ।"
"बहुत अच्छा; अगर तुम्हारा दोस्त अच्छा है तो उसे भी ले आना।"
अब उस 'छोटे से समूह' और स्वान के सामाजिक परिवेश के बीच कोई संबंध नहीं रह गया था, और एक विशुद्ध सांसारिक व्यक्ति को लगता कि दुनिया में इतनी असाधारण स्थिति में होने के बावजूद वर्दुरिन परिवार से परिचय प्राप्त करने की कोशिश करना व्यर्थ है। लेकिन स्वान इतना उत्साही प्रेमी था कि एक बार जब वह कुलीन वर्ग की लगभग सभी महिलाओं से परिचित हो गया, एक बार जब उन्होंने उसे सब कुछ सिखा दिया, तो उसने फाउबर्ग सेंट-जर्मेन द्वारा उसे दिए गए उन नागरिकता पत्रों को, जो लगभग कुलीनता का प्रमाण थे, एक प्रकार के सौदेबाजी योग्य बंधन, एक निरर्थक साख पत्र के रूप में देखना बंद कर दिया, जिसने उसे देश के किसी छोटे से कोने में, या पेरिस के किसी गुमनाम इलाके में, जहाँ किसी स्थानीय जमींदार या वकील की सुंदर पुत्री ने उसे मोहित कर लिया था, अपने लिए एक अस्थायी दर्जा बनाने की अनुमति दी। ऐसे समय में, इच्छा या स्वयं प्रेम, उसके भीतर अहंकार की भावना को फिर से जगा देता था, जिससे वह अपने दैनिक जीवन में पूरी तरह मुक्त था। हालांकि, निस्संदेह, यही भावना थी जिसने उसे फैशनपरस्त बनने के उस पेशे की ओर प्रेरित किया था, जिसमें उसने अपनी बौद्धिक प्रतिभा को फिजूल के मनोरंजन में लुटा दिया था और कला के क्षेत्र में अपने ज्ञान का

उपयोग केवल समाज की महिलाओं को यह सलाह देने में किया था कि कौन सी तस्वीरें खरीदें और अपने घरों को कैसे सजाएं। और यही अहंकार था जिसने उसे किसी भी सुंदर अनजानी महिला की नज़र में, जिसने उसे क्षण भर के लिए मोहित कर लिया था, ऐसी चमक बिखेरने के लिए उत्सुक कर दिया था जो स्वान के नाम से ही नहीं निकलती थी। और वह तब सबसे अधिक उत्सुक होता था जब वह सुंदर अनजानी महिला साधारण परिस्थितियों में होती थी। जिस प्रकार एक बुद्धिमान व्यक्ति को अन्य बुद्धिमान लोगों द्वारा मूर्ख समझे जाने का भय नहीं होता, उसी प्रकार एक फैशनपरस्त व्यक्ति को बड़े सज्जनों द्वारा नहीं, बल्कि गंवारों और अशिष्ट लोगों द्वारा अपने सामाजिक मूल्य को कम आंका जाने का भय होता है। दुनिया की शुरुआत से ही जिन लोगों ने अपनी अहमियत को कम करने के अलावा और कुछ नहीं किया, उनके द्वारा फैलाई गई बौद्धिक चतुराई का तीन-चौथाई हिस्सा निम्न वर्ग के लोगों को निशाना बनाने के लिए ही इस्तेमाल किया गया है। और स्वान, जो बेहद सरल व्यवहार करता था और डचेस के साथ सहज रहता था, अगर उसे महारानी की दासी से मिलना होता, तो तिरस्कृत होने के डर से कांप उठता और तुरंत दिखावा करने लगता।

बहुत से लोगों के विपरीत, जो या तो ऊर्जा की कमी के कारण या फिर अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा के बोझ तले दबे जीवन की धारा में एक ही बिंदु पर स्थिर रहने के लिए विवश होकर, उस बिंदु से ऊपर और नीचे मिलने वाले सुखों से दूर रहते हैं, जीवन के उस स्तर से जिसमें वे अपनी मृत्यु तक स्थिर रहेंगे, और अंत में, बेहतर विकल्प न होने के कारण, उन साधारण मनोरंजनों, उस असहनीय नीरसता को ही सुख मानकर संतुष्ट हो जाते हैं; स्वान उन महिलाओं में आकर्षण और सुंदरता खोजने का प्रयास नहीं करते थे जिनके साथ उन्हें समय बिताना पड़ता था, बल्कि उन

महिलाओं के बीच समय बिताना चाहते थे जिन्हें वे पहले से ही सुंदर और आकर्षक पाते थे। और ये अक्सर ऐसी महिलाएं होती थीं जिनकी सुंदरता स्पष्ट रूप से 'सामान्य' प्रकार की होती थी, क्योंकि जिन शारीरिक गुणों ने उन्हें सहज रूप से और बिना किसी कारण के आकर्षित किया, वे उन गुणों के बिल्कुल विपरीत थे जिनकी वे अपने प्रिय कलाकारों द्वारा चित्रित या गढ़ी गई महिलाओं में प्रशंसा करते थे। किसी महिला के चेहरे पर गहरी भाव-भंगिमा या उदासी का भाव उसकी इंद्रियों को स्तब्ध कर देता था, लेकिन स्वस्थ, भरपूर और गुलाबी रंग के मानव शरीर को देखते ही उसकी इंद्रियां तुरंत पिघल जाती थीं।

यदि अपनी यात्राओं के दौरान उनकी मुलाकात किसी ऐसे परिवार से होती, जिनसे जान-पहचान न करना ही उचित होता, लेकिन उनमें से किसी स्त्री ने उनका ध्यान आकर्षित कर लिया होता, जो उनके लिए एक नया और अनूठा आकर्षण रखती, तो अपने अहंकार को त्यागकर और उस स्त्री के साथ रहने से मिलने वाले सुख के स्थान पर अपनी किसी पूर्व प्रेमिका को आमंत्रित करने के लिए पत्र लिखना, जीवन के प्रति कायरतापूर्ण समर्पण और सुख के एक नए रूप का मूर्खतापूर्ण त्याग प्रतीत होता, मानो वे जिस देश में थे, वहाँ जाने के बजाय अपने कमरों में बंद होकर पेरिस के नज़ारों को देखते रहते। उन्होंने अपने सामाजिक संबंधों के ठोस ढांचे में खुद को कैद नहीं किया था, बल्कि उन्हें इस तरह से बनाया था कि जहाँ भी कोई स्त्री उन्हें आकर्षित करे, वे उसे नए सिरे से स्थापित कर सकें, ठीक वैसे ही जैसे खोजकर्ता अपने साथ ले जाने वाले लचीले तंबू बनाते हैं। उसका कोई भी हिस्सा जो पोर्टेबल नहीं था या जिसे किसी नए आनंद के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था, वह उसे बेकार समझकर त्याग देता था, चाहे वह दूसरों को कितना भी आकर्षक क्यों न लगे। कितनी ही बार, किसी डचेस के साथ उसका

साख, जो हर साल उसके द्वारा उसे कोई एहसान करने की इच्छा से बनता था, जिसके लिए उसे कभी मौका नहीं मिला था, एक पल में ही बर्बाद हो जाता था, जब वह उसे एक अविवेकी संदेश भेजकर टेलीग्राम द्वारा सिफारिश मांगता था, ताकि वह तुरंत उसके किसी एजेंट से संपर्क कर सके जिसकी बेटी को उसने गाँव में देखा था, ठीक वैसे ही जैसे कोई भूखा आदमी हीरे के बदले रोटी का एक टुकड़ा खरीद लेता है। वास्तव में, जब बहुत देर हो जाती थी, तो वह खुद पर हंसता था, क्योंकि उसके स्वभाव में, कई दुर्लभ शिष्टाचारों से युक्त होने के बावजूद, एक प्रकार की मसखरापन भी थी। फिर वह उन बुद्धिमान पुरुषों के वर्ग में आते थे जिन्होंने आलस्य भरा जीवन व्यतीत किया था और जो अपने आलस्य से उत्पन्न होने वाले विचारों में सांत्वना और शायद एक बहाना ढूंढते थे। ये विचार उनकी बुद्धि को कला या विद्या से प्राप्त होने वाली किसी भी वस्तु के समान ही रुचिकर विषय प्रदान करते थे, यह विचार कि 'जीवन' में ऐसी परिस्थितियाँ हैं जो अब तक लिखी गई सभी प्रेम कहानियों से कहीं अधिक रोचक और रोमांटिक हैं। कम से कम, वह ऐसा ही आश्वासन देते थे और फैशनेबल दुनिया में अपने अधिक चतुर मित्रों को, विशेष रूप से बैरन डी चार्लस को, समझाने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती थी। वह उन्हें अपने साथ घटी रोमांचक घटनाओं की कहानियों से मनोरंजन करना पसंद करते थे, जैसे कि जब वह ट्रेन में एक महिला से मिले और उसे अपने साथ घर ले गए, इससे पहले कि उन्हें पता चले कि वह एक शासक सम्राट की बहन थी, जिसके हाथों में उस समय यूरोपीय राजनीति के सभी सूत्र समाहित थे, जिसकी जानकारी उन्हें बड़े ही सुखद तरीके से मिलती रहती थी, या जब, परिस्थितियों की जटिलता में, यह उस निर्णय पर निर्भर था जो कॉन्क्लेव लेने वाला था कि क्या वह किसी के रसोइए के प्रेमी बन सकते हैं या नहीं।

स्वान ने न केवल उन प्रतिभाशाली और गुणी विधवाओं, जनरलों और शिक्षाविदों के समूह को, जिनसे उसके घनिष्ठ संबंध थे, बड़ी चालाकी से अपने दलालों की सेवा करने के लिए मजबूर किया, बल्कि उसके सभी मित्रों को समय-समय पर ऐसे पत्र मिलते रहते थे जिनमें सिफारिश या परिचय के लिए अनुरोध किया जाता था। इन पत्रों में स्वान ने कूटनीतिक कुशलता का प्रयोग किया था, जो उसके सभी 'मामलों' में लगातार बनी रही और अलग-अलग बहाने इस्तेमाल करते हुए, उसकी सबसे बड़ी नासमझी से भी कहीं अधिक स्पष्ट रूप से उसके चरित्र की एक स्थायी विशेषता और एक अटूट खोज को उजागर करती थी। कई वर्षों बाद, जब मैंने उनके चरित्र में रुचि लेना शुरू किया, क्योंकि उनमें कुछ समानताएँ थीं जो पूरी तरह से अलग-अलग पहलुओं में मेरे अपने चरित्र से मिलती-जुलती थीं, तो मैं अक्सर खुद को याद दिलाता था कि कैसे, जब वह मेरे दादाजी को पत्र लिखते थे (हालांकि उस समय की बात नहीं कर रहे हैं, क्योंकि लगभग मेरे जन्म के समय ही स्वान का महान 'प्रेम प्रसंग' शुरू हुआ था, और उनके प्रेम संबंधों में एक लंबा व्यवधान आया था), तो मेरे दादाजी लिफाफे पर अपने दोस्त की लिखावट पहचानकर कहते थे: "देखो, स्वान कुछ माँग रहे हैं; सावधान रहो!" और, अविश्वास के कारण या शैतानी प्रवृत्ति की अवचेतन भावना के कारण जो हमें किसी चीज़ को केवल उन्हीं लोगों को देने के लिए प्रेरित करती है जो उसे नहीं चाहते, मेरे दादा-दादी को उसकी सबसे आसानी से संतुष्ट होने वाली प्रार्थना का भी हठपूर्वक इनकार झेलना पड़ता था, जैसे कि जब उसने उनसे उस लड़की से परिचय कराने की विनती की जो हर रविवार को हमारे साथ भोजन करती थी, और जिसे वे, जब भी स्वान उसका जिक्र करता, यह दिखावा करने के लिए बाध्य होते थे कि वे अब उसे नहीं देखते, हालांकि वे पूरे सप्ताह सोचते रहते थे कि वे किसे उससे मिलवाएं, और अक्सर अंत में,

किसी को ढूंढने में असफल रहते थे, इससे पहले कि वे उस व्यक्ति को इशारा कर दें जो खुशी-खुशी स्वीकार कर लेता।

कभी-कभी मेरे दादा-दादी के कुछ परिचित, जो काफी समय से शिकायत कर रहे थे कि उन्हें स्वान अब कभी नहीं दिखता, संतुष्टि से, और शायद मेरे दादा-दादी को ईर्ष्या दिलाने की थोड़ी सी इच्छा से, घोषणा करते कि वह अचानक पहले से कहीं अधिक आकर्षक हो गया है, और उनके घर से बाहर नहीं निकलता। मेरे दादाजी उनकी इस सुखद कल्पना को तोड़ना नहीं चाहते थे, बल्कि मेरी दादी की ओर देखते हुए, गुनगुनाते हुए कहते:

यह रहस्य क्या है?
मैं यह समझ नहीं सकता;
या का:
दृष्टि भगोड़ा...;
इस तरह के मामलों में
आंखें बंद कर लेना ही सबसे अच्छा है।

कुछ महीनों बाद, अगर मेरे दादाजी स्वान के नए दोस्त से पूछते, "स्वान का क्या हाल है? क्या तुम अब भी उससे पहले की तरह ही मिलते हो?" तो दूसरे का चेहरा उतर जाता और वह कहता, "फिर कभी मेरे सामने उसका नाम मत लेना!"

"लेकिन मुझे लगा था कि तुम दोनों बहुत अच्छे दोस्त हो..."

वह कई महीनों से मेरी दादी की कुछ चचेरी बहनों के साथ अंतरंग संबंध बनाए हुए था और लगभग हर शाम उनके घर खाना खाता था। अचानक, बिना किसी सूचना के, वह आना बंद कर दिया। सबने सोचा कि वह बीमार है, और घर की मालकिन उसे बुलाने ही वाली थी कि रसोई में उसे उसके हाथ का लिखा एक पत्र मिला, जो उसकी रसोइया ने गलती से हिसाब-किताब की किताब में छोड़ दिया था। इसमें उसने बताया था कि

वह पेरिस छोड़ रहा है और अब कभी घर नहीं आ पाएगा। रसोइया उसकी प्रेमिका थी, और संबंध तोड़ने के समय घर में वही एकमात्र सदस्य थी जिसे उसने सूचित करना आवश्यक समझा था।

लेकिन जब उसकी प्रेमिका समाज में प्रतिष्ठित महिला होती, या कम से कम ऐसी महिला होती जिसका जन्म इतना निम्न न हो और न ही उसकी स्थिति इतनी अनियमित हो कि वह समाज में उसके स्वागत की व्यवस्था न कर सके, तो उसके लिए वह समाज में लौट आता, लेकिन केवल उसी विशेष दायरे में जिसमें वह रहती थी या जिसमें उसने उसे आकर्षित किया था। लोग कहते, "आज शाम स्वान पर निर्भर रहने का कोई फायदा नहीं; क्या तुम्हें याद नहीं, आज रात ओपेरा में उसके अमेरिकी दोस्त की रात है?" वह उसके लिए सबसे खास ड्राइंग रूम में निमंत्रण दिलवाता, उन घरों में जहाँ वह खुद नियमित रूप से जाता था, साप्ताहिक रात्रिभोज या पोकर खेलने के लिए; हर शाम, अपने कड़े कंघी किए हुए लाल बालों को हल्की सी लहराहट देने के बाद, जो उसकी साहसी हरी आँखों की चमक को एक निश्चित कोमलता प्रदान करती थी, वह अपने बटनहोल के लिए एक फूल चुनता और अपने सर्कल की किसी न किसी महिला के घर अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए निकल पड़ता; और फिर, उन संभ्रांत लोगों के स्नेह और प्रशंसा के बारे में सोचते हुए, जिनके साथ वह हमेशा अपनी इच्छानुसार व्यवहार करता था, जब वह उनसे वहाँ मिलता था, तो वे उसकी प्रेमिका की उपस्थिति में उस पर जो स्नेह और प्रशंसा बरसाते थे, उसे उस सांसारिक जीवन में एक नया आकर्षण मिलता था जिससे वह ऊब चुका था, लेकिन जिसका सार, उस टिमटिमाते प्रकाश से परिपूर्ण और गर्मजोशी से रंगा हुआ था जिसमें वह प्रवेश कर चुका था, अब उसे सुंदर और दुर्लभ प्रतीत होता था, क्योंकि उसने उसमें एक नए प्रेम को समाहित कर लिया था।

लेकिन जहाँ एक ओर ये सभी लगाव, ये सभी प्रेम प्रसंग किसी ऐसे चेहरे या रूप को देखकर जन्मे सपने की कमोबेश पूर्ण पूर्ति थे, जिसे स्वान ने अनायास ही, बिना किसी प्रयास के, आकर्षक पाया था, वहीं दूसरी ओर, एक दिन रंगमंच पर, जब उनके एक पुराने मित्र ने उन्हें ओडेट डी क्रेसी से मिलवाया, तो मामला बिलकुल अलग था। उस मित्र ने उनके बारे में बताया था कि वह एक बेहद आकर्षक महिला हैं, जिनके साथ उनका शायद कोई रिश्ता बन सकता है; लेकिन उन्होंने ओडेट को उनकी असलियत से कहीं अधिक कठिन बताया था, ताकि परिचय कराकर उन पर विशेष कृपा कर रहे हों। स्वान को ओडेट निश्चित रूप से सुंदरता से रहित नहीं लगीं, बल्कि उनकी सुंदरता की शैली ऐसी थी जिसने उन्हें उदासीन कर दिया, उनके मन में कोई इच्छा नहीं जगाई, बल्कि एक प्रकार की शारीरिक घृणा उत्पन्न की; वह उन महिलाओं में से एक थीं, जिनका नाम हर पुरुष ले सकता है, और हर कोई अलग-अलग उदाहरण देगा, जो हमारी इंद्रियों द्वारा अपेक्षित प्रकार के बिल्कुल विपरीत होती हैं। उसे प्रसन्न करने के लिए, उसका चेहरा बहुत तीखा, त्वचा बहुत कोमल, गाल की हड्डियाँ बहुत उभरी हुई और चेहरे के भाव बहुत कसे हुए थे। उसकी आँखें सुंदर थीं, लेकिन इतनी बड़ी थीं कि मानो अपने ही भार से झुक रही हों, जिससे उसके चेहरे का बाकी हिस्सा तनावग्रस्त लगता था और वह हमेशा अस्वस्थ या उदास दिखाई देती थी। थिएटर में इस मुलाकात के कुछ समय बाद, उसने स्वान को पत्र लिखकर पूछा कि क्या वह उसके संग्रह देख सकती है, जिसमें उसकी इतनी रुचि थी कि वह, "सुंदर चीजों का शौक रखने वाली एक अज्ञानी महिला," ने कहा कि वह उसे बेहतर ढंग से जान पाएगी जब वह उसे उसके 'घर' में देख लेगी, जहाँ उसने कल्पना की थी कि वह "अपनी चाय और किताबों के साथ बहुत आराम से" बैठा होगा; हालाँकि उसने शहर के उस हिस्से में उसके होने पर

अपना आश्चर्य नहीं छिपाया था, जो इतना निराशाजनक होना चाहिए, और "इतने बुद्धिमान व्यक्ति के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं था।" और जब उसने उसे अंदर आने की अनुमति दी, तो जाते समय उसने उससे कहा कि उसे कितना अफ़सोस है कि वह उस घर में इतने कम समय तक रुकी, जहाँ पहुँचकर उसे बहुत खुशी हुई थी। वह उसके बारे में ऐसे बात कर रही थी मानो वह उसके लिए बाकी सभी लोगों से कहीं ज़्यादा मायने रखता हो, और ऐसा लग रहा था जैसे उन दोनों के बीच एक रोमांटिक बंधन बन गया हो, जिसे देखकर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। लेकिन जीवन के उस पड़ाव पर, जो पहले से ही मोहभंग से भरा हुआ था और जिसकी ओर स्वान बढ़ रहा था, जब एक व्यक्ति बदले में बहुत अधिक अपेक्षा किए बिना, प्रेम के आनंद के लिए प्रेम में रहने से संतुष्ट हो सकता है, तो दिलों का यह जुड़ाव, भले ही अब वह लक्ष्य न हो, जिसकी ओर प्रेम अनिवार्य रूप से बढ़ता है, फिर भी विचारों के इतने मजबूत जुड़ाव से प्रेम से बंधा होता है कि यदि यह पहले प्रकट हो तो प्रेम का कारण भी बन सकता है। जवानी में एक आदमी उस स्त्री का दिल जीतने का सपना देखता है जिससे वह प्यार करता है; बाद में, किसी स्त्री का दिल जीतने का एहसास ही उसे उससे प्यार करने के लिए काफी हो सकता है। और 50 वर्ष की आयु में, जब ऐसा प्रतीत होता है—क्योंकि प्रेम में सर्वोपरि एक व्यक्तिपरक सुख की तलाश होती है—कि स्त्री सौंदर्य की चाहत ही इसके सृजन में प्रमुख भूमिका निभाती है, प्रेम का जन्म हो सकता है, एक अत्यंत शारीरिक प्रेम, बिना किसी इच्छा के आधार के। जीवन के इस पड़ाव पर मनुष्य प्रेम के तीरों से एक से अधिक बार घायल हो चुका होता है; प्रेम अब उसके निष्क्रिय और विस्मित हृदय के समक्ष अपने आप, अपने ही समझ से परे और घातक नियमों का पालन करते हुए, विकसित नहीं होता। हम इसकी सहायता के लिए आते हैं; हम इसे स्मृति और

सुझाव द्वारा विकृत करते हैं; इसके एक लक्षण को पहचानकर हम शेष को याद करते हैं और पुनः सृजित करते हैं। चूंकि इसका गीत हमारे हृदयों पर पूर्णतः अंकित है, इसलिए किसी भी स्त्री को इसकी प्रारंभिक पंक्तियों को दोहराने की आवश्यकता नहीं है, जो उसकी सुंदरता से प्रेरित प्रशंसा से परिपूर्ण हैं, ताकि हम आगे आने वाली सभी बातों को याद रख सकें। और अगर वह बीच से शुरू करे, जहाँ हमारे अस्तित्व के बारे में, और आगे से केवल एक-दूसरे के लिए, गीत गाए जाते हैं, तो हम उस संगीत के साथ इतने अच्छे से तालमेल बिठा चुके होते हैं कि हम बिना किसी झिझक के, उसकी आवाज़ में पहले विराम पर ही उसे अपना लें और अपने साथी का अनुसरण करें।

ओडेट डी क्रेसी फिर से स्वान से मिलने आई; उसकी मुलाक़ातें और अधिक बार होने लगीं, और निस्संदेह हर मुलाक़ात उस निराशा की भावना को फिर से जगा देती थी जो उसे उस चेहरे को देखकर होती थी जिसके विवरण वह इस अंतराल में कुछ हद तक भूल गया था, उसे न तो इतना भावपूर्ण याद था और न ही, उसकी जवानी के बावजूद, इतना मुरझाया हुआ; जब वह उससे बात कर रही होती थी, तो वह इस बात पर अफ़सोस करता था कि उसकी वास्तव में उल्लेखनीय सुंदरता उस प्रकार की नहीं थी जिसकी वह सहज रूप से प्रशंसा करता था। यह ध्यान देने योग्य है कि ओडेट का चेहरा वास्तव में जितना था उससे पतला और उभरा हुआ दिखाई देता था, क्योंकि उसका माथा और उसके गालों का ऊपरी हिस्सा, एक सपाट सतह, उस समय महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले बालों के गुच्छों से ढका हुआ था, जो आगे की ओर लटों के रूप में बंधे होते थे, घुंघराले लहरों में उठे होते थे और कानों पर बिखरे हुए गुच्छों के रूप में गिरते थे; जबकि उनकी आकृति की बात करें, और वह प्रशंसनीय रूप से सुगठित थीं, उस समय प्रचलित फैशन के कारण (और

पेरिस की सबसे सुंदर पोशाक पहनने वाली महिलाओं में से एक होने के बावजूद) उसकी निरंतरता को पहचानना असंभव था। कोर्सेट, जो एक काल्पनिक पेट के ऊपर मेहराब की तरह आगे की ओर निकला हुआ था और एक नुकीले सिरे पर समाप्त होता था, जिसके नीचे उनकी दोहरी स्कर्ट का फूला हुआ हिस्सा था, उस समय की किसी महिला को ऐसा रूप देता था मानो वह अलग-अलग हिस्सों को बेतरतीब ढंग से जोड़कर बनाई गई हो; झालरें, फ्रिलें, भीतरी चोली पूरी तरह से स्वतंत्र रूप से, केवल अपने डिजाइनर की कल्पना या अपनी सामग्री की कठोरता से नियंत्रित होकर, उस रेखा का अनुसरण करती थीं जो उन्हें रिबन की गांठों, लेस के फॉल्स, लंबवत लटकते जेट के फ्रिंज तक ले जाती थी या उन्हें छाती के साथ ले जाती थी, लेकिन कहीं भी जीवित प्राणी से नहीं जुड़ती थीं, जो, उनकी सजावट की संरचना के अनुसार, खुद को या तो घुटन से जकड़ी हुई पाती थी या पूरी तरह से दबी हुई।

लेकिन, ओडेट के चले जाने के बाद, स्वान मुस्कुराते हुए याद करता कि कैसे ओडेट उसे बताती थी कि उसे दोबारा आने की इजाज़त मिलने तक समय कितना धीरे-धीरे बीतता है; उसे याद आता था वह चिंतित और संकोची अंदाज़ जिसमें उसने एक बार उससे विनती की थी कि काश इतना लंबा समय न बीत जाए, और वह अंदाज़ जिसमें उसने तब उसे देखा था, अपनी भयभीत और विनती भरी निगाहों से उसे घूरते हुए, जिससे उसके सफेद भूसे से बने गोल बोनट के सामने लगे कृत्रिम पैंसी के गुच्छों के नीचे एक कोमल भाव आ गया था, जो काले मखमल की डोरियों से बंधा था। "और क्या तुम," उसने हिम्मत करके पूछा था, "एक बार आकर मेरे साथ चाय नहीं पियोगे?" उसने काम के दबाव का बहाना बनाया था, एक निबंध—जिसे वास्तव में उसने वर्षों पहले छोड़ दिया था —डेल्फ़्ट के वर्मीर पर। "मैं जानती हूँ कि मैं बिल्कुल निकम्मी हूँ," उसने

जवाब दिया, "मुझ जैसी छोटी-सी जंगली बच्ची, आप जैसे विद्वान महान व्यक्ति के सामने। मैं तो कहानी के मेंढक जैसी हो जाऊँगी! फिर भी मुझे सीखने, ज्ञान प्राप्त करने और दीक्षा लेने की बहुत इच्छा है। किताबों की शौकीन बनना, ढेर सारे पुराने कागजों में नाक गड़ाना कितना मज़ेदार होगा!" वह उस आत्मसंतुष्ट भाव से बोलती रही, जो एक चतुर महिला तब अपनाती है जब वह ज़ोर देकर कहती है कि उसकी एकमात्र इच्छा है कि वह बिना उंगलियों के गंदे होने के डर के, किसी गंदे काम में खुद को पूरी तरह से झोंक दे, जैसे कि खाना बनाना, और अपने "हाथ सीधे बर्तन में डाल दे।" "आप मुझ पर हँसेंगे, लेकिन यह चित्रकार जो आपको मुझसे मिलने से रोक रहा है," उनका मतलब वर्मीर से था, "मैंने तो उसका नाम तक नहीं सुना; क्या वह अभी भी जीवित है? क्या मैं पेरिस में उसकी कोई कलाकृति देख सकती हूँ, ताकि मुझे उस मेहनती और प्रभावशाली चेहरे के पीछे छिपी सोच का कुछ अंदाजा हो सके, उस दिमाग के पीछे जो हमेशा कुछ न कुछ सोचता रहता है; बस इतना कह सकूँ कि 'देखो, वह यही सोच रहा है!' आपके काम में आपकी मदद कर पाना कितना बड़ा सपना होगा।"

उसने नए दोस्त बनाने के डर को बहाना बनाया, जिसे उसने बड़े ही शिष्टता से एक निराशाजनक प्रेम के डर के रूप में वर्णित किया। "तुम्हें प्यार में पड़ने से डर लगता है? यह कितनी अजीब बात है, जबकि मैं तो बस प्यार की तलाश में रहती हूँ, और कहीं थोड़ा सा प्यार पाने के लिए अपनी जान तक दे सकती हूँ!" उसने इतनी सहजता और विश्वास के साथ कहा कि वह सचमुच भावुक हो गया था। "किसी औरत ने तुम्हें ज़रूर तकलीफ दी होगी। और तुम सोचते हो कि बाकी सब उसी की तरह हैं। वह तुम्हें समझ ही नहीं पाई होगी: तुम आम आदमियों से बिलकुल अलग हो। यही बात मुझे तुममें पहली बार देखने पर पसंद आई थी; मुझे तुरंत

एहसास हो गया था कि तुम बाकी सब लोगों जैसे नहीं हो।"
"और फिर, इसके अलावा, तुम खुद भी हो—" उसने आगे कहा, "मैं जानता हूँ कि औरतें कैसी होती हैं; तुम्हारे पास करने के लिए ढेरों काम होते होंगे, और कभी भी फुर्सत का समय नहीं होता होगा।"
मैं? अरे, मेरे पास तो कभी कुछ करने को नहीं होता। मैं हमेशा खाली रहती हूँ, और अगर आप चाहें तो हमेशा खाली रहूँगी। दिन हो या रात, जब भी आपको मुझसे मिलने का मन करे, बस मुझे बुला लीजिए, मुझे आने में बहुत खुशी होगी। क्या आप ऐसा करेंगे? आपको पता है मुझे असल में क्या अच्छा लगेगा—आपको मैडम वर्दुरिन से मिलवाना, जहाँ मैं हर शाम जाती हूँ। ज़रा सोचिए, मैं आपको वहाँ पाऊँ और सोचूँ कि आप मेरे लिए ही तो गए थे।
निःसंदेह, इस प्रकार उनकी बातचीत को याद करते हुए, अकेले में उसके बारे में सोचते हुए, उसने अपने रोमांटिक सपनों में अनगिनत अन्य महिलाओं की छवियों के बीच उसकी छवि को ही साकार किया; लेकिन यदि किसी आकस्मिक परिस्थिति के कारण (या शायद उस सहायता के बिना भी, क्योंकि जो परिस्थिति उस क्षण प्रकट होती है जब कोई मानसिक स्थिति, जो अब तक सुप्त थी, प्रकट होती है, उसका उस स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं हो सकता है), ओडेट डी क्रेसी की छवि उसके सभी सपनों को समाहित कर ले, यदि उन सपनों से उसकी स्मृति को मिटाया न जा सके, तो उसकी शारीरिक अपूर्णताएँ अब जरा भी महत्वपूर्ण नहीं रह जाएँगी, न ही स्वान की पसंद के अनुरूप उसके शरीर का, किसी अन्य शरीर की तुलना में, कोई विशेष महत्व रहेगा; क्योंकि, उसकी प्रेमिका का शरीर बन जाने के कारण, अब से वही एकमात्र शरीर होगा जो उसे आनंद या पीड़ा दे सकता है।
ऐसा हुआ कि मेरे दादाजी वर्दुरिन परिवार को जानते थे—जो किसी और

परिचित के बारे में नहीं कहा जा सकता था—लेकिन उन्होंने जिसे वे "युवा वर्दुरिन" कहते थे, उससे अपना संबंध पूरी तरह तोड़ लिया था, क्योंकि वे उसे बोहेमिया के आम लोगों में गँवा चुके व्यक्ति के रूप में देखते थे—हालाँकि उसने अपने लाखों रुपये नहीं खोए थे। एक दिन उन्हें स्वान का एक पत्र मिला जिसमें उसने पूछा था कि क्या मेरे दादाजी उसे वर्दुरिन परिवार से मिलवा सकते हैं। "सावधान! सावधान!" उन्होंने पत्र पढ़ते ही कहा, "मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं है; स्वान का यही हाल होना था। बड़े ही अच्छे लोग हैं! मैं उनकी बात नहीं मान सकता, क्योंकि पहली बात तो यह है कि मैं अब उस सज्जन को जानता ही नहीं। इसके अलावा, इसमें कहीं न कहीं कोई महिला भी शामिल होगी, और मैं ऐसे मामलों में दखल नहीं देता। खैर, अगर स्वान छोटे वर्दुरिन के पीछे भागना शुरू कर दे तो खूब मज़ा आएगा।"

और जब मेरे दादाजी ने प्रायोजक बनने से इनकार कर दिया, तो ओडेट ने ही स्वान को घर ले जाने का काम किया था।

जिस दिन स्वान ने पहली बार अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, उस दिन वर्दुरिन परिवार ने उनके साथ भोजन किया था, जिनमें डॉ. और श्रीमती कॉटार्ड, युवा पियानोवादक और उनकी चाची, और उस समय के लोकप्रिय चित्रकार शामिल थे, जबकि शाम के दौरान कई और 'वफादार' लोग भी उनसे जुड़ गए।

डॉ. कॉटार्ड को कभी भी यह पक्का पता नहीं होता था कि किसी की टिप्पणी का जवाब किस लहजे में देना चाहिए, या वक्ता मज़ाक कर रहा है या गंभीर है। इसलिए, हर हाल में वे अपने चेहरे के भावों को एक अस्थायी मुस्कान से सजाते थे, जिसकी आशा भरी सूक्ष्मता उन्हें मूर्ख होने के आरोप से बचा लेती थी, अगर बाद में पता चलता कि टिप्पणी मज़ाक थी। लेकिन चूंकि उन्हें दूसरे विकल्प का भी सामना करने के लिए तैयार

रहना पड़ता था, इसलिए वे कभी भी इस मुस्कान को अपने चेहरे पर एक स्थायी अभिव्यक्ति बनने देने की हिम्मत नहीं करते थे, और आप वहाँ एक निरंतर टिमटिमाती अनिश्चितता देख सकते थे, जिसमें आप उस प्रश्न को समझ सकते थे जिसे वे कभी पूछने की हिम्मत नहीं करते थे: "क्या आपका सचमुच यही मतलब है?" वे सड़क पर या वास्तव में जीवन में आम तौर पर खुद को कैसे संचालित करना चाहिए, इस बारे में उतने ही अनिश्चित थे जितने कि वे ड्राइंग रूम में होते थे। और उसे राहगीरों, गाड़ियों और आस-पास दिखने वाली हर चीज का अभिवादन एक शरारती मुस्कान के साथ करते हुए देखा जा सकता था, जो उसके बाद के व्यवहार को हर तरह की अनुचितता से मुक्त कर देती थी, क्योंकि इससे यह साबित होता था कि अगर वह मुस्कान अवसर के लिए अनुपयुक्त भी साबित होती, तो वह इस बात से भलीभांति अवगत था, और अगर उसने मुस्कुराने का नाटक किया था, तो वह मजाक उसका अपना ही एक रहस्य था।

हालांकि, उन सभी बिंदुओं पर जहां उन्हें एक सीधा-सादा प्रश्न पूछना उचित प्रतीत होता था, डॉक्टर ने अपनी अज्ञानता और अनिश्चितता के जंगल को भेदने और इस प्रकार अपनी शिक्षा को पूर्ण करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी।

इसलिए, अपने प्रांतीय घर से पहली बार राजधानी आने पर अपनी बुद्धिमान माँ द्वारा दी गई सलाह का पालन करते हुए, वह कभी भी किसी मुहावरे या किसी ऐसे नाम को अनदेखा नहीं करता था जो उसके लिए नया हो, और इसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करता था।

मुहावरों के मामले में, ज्ञान की प्यास कभी बुझती नहीं थी। अक्सर वह उन्हें उनके वास्तविक अर्थ से कहीं अधिक स्पष्ट अर्थ दे देता था और यह

जानना चाहता था कि जिन मुहावरों का प्रयोग वह अक्सर सुनता था, उनका वास्तव में क्या अर्थ है: 'शैतानी सुंदर', 'कुलीन रक्त', 'बिल्ली-कुत्ते का जीवन', 'हिसाब का दिन', 'फैशन की रानी', 'पूरी छूट देना', 'गतिरोध में होना' इत्यादि; और किन विशेष परिस्थितियों में वह स्वयं बातचीत में इनका प्रयोग कर सकता है। यदि उसे ये मुहावरे न सूझते, तो वह रटे-रटाए शब्दों और अन्य हास्य-व्यंग्यों का प्रयोग करता। अजनबियों के नामों के बारे में, जो उसके सामने बोले जाते थे, वह उन्हें केवल प्रश्नवाचक स्वर में दोहराता था, जिससे उसे लगता था कि उसे उन अर्थों की व्याख्या मिल जाएगी जिनकी वह स्पष्ट रूप से तलाश नहीं कर रहा था।

जिस आलोचनात्मक क्षमता पर उन्हें गर्व था, वास्तव में उसमें वह पूरी तरह से अनुपस्थित थी। अच्छे शिष्टाचार का वह परिष्कार, जिसमें किसी की मदद करते समय यह विश्वास दिलाना शामिल होता है कि वास्तव में आप ही उसके ऋणी हैं, कॉटार्ड पर व्यर्थ ही लागू हुआ, क्योंकि वह हर बात को अक्षरशः लेता था। हालांकि वह कॉटार्ड की कमियों से अनजान रही होंगी, फिर भी... वर्दुरिन सचमुच नाराज़ हो गई थीं, हालाँकि वह अब भी उन्हें बेहद बुद्धिमान मानती थीं। एक बार उन्होंने डॉक्टर को स्टेज बॉक्स से सारा बर्नहार्ट को देखने और सुनने के लिए आमंत्रित किया और विनम्रता से कहा, "डॉक्टर साहब, आपका आना बहुत अच्छा लगा, खासकर इसलिए कि मुझे यकीन है कि आपने सारा बर्नहार्ट को अक्सर सुना होगा; और वैसे भी, मुझे लगता है कि हम स्टेज के बहुत करीब हैं।" डॉक्टर मुस्कुराते हुए बॉक्स में आए, और उनकी मुस्कान तब तक उनके चेहरे पर बनी रही या गायब हो गई जब तक कि कोई अधिकारी उन्हें इस शो के बारे में नहीं समझा देता। डॉक्टर ने जवाब दिया, "हाँ, हम स्टेज के बहुत करीब हैं, और सारा बर्नहार्ट को देखते-देखते अब मन ऊबने लगा है। लेकिन आपने मेरी इच्छा ज़ाहिर की थी। मेरे लिए, आपकी इच्छा एक

आदेश है। मुझे आपकी यह छोटी सी सेवा करके बहुत खुशी हुई। आपको खुश करने के लिए मैं क्या नहीं करूँगा, आप तो बहुत अच्छी हैं।" और उन्होंने आगे कहा, "सारा बर्नहार्ट; उन्हें ही तो ईश्वर की वाणी कहते हैं, है ना? आप अक्सर यह भी देखते हैं कि वे 'मंच पर आग लगा देती हैं।' यह एक अजीब मुहावरा है, है ना?" इस उम्मीद में कि उन्हें कोई ज्ञानवर्धक टिप्पणी मिलेगी, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

"क्या आप जानते हैं," श्रीमती वर्दुरिन ने अपने पति से कहा था, "मुझे लगता है कि हम गलत रास्ते पर जा रहे हैं जब हम डॉक्टर को दी जाने वाली किसी भी बात का अवमूल्यन करते हैं। वह एक वैज्ञानिक हैं जो हमारे रोजमर्रा के जीवन से बिल्कुल अलग रहते हैं; उन्हें खुद चीजों की कीमत का कोई अंदाजा नहीं है, और वह हमारी हर बात को अक्षरशः स्वीकार करते हैं।"

“मैंने कभी इसका ज़िक्र करने की हिम्मत नहीं की,” एम. वर्दुरिन ने जवाब दिया, “लेकिन मैंने भी यही बात देखी है।” और अगले नए साल के दिन, डॉ. कॉटार्ड को तीन हज़ार फ़्रैंक का रूबी भेजने और उसे मामूली चीज़ बताने के बजाय, एम. वर्दुरिन ने तीन सौ फ़्रैंक का एक कृत्रिम पत्थर खरीदा और यह जता दिया कि इसकी बराबरी करना लगभग नामुमकिन है।

जब श्रीमती वर्दुरिन ने घोषणा की कि वे उस शाम एम. स्वान से मिलने वाले हैं, तो डॉक्टर ने आश्चर्य से भरे स्वर में कहा, "स्वान!" क्योंकि छोटी से छोटी खबर भी इस व्यक्ति को पूरी तरह से चौंका देती थी, जो खुद को हर स्थिति के लिए हमेशा तैयार समझता था। और जब किसी ने जवाब नहीं दिया, तो वह घबराकर चिल्लाया, "स्वान! आखिर स्वान कौन है?" उसकी घबराहट तब शांत हुई जब श्रीमती वर्दुरिन ने समझाया, "ओडेट का दोस्त, जिसके बारे में उसने हमें बताया था।"

“अरे वाह, अच्छा है; तो ठीक है,” डॉक्टर ने तुरंत शांत होकर जवाब दिया। चित्रकार तो स्वान के वर्दुरिन के घर आने की खबर से बेहद खुश था, क्योंकि उसे लगता था कि स्वान ओडेट से प्यार करता है, और वह प्रेमियों की मुलाकातों में हमेशा मदद करने के लिए तैयार रहता था। “मुझे रिश्ते तय करने में सबसे ज्यादा मजा आता है,” उसने कॉटार्ड से कहा; “मैं इसमें बहुत सफल रहा हूँ, यहाँ तक कि महिलाओं के मामले में भी!” ओडेट ने वेरदुरिन परिवार को स्वान के बारे में यह बताकर कि वह बेहद 'स्मार्ट' है, उन्हें एक और 'उबाऊ' व्यक्ति के आने की आशंका से चिंतित कर दिया था। हालाँकि, जब वह आया, तो उसने एक बेहतरीन छाप छोड़ी, जिसका एक अप्रत्यक्ष कारण, हालाँकि वे इसे नहीं जानते थे, उच्च समाज से उसका परिचय था। वास्तव में, उसे उन लाभों में से एक प्राप्त था जो दुनिया में रहने और घूमने वाले लोगों को दूसरों की तुलना में मिलते हैं, यहाँ तक कि उन बुद्धिमान और परिष्कृत लोगों को भी जो कभी समाज में नहीं गए, अर्थात् वे अब इसे उस लालसा या घृणा से रूपांतरित नहीं देखते जो यह कल्पना को भर देती है, बल्कि इसे बिल्कुल महत्वहीन मानते हैं। उनका अच्छा स्वभाव, सभी प्रकार के दिखावे और बहुत अधिक दोस्ताना दिखने के डर से मुक्त होकर, स्वतंत्र हो गया है, वास्तव में एक प्रशिक्षित जिम्नास्ट की तरह सहजता और गति की सुंदरता रखता है, जिसके प्रत्येक लचीले अंग शरीर के बाकी हिस्सों की किसी भी अनाड़ी भागीदारी के बिना, ठीक उसी गति को अंजाम देते हैं जिसकी आवश्यकता होती है। एक सभ्य व्यक्ति द्वारा अपना हाथ विनम्रतापूर्वक किसी अपरिचित युवक से मिलाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले सरल और बुनियादी हाव-भाव, और राजदूत के सामने विनम्रतापूर्वक झुकने के हाव-भाव, धीरे-धीरे, बिना उसकी जानकारी के, स्वान के संपूर्ण सामाजिक व्यवहार में समाहित हो गए थे। इस प्रकार, अपने से निचले

दर्जे के लोगों, जैसे कि वर्दुरिन और उनके मित्रों की संगति में, वह सहज रूप से तत्परता दिखाता था और ऐसे प्रस्ताव रखता था, जिन्हें उनके अनुसार, उनके किसी भी 'उबाऊ' व्यक्ति ने नज़रअंदाज़ कर दिया होता। डॉ. कॉटार्ड से मिलने पर वह क्षण भर के लिए ही सही, थोड़ा सहम गया। दोनों के बीच बातचीत शुरू होने से पहले ही, डॉक्टर को एक आँख बंद करके अस्पष्ट मुस्कान के साथ देखकर (जिस चेहरे के हावभाव को कॉटार्ड ने "सब कुछ आने देना" कहा था), स्वान ने अनुमान लगाया कि डॉक्टर ने उसे पहले कहीं देखा होगा, शायद किसी बदनाम जगह पर, हालाँकि वह खुद ऐसी जगहों पर बहुत कम जाता था, क्योंकि उसे कभी भी लालची प्रेम में लिप्त होने की आदत नहीं थी। इस तरह के संकेत को, खासकर ओडेट के सामने, जो उसके बारे में अपनी राय आसानी से खराब कर सकती थी, स्वान ने अपना सबसे कठोर रवैया अपना लिया। लेकिन जब उसे पता चला कि डॉक्टर के बगल में बैठी महिला श्रीमती कॉटार्ड हैं, तो उसने सोचा कि इतना युवा पति जानबूझकर अपनी पत्नी के सामने इस तरह के मनोरंजन का कोई संकेत नहीं देगा, और इसलिए उसने डॉक्टर के हावभाव का वह अर्थ निकालना बंद कर दिया जो उसने पहले सोचा था। चित्रकार ने तुरंत स्वान को ओडेट के साथ अपने स्टूडियो में आने का निमंत्रण दिया, और स्वान को वह बहुत ही मिलनसार लगा। "शायद आपको मुझसे ज़्यादा विशेष सम्मान मिलेगा," श्रीमती वर्दुरिन ने बनावटी नाराज़गी जताते हुए बीच में कहा, "शायद आपको कॉटार्ड का चित्र देखने की अनुमति मिल जाएगी" (जिसके लिए उन्होंने चित्रकार को काम सौंपा था)। "मास्टर बिचे, ध्यान रखना," उन्होंने चित्रकार को याद दिलाया, जिसे 'मास्टर' कहकर संबोधित करना एक पुरानी परंपरा थी, "उनकी आँखों की उस प्यारी सी चमक, उस चंचल सी झिलमिलाहट को पकड़ लेना। आप जानते हैं, मुझे सबसे ज़्यादा उनकी मुस्कान चाहिए;

इसीलिए मैंने आपसे उनकी मुस्कान का चित्र बनाने को कहा है।" और चूंकि यह वाक्य उन्हें उल्लेखनीय लगा, इसलिए उन्होंने इसे बहुत ज़ोर से दोहराया, ताकि उनके ज़्यादा से ज़्यादा मेहमान इसे सुन सकें, और फिर से कहने से पहले उन्होंने किसी अस्पष्ट बहाने का इस्तेमाल करके सभी को पास बुलाया। स्वान हर किसी से परिचय कराने की विनती करता था, यहाँ तक कि वर्दुरिन परिवार के एक पुराने मित्र, सैनिएट से भी, जिसकी शर्म, सादगी और सौम्य स्वभाव के कारण उसे पुरालेख विद्या में उसकी कुशलता, उसकी अपार संपत्ति और उसके प्रतिष्ठित परिवार से संबंध होने के बावजूद उचित सम्मान नहीं मिल पाता था। जब वह बोलता था, तो उसके शब्दों में एक तरह की उलझन होती थी, जिसे सुनना सुखद लगता था क्योंकि ऐसा लगता था कि यह उसकी वाणी की कमी नहीं, बल्कि उसकी आत्मा का गुण है, मानो यह उस भोलेपन की अवस्था का अवशेष हो जिससे वह पूरी तरह से बाहर नहीं निकल पाया था। जिन व्यंजनों का उच्चारण वह नहीं कर पाता था, वे उसके कोमल होंठों से निकलने वाली कठोर ध्वनियों की तरह प्रतीत होते थे। एम. सैनियेट से परिचय कराने का अनुरोध करके, स्वान ने एम. वर्दुरिन को परिचय के सामान्य तरीके को उलटने के लिए मजबूर कर दिया (वास्तव में, उन्होंने इस अंतर पर जोर देते हुए कहा: "एम. स्वान, कृपया मुझे आपको हमारे मित्र सैनियेट से मिलवाने दीजिए")। लेकिन इससे सैनियेट के मन में कृतज्ञता की भावना जागृत हुई, जिसे वर्दुरिन परिवार ने स्वान को कभी नहीं बताया, क्योंकि सैनियेट उन्हें थोड़ा परेशान करते थे और वे उन्हें दोस्तों से मिलवाने के लिए बाध्य महसूस नहीं करते थे। दूसरी ओर, स्वान के अगले अनुरोध से वर्दुरिन परिवार अत्यंत भावुक हो गया, क्योंकि उन्हें लगा कि उन्हें पियानोवादक की चाची से परिचय कराना चाहिए। उन्होंने हमेशा की तरह काले रंग की पोशाक पहनी हुई थी, क्योंकि उनका मानना था कि काले

रंग में महिला हमेशा सुंदर दिखती है और इससे अधिक विशिष्ट कुछ नहीं हो सकता; लेकिन उनका चेहरा बहुत लाल था, जैसा कि भोजन के बाद हमेशा कुछ समय के लिए हो जाता था। उन्होंने स्वान को आदरपूर्वक प्रणाम किया, लेकिन फिर बड़े ही गरिमापूर्ण ढंग से खड़ी हो गईं। क्योंकि वह पूरी तरह से अशिक्षित थी और व्याकरण और उच्चारण में गलतियाँ करने से डरती थी, इसलिए वह जानबूझकर अस्पष्ट और अस्पष्ट तरीके से बोलती थी, यह सोचकर कि अगर उससे कोई गलती हो भी जाए तो वह आसपास के शोर में इस कदर दब जाएगी कि कोई भी निश्चित रूप से यह नहीं बता पाएगा कि उसने वास्तव में गलती की है या नहीं; परिणामस्वरूप उसकी बातें एक तरह से निरंतर, अस्पष्ट थूक की तरह थीं, जिसमें से कभी-कभार ही वे ध्वनियाँ और अक्षर निकलते थे जिनके बारे में वह निश्चित होती थी। स्वान को लगता था कि उसे एम. वर्दुरिन से बातचीत में उस पर थोड़ा मज़ाक करने का अधिकार है, लेकिन वर्दुरिन को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा।

"वह कितनी बेहतरीन महिला हैं!" उन्होंने जवाब दिया। "मैं मानता हूँ कि वह बहुत बुद्धिमान नहीं हैं; लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जब आप उनके साथ अकेले होते हैं तो वह बेहद आकर्षक ढंग से बात कर सकती हैं।"

"मुझे यकीन है कि वह कर सकती है," स्वान ने उसे शांत करने की जल्दी में कहा। "मेरा मतलब सिर्फ इतना था कि वह मुझे 'प्रतिष्ठित' नहीं लगी," उसने अपने लहजे में विशेषण को अलग करते हुए कहा, "और आखिरकार, यह एक तरह की प्रशंसा ही है।"

"एक पल रुकिए," एम. वर्दुरिन ने कहा, "यह सुनकर आपको आश्चर्य होगा; वह बहुत ही मनमोहक लिखती हैं। क्या आपने कभी उनके भतीजे को बजाते हुए नहीं सुना? यह प्रशंसनीय है; है ना, डॉक्टर? क्या आप

चाहेंगे कि मैं उनसे कुछ बजाने के लिए कहूँ, एम. स्वान?"
“मैं खुद को बहुत भाग्यशाली समझता हूँ...” स्वान ने थोड़ा आडंबरपूर्ण लहजे में कहना शुरू किया ही था कि डॉक्टर ने उपहासपूर्वक बीच में ही टोक दिया। एक बार यह शब्द सुनते हुए और यह कभी न भूलते हुए कि आम बोलचाल में जोर देना और औपचारिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग करना अब चलन से बाहर हो गया है, जब भी वह किसी गंभीर शब्द को गंभीरता से इस्तेमाल होते हुए सुनते, जैसे कि स्वान ने अभी-अभी 'भाग्यशाली' शब्द का प्रयोग किया था, तो वह तुरंत मान लेते कि वक्ता जानबूझकर पांडित्यपूर्ण व्यवहार कर रहा है। और अगर, इसके अलावा, वही शब्द किसी पुरानी कहावत में भी आता, चाहे वह अभी भी प्रचलित हो, तो डॉक्टर तुरंत इस निष्कर्ष पर पहुँच जाते कि यह सब एक मज़ाक है, और उद्धरण के शेष शब्दों को दोहराते हुए बीच में ही टोक देते, जिसे वह वक्ता पर यह आरोप लगाते हुए कहना चाहते थे कि वह उस बिंदु पर जोड़ना चाहते थे, हालाँकि वास्तव में उनके मन में यह विचार कभी आया ही नहीं था।
"फ्रांस के लिए कितना सौभाग्यशाली!" उसने शरारती अंदाज़ में कहा और दोनों हाथ बड़े जोश से ऊपर उठा लिए। एम. वर्दुरिन अपनी हंसी नहीं रोक पाए।
"वहाँ बैठे वे सभी भले लोग किस बात पर हंस रहे हैं? तुम्हारे कोने में उदासी का कोई निशान नहीं है," श्रीमती वर्दुरिन चिल्लाईं। "तुम्हें क्या लगता है कि मुझे पश्चाताप की कुर्सी पर अकेले बैठे रहना बहुत मजेदार लगता है?" वह एक बिगड़े हुए बच्चे की तरह चिड़चिड़ेपन से बोलीं।
श्रीमती वर्दुरिन पॉलिश की हुई चीड़ की लकड़ी की एक ऊँची स्वीडिश कुर्सी पर बैठी थीं, जो उन्हें उसी देश के एक वायलिन वादक ने उपहार में दी थी। उन्होंने इसे अपने ड्राइंग रूम में रखा हुआ था, हालाँकि देखने में

यह किसी स्कूल के फर्नीचर जैसी लगती थी और उनके पास मौजूद अन्य कीमती प्राचीन फर्नीचर को भी मात देती थी। फिर भी, वह अपने वफादार भक्तों द्वारा समय-समय पर दिए जाने वाले उपहारों को प्रदर्शित करती रहती थीं, ताकि घर आने पर उन्हें देखकर उन्हें खुशी हो। उन्होंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि वे अपने उपहारों को फूलों और मिठाइयों तक ही सीमित रखें, जिनमें कम से कम नश्वरता का गुण तो होता है; लेकिन वह कभी सफल नहीं हुईं, और धीरे-धीरे घर फुट-वार्मर, कुशन, घड़ियाँ, स्क्रीन, बैरोमीटर और फूलदानों के संग्रह से भर गया, जो बेकार लेकिन अविनाशी वस्तुओं की एक निरंतर पुनरावृति और असीम विसंगति थी।

इस ऊंचे स्थान से वह 'वफादारों' की बातचीत में उत्साहपूर्वक भाग लेती और उनके सभी मजे में शामिल होती; लेकिन, जबड़े में लगी चोट के बाद से, उसने वास्तविक हंसी में लगने वाले प्रयास को छोड़ दिया था और उसकी जगह एक प्रकार का प्रतीकात्मक मूक अभिनय अपना लिया था, जो बिना उसे किसी भी तरह से खतरे में डाले या थकाए यह दर्शाता था कि वह 'हंसते-हंसते रो रही है'। समूह के किसी भी सदस्य द्वारा किसी 'उबाऊ' व्यक्ति या समूह के किसी पूर्व सदस्य, जिसे अब 'उबाऊ' लोगों की श्रेणी में डाल दिया गया था, के खिलाफ किए गए किसी भी चुटकुलों पर—और एम. वर्दुरिन की घोर निराशा के बीच—जो हमेशा यह जताते थे कि वे अपनी पत्नी की तरह ही आसानी से खुश हो जाते हैं, लेकिन जिनकी हंसी 'वास्तविक' होती थी, वे पल भर में हांफने लगते थे, और इस तरह उनकी पत्नी की बनावटी लेकिन निरंतर हंसी के जाल में फंसकर पराजित हो जाते थे—वे एक तीखी चीख निकालते, अपनी छोटी चिड़िया जैसी आंखों को, जो मोतियाबिंद से धुंधली होने लगी थीं, कसकर बंद कर लेते, और जल्दी से, मानो उनके पास किसी अशोभनीय दृश्य से

बचने या किसी घातक प्रहार को रोकने के लिए बस थोड़ा सा समय बचा हो, अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लेते, जिससे उनका चेहरा पूरी तरह ढक जाता और उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता, ऐसा प्रतीत होता जैसे वे अपनी हंसी को दबाने, मिटाने के लिए संघर्ष कर रही हों, क्योंकि अगर वे इसे रोक नहीं पातीं, तो अंततः वे बेजान हो जातीं। इसलिए, 'वफादारों' की उमंग से स्तब्ध, सौहार्द, बदनामी और दृढ़ता से मदहोश, श्रीमती वर्दुरिन, अपनी ऊँची कुर्सी पर एक पिंजरे में बंद पक्षी की तरह बैठी रहती थीं, जिसका बिस्किट गर्म शराब में भीगा हुआ हो, और सहानुभूति से सिसकियाँ भरती थीं।

इसी बीच एम. वर्दुरिन ने पहले स्वान से अपनी पाइप जलाने की अनुमति मांगी ("यहां कोई औपचारिकता नहीं है, आप समझ रहे हैं; हम सब दोस्त हैं!"), फिर जाकर युवा संगीतकार से पियानो पर बैठने की विनती की।

"उसे अकेला छोड़ दो; उसे परेशान मत करो; वह यहाँ यातना सहने नहीं आया है," श्रीमती वर्दुरिन चिल्लाईं। "मैं उसे यातना नहीं सहने दूंगी।"

"लेकिन भला उन्हें इससे क्या परेशानी होगी?" एम. वर्दुरिन ने जवाब दिया। "मुझे यकीन है कि एम. स्वान ने एफ शार्प में वह सोनाटा कभी नहीं सुना होगा जिसे हमने खोजा है; वह हमें पियानोफोर्टे पर उसका संगीत सुनाने वाले हैं।"

"नहीं, नहीं, नहीं, मेरी सोनाटा नहीं!" वह चिल्लाई, "मैं पिछली बार की तरह तब तक नहीं रोना चाहती जब तक मुझे सर्दी न हो जाए और मेरे पूरे चेहरे पर नसों का दर्द न होने लगे; बहुत-बहुत धन्यवाद, मैं वह प्रदर्शन दोहराना नहीं चाहती; आप सभी बहुत दयालु और विचारशील हैं; यह आसानी से देखा जा सकता है कि आप में से किसी को भी एक सप्ताह तक बिस्तर पर नहीं रहना पड़ेगा।"

यह छोटा सा दृश्य, जिसे युवा पियानोवादक के पियानो बजाने बैठते ही

बार-बार दोहराया जाता था, दर्शकों को हमेशा आनंदित करता था, मानो उनमें से प्रत्येक इसे पहली बार देख रहा हो। यह दृश्य 'मिस्ट्रेस' (जैसा कि उन्हें कहा जाता था) की मोहक मौलिकता और उनकी संगीत की गहरी समझ का प्रमाण था। उनके सबसे करीब बैठे लोग कमरे के दूसरे छोर पर धूम्रपान कर रहे या ताश खेल रहे बाकी लोगों का ध्यान 'सुनो, सुनो!' की आवाज़ों से आकर्षित करते थे, जो संसदीय बहसों की तरह ही यह दर्शाती थीं कि कुछ सुनने लायक बात कही जा रही है। और अगले दिन वे उन लोगों के प्रति सहानुभूति जताते थे जो उस शाम कार्यक्रम में नहीं आ पाए थे, और उन्हें विश्वास दिलाते थे कि यह 'छोटा सा दृश्य' पहले कभी इतना मनोरंजक ढंग से नहीं प्रस्तुत किया गया था।

"ठीक है, तो फिर," एम. वर्दुरिन ने कहा, "वह केवल एंडांटे ही बजा सकता है।"

“बस एंडांटे! आप तो बस बजाते ही रहते हैं,” उनकी पत्नी चिल्लाईं। “जैसे कि ‘बस एंडांटे’ ही मेरे शरीर की हर हड्डी को तोड़ न दे। ‘मास्टर’ सचमुच अनमोल हैं! मानो उन्होंने नौवें सिम्फनी में कहा हो, ‘हमें बस फिनाले की जरूरत है,’ या ‘मास्टरसिंगर का ओवरचर’।”

हालांकि, डॉक्टर ने श्रीमती वर्दुरिन से पियानोवादक को बजाने देने का आग्रह किया, इसलिए नहीं कि उन्हें लगा कि संगीत के उन पर पड़ने वाले कष्टदायक प्रभावों के बारे में बात करते समय वह बहाना बना रही थीं, क्योंकि वह कुछ न्यूरोस्टेनिक स्थितियों के अस्तित्व को पहचानते थे - बल्कि इसलिए कि कई डॉक्टरों में पाई जाने वाली उनकी यह आदत थी कि जैसे ही उन्हें लगता था कि किसी सामाजिक समारोह की सफलता, जो उन्हें कहीं अधिक महत्वपूर्ण लगती थी, खतरे में पड़ सकती है, तो वे तुरंत नुस्खे के सख्त नियमों में ढील दे देते थे। इस समारोह में वह मरीज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी, जिसे उन्होंने एक बार के लिए

अपनी बदहजमी या सिरदर्द को भूल जाने के लिए कहा था।
"इस बार तुम बीमार नहीं पड़ोगी, यह तुम्हें पता चल जाएगा," उसने उससे कहा, और साथ ही अपनी निगाहों के आकर्षण से उसके मन को वश में करने की कोशिश की। "और अगर तुम बीमार पड़ भी गई, तो हम तुम्हें ठीक कर देंगे।"
"क्या तुम सचमुच ऐसा करोगी?" श्रीमती वर्दुरिन ने ऐसे कहा मानो उनके लिए इतना बड़ा उपकार होने पर उनके पास आत्मसमर्पण करने के अलावा कोई चारा ही न हो। शायद, बीमार होने की बात कहने के कारण ही वह ऐसी स्थिति में पहुँच गई थीं कि कभी-कभी वह भूल जाती थीं कि यह सब बस एक 'मामूली नाटक' है, और पूरी ईमानदारी से एक बीमार व्यक्ति के नज़रिए से चीजों को देखती थीं। क्योंकि अक्सर यह देखा जाता है कि बीमार लोग अपने दौरे की आवृत्ति को हमेशा अपनी सूझबूझ पर निर्भर रहने से थक जाते हैं और यह सोचने लगते हैं कि वे वह सब कुछ करने के लिए स्वतंत्र हैं जो उन्हें सबसे ज्यादा पसंद है, भले ही उसे करने के बाद वे हमेशा बीमार पड़ जाएँ, बशर्ते कि वे खुद को एक उच्च अधिकारी के हाथों में सौंप दें जो उन्हें जरा भी असुविधा पहुँचाए बिना, एक शब्द कहकर या एक अखबार प्रकाशित करके उन्हें फिर से स्वस्थ कर सकता है।
ओडेट पियानो के पास एक टेपेस्ट्री से ढके सोफे पर जाकर बैठ गई और श्रीमती वर्दुरिन से बोली, "मेरा अपना एक छोटा सा कोना है, है ना?"
और श्रीमती वर्दुरिन ने स्वान को कुर्सी पर अकेले बैठे देखकर उन्हें उठने को कहा, "आप यहाँ बिल्कुल भी आराम से नहीं हैं; जाइए और ओडेट के पास बैठिए; आप श्री स्वान के लिए वहाँ जगह बना सकती हैं, है ना, ओडेट?"
"कितना मनमोहक बोवेस है!" स्वान ने सोफे पर बैठने से पहले उसकी

प्रशंसा करते हुए कहा, और वह विनम्रता दिखाना चाहता था।
"मुझे खुशी है कि आपको मेरा सोफा पसंद आया," मैडम ने जवाब दिया। वर्दुरिन, "और मैं आपको चेतावनी देता हूँ कि अगर आप कभी इसके जैसा दूसरा देखने की उम्मीद करते हैं, तो बेहतर होगा कि आप यह विचार तुरंत छोड़ दें। इसके जैसा दूसरा कभी नहीं बना। और ये छोटी कुर्सियाँ भी अद्भुत हैं। आप इन्हें एक पल में देख सकते हैं। प्रत्येक कांस्य मोल्डिंग में बने प्रतीक कुर्सी पर बनी टेपेस्ट्री के विषय से मेल खाते हैं; आप जानते हैं, इन्हें देखने पर आपको मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान भी मिलता है;—मैं आपको एक सुखद समय का वादा कर सकता हूँ, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ। किनारों के चारों ओर बनी छोटी सी बॉर्डर को देखिए; यहाँ देखिए, इस कुर्सी में लाल पृष्ठभूमि पर बनी छोटी सी बेल, भालू और अंगूर। क्या यह अच्छी तरह से नहीं बनी है? आपका क्या कहना है? मुझे लगता है कि वे डिज़ाइन के बारे में बहुत कुछ जानते थे! क्या इस बेल को देखकर आपके मुँह में पानी नहीं आ रहा? मेरे पति कहते हैं कि मुझे फल पसंद नहीं हैं, क्योंकि मैं उनसे कम खाती हूँ। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है, मैं आप सभी से ज़्यादा लालची हूँ, लेकिन मुझे अपना मुँह फलों से भरने की क्या ज़रूरत है जब मैं उन्हें अपनी आँखों से ही निहार सकती हूँ। आप सब अब मुझ पर हंस रहे हैं, कृपया? डॉक्टर से पूछिए; वह आपको बताएंगे कि ये अंगूर मुझ पर नियमित दस्त की तरह असर करते हैं। कुछ लोग इलाज के लिए फॉन्टेनब्लू जाते हैं; मैं अपना छोटा सा बोवेस इलाज यहीं करवाता हूं। लेकिन, श्रीमान स्वान, आपको पीछे की ओर बनी छोटी-छोटी कांस्य की नक्काशी को छुए बिना भागना नहीं चाहिए। क्या यह एक सुंदर सतह नहीं है? नहीं, नहीं, पूरे हाथ से ऐसे नहीं; इन्हें ठीक से महसूस कीजिए!
चित्रकार ने कहा, "अगर श्रीमती वर्दुरिन अपनी कांस्य मूर्तियों के साथ

खेलना शुरू कर देंगी, तो आज रात हमें कोई संगीत सुनने को नहीं मिलेगा।"

"चुप रहो, नीच! और फिर भी हम बेचारी औरतें," वह आगे बोली, "इससे कहीं कम कामुक सुखों से वंचित हैं। दुनिया में इन जैसी कोमल देह कहीं नहीं है। कोई नहीं। जब श्री वर्दुरिन ने मुझ पर बुरी तरह ईर्ष्या करके मुझे सम्मानित किया... कम से कम शिष्ट तो रहो। यह मत कहो कि तुम्हें कभी ईर्ष्या नहीं हुई!"

"लेकिन, मेरे प्रिय, मैंने बिल्कुल कुछ नहीं कहा। देखिए, डॉक्टर, मैं आपको गवाह के तौर पर बुलाता हूँ; क्या मैंने एक भी शब्द बोला?"

स्वान ने शिष्टाचारवश कांस्य की मूर्तियों को छूना शुरू कर दिया था और वह रुकना नहीं चाहता था।

"चलो, बाद में तुम इन्हें सहला लेना; अभी तुम्हारी बारी है, तुम्हारे कान सहलाए जा रहे हैं; मुझे लगता है तुम्हें अच्छा लगेगा। ये रहे वो नौजवान जो इसका ख्याल रखेंगे।"

पियानोवादक के वादन समाप्त होने के बाद, स्वान ने अन्य सभी अतिथियों की तुलना में उसमें अधिक रुचि दिखाई और प्रदर्शित की, जिसका कारण निम्नलिखित था:

पिछले साल एक शाम की पार्टी में उन्होंने पियानो और वायलिन पर बजाया गया एक संगीत सुना था। पहले तो उन्होंने केवल उन वाद्ययंत्रों से निकलने वाली ध्वनियों की भौतिक गुणवत्ता को ही सराहा था। और यह उनके लिए अत्यंत आनंद का स्रोत था जब वायलिन के पतले, कोमल, अडिग, ठोस और संपूर्ण संगीत को नियंत्रित करने वाले हिस्से के नीचे, उन्होंने अचानक पियानो के विशाल, बहुआयामी, सुसंगत, समतल हिस्से को महसूस किया, जो हर जगह धुन में टूट रहा था, मानो गहरे नीले समुद्र का कोलाहल चाँदनी में चमक रहा हो और एक शांत स्वर में बदल गया

हो। लेकिन एक क्षण में, बिना किसी स्पष्ट रूपरेखा को समझे या उस संगीत को कोई नाम दिए जो उन्हें प्रसन्न कर रहा था, अचानक मंत्रमुग्ध होकर, उन्होंने उस वाक्यांश या सामंजस्य को - जिसे वे नहीं जानते थे कि क्या था - अपनी स्मृति में संजोने का प्रयास किया, जिसने उनकी आत्मा को खोल दिया और विस्तृत कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे शाम की नम हवा में कुछ गुलाबों की सुगंध हमारी नाक को फैला देती है। शायद संगीत के प्रति अपने अज्ञान के कारण ही उन्हें इतना भ्रमित अनुभव हुआ था, जो कि हमारे लिए विशुद्ध रूप से संगीतमय अनुभवों में से एक है, सीमित दायरे वाला, पूर्णतः मौलिक और किसी अन्य प्रकार में विभाज्य। इस प्रकार का अनुभव, जो पल भर में लुप्त हो जाता है, एक प्रकार से निरर्थक अनुभव है। संभवतः ऐसे क्षणों में हम जो स्वर सुनते हैं, वे हमारी आँखों के सामने फैलते हुए प्रतीत होते हैं, उनकी पिच और वॉल्यूम के अनुसार छोटे या बड़े सतहों पर; अरबी डिज़ाइन बनाते हुए, हमें साँस या कोमलता, स्थिरता या चंचलता का अहसास कराते हैं। लेकिन ये संवेदनाएँ विकसित होने से पहले ही स्वर लुप्त हो जाते हैं, ताकि वे उन संवेदनाओं के नीचे दब न जाएँ जिन्हें बाद के, या यहाँ तक कि साथ-साथ बजने वाले स्वर पहले ही हमारे भीतर जगाना शुरू कर चुके होते हैं। और यह अनिश्चित अनुभूति अपनी पिघलती तरलता में उन भावों को दबाती रहती है जो कभी-कभी उभरते हैं, मुश्किल से दिखाई देते हैं, फिर डूब जाते हैं और गायब हो जाते हैं; केवल उस विशेष प्रकार के आनंद से पहचाने जाते हैं जो वे उत्पन्न करते हैं, जिसका वर्णन करना, याद करना, नाम देना असंभव है; अवर्णनीय;—यदि हमारी स्मृति, लहरों के कोलाहल के नीचे मजबूत नींव रखने वाले मजदूर की तरह, उन क्षणभंगुर वाक्यांशों की प्रतिकृतियाँ बनाकर हमें उनकी तुलना आने वाले वाक्यांशों से करने में सक्षम न बनाती। और इस प्रकार, स्वान द्वारा अनुभव की गई सुखद

अनुभूति अभी समाप्त ही हुई थी कि उनकी स्मृति ने उन्हें तुरंत एक प्रतिलेख, सारांश (यथा सत्य और अस्थायी), प्रदान कर दिया, जिस पर उन्होंने वादन के दौरान अपनी निगाहें इतनी प्रभावी ढंग से टिकाए रखीं कि जब वही अनुभूति अचानक लौटी, तो वह अब अपठनीय नहीं रही। वह अपने मन में उसकी व्यापकता, उसकी सममित व्यवस्था, उसके संकेतन, उसकी अभिव्यक्ति की शक्ति का चित्र बना सके; उनके सामने वह निश्चित वस्तु थी जो अब केवल संगीत नहीं थी, बल्कि एक रचना, वास्तुकला, विचार थी, और जिसने वास्तविक संगीत को याद करने की अनुमति दी। इस बार उन्होंने ध्वनि की लहरों से कुछ क्षणों के लिए उभरे एक वाक्यांश को स्पष्ट रूप से पहचाना। इसने उसे उन अंतरंग सुखों में भाग लेने का निमंत्रण दिया, जिनके अस्तित्व के बारे में उसने इसे सुनने से पहले कभी सपने में भी नहीं सोचा था, और उसे लगा कि केवल यही वाक्यांश उसे उन सुखों में प्रवेश करा सकता है; और वह इसके प्रति प्रेम से भर गया था, मानो एक नई और विचित्र इच्छा से।

धीमी और लयबद्ध गति से वह उसे यहाँ-वहाँ, हर जगह ले गई, एक ऐसी आनंदमय अवस्था की ओर जो उदात्त, अवर्णनीय, फिर भी स्पष्ट रूप से इंगित थी। और फिर, अचानक एक निश्चित बिंदु पर पहुँचकर, जहाँ से वह उसका अनुसरण करने के लिए तैयार था, एक क्षण के लिए रुकने के बाद, उसने अचानक अपनी दिशा बदल दी, और एक नई, अधिक तीव्र, बहुआयामी, उदास, निरंतर, मधुर गति से, वह उसे अपने साथ अज्ञात आनंदों के एक दृश्य की ओर ले गई। फिर वह लुप्त हो गई। उसने तीव्र लालसा के साथ आशा की कि वह उसे फिर से, तीसरी बार पा सके। और वह फिर से प्रकट हुई, हालाँकि उससे अधिक स्पष्ट रूप से बात किए बिना, वास्तव में उसे कम गहरा आनंद प्रदान किया। लेकिन जब वह एक बार फिर घर पहुँचा तो उसे उसकी आवश्यकता महसूस हुई, वह उस

व्यक्ति की तरह था जिसके जीवन में एक स्त्री, जिसे उसने एक क्षण के लिए गुजरते हुए देखा था, ने सौंदर्य का एक नया रूप ला दिया है, जो उसकी अपनी बोध शक्ति को मजबूत और विस्तृत करता है, बिना यह जाने कि क्या वह उसे फिर कभी देख पाएगा जिसे वह पहले से ही प्यार करता है, हालाँकि वह उसके बारे में कुछ नहीं जानता, यहाँ तक कि उसका नाम भी नहीं।

वास्तव में, संगीत की एक धुन के प्रति यह जुनून, पहले कुछ महीनों में, स्वान के जीवन में एक प्रकार का पुनर्जन्म लेकर आया प्रतीत हुआ। वह इतने लंबे समय से किसी आदर्श लक्ष्य की ओर अपना मार्ग नहीं मोड़ पाए थे और क्षणिक सुखों की खोज में ही सिमट गए थे कि उन्हें यह विश्वास हो गया था, हालांकि उन्होंने कभी औपचारिक रूप से स्वयं से भी इस विश्वास को व्यक्त नहीं किया था, कि वे जीवन भर उसी स्थिति में रहेंगे जिसे केवल मृत्यु ही बदल सकती है। इससे भी बढ़कर, चूंकि उनके मन में अब कोई उच्च आदर्श नहीं थे, इसलिए उन्होंने उनकी वास्तविकता में विश्वास करना छोड़ दिया था (हालांकि वे स्पष्ट रूप से इनकार नहीं कर सकते थे)। उन्हें तुच्छ बातों में लीन रहने की आदत भी पड़ गई थी, जिससे वे मौलिक महत्व के मामलों को एक तरफ रख देते थे। ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने कभी स्वयं से यह नहीं पूछा कि क्या समाज में न जाना उनके लिए बेहतर नहीं होता, यह जानते हुए कि यदि उन्होंने निमंत्रण स्वीकार किया तो उन्हें उपस्थित होना ही पड़ेगा, और बाद में, यदि वे वास्तव में नहीं गए, तो कम से कम उन्हें मेज़बान के लिए कार्ड छोड़ना ही होगा; इसलिए बातचीत में वे इस बात का खास ध्यान रखते थे कि किसी भी बात पर अपनी निजी राय को जोश से ज़ाहिर न करें, बल्कि इसके बजाय वे ऐसे तथ्य और विवरण देते थे जिनका अपने आप में कुछ महत्व होता था और जो उन्हें यह दिखाने से बचाते थे कि उन्हें वास्तव में कितना

ज्ञान है। वे किसी व्यंजन की विधि, किसी चित्रकार के जन्म और मृत्यु की तारीखों और उसकी कृतियों के शीर्षकों के बारे में बेहद सटीक होते थे। कभी-कभी, अनजाने में ही, वे किसी कलाकृति या किसी के जीवन के दृष्टिकोण की आलोचना करने तक चले जाते थे, लेकिन तब वे अपने शब्दों को व्यंग्य के लहजे में छिपा लेते थे, मानो वे अपनी कही हुई बात से पूरी तरह सहमत न हों। लेकिन अब, एक ऐसे पक्के बीमार व्यक्ति की तरह, जिसे अचानक वातावरण और परिवेश में बदलाव, या उपचार के नए तरीके, या कभी-कभी होने वाले स्वयं में हुए एक सहज और अकथनीय शारीरिक परिवर्तन से ऐसा लगता है कि वह अपनी बीमारी से इतना उबर गया है कि वह अब तक सभी उम्मीदों से परे रही एक बिल्कुल अलग जीवन जीने की संभावना को देखने लगता है—और देर से ही सही, लेकिन बेहतर है—स्वैन ने अपने भीतर, उस वाक्यांश की स्मृति में, जिसे उसने कुछ अन्य सोनाटाओं में सुना था, जिन्हें उसने लोगों से उसे सुनाने के लिए कहा था, यह देखने के लिए कि क्या वह शायद उनमें अपना वाक्यांश खोज सकता है, उन अदृश्य वास्तविकताओं में से एक की उपस्थिति पाई, जिन पर उसने विश्वास करना छोड़ दिया था, लेकिन जिसके प्रति, मानो संगीत ने उस नैतिक बंजरपन पर, जिससे वह पीड़ित था, एक प्रकार का रचनात्मक प्रभाव डाला हो, वह एक बार फिर अपने जीवन को समर्पित करने की इच्छा, लगभग वास्तव में, शक्ति के प्रति सचेत हो गया। लेकिन, उस शाम उन्होंने जो संगीत सुना था, वह किसका था, यह पता न लगा पाने के कारण वे उसकी एक प्रति प्राप्त नहीं कर सके और अंततः खोजबीन करना भूल गए। वास्तव में, अगले कुछ दिनों में उनकी मुलाकात उस पार्टी में उनके साथ मौजूद कई लोगों से हुई और उन्होंने उनसे पूछताछ भी की; लेकिन उनमें से अधिकांश या तो संगीत बजने के बाद आए थे या उससे पहले ही चले गए थे; कुछ लोग घर में तो

थे, लेकिन बातचीत करने के लिए दूसरे कमरे में चले गए थे, और जो लोग सुनने के लिए रुके थे, उन्हें भी बाकी लोगों की तरह ही कोई स्पष्ट जानकारी नहीं थी। जहाँ तक उनके मेज़बानों की बात है, वे जानते थे कि यह हाल ही में प्रकाशित रचना थी जिसे उस शाम के लिए आमंत्रित संगीतकारों ने बजाने की अनुमति मांगी थी; लेकिन, चूंकि वे संगीतकार अब कहीं दौरे पर थे, इसलिए स्वान को इसके बारे में और कुछ पता नहीं चल सका। उनके कई संगीतकार मित्र थे, लेकिन यद्यपि उन्हें उस छोटे से वाक्यांश से प्राप्त असीम और अवर्णनीय आनंद की स्पष्ट याद थी, और वे अब भी अपनी आँखों के सामने उस रचना की रूपरेखा देख सकते थे, फिर भी वे उनके सामने उस धुन को गुनगुना नहीं सकते थे। और अंततः उसने इसके बारे में सोचना बंद कर दिया।

लेकिन आज रात, श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ, नन्हे पियानोवादक ने अभी बजाना शुरू ही किया था कि अचानक, दो पूरे बार तक एक ऊँचे स्वर के गूंजने के बाद, स्वान ने उसे पास आते देखा, उस गूंज के नीचे से चुपके से निकलते हुए, जो उस पर फैली हुई थी और ध्वनि के पर्दे की तरह उसके जन्म के रहस्य को छुपा रही थी—और उसने उस मधुर और सुगंधित वाक्यांश को पहचान लिया, गुप्त रूप से, फुसफुसाते हुए, स्पष्ट रूप से, जिसे वह प्यार करता था। और वह इतना अनोखा था, उसमें इतना व्यक्तिगत आकर्षण था, जिसकी जगह कोई और नहीं ले सकता था, कि स्वान को ऐसा लगा जैसे वह किसी मित्र के ड्राइंग रूम में उस महिला से मिला हो जिसे उसने कभी सड़क पर देखा और सराहा था, और फिर कभी उसे देखने की उम्मीद छोड़ दी थी। अंत में वह वाक्यांश पीछे हट गया और गायब हो गया, अपनी सुगंध की भटकती धाराओं के बीच इशारा करते हुए, दिशा दिखाते हुए, लगन से, स्वान के चेहरे पर अपनी मुस्कान की एक झलक छोड़ गया। लेकिन अब, आखिरकार, वह अपनी

उस अनजानी रचना का नाम पूछ सका (और उसे बताया गया कि यह विंटेइल के पियानो और वायलिन के लिए सोनाटा का एंडांटे मूवमेंट था), उसने इसे सुरक्षित रख लिया, इसे घर पर, जितनी बार चाहे, अपने पास रख सकता था, इसकी भाषा का अध्ययन कर सकता था और इसका रहस्य जान सकता था।

और जब पियानोवादक ने अपना प्रदर्शन समाप्त कर लिया, तो स्वान कमरे के उस पार गए और उन्होंने बड़े उत्साह से उन्हें धन्यवाद दिया, जिससे श्रीमती वर्दुरिन बहुत प्रसन्न हुईं।

"क्या वो मनमोहक नहीं है?" उसने स्वान से पूछा, "क्या उसे अपनी सोनाटा की समझ नहीं है, उस नन्हे से व्यथित? तुमने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि एक पियानो इतना कुछ व्यक्त कर सकता है? कसम से, इसमें पियानो को छोड़कर सब कुछ है! मैं हर बार इसे सुनकर हैरान रह जाती हूँ; मुझे लगता है कि मैं एक ऑर्केस्ट्रा सुन रही हूँ। हालाँकि, यह वास्तव में ऑर्केस्ट्रा से बेहतर है, अधिक संपूर्ण है।"

युवा पियानोवादक ने झुककर जवाब दिया, मुस्कुराते हुए और अपने प्रत्येक शब्द को इस तरह रेखांकित करते हुए जैसे वह कोई सूक्तिपूर्ण कथन कर रहा हो: "आप मेरे प्रति बहुत उदार हैं।"

और जब श्रीमती वर्दुरिन अपने पति से कह रही थीं, "जाओ और उनके लिए संतरे का रस लाओ; उन्होंने वाकई मेहनत की है!" तभी स्वान ने ओडेट को बताना शुरू किया कि उन्हें वह छोटा सा वाक्य कितना पसंद आया था। तभी उनकी मेज़बान, जो थोड़ी दूर खड़ी थीं, ने पुकारा, "वाह! मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे किसी ने तुमसे अच्छी-अच्छी बातें कही हों, ओडेट!" तो उन्होंने जवाब दिया, "हाँ, बहुत अच्छी बातें," और स्वान को उनकी सादगी बहुत अच्छी लगी। फिर उन्होंने इस विंटेइल के बारे में कुछ जानकारी माँगी; उन्होंने और क्या-क्या किया था, और अपने जीवन के

किस दौर में उन्होंने यह सोनाटा रचा था;—उस छोटे से वाक्य का उनके लिए क्या अर्थ रहा होगा, यही वह बात थी जो स्वान सबसे ज़्यादा जानना चाहते थे।

लेकिन इन लोगों में से किसी ने भी, जो इस संगीतकार की प्रशंसा करने का दावा करते थे (जब स्वान ने कहा था कि सोनाटा वास्तव में मनमोहक है, तो श्रीमती वर्दुरिन ने कहा था, "मुझे पूरा यकीन है! वाकई मनमोहक! लेकिन आप यह स्वीकार करने की हिम्मत नहीं कर सकते कि आप विंटेइल के सोनाटा को नहीं जानते; आपको इसे न जानने का कोई अधिकार नहीं है!" - और चित्रकार ने आगे कहा था, "आह, हाँ, यह वाकई एक बेहतरीन रचना है, है ना? बेशक, अगर आप कुछ 'स्पष्ट' या 'लोकप्रिय' चाहते हैं तो नहीं, लेकिन मेरा मतलब है, यह हम कलाकारों पर बहुत गहरा प्रभाव डालती है।"), ऐसा प्रतीत होता है कि उनमें से किसी ने भी कभी खुद से ये प्रश्न नहीं पूछे, क्योंकि उनमें से कोई भी इनका उत्तर देने में सक्षम नहीं था।

स्वान द्वारा अपने पसंदीदा वाक्यांश पर की गई एक-दो विशेष टिप्पणियों पर भी, "क्या आप जानते हैं, यह एक अजीब बात है; मैंने इस पर कभी ध्यान नहीं दिया था; मैं आपको बता दूं कि मुझे सूक्ष्मदर्शी से चीजों को देखने और अंतर के छोटे-छोटे बिंदुओं पर खुद को चुभोने में कोई खास दिलचस्पी नहीं है; नहीं; हम इस घर में बाल की खाल निकालने में समय बर्बाद नहीं करते; क्यों नहीं? खैर, यह हमारी आदत नहीं है, बस इतना ही," श्रीमती वर्दुरिन ने जवाब दिया, जबकि डॉ. कॉटार्ड खुले मुंह से उनकी प्रशंसा करते हुए उन्हें निहार रहे थे, और उनके द्वारा तैयार किए गए वाक्यांशों के भंडार में एक कदम से दूसरे कदम पर आसानी से आगे बढ़ने की उनकी इच्छा का अनुभव करना चाहते थे। हालाँकि, वे और श्रीमती दोनों ही... कॉटार्ड, जिनमें आम लोगों जैसी ही एक विशिष्ट समझदारी

थी, हमेशा इस बात का ध्यान रखते थे कि वे कोई राय न दें, या किसी संगीत रचना की प्रशंसा करने का दिखावा न करें, जिसे वे घर पहुँचकर आपस में स्वीकार करते थे कि वे 'मास्टर' बिचे की कला को समझने से ज़्यादा नहीं समझते। जिस प्रकार आम जनता प्रकृति के आकर्षण, सुंदरता, यहाँ तक कि रूपरेखा को भी केवल उस कला की रूढ़िवादी धारणाओं में ही पहचान सकती है जिसे उन्होंने धीरे-धीरे आत्मसात कर लिया है, जबकि एक मौलिक कलाकार उन धारणाओं को अस्वीकार करते हुए शुरुआत करता है, उसी प्रकार श्रीमान और श्रीमती कॉटार्ड, जो इस मामले में आम जनता के विशिष्ट प्रतिनिधि थे, विंटेइल के सोनाटा या बिचे के चित्रों में वह नहीं खोज पाए जो उनके लिए संगीत में सामंजस्य या चित्रकला में सुंदरता का सार था। जब पियानोवादक ने अपनी सोनाटा बजाई, तो उन्हें ऐसा लगा मानो वह पियानो से बेतरतीब ढंग से ऐसे सुरों का मिश्रण बजा रहा हो जिनका उन संगीत शैलियों से कोई संबंध नहीं था जिनसे वे स्वयं परिचित थे, और जैसे चित्रकार ने अपने कैनवास पर रंगों को बेतरतीब ढंग से बिखेर दिया हो। जब उनमें से किसी एक चित्र में वे किसी मानव आकृति को पहचान पाए, तो उन्हें वह हमेशा भद्दी और अशिष्ट लगी (अर्थात् उस चित्रकला शैली की सारी सुंदरता का अभाव था जिसके माध्यम से वे स्वयं लोगों को देखते थे—वास्तविक, जीवित लोग, जो सड़कों पर उनसे मिलते थे) और सत्य से रहित, मानो एम. बिचे को यह पता ही न हो कि मानव कंधा कैसे बना होता है, या यह कि स्त्री के बाल आमतौर पर बैंगनी नहीं होते।

फिर भी, जब 'भक्त' लोग दूर चले गए, तो डॉक्टर को लगा कि यह अवसर इतना अच्छा है कि इसे गंवाना नहीं चाहिए, और इसलिए (जब श्रीमती वर्दुरिन विंटेइल के सोनाटा की प्रशंसा में अंतिम शब्द कह रही थीं) एक ऐसे तैराक की तरह जो सीखने के लिए पानी में कूदता है, लेकिन

ऐसा क्षण चुनता है जब बहुत से लोग उसे देख नहीं रहे होते: "हाँ, बिल्कुल; वह तो वाकई में एक उत्कृष्ट संगीतकार है!" उसने अचानक दृढ़ निश्चय के साथ कहा।

स्वान को इससे अधिक कुछ पता नहीं चला कि विंटेइल के सोनाटा के हालिया प्रकाशन ने संगीतकारों के सबसे उन्नत वर्ग के बीच काफी हलचल मचा दी थी, लेकिन यह अभी भी आम जनता के लिए अज्ञात था।

"मैं विंटेइल नाम के एक व्यक्ति को बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ," स्वान ने कहा, वह कॉम्ब्रे के उस पुराने संगीत शिक्षक के बारे में सोच रहा था जिसने मेरी दादी की बहनों को पढ़ाया था।

"शायद यही वह आदमी है!" श्रीमती वर्दुरिन चिल्लाईं।

"अरे नहीं!" स्वान जोर से हंस पड़ा। "अगर तुमने उसे एक पल के लिए भी देखा होता तो तुम यह सवाल नहीं पूछते।"

"तो फिर सवाल पूछना ही समस्या का समाधान है?" डॉक्टर ने सुझाव दिया।

"लेकिन हो सकता है कि वह कोई रिश्तेदार हो," स्वान ने आगे कहा। "यह भी काफी बुरा होगा; लेकिन, आखिर, एक प्रतिभाशाली व्यक्ति का कोई चचेरा भाई हो, जो एक मूर्ख बूढ़ा हो, इसमें कोई बुराई नहीं है। और अगर ऐसा हुआ, तो मैं कसम खाता हूँ कि उस बूढ़े मूर्ख से सोनाटा रचने वाले से मिलवाने के लिए मैं किसी भी तरह की यातना सहने को तैयार हूँ; सबसे पहले तो उस बूढ़े मूर्ख की संगति की यातना, जो बेहद भयानक होगी।"

चित्रकार समझ गया था कि विंटेइल इस समय गंभीर रूप से बीमार था, और डॉ. पोटेन को उसके जीवन की कोई उम्मीद नहीं थी।

"क्या!" श्रीमती वर्दुरिन चिल्लाईं, "क्या लोग अब भी पोटेन को अपना घर

कहते हैं?"

"आह! श्रीमती वर्दुरिन," कॉटार्ड ने मुस्कुराते हुए कहा, "आप भूल रही हैं कि आप मेरे एक सहकर्मी के बारे में बात कर रही हैं—मुझे कहना चाहिए, मेरे एक गुरु के बारे में।"

चित्रकार ने कहीं सुना था कि विंटेइल को मानसिक विक्षिप्त होने का खतरा था। और उसने ज़ोर देकर कहा कि सोनाटा के कुछ अंशों में इसके संकेत देखे जा सकते हैं। यह बात स्वान को हास्यास्पद नहीं लगी; बल्कि, इसने उसे उलझन में डाल दिया। क्योंकि, एक विशुद्ध संगीत रचना में वे तार्किक क्रम नहीं होते, जिनका मौखिक या लिखित भाषा में टूटना या उलझना पागलपन का प्रमाण होता है, इसलिए सोनाटा में पागलपन का निदान उसे उतना ही रहस्यमय लगा जितना कि किसी कुत्ते या घोड़े का पागलपन, हालाँकि इनके उदाहरण देखे जा सकते हैं।

"अपने 'मालिकों' के बारे में मुझसे बात मत करो; तुम उससे दस गुना ज़्यादा जानती हो!" श्रीमती वर्दुरिन ने डॉ. कॉटार्ड को एक ऐसी महिला के लहजे में जवाब दिया, जिसमें दृढ़ विश्वास था और जो अपने से असहमत होने वाले किसी भी व्यक्ति का डटकर सामना करने को तैयार थी। "खैर, आप अपने मरीज़ों को मार नहीं सकते!"

"लेकिन, महोदया, वह तो अकादमी में हैं।" डॉक्टर ने कड़वी व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ कहा। "अगर कोई बीमार व्यक्ति विज्ञान के राजकुमारों में से किसी एक के हाथों मरना पसंद करता है... तो यह कहना कहीं अधिक समझदारी है, 'हाँ, मेरे पास पोटेन है।'"

"अरे वाह! ज़्यादा चालाक, है ना?" श्रीमती वर्दुरिन ने कहा। "तो आजकल बीमारी में भी फैशन होते हैं, है ना? मुझे तो पता ही नहीं था... अरे, आप तो मुझे हंसा ही रही हैं!" वह अचानक चिल्लाईं और अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। "और मैं, बेचारी, यहाँ तो बड़ी गंभीरता से बात कर रही थी,

और मुझे पता ही नहीं चला कि आप मेरा मज़ाक उड़ा रही थीं।"
एम. वर्दुरिन के लिए, इतनी छोटी सी बात पर दोबारा हंसना थोड़ा मुश्किल लग रहा था, इसलिए वे अपनी पाइप से धुएं का एक बादल उड़ाकर ही संतुष्ट हो गए, और उदास मन से सोचने लगे कि वे फिर कभी हंसी के मैदान में अपनी पत्नी की अटलांटा जैसी उड़ान की बराबरी नहीं कर पाएंगे।
"जानती हो, हमें तुम्हारा दोस्त बहुत पसंद है," मैडम वर्दुरिन ने बाद में कहा, जब ओडेट उन्हें शुभ रात्रि कह रही थी। "वह बहुत ही सहज और आकर्षक है। अगर तुम्हारे सभी दोस्त ऐसे ही हैं, तो उन्हें जरूर ले आओ।"
एम. वर्दुरिन ने टिप्पणी की कि स्वान पियानोवादक की चाची की सराहना करने में फिर भी असफल रहे थे।
"मुझे लगता है बेचारे को थोड़ा अजीब लगा होगा," श्रीमती वर्दुरिन ने सुझाव दिया। "आप उससे यह उम्मीद नहीं कर सकतीं कि वह पहली बार में ही घर का माहौल समझ जाए; जैसे कॉटार्ड, जो कई सालों से हमारे छोटे से 'परिवार' का हिस्सा है। पहली बार आना मायने नहीं रखता; यह तो बस आस-पास देखने और चीजों को समझने का समय होता है। ओडेट, वह अच्छी तरह समझ गया है, उसे कल शैटेलेट में हमारे साथ आना है। शायद आप उसे बुलाकर ले आएं।" "नहीं, वह ऐसा नहीं चाहता।"
"अच्छा, ठीक है; जैसा आप चाहें। बशर्ते कि वह आखिरी क्षण में हमें धोखा न दे।"
श्रीमती वर्दुरिन को बहुत आश्चर्य हुआ कि वह उन्हें कभी निराश नहीं करते थे। वह उनसे मिलने जाते, चाहे कहीं भी हों, पेरिस के बाहर के रेस्तरां में (हालांकि वे शुरू में वहां ज्यादा नहीं जाते थे, क्योंकि सीज़न अभी शुरू नहीं हुआ था), और अक्सर नाटक देखने जाते, जिसमें श्रीमती वर्दुरिन को

बहुत आनंद आता था। एक शाम, जब वे घर पर भोजन कर रहे थे, उन्होंने श्रीमती वर्दुरिन को यह शिकायत करते सुना कि उनके पास वह परमिट नहीं है जो उन्हें दरवाजों पर इंतजार करने और भीड़ में खड़े होने की परेशानी से बचाता, और यह भी कि यह उनके लिए पहले शो और ओपेरा के भव्य प्रदर्शनों में कितना उपयोगी होता, और गैम्बेटा के अंतिम संस्कार के दिन परमिट न होने से कितनी असुविधा हुई थी। स्वान अपने प्रतिष्ठित मित्रों के बारे में कभी बात नहीं करते थे, बल्कि केवल उन्हीं के बारे में बात करते थे जिन्हें नुकसानदेह माना जा सकता था, इसलिए वह उन्हें छुपाना घमंडी और अनुचित समझते थे; जब वह फाउबर्ग सेंट-जर्मेन में अक्सर जाया करते थे, तो उन्होंने अपने सभी मित्रों को, जो तीसरी गणतंत्र सरकार के आधिकारिक जगत से जुड़े थे, उसी श्रेणी में शामिल कर लिया था। इसलिए उन्होंने बिना सोचे-समझे बीच में ही कहा, "मैं इसका इंतज़ाम कर दूंगा। डैनिशेफ़ के पुनरुद्धार के समय तक यह आपको मिल जाएगा। संयोग से, कल मैं पुलिस प्रमुख के साथ एलिसी पैलेस में दोपहर का भोजन कर रहा हूँ।"

"यह क्या है? एलिसी पैलेस?" डॉ. कॉटार्ड ने गरजती हुई आवाज में कहा।

"हां, एम. ग्रेवी के यहां," स्वान ने जवाब दिया, अपने इस ऐलान के असर से थोड़ा असहज महसूस करते हुए।

"क्या आपकी अक्सर इस तरह से तस्वीर ली जाती है?" चित्रकार ने बनावटी गंभीरता से कॉटार्ड से पूछा।

आम तौर पर, स्पष्टीकरण दिए जाने के बाद कॉटार्ड कहते थे: "अहा, अच्छा, अच्छा; तो ठीक है," जिसके बाद वे जरा भी भावुक नहीं होते थे। लेकिन इस बार स्वान के अंतिम शब्द, हमेशा की तरह शांत करने वाले प्रभाव के बजाय, उनके आश्चर्य को तुरंत उबाल देने वाले थे। उन्हें यह

जानकर गहरा आश्चर्य हुआ कि जिस व्यक्ति के साथ वे स्वयं मेज पर बैठे थे, एक ऐसा व्यक्ति जिसका कोई आधिकारिक पद नहीं था, कोई सम्मान या विशिष्टता नहीं थी, वह राष्ट्राध्यक्ष के साथ मुलाकात के संबंध में था।

"आप क्या कह रहे हैं? श्री ग्रेवी? क्या आप श्री ग्रेवी को जानते हैं?" उसने महल में तैनात एक कांस्टेबल के मूर्खतापूर्ण और अविश्वासी लहजे में स्वान से पूछा, जब कोई अजनबी आकर गणतंत्र के राष्ट्रपति से मिलने की गुहार लगाता है; जब तक कि, उसके शब्दों और हावभाव से यह अनुमान लगाते हुए कि, जैसा कि अखबारों में कहा गया है, 'मामला क्या है', उसने बेचारे पागल को आश्वासन दिया कि उसे तुरंत भर्ती कर लिया जाएगा, और पुलिस अस्पताल के स्वागत कक्ष का रास्ता दिखाया।

"मैं उन्हें थोड़ा-बहुत जानता हूँ; हमारे कुछ कॉमन दोस्त हैं" (स्वान ने यह बताने की हिम्मत नहीं की कि उनमें से एक दोस्त वेल्स के राजकुमार थे)। "खैर, वे निमंत्रण देने में बहुत उदार हैं, और मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, उनकी लंच पार्टियाँ बिल्कुल भी मनोरंजक नहीं होतीं; वे बहुत ही सादी होती हैं, आप जानते हैं; मेज पर कभी भी आठ से ज़्यादा लोग नहीं होते," उन्होंने आगे कहा, और डॉक्टर की नज़रों के लिए राष्ट्रपति के साथ अपने संबंधों को उजागर करने वाली हर बात को छिपाने की पूरी कोशिश की।

इसके बाद कॉटार्ड ने स्वान की बात का शाब्दिक अर्थ समझते हुए तुरंत यह निष्कर्ष निकाला कि एम. ग्रेवी के निमंत्रण बहुत कम ही मांगे जाते थे, बल्कि वास्तव में सड़कों और झाड़ियों में भेजे जाते थे। और उस क्षण से उन्हें कभी भी यह सुनकर आश्चर्य नहीं हुआ कि स्वान या कोई और 'हमेशा एलिसी पैलेस में रहता है'; उन्हें तो उस व्यक्ति के लिए थोड़ी दया भी आई जिसे दोपहर के भोजन की पार्टियों में जाना पड़ता था, जिन्हें उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि वे उबाऊ होती थीं।

"अहा, अच्छा, अच्छा; तो फिर सब ठीक है," उसने एक सीमा शुल्क अधिकारी के लहजे में कहा, जो अब तक संदेह में था, लेकिन आपकी व्याख्या सुनने के बाद, आपके पासपोर्ट पर मुहर लगाता है और आपके सामान की जांच किए बिना आपको अपनी यात्रा पर आगे बढ़ने देता है।

"मुझे पूरा यकीन है कि आपको वो पार्टियां मनोरंजक नहीं लगतीं; सच में, आपका उनमें जाना बहुत अच्छी बात है!" श्रीमती वर्दुरिन ने कहा, जो गणतंत्र के राष्ट्रपति को केवल एक 'उबाऊ' व्यक्ति मानती थीं, जिनसे विशेष रूप से डरना चाहिए, क्योंकि उनके पास बहकाने और यहां तक कि दबाव डालने के भी साधन थे, जिनका इस्तेमाल अगर उनकी 'वफादार' महिलाओं को वश में करने के लिए किया जाता, तो वे पार्टियां आसानी से 'असफल' हो सकती थीं। "लगता है, वो बिल्कुल बहरे हैं; और उंगलियों से खाते हैं।"

"अरे वाह! फिर तो वहाँ जाना आपके लिए मज़ेदार नहीं होगा।" डॉक्टर की आवाज़ में थोड़ी दया झलक रही थी; और फिर मेज पर बैठे लोगों की संख्या देखकर, जो केवल आठ थे, उन्होंने उत्सुकता से पूछा, "क्या आप इन दोपहर के भोजन को 'घनिष्ठ' कहेंगे?" यह सवाल उन्होंने यूँ ही जिज्ञासावश नहीं, बल्कि भाषा के प्रति अपने उत्साह से भरा हुआ था।

लेकिन डॉ. कॉटार्ड की नज़रों में फ्रांसीसी गणराज्य के राष्ट्रपति इतने महान और गौरवशाली व्यक्तित्व के धनी थे कि न तो स्वान की विनम्रता और न ही श्रीमती वर्दुरिन की तीक्ष्ण बुद्धि उस पहली छाप को पूरी तरह मिटा सकीं। वे वर्दुरिन परिवार के साथ भोजन पर बैठते ही उत्सुकता से पूछते थे, "क्या आपको लगता है कि आज शाम हम श्री स्वान को यहाँ देखेंगे? वे श्री ग्रेवी के निजी मित्र हैं। मेरा मानना है कि इसका मतलब है कि वे एक 'सज्जन' व्यक्ति हैं?" उन्होंने तो यहाँ तक कह दिया कि वे स्वान को दंत चिकित्सा प्रदर्शनी का निमंत्रण पत्र भी दे दिया।

"इससे आपको और आपके साथ आने वाले किसी भी व्यक्ति को अंदर जाने की अनुमति मिल जाएगी," उन्होंने समझाया, "लेकिन कुत्तों को अंदर जाने की अनुमति नहीं है। मैं आपको बस चेतावनी दे रहा हूँ, समझ रहे हैं ना, क्योंकि मेरे कुछ दोस्त एक बार वहाँ गए थे, जिन्हें इसके बारे में बताया नहीं गया था, और उन्हें इसका बहुत बुरा नतीजा भुगतना पड़ा।"

एम. वर्दुरिन ने इस बात को ध्यान में रखा कि स्वान के प्रभावशाली मित्र थे जिनसे उसने कभी बात नहीं की थी, इस बात का पता चलने पर उसकी पत्नी पर कितना दुखद प्रभाव पड़ा।

यदि 'कहीं जाने' की कोई व्यवस्था नहीं की गई होती, तो स्वान को 'छोटा समूह' वर्दुरिन के घर पर ही मिलता, लेकिन वह शाम के अलावा कभी वहां नहीं आता था, और ओडेट के बार-बार अनुरोध के बावजूद, वह शायद ही कभी उनके रात्रिभोज के निमंत्रण को स्वीकार करता था।

"अगर आप चाहें तो मैं आपके साथ कहीं अकेले में खाना खा सकती हूं," उसने सुझाव दिया।

लेकिन श्रीमती वर्दुरिन का क्या होगा?

"ओह, ये तो बहुत आसान है। मुझे बस इतना कहना है कि मेरी ड्रेस तैयार नहीं थी, या मेरी टैक्सी देर से आई। कोई न कोई बहाना तो हमेशा मिल ही जाता है।"

"आप कितने प्यारे हैं।"

लेकिन स्वान ने मन ही मन सोचा कि अगर वह ओडेट को यह एहसास दिला सके (रात के खाने के बाद ही उससे मिलने की सहमति देकर) कि उसकी संगति से बढ़कर भी अन्य सुख हैं, तो उसके लिए ओडेट की चाहत को तृप्ति तक पहुँचने में और भी अधिक समय लगेगा। इसके अलावा, चूंकि वह ओडेट की सुंदरता की शैली की तुलना में एक छोटी, काम करने वाली लड़की की सुंदरता को कहीं अधिक पसंद करता था, जो

गुलाब की तरह ताज़ी और गोल-मटोल थी, और जिससे उसे एक ही समय में प्यार हो गया था, इसलिए वह शाम का पहला हिस्सा उसके साथ बिताना पसंद करता था, यह जानते हुए कि वह ओडेट से बाद में अवश्य मिलेगा। इसी कारण से, वह कभी भी ओडेट को अपने घर आने और उसे वर्दुरिन्स के घर ले जाने की अनुमति नहीं देता था। वह छोटी लड़की उसके दरवाजे से कुछ ही दूरी पर, एक गली के कोने पर इंतजार करती थी; उसका कोचवान रेमी जानता था कि कहाँ रुकना है; वह उसके बगल में कूद जाती और उसे अपनी बाहों में तब तक थामे रहती जब तक कि गाड़ी वर्दुरिन्स के घर नहीं पहुँच जाती। वह ड्राइंग रूम में प्रवेश करता; और वहाँ, जब श्रीमती... वर्दुरिन ने सुबह भेजे गए गुलाबों की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैं तुमसे बहुत क्रोधित हूँ!" और उसे ओडेट के बगल में उसके लिए निर्धारित स्थान पर भेज दिया। वहाँ पियानोवादक केवल उन दोनों के लिए, और किसी और के लिए नहीं, विंटेइल की वह छोटी सी धुन बजाता था, जो मानो उनके प्रेम का राष्ट्रगान थी। वह हमेशा वायलिन के हिस्से से एक निरंतर कंपन के साथ शुरू करता था, जो कई बार तक बिना किसी संगत के बजता था और पूरे अग्रभाग को भर देता था; फिर अचानक ऐसा लगता था जैसे वह धुन एक तरफ खींच ली गई हो, और - पीटर डी हूच के उन चित्रों की तरह, जहाँ विषय एक आधे खुले दरवाजे के संकरे फ्रेम से बहुत दूर पीछे होता है - असीम रूप से दूर, बिल्कुल अलग रंग में, किसी बीच के प्रकाश की चमक से मखमली, वह छोटी सी धुन नाचती हुई, देहाती, अंतर्विभाजित, सामयिक, किसी दूसरी दुनिया से संबंधित प्रतीत होती थी। यह सरल और अमर गतियों के साथ गुज़रा, अपनी सुंदरता की प्रचुरता को चारों ओर बिखेरता हुआ, असीम रूप से मुस्कुराता हुआ; लेकिन स्वान को लगा कि अब वह इसमें कुछ मोहभंग देख सकता है। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे यह जानता हो कि जिस खुशी का

यह मार्ग दिखा रहा था, वह कितनी व्यर्थ और खोखली थी। इसकी हल्की-फुल्की सुंदरता में वास्तव में कुछ निश्चित रूप से प्राप्त हुआ था, और अपने आप में पूर्ण था, जैसे व्यर्थ पछतावे के विस्फोट के बाद आने वाली दार्शनिक वैराग्य की भावना। लेकिन इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ा; उसने सोनाटा को उसके अपने प्रकाश में कम देखा—कि यह क्या व्यक्त कर सकता है, वास्तव में, एक ऐसे संगीतकार के लिए क्या व्यक्त किया था, जो इस बात से अनजान था कि दुनिया में कहीं भी कोई स्वान या ओडेट मौजूद है, जब उसने इसकी रचना की थी, और आने वाली शताब्दियों में इसे सुनने वाले सभी लोगों के लिए क्या व्यक्त करेगा—बल्कि एक प्रतिज्ञा के रूप में, उसके प्रेम के प्रतीक के रूप में, जिसने वर्दुरिन और उनके छोटे पियानोवादक को भी ओडेट और साथ ही खुद के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया—जिसने उसे एक स्थायी बंधन में उससे बांध दिया; और उस समय (ओडेट के आग्रह पर) उसने किसी 'पेशेवर' संगीतकार से पूरी सोनाटा बजाने का विचार छोड़ दिया था, जिसका उसे अभी भी इस एक अंश से अधिक कुछ नहीं पता था। "बाकी क्यों चाहिए?" उसने उससे पूछा था। "हमारा छोटा सा हिस्सा; बस इतना ही काफी है।" वह आगे बढ़ा; इस विचार से व्याकुल होकर, उस क्षण जब यह उसके सामने से गुजरा, इतना करीब होते हुए भी इतना अनंत रूप से दूर, कि यद्यपि यह उनके कानों को संबोधित था, फिर भी यह उन्हें नहीं जानता था, उसे लगभग इस बात का अफसोस होगा कि इसका अपना एक अर्थ है, एक आंतरिक और अपरिवर्तनीय सुंदरता, जो उनसे अलग है, ठीक वैसे ही जैसे हमें दिए गए गहनों में, या यहाँ तक कि उस स्त्री द्वारा लिखे गए पत्रों में जिससे हम प्यार करते हैं, हम पत्थर के 'पानी' में, या वाक्य के शब्दों में दोष निकालते हैं क्योंकि वे केवल एक क्षणिक आत्मीयता और एक 'अद्वितीय युवती' की भावना से नहीं बने होते हैं।

अक्सर ऐसा होता था कि वर्दुरिन के घर जाने से पहले वह अपनी छोटी बेटी के साथ इतनी देर बाहर रुक जाता था कि पियानोवादक द्वारा छोटा सा संगीत समाप्त होते ही स्वान को पता चलता कि ओडेट के घर जाने का समय लगभग हो गया है। वह उसे आर्क डी ट्रायम्फ के पीछे, रू ला पेरूज़ में स्थित उसके छोटे से घर के दरवाजे तक ले जाता था। शायद इसी कारण से, और ओडेट के प्रति अपने एकाधिकार की मांग न करने के लिए, वह शाम को उससे मिलने और वर्दुरिन के घर उसके साथ पहुँचने के सुख (जो उसके लिए उतना आवश्यक नहीं था) का त्याग कर, उनके साथ जाने के इस दूसरे विशेषाधिकार का आनंद लेता था, जिसके लिए ओडेट आभारी थी; एक ऐसा विशेषाधिकार जिसे वह और भी अधिक महत्व देता था क्योंकि इसके कारण उसे यह आभास होता था कि कोई और उसे नहीं देखेगा, कोई उनके बीच नहीं आएगा, कोई उसे रात के लिए उससे विदा लेने के बाद भी उसके साथ रहने से नहीं रोक पाएगा।

[खंड 2]

और इस तरह, हर रात, उसे स्वान की गाड़ी में घर ले जाया जाता था; और एक रात, जब वह उतर गई, और जब वह द्वार पर खड़ा होकर धीरे से बुदबुदाया, "तो कल मिलते हैं!", तो वह अचानक उससे मुँह मोड़कर, गली से उसके घर जाने वाले रास्ते के किनारे बने छोटे से बगीचे में आखिरी बचा हुआ गुलदाउदी का फूल तोड़ लाई, और जब वह अपनी गाड़ी की ओर वापस जाने लगा तो उसे उसके हाथ में थमा दिया। घर तक की पूरी यात्रा के दौरान उसने उसे अपने होठों से लगाए रखा, और जब कुछ समय बाद फूल मुरझा गया, तो उसने उसे किसी कीमती चीज़ की तरह, अपनी मेज के एक गुप्त दराज में रख दिया।

वह उसे उसके द्वार तक छोड़ देता, लेकिन उससे आगे नहीं। वह केवल दो बार ही अंदर गया था, उसकी ज़िंदगी में बेहद अहमियत रखने वाली

'दोपहर की चाय' की रस्म में शामिल होने के लिए। उन छोटी गलियों का सन्नाटा और खालीपन (जिनमें लगभग पूरी तरह से नीची छतों वाले घर थे, आत्मनिर्भर लेकिन अलग-थलग नहीं, जिनकी एकरसता कहीं-कहीं किसी रहस्यमयी छोटी दुकान के अंधेरे दखल से टूटती थी, जो एक ऐतिहासिक दस्तावेज होने के साथ-साथ उन दिनों की घिनौनी निशानी भी थी जब यह इलाका बदनाम हुआ करता था), बगीचे की क्यारियों पर जमी बर्फ या पेड़ों की शाखाओं से चिपकी बर्फ, मौसम की बेपरवाह अव्यवस्था, इस मानव निर्मित शहर में प्राकृतिक अवस्था का दावा, इन सबने मिलकर अंदर मिली गर्माहट, फूलों और विलासिता में एक रहस्यमय तत्व जोड़ दिया था।

अपने बाईं ओर (जो कि सड़क से कुछ ऊपर उठा हुआ था, फिर भी घर का भूतल था) ओडेट के शयनकक्ष से गुजरते हुए, जिसकी खिड़की पीछे की ओर एक और छोटी सी गली की ओर खुलती थी जो उसके अपने शयनकक्ष के समानांतर चलती थी, वह एक सीढ़ी चढ़ गया जो गहरे रंग से रंगी दीवारों के बीच से सीधी ऊपर जाती थी, जिनसे प्राच्य शैली के पर्दे, तुर्की मोतियों की मालाएँ और छत से रेशमी डोरी से लटका हुआ एक विशाल जापानी लालटेन था (हालाँकि, ताकि उसके आगंतुकों को पश्चिमी सभ्यता की किसी भी नवीनतम सुविधा की कमी की शिकायत न करनी पड़े, छत को अंदर से गैस-जेट से रोशन किया गया था), और फिर वह दो छोटे और बड़े ड्राइंग रूम में पहुँच गया। इनमें एक संकरी लॉबी से प्रवेश किया गया, जिसकी दीवार लकड़ी की जालीदार आकृतियों से सजी थी, जैसी बगीचों की दीवारों पर दिखती हैं, बस उस पर सोने की परत चढ़ी थी। लॉबी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक लंबा आयताकार बॉक्स था, जिसमें ग्रीनहाउस की तरह बड़े-बड़े गुलदाउदी के फूल खिले थे। उस समय ये फूल दुर्लभ थे, हालांकि इतने बड़े नहीं थे जितने कि बाद में

बागवानों ने उगाए। स्वान आमतौर पर इन फूलों को देखकर चिढ़ जाते थे, जो उस समय लगभग एक साल से पेरिस में बहुत लोकप्रिय थे, लेकिन इस बार उन्हें यह देखकर खुशी हुई कि छोटी सी लॉबी का अंधेरा इन क्षणभंगुर फूलों की सुगंधित पंखुड़ियों की गुलाबी, सुनहरी और सफेद किरणों से जगमगा रहा था, जो सर्दियों की धुंधली दोपहरों में अपनी ठंडी लौ जलाते हैं। ओडेट ने गुलाबी रेशमी चाय के गाउन में उनका स्वागत किया था, जिससे उनकी गर्दन और बाहें खुली थीं। उसने उसे कमरे के विभिन्न कोनों में बने कई रहस्यमय छोटे-छोटे एकांत स्थानों में से एक में अपने पास बिठाया था। ये एकांत स्थान चीनी मिट्टी के बर्तनों में उगते विशाल ताड़ के पेड़ों या तस्वीरों, पंखों और रिबन से सजे पर्दों से ढके हुए थे। उसने तुरंत कहा, "तुम्हें यहाँ आराम नहीं मिल रहा; एक मिनट रुको, मैं तुम्हारे लिए व्यवस्था करती हूँ," और खिलखिलाती हंसी के साथ, जिसमें आत्मसंतुष्टि झलक रही थी कि वह अपनी कोई अनोखी तरकीब आजमा रही है, उसने उसके सिर के पीछे और पैरों के नीचे जापानी रेशम के बड़े-बड़े तकिए लगा दिए, जिन्हें वह ऐसे पीट-पीट कर रही थी मानो अपनी सारी दौलत उस पर लुटाने को दृढ़ संकल्पित हो, चाहे उनकी कीमत कुछ भी हो। लेकिन जब उसका नौकर कमरे में आने लगा, एक के बाद एक अनगिनत दीपक लेकर, जो (ज़्यादातर चीनी मिट्टी के फूलदानों में रखे हुए) अलग-अलग फर्नीचर पर, मानो किसी वेदी पर, अकेले या जोड़े में जल रहे थे, और इस सर्दी की दोपहर के धुंधलके में, जो लगभग रात जैसा हो चुका था, एक ऐसे सूर्यास्त की चमक बिखेर रहे थे जो ज़्यादा देर तक टिकता था, ज़्यादा गुलाबी था, ज़्यादा मानवीय था—शायद किसी अकेले प्रेमी के विचारों को रोमांटिक आश्चर्य से भर रहा था, जो नीचे गली में घूम रहा था और उन रोशन खिड़कियों से प्रकट और छुपाए जा रहे मानवीय उपस्थिति के रहस्य के सामने ठहर गया था—तो

उसने नौकर पर पैनी नज़र रखी, यह देखने के लिए कि क्या वह हर दीपक को उसकी तय जगह पर रख रहा है। उसे लगा कि अगर वह उनमें से एक भी दीपक गलत जगह पर रख दे, तो उसके ड्राइंग रूम का पूरा माहौल बिगड़ जाएगा, और मखमल से ढके ढलान वाले स्टैंड पर रखा उसका चित्र रोशनी में नहीं चमकेगा। और इसलिए, वह बेचैनी से उस आदमी की अनाड़ी हरकतों पर नज़र रखती रही, और जब वह गमलों के एक जोड़े के बहुत करीब से गुज़रता तो उसे खूब डांटती। वह गमलों को हमेशा खुद ही ठीक करती थी, कहीं पौधे गिर न जाएं। अब वह यह सुनिश्चित करने के लिए उनके पास गई कि कहीं उसने कोई फूल तो नहीं तोड़ दिया। उसे अपने हर चीनी गहने की आकृति में, और अपने ऑर्किड में, विशेष रूप से कैटलिया में (जो गुलदाउदी के साथ उसके पसंदीदा फूल थे), कुछ अनोखा सा लगता था, क्योंकि उनमें यह खूबी थी कि वे देखने में बिल्कुल भी दूसरे फूलों जैसे नहीं लगते थे, बल्कि रेशम या साटन के टुकड़ों से बने प्रतीत होते थे। "यह बिल्कुल ऐसा दिखता है जैसे इसे मेरे लबादे की अस्तर से काटकर निकाला गया हो," उसने स्वान से कहा, एक ऑर्किड की ओर इशारा करते हुए, उसकी आवाज में उस 'सुंदर' फूल के लिए सम्मान का भाव था, उस विशिष्ट, अप्रत्याशित बहन के लिए जिसे प्रकृति ने अचानक उसे सौंप दिया था, जो अस्तित्व के पैमाने पर उससे बहुत दूर थी, और फिर भी इतनी नाजुक, इतनी परिष्कृत, और कई वास्तविक महिलाओं की तुलना में उसके ड्राइंग रूम में प्रवेश के कहीं अधिक योग्य थी। जैसे ही वह उसका ध्यान अपनी ओर खींचती, कभी कटोरे पर चित्रित या अग्नि-परीक्षा पर सिले हुए उग्र जीभ वाले ड्रैगन की ओर, कभी ऑर्किड के एक मांसल गुच्छे की ओर, कभी माणिक आँखों वाले चांदी के जड़े हुए ऊँट की ओर, जो उसके मेंटलपीस पर जेड में तराशे हुए मेंढक के साथ रखे थे, वह कभी राक्षसों की क्रूरता से सिकुड़ने

या उनकी बेतुकी बातों पर हंसने का नाटक करती, कभी फूलों की अभद्रता पर शरमाने का, कभी मेंढक और ऊँट को चूमने की एक अनियंत्रित इच्छा से बहक जाने का, उन्हें 'प्यारे' कहकर पुकारने का। और ये बनावटीपन उसके कुछ रवैयों की ईमानदारी के बिल्कुल विपरीत थे, विशेष रूप से लैगेटो की हमारी लेडी के प्रति उसकी भक्ति, जिन्होंने एक बार, जब ओडेट नीस में रह रही थी, उसे एक घातक बीमारी से ठीक किया था, और जिसका सोने का पदक वह हमेशा अपने पास रखती थी, उसे असीमित शक्तियाँ प्रदान करती थी। उसने स्वान के लिए चाय डाली और पूछा, "नींबू या क्रीम?" और, जब उसने जवाब दिया, "क्रीम, कृपया," तो वह मुस्कुराते हुए बोली, "एकदम बढ़िया!" और जब उसने चाय को बेहतरीन बताया, तो उसने कहा, "देखो, मुझे पता है कि तुम्हें यह कैसी पसंद है।" यह चाय स्वान को, ठीक वैसे ही जैसे उसे लगी थी, वाकई अनमोल लगी थी, और प्रेम को अपने अस्तित्व का औचित्य, अपनी निरंतरता की गारंटी उन सुखों में ढूंढनी ही पड़ती है, जो इसके विपरीत, प्रेम के बिना अस्तित्वहीन होते हैं और उसके बीत जाने के साथ ही समाप्त हो जाते हैं। इसलिए जब वह शाम सात बजे उसे छोड़कर शाम के लिए तैयार होने गया, तो घर वापस आते समय, अपनी बग्घी में सीधा बैठा रहा, दोपहर के रोमांच से भरी खुशी को दबा नहीं पा रहा था, और बार-बार खुद से दोहराता रहा: "उस जैसी एक प्यारी सी महिला का साथ होना कितना मजेदार होगा, ऐसी जगह पर जहां हमेशा एक अच्छी कप चाय मिलने की गारंटी हो, जिसकी गारंटी कभी नहीं होती।" लगभग एक घंटे बाद उन्हें ओडेट का एक पत्र मिला, और उन्होंने तुरंत उस अलंकृत लिखावट को पहचान लिया, जिसमें ब्रिटिश शैली की बनावटी कठोरता ने बेतरतीब अक्षरों पर एक स्पष्ट अनुशासन थोपा था। शायद, उनके जैसे कम परिचित लोगों के लिए, यह लिखावट मन की अव्यवस्था, अधूरी

शिक्षा, ईमानदारी और दृढ़ निश्चय की कमी का संकेत थी। स्वान अपना सिगरेट का डिब्बा उसके घर पर ही छोड़ आए थे। "क्यों," उसने लिखा, "क्या तुम अपना दिल भी भूल गए? मैं तुम्हें वह कभी वापस नहीं देती।"
शायद इससे भी अधिक महत्वपूर्ण वह दूसरी मुलाकात थी जो उन्होंने कुछ समय बाद उनसे की। घर जाते समय, हमेशा की तरह जब उन्हें पता होता था कि उनकी मुलाकात होने वाली है, तो वे अपने मन में उनकी छवि बना लेते थे; और यदि उन्हें उनके चेहरे में कोई सुंदरता देखनी थी, तो उन्हें अपनी निगाहें उनकी ताज़ी और गुलाबी उभरी हुई गाल की हड्डियों पर टिकानी पड़ती थीं, और उनके बाकी गालों को नज़रअंदाज़ करना पड़ता था जो अक्सर सुस्त और पीले पड़ जाते थे, सिवाय उन छोटे-छोटे लाल धब्बों के। इस बात ने उन्हें गहरे अवसाद में डाल दिया, क्योंकि इससे यह साबित होता था कि किसी का आदर्श हमेशा अप्राप्य होता है, और किसी की वास्तविक खुशी साधारण होती है। वे उनके लिए एक नक्काशी लेकर जा रहे थे जिसे उन्होंने देखने के लिए कहा था। उनकी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी; उन्होंने उनका स्वागत किया, बैंगनी रंग के क्रेप डी चाइन के कपड़े पहने हुए, जो उनके सीने पर एक चादर की तरह लिपटा हुआ था, जिस पर सुंदर कढ़ाई की गई थी। जब वह उसके बगल में खड़ी थी, अपने बिखरे बालों की लटों से उसके गाल को छू रही थी, लगभग एक नर्तकी की मुद्रा में एक घुटना मोड़े हुए थी, ताकि वह बिना थके उस चित्र पर झुक सके, जिसे वह झुके हुए सिर से उन बड़ी-बड़ी आँखों से देख रही थी, जो इतनी थकी हुई और उदास लग रही थीं जब उनमें कोई उत्साह नहीं था, स्वान को उसकी शक्ल सिस्टीन की भित्तिचित्रों में से एक में देखी जा सकने वाली जेथ्रो की बेटी ज़िपोरा की आकृति से मिलती-जुलती लगी। उसे हमेशा से ही पुराने उस्तादों की पेंटिंग्स में न केवल अपने दैनिक जीवन में मिलने वाले लोगों की सामान्य विशेषताओं को खोजने में एक

विशेष आकर्षण रहा था, बल्कि उन चीजों को भी जो सामान्यीकरण के लिए सबसे कम उपयुक्त लगती हैं, यानी उन पुरुषों और महिलाओं की व्यक्तिगत विशेषताएं जिन्हें वह जानता था, जैसे कि, उदाहरण के लिए, एंटोनियो रिज़ो द्वारा बनाई गई डोगे लोरेडान की एक प्रतिमा में, उभरी हुई गाल की हड्डियाँ, तिरछी भौहें, संक्षेप में, उसके अपने कोचमैन रेमी से मिलती-जुलती शक्ल; घिरलैंडाइओ की पेंटिंग में, एम. डी पलांससी की नाक; टिंटोरेटो के चित्र में, गालों की गोलाई पर उभरी हुई मूंछों का आक्रमण, टूटी हुई नाक, भेदक निगाहें, डॉ. डू बोल्बोन की सूजी हुई पलकें। शायद इसलिए कि उन्हें हमेशा अपने दिल में इस बात का अफसोस रहा था कि उन्होंने अपना ध्यान जीवन के सामाजिक पहलू तक ही सीमित रखा था, हमेशा बातें कीं, न कि काम किया, उन्हें लगा कि उन महान कलाकारों द्वारा उन्हें दी गई एक प्रकार की छूट मिल सकती है, इस तथ्य को समझने में कि उन्होंने भी ऐसे प्रकार के चेहरे-मोहरे को प्रसन्नता से देखा था और अपनी रचनाओं में शामिल किया था जो उन कृतियों को वास्तविकता और जीवन के प्रति सच्चाई का सबसे मजबूत प्रमाण देते हैं; एक आधुनिक, लगभग सामयिक स्वाद; शायद, वह फैशन की दुनिया की प्रचलित तुच्छता में इतना डूब चुका था कि उसे किसी पुरानी उत्कृष्ट कृति में किसी ऐसे व्यक्ति का स्पष्ट और ताजगी भरा संकेत ढूंढना आवश्यक लगा, जिस पर आज भी चुटकुले बनाए, दोहराए और आनंद लिए जा सकें। शायद, दूसरी ओर, उसमें कलात्मक स्वभाव इतना बचा हुआ था कि वह इन व्यक्तिगत विशेषताओं को एक व्यापक अर्थ लेते हुए देखकर सच्ची संतुष्टि पा सके, जब उसने उन्हें एक ऐतिहासिक चित्र और एक आधुनिक मूल व्यक्ति के बीच समानता के अमूर्त विचार में देखा, जिसे चित्रित करने का इरादा नहीं था। चाहे जो भी कारण हो, और शायद इसलिए कि उन्हें कुछ समय से जो प्रचुर मात्रा में प्रभाव प्राप्त हो रहे थे—

हालांकि वास्तव में वे प्रभाव उन्हें संगीत के प्रति उनकी सराहना के माध्यम से ही प्राप्त हुए थे—उन्होंने चित्रकला के प्रति उनकी रुचि को भी बढ़ा दिया था, स्वान ने ओडेट की समानता को एलेसांड्रो डी मारियानो की ज़िपोरा से देखकर असाधारण आनंद की तीव्रता का अनुभव किया, एक ऐसा आनंद जिसका उनके चरित्र और आचरण पर स्थायी प्रभाव पड़ने वाला था। एलेसांड्रो डी मारियानो का अधिक लोकप्रिय उपनाम 'बोट्टिसेली' अब उतना नहीं दर्शाता जितना कि उस झूठी और तुच्छ धारणा को दर्शाता है जो हाल ही में आम प्रचलन में आई है। अब वह ओडेट के चेहरे की सुंदरता का आकलन उसके गालों की कमोबेश अच्छी बनावट और फूलों की पंखुड़ियों जैसी कोमलता और मिठास के आधार पर नहीं करता था, जो उसके होंठों को गले लगाने पर महसूस होती, बल्कि वह उसे रेशम के सुंदर और नाजुक धागों के गुच्छे की तरह देखता था, जिसे उसकी टकटकी भरी आंखें इकट्ठा करके आपस में गूंथती थीं, और गुच्छे से गेंद तक घुमावदार रेखा का अनुसरण करती थीं, जहां वह उसकी गर्दन की लय को उसके बालों की उछाल और उसकी पलकों के झुकाव के साथ इस तरह मिलाता था, मानो किसी खुद के चित्र से, जिसमें उसका स्वरूप स्पष्ट रूप से समझ में आता हो।

वह उसे निहारता रहा; उसके चेहरे और अंगों में पुराने भित्तिचित्र के अंश स्पष्ट थे, और बाद में, जब वह ओडेट के साथ होता था और जब वह उसकी अनुपस्थिति में उसके बारे में सोचता था, तब भी वह लगातार उन्हें पुनः प्राप्त करने का प्रयास करता रहा; और यद्यपि फ्लोरेंस की उस उत्कृष्ट कृति के प्रति उसकी प्रशंसा संभवतः इस खोज पर आधारित थी कि वह उसमें पुनरुत्पादित हो गई थी, फिर भी समानता ने उसकी सुंदरता को और भी बढ़ा दिया और उसे उसकी दृष्टि में और भी अनमोल बना दिया। स्वान ने अब तक ओडेट के वास्तविक मूल्य को न आंकने की

अपनी विफलता पर स्वयं को फटकारा, जिसे महान सैंड्रो भी पूजते, और खुद को भाग्यशाली माना कि ओडेट के चिंतन में उसका आनंद उसकी अपनी सौंदर्यपरक प्रणाली में उचित पाया गया। उसने स्वयं से कहा कि आदर्श सुख के अपने सपनों की प्रेरणा के रूप में ओडेट के विचार को चुनकर, वह, जैसा कि उसने तब तक सोचा था, केवल एक संदिग्ध और निश्चित रूप से अपर्याप्त मूल्य के उपाय पर निर्भर नहीं था, क्योंकि उसमें वह सब कुछ था जो कला में उसकी रुचि के उच्चतम स्तर को संतुष्ट करता था। वह यह समझने में विफल रहा कि यह गुण स्वाभाविक रूप से ओडेट को उन महिलाओं की श्रेणी में नहीं ला सकता था जिन्हें वह वांछनीय मानता था, क्योंकि उसकी इच्छाएँ हमेशा उसके सौंदर्यबोध के विपरीत रही थीं। 'फ्लोरेंटाइन पेंटिंग' शब्द स्वान के लिए अमूल्य थे। इसने उसे (मानो उसे एक कानूनी अधिकार प्रदान किया) ओडेट की छवि को सपनों और कल्पनाओं की दुनिया में प्रवेश करने में सक्षम बनाया, जिसमें तब तक उसे प्रवेश करने से रोका गया था, और जहाँ उसने एक नया और अधिक उदात्त रूप धारण किया। और जहाँ केवल उसे साक्षात देखने मात्र से, उसके चेहरे, उसके शरीर, उसकी संपूर्ण सुंदरता के बारे में उसकी शंकाएँ बार-बार जागृत होकर उसके प्रेम की तीव्रता को कम कर देती थीं, वे शंकाएँ दूर हो गईं और अब उसका प्रेम पुष्ट हो गया क्योंकि वह अपने सौंदर्यबोध के ठोस सिद्धांतों पर उसके प्रति अपने आकलन को पुनः स्थापित कर सकता था; जबकि चुंबन, शारीरिक समर्पण जो स्वाभाविक और कुछ हद तक आकर्षक प्रतीत होता, यदि उसे यह किसी ऐसे प्राणी द्वारा दिया गया होता जिसकी देह कुछ मुरझाई हुई और रक्त सुस्त हो, जो अब एक गैलरी में एक उत्कृष्ट कृति के प्रति उसकी आराधना को पूरा करने के लिए आया था, तो ऐसा प्रतीत होता कि यह उतना ही उत्कृष्ट साबित होगा जितना कि अलौकिक।

और जब उसे इस बात का अफसोस होने लगता कि पिछले कई महीनों से उसने ओडेट से मिलने के अलावा कुछ नहीं किया, तो वह खुद को यकीन दिलाता कि एक अमूल्य कलाकृति के अध्ययन में अपना काफी समय देना अनुचित नहीं था, जो एक नई, अलग और विशेष रूप से आकर्षक धातु में ढाली गई थी, एक अद्वितीय नमूना जिसे वह कभी एक कलाकार के विनम्र, आध्यात्मिक और निस्वार्थ मन से देखता था, तो कभी एक संग्राहक के गर्व, स्वार्थ और इंद्रिय-उत्तेजना से।

अपनी अध्ययन मेज पर, जिस पर वह काम करता था, उसने ओडेट की एक तस्वीर, मानो जेथ्रो की पुत्री की प्रतिकृति, रखी हुई थी। वह उसकी बड़ी-बड़ी आँखों, कोमल चेहरे की बनावट, जिसमें उसकी त्वचा की अपूर्णता झलकती थी, और थके हुए गालों पर बिखरे उसके सुंदर बालों को निहारता रहता था; और जो कुछ उसने सौंदर्यबोध के आधार पर पहले ही सुंदर माना था, उसे एक जीवित स्त्री के रूप में ढालते हुए, उसने उसे शारीरिक गुणों की एक श्रृंखला में बदल दिया, जिन्हें पाकर वह खुद को बधाई देता था, क्योंकि ये गुण उस स्त्री में समाहित थे जिसे वह अंततः पा सकता था। कलाकृति के प्रति दर्शक को आकर्षित करने वाली अस्पष्ट सहानुभूति की भावना, अब जब उसने जेथ्रो की पुत्री को सजीव रूप में जान लिया था, एक ऐसी इच्छा में बदल गई जिसने ओडेट के शारीरिक आकर्षण से पहले जो प्रेरणा नहीं मिली थी, उसकी भरपाई कर दी। जब वह लंबे समय तक बॉटिकेली की पेंटिंग को निहारता रहता था, तो उसे अपने जीवित बॉटिकेली की याद आती थी, जो इसके विपरीत कहीं अधिक सुंदर प्रतीत होता था, और जैसे ही वह जिपोरा की तस्वीर को अपनी ओर खींचता था, वह कल्पना करता था कि वह ओडेट को अपने दिल से लगाए हुए है।

हालांकि, उसे केवल ओडेट की उदासीनता से ही नहीं बचना था; बल्कि

अक्सर उसे अपनी उदासीनता से भी जूझना पड़ता था; उसे लगता था कि चूंकि ओडेट को उससे मिलने की हर सुविधा उपलब्ध थी, इसलिए जब भी वे मिलते थे तो उसके पास कहने के लिए कुछ खास नहीं रह जाता था। उसे डर था कि कहीं उसका वह व्यवहार—जो अब उनके साथ रहने पर तुच्छ, नीरस और अपरिवर्तनीय प्रतीत होता था—उसकी उस रोमांटिक आशा को न तोड़ दे कि एक दिन वह अपने प्रेम का इज़हार करेगी, जिस आशा के सहारे वह उसका प्रेमी बना था और बना रहेगा। इसलिए, उस ओडेट को बदलने के लिए, जिसके अपरिवर्तनीय मिजाज से वह ऊबने से डरता था, उसे एक नया नैतिक रूप देने के लिए, उसने अचानक एक पत्र लिखा जो इशारों में किए गए खुलासों और बनावटी आक्रोश से भरा था, और उसने उसे इस तरह भेजा कि वह रात के खाने से पहले उस तक पहुँच जाए। वह जानता था कि वह डर जाएगी, और जवाब देगी, और उसे उम्मीद थी कि जब उसे खोने का डर उसके दिल को जकड़ लेगा, तो वह उससे ऐसे शब्द बुलवाएगी जो उसने पहले कभी नहीं सुने थे: और वह सही था—इसी तरकीब को दोहराकर उसने उससे अब तक के सबसे स्नेहपूर्ण पत्र प्राप्त किए थे, उनमें से एक (जो उसने दोपहर में मैसन डोरे से एक विशेष दूत के माध्यम से उसे भेजा था—यह मर्सिया में हाल ही में आई बाढ़ के पीड़ितों के लिए आयोजित पेरिस-मर्सिया उत्सव का दिन था) की शुरुआत इस प्रकार थी, "मेरे प्रिय, मेरा हाथ इतना कांप रहा है कि मैं मुश्किल से लिख पा रही हूँ—"; और इन पत्रों को उसने मुरझाए हुए गुलदाउदी के साथ उसी दराज में रखा था। या फिर, अगर उसके पास लिखने का समय नहीं होता, तो जब वह वर्दुरिन के घर पहुँचता, तो वह दौड़कर उसके पास आती और कहती, "मुझे तुमसे कुछ कहना है!" और वह उत्सुकता से उसके चेहरे और वाणी में प्रकट होने वाली उस अभिव्यक्ति को देखता रहता था, जो उसने अब तक अपने दिल की उन

बातों को उससे छिपा रखा था।

जैसे ही वह वर्दुरिन के दरवाजे के पास पहुँचता और ड्राइंग रूम की रोशन खिड़कियों को देखता, जिनके शटर कभी बंद नहीं होते थे, वह उस मनमोहक स्त्री के ख्याल से पिघल जाता, जिसे वह कमरे में प्रवेश करते ही उस सुनहरी रोशनी में नहाती हुई देखता। मेहमानों की आकृतियाँ इधर-उधर लैंप और खिड़की के बीच स्पष्ट और काली दिखाई देतीं, मानो रोशनी को रोक रही हों, ठीक उन छोटी-छोटी तस्वीरों की तरह जो कभी-कभी किसी कांच की स्क्रीन पर चिपकी होती हैं, जिसके बाकी हिस्से केवल पारदर्शी होते हैं। वह ओडेट को पहचानने की कोशिश करता। और फिर, जब वह अंदर पहुँच जाता, तो बिना सोचे-समझे उसकी आँखें अचानक इतनी खुशी से चमक उठतीं कि एम. वर्दुरिन चित्रकार से कहते: "हम्म... लगता है गर्मी बढ़ रही है।" सचमुच, उसकी उपस्थिति ने घर को वह एहसास दिया जो उसने देखे किसी भी घर में नहीं था: एक तरह का स्पर्श, एक तंत्रिका तंत्र जो उसके हर कमरे में फैला हुआ था और उसके दिल को लगातार उत्तेजना भेजता था।

और इस प्रकार, एक सामाजिक जीव, अर्थात् 'छोटे कबीले' की सरल और नियमित अभिव्यक्तियाँ, स्वान के लिए ओडेट के साथ दैनिक मुलाकातों की एक श्रृंखला में परिवर्तित हो गईं, और इससे उन्हें उससे मिलने की संभावना के प्रति उदासीनता, या यहाँ तक कि उससे न मिलने की इच्छा का दिखावा करने में मदद मिली; ऐसा करने में उन्हें कोई बड़ा जोखिम नहीं था क्योंकि, भले ही उन्होंने दिन में उसे पत्र लिखा था, शाम को उससे मिलना और उसे घर तक पहुँचाना अनिवार्य था।

लेकिन एक शाम, उस अपरिहार्य अंधेरी यात्रा के विचार से चिढ़कर, वह अपनी दूसरी 'छोटी प्रेमिका' को लेकर बोइस तक गया, ताकि वर्दुरिन्स के घर पहुँचने में यथासंभव देरी हो सके, लेकिन उसे पहुँचने में इतनी देर हो

गई कि ओडेट, यह सोचकर कि वह आने का इरादा नहीं रखता, पहले ही जा चुकी थी। कमरे को उसके बिना देखकर, स्वान का हृदय अचानक पीड़ा से भर गया; वह इस अहसास से काँप उठा कि उसे एक ऐसे आनंद से वंचित किया जा रहा है जिसकी तीव्रता का आकलन उसने तब पहली बार करना शुरू किया था, क्योंकि अब तक उसे हमेशा यह निश्चितता थी कि वह जब चाहेगा उसे प्राप्त कर लेगा, जिसने (हमारे सभी सुखों की तरह) उसकी तीव्रता को कम कर दिया था, यदि उसे पूरी तरह से अंधा नहीं किया था।

"क्या तुमने देखा कि जब उसने देखा कि वह यहाँ नहीं है तो उसके चेहरे पर क्या भाव थे?" एम. वर्दुरिन ने अपनी पत्नी से पूछा। "मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि वह उस पर मोहित हो गया है।"

"उसने जो चेहरा बनाया था?" डॉ. कॉटार्ड भड़क उठे, जो एक मरीज से मिलने के लिए कुछ देर के लिए घर से बाहर गए थे और अपनी पत्नी को लेने के बाद अभी-अभी लौटे थे और उन्हें नहीं पता था कि वे किसके बारे में बात कर रहे हैं।

"क्या आपका मतलब यह है कि आप उनसे दरवाजे पर नहीं मिले थे - स्वान परिवार के सबसे प्यारे सदस्य से?"

"नहीं। एम. स्वान यहाँ आए थे?"

"बस एक पल के लिए। हमें स्वान की एक झलक मिली जो बेहद उत्तेजित थी। घबराहट की हालत में थी। दरअसल, ओडेट जा चुकी थी।"

"आपका मतलब यह है कि उसने उसके साथ 'पूरी तरह से' संबंध बना लिया है; कि उसने 'अपने सारे रास्ते बंद कर दिए हैं'?" डॉक्टर ने सावधानीपूर्वक पूछा, उसके वाक्यों का अर्थ परखते हुए।

"क्यों नहीं, बिलकुल नहीं; इसमें बिल्कुल कुछ भी नहीं है; वास्तव में, सच कहूँ तो, मुझे लगता है कि वह बहुत बड़ी गलती कर रही है और एक

नासमझ छोटी बच्ची की तरह व्यवहार कर रही है, जो वह है भी।"
"आओ, आओ, आओ!" एम. वर्दुरिन ने कहा, "तुम्हें कैसे पता कि इसमें कुछ भी नहीं है? हम तो वहाँ देखने तो नहीं गए हैं, है ना?"
"वह मुझे बता देती," श्रीमती वर्दुरिन ने गरिमापूर्ण ढंग से उत्तर दिया। "मैं कह सकती हूँ कि वह मुझे सब कुछ बता देती है। चूंकि अभी उसका कोई और नहीं है, इसलिए मैंने उससे कहा कि उसे उसके साथ रहना चाहिए। वह कहती है कि वह नहीं रह सकती; वह मानती है कि शुरुआत में वह उससे बहुत आकर्षित हुई थी; लेकिन वह हमेशा उसके साथ शर्माता है, और इससे वह भी उसके साथ शर्माने लगती है। इसके अलावा, वह कहती है कि वह उसे उस तरह से पसंद नहीं करती; यह एक आदर्श प्रेम है, 'प्लेटोनिक', आप जानते हैं; उसे डर है कि कहीं प्यार की चमक फीकी न पड़ जाए—ओह, मुझे तो उसकी आधी बातें भी समझ नहीं आतीं, मैं कैसे समझूँ? और फिर भी वह बिल्कुल वैसा ही आदमी है जैसा वह चाहती है।"
"मैं आपसे असहमत हूँ," एम. वर्दुरिन ने विनम्रतापूर्वक बीच में ही टोकते हुए कहा। "मैं इस सज्जन से केवल आधा ही संतुष्ट हूँ। मुझे लगता है कि वे दिखावा करते हैं।"
श्रीमती वर्दुरिन का पूरा शरीर अकड़ गया, उनकी आँखें मानो खाली-खाली सी घूर रही थीं जैसे कि वे अचानक एक मूर्ति में बदल गई हों; एक ऐसी युक्ति जिसके द्वारा यह माना जा सकता है कि उन्होंने उस अनकहे शब्द की ध्वनि को नहीं सुना, जिसका अर्थ यह प्रतीत होता था कि उनके घर में लोगों के लिए 'दिखावा' करना संभव था, और इसलिए, दुनिया में ऐसे लोग थे जो उनसे 'अधिक महत्वपूर्ण' थे।
खैर, अगर इसमें कुछ भी नहीं है, तो मुझे नहीं लगता कि यह इसलिए है क्योंकि हमारा दोस्त उसके सद्गुणों में विश्वास करता है। फिर भी, कौन

जाने; ऐसा लगता है कि वह उसकी बुद्धिमत्ता में विश्वास करता है। मुझे नहीं पता कि आपने सुना या नहीं कि उसने पिछली शाम विंटेइल के सोनाटा के बारे में उसे किस तरह उपदेश दिया। मैं ओडेट की बहुत बड़ी प्रशंसक हूँ, लेकिन सच में—उसे सौंदर्यशास्त्र के सिद्धांत समझाना—वह आदमी तो बिलकुल मूर्ख होगा।

"देखो, मैं तुम्हें ओडेट के बारे में बुरी बातें नहीं कहने दूंगी," मैडम वर्दुरिन ने अपने 'बिगड़े हुए बच्चे' वाले अंदाज़ में बीच में ही टोकते हुए कहा। "वह बहुत प्यारी है।"

"उसके आकर्षक न होने का कोई कारण नहीं है; हम उसके बारे में कुछ भी बुरा नहीं कह रहे हैं, बस इतना कह रहे हैं कि वह न तो सद्गुण की प्रतीक है और न ही बुद्धि की। आख़िरकार," उसने चित्रकार की ओर मुड़कर कहा, "क्या इससे इतना फ़र्क पड़ता है कि वह गुणी है या नहीं? आप बता नहीं सकते; अगर वह गुणी होती तो शायद वह इतनी आकर्षक न होती।"

सीढ़ियों पर स्वान की मुलाकात वर्दुरिन के बटलर से हुई, जो उसके आने से कुछ ही पल पहले कहीं और था। ओडेट ने बटलर से स्वान को यह बताने के लिए कहा था (हालांकि यह बात कम से कम एक घंटे पहले की है) कि घर लौटते समय वह शायद प्रिवोस्ट के यहाँ एक कप चॉकलेट पीने के लिए रुकेगी। स्वान तुरंत प्रिवोस्ट के लिए निकल पड़ा, लेकिन हर कुछ गज पर उसकी गाड़ी दूसरों या सड़क पार कर रहे लोगों के कारण रुक जाती थी। ये सभी घिनौनी रुकावटें थीं जिन्हें वह खुशी-खुशी अपने पहियों के नीचे कुचल देता, अगर एक पुलिसवाला अपनी नोटबुक में उलझकर उसे पैदल यात्री के गुजरने से भी ज्यादा देर तक न रोक रहा होता। वह बेचैनी से मिनट गिन रहा था, हर मिनट में कुछ सेकंड जोड़ रहा था ताकि उसे पूरा यकीन हो जाए कि उसने समय कम नहीं बताया है, और इस

तरह शायद प्रिवोस्ट के यहाँ समय पर पहुँचने और उसे वहाँ पाने की जो भी संभावना थी, उसे बढ़ा-चढ़ाकर बता रहा था। और फिर, ज्ञानोदय के एक क्षण में, बुखार से पीड़ित व्यक्ति की तरह जो नींद से जागता है और सपने की उन आकृतियों की निरर्थकता को महसूस करता है जिनके बीच उसका मन बिना किसी स्पष्ट भेद के भटक रहा था, स्वान को अचानक एहसास हुआ कि वे विचार उसके स्वभाव से कितने भिन्न थे जो उसके मन में तब से घूम रहे थे जब उसने वर्दुरिन के घर पर सुना था कि ओडेट चली गई है, और वह हृदय पीड़ा कितनी नई थी जिससे वह पीड़ित था, लेकिन जिसका उसे अब जाकर एहसास हुआ, मानो वह अभी-अभी जागा हो। क्या! यह सारी बेचैनी सिर्फ इसलिए कि वह अब ओडेट को कल तक नहीं देख पाएगा, ठीक वही जिसकी वह एक घंटे पहले तक उम्मीद कर रहा था, जब वह श्रीमती वर्दुरिन के घर की ओर गाड़ी चला रहा था। उन्हें यह भी स्वीकार करना पड़ा कि अब, जब वे उसी गाड़ी में बैठकर प्रिवोस्ट के घर जा रहे थे, तो वे पहले जैसे व्यक्ति नहीं रहे थे, अकेले भी नहीं थे —बल्कि एक नया व्यक्तित्व उनके साथ जुड़ गया था, उनसे विलीन हो गया था, एक ऐसा प्राणी जिससे शायद वे खुद को मुक्त न कर पाएं, जिसके प्रति उन्हें शायद कोई ऐसी रणनीति अपनानी पड़े जैसी किसी स्वामी या बीमारी को मात देने के लिए अपनाई जाती है। फिर भी, उस आखिरी क्षण में जब उन्होंने महसूस किया कि एक नया व्यक्तित्व उनके साथ जुड़ गया है, जीवन किसी तरह अधिक रोचक प्रतीत हुआ था।

उसने खुद को यह कहकर व्यर्थ ही आश्वस्त किया कि प्रिवोस्ट के यहाँ होने वाली यह संभावित मुलाकात (जिसके इंतजार के तनाव ने उसके मन को इतना व्याकुल कर दिया था कि उसे कुछ भी नहीं मिल रहा था, एक भी विचार नहीं, एक भी स्मृति नहीं, जिसके नीचे उसकी व्याकुल आत्मा को आश्रय और विश्राम मिल सके) अगर हुई भी तो शायद उनकी बाकी

मुलाकातों की तरह ही होगी, कोई खास महत्व नहीं रखेगी। हर दूसरी शाम की तरह, एक बार जब वह ओडेट के साथ होता, एक बार जब वह उसके बदलते चेहरे पर चोरी-छिपे नजरें डालना शुरू कर देता, और तुरंत अपनी आँखें हटा लेता ताकि वह उनमें इच्छा के पहले संकेत न पढ़ ले और उसकी उदासीनता पर विश्वास करना बंद न कर दे, तो वह उसके बारे में सोचना भी बंद कर देता, वह बहाने खोजने में इतना व्यस्त हो जाता जिससे वह उसे तुरंत छोड़कर न जाए, और अपनी चिंता को प्रकट किए बिना खुद को आश्वस्त कर ले कि वह उसे अगली शाम वर्दुरिन के यहाँ फिर से मिल लेगा; यानी, ऐसे बहाने जो उसे कुछ समय के लिए उस निराशा, उस पीड़ादायक धोखे को एक दिन और दोहराने में सक्षम बनाते, जो हमेशा उस महिला की व्यर्थ उपस्थिति के साथ उसके पास आता है, जिसके पास वह जा तो सकता है, लेकिन कभी गले लगाने की हिम्मत नहीं करता।

वह प्रिवोस्ट के यहाँ नहीं थी; इसलिए उसे बुलेवार्ड के हर रेस्तरां में उसकी तलाश करनी पड़ी। समय बचाने के लिए, एक दिशा में जाते हुए उसने अपने कोचवान रेमी (रिज़ो के डोगे लोरेडान) को दूसरी दिशा में भेज दिया, जिसकी व्यर्थ खोज के बाद वह उस स्थान पर प्रतीक्षा कर रहा था जहाँ गाड़ी को उसका इंतज़ार करना था। गाड़ी नहीं आई, और स्वान आने वाले क्षण की कल्पनाओं में खो गया, एक कल्पना में रेमी उससे कहेगा: "महोदय, महिला वहाँ है," या दूसरी कल्पना में रेमी उससे कहेगा: "महोदय, महिला किसी भी कैफे में नहीं थी।" और इस तरह उसने अपनी शाम के अंत में खुद को एक समान स्थिति में पाया—एक ऐसी स्थिति जो बीच में होने वाली घटना से दो भागों में बँटी हुई थी, जो या तो ओडेट को ढूंढकर उसकी पीड़ा का अंत कर देगी, या उसे उस रात उसे खोजने की सारी उम्मीद छोड़ने और उसे देखे बिना घर लौटने की मजबूरी को स्वीकार

करने पर मजबूर कर देगी।

कोचवान लौट आया; लेकिन जैसे ही वह उसके सामने आकर रुका, स्वान ने यह नहीं पूछा, "क्या आपको वह महिला मिली?" बल्कि पूछा, "मुझे कल कुछ और जलाऊ लकड़ी मंगवाने के लिए याद दिला देना। मुझे यकीन है कि हमारे पास लकड़ी कम पड़ रही होगी।" शायद उसने खुद को यह समझा लिया था कि अगर रेमी को आखिरकार ओडेट किसी कैफे में मिल गई है, जहाँ वह अब भी उसका इंतज़ार कर रही है, तो उसकी दुख भरी रात पहले ही उसके मन में बसी खुशी की रात की अनुभूति से मिट चुकी है, और उसे उस खुशी को पाने के लिए जल्दबाजी करने की कोई ज़रूरत नहीं है जो पहले ही हासिल कर ली गई है और एक सुरक्षित जगह पर रखी है, जो फिर कभी उसकी पकड़ से नहीं छूटेगी। लेकिन यह जड़ता के बल पर भी था; उसके मन में अनुकूलनशीलता की वह कमी थी जो कुछ लोगों के शरीर में देखी जा सकती है, जो किसी टक्कर से बचने, आग की लपटों से अपने कपड़े छीनने या कोई अन्य आवश्यक कार्य करने के समय समय लेते हैं (जैसा कि कहावत है), पहले अपनी मूल स्थिति में कुछ क्षण रुकते हैं, मानो उसमें कोई आरंभिक बिंदु, शक्ति और गति का स्रोत खोज रहे हों। और शायद, अगर कोचवान ने उसे यह कहकर टोका होता, "मुझे वह महिला मिल गई है," तो वह उत्तर देता, "ओह, हाँ, बिल्कुल; मैंने तुम्हें यही करने को कहा था। मैं बिल्कुल भूल गया था," और अपनी जलाऊ लकड़ी की आपूर्ति के बारे में बात करता रहता, ताकि अपने नौकर से अपनी भावनाओं को छिपा सके और खुद को अपनी चिंताओं के बंधन से मुक्त होकर आनंद में डूबने का समय दे सके।

लेकिन कोचवान यह खबर लेकर लौटा कि वह उसे कहीं नहीं ढूंढ पाया, और एक पुराने और विशेषाधिकार प्राप्त नौकर के रूप में उसने यह सलाह भी दी, "मुझे लगता है, महोदय, कि अब हमारे पास घर जाने के अलावा

कोई चारा नहीं है।"
लेकिन जब रेमी ने अपना अंतिम, अपरिवर्तनीय जवाब दिया, तो स्वान ने जिस उदासीनता का भाव आसानी से अपना लिया था, वह उस पर से एक त्यागे हुए लबादे की तरह गिर पड़ा जब उसने देखा कि रेमी उसे उम्मीद छोड़ने और खोज से पीछे हटने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा है।
"बिल्कुल नहीं!" उसने कहा। "हमें उस महिला को ढूंढना ही होगा। यह बेहद ज़रूरी है। अगर वह मुझसे नहीं मिली तो वह बहुत नाराज़ होगी—यह एक व्यावसायिक मामला है—और मुझसे बहुत गुस्सा होगी।"
"लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि महिला क्यों नाराज हो सकती है, महोदय," रेमी ने उत्तर दिया, "क्योंकि वह स्वयं आपके आने का इंतजार किए बिना चली गई थी, महोदय, और उसने कहा था कि वह प्रिवोस्ट के यहाँ जा रही है, और फिर वह वहाँ नहीं मिली।"
इसी बीच रेस्तरां बंद होने लगे और उनकी बत्तियाँ बुझने लगीं। सड़कों के किनारे पेड़ों के नीचे कुछ लोग इधर-उधर टहल रहे थे, जो बढ़ते अंधेरे में मुश्किल से दिखाई दे रहे थे। कभी-कभी एक स्त्री का भूत स्वान के पास आता, उसके कान में कुछ फुसफुसाता, उसे घर ले जाने के लिए कहता और उसे कंपकंपाते हुए छोड़ जाता। वह बेचैनी से उन धुंधली-सी आकृतियों को ध्यान से देखने लगा, मानो मृतकों के भूतों के बीच, अंधेरे के लोकों में, वह अपनी खोई हुई यूरीडाइस को खोज रहा हो।
प्रेम को जन्म देने के सभी तरीकों में, उस अभिशाप को फैलाने वाले सभी कारकों में, मनुष्य के मन पर समय-समय पर छा जाने वाली तीव्र बेचैनी की लहर जितनी प्रभावशाली कोई और नहीं है। क्योंकि तब वह प्राणी, जिसकी संगति में हम उस क्षण आनंद की तलाश कर रहे होते हैं, उसका भाग्य तय हो जाता है, उसका और हमारा भाग्य निर्धारित हो जाता है,

वही प्राणी होता है जिससे हम आगे प्रेम करेंगे। यह आवश्यक नहीं है कि उसने हमें तब तक और अधिक प्रसन्न किया हो, या दूसरों की तरह ही प्रसन्न किया हो। केवल इतना आवश्यक है कि उसके प्रति हमारी रुचि अनन्य हो जाए। और यह स्थिति तब पूरी हो जाती है जब—उस क्षण जब वह हमारी अपेक्षा पूरी करने में विफल रहती है—उसकी मनमोहक संगति में जिस आनंद का हम अनुभव करने वाले थे, उसकी जगह अचानक एक बेचैन, पीड़ादायक इच्छा जन्म लेती है, जिसका लक्ष्य स्वयं वह प्राणी होती है, एक तर्कहीन, बेतुकी इच्छा, जिसे सभ्य समाज के नियम न तो संतुष्ट कर सकते हैं और न ही शांत कर सकते हैं—उसे पाने की असंवेदनशील, पीड़ादायक इच्छा।

स्वान ने रेमी को उन रेस्तरांओं तक ले जाने के लिए कहा जो अभी भी खुले थे; अब यही उस खुशी की एकमात्र संभावना थी जिसकी उसने इतनी शांति से कल्पना की थी; उसने अपनी बेचैनी, उनकी मुलाकात की कीमत को छिपाना बंद कर दिया और सफलता मिलने पर अपने कोचमैन को इनाम देने का वादा किया, मानो उसमें विजय की इच्छाशक्ति जगाकर, जो उसकी अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत करेगी, वह चमत्कार से यह कर सकता है कि ओडेट—यह मानते हुए कि वह बहुत पहले घर जाकर सो गई होगी—किसी रेस्तरां में बैठी मिल जाए। उसने मेसन डोरे तक खोज जारी रखी, टोर्टोनी में दो बार घुसा और, अभी भी उसे देखे बिना, कैफे एंग्लिस से बाहर निकल रहा था, थकी हुई निगाहों से अपनी गाड़ी की ओर बढ़ रहा था, जो बुलेवार्ड डेस इटालियंस के कोने पर उसका इंतजार कर रही थी, तभी उसकी टक्कर विपरीत दिशा से आ रहे एक व्यक्ति से हो गई; वह ओडेट थी; बाद में उसने बताया कि प्रिवोस्ट के यहाँ कोई कमरा नहीं था, इसलिए वह इसके बजाय मैसन डोरे में रात का खाना खाने गई थी और वहाँ एक कोने में बैठी थी जहाँ से वह उसे देख

रहा होगा, और अब वह अपनी गाड़ी की तलाश कर रही थी।
उसे उससे मिलने की इतनी कम उम्मीद थी कि वह घबराकर पीछे हट गई। जहाँ तक उसकी बात है, उसने पेरिस की गलियों में उसे ढूँढ़ा था, इसलिए नहीं कि उसे लगा था कि वह उसे ढूँढ़ लेगा, बल्कि इसलिए कि अगर उसने कोशिश छोड़ दी होती तो उसे और भी ज़्यादा पीड़ा सहनी पड़ती। लेकिन अब वह आनंद (जिसके बारे में उसकी बुद्धि उसे लगातार आश्वस्त करती रही थी कि कम से कम उस शाम तो वह साकार नहीं होगा) अचानक प्रकट हुआ, और पहले से कहीं अधिक वास्तविक था; क्योंकि उसने संभावनाओं का अनुमान लगाकर इसमें कोई योगदान नहीं दिया था—यह उसके भीतर ही समाहित और उससे परे था; उसे इसे सत्य का रूप देने के लिए अपने संसाधनों का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं थी—यह स्वयं से ही उत्पन्न हुआ था, यह स्वयं ही उसकी ओर उस सत्य को प्रक्षेपित कर रहा था जिसकी शानदार किरणें उस अकेलेपन की भावना को, जो उस पर छाई हुई थी, स्वप्न के बादल की तरह पिघलाकर बिखेर रही थीं, वह सत्य जिस पर उसने, बल्कि अनजाने में ही सही, अपने आनंद के दर्शन को आधारित किया था। इसलिए, एक यात्री जो एक शानदार मौसम वाले दिन भूमध्य सागर के तट पर आया है, और इस बात को लेकर संशय में है कि क्या वे भूमि अभी भी अस्तित्व में हैं जिन्हें वह पीछे छोड़ आया है, वह अपने पैरों के नीचे के चमकदार और अविनाशी नीले आकाश से उसकी ओर आने वाली चमक से अपनी आँखों को चकाचौंध होने देगा, बजाय इसके कि वह पीछे मुड़कर देखे।
वह उसके पीछे उस गाड़ी में चढ़ गया जिसका उसने इंतज़ार करवाया था, और अपनी गाड़ी को भी पीछे आने का आदेश दिया।
उसके हाथ में कैटलिया फूलों का एक गुच्छा था, और स्वान उसके सिर पर लिपटी जालीदार चादर के नीचे, हंस के पंखों से बने एक गुच्छे में उसी

तरह के और फूल देख सकता था। उसने अपने लबादे के नीचे काले मखमल का एक बहने वाला गाउन पहना हुआ था, जो एक तरफ से ऊपर उठा हुआ था जिससे उसकी सफेद रेशमी स्कर्ट का एक बड़ा त्रिकोणीय हिस्सा दिखाई दे रहा था, और उसकी नीची गर्दन वाली चोली के बीच में सफेद रेशम का एक और टुकड़ा लगा हुआ था, जिसमें कुछ और कैटलिया फूल बंधे हुए थे। स्वान को देखकर उसे जो सदमा लगा था, उससे वह अभी उबर भी नहीं पाई थी कि किसी बाधा के कारण घोड़ा एक तरफ उछल पड़ा। वे दोनों अपनी सीटों से आगे की ओर गिर पड़े; उसने एक चीख मारी और कांपते हुए और हांफते हुए पीछे गिर पड़ी।

"सब ठीक है," उसने उसे दिलासा देते हुए कहा, "डरो मत।" फिर उसने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और उसे अपने शरीर से सटा लिया; उसके बाद बोला, "कुछ भी हो जाए, एक शब्द भी मत बोलना; बस हां या ना का इशारा करो, वरना तुम्हारी सांस फिर फूल जाएगी। अगर मैं फूल सीधे तुम्हारी चोली पर रख दूं तो तुम्हें कोई आपत्ति नहीं होगी; झटके से ये ढीले हो गए हैं। मुझे डर है कि कहीं ये गिर न जाएं; मैं इन्हें थोड़ा और मजबूती से बांध रहा हूं।"

उसे पुरुषों द्वारा इतने औपचारिक तरीके से व्यवहार किए जाने की आदत नहीं थी, और उसने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया: "नहीं, बिल्कुल नहीं; मुझे इसमें जरा भी आपत्ति नहीं है।"

लेकिन उसके जवाब से थोड़ा सहमकर, शायद यह दिखावा करने के लिए कि उसने यह चाल ईमानदारी से अपनाई थी, या शायद इसलिए कि वह पहले से ही यह मानने लगा था कि वह ईमानदार था, वह बोला: "नहीं, नहीं; तुम्हें बोलना नहीं चाहिए। तुम्हारी सांस फिर से फूल जाएगी। तुम इशारों में आसानी से जवाब दे सकती हो; मैं समझ जाऊंगा। सचमुच, तुम्हें मेरे ऐसा करने से कोई आपत्ति नहीं है? देखो, तुम्हारी पोशाक पर

थोड़ा सा—मुझे लगता है कि यह पराग होगा—गिरा है,—क्या मैं इसे अपने हाथ से हटा दूं? यह ज्यादा मुश्किल नहीं है; मैं तुम्हें चोट तो नहीं पहुंचा रहा हूँ, है ना? शायद मैं तुम्हें थोड़ा गुदगुदी कर रहा हूँ; लेकिन मैं मखमल को छूना नहीं चाहता, कहीं ऐसा न हो कि मैं उसे गलत तरीके से रगड़ दूं। लेकिन, क्या तुम नहीं देख रही हो, मुझे फूलों को लगाना ही पड़ा; अगर मैं नहीं लगाता तो वे गिर जाते। ऐसे, अब; अगर मैं उन्हें थोड़ा और नीचे धकेल दूं... सच में, मैं तुम्हें परेशान तो नहीं कर रहा हूँ, है ना? और अगर मैं बस सूंघ लूं..." क्या मैं उन्हें देखकर पता लगाऊं कि क्या उनकी सारी गंध सचमुच खत्म हो गई है? मुझे नहीं लगता कि मैंने इससे पहले कभी कोई गंध महसूस की थी; क्या मैं कर सकता हूँ? अब सच बताओ।

अब भी मुस्कुराती हुई, उसने अपने कंधों को हल्के से उचकाया, मानो कह रही हो, "तुम बिल्कुल पागल हो; तुम अच्छी तरह जानते हो कि मुझे यह पसंद है।"

उसने अपना दूसरा हाथ ओडेट के गाल पर ऊपर की ओर सरकाया; उसने अपनी निगाहें उस उदास और गंभीर भाव से उस पर टिका दीं, जो पुराने फ्लोरेंटाइन चित्रकारों की स्त्रियों की पहचान है, जिनके चेहरों में उसे उसके चेहरे की झलक मिली थी; उसकी पलकों के किनारों पर चमकती उसकी बड़ी और सुंदर आँखें, जो उन्हीं की तरह बड़ी और बारीकी से बनी थीं, मानो उसके चेहरे से निकलकर दो बड़े आँसुओं की तरह उसके गालों पर बहने वाली हों। उसने अपनी गर्दन झुकाई, जैसे सभी स्त्रियों की गर्दन झुकी हुई दिखाई देती है, चाहे वह मूर्तिपूजा के दृश्य हों या धार्मिक ग्रंथ। और यद्यपि उसका यह हावभाव निःसंदेह स्वाभाविक और सहज था, जिसे वह ऐसे क्षणों के लिए उपयुक्त जानती थी और जिसे वह कभी नहीं भूलती थी, फिर भी उसे अपना चेहरा पीछे रखने के लिए अपनी पूरी

ताकत लगानी पड़ रही थी, मानो कोई अदृश्य शक्ति उसे स्वान की ओर खींच रही हो। और स्वान ही था जिसने, इससे पहले कि वह अपने चेहरे को, मानो अपनी कोशिशों के बावजूद, उसके होठों पर गिरने देती, उसे एक पल के लिए अपने हाथों के बीच थोड़ी दूरी पर रोके रखा। उसका इरादा था कि वह ओडेट के मन को उसके शरीर की गतिविधियों से आगे निकलने का समय दे, उस सपने को पहचानने का समय दे जिसे उसने इतने लंबे समय से संजो रखा था और उसे साकार करने में उसकी सहायता करे, ठीक वैसे ही जैसे एक माँ को उस बच्चे को पुरस्कार दिए जाने पर दर्शक के रूप में आमंत्रित किया जाता है जिसे उसने पाला-पोसा और प्यार किया है। शायद, इसके अलावा, स्वान स्वयं ओडेट के उन चेहरों पर टकटकी लगाए हुए था, जो अभी तक उसके वश में नहीं थे, जिसे उसने चूमा भी नहीं था, जिसे वह अब आखिरी बार देख रहा था, उस व्यापक दृष्टि से जिससे एक यात्री अपने प्रस्थान के दिन उस देश के दृश्य को स्मृति में संजोने का प्रयास करता है जहाँ वह शायद कभी वापस न लौट सके।

लेकिन वह उसके पास जाने में इतना झिझकता था कि उस शाम के बाद, जिसकी शुरुआत उसने उसके कैटलिया (फूलों की कलगी) को संवारने से की थी और जिसका अंत उसके पूरी तरह से आत्मसमर्पण के साथ हुआ, चाहे उसे ठंड लगने के डर से हो, या फिर झूठ बोलने के डर से, या शायद इसलिए कि उसमें इससे ज़्यादा ज़रूरी बात कहने की हिम्मत नहीं थी (जिसे दोहराया जा सकता था, क्योंकि पहली बार में उसे कोई आपत्ति नहीं हुई थी), उसने अगले दिनों भी यही बहाना अपनाया। अगर उसके चोली पर कोई कैटलिया लगी होती, तो वह कहता: "यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है; आज शाम कैटलिया को संवारने की ज़रूरत नहीं है; पिछली रात की तरह उन्हें छेड़ा नहीं गया है; हालाँकि, मुझे लगता है कि यह वाली ठीक से

सीधी नहीं है। क्या मैं देख सकता हूँ कि इसमें बाकी कैटलिया से ज़्यादा खुशबू है?" या फिर, अगर उसके पास कोई कैटलिया नहीं होती, तो वह कहता: "ओह! आज शाम कैटलिया नहीं हैं; तो मेरे पास संवारने के लिए कुछ नहीं है।" इसलिए कुछ समय तक उस प्रक्रिया में कोई बदलाव नहीं आया जो उसने उस पहली शाम को अपनाई थी, जब उसने पहले अपनी उंगलियों से और फिर अपने होठों से उसके गले को छूना शुरू किया था, लेकिन उनके स्पर्श की शुरुआत हमेशा इसी मामूली स्पर्श से होती थी। और बहुत समय बाद, जब उसके गले को छूने की रस्म (या, बल्कि, रस्म का दिखावा) पूरी तरह से अप्रचलित हो गई, तो "गले को छूना" रूपक, एक साधारण क्रिया में बदल गया, जिसका प्रयोग वे शारीरिक अधिकार के कार्य (जिसमें, विरोधाभासी रूप से, अधिकार करने वाला किसी भी चीज़ का मालिक नहीं होता) का उल्लेख करने के लिए बिना उसके मूल अर्थ पर विचार किए करते थे, और यह उनकी शब्दावली में उस लंबे समय से भूली हुई प्रथा की याद दिलाता रहा जिससे यह उत्पन्न हुआ था। और फिर भी संभवतः "प्रेम करना" कहने के इस विशेष तरीके का उतना सटीक अर्थ नहीं था जितना इसके पर्यायवाची शब्दों का था। महिलाओं के बारे में हम चाहे कितने भी निराश क्यों न हों, चाहे हम सबसे भिन्न प्रकार की महिलाओं को भी एक अपरिवर्तनीय और नीरस अनुभव क्यों न मानते हों, जिसका हर विवरण ज्ञात हो और जिसका पहले से वर्णन किया जा सके, फिर भी यह एक ताज़ा और उत्तेजक आनंद बन जाता है यदि संबंधित महिलाएं इतनी कठिन हों - या ऐसा माना जाता हो - कि हमें उनके साथ अपने संबंधों में किसी अनपेक्षित घटना पर अपना हमला आधारित करने के लिए बाध्य होना पड़े, जैसा कि मूल रूप से स्वान के लिए कैटलिया की व्यवस्था थी। वह कांप रहा था क्योंकि उसे उस शाम उम्मीद थी (लेकिन ओडेट, उसने खुद से कहा, अगर वह उसकी चाल से

धोखा खा गई, तो वह उसके इरादे का अनुमान नहीं लगा सकती) कि इस महिला का अधिकार ही उसके लिए उन विशाल और समृद्ध रंगीन पंखुड़ियों से उभर कर आएगा; और जो आनंद वह पहले से ही महसूस कर रहा था, और जिसे ओडेट सहन कर रही थी, उसने सोचा, शायद इसलिए कि वह स्वयं अभी तक इससे अवगत नहीं थी, उसे इसी कारण से ऐसा प्रतीत हुआ—जैसा कि पहले मनुष्य को पृथ्वी के स्वर्ग के फूलों के बीच इसका आनंद लेते समय प्रतीत हुआ होगा—एक ऐसा आनंद जो पहले कभी अस्तित्व में नहीं था, जिसे वह अब सृजित करने का प्रयास कर रहा था, एक ऐसा आनंद—और वह विशेष नाम जो वह इसे देने वाला था, उसकी पहचान को बरकरार रखता था—पूरी तरह से व्यक्तिगत और नया।

एक बार बर्फ पिघल जाने के बाद, हर शाम, जब वह उसे घर ले आता, तो उसे उसके पीछे-पीछे घर में जाना पड़ता; और अक्सर वह अपने ड्रेसिंग गाउन में बाहर आती, उसे उसकी गाड़ी तक छोड़ती, और उसके कोचमैन के सामने उसे चूमती और कहती: "लोगों को क्या फर्क पड़ता है?" और जिन शामों को वह वर्दुरिन के घर नहीं जाता (जो कभी-कभार ही होता था, क्योंकि अब उसे ओडेट से कहीं और मिलने के मौके मिलते थे), जब वह - पहले से कहीं कम - समाज में जाता, तो वह उससे विनती करती कि वह घर लौटते समय उसके पास आ जाए, चाहे उसे कितनी भी देर हो जाए। मौसम बसंत का था, रातें साफ और ठंडी थीं। वह शाम की पार्टी से लौटता, अपनी विक्टोरिया जैकेट पहनता, घुटनों पर एक चटाई बिछाता, और अपने उन दोस्तों से कहता जो उसी समय जा रहे थे और जो उस पर घर जाने का दबाव डाल रहे थे कि वह उनके साथ जाए, कि वह नहीं जा सकता, कि वह उनकी दिशा में नहीं जा रहा है; तब कोचमैन बिना किसी और आदेश के तेज़ गति से गाड़ी चला देता, क्योंकि वह अच्छी तरह

जानता था कि उसे कहाँ जाना है। उसके दोस्त अचंभित रह जाते, और सच कहें तो, स्वान अब पहले जैसा आदमी नहीं रहा था। अब उससे किसी को भी ऐसा पत्र नहीं मिलता था जिसमें वह किसी महिला से मिलवाने की गुहार लगाता हो। उसने महिलाओं पर ध्यान देना बंद कर दिया था और उन जगहों से दूर रहने लगा था जहाँ वे अक्सर मिलती थीं। किसी रेस्तरां में हो या ग्रामीण इलाके में, उसका व्यवहार जानबूझकर और पूरी तरह से उस व्यवहार के विपरीत होता था जिससे कुछ ही दिन पहले उसके दोस्त उसे पहचानते थे, वह व्यवहार जो उसका स्थायी और अपरिवर्तनीय रूप से अपना लगता था। जुनून हममें एक अस्थायी और विशिष्ट चरित्र के रूप में इस हद तक प्रकट होता है कि वह न केवल हमारे सामान्य चरित्र का स्थान ले लेता है बल्कि उन संकेतों को भी मिटा देता है जिनसे अब तक उस चरित्र को पहचाना जा सकता था। दूसरी ओर, एक बात जो अब अपरिवर्तनीय थी, वह यह थी कि स्वान चाहे जहाँ भी शाम बिताता, वह उसके बाद ओडेट से मिलना कभी नहीं भूलता था। उसके और उसके बीच की दूरी ऐसी थी जिसे उसे उसी तरह तय करना ही था जैसे जीवन की तीव्र ढलान पर एक अदम्य गुरुत्वाकर्षण बल से उतरना पड़ता है। सच कहूँ तो, अक्सर जब वह किसी पार्टी में देर तक रुकता था, तो वह इतनी दूर जाने के बजाय तुरंत घर लौटना पसंद करता और उनकी मुलाकात को कल तक टाल देता; लेकिन असामान्य समय पर इतनी असुविधा उठाकर उससे मिलने जाना, और यह अनुमान लगाना कि उसके दोस्त उससे विदा लेते समय आपस में कह रहे होंगे: "वह तो बंधा हुआ है; कहीं न कहीं कोई स्त्री जरूर होगी जो उसे हर समय अपने पास बुलाती होगी," उसे यह एहसास दिलाता था कि वह उन पुरुषों में से एक है जिनका जीवन प्रेम-संबंध से रंगा होता है, और जो अपने आराम और व्यावहारिक हितों का निरंतर त्याग करते हुए एक आध्यात्मिक आकर्षण

पैदा करते हैं। फिर, भले ही उसने जानबूझकर इस बात पर ध्यान न दिया हो, यह निश्चितता कि वह उसका इंतज़ार कर रही थी, कि वह कहीं और नहीं थी, और घर जाने से पहले वह उससे मिल लेगा, उस पीड़ा को कम कर देती है, जो भूली हुई तो थी, लेकिन सुप्त और फिर से जागृत होने के लिए हमेशा तैयार थी, जिसे उसने उस शाम महसूस किया था जब ओडेट उसके आने से पहले वर्दुरिन्स के घर से चली गई थी। उस पीड़ा का अंत इतना सुखद था कि उसे आनंद की अवस्था भी कहा जा सकता है। शायद उसी पीड़ा के क्षण से ही ओडेट का उसके जीवन में महत्व उत्पन्न हुआ। आम तौर पर, दूसरे लोग हमारे लिए इतने महत्वहीन होते हैं कि जब हम उनमें से किसी एक को अपने लिए इतना दुख या सुख देने की शक्ति सौंप देते हैं, तो वह व्यक्ति अचानक किसी दूसरे ब्रह्मांड का लगता है, कविता से घिरा हुआ लगता है, हमारे जीवन को संवेदनाओं से भरा एक विशाल विस्तार बना देता है, जिस पर वह व्यक्ति और हम हमेशा कमोबेश संपर्क में रहते हैं। स्वान चिंता से घिरे हुए स्वयं से यह प्रश्न नहीं पूछ सकते थे कि आने वाले वर्षों में ओडेट उनके लिए क्या मायने रखेगी। कभी-कभी, वसंत ऋतु की उन सुहावनी और ठंडी रातों में जब वे अपने विक्टोरिया महल से ऊपर देखते और सुनसान सड़कों पर पड़ती चकाचौंध भरी चाँदनी को अपनी आँखों के बीच पाते, तो उन्हें उस दूसरे चेहरे की याद आती, जो चाँद की तरह चमकता और हल्का गुलाबी था, जो एक दिन उनके मन के क्षितिज पर उदय हुआ था और तब से दुनिया पर वह रहस्यमयी प्रकाश बिखेर रहा था जिसमें वे उसे नहाया हुआ देखते थे। यदि वे उस समय के बाद पहुँचते जब ओडेट अपने नौकरों को सोने भेज देतीं, तो अपने छोटे से बगीचे के द्वार पर घंटी बजाने से पहले, वे पहले दूसरी गली में जाते, जिसके ऊपर, ज़मीन के स्तर पर, आस-पास के घरों की खिड़कियों (सभी बिल्कुल एक जैसी, लेकिन अंधेरी) के बीच, उनके कमरे

की अकेली रोशन खिड़की चमकती थी। वे खिड़की के शीशे पर दस्तक देते, और वह संकेत सुनकर जवाब देतीं, और दौड़कर द्वार पर उनसे मिलने आतीं। उसे पियानो पर उसकी कुछ पसंदीदा रचनाएँ खुली पड़ी मिलतीं, जैसे वाल्से डेस रोज़ेज़, टैग्लियाफिको का पौव्रे फ़ू (जिसे उसकी वसीयत के अनुसार उसके अंतिम संस्कार में बजाया जाना था); लेकिन वह उससे विंटेइल के सोनाटा का वह छोटा सा अंश माँगता। यह सच था कि ओडेट बहुत खराब बजाती थी, लेकिन अक्सर किसी पसंदीदा धुन की सबसे अच्छी छवि हमारे मन में वही रह जाती है जो एक बेसुरी पियानो पर अनाड़ी उंगलियों द्वारा बजाए गए बेमेल सुरों से उत्पन्न होती है। स्वान के मन में वह छोटा सा अंश अब भी ओडेट के प्रति उसके प्रेम से जुड़ा हुआ था। वह स्पष्ट रूप से महसूस करता था कि यह प्रेम कुछ ऐसा था जिसका कोई बाहरी संकेत नहीं था, जिसका अर्थ उसके अलावा कोई और सिद्ध नहीं कर सकता था; उसे यह भी एहसास था कि ओडेट के गुण ऐसे नहीं थे कि उसके साथ बिताए गए घंटों को इतना महत्व देना उचित हो। और अक्सर, जब तर्क का कठोर शासन निर्विवाद था, तो वह इस काल्पनिक आनंद के लिए अपने बौद्धिक और सामाजिक हितों का त्याग करना आसानी से छोड़ देता। लेकिन वह छोटा सा वाक्य, जैसे ही उसके कानों में पड़ा, उसमें उसे समाहित करने के लिए आवश्यक स्थान बनाने की शक्ति थी; स्वान की आत्मा का स्वरूप बदल गया; आनंद के एक ऐसे रूप के लिए गुंजाइश बन गई जो ओडेट के प्रति उसके प्रेम की तरह किसी बाहरी वस्तु से मेल नहीं खाता था, और फिर भी, उस प्रेम के आनंद की तरह, विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत नहीं था, बल्कि उसके लिए अन्य ठोस चीजों से कहीं अधिक एक वस्तुनिष्ठ वास्तविकता का रूप धारण कर लिया। इस अनछुए आकर्षण की प्यास को वह छोटा सा वाक्य उसमें फिर से जगा देता, लेकिन उसे शांत करने के लिए कोई निश्चित संतुष्टि

नहीं देता। परिणामस्वरूप, स्वान की आत्मा के वे हिस्से जिनमें उस छोटे से वाक्य ने भौतिक हितों की सारी परवाह, उन मानवीय विचारों को मिटा दिया था जो सभी मनुष्यों को समान रूप से प्रभावित करते हैं, उसके द्वारा खाली छोड़ दिए गए, कोरे पन्ने जिन पर वह ओडेट का नाम लिखने के लिए स्वतंत्र था। इसके अलावा, जहाँ ओडेट का स्नेह थोड़ा अचानक और निराशाजनक लग सकता था, वहीं वह छोटा सा वाक्यांश उसे पूरा करता, उसमें अपना रहस्यमय सार समाहित कर लेता। स्वान के चेहरे को देखते हुए, जब वह उस वाक्यांश को सुन रहा था, ऐसा लग रहा था मानो वह कोई ऐसी दवा ले रहा हो जिससे उसे गहरी साँस लेने में आसानी हो रही हो। और संगीत से मिलने वाला वह आनंद, जो कुछ ही क्षणों में उसके भीतर एक तीव्र लालसा उत्पन्न करने वाला था, वास्तव में ऐसे क्षणों में उस आनंद के समान था जो उसे इत्रों के साथ प्रयोग करने से मिलता, उस संसार से संपर्क स्थापित करने से मिलता जिसके लिए हम मनुष्य नहीं बने हैं, जो निराकार प्रतीत होता है क्योंकि हमारी आँखें उसे देख नहीं सकतीं, महत्वहीन प्रतीत होता है क्योंकि वह हमारी बुद्धि से परे है, जिसे हम केवल एक इंद्रिय के माध्यम से ही प्राप्त कर सकते हैं। स्वान के लिए गहरी शांति, एक रहस्यमय ताजगी—उसके लिए जिसकी आँखें, यद्यपि चित्रकला की सूक्ष्म व्याख्याकार थीं, जिसका मन, यद्यपि शिष्टाचार का तीक्ष्ण अवलोकन करने वाला था, फिर भी उसके जीवन की बंजरता की अमिट छाप हमेशा के लिए संजोए रही—खुद को मानवता से परे एक प्राणी में परिवर्तित महसूस करना, अंधा, अपनी तर्क शक्ति से वंचित, लगभग एक काल्पनिक यूनिकॉर्न, एक काइमेरा जैसा प्राणी जो केवल अपने दो कानों से ही दुनिया को जानता था। और फिर भी, जब उसने उस छोटे से वाक्य में एक ऐसा अर्थ खोजने की कोशिश की, जिस तक उसकी बुद्धि नहीं पहुँच सकती थी, तो नशे के एक अजीब उन्माद के साथ

उसे अपनी आत्मा के भीतरी हिस्से से तर्क के पूरे कवच को उतार फेंकना पड़ा, और उसे बिना किसी सहारे के, छानने वाले पात्र से होते हुए, ध्वनि के अंधेरे फिल्टर में जाने देना पड़ा। उसने यह हिसाब लगाना शुरू किया कि यह कितना दर्दनाक था, शायद यह भी कि उस वाक्य की मिठास के नीचे कितना गुप्त और अतृप्त दुख छिपा था; और फिर भी उसे इससे कोई पीड़ा नहीं हुई। क्या फर्क पड़ता है कि वाक्य यह दोहराता है कि प्रेम नाजुक और क्षणभंगुर है, जब उसका प्रेम इतना मजबूत था! वह उस उदासी के साथ खेलता था जो उस वाक्य से फैलती थी, वह महसूस करता था कि वह उस पर छा रही है, लेकिन एक दुलार की तरह जो उसकी अपनी खुशी की भावना को और गहरा और मधुर बना देती थी। वह ओडेट से उस वाक्य को बार-बार दस-बीस बार दोहराने को कहता, और ज़ोर देता कि जब तक वह उसे दोहराती रहे, वह उसे चूमती रहे। हर चुंबन दूसरे चुंबन को जन्म देता है। आह, प्रेम के उन शुरुआती दिनों में चुंबन कितनी सहजता से जीवंत हो उठते हैं। कितनी गहराई से, उनकी बहुतायत में, वे एक-दूसरे से चिपके रहते हैं; यहाँ तक कि प्रेमियों के लिए एक घंटे में हुए चुंबनों की गिनती करना उतना ही मुश्किल हो जाता है जितना मई के महीने में किसी मैदान में खिले फूलों की गिनती करना। फिर वह रुकने का नाटक करती और कहती: "जब आप मुझे पकड़े रहेंगे तो आप मुझसे कैसे उम्मीद करते हैं कि मैं दोहराऊँ? मैं एक साथ सब कुछ नहीं कर सकती। तय कर लीजिए कि आप क्या चाहते हैं; क्या मैं वह वाक्य दोहराऊँ या आप मेरे साथ दोहराएँ?" तब वह चिढ़ जाता, और वह ज़ोर से हँस पड़ती, जो उसके होठों से निकलते ही चुंबनों की बौछार बनकर उस पर बरस पड़ती। या फिर वह उसे रूठकर देखती, और वह एक बार फिर बॉटिकेली की 'मूसा का जीवन' में चित्रित होने योग्य चेहरा देखता; वह उसे वहाँ चित्रित करता, ओडेट की गर्दन को आवश्यक झुकाव

देता; और जब उसने पंद्रहवीं शताब्दी में सिस्टीन संग्रहालय की दीवार पर डिस्टेंपर रंगों से उसका चित्र पूरा कर लिया, तो यह विचार कि वह अभी भी उसी क्षण उसके साथ कमरे में पियानो के पास है, चूमे जाने और जीते जाने के लिए तैयार है, उसके भौतिक अस्तित्व का, उसके जीवित होने का विचार, उस पर इतने तीव्र नशे की तरह छा जाता कि आँखें फटी रह जातीं और जबड़े ऐसे खुल जाते मानो उसे निगलने को तैयार हों, वह बॉटिकेली की इस युवती पर टूट पड़ता और उसके गालों को चूमता और काटता। और फिर, घर से निकलते ही, वह उसे एक बार फिर चूमने के लिए वापस लौटा, क्योंकि वह अपनी विक्टोरिया कार में घर जाते समय उसकी सुगंध या उसके चेहरे की कुछ झलक अपने साथ स्मृति में ले जाना भूल गया था। वह ओडेट के नाम को धन्यवाद दे रहा था जिसने उसे ये दैनिक मुलाकातें करने की अनुमति दी थी, जो उसे कोई बड़ी खुशी तो नहीं दे सकती थीं, लेकिन फिर भी, उसे ईर्ष्या के बुखार से बचाकर—उस शाम को उसके भीतर प्रकट हुए हृदय रोग के फिर से उभरने की हर संभावना को दूर करके, जब वह उसे वर्दुरिन्स के घर पर नहीं पा सका था —शायद उसे उन संकटों की पुनरावृत्ति के बिना, जिनमें से पहला इतना कष्टदायक था कि वह आखिरी भी होना चाहिए, अपने जीवन के इन अजीब घंटों की श्रृंखला के अंत तक पहुँचने में मदद कर सकती थीं, लगभग जादुई घंटे, ठीक उसी तरह जैसे ये अन्य, बाद के घंटे, जिनमें वह चाँदनी में एक सुनसान पेरिस से गुजर रहा था: घर जाते समय उसने देखा कि उपग्रह ने अब अपनी स्थिति, उसकी अपनी स्थिति के सापेक्ष, बदल ली थी, और क्षितिज को लगभग छूते हुए; यह महसूस करते हुए कि उसका प्रेम भी प्रकृति के इन अटल नियमों का पालन करता है, उसने स्वयं से पूछा कि क्या यह दौर, जिसमें वह प्रवेश कर चुका है, बहुत लंबा चलेगा, क्या जल्द ही उसकी दृष्टि से वह प्रिय चेहरा दूर और धुंधली स्थिति

में दिखाई देना बंद कर देगा, और क्या वह अपना आकर्षण खोकर उस पर चमक बिखेरना बंद कर देगा। क्योंकि स्वान को प्रेम में पड़ने के बाद से ही चीजों में फिर से वही आकर्षण दिखाई देने लगा था जो उसे किशोरावस्था में, जब वह खुद को एक कलाकार समझता था, तब दिखाई देता था; फर्क सिर्फ इतना था कि अब उनमें जो आकर्षण था, वह केवल ओडेट द्वारा ही प्रदान किया गया था। वह अपने भीतर अपने बचपन की प्रेरणाओं को फिर से जागृत होते हुए महसूस कर सकता था, जो उसके बाद के जीवन की फिजूलखर्चियों में खो गई थीं, लेकिन अब उन सभी में एक विशिष्ट व्यक्तित्व की झलक, एक छाप थी; और उन लंबे घंटों के दौरान, जिनमें अब उन्हें घर पर अकेले, अपने स्वस्थ हो रहे मन के साथ समय बिताने में एक सूक्ष्म आनंद मिलता था, वे धीरे-धीरे फिर से पहले जैसे हो गए, लेकिन एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो किसी और के गुलाम था।

वह उससे केवल शाम को ही मिलने जाता था, और उसे इस बात का ज़रा भी ज्ञान नहीं था कि वह दिन में अपना समय कैसे बिताती थी, ठीक वैसे ही जैसे उसे उसके अतीत के बारे में कुछ भी पता नहीं था; वास्तव में, उसे वह छोटा सा प्रारंभिक सुराग भी नहीं मिला था, जो हमें अज्ञात की कल्पना करने की अनुमति देकर भविष्य के बारे में जानने की इच्छा को जगाता है। इसलिए उसने कभी खुद से यह नहीं पूछा कि वह क्या कर रही होगी, या उसका जीवन कैसा रहा होगा। वह बस कभी-कभी इस बात पर मुस्कुरा देता था कि कुछ साल पहले, जब वह उसे जानता भी नहीं था, किसी ने उससे एक ऐसी महिला के बारे में बात की थी, जो अगर उसे ठीक से याद है, तो निश्चित रूप से ओडेट ही रही होगी, एक 'वेश्या' के रूप में, एक 'रखी हुई' महिला के रूप में, उन महिलाओं में से एक जिनके बारे में वह (उनके साथ बहुत कम समय बिताने के बावजूद) उन

सभी विकृत विशेषताओं को मानता था, जो कई वर्षों से कुछ उपन्यासकारों की कल्पना द्वारा उन्हें दी गई थीं। वह मन ही मन कहता कि किसी व्यक्ति का निष्पक्ष मूल्यांकन करने के लिए अक्सर दुनिया द्वारा बनाई गई उसकी प्रतिष्ठा का सटीक प्रतिरूप ही पर्याप्त होता है। ओडेट के चरित्र से तुलना करते हुए, जो इतनी अच्छी, इतनी सरल, आदर्शों की खोज में इतनी उत्साही और लगभग झूठ बोलने में इतनी असमर्थ थी कि एक बार जब उसने उससे अकेले में भोजन करने के लिए श्रीमती वर्दुरिन को यह पत्र लिखने का अनुरोध किया कि वह अस्वस्थ है, तो अगले दिन उसने उसे श्रीमती वर्दुरिन के सामने देखा। श्रीमती वर्दुरिन ने उससे पूछा कि क्या वह ठीक हो गई है, तो वह शरमा गई, हकलाने लगी और अपने हर हावभाव से यह प्रकट कर रही थी कि झूठ बोलना उसके लिए कितना दर्दनाक, कितना कष्टदायक था; और अपने उत्तर में उसने एक काल्पनिक बीमारी के मनगढ़ंत विवरणों को बढ़ा-चढ़ाकर बताया, मानो अपनी याचना भरी नज़र और दुखी लहजे से अपने शब्दों की स्पष्ट असत्यता के लिए क्षमा मांग रही हो।

हालांकि, कभी-कभार ही ऐसा होता था, वह दोपहर में उससे मिलने आती, ताकि उसके चिंतन या वर्मीर पर लिखे निबंध में खलल डाल सके, जिस पर वह हाल ही में फिर से लौट आया था। उसका नौकर आकर कहता कि श्रीमती डी क्रेसी छोटे से ड्राइंग रूम में हैं। वह उसे ढूंढने जाता, और जब वह दरवाजा खोलता, तो स्वान को देखते ही ओडेट के शरमाते हुए चेहरे पर एक मोहक मुस्कान दिखाई देती—उसके होठों की बनावट, उसकी आँखों की चमक, उसके गालों का आकार सब बदल जाता—एक ऐसी मुस्कान जो उसे पूरी तरह से मोहित कर लेती। जब वह अकेला रह जाता, तो उसे फिर से वही मुस्कान दिखाई देती, और साथ ही पिछले दिन वाली मुस्कान भी, एक और मुस्कान जिससे उसने किसी और समय

उसका अभिवादन किया था, और वह मुस्कान जो उस रात गाड़ी में उसका जवाब थी, जब उसने उससे पूछा था कि क्या उसे उसके कैटलियास को फिर से व्यवस्थित करने पर कोई आपत्ति है; और ओडेट का जीवन, बाकी सभी समयों में, क्योंकि वह उसके बारे में कुछ भी नहीं जानता था, उसे एक तटस्थ और रंगहीन पृष्ठभूमि पर दिखाई देता था, जैसे वाटो के रेखाचित्रों की वे शीटें जिन पर, इधर-उधर, हर कोने में और हर दिशा में, तीन रंगों से बफ़ पेपर पर उकेरी गई अनगिनत मुस्कानें दिखाई देती हैं। लेकिन, कभी-कभी, उस अस्तित्व की एक झलक को रोशन करते हुए, जिसे स्वान अब भी पूरी तरह से खाली देखता था, भले ही उसका मन उसे आश्वस्त करता था कि ऐसा नहीं है, क्योंकि वह कल्पना करने में असमर्थ था कि उसमें क्या भरा हो सकता है, कोई मित्र जो उन दोनों को जानता था, और जिसे संदेह था कि वे प्यार में हैं, जिसने ओडेट के बारे में जरा भी महत्वपूर्ण बात बताने की हिम्मत नहीं की थी, ओडेट के उस रूप का वर्णन करता था, जैसा उसने उसे उसी सुबह देखा था, रू अब्बाटुची पर पैदल जाते हुए, स्कंक की किनारी वाली एक केप पहने, रेम्ब्रांट की टोपी लगाए और सीने में वायलेट का गुच्छा लिए हुए। इस सरल रूपरेखा ने स्वान को पूरी तरह से भ्रमित कर दिया, क्योंकि इससे उसे अचानक यह अहसास हुआ कि ओडेट का एक अस्तित्व था जो पूरी तरह से उसके अधीन नहीं था; वह यह जानने के लिए बेचैन था कि वह इस पोशाक में किसे मोहित करने की कोशिश कर रही थी, जिसमें उसने उसे पहले कभी नहीं देखा था; उसने मन ही मन ठान लिया कि वह उससे यह जरूर पूछेगा कि उस क्षण वह कहाँ जा रही थी, मानो उसकी प्रेमिका के उस रंगहीन जीवन में—जो लगभग अस्तित्वहीन था, क्योंकि वह उस समय उसके लिए अदृश्य थी—उसके प्रति निर्देशित उन सभी मुस्कानों के अलावा केवल एक ही घटना घटी हो; अर्थात्, रेम्ब्रांट की टोपी पहने, सीने

में वायलेट का गुच्छा लिए हुए उसका बाहर घूमना।
जब उसने वाल्से डेस रोज़ेज़ के बजाय विंटेइल का छोटा सा वाक्यांश बजाने को कहा, उसके अलावा स्वान ने उसे अपनी पसंद की रचनाएँ बजाने के लिए प्रेरित करने का कोई प्रयास नहीं किया, न ही साहित्य और संगीत दोनों में उसकी रुचि की अनेक त्रुटियों को सुधारने की कोशिश की। वह भली-भांति जानता था कि वह बुद्धिमान नहीं है। जब उसने कहा कि वह महान कवियों के बारे में सुनना कितना पसंद करेगी, तो उसने कल्पना की थी कि उसे अचानक विस्काउंट डी बोरेली की शैली में लिखे गए, उससे भी कहीं अधिक भावपूर्ण, रोमांटिक और वीरगाथाओं से भरे छंदों के पूरे पन्ने पढ़ने को मिल जाएँगे। जहाँ तक डेल्फ़्ट के वर्मीर की बात है, उसने पूछा कि क्या उसे किसी स्त्री ने पीड़ा दी थी, क्या किसी स्त्री ने उसे प्रेरित किया था, और जब स्वान ने उसे बताया कि यह बात कोई नहीं जानता, तो उस चित्रकार में उसकी सारी रुचि समाप्त हो गई। वह अक्सर कहती थीं: "मुझे यकीन है, कविता; खैर, अगर सब कुछ सच होता, अगर कवि सचमुच अपनी कही बातों पर विश्वास करते, तो कविता जैसी कोई और कविता नहीं होती। लेकिन अक्सर आप पाएंगे कि उन लोगों जैसा नीच और चालाक कोई नहीं होता। मुझे कविता के बारे में कुछ जानकारी है। एक बार मेरी एक दोस्त एक कवि से प्यार करती थी। अपनी कविताओं में वह सिर्फ प्यार, स्वर्ग और तारों की बात करता था। ओह! वह पूरी तरह से उसके जाल में फंस गई थी! कविता खत्म होने से पहले ही उसने उससे तीन लाख फ्रैंक से ज़्यादा ले लिए थे।" फिर, अगर स्वान उसे कलात्मक सुंदरता के बारे में बताने की कोशिश करते, कि कविता या चित्रकला की सराहना कैसे करनी चाहिए, तो एक-दो मिनट बाद वह सुनना बंद कर देती और कहती: "हाँ... मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा होगा।" और स्वान को लगा कि उसकी निराशा इतनी गहरी है

कि उसने उससे झूठ बोलना बेहतर समझा, उसे यकीन दिलाया कि उसने जो कहा वह कुछ भी नहीं था, उसने सिर्फ ऊपरी तौर पर बात की थी, उसके पास पूरी बात समझाने का समय नहीं था, और इसमें इससे कहीं ज़्यादा गहराई है। फिर वह फुर्ती से टोकते हुए कहती, "इसमें और भी कुछ है? क्या?...मुझे बताओ!", लेकिन वह उसे कुछ नहीं बताता, क्योंकि उसे एहसास था कि यह उसे कितना तुच्छ लगेगा, और उसकी अपेक्षाओं से कितना अलग, कम सनसनीखेज और कम मार्मिक लगेगा; उसे यह भी डर था कि कहीं कला के मामले में निराश होकर वह प्रेम के बड़े मामले में भी निराश न हो जाए।

परिणामस्वरूप, ओडेट को स्वान बौद्धिक रूप से अपनी अपेक्षा से कमतर लगा। "तुम हमेशा इतने शांत रहते हो; मैं तुम्हें समझ नहीं पाती।" वह पैसे के प्रति उसकी उदासीनता, सबके प्रति उसके समान शिष्टाचार और उसके मन की कोमलता पर आश्चर्यचकित होती जा रही थी। और वास्तव में, स्वान से भी महान व्यक्ति, किसी वैज्ञानिक या कलाकार के साथ अक्सर ऐसा होता है, जब उसके आसपास के लोग उसे पूरी तरह से गलत नहीं समझते, तो उनके मन में उसकी बुद्धि की श्रेष्ठता का जो भाव उत्पन्न होता है, वह उसके विचारों की प्रशंसा से नहीं—क्योंकि वे विचार तो उनकी समझ से परे होते हैं—बल्कि उसके अच्छे गुणों के प्रति उनके सम्मान से उत्पन्न होता है। स्वान की सामाजिक स्थिति के प्रति ओडेट के मन में सम्मान का भाव भी था, हालाँकि वह नहीं चाहती थी कि वह उसके लिए निमंत्रण प्राप्त करने का प्रयास करे। शायद उसे लगता था कि ऐसे प्रयास विफल ही होंगे; शायद, वास्तव में, उसे डर था कि कहीं अपने मित्रों से उसके बारे में बात करने मात्र से ही वह कुछ अप्रिय बातें उजागर न कर दे। असल बात तो यह थी कि उसने उससे किए वादे पर कायम रहने को कहा था कि वह कभी उसका नाम नहीं लेगा। उसने उसे बताया

था कि समाज में न जाने की उसकी वजह एक झगड़ा था जो बहुत पहले एक दूसरी लड़की से हुआ था, जिसने उसके बारे में बुरी-बुरी बातें कहकर बदला लिया था। "लेकिन," स्वान ने आपत्ति जताई, "यकीनन, सब लोग तुम्हारी दोस्त को नहीं जानते।" "हाँ, क्या तुम नहीं देखते, यह तेल के एक धब्बे की तरह है; लोग कितने बुरे होते हैं।" स्वान इस बात को समझ नहीं पा रहा था; दूसरी ओर, वह जानता था कि "लोग कितने बुरे होते हैं" और "बदनामी की बात तेल के एक धब्बे की तरह फैलती है" जैसे सामान्यीकरण आमतौर पर सच माने जाते हैं; इसलिए, ऐसे मामले जरूर होंगे जिन पर ये शब्द अक्षरशः लागू होते हैं। क्या ओडेट का मामला भी ऐसा ही हो सकता है? उसने इस सवाल से खुद को थोड़ा परेशान किया, हालांकि ज्यादा देर तक नहीं, क्योंकि वह भी उसी मानसिक तनाव से ग्रस्त था जो उसके पिता को किसी भी मुश्किल समस्या का सामना करते समय परेशान करता था। बहरहाल, समाज की वह दुनिया जिसने ओडेट के लिए इतने भयानक सच छुपा रखे थे, शायद उसमें प्रवेश करने की कोई विशेष इच्छा पैदा नहीं करती थी, क्योंकि वह उस दुनिया से बहुत दूर थी जिसे वह पहले से जानती थी, और उसके बारे में कोई स्पष्ट धारणा बनाना उसके लिए संभव नहीं था। साथ ही, कुछ मामलों में उसने अपनी सादगी बरकरार रखी थी (उदाहरण के लिए, उसने एक छोटी दर्जी से दोस्ती बनाए रखी थी, जो अब व्यवसाय से सेवानिवृत्त हो चुकी थी, जिसकी ऊँची, अंधेरी और दुर्गंधयुक्त सीढ़ियों पर वह लगभग हर दिन चढ़ती थी), फिर भी वह फैशन में रहने के लिए तरसती थी, हालाँकि फैशन के बारे में उसकी धारणा फैशनपरस्त लोगों की धारणा से पूरी तरह अलग थी। फैशनपरस्त लोगों के लिए, फैशन कुछ गिने-चुने नेताओं से उत्पन्न होता है, जो इसे अपने मित्रों और उनके मित्रों के विस्तृत दायरे में फैलाते हैं—उनकी निकटता या दूरी के अनुसार इसकी तीव्रता कम या

ज्यादा होती है—जिनके नाम एक तरह से सारणीबद्ध सूची बनाते हैं। समाज के लोग इस सूचकांक को कंठस्थ जानते हैं; वे ऐसे मामलों में विद्वतापूर्ण ज्ञान से संपन्न होते हैं, जिससे उन्होंने एक विशेष प्रकार का स्वाद और शिष्टाचार विकसित कर लिया होता है, जो इतना सहज होता है कि उदाहरण के लिए, स्वान को अपने विश्व ज्ञान का सहारा लिए बिना, यदि वह किसी समाचार पत्र में भोज में उपस्थित लोगों के नाम पढ़ ले, तो वह तुरंत बता सकता है कि भोज कितना फैशनेबल था, ठीक वैसे ही जैसे कोई साहित्यकार मात्र एक वाक्य पढ़कर उसके लेखक की साहित्यिक योग्यता का सटीक अनुमान लगा सकता है। लेकिन ओडेट उन लोगों में से एक थी (एक अत्यंत विशाल वर्ग, चाहे फैशनेबल दुनिया कुछ भी सोचे, और समाज के हर वर्ग में पाया जाता है) जो इस ज्ञान को साझा नहीं करतीं, बल्कि फैशन को कुछ और ही मानती हैं, जो उनके संबंधित सामाजिक दायरे के अनुसार अलग-अलग रूप धारण करता है, लेकिन इसकी एक विशेष विशेषता है—जो ओडेट के सपनों के फैशन और श्रीमती कॉटार्ड के सम्मान के फैशन दोनों में समान है—कि यह सभी के लिए सुलभ है। दूसरी तरह का फैशन, यानी 'फैशनपरस्त लोगों' का फैशन, यह मानना पड़ेगा कि सुलभ भी है; लेकिन इसमें अपरिहार्य देरी होती है। ओडेट किसी के बारे में कहती थी: "वह कभी किसी ऐसी जगह नहीं जाता जो वाकई शानदार न हो।"

और अगर स्वान उससे पूछता कि उसका क्या मतलब है, तो वह थोड़ी सी नफ़रत के साथ जवाब देती, "शानदार जगहें! अरे बाप रे, ज़रा सोचो, तुम्हारी उम्र में तुम्हें यह बताना पड़े कि पेरिस में शानदार जगहें कौन सी हैं! तुम मुझसे क्या उम्मीद करते हो कि मैं कहूँ? खैर, रविवार की सुबह एवेन्यू डे ल'इम्पेरेट्रीस है, और शाम पाँच बजे झील के चारों ओर, और गुरुवार को ईडन-थिएटर, और शुक्रवार को हिप्पोड्रोम; फिर वहाँ बॉल डांस

भी होते हैं..."
"कौन सी गेंदें?"
अरे, पेरिस में लोग कैसी-कैसी पार्टियां देते हैं; मेरा मतलब है, बड़े-बड़े रईस लोग। रुको, हर्बिंगर, तुम समझ रहे हो ना मैं किसकी बात कर रही हूँ, वो आदमी जो किसी दलाल के दफ्तर में काम करता है; हाँ, ज़रूर, तुम उसे जानते होगे, वो पेरिस के सबसे मशहूर आदमियों में से एक है, वो लंबा-चौड़ा सुनहरे बालों वाला लड़का जो बड़े-बड़े शान से कपड़े पहनता है; उसकी बटनहोल में हमेशा एक फूल लगा रहता है और वो पीछे से तह किया हुआ हल्के रंग का ओवरकोट पहनता है; वो अपनी पुरानी छवि के साथ घूमता है, उसे हर पहली रात की पार्टी में ले जाता है। वाह! उसने परसों एक पार्टी दी थी, और पेरिस के सारे रईस लोग वहाँ थे। मुझे जाने का बहुत मन था! लेकिन वहाँ जाने के लिए निमंत्रण पत्र दिखाना पड़ता था, और मुझे कहीं से भी नहीं मिला। खैर, अब तो मुझे खुशी है कि मैं नहीं गई; भीड़ में दबकर मर जाती और कुछ भी नहीं देख पाती। फिर भी, बस इतना कह पाना कि मैं हर्बिंगर की पार्टी में गई थी। तुम जानते हो ना मैं कितनी घमंडी हूँ! खैर, तुम यकीन मानो कि आधा जो लोग कहते हैं कि वे वहां थे, वे कहानियां सुना रहे हैं... लेकिन मुझे आश्चर्य है कि आप वहां नहीं थे, आप जैसे एक नियमित 'शानदार' व्यक्ति।
हालाँकि, स्वान ने फैशन के बारे में अपनी इस धारणा को बदलने का कोई प्रयास नहीं किया; यह महसूस करते हुए कि उनकी अपनी धारणा भी सत्य के निकट नहीं थी, बल्कि उतनी ही बेतुकी और महत्वहीन थी, उन्हें अपनी प्रेमिका को यह धारणा बताने में कोई लाभ नहीं दिखा। परिणामस्वरूप, कुछ महीनों बाद, उसने उन लोगों में कोई दिलचस्पी लेना बंद कर दिया जिनके घरों में वह जाता था, सिवाय तब जब वे उसके लिए घुड़दौड़ के मैदान या थिएटर के पहले शो के टिकट प्राप्त करने का साधन

बनते थे। उसे उम्मीद थी कि वह ऐसे लाभकारी परिचितों को बनाए रखेगा, लेकिन जिस दिन उसने मार्क्विज़ डी विलेपारिसिस को सड़क पर काले सर्ज की पोशाक और डोरियों वाली टोपी पहने देखा था, तब से वह उन्हें कम आकर्षक समझने लगी थी।

"लेकिन वो तो किसी चर्च खोलने वाली महिला जैसी दिखती है, किसी बूढ़ी सफाईकर्मी जैसी, डार्लिंग! वाह! मैं तो मार्क्विज़ नहीं हूँ, लेकिन मुझे पेरिस में इस तरह सज-धज कर घूमने के लिए आपको बहुत सारा पैसा देना पड़ेगा!"

और न ही वह स्वान के क्वाई डी'ऑरलियन्स स्थित अपने घर में रहना जारी रखने की बात को समझ पा रही थी, जिसे वह, हालांकि उसे यह बताने की हिम्मत नहीं करती थी, लेकिन उसके लिए अनुपयुक्त मानती थी।

यह सच था कि वह 'पुरातन वस्तुओं' की शौकीन होने का दावा करती थी और जब वह यह स्वीकार करती थी कि उसे पूरा दिन पुरानी चीज़ों की दुकानों में 'खोजबीन' करने, 'पुरानी चीज़ों' और 'सही समय' की वस्तुओं की तलाश में बिताना कितना पसंद है, तो वह बड़े उत्साह और ज्ञान का भाव दिखाती थी। हालाँकि यह उसके लिए सम्मान की बात थी, जिससे वह हठपूर्वक चिपकी रहती थी, मानो किसी पुरानी पारिवारिक परंपरा का पालन कर रही हो, कि वह कभी किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देगी, कभी दिन के समय उसने क्या किया, इसका कोई हिसाब नहीं देगी, फिर भी उसने एक बार स्वान से एक दोस्त के बारे में बात की, जिसके घर उसे आमंत्रित किया गया था, और उसने पाया कि वहाँ सब कुछ 'उस समय का' था। स्वान उससे यह नहीं जान सका कि वह किस 'समय' की थी। काफी सोचने के बाद उसने जवाब दिया कि वह 'मध्ययुगीन' थी; जिसका अर्थ था कि दीवारें लकड़ी के पैनल से बनी थीं। कुछ समय बाद उसने

फिर से अपनी सहेली के बारे में उससे बात की और हिचकिचाते हुए, लेकिन आत्मविश्वास से भरे लहजे में, जैसा कि कोई उस व्यक्ति के बारे में बात करते समय करता है जिससे वह पिछली रात खाने पर मिला हो, जिसके बारे में उसने तब तक कभी नहीं सुना हो, लेकिन जिसे उसके मेज़बान इतना प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण मानते हों कि उम्मीद की जाती है कि सुनने वाला अच्छी तरह समझ जाएगा कि किसका जिक्र हो रहा है और उससे प्रभावित होगा: "उसका भोजन कक्ष... अठारहवीं सदी का है!" संयोग से, उसने उसे भद्दा, बिल्कुल खाली, मानो घर अभी अधूरा हो, समझा था; उसमें औरतें डरावनी लगती थीं, और यह कभी फैशन में नहीं आएगा। उसने तीसरी बार इसका जिक्र तब किया जब उसने स्वान को उस व्यक्ति का नाम और पता वाला कार्ड दिखाया जिसने भोजन कक्ष डिजाइन किया था, और जिसे वह पर्याप्त पैसे होने पर बुलवाना चाहती थी, यह देखने के लिए कि क्या वह उसके लिए भी ऐसा ही कुछ डिजाइन कर सकता है; बेशक, वैसा घर नहीं, बल्कि वैसा घर जिसका वो सपना देखती थी, एक ऐसा घर जो दुर्भाग्यवश उसके छोटे से घर में समा नहीं सकता था, जिसमें ऊँची-ऊँची अलमारियाँ, पुनर्जागरण काल का फर्नीचर और ब्लोइस के शैतो जैसी चिमनियाँ हों। इसी मौके पर उसने स्वान को बताया कि क्वाई डी'ऑरलियन्स स्थित उसके घर के बारे में उसकी असली राय क्या है; स्वान ने यह आलोचना की कि उसकी सहेली ने लुई सोलहवीं शैली में नहीं, बल्कि 'नकली-पुरातन' शैली में घर बनवाया है। स्वान ने आगे कहा, हालाँकि यह शैली वैसी नहीं है, फिर भी इसे आकर्षक बनाया जा सकता है।

"तुम उसे अपनी तरह टूटी-फूटी कुर्सियों और घिसे-पिटे कालीनों के बीच रहने नहीं दोगे!" उसने हैरानी से कहा, मध्यमवर्गीय गृहिणी की सहज प्रतिष्ठा 'हल्की-फुल्की महिला' के अर्जित शौकियापन के माध्यम से

अनायास ही सतह पर उभर आई।

जो लोग चीजों को इकट्ठा करने का आनंद लेते थे, जो कविता की प्रशंसा करते थे, लाभ-हानि के घिनौने हिसाब-किताब से घृणा करते थे और सम्मान और प्रेम के आदर्शों को संजोते थे, उन्हें वह एक अलग ही श्रेणी में रखती थीं, बाकी मानवता से श्रेष्ठ। इन रुचियों का होना वास्तव में आवश्यक नहीं था, बशर्ते कोई इनके बारे में खुलकर बात करे; जब कोई व्यक्ति रात के खाने पर उनसे कहता कि उन्हें पुरानी फर्नीचर की दुकानों में घूमना और अपने हाथों को धूल से सना लेना पसंद है, कि इस व्यावसायिक युग में उनकी कभी सराहना नहीं होगी, क्योंकि उन्हें उन चीजों की परवाह नहीं है जिनमें इस युग की रुचि है, और कि वे पूरी तरह से एक अलग पीढ़ी के हैं, तो वह घर आकर कहतीं: "अरे वाह, कितना प्यारा इंसान है; कितना संवेदनशील! मुझे पता ही नहीं था," और उनके साथ उनकी एक गहरी और अचानक दोस्ती हो जाती। लेकिन, दूसरी ओर, जो पुरुष, स्वान की तरह, इन रुचियों को रखते थे लेकिन उनके बारे में बात नहीं करते थे, वे उन्हें उदासीन कर देते थे। उसे यह स्वीकार करना ही पड़ा कि स्वान अपने पैसे के मामले में बहुत उदार था, लेकिन वह मुंह फुलाते हुए कहती, "देखो, उसके साथ ऐसा नहीं है," और वास्तव में, जो बात उसकी कल्पना को आकर्षित करती थी, वह निस्वार्थता का व्यवहार नहीं, बल्कि उसकी शब्दावली थी।

यह महसूस करते हुए कि अक्सर वह उसे वास्तविकता में उन सुखों को नहीं दे पाता था जिनका वह सपना देखती थी, उसने कम से कम यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि वह उसकी संगति में खुश रहे, उसने उन भद्दी धारणाओं, उस बुरे स्वाद का विरोध न करने का प्रयास किया जो वह हर संभव अवसर पर प्रदर्शित करती थी, जिसे वह फिर भी प्यार करता था, क्योंकि वह उससे आने वाली हर चीज से प्यार करने से खुद

को रोक नहीं पाता था, जो उसे मोहित भी कर लेती थी, क्योंकि क्या वे उन विशिष्ट विशेषताओं में से कई नहीं थीं, जिनके बल पर स्त्री के आवश्यक गुण उभरते थे और प्रकट होते थे? और इसलिए, जब वह रीन टोपाज़ देखने जाने की खुशी में होती, या जब उसकी आँखें गंभीर, परेशान, चिड़चिड़ी हो जातीं, अगर उसे फूलों की प्रदर्शनी छूट जाने का डर होता, या केवल रू रॉयल के चायघरों में मफिन और टोस्ट के साथ चाय के लिए समय पर न पहुँच पाने का डर होता, जहाँ वह नियमित उपस्थिति को अनिवार्य मानती थी और एक महिला के 'स्मार्टनेस' के प्रमाण पत्र पर मुहर लगाती थी, तो स्वान, हम सभी की तरह, कभी-कभी एक बच्चे के स्वाभाविक व्यवहार से, या किसी चित्र की उस समानता से, जो मानो बोलने ही वाला हो, मंत्रमुग्ध हो जाता, और अपनी प्रेमिका की आत्मा को उसके चेहरे की रूपरेखा में उभरते हुए इतनी स्पष्ट रूप से महसूस करता कि वह उसके पास जाकर उसे अपने होठों से स्वागत करने से खुद को रोक नहीं पाता। "ओह, तो छोटी ओडेट चाहती है कि हम उसे फूलों की प्रदर्शनी में ले जाएँ, है ना? वह प्रशंसा पाना चाहती है, है ना? ठीक है, हम उसे वहाँ ले जाएँगे, हम उसकी इच्छाओं का पालन करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते।" जैसे-जैसे स्वान की दृष्टि कमजोर होती जा रही थी, उन्हें चश्मा पहनना पड़ा, जिसे वे घर पर और काम करते समय पहनते थे, जबकि बाहर जाने के लिए वे एक ही चश्मा इस्तेमाल करते थे, क्योंकि यह कम भद्दा लगता था। पहली बार जब उसने उसे उनकी आंख में देखा, तो वह खुशी से झूम उठी: "मैं सचमुच सोचती हूँ - एक पुरुष के लिए, मतलब - यह बहुत ही शानदार है! आप इसमें कितने अच्छे लग रहे हैं! बिल्कुल एक सज्जन व्यक्ति। अब आपको बस एक उपाधि चाहिए!" उसने अपनी आवाज में थोड़ी सी निराशा के साथ कहा। उन्हें ओडेट की ये बातें सुनना अच्छा लगता था, ठीक वैसे ही जैसे अगर वे किसी ब्रेटन

लड़की से प्यार करते, तो उन्हें उसे उसके बालों में देखना और उसे भूतों में विश्वास करते हुए सुनना अच्छा लगता। हमेशा से, जैसा कि उन पुरुषों में आम है जिनकी ललित कलाओं के प्रति रुचि उनकी कामुकता से स्वतंत्र रूप से विकसित होती है, दोनों रुचियों को एक साथ संतुष्ट करने में एक अजीब असमानता मौजूद थी; कलाकृतियों के आकर्षण में बहते हुए, जो उन महिलाओं के साथ और भी सूक्ष्म होती जा रही थीं जिनकी संगति में वह उनका आनंद लेता था, वह एक छोटी नौकरानी को थिएटर के एक गुप्त बॉक्स में ले जाता, जहाँ कोई ऐसी घटिया रचना प्रदर्शित हो रही होती जिसे वह देखना चाहता था, या प्रभाववादी चित्रकला की प्रदर्शनी में ले जाता, इस विश्वास के साथ कि एक शिक्षित, 'समाजवादी' महिला उन्हें बेहतर ढंग से नहीं समझ पाएगी, लेकिन इतनी खूबसूरती से चुप नहीं रह पाएगी। लेकिन अब जब वह ओडेट के प्यार में पड़ गया था, तो सब कुछ बदल गया था; उसकी भावनाओं को साझा करना, उसके साथ आत्मा से एक होने का प्रयास करना इतना आकर्षक था कि उसने उन चीजों में संतुष्टि खोजने की कोशिश की जो उसे पसंद थीं, और उसे न केवल उसकी आदतों की नकल करने में बल्कि उसके विचारों को अपनाने में भी आनंद मिला, जो और भी गहरा था क्योंकि, चूंकि वे आदतें और विचार उसकी बुद्धि से उत्पन्न नहीं हुए थे, इसलिए वे उसे उस प्रेम के अलावा कुछ भी नहीं दर्शाते थे, जिसके लिए उसने उन्हें अपने स्वयं के प्रेम से ऊपर रखा था। अगर वह फिर से सर्ज पैनिन के पास जाता, अगर वह ओलिवियर मेट्रा का संचालन देखने के अवसर तलाशता, तो यह ओडेट के मन में बसे हर विचार को जानने की खुशी के लिए था, यह महसूस करने के लिए कि उसकी सभी रुचियों में उसका भी बराबर का हिस्सा है। उसके पसंदीदा नाटकों, चित्रों और स्थानों में जो आकर्षण था, जो उसे ओडेट के करीब खींचता था, वह उसे उन अधिक सुंदर चीजों और

स्थानों के आंतरिक आकर्षण से कहीं अधिक रहस्यमय लगता था, जो अपनी सुंदरता से उसे आकर्षित तो करते थे, लेकिन ओडेट की याद नहीं दिलाते थे। इसके अलावा, अपनी युवावस्था के बौद्धिक विश्वासों को धीरे-धीरे कमजोर पड़ने देने के बाद, जब एक परिपक्व 'दुनियादार आदमी' के रूप में उसका संशयवाद धीरे-धीरे अनजाने में उनमें प्रवेश कर गया, तो वह मानता था (या कम से कम इतने लंबे समय तक मानता रहा कि उसे यह कहने की आदत हो गई थी) कि जिन वस्तुओं की हम प्रशंसा करते हैं उनका अपने आप में कोई निरपेक्ष मूल्य नहीं है, कि यह सब समय और जाति का मामला है, और यह फैशन की एक श्रृंखला है, जिनमें से सबसे साधारण का भी उतना ही मूल्य है जितना कि सबसे परिष्कृत माने जाने वाले का। और जैसा कि उसने तय कर लिया था कि ओडेट के लिए निजी तौर पर कार्ड प्राप्त करने का महत्व, वेल्स के राजकुमार के साथ दोपहर के भोजन पर जाने से उसे मिलने वाले आनंद से अधिक हास्यास्पद नहीं था, वैसे ही उसने यह भी नहीं सोचा कि मोंटे-कार्लो या रिघी के प्रति उसकी प्रशंसा, हॉलैंड (जिसे वह बदसूरत समझती थी) और वर्साय (जिससे वह ऊब जाती थी) के प्रति उसकी अपनी पसंद से अधिक अनुचित थी। और इसलिए उसने उन स्थानों की यात्रा के आनंद से खुद को वंचित कर लिया, और इस विचार से खुद को दिलासा दिया कि वह उसके लिए ही ऐसा महसूस करना चाहता था, कि उसे वह कुछ भी पसंद नहीं है जो उसे समान रूप से पसंद न हो।

ओडेट के परिवेश का हिस्सा बनने वाली हर चीज़ की तरह, जो एक तरह से उससे बार-बार मिलने और बात करने का साधन मात्र थी, उसे वर्दुरिन परिवार की संगति में आनंद आता था। उनके साथ, क्योंकि उनके सभी मनोरंजनों, रात्रिभोजों, संगीत संध्याओं, खेलों, फैंसी ड्रेस में रात्रिभोज, ग्रामीण भ्रमण, थिएटर पार्टियों, यहाँ तक कि कभी-कभार होने वाली

'बड़ी शामों' में भी, जब वे 'उबाऊ' लोगों का मनोरंजन करते थे, ओडेट की उपस्थिति, ओडेट का दर्शन, ओडेट के साथ बातचीत, एक अमूल्य वरदान था जो वर्दुरिन परिवार ने उसे अपने घर आमंत्रित करके स्वान को दिया था, वह उस छोटे से 'केंद्र' में कहीं और से अधिक खुश रहता था, और उसके प्रत्येक सदस्य में कुछ वास्तविक गुण खोजने का प्रयास करता था, यह कल्पना करते हुए कि उसकी रुचियाँ उसे जीवन भर उनकी संगति में रहने के लिए प्रेरित करेंगी। वह कभी भी अपने मन में यह फुसफुसाने की हिम्मत नहीं करता था, कहीं उसे इस बात पर शक न हो जाए कि वह हमेशा ओडेट से प्यार करता रहेगा, कम से कम जब वह यह सोचता था कि वह हमेशा वर्दुरिन के घर जाता रहेगा (एक ऐसा प्रस्ताव जिस पर उसकी बुद्धि को पहले से ही कम आपत्ति होती थी)। उसने भविष्य में खुद को हर शाम ओडेट से मिलते हुए देखा; शायद यह उसके हमेशा के लिए प्यार में होने जैसा तो नहीं था, लेकिन उस पल के लिए जब तक वह उससे प्यार करता था, यह महसूस करना कि वह एक दिन उससे मिलना बंद नहीं करेगा, उसके लिए बस इतना ही काफी था। "कितना प्यारा माहौल है!" उसने मन ही मन कहा। "इन लोगों के लिए जीवन कितना सच्चा है! ये लोग निश्चित रूप से उन लोगों से कहीं अधिक बुद्धिमान और कलात्मक हैं जिन्हें मैं जानता हूँ। श्रीमती वर्दुरिन, कुछ तुच्छ और हास्यास्पद अतिशयोक्तियों के बावजूद, चित्रकला और संगीत से सच्चा प्रेम रखती हैं! कलाकृतियों के प्रति उनका जुनून, कलाकारों को आनंद देने की उनकी उत्सुकता! कुछ लोगों के बारे में उनके विचार पूरी तरह सही नहीं हैं, लेकिन कलात्मक जगत के बारे में उनके विचार तो बिल्कुल ही गलत हैं! शायद मैं बातचीत से कोई बड़ी बौद्धिक अपेक्षा नहीं रखता, लेकिन कॉटार्ड से बात करके मुझे बहुत खुशी होती है, भले ही वह कभी-कभी मूर्खतापूर्ण चुटकुले सुनाते हों। और चित्रकार की बात करें तो, अगर

वह विरोधाभासी होने की कोशिश करते समय थोड़ा बनावटी लगता है, तब भी वह उन बेहतरीन दिमागों में से एक है जिनसे मैं कभी मिला हूँ। इसके अलावा, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वहाँ व्यक्ति पूरी तरह से स्वतंत्र महसूस करता है, बिना किसी बंधन या झंझट के अपनी मर्जी से कुछ भी कर सकता है। उस ड्राइंग रूम में हर दिन हास्य का कितना प्रवाह होता है! निश्चित रूप से, कुछ दुर्लभ अपवादों को छोड़कर, मैं अब कभी कहीं और नहीं जाना चाहता। यह और भी अधिक जीवंत हो जाएगा।" यह एक आदत सी बन गई है, और मैं अपना शेष जीवन इनके बीच ही बिताऊंगा।"

और वे गुण जिन्हें वह वर्दुरिन चरित्र का अभिन्न अंग मानता था, वास्तव में ओडेट के प्रति उसके प्रेम से उनके समाज में प्राप्त आनंद का सतही प्रतिबिंब मात्र थे, और जैसे-जैसे वह आनंद बढ़ता गया, वे गुण अधिक गंभीर, अधिक गहन और अधिक जीवंत होते गए। क्योंकि श्रीमती वर्दुरिन कभी-कभी स्वान को वह देती थीं जो केवल उसकी खुशी का आधार हो सकता था; क्योंकि एक शाम जब वह चिंतित था क्योंकि ओडेट ने पार्टी में एक व्यक्ति से दूसरे की तुलना में अधिक बात की थी, और चिड़चिड़ाहट में आकर उसने पहल करके उससे यह नहीं पूछा कि क्या वह घर आ रही है, तो श्रीमती वर्दुरिन ने सहज उद्गार से उसकी व्याकुल आत्मा को शांति और आनंद दिया: "ओडेट! तुम श्री स्वान को घर तक छोड़ दोगी, है ना?"; क्योंकि जब गर्मियों की छुट्टियां आईं, और जब उसने बेचैनी से खुद से पूछा कि क्या ओडेट उसे छोड़कर पेरिस नहीं चली जाएगी, क्या वह अब भी उसे हर दिन देख पाएगा, तो श्रीमती वर्दुरिन उन दोनों को गर्मियों की छुट्टियां अपने साथ ग्रामीण इलाके में बिताने के लिए आमंत्रित करने वाली थीं; स्वान, अनजाने में ही कृतज्ञता और स्वार्थ को अपनी बुद्धि में समाहित होने और अपने विचारों को प्रभावित करने की

अनुमति देते हुए, यहाँ तक कह बैठे कि श्रीमती वर्दुरिन "एक महान और नेक आत्मा" थीं। यदि लूव्र चित्रकला स्कूल के उनके पुराने सहपाठी उनसे किसी दुर्लभ या प्रख्यात कलाकार के बारे में बात करते, तो वे उत्तर देते, "मैं सौ गुना अधिक वर्दुरिन परिवार को पसंद करूँगा।" और, अपने नए गंभीर शब्दों में, वे कहते: "वे उदार प्राणी हैं, और उदारता ही अंततः वह एकमात्र चीज़ है जो मायने रखती है, वह एकमात्र चीज़ जो हमें इस धरती पर विशिष्टता प्रदान करती है। देखो, मनुष्य के केवल दो वर्ग हैं, उदार और बाकी; और मैं उस उम्र में पहुँच गया हूँ जब किसी को पक्ष लेना पड़ता है, हमेशा के लिए यह तय करना पड़ता है कि किसे पसंद करना है और किसे नापसंद करना है, जिन्हें पसंद करते हैं उनके साथ रहना है, और दूसरों के साथ बर्बाद किए गए समय की भरपाई के लिए, जीवन भर उन्हें कभी नहीं छोड़ना है। बहुत खूब!" वह थोड़ी भावुकता के साथ आगे बढ़ा, जैसा कि एक व्यक्ति तब महसूस करता है जब वह पूरी तरह से सचेत हुए बिना भी कुछ कह देता है, इसलिए नहीं कि वह सच है, बल्कि इसलिए कि उसे ऐसा कहने में आनंद आता है, और वह अपने ही शब्दों को ऐसे सुनता है मानो वे किसी और के हों, "अब फैसला हो चुका है; मैंने केवल उदार आत्माओं से प्रेम करने और केवल उदारता के वातावरण में रहने का निर्णय लिया है। आप मुझसे पूछते हैं कि क्या श्रीमती वर्दुरिन वास्तव में बुद्धिमान हैं। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि उन्होंने मुझे हृदय की महानता और आत्मा की ऊँचाई के ऐसे प्रमाण दिए हैं, जिन्हें कोई भी व्यक्ति—वे कैसे प्राप्त कर सकते हैं?—बिना समान रूप से ऊँची बुद्धि के प्राप्त कर सकते हैं। निःसंदेह, उन्हें कला की गहरी समझ है। लेकिन शायद यही उनकी सबसे प्रशंसनीयता नहीं है; मेरे लिए उनके द्वारा किया गया हर छोटा कार्य, जो उन्होंने चतुराई से, अत्यंत दयालुता से किया है, हर मित्रवत ध्यान, सरल छोटी-छोटी बातें, जो पूरी तरह से घरेलू हैं और

फिर भी पूरी तरह से उदात्त हैं, दर्शनशास्त्र की आपकी सभी पाठ्यपुस्तकों से कहीं अधिक गहन अस्तित्व की समझ प्रकट करती हैं।"

* * *

फिर भी, वह शायद खुद को याद दिला सकता था कि उसके परिवार के कई पुराने दोस्त थे जो वर्दुरिन परिवार की तरह ही सरल स्वभाव के थे, उसके बचपन के साथी थे जो कला के उतने ही शौकीन थे, वह अन्य 'महान हृदय वाले लोगों' को भी जानता था, और फिर भी, चूंकि उसने सादगी, कला और उदारता के पक्ष में अपना मत दिया था, इसलिए उसने उन्हें देखना पूरी तरह से बंद कर दिया था। लेकिन ये लोग ओडेट को नहीं जानते थे, और अगर वे उसे जानते भी तो कभी उसे उससे मिलवाने के बारे में नहीं सोचते।

और इसलिए, वर्दुरिन परिवार में शायद ही कोई ऐसा 'वफादार' रहा होगा जो उनसे उतना ही प्यार करता हो, या मानता हो कि वह उनसे उतना ही प्यार करता है जितना स्वान करता था। फिर भी, जब श्री वर्दुरिन ने कहा कि वह स्वान से संतुष्ट नहीं हैं, तो उन्होंने न केवल अपनी भावनाओं को व्यक्त किया, बल्कि अनजाने में अपनी पत्नी की भावनाओं को भी उजागर कर दिया। निस्संदेह, स्वान को ओडेट से कुछ अधिक ही स्नेह था, जिसके बारे में वह श्रीमती वर्दुरिन को प्रतिदिन विश्वास में नहीं लेते थे; निस्संदेह, जिस विवेक से उन्होंने वर्दुरिन परिवार के आतिथ्य का लाभ उठाया, और अक्सर उनके साथ भोजन करने से परहेज किया, उसका कारण ऐसा था जिसका उन्हें कभी संदेह नहीं हुआ, और जिसके बदले में उन्होंने केवल किसी 'उबाऊ' व्यक्ति के घर जाने के निमंत्रण को अस्वीकार न करने की उनकी चिंता देखी; निःसंदेह, और उन सभी सावधानियों के बावजूद जो उसने उनसे इसे छिपाने के लिए बरती थीं, समाज में उसकी शानदार स्थिति के बारे में धीरे-धीरे उन्हें जो जानकारी

मिल रही थी—निःसंदेह इन सभी बातों ने स्वान के प्रति उनकी सामान्य झुंझलाहट में योगदान दिया। लेकिन असली, मूल कारण बिल्कुल अलग था। असल में हुआ यह था कि उन्होंने उसमें एक बंद दरवाजा, एक आरक्षित, अभेद्य कक्ष खोज लिया था, जिसमें वह अब भी चुपचाप अपने मन में यह कहता था कि प्रिंसेस डी सागन विचित्र नहीं थी, और कॉटार्ड के चुटकुले मनोरंजक नहीं थे; संक्षेप में (और इस तथ्य के बावजूद कि उसने कभी भी उन सभी के प्रति अपना मैत्रीपूर्ण रवैया नहीं छोड़ा, या उनके सिद्धांतों का विरोध नहीं किया), उन्होंने उस पर उन सिद्धांतों को थोपने, उसे पूरी तरह से अपने धर्म में परिवर्तित करने की असंभवता का पता लगा लिया था, ऐसी असंभवता जो उन्होंने पहले कभी किसी में नहीं देखी थी। अगर वह अपने अनुयायियों के सामने खुलकर उन उबाऊ लोगों का त्याग करके एक अच्छा उदाहरण पेश करने के लिए तैयार हो जाता, तो वे उसे उन उबाऊ लोगों के घरों में जाने के लिए माफ़ कर देते (वैसे, अपने दिल में वह वर्दुरिन और उनके छोटे से समूह को कहीं ज़्यादा पसंद करता था)। लेकिन यह एक ऐसा त्याग था, जिसे वे अच्छी तरह जानते थे कि वे उससे नहीं करवा सकते थे।

ओडेट ने जिस 'नए व्यक्ति' को आमंत्रित करने के लिए कहा था, उससे कितना बड़ा अंतर था! हालाँकि ओडेट खुद उससे कुछ ही बार मिली थी, और जिस पर वे बड़ी उम्मीदें लगाए बैठे थे—कॉम्टे डी फोर्शेविल! (बाद में पता चला कि वह सैनीएट का बहनोई मात्र था, इस खोज ने सभी 'भक्तों' को आश्चर्यचकित कर दिया: उस बूढ़े पुरालेखविद् का व्यवहार इतना विनम्र था कि उन्होंने हमेशा उसे सामाजिक रूप से अपने से निचले वर्ग का समझा था, और उन्हें कभी उम्मीद नहीं थी कि वह एक धनी और अपेक्षाकृत कुलीन परिवार से आता है।) बेशक, फोर्शेविल बहुत ही 'अमीर' था, जो स्वान नहीं था या अब बिल्कुल नहीं रहा था; बेशक, वह

कभी सपने में भी नहीं सोच सकता था कि वर्दुरिन समूह को, जैसा कि स्वान अब सोच रहा था, किसी और से ऊपर रखेगा। लेकिन उसमें वह स्वाभाविक शिष्टाचार नहीं था जो स्वान को उन आलोचनाओं से खुद को अलग करने से रोकता था (जो इतनी स्पष्ट रूप से झूठी थीं कि उस पर ध्यान देने लायक नहीं थीं) जो श्रीमती वर्दुरिन अपने परिचितों पर करती थीं। चित्रकार द्वारा कभी-कभी की जाने वाली भद्दी और बनावटी बातों और कॉटार्ड द्वारा की जाने वाली चापलूसी भरी बातों के बारे में, स्वान, जो दोनों पुरुषों को दिल से पसंद करता था, इन बातों के लिए आसानी से बहाने ढूंढ लेता था, बिना उनकी सराहना करने का साहस या पाखंड दिखाए। दूसरी ओर, फोर्शेविल बौद्धिक रूप से इतने उन्नत थे कि वे इन कटु आलोचनाओं से चकित और हैरान हो जाते थे (बिना यह समझे कि ये सब किस बारे में है), और खुलकर उनकी चतुराई का आनंद लेते थे। और वर्दुरिन के घर पर आयोजित पहले भोज में, जिसमें फोर्शेविल उपस्थित थे, उन दोनों के बीच के सभी मतभेद स्पष्ट हो गए, फोर्शेविल के गुण उभर कर सामने आए और स्वान का अपमान हुआ।

इस रात्रिभोज में, सामान्य मेहमानों के अलावा, सोरबोन विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर ब्रिचोट भी उपस्थित थे, जिनकी मुलाकात श्रीमान और श्रीमती वर्दुरिन से कहीं किसी बार में हुई थी, और यदि विश्वविद्यालय में उनके कर्तव्यों और उनके अन्य शोध कार्यों के कारण उनके पास बहुत कम समय न होता, तो वे खुशी-खुशी उनसे अक्सर मिलने आते। क्योंकि उनमें वह जिज्ञासा और जीवन के प्रति वह अंधविश्वासी दृष्टिकोण था, जो उनके अध्ययन के विषय के प्रति कुछ हद तक संशय के साथ मिलकर, बुद्धिमान व्यक्तियों को, चाहे उनका पेशा कुछ भी हो, चाहे वे डॉक्टर हों जो चिकित्सा में विश्वास न करते हों, चाहे वे शिक्षक हों जो लैटिन अभ्यासों में विश्वास न करते हों, या शिक्षक हों जो लैटिन अभ्यासों में

विश्वास न करते हों, व्यापक, प्रतिभाशाली और वास्तव में श्रेष्ठ बुद्धि वाले व्यक्ति के रूप में ख्याति दिलाता है। श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ रहते हुए उन्होंने ऐसा व्यवहार किया... वेरदुरिन दर्शन या इतिहास पर बात करते समय, उस समय के सबसे प्रासंगिक विषयों में से उदाहरण चुनते थे, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि वे इन विज्ञानों को वास्तव में जीवन की तैयारी से अधिक कुछ नहीं मानते थे, और कल्पना करते थे कि वे 'छोटे समूह' द्वारा उस ज्ञान को व्यवहार में लाते हुए देख रहे हैं जिसे उन्होंने अब तक केवल पुस्तकों से ही जाना था; और शायद इसलिए भी, क्योंकि बचपन से ही उनमें कुछ विषयों के प्रति श्रद्धा का भाव समाहित था, और जिसे उन्होंने अनजाने में बनाए रखा था, इसलिए जब वे इन विषयों पर अनौपचारिक बातचीत के साथ चर्चा करने का साहस करते थे, तो उन्हें लगता था कि वे विद्वत्ता का चोला उतार रहे हैं, जो उन्हें केवल इसलिए अनौपचारिक लगता था क्योंकि चोले की तहें अभी भी उन पर चिपकी हुई थीं।

रात्रिभोज के आरंभिक समय में, जब श्रीमती वर्दुरिन के दाहिनी ओर बैठे एम. डी फोर्शेविल ने, जिन्होंने 'नए अतिथि' के सम्मान में अपने श्रृंगार में काफी मेहनत की थी, उनसे कहा: "वह सफेद पोशाक बिल्कुल अनोखी है," तो डॉक्टर, जिनकी निगाहें उनसे हटी ही नहीं थीं, क्योंकि वे उस व्यक्ति के स्वभाव और गुणों को जानने के लिए उत्सुक थे जिसे वे "डी" कहते थे, और उनका ध्यान आकर्षित करने का अवसर तलाश रहे थे ताकि वे उनके करीब आ सकें, अचानक 'ब्लांच' विशेषण को समझ गए और अपनी थाली पर टिकी नज़रों से झट से बोले, "ब्लांच? कास्टाइल की ब्लांच?" फिर, बिना सिर हिलाए, उन्होंने अपने दाएं और बाएं ओर एक झलक देखी, संदेह से भरे हुए, लेकिन कुल मिलाकर खुश। जबकि स्वान ने मुस्कुराने के लिए जो कष्टदायक और व्यर्थ प्रयास किया, उससे यह

स्पष्ट हो गया कि वह उस शब्द-खेल को बेतुका समझता था, वहीं फोर्शेविल ने तुरंत यह दिखा दिया कि वह उसकी सूक्ष्मता को समझ सकता है और वह एक व्यावहारिक व्यक्ति है, क्योंकि उसने उस हंसी को उसकी उचित सीमा के भीतर रखा जिसकी सहजता ने श्रीमती वर्दुरिन को मंत्रमुग्ध कर दिया था।

"ऐसे वैज्ञानिक के बारे में आप क्या कहेंगे?" उसने फोर्शेविल से पूछा। "आप उनसे लगातार दो मिनट तक गंभीरता से बात नहीं कर सकते। क्या आप अपने अस्पताल में भी यही सब कहते हैं?" उसने डॉक्टर की ओर मुड़ते हुए कहा। "अगर ऐसा है तो वहां खूब मौज-मस्ती होती होगी। मुझे लगता है मुझे भी मरीज बनकर भर्ती होना पड़ेगा!"

"मुझे लगता है मैंने डॉक्टर को उस दुष्ट बुढ़िया, कास्टाइल की ब्लैंच के बारे में बात करते सुना, अगर मैं इसे इस तरह कहूँ तो। क्या मैं सही नहीं हूँ, मैडम?" ब्रिचोट ने श्रीमती वर्दुरिन से अपील की, जो हंसी से बेहाल होकर, अपनी आँखें कसकर बंद करके, अपना चेहरा अपने दोनों हाथों में छिपाए बैठी थीं, जिनके बीच से कभी-कभार एक दबी हुई चीख निकल रही थी।

"हे भगवान, महोदया, मैं सपने में भी किसी आदरणीय व्यक्ति को, अगर इस मेज के आसपास कोई ऐसा है, तो छुपकर ठेस पहुंचाने की हिम्मत नहीं करूंगा... मैं यह भी मानता हूं कि हमारा अतुलनीय और एथेनियन—ओह, कितना असीम रूप से एथेनियन—गणतंत्र उस रूढ़िवादी बूढ़ी महिला—कैपेट—के रूप में हमारे पहले पुलिस प्रमुख को सम्मानित करने में सक्षम है। जी हां, बिल्कुल, मेरे प्रिय मेजबान, जी हां, बिल्कुल!" उन्होंने एम. वर्दुरिन के विरोध के जवाब में अपनी बुलंद आवाज में दोहराया, जिसमें हर अक्षर अलग स्वर में सुनाई दे रहा था। "संत डेनिस का इतिहास और उसकी जानकारी की प्रामाणिकता निर्विवाद है, इस बात पर

हमें कोई संदेह नहीं रहता। धर्मनिरपेक्ष सर्वहारा वर्ग द्वारा संरक्षक के रूप में उस संत की माता से अधिक उपयुक्त कोई नहीं चुना जा सकता था, जिसने उन्हें कुछ संदिग्ध संतों को भी दिखाया, जैसा कि सुगर कहते हैं, और उसी तरह के अन्य महान संत बर्नार्ड भी; क्योंकि उनके साथ मामला बस अपनी मर्जी से कुछ भी लेने का था।"

"वह सज्जन कौन हैं?" फोर्शेविल ने श्रीमती वर्दुरिन से पूछा। "ऐसा लगता है कि वे बहुत अधिकारपूर्वक बोल रहे हैं।"

"क्या! आपका मतलब यह है कि आप प्रसिद्ध ब्रिचोट को नहीं जानते? अरे, वह तो पूरे यूरोप में मशहूर हैं।"

"अरे, ये तो ब्रेचोट हैं?" फोर्शेविल ने हैरानी से कहा, क्योंकि उन्हें नाम ठीक से सुनाई नहीं दिया था। "आपको इनके बारे में सब कुछ बताना होगा," उन्होंने उस मशहूर हस्ती को टकटकी लगाकर कहा। "रात के खाने पर जाने-माने लोगों से मिलना हमेशा दिलचस्प होता है। लेकिन, मैं कहता हूँ, आप हमें यहाँ बहुत ही खास पार्टियों में बुलाते हैं। मुझे यकीन है कि इस घर में कोई भी शाम नीरस नहीं होती।"

"खैर, आप तो जानती ही हैं कि असल बात क्या है," श्रीमती वर्दुरिन ने विनम्रता से कहा। "वे यहाँ सुरक्षित महसूस करते हैं। वे जो चाहें बात कर सकते हैं, और बातचीत किसी आतिशबाजी की तरह होती है। लेकिन आज शाम ब्रिचोट कुछ भी नहीं है। मैंने उसे देखा है, आप जानती ही हैं ना, जब वह मेरे साथ था, तो वह सचमुच कमाल का था; आप उसके सामने घुटने टेकना चाहेंगे। खैर, किसी और के साथ वह वैसा नहीं रहता, उसमें जरा भी हास्यबोध नहीं होता, उससे शब्द निकलवाने के लिए आपको उसे खींचना पड़ता है, वह तो उबाऊ भी लगता है।"

"यह तो अजीब बात है," फोर्शेविल ने उचित आश्चर्य के साथ टिप्पणी की। ब्रिचोट जैसी हास्य-व्यंग्य शैली को उन लोगों द्वारा सरासर मूर्खता माना

जाता, जिनके बीच स्वान ने अपना प्रारंभिक जीवन बिताया था, भले ही यह वास्तविक बुद्धिमत्ता के साथ पूरी तरह से मेल खाती हो। और प्रोफेसर के सशक्त और सुविकसित मस्तिष्क की बुद्धिमत्ता से समाज के कई लोग ईर्ष्या कर सकते थे, जो स्वान को काफी बुद्धिमान प्रतीत होते थे। लेकिन इन लोगों ने स्वान में अपनी पसंद-नापसंद को इतनी गहराई से समाहित कर दिया था, कम से कम उन सभी चीजों में जो उनके सामान्य सामाजिक जीवन से संबंधित थीं, जिसमें सामाजिक जीवन का वह हिस्सा भी शामिल था जो वास्तव में बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में आता है, अर्थात् बातचीत, कि स्वान को ब्रिचोट की वाक्पटुता में कुछ भी नजर नहीं आया; उनके लिए वे केवल पांडित्यपूर्ण, अशिष्ट और बेहद भद्दी थीं। अच्छे शिष्टाचार के आदी होने के कारण, वह इस छात्र के असभ्य, लगभग बैरक-कक्ष जैसे लहजे से भी चकित थे, चाहे वह किसी से भी बात कर रहा हो। अंततः, शायद, उस शाम मैडम को देखते हुए उनका धैर्य टूट गया था। वर्दुरिन ने फोर्शेविल नाम के इस व्यक्ति का अनावश्यक गर्मजोशी से स्वागत किया, जिसे घर लाने का ओडेट का ही अजीबोगरीब विचार था। स्वान के भी वहाँ मौजूद होने से थोड़ा असहज महसूस करते हुए, उसने अपने आगमन पर उससे पूछा: "मेरे मेहमान के बारे में आपका क्या विचार है?"

और जब उसे अचानक पहली बार एहसास हुआ कि फोर्शेविल, जिसे वह वर्षों से जानता था, वास्तव में एक महिला को आकर्षित कर सकता है और एक अच्छा पुरुष है, तो उसने पलटकर कहा: "घटिया!" उसे निश्चित रूप से ओडेट से ईर्ष्या करने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन वह हमेशा की तरह खुश नहीं था। जब ब्रिचोट ने उन्हें ब्लैंच ऑफ कास्टाइल की माँ की कहानी सुनाना शुरू किया, जिसके अनुसार, "वे शादी से पहले कई वर्षों तक हेनरी प्लांटाजेनेट के साथ थीं," तो उसने स्वान को कहानी जारी

रखने के लिए उकसाने की कोशिश की, और बीच में "क्या ऐसा नहीं है, श्रीमान स्वान?" कहकर बात को आगे बढ़ाने का आग्रह किया, उसी लहजे में जो कोई किसी नासमझ देहाती के स्तर पर उतरने या किसी सैनिक को डराने के लिए इस्तेमाल करता है। स्वान ने अपनी कहानी बीच में ही रोक दी, जिससे उनकी मेज़बान बहुत क्रोधित हो गई, और उसने ब्लैंच ऑफ कास्टाइल में इतनी कम दिलचस्पी लेने के लिए क्षमा मांगी, क्योंकि उसे चित्रकार से कुछ पूछना था। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह उस दोपहर एक अन्य कलाकार की कलाकृतियों की प्रदर्शनी में गए थे, जो श्रीमती वर्दुरिन के मित्र थे और जिनका हाल ही में निधन हो गया था। स्वान उनसे यह जानना चाहते थे (क्योंकि वह उनके विवेक का सम्मान करते थे) कि क्या वास्तव में उनकी बाद की कलाकृतियों में उस निपुणता से बढ़कर कुछ और था जिसने उनकी पिछली प्रदर्शनियों में लोगों को इतनी गहराई से प्रभावित किया था।

"उस दृष्टिकोण से यह असाधारण था, लेकिन मुझे यह कला का ऐसा रूप नहीं लगा जिसे 'उत्कृष्ट' कहा जा सके," स्वान ने मुस्कुराते हुए कहा।

"एक संस्थान के स्तर तक पदोन्नत!" कॉटार्ड ने बनावटी गंभीरता दिखाते हुए अपने हाथ ऊपर उठाते हुए बीच में ही टोक दिया। पूरी मेज पर बैठे लोग खिलखिलाकर हंस पड़े।

"मैंने तुमसे क्या कहा था?" श्रीमती वर्दुरिन ने फोर्शेविल से कहा। "उसके साथ गंभीर रहना नामुमकिन है। जब तुम बिल्कुल उम्मीद नहीं करते, वह अचानक मजाक कर बैठता है।"

लेकिन उसने गौर किया कि स्वान, और सिर्फ स्वान ही, अपने रवैये में नरमी नहीं बरत रहा था। एक तो वह कॉटार्ड से बिल्कुल भी खुश नहीं था क्योंकि कॉटार्ड ने फोर्शेविल के सामने उसका मज़ाक उड़ाकर उसे हँसाया था। लेकिन चित्रकार ने स्वान को प्रभावित करने वाले अंदाज़ में जवाब

देने के बजाय, जैसा कि वह शायद तब करता जब वे अकेले होते, अपने मृत मित्र की प्रतिभा पर व्यंग्य करके बाकी लोगों की आसानी से प्रशंसा बटोरने को प्राथमिकता दी।

"मैं उनमें से एक के पास गया," उसने कहना शुरू किया, "बस यह देखने के लिए कि यह कैसे किया जाता है; मैंने उसमें अपनी नाक घुसाई। हाँ, मुझे नहीं लगता! यह कहना असंभव है कि यह गोंद से, साबुन से, सीलिंग-वैक्स से, धूप से, खमीर से, या मल से किया गया था..."

"और एक से बारह हो जाते हैं!" डॉक्टर ने मजाकिया अंदाज में चिल्लाया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी, क्योंकि किसी को भी उनके इस हस्तक्षेप का मतलब समझ नहीं आया।

चित्रकार ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "ऐसा लगता है मानो इसे बिना किसी चीज़ के बनाया गया हो। इसमें छिपी कला को खोजने की संभावना 'नाइट वॉच' या 'रीजेंट्स' से कहीं अधिक है, और यह रेम्ब्रांट या हाल्स की रचनाओं से भी कहीं बड़ा काम है। सब कुछ मौजूद है, फिर भी, नहीं, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि ऐसा नहीं है।"

फिर, जैसे गायक अपनी गायन क्षमता के उच्चतम स्वर तक पहुँचने के बाद शेष गीत को ऊँची आवाज़ में गुनगुनाते हैं, वैसे ही उन्हें भी गुनगुनाते हुए संतोष करना पड़ा, साथ ही वे मुस्कुराते भी रहे, मानो पेंटिंग की सुंदरता में ही कुछ ऐसा था जो बेहद मनोरंजक था: "इसकी खुशबू ठीक है; इससे सिर चकरा जाता है; साँस अटक जाती है; पूरे शरीर में गुदगुदी होती है—और यह कैसे किया गया है, इसका ज़रा भी अंदाज़ा नहीं। वह आदमी जादूगर है; यह चीज़ जादू का कमाल है, यह एक चमत्कार है," और फिर ज़ोर से हँसते हुए बोले, "यह बेईमानी है!" फिर रुककर, गंभीरता से अपना सिर ऊपर उठाते हुए, अपनी आवाज़ को गहरे स्वर में उठाते हुए, जिसे सामंजस्य बिठाने के लिए वे संघर्ष कर रहे थे, उन्होंने

निष्कर्ष निकाला, "और यह कितना वफ़ादार है!"
उस क्षण को छोड़कर जब उन्होंने इसे "नाइट वॉच" से भी बड़ा कहा था, जो एक ईशनिंदा थी और जिस पर श्रीमती वर्दुरिन ने तुरंत विरोध जताया था, जो "नाइट वॉच" को ब्रह्मांड की सर्वोच्च कृति मानती थीं (नौवीं और समोथ्रेस के साथ), और "मल" शब्द पर, जिसने फोर्शेविल को यह देखने के लिए मेज के चारों ओर एक नज़र डालने पर मजबूर कर दिया था कि क्या यह "ठीक" है, इससे पहले कि उनके होठों पर एक संकोची और सुलह भरी मुस्कान आए, स्वान को छोड़कर सभी उपस्थित लोगों ने अपनी मोहित और प्रशंसा भरी निगाहें चित्रकार पर टिकाए रखी थीं।
"जब वो इस तरह हवा में उछलता है तो मुझे कितना अच्छा लगता है!" मैडम वर्दुरिन ने उनके भाषण समाप्त होते ही खुशी से चिल्लाकर कहा। वो इस बात से मंत्रमुग्ध थीं कि जिस रात फोर्शेविल पहली बार उनके साथ भोजन कर रहे थे, उसी रात मेज पर हुई बातचीत इतनी मनोरंजक साबित हुई। "अरे, तुम!" उन्होंने अपने पति की ओर मुड़कर कहा, "क्या हुआ है तुम्हें, यहाँ किसी बड़े जानवर की तरह मुँह खोले बैठे हो? वैसे, तुम जानते हो ना," उन्होंने चित्रकार से माफी मांगते हुए कहा, "कि जब वो चाहे तो बहुत अच्छी तरह से बात कर सकता है; कोई भी सोचेगा कि उसने तुम्हें पहली बार सुना है। अगर तुमने उसे बोलते हुए देखा होता; वो सब कुछ ध्यान से सुन रहा था। और कल वो हमें तुम्हारी कही हर बात बिना एक शब्द छोड़े बताएगा।"
"नहीं, सच में, मैं मज़ाक नहीं कर रहा!" चित्रकार ने अपने भाषण की सफलता से उत्साहित होकर कहा। "आप सब ऐसे लग रहे हैं जैसे आपको लगा हो कि मैं आपका मज़ाक उड़ा रहा था, बस एक चाल थी। मैं आपको प्रदर्शनी दिखाने ले चलता हूँ, और फिर आप बता सकते हैं कि क्या मैं बढ़ा-चढ़ाकर बोल रहा था; मैं शर्त लगाता हूँ, आप मुझसे ज़्यादा

उत्साहित होकर लौटेंगे!"
"लेकिन हमें ज़रा भी नहीं लगता कि आप बढ़ा-चढ़ाकर बोल रही हैं; हम तो बस यही चाहती हैं कि आप और मेरे पति अपना खाना खा लें। एम. बिचे को थोड़ा और सोल फिश दे दीजिए, क्या आपको नहीं दिख रहा कि उनकी सोल फिश ठंडी हो गई है? हमें कोई जल्दी नहीं है; आप तो ऐसे भाग-दौड़ कर रही हैं जैसे घर में आग लग गई हो। ज़रा रुकिए; अभी सलाद मत परोसिए।"
श्रीमती कॉटार्ड, जो एक शर्मीली महिला थीं और बहुत कम बोलती थीं, फिर भी जब उन्हें कोई सुखद विचार आता और वे सही शब्द बोल देतीं, तो उनमें आत्मविश्वास की कोई कमी नहीं होती थी। उन्हें विश्वास था कि उनकी बात को सराहा जाएगा; इस विचार ने उन्हें आत्मविश्वास दिया, और वे जो कुछ भी कर रही थीं, उसका उद्देश्य स्वयं को चमकाना नहीं, बल्कि अपने पति को उनके करियर में आगे बढ़ने में मदद करना था। इसलिए उन्होंने श्रीमती वर्दुरिन द्वारा अभी-अभी बोले गए 'सलाद' शब्द को अनदेखा नहीं किया।
"यह जापानी सलाद तो नहीं है ना?" उसने ओडेट की ओर मुड़ते हुए फुसफुसाकर कहा।
और फिर, डुमास के नए और शानदार ढंग से सफल नाटक का इतना विवेकपूर्ण और फिर भी इतना स्पष्ट संकेत देने में मौजूद स्वच्छता और साहस के संयोजन पर अपनी खुशी और भ्रम में, वह एक मनमोहक, लड़की जैसी हंसी में फूट पड़ी, जो बहुत तेज नहीं थी, लेकिन इतनी अनियंत्रित थी कि उसे नियंत्रित करने में उसे कुछ समय लग गया।
"वह महिला कौन है? वह बेहद चालाक लगती है," फोर्शेविल ने कहा।
"नहीं, ऐसा नहीं है। लेकिन अगर आप सब शुक्रवार को रात के खाने पर आएंगे तो हम आपके लिए एक व्यवस्था करेंगे।"

"आप मुझे बेहद गंवार समझेंगे, महोदय," श्रीमती ने कहा। कॉटार्ड ने स्वान से कहा, "लेकिन, क्या आप जानते हैं, मैं अभी तक उस मशहूर फ्रैन्सिलॉन को देखने नहीं गई हूँ जिसके बारे में हर कोई बात कर रहा है। डॉक्टर साहब वहाँ गए थे (मुझे अब याद आया, उन्होंने मुझे बताया था कि आपके साथ वहाँ शाम बिताना उनके लिए कितना सुखद अनुभव था) और मुझे यह स्वीकार करना होगा कि जब वे पहले ही नाटक देख चुके हैं, तो मुझे उनके लिए टिकट खरीदने में कोई समझदारी नहीं दिखती। बेशक, थिएटर-फ्रैन्से में एक शाम कभी व्यर्थ नहीं जाती; वहाँ अभिनय हमेशा बहुत अच्छा होता है; लेकिन हमारे कुछ बहुत अच्छे दोस्त हैं," (श्रीमती कॉटार्ड शायद ही कभी किसी का नाम लेती थीं, इसलिए उन्होंने खुद को "हमारे कुछ दोस्त" या "मेरे दोस्तों में से एक" तक ही सीमित रखा, क्योंकि ये अधिक 'प्रतिष्ठित' थे, बनावटी लहजे में और उस व्यक्ति के पूरे महत्व के साथ बोल रही थीं जिसे नाम तभी लेने की ज़रूरत होती है जब वह चाहती हैं) "जिनके पास अक्सर एक बॉक्स होता है, और वे इतने दयालु हैं कि हमें सभी नए नाटकों में ले जाते हैं जो देखने लायक होते हैं, इसलिए मुझे यकीन है कि मैं जल्द ही इस फ्रैन्सिलॉन को देख लूंगी।" या फिर बाद में, और तब मुझे पता चलेगा कि क्या सोचना है। लेकिन मुझे सच में बहुत मूर्खता महसूस हो रही है, यह मुझे स्वीकार करना ही होगा, क्योंकि जब भी मैं कहीं जाती हूँ, तो हर कोई उस घटिया जापानी सलाद के बारे में बात कर रहा होता है—यह तो स्वाभाविक ही है। सचमुच, इसके बारे में सुनकर अब थोड़ी ऊब सी होने लगी है," उसने आगे कहा, यह देखकर कि स्वान इस ज्वलंत विषय में उतनी दिलचस्पी नहीं दिखा रही थी जितनी उसने उम्मीद की थी। "मुझे यह मानना पड़ेगा कि कभी-कभी जिस तरह से वे इस बारे में मज़ाक करते हैं, वह काफी मनोरंजक होता है: मेरी एक दोस्त है, जो बहुत ही अनोखी है, हालांकि वह वास्तव में

एक खूबसूरत महिला है, समाज में बहुत लोकप्रिय है, हर जगह जाती है, और उसने मुझे बताया कि उसने अपने रसोइए से एक जापानी सलाद बनवाया, जिसमें वह सब कुछ डाला जो युवा एम. डुमास नाटक में डालने के लिए कहते हैं। फिर उसने कुछ दोस्तों को बुलाया और उन्हें चखने के लिए कहा। मुझे खेद है कि मैं उन कुछ खास लोगों में शामिल नहीं थी। लेकिन उसने अगले दिन हम सबको इसके बारे में बताया; ऐसा लगता है कि यह काफी भयानक था, उसने हम सबको इतना हंसाया कि हमारी आंखों से आंसू आ गए। मुझे नहीं पता; शायद यह उसके सुनाने का तरीका था," मैडम कॉटार्ड ने संदेह से कहा, यह देखकर कि स्वान अभी भी गंभीर दिख रहे थे।

और, यह सोचते हुए कि शायद इसका कारण यह था कि उन्हें फ्रैन्सिलॉन पसंद नहीं आया था: "खैर, मुझे लगता है कि मैं इससे निराश ही होऊंगा। मुझे नहीं लगता कि यह उतना अच्छा है जितना मैडम डी क्रेसी की पसंदीदा रचना, सर्ज पैनिन। अगर आप चाहें तो कह सकते हैं कि वह एक नाटक है; इतना गहरा, सोचने पर मजबूर कर देता है! लेकिन ज़रा सोचिए, थिएटर-फ्रैंसे के मंच पर सलाद की रसीद देना! अब, सर्ज पैनिन —! लेकिन फिर, यह एम. जॉर्जेस ओहनेट की कलम से निकली हर चीज़ की तरह है, यह बहुत अच्छी तरह से लिखा गया है। मुझे आश्चर्य है कि क्या आप मैत्रे डेस फोर्जेस को जानते हैं, जो मुझे सर्ज पैनिन से भी ज़्यादा पसंद है।"

"मुझे क्षमा करें," स्वान ने विनम्रतापूर्वक व्यंग्य करते हुए कहा, "लेकिन मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं कि मेरी प्रशंसा की कमी उन उत्कृष्ट कृतियों के बीच लगभग समान रूप से विभाजित है।"

"सच में, ये तो बहुत दिलचस्प है। और आपको उनमें क्या पसंद नहीं है? क्या आप कभी अपना विचार नहीं बदलेंगे? शायद आपको लगता है कि

वो थोड़ा ज़्यादा उदास है। खैर, मैं तो हमेशा यही कहता हूँ कि नाटकों या उपन्यासों पर कभी बहस नहीं करनी चाहिए। हर किसी का चीजों को देखने का अपना तरीका होता है, और जो आपको भयानक लग सकता है, शायद वही मुझे सबसे ज़्यादा पसंद हो।"

फोर्शेविल के स्वान को संबोधित करने से उनकी बात बीच में ही रुक गई। दरअसल, जब श्रीमती कॉटार्ड फ्रैन्सिलॉन के बारे में चर्चा कर रही थीं, तब फोर्शेविल श्रीमती वर्दुरिन से चित्रकार की "छोटी-छोटी बातों" के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त कर रहे थे। "आपके मित्र की भाषा में कितना प्रवाह है, उनकी स्मृति कितनी अद्भुत है!" जब चित्रकार रुक गया, तो उसने उससे कहा, "मैंने ऐसा बहुत कम देखा है। वह एक बेहतरीन उपदेशक बन सकता है। हे भगवान, काश मैं भी ऐसा होता। उसके और एम. ब्रेचोट के साथ, आज रात तो तुम्हारी किस्मत खुल गई है; हालाँकि मुझे पूरा यकीन नहीं है कि एक वक्ता के तौर पर वह प्रोफेसर को मात नहीं दे सकता। उसके लिए यह ज़्यादा स्वाभाविक है, किताब से पढ़ने जैसा नहीं। बेशक, जिस तरह से वह बोलता है, वह कुछ शब्दों का इस्तेमाल करता है जो थोड़े यथार्थवादी हैं, और ऐसा ही कुछ; लेकिन आजकल यही आम बात है; खैर, मैंने किसी आदमी को इतनी चतुराई से बात संभालते हुए बहुत कम देखा है, 'स्पिटून पकड़ो,' जैसा कि हम रेजिमेंट में कहते थे, जहाँ, वैसे, हमारे पास एक आदमी था जिसकी याद वह मुझे दिलाता है। तुम जो चाहो ले लो—पता नहीं क्या—जैसे यह गिलास; और वह घंटों इसके बारे में बोलता रहेगा; नहीं, यह गिलास नहीं; यह तो एक बेवकूफी भरी बात है।" कहिए, मुझे खेद है; लेकिन अगर कोई बड़ी घटना हो, जैसे वाटरलू की लड़ाई, या उस तरह की कोई और घटना, तो वह आपको ऐसी बातें बताएगा जिन पर आपको यकीन ही नहीं होगा। वैसे भी, स्वान उस समय रेजिमेंट में था; वह उसे जरूर जानता होगा।

"क्या आप मिस्टर स्वान को अक्सर देखते हैं?" श्रीमती वर्दुरिन ने पूछा।
"अरे नहीं!" उसने जवाब दिया, और फिर यह सोचकर कि अगर वह स्वान को खुश कर दे तो शायद ओडेट का दिल जीत ले, उसने स्वान के फैशनेबल दोस्तों के बारे में बात करके उसकी चापलूसी करने का फैसला किया। लेकिन उसने एक अनुभवी व्यक्ति की तरह, सौम्य आलोचना के लहजे में बात की, न कि स्वान को किसी अयोग्य सौभाग्य पर बधाई देते हुए: "क्या ऐसा ही है, स्वान? मैं तुम्हें कभी देखता ही नहीं, है ना? - लेकिन फिर, उसे देखने वाला कौन है? वह तो अपना सारा समय ला ट्रेमोइल्स, लाउमेस और उन सभी के साथ बंद कमरे में बिताता है!" यह आरोप किसी भी समय गलत होता, और अब तो और भी गलत हो गया था, क्योंकि कम से कम एक साल से स्वान ने वर्दुरिन्स के घर के अलावा लगभग किसी भी घर में जाना छोड़ दिया था। लेकिन वर्दुरिन्स जिन परिवारों को नहीं जानते थे, उनके नाम सुनते ही वे तिरस्कारपूर्ण चुप्पी साध लेते थे। श्री वर्दुरिन को इस बात का डर सता रहा था कि इन 'उबाऊ' लोगों का ज़िक्र, विशेषकर जब इस अशिष्ट तरीके से और सभी 'वफादारों' के सामने किया गया, उनकी पत्नी पर कितना बुरा असर डालेगा। उन्होंने चिंता से भरी एक दबी नज़र से उनकी ओर देखा। उन्होंने देखा कि अपनी पत्नी ने उस खबर पर ध्यान न देने, उससे पूरी तरह से बचने का पक्का इरादा कर लिया था, जो अभी-अभी उन्हें सुनाई गई थी। वह न केवल चुप रहीं, बल्कि बहरी भी हो गईं, जैसा कि हम तब दिखावा करते हैं जब कोई गलत काम करने वाला दोस्त अपनी बातचीत में कोई बहाना डालने की कोशिश करता है जिसे हम स्वीकार करते हुए प्रतीत हों, अगर हम बिना विरोध किए उसे सुन लें, या जब कोई किसी दुश्मन का नाम लेता है जिसका ज़िक्र हमारे सामने करना मना है; श्रीमती वर्दुरिन ने, अपनी चुप्पी को सहमति की नहीं, बल्कि निर्जीव वस्तुओं की तरह अचेतन चुप्पी का

रूप देने के लिए, अचानक अपने चेहरे से सारी जीवंतता, सारी गतिशीलता खो दी थी। उसका गोल माथा अब किसी उत्कृष्ट नक्काशीदार आकृति जैसा लग रहा था, जिस पर उन ला ट्रेमोइल्स का नाम भी असर नहीं कर पा रहा था, जिनके साथ स्वान हमेशा 'बंद कमरे' में रहता था; उसकी नाक, जो हल्की सी सिकुड़ी हुई थी, दो गहरे गड्ढों को उजागर कर रही थी, मानो मानो उसे वास्तविक जीवन से प्रेरित होकर गढ़ा गया हो। ऐसा लग रहा था मानो उसके आधे खुले होंठ कुछ बोलने ही वाले हों। लेकिन यह सब बस एक मोम का सांचा, प्लास्टर का मुखौटा, एक स्मारक के लिए मूर्तिकार की रचना, उद्योग महल में प्रदर्शित होने वाली एक प्रतिमा मात्र थी, जहाँ जनता निश्चित रूप से इसके सामने इकट्ठा होकर यह देखकर आश्चर्यचकित होगी कि मूर्तिकार ने ला ट्रेमोइल्स या लाउमेस के विपरीत, जिनके बराबर (यदि वास्तव में उनसे बेहतर नहीं) वेरदुरिन परिवार की निर्विवाद गरिमा को व्यक्त करते हुए, और पृथ्वी पर मौजूद अन्य सभी 'उबाऊ' लोगों के बराबर या उनसे बेहतर होते हुए, अपने पत्थर की सफेदी और कठोरता को लगभग पोप जैसी भव्यता प्रदान कर दी थी। लेकिन अंत में संगमरमर में जान आ गई और उसने यह स्पष्ट कर दिया कि उस घर में जाने पर जरा भी संकोच करना उचित नहीं है, क्योंकि वह महिला हमेशा नशे में रहती थी और पति इतना अशिक्षित था कि वह गलियारे को 'कोलिडोर' कहता था!

"मुझे उन लोगों में से किसी को भी अपने घर में कदम रखने देने से पहले आपको मुझे बहुत सारा पैसा देना होगा," श्रीमती वर्दुरिन ने स्वान को शाही अंदाज में देखते हुए कहा।

उसे शायद ही उम्मीद रही होगी कि वह इतनी पूरी तरह से आत्मसमर्पण कर देगा कि पियानोवादक की चाची की पवित्र सरलता को दोहराएगा, जिन्होंने तुरंत कहा: "ज़रा सोचो! मुझे आश्चर्य इस बात का है कि वे किसी

को भी अपने पास जाने के लिए मना लेते हैं; मुझे यकीन है कि मुझे डर लगेगा; सावधानी कभी कम नहीं होती। लोग इतने साधारण कैसे हो सकते हैं कि उनके पीछे भागें?"

लेकिन कम से कम वह फोर्शेविल की तरह जवाब तो दे सकता था: "अरे, वह एक डचेस है; अभी भी बहुत से लोग हैं जो इस तरह की चीजों से प्रभावित होते हैं," जिससे कम से कम श्रीमती वर्दुरिन को अंतिम जवाब देने का मौका मिल जाता, "और इससे उन्हें क्या फायदा!" इसके बजाय, स्वान ने केवल मुस्कुरा दिया, जिससे यह स्पष्ट रूप से पता चलता था कि वह इस तरह के बेतुके सुझाव को गंभीरता से नहीं ले सकता था। श्री वर्दुरिन, जो अभी भी अपनी पत्नी पर चोरी-छिपे और रुक-रुक कर नज़रें डाल रहे थे, खेद के साथ देख सकते थे, और अच्छी तरह समझ सकते थे कि वह अब एक ऐसे महाधर्मी के जुनून से भरी हुई थी जो किसी विधर्म को कुचलने में सफल नहीं हो सकता; और इसलिए, स्वान को अपने बयान से पीछे हटने के लिए मनाने की उम्मीद में (क्योंकि अपने विचारों का साहस हमेशा 'दूसरी तरफ' की नज़र में एक प्रकार की कायरता होती है), उन्होंने बीच में ही बात काट दी:

"हमें खुलकर बताएं कि आप उनके बारे में क्या सोचते हैं। आप निश्चिंत रहें, हम यह बात उन्हें नहीं बताएंगे।"

इस पर स्वान ने जवाब दिया: "क्यों, मुझे डचेस से ज़रा भी डर नहीं लगता (अगर आप ला ट्रेमोइल्स की बात कर रहे हैं)। मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि हर कोई उनसे मिलने जाना पसंद करता है। मैं यह तो नहीं कहूँगा कि वह ज़रा भी 'गंभीर' हैं—" उन्होंने इस शब्द का उच्चारण ऐसे किया मानो इसका कोई हास्यास्पद अर्थ हो, क्योंकि उनके बोलने में कुछ मानसिक आदतों के निशान अभी भी मौजूद थे जिन्हें हाल ही में उनके जीवन में आए बदलाव, संगीत के प्रति उनके जुनून से मिली नई

ऊर्जा, ने उन्हें अस्थायी रूप से छोड़ने के लिए प्रेरित किया था, इसलिए कभी-कभी वह अपने विचार काफी गर्मजोशी से व्यक्त करते थे —"लेकिन मैं पूरी ईमानदारी से कह रहा हूँ कि वह बुद्धिमान हैं, जबकि उनके पति सचमुच किताबी कीड़ा हैं। वे आकर्षक लोग हैं।"

उनकी व्याख्या बेहद प्रभावी थी; श्रीमती वर्दुरिन को अब एहसास हो गया था कि अविश्वास की यह एक अवस्था उनके 'छोटे समूह' को कभी भी पूर्ण एकमत होने से रोक देगी, और वह उस दुष्ट के हठधर्मिता पर अपने क्रोध को रोक नहीं पाईं, जो यह नहीं देख पा रहा था कि उसके शब्दों से उन्हें कितना कष्ट हो रहा है, और अपने पीड़ादायक हृदय की गहराई से चिल्लाईं, "आप चाहें तो ऐसा सोच सकते हैं, लेकिन कम से कम हमसे ऐसा कहने की ज़रूरत नहीं है।"

"यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आप बुद्धिमत्ता किसे कहते हैं।" फोर्शेविल को लगा कि अब प्रतिभा दिखाने की उनकी बारी है। "आइए, स्वान, हमें बताइए कि बुद्धिमत्ता से आपका क्या तात्पर्य है।"

"देखो," ओडेट चिल्लाई, "यह उन बड़ी चीजों में से एक है जिनके बारे में मैं उससे बताने की विनती करती हूं, और वह कभी नहीं बताता।"

"ओह, लेकिन..." स्वान ने विरोध जताया।

"अरे, ये तो बिलकुल बकवास है!" ओडेट ने कहा।

"पानी का टैंक?" डॉक्टर ने पूछा।

फोर्शेविल ने आगे पूछा, "क्या आपके लिए बुद्धिमत्ता का मतलब वही है जिसे वे चालाकी भरी बातें कहते हैं; आप जानते हैं, उस तरह के लोग जो समाज में अपनी जगह बना लेते हैं?"

"अपनी मिठाई खत्म करो, ताकि वे तुम्हारी प्लेट हटा सकें!" मैडम वर्दुरिन ने सैनीएट से चिढ़कर कहा, जो सोच में डूबी हुई थी और खाना बंद कर चुकी थी। फिर, शायद अपनी बदतमीज़ी पर थोड़ा शर्मिंदा होकर बोली,

"कोई बात नहीं; आराम से खाओ; कोई जल्दी नहीं है; मैंने तुम्हें सिर्फ दूसरों की वजह से याद दिलाया था, तुम्हें पता है ना; इससे नौकरों को देर लगती है।"

ब्रिचोट ने प्रत्येक अक्षर पर गूंजती हुई ध्वनि के साथ कहना शुरू किया, "उस मनमोहक पुराने अराजकतावादी फेनेलोन द्वारा बुद्धि की एक काफी विचित्र परिभाषा दी गई है..."

"ज़रा इसे सुनो!" श्रीमती वर्दुरिन ने फोर्शेविल और डॉक्टर को उत्साहित करते हुए कहा। "वह हमें फेनेलोन की बुद्धिमत्ता की परिभाषा बताने जा रहे हैं। यह दिलचस्प है। ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलता!"

लेकिन ब्रिचोट ने फेनेलोन की परिभाषा को तब तक रोके रखा जब तक स्वान को अपनी परिभाषा नहीं देनी चाहिए थी। स्वान चुप रहे, और अपने इस नए विश्वासघाती कृत्य से उन्होंने उस शानदार द्वंद्वात्मक प्रतियोगिता को बिगाड़ दिया जिसे श्रीमती वर्दुरिन फोर्शेविल के सामने प्रस्तुत करने का बेसब्री से इंतजार कर रही थीं।

"देखो, मेरे साथ भी बिल्कुल ऐसा ही है!" ओडेट चिढ़कर बोली। "मुझे इस बात का ज़रा भी अफ़सोस नहीं है कि मैं अकेली नहीं हूँ जिसे वह अपने स्तर का नहीं समझता।"

ब्रिचोट ने ज़ोरदार लहजे में पूछा, "ये डी ला ट्रेमोइल्स, जिन्हें श्रीमती वर्दुरिन ने हमारे सामने इतना तुच्छ बताया है, क्या ये संयोगवश उसी दंपत्ति के वंशज हैं, जिनसे उस संभ्रांत और घमंडी महिला, सेविग्ने, ने कहा था कि उन्हें मिलकर बहुत खुशी हुई, क्योंकि इससे उनके किसानों को बहुत फायदा हुआ? सच है, मार्क्विज़ के पास एक और कारण था, जो शायद उनके मामले में पहले आता था, क्योंकि वह दिल से एक कुशल पत्रकार थीं और हमेशा खबरों की तलाश में रहती थीं। और, जो पत्रिका वह नियमित रूप से अपनी बेटी को भेजा करती थीं, उसमें श्रीमती

डी ला ट्रेमोइल्स, अपने सभी प्रभावशाली संपर्कों के माध्यम से अच्छी तरह से सूचित रहकर, विदेश नीति की जानकारी देती थीं।"

"अरे नहीं, मुझे पूरा यकीन है कि वे एक ही परिवार के नहीं हैं," श्रीमती वर्दुरिन ने हताशा से कहा।

सैनीएट, जिसने अपनी बिना छुई प्लेट बटलर को सौंपने के बाद से ही एक बार फिर मौन ध्यान में लीन हो गया था, अंततः उठकर घबराहट भरी हंसी के साथ उन्हें एक कहानी सुनाने लगा कि कैसे उसने एक बार ड्यूक डी ला ट्रेमोइल के साथ भोजन किया था, जिसका सार यह था कि ड्यूक को यह नहीं पता था कि जॉर्ज सैंड एक महिला का छद्म नाम था। स्वान, जो सैनीएट को बहुत पसंद करता था, ड्यूक की संस्कृति को दर्शाने वाले कुछ तथ्य बताने के लिए बाध्य महसूस कर रहा था, जिससे यह साबित हो सके कि उसकी ओर से ऐसी अज्ञानता बिल्कुल असंभव थी; लेकिन अचानक वह रुक गया; बोलते-बोलते उसे एहसास हुआ कि सैनीएट को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, बल्कि वह पहले से ही जानता था कि कहानी असत्य थी क्योंकि उसने इसे उसी क्षण गढ़ा था। वह सज्जन वर्दुरिन परिवार द्वारा उसे हमेशा नीरस समझे जाने से बहुत दुखी था; और चूंकि वह आज शाम सामान्य से अधिक उदास था, इसलिए उसने ठान लिया था कि वह भोजन समाप्त होने से पहले कम से कम एक बार तो मनोरंजक होने में सफल होगा। उसने इतनी जल्दी हार मान ली, अपने खंडहर हो चुके महल को देखकर वह इतना दुखी लग रहा था, और स्वान से इतने कायरतापूर्ण लहजे में जवाब देते हुए उससे विनती कर रहा था कि वह उस खंडन को जारी न रखे जो पहले ही अनावश्यक हो चुका था, "ठीक है; ठीक है; वैसे भी, अगर मैंने कोई गलती की भी है तो यह कोई अपराध नहीं है, मुझे उम्मीद है," कि स्वान उसे यह कहकर दिलासा देना चाहता था कि कहानी निःसंदेह सच और बेहद हास्यास्पद थी। डॉक्टर, जो

सुन रहा था, उसे लगा कि "Se non è vero" कहने का यही सही समय है, लेकिन वह शब्दों को लेकर पूरी तरह आश्वस्त नहीं था, और पकड़े जाने से डर रहा था।

रात के खाने के बाद, फोर्शेविल डॉक्टर के पास गए। "वह बिल्कुल भी बदसूरत नहीं रही होंगी, मैडम वर्दुरिन; वैसे भी, वह एक ऐसी महिला हैं जिनसे आप खुलकर बात कर सकते हैं; मुझे बस यही चाहिए। बेशक, उनका चेहरा थोड़ा चौड़ा हो रहा है। लेकिन मैडम डी क्रेसी! वह एक ऐसी छोटी महिला हैं जो सब कुछ जानती हैं। मेरी कसम, एक नज़र में ही पता चल जाता है कि उस लड़की की नज़र अमेरिकी नज़र जैसी है। हम मैडम डी क्रेसी की बात कर रहे हैं," उन्होंने समझाया, तभी डॉक्टर वर्दुरिन भी उनके साथ शामिल हो गए, उनके मुंह में पाइप था। "मैं कहूंगा कि, नारी रूप के एक नमूने के रूप में——"

"बिजली कड़कने से बेहतर तो मैं इसे अपने बिस्तर में ही सह लूँ!" ये शब्द कॉटार्ड के मुँह से फूट पड़े, जो काफी देर से व्यर्थ ही फोर्शेविल के साँस लेने के विराम का इंतज़ार कर रहा था, ताकि वह अपना पुराना घिसा-पिटा चुटकुला सुना सके। उसे डर था कि अगर बातचीत का रुख बदल गया तो शायद उसे यह मौका दोबारा न मिले। अब उसने इसे उसी सहजता और आत्मविश्वास के साथ सुनाया, जो अक्सर किसी तैयार चुटकुले में छिपी ठंडक और भावनाओं की हल्की सी हलचल को छुपाने की कोशिश में दिखाई देता है। फोर्शेविल चुटकुला समझ गया और उसे खूब मज़ा आया। जहाँ तक एम. वर्दुरिन की बात है, वह भी अपनी हँसी नहीं रोक पा रहा था। उसने हाल ही में अपनी पत्नी से अलग, लेकिन उतना ही सरल और स्पष्ट, एक प्रतीक के माध्यम से इसे व्यक्त करने का तरीका खोज लिया था। जैसे ही वह 'हँसते-हँसते काँपते' हुए सिर और कंधों को हिलाना शुरू करता, वैसे ही उसे खाँसी भी आने लगती, मानो

ज़ोर से हँसते-हँसते उसने अपने पाइप से एक घूँट धुआँ निगल लिया हो। और पाइप को अपने मुंह में मजबूती से दबाए रखकर वह घुटन और हंसी के इस मूक अभिनय को अनिश्चित काल तक जारी रख सकता था। इस प्रकार वह और श्रीमती वर्दुरिन (जो कमरे के दूसरे कोने में, जहां चित्रकार उन्हें कहानी सुना रहा था, अपनी आंखें बंद कर रही थीं, मानो अपना चेहरा हाथों में छिपाने की तैयारी में हों) थिएटर में दो मुखौटों की तरह लग रहे थे, जिनमें से प्रत्येक हास्य का प्रतिनिधित्व कर रहा था, लेकिन अलग-अलग तरीके से।

एम. वर्दुरिन ने अपनी पाइप मुंह से न निकालकर अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था, क्योंकि कॉटार्ड को एक पल के लिए कमरे से बाहर जाना पड़ा, और उसने एक मजाकिया व्यंग्य बुदबुदाया, जो उसने हाल ही में सीखा था और अब जब भी उसे उस जगह जाना होता था, वह इसे दोहराता था: "मुझे बस एक मिनट के लिए ड्यूक डी'औमाले से मिलने जाना है," इतने मजाकिया अंदाज में कि एम. वर्दुरिन की खांसी फिर से शुरू हो गई।

"अब, अपने मुंह से पाइप निकालो; क्या तुम नहीं देख सकते, अगर तुम इस तरह अपनी हंसी को रोकने की कोशिश करोगे तो तुम्हारा दम घुट जाएगा," श्रीमती वर्दुरिन ने शराब की एक ट्रे लेकर आते हुए सलाह दी।

"आपके पति कितने मज़ेदार इंसान हैं; उनमें गजब की हाज़िरजवाबी है!" फोर्शेविल ने श्रीमती कॉटार्ड से कहा। "शुक्रिया, शुक्रिया, मुझ जैसा बूढ़ा सिपाही कभी भी शराब पीने से मना नहीं कर सकता।"

"एम. डी फोर्शेविल को ओडेट आकर्षक लगती है," एम. वर्दुरिन ने अपनी पत्नी से कहा।

"अरे, आपको पता है, वो आपसे किसी दिन दोपहर के भोजन पर दोबारा मिलना चाहती है। हमें इसका इंतज़ाम करना होगा, लेकिन किसी भी

हालत में स्वान को इसके बारे में पता मत चलने देना। वो सब कुछ बिगाड़ देता है, आपको पता है ना। मेरा मतलब ये नहीं है कि आप रात के खाने पर न आएं, बिल्कुल; हम आपसे अक्सर मिलने की उम्मीद करते हैं। अब जब गर्म मौसम आ रहा है, तो हम जब भी हो सकेगा बाहर खाना खाएंगे। आपको बोरियत तो नहीं होगी ना, कभी-कभार जंगल में एक शांत सा खाना? बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया, ये तो बहुत ही आनंददायक होगा..."

"क्या तुम आज शाम कोई काम नहीं करोगे?" उसने अचानक छोटे पियानोवादक पर चिल्लाते हुए कहा, मानो उसे फोर्शेविल जैसे महत्वपूर्ण 'नए व्यक्ति' के सामने अपनी अचूक बुद्धि और 'वफादारों' पर अपनी निरंकुश शक्ति का प्रदर्शन करने का अवसर मिल गया हो।

"एम. डी फोर्शेविल अभी आपके बारे में कुछ भयानक कहने ही वाले थे," श्रीमती कॉटार्ड ने अपने पति को कमरे में वापस आते ही चेतावनी दी। और वह, फोर्शेविल के कुलीन जन्म के विचार को, जो पूरे रात के खाने के दौरान उनके दिमाग में छाया रहा था, फिर से बोलने लगे: "मैं अभी एक बैरोनेस, बैरोनेस पुटबस का इलाज कर रहा हूँ; क्या धर्मयुद्ध में कुछ पुटबस नहीं थीं? खैर, पोमेरेनिया में एक झील है जो प्लेस डे ला कॉनकॉर्ड से दस गुना बड़ी है। मैं उनका शुष्क गठिया का इलाज कर रहा हूँ; वह एक आकर्षक महिला हैं। मुझे लगता है कि श्रीमती वर्दुरिन भी उन्हें जानती हैं।"

इसके बाद, फोर्शेविल को जब श्रीमती कॉटार्ड के साथ अकेले होने का मौका मिला, तो उन्होंने उनके पति के बारे में अपनी सकारात्मक राय पूरी करते हुए कहा: "वह भी एक दिलचस्प आदमी हैं; आप देख सकते हैं कि वह कुछ अच्छे लोगों को जानते हैं। अरे वाह! वे डॉक्टर तो बहुत कुछ जान लेते हैं।"

"क्या आप चाहते हैं कि मैं एम. स्वान के लिए रचित सोनाटा का वह अंश

बजाऊं?" पियानोवादक ने पूछा।
“ये क्या बकवास है? उम्मीद है ये सोनाटा-स्नेक तो नहीं है!” एम. डी फोर्शेविल ने प्रभाव पैदा करने की कोशिश में चिल्लाकर कहा। लेकिन डॉ. कॉटार्ड, जिन्होंने ये शब्द-खेल पहले कभी नहीं सुना था, इसका मतलब समझ नहीं पाए और उन्हें लगा कि एम. डी फोर्शेविल से कोई गलती हो गई है। उन्होंने बेबाकी से बीच में आकर उसे सुधारते हुए कहा: “नहीं, नहीं। ये शब्द सर्पेंट-ए-सोनेट्स नहीं, सर्पेंट-ए-सोनेट्स है!” उन्होंने जोश, अधीरता और जीत के भाव से समझाया।
फोर्शेविल ने उन्हें चुटकुला समझाया। डॉक्टर शर्म से लाल हो गए।
"आप मानेंगे कि यह बुरा नहीं है, है ना, डॉक्टर?"
"अरे! मुझे तो यह बहुत पहले से पता था।"
फिर वे शांत हो गए; वायलिन की लहराती हुई कंपन ध्वनि ने इसकी सूचना दी, जो उससे दो सप्तक ऊपर ध्वनि के एक कठोर अंगरक्षक की तरह थी—और जैसे किसी पहाड़ी इलाके में, सीधे नीचे गिरते झरने की प्रतीत होने वाली स्थिरता के विपरीत, कोई दो सौ फीट नीचे घाटी में चलती हुई एक नन्ही सी स्त्री की आकृति को देख सकता है—वह छोटा सा वाक्यांश अभी प्रकट हुआ था, दूर लेकिन सुंदर, अपने पारदर्शी, निरंतर और मधुर पर्दे के लंबे, धीरे-धीरे खुलने से सुरक्षित। और स्वान, अपने अंतर्मन में, उसकी ओर मुड़ा, उससे ऐसे बात की जैसे वह अपने प्रेम के रहस्य का विश्वासपात्र हो, जैसे ओडेट की कोई सहेली हो जो उसे आश्वस्त करे कि उसे इस फोर्शेविल पर ध्यान देने की कोई आवश्यकता नहीं है।
"अरे! आप बहुत देर से आए हैं!" श्रीमती वर्दुरिन ने 'आस्थावान' लोगों में से एक का अभिवादन किया, जिन्हें केवल 'रात के खाने के बाद आने' का निमंत्रण दिया गया था। "हमारे यहाँ ब्रिचोट का भोजन बेजोड़ था! आपने

ऐसी वाक्पटुता कभी नहीं सुनी होगी! लेकिन वे चले गए हैं। है ना, श्रीमान स्वान? मुझे लगता है कि आप उनसे पहली बार मिले हैं," उन्होंने यह बात ज़ोर देकर कही कि स्वान का परिचय उन्हीं के माध्यम से हुआ था। "है ना; क्या वे लाजवाब नहीं थे, हमारे ब्रिचोट?"

स्वान ने विनम्रतापूर्वक सिर झुकाया।

"नहीं? आपको दिलचस्पी नहीं थी?" उसने रूखेपन से पूछा।

"लेकिन मैं आपको यकीन दिलाता हूँ, मैं तो पूरी तरह मंत्रमुग्ध हो गया था। शायद वो मेरी पसंद के हिसाब से थोड़ा ज्यादा ही दबंग और थोड़ा ज्यादा ही हंसमुख है। मैं चाहूँगा कि वो कभी-कभी थोड़ा कम आत्मविश्वासी और थोड़ा ज्यादा सहनशील हो, लेकिन ऐसा लगता है कि उसे बहुत कुछ पता है, और कुल मिलाकर वो एक बहुत ही समझदार इंसान लगता है।"

पार्टी बहुत देर से समाप्त हुई। कॉटार्ड ने अपनी पत्नी से सबसे पहले कहा: "मैंने श्रीमती वर्दुरिन को आज रात जैसी अवस्था में शायद ही कभी देखा हो।"

"आपकी मैडम वर्दुरिन आखिर हैं क्या? थोड़ी अजीब हैं, है ना?" फोर्शेविल ने चित्रकार से कहा, जिसे उसने लिफ्ट देने की पेशकश की थी। ओडेट ने उसके जाने को अफसोस के साथ देखा; वह स्वान को घर ले जाने से मना करने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी, लेकिन गाड़ी में उसका मूड खराब था और वह चिड़चिड़ी थी, और जब उसने पूछा कि क्या वह अंदर आ सकता है, तो उसने अधीरता से कंधे उचकाते हुए जवाब दिया, "शायद हाँ।" जब वे सब चले गए, तो मैडम वर्दुरिन ने अपने पति से कहा: "क्या आपने ध्यान दिया कि जब हम मैडम ला ट्रेमोइल के बारे में बात कर रहे थे, तो स्वान कैसे हँसा, कितनी बेवकूफी भरी हंसी थी!"

उसने कई बार गौर किया था कि स्वान और फोर्शेविल ने उस महिला के

नाम से पहले 'दे' शब्द को हटा दिया था। उसे इस बात पर ज़रा भी शक नहीं था कि यह जानबूझकर किया गया था, ताकि यह दिखाया जा सके कि वे उपाधि से डरते नहीं हैं। उसने भी उनकी इस अकड़ को अपनाने का मन बना लिया था, लेकिन उसे व्याकरणिक रूप से यह ठीक से समझ नहीं आया था कि इसे किस तरह से इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इसके अलावा, उनकी वाणी की स्वाभाविक भ्रष्टता ने उनके अटल गणतंत्रवाद को भी पराजित कर दिया, और वे सहज रूप से "द डे ला ट्रेमोइल्स" या, बल्कि (संगीत-हॉल गायकों और व्यंग्यचित्रों के नीचे 'कैप्शन' लिखने वालों द्वारा प्रचलित संक्षिप्त रूप में, जो 'डे' को हटा देते हैं), "द डी'ला ट्रेमोइल्स" कहती थीं, लेकिन उन्होंने तुरंत खुद को सुधारते हुए कहा, "मैडम ला ट्रेमोइल। डचेस, जैसा कि स्वान उन्हें कहते हैं," उन्होंने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ जोड़ा, जिससे यह सिद्ध हो गया कि वे केवल उद्धृत कर रही थीं, और इस तरह के बचकाने और बेतुके वर्गीकरण के लिए स्वयं जरा भी जिम्मेदारी नहीं लेंगी।

"मुझे यह कहने में कोई आपत्ति नहीं है कि मैंने उसे बेहद मूर्ख समझा।"

एम. वर्दुरिन ने बात आगे बढ़ाई। "वह ईमानदार नहीं है। वह एक धूर्त व्यक्ति है, जो हमेशा एक पक्ष से दूसरे पक्ष के बीच झूलता रहता है। वह हमेशा दोनों तरफ भागने की कोशिश करता है। उसमें और फोर्शेविल में कितना फर्क है! कम से कम फोर्शेविल में तो एक ऐसा व्यक्ति है जो सीधे-सीधे अपनी राय बताता है। या तो आप उससे सहमत होते हैं या नहीं। दूसरे व्यक्ति की तरह नहीं, जो कभी भी स्पष्ट नहीं होता कि वह किस तरफ है। वैसे, क्या आपने गौर किया कि ओडेट फोर्शेविल के प्रति पूरी तरह से समर्पित थी, और मैं उसे दोष भी नहीं देता। और फिर, अगर स्वान हम पर अपना दबदबा कायम करने की कोशिश करता है, संकटग्रस्त डचेसों का रक्षक बनने की, तो कम से कम दूसरे व्यक्ति के

पास एक उपाधि तो है; वह हमेशा कॉम्टे डी फोर्शेविल ही रहेगा!" उन्होंने ये शब्द बड़ी नज़ाकत से अपने होठों से निकाले, मानो उस पद के इतिहास के हर पन्ने से परिचित होकर, वह उसी तरह के अन्य पदों के संबंध में उसके मूल्य का सटीक आकलन कर रहे हों।

"मुझे यह कहने में कोई आपत्ति नहीं है," श्रीमती वर्दुरिन ने आगे कहा, "कि उन्होंने ब्रिचोट के खिलाफ कुछ बेहद ज़हरीले और बिल्कुल बेतुके आरोप लगाना उचित समझा। ज़ाहिर है, जब उन्होंने देखा कि ब्रिचोट इस घर में लोकप्रिय हैं, तो यह हम पर पलटवार करने, हमारी पार्टी खराब करने का एक तरीका था। मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ, परिवार के प्यारे, अच्छे दोस्त, जो जाते समय सीढ़ियों पर आप सभी को खूब खरी-खोटी सुनाते हैं।"

"क्या मैंने ऐसा नहीं कहा था?" उसके पति ने पलटवार किया। "वह तो बस एक नाकामयाब इंसान है; एक बेचारा छोटा सा अभागा जो बड़ी-बड़ी चीजों से ईर्ष्या करते हुए पागल होकर जिंदगी गुजारता है।"

यदि सच्चाई पता चल जाती, तो उन 'वफादारों' में से कोई भी स्वान से कहीं अधिक द्वेषी नहीं होता; परन्तु बाकी सब अपनी दुर्भावना को दिखावटी शिष्टाचार, भावनाओं और सौहार्द की छोटी-छोटी चिंगारियों से नरम करने की सावधानी बरतते; जबकि स्वान की ओर से थोड़ी सी भी संकोच की झलक, बिना किसी ऐसे पारंपरिक सूत्र जैसे "बेशक, मैं कुछ नहीं कहना चाहता—" के, जिस पर उतरना वह कतई पसंद नहीं करता, उन्हें जानबूझकर किया गया विश्वासघात प्रतीत होती। कुछ मौलिक और प्रतिष्ठित लेखक ऐसे होते हैं जिनमें थोड़ी सी भी 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' घृणित मानी जाती है क्योंकि उन्होंने जनता की रुचि को खुश करने और उसे प्रचलित सामान्य अभिव्यक्तियों को परोसने से शुरुआत नहीं की है; इसी प्रक्रिया से स्वान ने एम. वर्दुरिन को क्रोधित किया। उनके

मामले में भी, और उनके मामले में भी, उनकी भाषा की नवीनता ने ही उनके श्रोताओं को उनके इरादों की भयावहता पर संदेह करने के लिए प्रेरित किया।

स्वान अभी भी उस अपमान से अनजान था जो वर्दुरिन के यहाँ उसे मंडरा रहा था, और वह प्रेम की प्रशंसा भरी निगाहों से उनकी सभी बेतुकी बातों को अत्यंत सकारात्मक रूप में देखता रहा।

आम तौर पर वह ओडेट से शाम के अलावा कभी मिलने का समय तय नहीं करता था; उसे डर था कि अगर वह दिन में भी उससे मिलने जाएगा तो वह उससे ऊब जाएगी; साथ ही, वह ओडेट के मन में अपनी जगह को एक घंटे के लिए भी खोना नहीं चाहता था, इसलिए वह लगातार उसका ध्यान आकर्षित करने का मौका ढूंढता रहता था, चाहे वह किसी भी तरह से हो जो उसे अप्रिय न लगे। अगर किसी फूलवाले या जौहरी की दुकान की खिड़की में कोई पौधा या गहना उसकी नज़र में आ जाता, तो वह तुरंत उसे ओडेट को भेजने के बारे में सोचता, यह सोचकर कि उन्हें देखकर उसे जो खुशी मिली है, वही खुशी ओडेट को भी स्वाभाविक रूप से महसूस होगी और उसके लिए उसका स्नेह बढ़ जाएगा; और वह उन्हें तुरंत रू ला पेरूज़ ले जाने का आदेश देता, ताकि जब ओडेट उससे भेंट प्राप्त करे, तो वह मानो मानो उसके सामने उपस्थित हो। वह हमेशा इस बात को लेकर विशेष रूप से चिंतित रहता था कि शाम को बाहर जाने से पहले उसे ये उपहार मिल जाएं, ताकि उसके प्रति कृतज्ञता का भाव वर्दुरिन के घर पहुंचने पर उसके स्वागत को और भी कोमल बना दे। शायद, दुकानदार जल्दी करे तो, वह खाने से पहले उसका पत्र भी ले आए, या खुद उसके दरवाजे पर आकर धन्यवाद देने का एक छोटा सा विशेष अवसर भी मनाए। पहले की तरह, जब उसने क्रोध और तिरस्कार की प्रतिक्रिया से उसके चरित्र पर प्रभाव डालने का प्रयास किया था, अब

वह संतुष्टि के भाव से उसके उन अंतरंग भावों को उजागर करना चाहता था, जिन्हें उसने अब तक प्रकट नहीं किया था।

अक्सर पैसों की कमी के कारण वह शर्मिंदा होती थी, और किसी लेनदार के दबाव में आकर उससे मदद मांगती थी। उसे इसमें आनंद आता था, जैसे उसे हर उस चीज़ में आनंद आता था जिससे ओडेट उसके प्यार से, या केवल उसके प्रभाव से, या उसके द्वारा उसके उपयोग की सीमा से प्रभावित हो सके। शायद अगर शुरुआत में किसी ने उससे कहा होता, "तुम्हारी हैसियत ही उसे आकर्षित करती है," या इस स्तर पर, "तुम्हारे पैसे से ही तो वह वास्तव में प्यार करती है," तो वह इस सुझाव पर विश्वास नहीं करता, और न ही उसे इस बात से कोई खास दुख होता कि लोग उसे उससे जुड़ा हुआ मानते हैं, कि लोग उन्हें किसी ऐसे बंधन से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं जो घमंड या धन जैसा हो। लेकिन अगर उसने इस संभावना को स्वीकार भी कर लिया होता, तो शायद उसे यह जानकर कोई दुख नहीं होता कि ओडेट का उसके प्रति प्रेम केवल स्नेह या उसमें पाए जाने वाले किसी आकर्षक गुण से कहीं अधिक स्थायी आधार पर टिका था; एक ठोस, व्यावसायिक हित पर आधारित था; एक ऐसी रुचि जो उस घातक दिन को हमेशा के लिए टाल देगी जब वह उनके रिश्ते को खत्म करने के लिए प्रलोभित हो सकती थी। फिलहाल, जब वह उस पर उपहार लुटा रहा था और हर तरह की सेवा कर रहा था, तब वह उन लाभों पर भरोसा कर सकता था जो उसके शारीरिक या बौद्धिक गुणों में निहित नहीं थे, और खुद को आकर्षक बनाने के अंतहीन, कष्टदायक प्रयास को छोड़ सकता था। और प्रेमी होने का यह आनंद, केवल प्रेम के सहारे जीने का आनंद, जिसकी वास्तविकता के बारे में वह संशय में रहता था, और वह कीमत जो अंततः उसे एक अमूर्त संवेदनाओं के शौकीन के रूप में चुकानी पड़ेगी, उसकी दृष्टि में इसका मूल्य बढ़ा देती थी—ठीक वैसे ही

जैसे लोग जो समुद्र के दृश्य और उसकी लहरों की ध्वनि के वास्तव में आनंददायक होने के बारे में संशय में रहते हैं, जब वे किसी होटल में एक कमरे के लिए प्रतिदिन कई पाउंड देने को तैयार हो जाते हैं, जहाँ से उस दृश्य और ध्वनि का आनंद लिया जा सकता है, तो वे आश्वस्त हो जाते हैं कि वे आनंददायक हैं, साथ ही साथ अपने स्वयं के स्वाद की दुर्लभ गुणवत्ता और पूर्ण अलगाव के बारे में भी आश्वस्त हो जाते हैं।

एक दिन, जब इस तरह के विचारों ने उन्हें एक बार फिर उस समय की याद दिला दी जब किसी ने उनसे ओडेट के बारे में एक 'रखी हुई' औरत के रूप में बात की थी, और जब उन्होंने एक बार फिर उस विचित्र मानवीकरण, उस 'रखी हुई' औरत—अज्ञात और राक्षसी गुणों का एक इंद्रधनुषी मिश्रण, जो गुस्ताव मोरो की किसी कल्पना की तरह विष टपकते फूलों से सजी और कीमती रत्नों से बुनी हुई थी—की तुलना उस ओडेट से की, जिसके चेहरे पर उन्होंने एक पीड़ित के लिए दया, अन्याय के कृत्य के प्रति आक्रोश, दयालुता के कार्य के लिए कृतज्ञता के वही भाव देखे थे, जो उन्होंने पहले अपनी माँ के चेहरे पर और दोस्तों के चेहरों पर देखे थे; वह ओडेट, जिसकी बातचीत अक्सर उन चीजों पर केंद्रित होती थी जिन्हें वह खुद किसी और से बेहतर जानते थे, उनका संग्रह, उनका कमरा, उनका पुराना नौकर, उनका बैंकर, जिसने उनके सभी स्वामित्व-दस्तावेज और बांड रखे थे;—बैंकर के विचार ने उन्हें याद दिलाया कि उन्हें जल्द ही उससे कुछ पैसे निकालने के लिए मिलना होगा। और वास्तव में, यदि इस महीने वह ओडेट की आर्थिक कठिनाइयों में पिछले महीने की तुलना में कम उदारता से सहायता करे, जब उसने उसे पाँच हज़ार फ़्रैंक दिए थे, यदि वह उसे हीरे का हार न दे जिसकी उसे बहुत इच्छा थी, तो वह अपनी उदारता के प्रति ओडेट की प्रशंसा को कम होने देगा, उस कृतज्ञता को कम होने देगा जिसने उसे इतना प्रसन्न किया था,

और यहाँ तक कि इस बात का जोखिम भी उठाएगा कि ओडेट यह सोचे कि उसके प्रति उसका प्रेम (जैसा कि उसने उसके प्रत्यक्ष प्रदर्शनों को कम होते देखा था) स्वयं कम हो गया है। और फिर, अचानक, उसने खुद से पूछा कि क्या 'किसी महिला को अपने पास रखने' का यही अर्थ नहीं था (मानो, वास्तव में, 'अपने पास रखने' का यह विचार उन तत्वों से लिया जा सकता है जो न तो रहस्यमय हैं और न ही विकृत, बल्कि उसके दैनिक जीवन की अंतरंग दिनचर्या से संबंधित हैं, जैसे कि वह हज़ार फ़्रैंक का नोट, एक परिचित और घरेलू वस्तु, जगह-जगह से फटा हुआ और गोंद लगे कागज़ से सिला हुआ, जिसे उसके नौकर ने घर के हिसाब-किताब और किराया चुकाने के बाद, उस पुरानी लेखन मेज की दराज में बंद कर दिया था जहाँ से उसने इसे चार अन्य नोटों के साथ ओडेट को भेजने के लिए निकाला था) और क्या ओडेट पर, चूंकि वह उसे जानता था (क्योंकि उसने एक पल के लिए भी कल्पना नहीं की थी कि वह पहले कभी किसी और से एक पैसा भी ले सकती थी), वह उपाधि लागू करना संभव नहीं था, जिसे वह उस पर पूरी तरह से अनुपयुक्त मानता था, यानी 'रखी हुई' महिला की उपाधि। वह इस विचार को आगे नहीं बढ़ा सका, क्योंकि अचानक उस मानसिक सुस्ती ने, जो उसमें जन्मजात, रुक-रुक कर और संयोगवश थी, उसके मस्तिष्क में प्रकाश की हर किरण को बुझा दिया, ठीक उसी तरह जैसे बाद में, जब हर जगह बिजली की रोशनी लग चुकी थी, तो सिर्फ एक स्विच दबाकर घर की सारी रोशनी बंद करना संभव हो गया था। उसका दिमाग एक पल के लिए अंधेरे में भटकता रहा, उसने अपना चश्मा उतारा, उसे पोंछा, अपनी आँखों पर हाथ फेरा, लेकिन उसे कोई रोशनी नहीं दिखी, जब तक कि वह एक बिल्कुल अलग विचार से रूबरू नहीं हो गया - यह अहसास कि उसे अगले महीने ओडेट को पाँच हज़ार फ़्रैंक के बजाय छह या सात हज़ार फ़्रैंक के नोट भेजने होंगे, बस

उसे सरप्राइज़ देने और उसे खुश करने के लिए।
शाम को, जब वह वर्दुरिन्स के घर ओडेट से मिलने का समय होने तक घर पर नहीं रुकता था, या यूँ कहें कि बोइस और विशेषकर सेंट-क्लाउड में स्थित उन खुले रेस्तरांओं में से किसी एक में, जहाँ वे अक्सर जाया करते थे, तो वह उन आलीशान घरों में से किसी एक में भोजन करने चला जाता था, जहाँ वह कभी नियमित अतिथि हुआ करता था। वह उन लोगों से संपर्क नहीं तोड़ना चाहता था, जो उसकी जानकारी के अनुसार, किसी दिन ओडेट के काम आ सकते थे, और जिनकी बदौलत वह अक्सर उसके लिए कोई विशेष सुविधा या सुख का प्रबंध कर पाता था। इसके अलावा, वह इतने लंबे समय से उच्च समाज के शिष्टाचार और आराम का आदी हो चुका था कि उसके मन में इसके प्रति अरुचि के साथ-साथ इसकी तीव्र आवश्यकता भी पैदा हो गई थी, जिसके परिणामस्वरूप, जब वह उस स्थिति में पहुँच गया जहाँ उसे सबसे साधारण आवास भी सबसे आलीशान महलों के बराबर लगने लगे, तो उसकी इंद्रियाँ बाद वाले की इतनी अभ्यस्त हो चुकी थीं कि वह पहले वाले में प्रवेश किए बिना तीव्र बेचैनी महसूस किए बिना नहीं रह सकता था। छोटे-छोटे परिवारों के प्रति भी उनके मन में उतना ही सम्मान था—इतना गहरा आत्मीयता का भाव जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की होगी—जितना कि कम आमदनी वाले परिवारों के प्रति, जो उन्हें अपने फ्लैटों में नृत्य के लिए आमंत्रित करते थे ("सीधे ऊपर पाँचवीं मंजिल पर, और बाएँ ओर का दरवाजा"), जितना कि पेरिस में सबसे शानदार पार्टियाँ देने वाली प्रिंसेस डी पार्म के प्रति; लेकिन जब उन्होंने खुद को घर की मालकिन के शयनकक्ष में परिवारों के मुखियाओं के साथ पाया, तो उन्हें वास्तव में 'किसी पार्टी में होने' का एहसास नहीं हुआ, जबकि तौलिये से ढके हुए वॉश-हैंड-स्टैंड और क्लोकरूम में बदले गए बिस्तरों का दृश्य, जिन पर

टोपियों और ओवरकोटों का ढेर लगा हुआ था, उन्हें वही घुटन भरी अनुभूति दे रहा था जो आजकल, आधी जिंदगी बिजली की रोशनी के आदी हो चुके लोगों को धुएँ वाले लैंप या बुझाने की जरूरत वाली मोमबत्ती से होती है। यदि वे बाहर भोजन कर रहे होते, तो वे अपनी गाड़ी साढ़े सात बजे मंगवाते; कपड़े बदलते समय, वह हर पल ओडेट के बारे में सोचता रहता था, और इस तरह वह कभी अकेला नहीं होता था, क्योंकि ओडेट के निरंतर विचार से उन पलों में भी वही अनोखा आकर्षण होता था जब वह उससे अलग होता था, जैसा कि उन पलों में होता था जब वह उसके साथ होती थी। वह अपनी गाड़ी में बैठता और चला जाता, लेकिन वह जानता था कि यह विचार उसके पीछे-पीछे आ गया है और उसकी गोद में ऐसे बैठ गया है जैसे कोई पालतू जानवर जिसे वह हर जगह ले जा सकता है, और जिसे वह खाने की मेज पर अपने साथ रखता है, बिना अपने साथी मेहमानों की नज़र में आए। वह उसे सहलाता और प्यार करता, उससे खुद को गर्म करता, और जैसे ही उस पर सुस्ती छा जाती, उसके गले और नाक में हल्की सी सिहरन होती—यह एक नया अनुभव था—जैसे ही वह कोलंबाइन का गुच्छा अपने बटनहोल में लगाता। वह कुछ समय से न तो ठीक महसूस कर रहा था और न ही खुश, खासकर तब से जब ओडेट फोर्शेविल को वर्दुरिन के घर ले आई थी, और वह कुछ समय के लिए गाँव में आराम करने जाना चाहता था। लेकिन ओडेट के वहाँ रहते हुए, वह एक दिन के लिए भी पेरिस छोड़ने की हिम्मत नहीं जुटा सका। मौसम सुहावना था; वसंत का सबसे खूबसूरत समय था। और भले ही वह पत्थरों के शहर से होते हुए एक ऐसे घर में जा रहा था जहाँ घास या बगीचा नहीं था, फिर भी उसकी आँखों के सामने हमेशा उसका अपना पार्क रहता था, जो कॉम्ब्रे के पास था। वहाँ, दोपहर चार बजे, एस्पैरगस की क्यारी में जाने से पहले, मेसेग्लिस से खेतों के पार बहने

वाली ठंडी हवा के कारण, वह बगीचे में हॉर्नबीम के मंडप के नीचे और साथ ही फॉरगेट-मी-नॉट और आइरिस से घिरे तालाब के किनारे, हवा की सुगंधित ठंडक का आनंद ले सकता था; और जहाँ, जब वह रात के खाने के लिए बैठता, तो माली के कुशल हाथों से संवारे और लपेटे गए करौंदे और गुलाब उसकी मेज के चारों ओर फैले होते थे।

रात के खाने के बाद, यदि उन्हें बोइस या सेंट-क्लाउड में जल्दी कोई अपॉइंटमेंट होता, तो वे मेज से उठकर इतनी अचानक घर से निकल जाते —खासकर अगर बारिश की आशंका होती, और इस तरह 'वफादारों' को उनके सामान्य समय से पहले तितर-बितर कर देते—कि एक बार प्रिंसेस डेस लाउम्स (जिनके घर में रात का खाना इतना देर से हुआ था कि स्वान कॉफी आने से पहले ही बोइस के द्वीप पर वर्दुरिन परिवार से मिलने के लिए निकल गए थे) ने टिप्पणी की:

"सच में, अगर स्वान तीस साल बड़ा होता और उसे मधुमेह होता, तो शायद उसके इस तरह भाग जाने का कोई बहाना हो सकता था। वह हम सबको एक मजाक समझता हुआ प्रतीत होता है।"

उसने खुद को यकीन दिलाया कि बसंत का वो आकर्षण, जिसका आनंद लेने के लिए वो कॉम्ब्रे नहीं जा सका, कम से कम उसे आइल डेस सिग्नस या सेंट-क्लाउड में तो मिल ही जाएगा। लेकिन चूंकि उसके मन में सिर्फ ओडेट का ही ख्याल था, इसलिए वो घर लौट आया, यह जाने बिना कि उसने नई पत्तियों की खुशबू चखी थी या चांद चमक रहा था। रेस्टोरेंट के पियानो पर बगीचे में बजने वाली सोनाटा की छोटी सी धुन से उसका स्वागत होगा। अगर बगीचे में पियानो नहीं होता, तो वर्दुरिन परिवार ने बड़ी मशक्कत करके पियानो को या तो किसी निजी कमरे से या रेस्टोरेंट से ही मंगवाया होता; ऐसा इसलिए नहीं था कि स्वान फिर से पसंदीदा बन गया था; बिलकुल भी नहीं। लेकिन किसी के लिए, चाहे वो उन्हें

नापसंद ही क्यों न हो, मनोरंजन का एक अनोखा तरीका अपनाने का विचार, तैयारी में लगे समय के दौरान, उनके मन में क्षणिक आत्मीयता और स्नेह का भाव जगा देता। बीच-बीच में वो खुद को याद दिलाता कि एक और सुहावनी बसंत की शाम ढल रही है, और खुद को पेड़ों और आसमान को देखने के लिए मजबूर करता। लेकिन ओडेट की उपस्थिति से उत्पन्न होने वाली उत्तेजना की स्थिति, साथ ही साथ एक बुखार की बीमारी, जो कुछ समय से उसे लगभग ठीक नहीं कर पाई थी, ने उससे उस शांति और आराम की भावना को छीन लिया, जो प्रकृति से प्राप्त होने वाले हमारे अनुभवों के लिए एक अनिवार्य पृष्ठभूमि है।

एक शाम, जब स्वान ने वर्दुरिन परिवार के साथ भोजन करने की सहमति दी और भोजन के दौरान उल्लेख किया कि उन्हें अगले दिन पुराने साथियों के संघ के वार्षिक भोज में शामिल होना है, तो ओडेट ने तुरंत मेज के उस पार, सबके सामने, फोर्शेविल के सामने, जो अब 'वफादारों' में से एक था, चित्रकार के सामने, कॉटार्ड के सामने चिल्लाकर कहा:

"हाँ, मुझे पता है, कल तुम्हारा भोज है; मैं घर पहुँचने तक तुमसे नहीं मिल पाऊँगी; ज़्यादा देर मत करना।"

हालाँकि स्वान ने ओडेट द्वारा 'वफादारों' में से किसी एक के प्रति दिखाई गई मित्रता पर कभी गंभीर आपत्ति नहीं जताई थी, फिर भी जब उसने सबके सामने बड़ी सहजता से यह स्वीकार किया कि वे हर शाम नियमित रूप से मिलते हैं, उसके घर में उसकी विशेष स्थिति है, और ओडेट उसे ज़्यादा पसंद करती है, तो उसे अत्यंत आनंद हुआ। यह सच था कि स्वान ने अक्सर सोचा था कि ओडेट कोई असाधारण महिला नहीं थी; और अपने से इतनी ही हीन प्राणी पर जो प्रभुत्व वह रखता था, उसे सभी 'वफादारों' के सामने घोषित होते सुनकर उसे कोई विशेष प्रसन्नता नहीं हुई; लेकिन जब से उसने देखा था कि उसके अलावा कई अन्य पुरुषों को

ओडेट एक आकर्षक और मनमोहक महिला लगती थी, तब से उसके शरीर के आकर्षण ने उसके दिल के छोटे से छोटे कण पर भी पूर्ण अधिकार प्राप्त करने की तीव्र इच्छा जगा दी थी। और शाम के उन पलों को, जो वह उसके घर में बिताता था, उसके लिए अमूल्य हो गए थे। उन पलों में वह उसे अपनी गोद में बिठाता, उससे पूछता कि वह इस या उस विषय पर क्या सोचती है, और उस अनमोल खजाने को गिनता जिससे वह अपनी सारी सांसारिक संपत्तियों में से एकमात्र जुड़ा हुआ था। इसलिए, इस भोजन के बाद, उसे एक तरफ ले जाकर, उसने बड़े ही स्नेह से उसका धन्यवाद किया, और अपनी कृतज्ञता की गहराई से उसे यह जताने की कोशिश की कि वह उसे कितना आनंद दे सकती है, और सबसे बड़ा आनंद यह था कि जब तक उसका प्रेम बना रहे और वह कमजोर बना रहे, तब तक वह उसे ईर्ष्या के हमलों से बचाए रखे।

अगली शाम जब वह भोज से लौटा, तो मूसलाधार बारिश हो रही थी और उसके पास अपनी विक्टोरिया पोशाक के अलावा कुछ नहीं था। एक मित्र ने उसे बंद गाड़ी में घर छोड़ने की पेशकश की, और ओडेट ने उसे आमंत्रित करके यह आश्वासन दिया था कि वह किसी और की प्रतीक्षा नहीं कर रही है, इसलिए वह शांत मन और निश्चिंत होकर बारिश में निकलने के बजाय घर जाकर सो सकता था। लेकिन शायद, अगर उसे यह दिखाई देता कि वह हर शाम बिना किसी अपवाद के उसके साथ बिताने के अपने संकल्प पर कायम नहीं है, तो वह लापरवाह हो सकती थी और उसके लिए उस एक शाम को खाली रखना भूल सकती थी जिस दिन वह विशेष रूप से ऐसा चाहता था।

ग्यारह बज चुके थे जब वह उसके दरवाजे पर पहुँचा, और जब उसने पहले न आ पाने के लिए क्षमा मांगी, तो उसने शिकायत की कि वास्तव में बहुत देर हो चुकी है; तूफान के कारण उसकी तबीयत खराब हो गई थी,

उसके सिर में दर्द हो रहा था, और उसने उसे चेतावनी दी कि वह उसे आधे घंटे से अधिक नहीं रुकने देगी, आधी रात को वह उसे वापस भेज देगी; थोड़ी देर बाद उसे थकान महसूस हुई और वह सोना चाहती थी।
"तो आज रात कैटलिया नहीं मिलेगी?" उसने पूछा, "और मैं तो एक प्यारी सी कैटलिया का बेसब्री से इंतजार कर रहा था।"
लेकिन उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी; घबराकर बोली: "नहीं, प्रिय, आज रात कैटलिया नहीं। क्या तुम नहीं देख सकते, मेरी तबीयत ठीक नहीं है?"
"इससे आपको फायदा हो सकता था, लेकिन मैं आपको परेशान नहीं करूंगा।"
उसने उससे जाने से पहले बत्ती बंद करने की विनती की; उसने उसके बिस्तर के चारों ओर पर्दे कसकर खींच दिए और उसे छोड़कर चला गया। लेकिन, जब वह अपने घर में वापस आया, तो अचानक उसके मन में यह विचार आया कि शायद ओडेट उस शाम किसी और का इंतज़ार कर रही थी, कि उसने केवल थके होने का नाटक किया था, कि उसने उससे बत्ती बंद करने के लिए इसलिए कहा था ताकि वह यह मान ले कि वह सोने जा रही है, कि उसके घर से निकलते ही उसने बत्ती फिर से जला दी थी, और उस अजनबी के लिए अपना दरवाज़ा खोल दिया था जो रात भर उसका मेहमान रहने वाला था। उसने अपनी घड़ी देखी। उसे छोड़े हुए लगभग डेढ़ घंटा हो चुका था; वह बाहर गया, एक टैक्सी ली, और उसे उसके घर के पास, एक छोटी सी गली में रोका जो उसके घर के पीछे वाली गली से समकोण पर चलती थी, और जिस गली से वह कभी-कभी उसके शयनकक्ष की खिड़की पर दस्तक देने जाता था, ताकि वह उसे अंदर आने दे। उसने अपनी टैक्सी छोड़ दी; गलियाँ सुनसान और अंधेरी थीं; वह कुछ कदम चला और लगभग उसके घर के सामने आ गया। खिड़कियों की कतार के टिमटिमाते अंधेरे के बीच, जिनकी बत्तियाँ बहुत

पहले बुझ चुकी थीं, उसने एक खिड़की देखी, और केवल एक ही खिड़की, जिसके शटरों की पट्टियों के बीच से छलकती हुई, किसी शराब की भट्टी की तरह अपने रहस्यमय सुनहरे रस पर टपकती हुई, वह रोशनी जो अंदर के कमरे को भर देती थी, एक ऐसी रोशनी जो कई शामों को, जैसे ही वह दूर से गली में मुड़ता था, उसके दिल को अपने संदेश से खुश कर देती थी: "वह वहाँ है—तुम्हारा इंतज़ार कर रही है," और अब उसे इस बात से तड़पा रही थी: "वह वहाँ उस आदमी के साथ है जिसका वह इंतज़ार कर रही थी।" उसे जानना ही होगा कि वह कौन है; वह दबे पांव दीवार के सहारे तब तक चलता रहा जब तक वह खिड़की तक नहीं पहुँच गया, लेकिन शटरों की तिरछी सलाखों के बीच से उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया; रात के सन्नाटे में उसे केवल बातचीत की हल्की फुसफुसाहट सुनाई दी। उस प्रकाश को देखते हुए उसे कितनी पीड़ा सहनी पड़ी, जिसके सुनहरे वातावरण में, बंद खिड़की के पीछे, अदृश्य और घृणित जोड़ा घूम रहा था, और उस बड़बड़ाहट को सुनते हुए जिसने उसके जाने के बाद चुपके से अंदर घुस आए उस व्यक्ति की उपस्थिति, ओडेट के विश्वासघात और उस क्षण अजनबी के साथ उसके द्वारा भोगे जा रहे सुखों को प्रकट किया।

फिर भी उसे अपने आने का कोई अफसोस नहीं था; जिस पीड़ा ने उसे अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर किया था, उसकी तीव्रता अनिश्चितता के समाप्त होने के साथ ही कम हो गई थी, क्योंकि ओडेट का दूसरा जीवन, जिसके बारे में उसे उस पहले क्षण में अचानक एक असहाय संदेह हुआ था, निश्चित रूप से उसके सामने, लगभग उसकी पकड़ में, उसकी आँखों के सामने, दीपक की पूरी रोशनी में, कैद और वहीं रखा हुआ था, एक अनजाने कैदी की तरह, उस कमरे में जिसमें वह जब चाहे, अपना रास्ता बनाकर उसे आश्चर्यचकित कर सकता था और उस पर कब्जा कर सकता

था; या यूँ कहें कि वह खिड़कियों पर दस्तक देगा, जैसा कि वह अक्सर तब करता था जब वह बहुत देर से वहाँ आता था, और उस संकेत से ओडेट को कम से कम यह पता चल जाएगा कि वह जानता है, कि उसने रोशनी देखी है और आवाजें सुनी हैं; कुछ क्षण पहले तक वह स्वयं कल्पना कर रहा था कि वह उस पर हंस रही है, कि वह दूसरे के साथ यह साझा कर रही है कि उसे कितनी कुशलता से धोखा दिया गया है, लेकिन अब वह उन्हें देख रहा था, अपने भ्रम में अडिग और दृढ़, स्वयं उसी के द्वारा धोखा खाकर फँस गए, जिसे वे एक मील दूर समझ रहे थे, लेकिन वह स्वयं वहाँ मौजूद था, एक योजना के साथ, इस ज्ञान के साथ कि वह अगले ही पल शटर पर दस्तक देने वाला है। और शायद उस क्षण उसे जो अनुभूति हुई (लगभग एक सुखद अनुभूति), वह किसी संदेह के समाधान से राहत और किसी पीड़ा के शांत होने से कहीं अधिक थी; एक बौद्धिक आनंद था। अगर प्रेम में पड़ने के बाद से, उसके लिए चीज़ों में कुछ हद तक वो कोमल आकर्षण फिर से जागृत हो गया था जो बहुत पहले हुआ करता था—भले ही ऐसा तभी होता था जब ओडेट की याद या विचार से उन पर प्रकाश पड़ता था—अब उसकी एक और क्षमता, जो उसकी युवावस्था के अध्ययनशील दिनों में प्रमुख थी, ओडेट ने उसमें नई जान फूंक दी थी—सत्य के प्रति जुनून, लेकिन एक ऐसे सत्य के लिए जो उसके और उसकी प्रेमिका के बीच में था, जिसका प्रकाश केवल उसी से मिलता था—एक निजी और व्यक्तिगत सत्य जिसका एकमात्र लक्ष्य (एक असीम रूप से अनमोल लक्ष्य, और अपनी पूर्ण सुंदरता में लगभग निराकार) ओडेट थी—ओडेट अपने कार्यों में, अपने परिवेश में, अपनी योजनाओं में और अपने अतीत में। अपने जीवन के हर दूसरे दौर में, किसी दूसरे व्यक्ति के छोटे-छोटे रोज़मर्रा के शब्द और कार्य स्वान को हमेशा पूरी तरह से बेकार लगते थे; अगर ऐसी बातों की गपशप उसे

सुनाई जाती, तो वह उसे महत्वहीन समझकर खारिज कर देता, और जब वह सुनता भी तो उसके दिमाग का केवल सबसे निचला, सबसे साधारण हिस्सा ही दिलचस्पी लेता था; ऐसे क्षणों में वह पूरी तरह से सुस्त और प्रेरणाहीन महसूस करता था। लेकिन प्रेम के इस विचित्र दौर में दूसरे व्यक्ति का व्यक्तित्व इतना विस्तृत, इतना गहरा हो जाता है कि किसी स्त्री के दैनिक जीवन की छोटी से छोटी बात जानने की जो जिज्ञासा अब उसके भीतर जागृत हो जाती है, वही ज्ञान की प्यास है जिसके साथ उसने कभी इतिहास का अध्ययन किया था। और वे सभी कार्य, जिनसे अब तक वह शर्म से पीछे हट जाता था, जैसे आज रात किसी खिड़की के बाहर जासूसी करना, कल शायद किसी को उकसाने वाले प्रश्न पूछना, नौकरों को रिश्वत देना, दरवाजों पर कान लगाना, अब उसे पांडुलिपियों को समझने, साक्ष्यों का विश्लेषण करने, प्राचीन स्मारकों की व्याख्या करने के समान ही प्रतीत होते हैं, अर्थात् वैज्ञानिक अनुसंधान की विभिन्न विधियों के समान, जिनमें से प्रत्येक का अपना एक निश्चित बौद्धिक मूल्य है और सत्य की खोज में वैध रूप से प्रयोग किया जा सकता है।

जैसे ही उसका हाथ खिड़की के शटर की ओर बढ़ा, उसे इस बात का एहसास हुआ कि ओडेट को अब पता चल जाएगा कि उसे उस पर शक था, कि वह लौट आया है, और उसने खुद को उसकी खिड़की के बाहर छिपा लिया था। उसने अक्सर उसे बताया था कि उसे ईर्ष्यालु पुरुषों से, जासूसी करने वाले प्रेमियों से कितनी नफरत है। वह जो करने जा रहा था वह बेहद अजीब होगा, और वह उसे हमेशा के लिए नफरत करेगी, जबकि अभी, इस पल के लिए, जब तक वह दस्तक नहीं देता, शायद बेवफाई करते हुए भी, वह उससे प्यार करती है। कितनी बार ऐसा होता है कि भविष्य की खुशियों की उम्मीदें तात्कालिक सुख की लालसा में कुर्बान हो जाती हैं। लेकिन सच्चाई जानने की उसकी इच्छा कहीं अधिक प्रबल थी,

और उसे ओडेट के प्रति उसकी चाहत से कहीं अधिक श्रेष्ठ प्रतीत हुई। वह जानता था कि कुछ घटनाओं की सच्ची कहानी, जिसे सटीक और पूर्ण रूप से पुनः रचने के लिए वह अपना जीवन भी दे देता, उस खिड़की के भीतर पढ़ी जा सकती थी, जो प्रकाश की किरणों से जगमगा रही थी, ठीक वैसे ही जैसे उन अनमोल पांडुलिपियों के सुनहरे, प्रकाशित पन्नों में, जिनके कलात्मक खजानों से विद्वान प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। वह उस संक्षिप्त, क्षणभंगुर, अनमोल प्रतिलेख में, उस पारदर्शी पृष्ठ पर, जो इतना गर्म और इतना सुंदर था, उस सत्य को जानने की संतुष्टि के लिए तरस रहा था, जिसने उसे इतना भावुक कर दिया था। और इसके अलावा, जो लाभ वह महसूस कर रहा था—जिसे वह इतनी बेसब्री से महसूस करना चाहता था—कि उसे उन पर बढ़त हासिल है, वह शायद जानने में उतना नहीं था जितना उन्हें यह दिखाने में था कि वह जानता है। वह अपने पंजों पर खड़ा हो गया। उसने दस्तक दी। उन्होंने नहीं सुना; उसने फिर दस्तक दी; ज़ोर से; उनकी बातचीत बंद हो गई। एक आदमी की आवाज़—उसने अपने कान लगाकर यह पहचानने की कोशिश की कि ओडेट के जिन दोस्तों को वह जानता था, उनमें से किसकी आवाज़ हो सकती है—ने पूछा:

"वो कौन है?"

वह आवाज़ को लेकर आश्वस्त नहीं था। उसने एक बार फिर दस्तक दी। पहले खिड़की, फिर शटर खुल गए। अब पीछे हटने का समय नहीं था, और चूंकि उसे सब कुछ जानना ज़रूरी था, ताकि वह बहुत तुच्छ, ईर्ष्यालु और जिज्ञासु न लगे, उसने एक लापरवाह, हार्दिक और स्वागतपूर्ण स्वर में पुकारा:

"कृपया परेशान न हों; मैं बस संयोगवश वहां से गुजर रहा था और मुझे रोशनी दिखाई दी। मैं जानना चाहता था कि क्या आप बेहतर महसूस कर

रहे हैं।"

उसने ऊपर देखा। खिड़की में दो बूढ़े सज्जन उसके सामने खड़े थे, उनमें से एक के हाथ में दीपक था; और उनके पीछे वह उस कमरे में देख सकता था, एक ऐसा कमरा जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। ओडेट के पास देर से आने पर उसकी यह आदत बन गई थी कि वह उसकी खिड़की को इस तथ्य से पहचान लेता था कि वह एक जैसी दिखने वाली खिड़कियों की कतार में अकेली रोशन खिड़की होती थी। इस बार वह रोशनी से भ्रमित हो गया था और बगल वाले घर की खिड़की पर दस्तक दे दी थी। उसने जितना हो सका माफी मांगी और जल्दी से घर लौट आया, इस बात से बेहद खुश था कि उसकी जिज्ञासा शांत होने से उनका प्यार बरकरार रहा, और ओडेट के साथ इतने लंबे समय तक उदासीनता का दिखावा करने के बाद, उसने अब ईर्ष्या दिखाकर उसे अपने जुनून की अधिकता का वह सबूत नहीं दिया था, जो प्रेमियों के जोड़े में, एक को दूसरे से पर्याप्त प्यार करने के दायित्व से पूरी तरह मुक्त कर देता है। उसने इस घटना के बारे में उससे कभी बात नहीं की, उसने खुद भी इसके बारे में सोचना बंद कर दिया। लेकिन कभी-कभी भटकते हुए उसके विचार उस स्मृति पर आ पड़ते, जहाँ वह अनसुनी पड़ी रहती, उसे झकझोर कर जीवंत कर देते, उसकी चेतना में और गहराई तक धकेल देते, और उसे एक तीव्र, गहरी पीड़ा से तड़पा देते। मानो यह कोई शारीरिक पीड़ा हो, स्वान का मन उसे कम करने में असमर्थ था; हालाँकि, शारीरिक पीड़ा मन से स्वतंत्र होती है, इसलिए मन उस पर चिंतन कर सकता है, यह देख सकता है कि वह कम हो गई है, क्षण भर के लिए समाप्त हो गई है। लेकिन इस मानसिक पीड़ा के साथ, मन मात्र उसे याद करके ही उसे फिर से उत्पन्न कर देता था। इसके बारे में न सोचने का निश्चय करना भी उसके बारे में सोचना ही था, उससे पीड़ित होना ही था।

और जब वह अपने मित्रों से बातचीत में अपनी पीड़ाओं को भूल जाता, तो अचानक अनायास ही बोले गए एक शब्द से उसका चेहरा इस प्रकार बदल जाता, जैसे किसी घायल व्यक्ति का चेहरा तब बदल जाता है जब कोई अनाड़ी हाथ उसके दर्दग्रस्त अंग को छू लेता है। जब वह ओडेट से दूर आया, तो वह खुश था, उसे शांति का अनुभव हुआ; उसे वह मुस्कान याद आई, जिसके साथ उसने हल्के-फुल्के व्यंग्य में उससे इस या उस आदमी के बारे में बात की थी; एक ऐसी मुस्कान जो उसके लिए पूरी तरह से कोमलता से भरी थी; उसे उसका सिर का वह भारीपन याद आया, जिसे उसने मानो अपनी धुरी से उठाकर, अपनी इच्छा के विरुद्ध, उसके होठों पर झुका दिया था, जैसा कि उसने उस पहली शाम को गाड़ी में किया था; उसकी उदास निगाहें उस पर टिकी थीं जब वह उसकी बाहों में सिमटी हुई थी, उसका झुका हुआ सिर उसके कंधों के बीच सिमटता हुआ प्रतीत हो रहा था, मानो ठंड से सिकुड़ रहा हो।

लेकिन फिर अचानक, उसकी ईर्ष्या, जो उसके प्रेम की परछाई थी, ने उसे उस नई मुस्कान का पूरक, उसका विपरीत रूप प्रस्तुत कर दिया, जिससे उसने उसी शाम उसका अभिवादन किया था—जिससे अब वह कुटिलतापूर्वक स्वान का उपहास कर रही थी, जबकि वह अपना प्रेम किसी और को अर्पित कर रही थी—उसके सिर झुकाने का, लेकिन अब किसी और के होठों पर, और (लेकिन एक अजनबी को दिए गए) स्नेह के उन सभी भावों का जो उसने उसके प्रति दिखाए थे। और ये सभी मोहक यादें जो वह उसके घर से लेकर आया था, मानो एक डिजाइनर द्वारा प्रस्तुत सजावट की योजनाओं के कई रेखाचित्रों, मोटे-मोटे खाकों के समान थीं, जो स्वान को उसके विभिन्न भावों का अंदाजा लगाने में सक्षम बनाती थीं, चाहे वे जुनून से प्रज्वलित हों या मंद, जिन्हें वह दूसरों के लिए अपना सकती थी। परिणामस्वरूप, उसे उसके साथ बिताए हर सुख, हर

नए स्पर्श (जिसे उसने ईजाद किया था और जिसे उसने यह बताकर मूर्खता की थी कि वह कितना आनंददायक था), और उसमें पाए गए हर नए आकर्षण पर पछतावा होने लगा, क्योंकि वह जानता था कि एक पल बाद, वे उसके गुप्त यातना कक्ष में उपकरणों के संग्रह को समृद्ध करने के लिए चले जाएंगे।

मामला तब और पेचीदा हो गया जब स्वान को कुछ दिन पहले ओडेट की आँखों में अचानक दिखे एक भाव की याद आई, जिसे उसने पहली बार देखा था। यह घटना वर्दुरिन के घर पर रात के खाने के बाद हुई थी। चाहे इसका कारण यह हो कि फोर्शेविल, यह जानते हुए कि उसका बहनोई, सैनियेट, उनके पक्ष में नहीं था, उसे उपहास का पात्र बनाने और उसकी कीमत पर अपनी शान दिखाने का फैसला किया था, या सैनियेट द्वारा की गई किसी अटपटी टिप्पणी से वह नाराज हो गया था, हालांकि बाकी लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया था क्योंकि उन्हें उस टिप्पणी में छिपी किसी भी असभ्य बात का कोई अंदाजा नहीं था, या शायद इसलिए कि वह कुछ समय से एक ऐसे साथी अतिथि को घर से निकालने का अवसर तलाश रहा था जो उसके बारे में बहुत कुछ जानता था, और जिसे वह इतना संवेदनशील जानता था कि कभी-कभी तो वह खुद भी कमरे में उसकी उपस्थिति मात्र से शर्मिंदा हो जाता था, फोर्शेविल ने सैनियेट के असभ्य कथन का जवाब गालियों की बौछार से दिया, उसे अपमानित करने के लिए हर संभव प्रयास किया, और अपने शिकार के डर, दर्द और विनती से और भी उग्र हो गया, जिससे बेचारा, मैडम से पूछने के बाद... वेरदुरिन ने जब पूछा कि क्या उसे रुकना चाहिए, तो कोई जवाब न मिलने पर वह हकलाते हुए, घबराया हुआ और आँखों में आँसू लिए घर से निकल गया। ओडेट इस दृश्य को भावहीन होकर देखती रही; लेकिन जब सैनीएट के पीछे दरवाजा बंद हो गया, तो उसने अपने चेहरे के सामान्य

भावों को जबरदस्ती दबा लिया, मानो वह फोर्शेविल के समान ही अशिष्ट हो; उसकी आँखों में उसकी धृष्टता पर बधाई की एक द्वेषपूर्ण मुस्कान और उस बेचारे पर व्यंग्यात्मक दया झलक रही थी जो इसका शिकार हुआ था। उसने अपराध में मिलीभगत का भाव दिखाते हुए उसकी ओर देखा, जिसका स्पष्ट अर्थ था: "उसने तो उसका काम तमाम कर दिया, या मैं बहुत बड़ी गलती कर रही हूँ। क्या तुमने देखा कि वह कितना मूर्ख लग रहा था? वह सचमुच रो रहा था।" जब फोर्शेविल की नज़रें उससे मिलीं, तो वह पल भर में अपने गुस्से, या कहें कि बनावटी गुस्से से शांत हो गया, और मुस्कुराते हुए बोला: "उसे बस थोड़ा सा व्यवहार करना चाहिए था और वह आज भी यहीं होता; डांट-फटकार से किसी को कभी कोई नुकसान नहीं होता।"

एक दिन जब स्वान दोपहर में जल्दी ही किसी से मिलने निकला, और जिसे वह देखना चाहता था, वह घर पर नहीं मिला, तो उसे ओडेट के घर जाने का ख्याल आया। हालाँकि वह आमतौर पर उस समय उसके घर नहीं जाता था, लेकिन वह जानता था कि वह चाय के समय तक घर पर आराम कर रही होती है या पत्र लिख रही होती है, और अगर उसे कोई परेशानी न हो तो वह उससे कुछ पल के लिए मिलना चाहेगा। चौकीदार ने उसे बताया कि उसे लगता है कि ओडेट घर पर है; स्वान ने घंटी बजाई, उसे लगा कि उसने कोई आवाज़ सुनी है, कदमों की आहट सुनी है, लेकिन कोई दरवाज़े पर नहीं आया। चिंतित और परेशान होकर वह उसके घर के पीछे वाली दूसरी छोटी गली में गया और उसके शयनकक्ष की खिड़की के नीचे खड़ा हो गया; पर्दे लगे हुए थे और उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था; उसने ज़ोर से खिड़की पर दस्तक दी, चिल्लाया; फिर भी कोई नहीं आया। उसने देखा कि पड़ोसी उसे घूर रहे थे। वह मुँह फेरकर चला गया, यह सोचते हुए कि शायद कदमों की आहट सुनने का उसका भ्रम

गलत था; लेकिन वह संदेह में इतना डूबा हुआ था कि उसका ध्यान किसी और चीज़ पर नहीं लग रहा था। एक घंटे इंतजार करने के बाद वह लौटा। उसने उसे घर पर पाया; उसने उसे बताया कि जब उसने घंटी बजाई थी तब वह घर में ही थी, लेकिन सो रही थी; घंटी की आवाज से उसकी नींद खुली; उसने अनुमान लगाया कि स्वान ही होगा, और उससे मिलने के लिए बाहर भागी, लेकिन वह जा चुका था। उसने खिड़की पर उसकी दस्तक तो सुनी ही थी। स्वान ने इस कहानी में सच्चाई का वह अंश तुरंत पहचान लिया, जिसे झूठे लोग अचानक पकड़े जाने पर, अपने मनगढ़ंत झूठ में शामिल करके खुद को तसल्ली देते हैं, यह सोचकर कि इसे सुरक्षित रूप से शामिल किया जा सकता है, और इससे पूरी कहानी में सच्चाई का आभास हो जाएगा। यह सच था कि जब ओडेट ने कुछ ऐसा किया होता जिसे वह प्रकट नहीं करना चाहती थी, तो वह उसे अपने दिल के किसी गुप्त कोने में छुपाने की पूरी कोशिश करती थी। लेकिन जैसे ही वह उस आदमी के सामने आई जिससे उसे झूठ बोलना पड़ा था, वह बेचैन हो गई, उसके सारे विचार मोम की तरह पिघल गए, उसकी कल्पनाशीलता और तर्क शक्ति पंगु हो गई, वह चाहे जितना भी दिमाग खपा ले, उसे खालीपन ही मिलेगा; फिर भी, उसे कुछ तो कहना ही था, और ठीक वही बात उसकी पहुँच में थी जिसे वह छिपाना चाहती थी, जो सच होने के नाते एकमात्र बची हुई बात थी। उसने उसमें से एक छोटा सा अंश तोड़ दिया, जिसका अपने आप में कोई महत्व नहीं था, और खुद को यकीन दिलाया कि आखिरकार यही करना सबसे अच्छा है, क्योंकि यह सच का एक अंश था, और इसलिए झूठ से कम खतरनाक था। "खैर, यह सच है," उसने खुद से कहा; "यह हमेशा अच्छी बात है; वह पूछताछ कर सकता है; वह देख लेगा कि यह सच है; वैसे भी, यह वह बात नहीं होगी जिससे मेरा झूठ पकड़ा जाएगा।" लेकिन वह गलत थी; यही वह बात थी

जिससे उसका झूठ पकड़ा गया; उसने इस बात पर ध्यान नहीं दिया था कि सत्य के इस खंडित विवरण के नुकीले किनारे थे जिन्हें फिट नहीं किया जा सकता था, सिवाय सत्य के उन सन्निहित टुकड़ों के जिनसे उसने मनमाने ढंग से इसे अलग कर दिया था, और वे किनारे, चाहे वह इसे किसी भी काल्पनिक विवरण में डाल दे, अपने अतिव्यापी कोणों और उन अंतरालों से जिन्हें वह भरना भूल गई थी, यह दर्शाते रहेंगे कि इसका उचित स्थान कहीं और है।

"वह मानती है कि उसने मेरी घंटी सुनी, फिर दरवाजा खटखटाया, वह जानती थी कि मैं ही हूँ, और वह मुझसे मिलना चाहती थी," स्वान ने मन ही मन सोचा। "लेकिन यह इस तथ्य से मेल नहीं खाता कि उसने मुझे अंदर नहीं आने दिया।"

हालांकि, उसने इस विसंगति की ओर उसका ध्यान नहीं दिलाया, क्योंकि उसे लगा कि अगर ओडेट को अपने हाल पर छोड़ दिया जाए, तो शायद वह कोई झूठ बोल दे जिससे उसे सच्चाई का हल्का सा संकेत मिल जाए; वह बोली; उसने उसे बीच में नहीं टोका, उसने उत्सुकता और दुख भरी श्रद्धा से उसके होठों से निकले शब्दों को सुना, यह महसूस करते हुए (और सही महसूस करते हुए, क्योंकि वह बोलते समय सच्चाई को उनके पीछे छिपा रही थी) कि किसी पवित्र स्थान के पर्दे की तरह, वे एक धुंधली छाप संजोए हुए हैं, उस असीम रूप से अनमोल और, अफसोस, अकल्पनीय सच्चाई की एक धुंधली रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं;—वह दोपहर तीन बजे क्या कर रही थी, जब उसने उसे बुलाया था—एक सच्चाई जिसे वह इन मिथ्याकरणों, अपठनीय और दिव्य निशानों के अलावा कभी नहीं जान पाएगा, एक सच्चाई जो अब से केवल इस प्राणी की गुप्त स्मृति में ही विद्यमान रहेगी, जो इसके मूल्य से पूरी तरह अनजान रहते हुए इस पर विचार करेगी, लेकिन इसे कभी उसके सामने प्रकट नहीं करेगी। यह सच

था कि उसे कभी-कभी यह गहरा संदेह होता था कि ओडेट की दैनिक गतिविधियाँ अपने आप में कोई विशेष रुचिकर नहीं थीं, और अन्य पुरुषों के साथ उसके संबंध, स्वाभाविक रूप से, सार्वभौमिक अर्थ में, या प्रत्येक समझदार व्यक्ति के लिए, ऐसी उदासी का भाव नहीं जगाते थे जो बुखार पैदा कर सके या आत्महत्या के लिए उकसा सके। ऐसे क्षणों में, उसे एहसास होता था कि वह रुचि, वह उदासी, उसके भीतर केवल एक बीमारी की तरह मौजूद थी, और एक बार जब वह इस बीमारी से ठीक हो जाएगा, तो ओडेट के कार्य, उसके द्वारा दिए गए चुंबन, फिर से अनगिनत अन्य महिलाओं के कार्यों की तरह हानिरहित हो जाएँगे। लेकिन यह चेतना कि जिस पीड़ादायक जिज्ञासा से स्वान अब उनका अध्ययन कर रहा था, उसका स्रोत केवल स्वयं उसके भीतर था, उसे यह निर्णय लेने के लिए पर्याप्त नहीं थी कि उस जिज्ञासा को महत्वपूर्ण मानना और उसे संतुष्ट करने के लिए हर संभव कदम उठाना अनुचित था। वास्तव में, स्वान उस उम्र तक पहुँच चुके थे, जिसकी विचारधारा—उनके मामले में, उस समय की प्रचलित विचारधारा के साथ-साथ उस समूह की विचारधारा से भी समर्थित थी जिसमें उन्होंने अपना अधिकांश जीवन बिताया था, प्रिंसेस डेस लाउम्स के आसपास का वह समूह, जिसमें यह माना जाता था कि किसी की बुद्धि हर चीज में अविश्वास की शक्ति के साथ बढ़ती है, और इसके प्रत्येक सदस्य के व्यक्तिगत स्वाद के अलावा कुछ भी वास्तविक और निर्विवाद नहीं खोजा जा सकता था—अब युवावस्था की विचारधारा नहीं रही, बल्कि एक सकारात्मक, लगभग चिकित्सीय विचारधारा बन गई है, उन पुरुषों की विचारधारा जो अपनी आकांक्षाओं को बाहरी वस्तुओं पर केंद्रित करने के बजाय, बीते वर्षों के संचय से आदतों और भावनाओं के एक निश्चित अवशेष को अलग करने का प्रयास करते हैं जिसे वे विशिष्ट और स्थायी मान सकते हैं, और जिसके साथ वे जानबूझकर,

किसी भी चीज से पहले, यह सुनिश्चित करेंगे कि जिस प्रकार का जीवन वे अपनाना चाहते हैं वह असंगत साबित न हो। स्वान ने ओडेट के कार्यों के बारे में जानकारी न होने से होने वाले कष्ट के लिए अपने जीवन में प्रावधान करना बुद्धिमानी समझा, ठीक उसी तरह जैसे उसने नम जलवायु के कारण अपने एक्जिमा में होने वाली वृद्धि के लिए प्रावधान किया था; उसने अपने बजट में ओडेट के दैनिक कार्यों के संबंध में ऐसी जानकारी प्राप्त करने के लिए एक बड़ी राशि के व्यय का प्रावधान किया था, जिसकी कमी उसे दुखी कर सकती थी, ठीक उसी तरह जैसे उसने अन्य रुचियों की पूर्ति के लिए एक मार्जिन आरक्षित किया था जिनसे उसे आनंद की अपेक्षा थी (कम से कम, प्रेम में पड़ने से पहले), जैसे कि वस्तुओं को इकट्ठा करने का शौक या अच्छा खाना पकाने का शौक।

जब उसने ओडेट से विदा लेकर घर लौटने का प्रस्ताव रखा, तो उसने उससे थोड़ी देर और रुकने की विनती की और यहाँ तक कि उसे ज़बरदस्ती रोक भी लिया, जब वह जाने के लिए दरवाज़ा खोल रहा था तो उसने उसका हाथ पकड़ लिया। लेकिन उसने इस पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि बातचीत में होने वाले हाव-भाव, बातों और अन्य छोटी-मोटी घटनाओं के बीच, यह स्वाभाविक है कि हम उन बातों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं जिनमें कोई सच्चाई छिपी होती है और जिसकी हमारी शंकाएँ अंधाधुंध खोज कर रही होती हैं, जबकि हम उन बातों पर ध्यान देते हैं जिनके पीछे कुछ भी छिपा नहीं होता। वह बार-बार कहती रही: "कितनी अफ़सोस की बात है; तुम कभी दोपहर में नहीं आते, और जब कभी आते हो तो मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है।" वह भली-भांति जानता था कि वह उससे इतना प्रेम नहीं करती थी कि मात्र उसके न आने पर इतनी दुखी हो जाए, परन्तु वह एक सौम्य स्वभाव की स्त्री थी, जो उसे प्रसन्न रखना चाहती थी और अक्सर उसे ठेस पहुँचाने पर खेद व्यक्त करती थी।

इसलिए उसे यह स्वाभाविक लगा कि इस अवसर पर उसे खेद हो कि उसने उसे उसके साथ एक घंटा बिताने के सुख से वंचित कर दिया, जो उसके लिए, यदि स्वयं के लिए नहीं तो कम से कम उसके लिए, अत्यंत सुखदायी था। फिर भी, यह इतनी मामूली बात थी कि उसका निरंतर दुःख अंततः उसे व्याकुल करने लगा। वह उसे, सामान्य से भी अधिक, 'प्राइमावेरा' के चित्रकार द्वारा चित्रित कुछ स्त्रियों के चेहरों की याद दिला रही थी। उस क्षण, उसके चेहरे पर वही उदास, हृदयविदारक भाव थे, जो असहनीय दुःख के बोझ तले दबने को तैयार प्रतीत होते हैं, जबकि वे केवल शिशु यीशु को अनार से खेलने दे रही होती हैं या मूसा को कुंड में पानी डालते हुए देख रही होती हैं। उसने उसके चेहरे पर पहले भी एक बार ऐसा ही दुख देखा था, लेकिन कब, यह वह अब नहीं कह सकता था। फिर अचानक उसे याद आया; यह तब की बात है जब ओडेट ने मैडम वर्दुरिन से माफी मांगते हुए झूठ बोला था। यह उस शाम की बात है जब वह बीमारी का बहाना बनाकर डिनर से दूर रही थी, जबकि असल में वह स्वान के साथ अकेले रहना चाहती थी। यकीनन, अगर वह सबसे ईमानदार महिला भी होती, तो भी इतने सीधे-सादे झूठ के लिए उसे शायद ही पछतावा होता। लेकिन ओडेट आमतौर पर जो झूठ बोलती थी, वे इतने सीधे-सादे नहीं होते थे, और वे उन बातों को छुपाने के लिए बोले जाते थे जिनसे वह अपने किसी न किसी दोस्त के साथ भयानक मुसीबतों में फंस सकती थी। इसलिए, जब वह डर से कांपते हुए, अपनी रक्षा के लिए खुद को कमजोर समझते हुए, सफलता के प्रति अनिश्चित होकर झूठ बोलती थी, तो वह अत्यधिक थकावट के कारण रोने लगती थी, जैसे बच्चे कभी-कभी नींद न आने पर रोते हैं। वह यह भी जानती थी कि उसका झूठ आम तौर पर उस व्यक्ति को गंभीर रूप से आहत करता है जिसे वह झूठ बोल रही होती है, और अगर उसने झूठ ठीक से नहीं बोला

तो वह उसकी दया पर निर्भर हो सकती है। इसलिए वह उसकी उपस्थिति में एक साथ विनम्र और दोषी महसूस करती थी। और जब उसे कोई मामूली, सामाजिक झूठ बोलना पड़ता था, तो उससे जुड़े जोखिम और उससे जुड़ी यादें उसे थकावट से कमजोर और अपने किए पर पश्चाताप करने के लिए मजबूर कर देती थीं।

अब वह स्वान के लिए कौन सा निराशाजनक झूठ गढ़ रही थी, जिससे उसके चेहरे पर दर्द भरी अभिव्यक्ति और आवाज़ में एक कराह झलक रही थी, जो उसके द्वारा किए जा रहे ज़बरदस्ती के प्रयास के कारण लड़खड़ाती हुई प्रतीत हो रही थी, और वह क्षमा की भीख मांग रही थी? उसे लगा कि वह उससे केवल उस दोपहर हुई घटना की सच्चाई ही नहीं छिपा रही थी, बल्कि कुछ और भी छिपा रही थी, शायद कुछ ऐसा जो अभी तक हुआ नहीं था, लेकिन किसी भी समय हो सकता था, और जब वह होता, तो उस पिछली घटना पर प्रकाश डालता। उसी क्षण, उसने सामने के दरवाजे की घंटी बजने की आवाज़ सुनी। ओडेट बोलती रही, लेकिन उसके शब्द एक अस्पष्ट कराह में बदल गए। उस दोपहर स्वान को न देख पाने का, उसके लिए दरवाजा न खोलने का उसका पछतावा एक गहरी निराशा में बदल गया था।

उसे फाटक बंद होने की आवाज़ सुनाई दी, और एक गाड़ी की आवाज़ भी, मानो कोई जा रहा हो—शायद वही व्यक्ति जिससे स्वान को किसी भी हालत में नहीं मिलना चाहिए—ओडेट के घर पर न होने की सूचना मिलने के बाद। फिर, जब उसने सोचा कि केवल उस समय आकर जब वह आने का आदी नहीं था, उसने उन कई व्यवस्थाओं को बिगाड़ दिया है जिनके बारे में ओडेट नहीं चाहती थी, तो उसे निराशा का ऐसा एहसास हुआ जो लगभग दुख में बदल गया। लेकिन चूंकि वह ओडेट से प्यार करता था, चूंकि वह हमेशा उसके बारे में सोचता रहता था, इसलिए अपने

लिए जो दया उसके मन में आ सकती थी, वह उसने केवल ओडेट के लिए ही महसूस की, और बुदबुदाया: "बेचारी!" जब वह आखिरकार उससे विदा हुआ, तो ओडेट ने मेज पर पड़े कुछ पत्र उठाए और उससे पूछा कि क्या वह कृपा करके उन्हें उसके लिए डाक से भेज देगा। वह डाकघर गया, अपनी जेब से पत्र निकाले, और हर पत्र को बॉक्स में डालने से पहले उस पर पता पढ़ा। सभी पत्र व्यापारियों के नाम थे, सिवाय आखिरी पत्र के, जो फोर्शेविल के नाम था। उसने उसे अपने हाथ में ही रखा। उसने मन ही मन सोचा, "अगर मैं देख लूँ कि इसमें क्या है, तो मुझे पता चल जाएगा कि वह उसे क्या कहकर पुकारती है, उससे क्या कहती है, और क्या सच में उनके बीच कुछ है। शायद, अगर मैं अंदर नहीं देखूँगा, तो ओडेट के प्रति मेरी संवेदनशीलता कम हो जाएगी, क्योंकि इसी तरह मैं उस संदेह से छुटकारा पा सकता हूँ जो शायद उस पर एक कलंक है, जिससे उसे किसी भी हालत में पीड़ा होगी, और जो पत्र डाक में जाने के बाद कभी भी दूर नहीं हो सकता।"

वह डाकघर से निकलकर घर चला गया, लेकिन आखिरी पत्र उसने अपनी जेब में ही रखा था। उसने एक मोमबत्ती जलाई और उस लिफाफे को, जिसे खोलने की हिम्मत उसने नहीं की थी, उसकी लौ के पास ले जाकर देखा। पहले तो उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया, लेकिन लिफाफा पतला था, और उसे अंदर रखे मोटे कार्ड पर दबाकर उसने पारदर्शी कागज के आर-पार अंतिम शब्द पढ़ लिए। वे एक ठंडे, औपचारिक हस्ताक्षर थे। अगर फोर्शेविल के नाम लिखे पत्र को पढ़ने वाले वह खुद न होकर, स्वान के नाम लिखे पत्र को फोर्शेविल ने पढ़ा होता, तो शायद उसे उसमें कुछ और ही, कहीं अधिक कोमल शब्द मिलते! उसने कार्ड को मजबूती से पकड़ लिया, जो लिफाफे के बड़े होने के कारण इधर-उधर खिसक रहा था, और फिर अपनी उंगली और अंगूठे से उसे हिलाते हुए, एक-एक

करके उन पंक्तियों को लिफाफे के उस हिस्से के नीचे लाया जहाँ कागज दोहरा नहीं था, और केवल उसी हिस्से से उसे पढ़ा जा सकता था।
इन तमाम कोशिशों के बावजूद वह इसे स्पष्ट रूप से समझ नहीं पाया। वैसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि उसने इतना तो देख लिया था कि उसे यकीन हो गया था कि पत्र किसी मामूली, महत्वहीन घटना के बारे में था और प्रेम से उसका कोई लेना-देना नहीं था; यह ओडेट के चाचा से संबंधित था। स्वान ने पंक्ति की शुरुआत में "मैं सही थी" साफ-साफ पढ़ लिया था, लेकिन ओडेट ने क्या सही किया था, यह उसे समझ नहीं आया, तभी अचानक एक शब्द, जिसे वह पहले समझ नहीं पाया था, सामने आया और पूरे वाक्य को स्पष्ट कर दिया: "दरवाजा खोलना मेरा सही था; वह मेरे चाचा थे।" दरवाजा खोलना! तो फोर्शेविल वहीं था जब स्वान ने घंटी बजाई थी, और ओडेट ने उसे भगा दिया था; इसीलिए स्वान ने वह आवाज सुनी थी।
उसके बाद उसने पूरा पत्र पढ़ा; अंत में उसने फोर्शेविल के साथ इतने कम औपचारिक व्यवहार के लिए माफी मांगी और उसे याद दिलाया कि वह अपना सिगरेट का डिब्बा उसके घर पर ही छोड़ आया था, ठीक वही बात जो उसने स्वान को उसकी पहली मुलाकातों में से एक के बाद लिखी थी। लेकिन स्वान को उसने आगे लिखा था: "तुम अपना दिल भी क्यों नहीं भूल गए? मैं तुम्हें वह कभी वापस नहीं देती।" फोर्शेविल को उसने ऐसा कुछ नहीं लिखा था; ऐसा कोई संकेत नहीं था जिससे उनके बीच किसी साजिश का पता चले। और, वास्तव में, उसे यह स्वीकार करना पड़ा कि इस पूरे मामले में फोर्शेविल के साथ उससे भी बुरा बर्ताव हुआ था, क्योंकि ओडेट उसे यह विश्वास दिलाने के लिए पत्र लिख रही थी कि उसका आगंतुक उसका चाचा था। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वान ही वह व्यक्ति था जिसे वह महत्व देती थी, और जिसके लिए उसने

दूसरे को दूर भेज दिया था। फिर भी, अगर ओडेट और फोर्शेविल के बीच कुछ भी नहीं था, तो उसने तुरंत दरवाजा क्यों नहीं खोला, उसने यह क्यों कहा, "मैंने दरवाजा खोलकर सही किया; वह मेरा चाचा था।" है ना? अगर उस समय वह कुछ भी गलत नहीं कर रही थी, तो फोर्शेविल ने उसके दरवाजा न खोलने का कारण कैसे निकाला होगा? कुछ देर तक स्वान वहीं खड़ा रहा, दुखी, हैरान, और फिर भी खुश; उस लिफाफे को घूरता रहा जो ओडेट ने बिना किसी संकोच के उसे सौंप दिया था, क्योंकि उसे उसके सम्मान पर पूरा भरोसा था; उस पारदर्शी खिड़की से उसे एक ऐसी घटना का गुप्त इतिहास पता चला था जिसे जानने की उसने कभी उम्मीद नहीं की थी, ओडेट के जीवन का एक अंश, मानो उसकी जानकारी के बिना उस पर की गई एक पतली, चमकदार चीरे से देखा गया हो। फिर उसकी ईर्ष्या इस खोज पर आनंदित हुई, मानो उस ईर्ष्या का अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व हो, जो बेहद स्वार्थी और अपनी शक्ति बढ़ाने वाली हर चीज की भूखी हो, यहाँ तक कि स्वान की कीमत पर भी। अब उसके पास खाने के लिए भोजन था, और स्वान हर शाम लगभग पाँच बजे ओडेट के आने-जाने को लेकर फिर से बेचैन होने लगा, और यह पता लगाने की कोशिश करने लगा कि उस समय फोर्शेविल कहाँ था। स्वान का ओडेट के प्रति स्नेह अब भी उसी रूप में था जो शुरू से ही उस पर थोपा गया था, क्योंकि वह ओडेट के कामों से अनभिज्ञ था और उसकी मानसिक सुस्ती उसे कल्पना से उस अनभिज्ञता को दूर करने से रोकती थी। वह शुरू में ओडेट के पूरे जीवन से ईर्ष्या नहीं करता था, बल्कि केवल उन क्षणों से ईर्ष्या करता था जिनमें किसी घटना को, जिसे उसने शायद गलत समझा था, ने उसे यह सोचने पर मजबूर कर दिया था कि ओडेट ने उसके साथ धोखा किया होगा। उसकी ईर्ष्या, एक ऑक्टोपस की तरह जो पहले एक, फिर दूसरा और अंत में तीसरा टेंटेकल

निकालता है, पहले उस क्षण से, शाम पाँच बजे से, फिर दूसरे से, फिर तीसरे से अटूट रूप से जुड़ गई। लेकिन स्वान अपने कष्टों को गढ़ने में असमर्थ था। वे केवल स्मृति थे, उस पीड़ा का निरंतर बने रहना जो उसे बाहरी रूप से प्राप्त हुई थी।

लेकिन बाहर से, हर चीज़ उसके लिए नया दुख लेकर आई। उसने ओडेट को फोर्शेविल से अलग करने का फैसला किया और उसे कुछ दिनों के लिए दक्षिण की ओर ले गया। लेकिन उसे लगा कि होटल में हर पुरुष उस पर मोहित है और वह भी बदले में उन सभी को मोहित करती है। और इसलिए, जो पुराने दिनों में यात्रा करते समय हमेशा नए लोगों और भीड़-भाड़ वाली जगहों की तलाश करता था, अब ऐसा लग रहा था मानो मानव समाज ने उसे बेरहमी से चोट पहुँचाई हो, और वह मानवद्वेषी कैसे न बन जाता? और वह कैसे मानवद्वेषी न बन जाता, जब उसे हर पुरुष में ओडेट के लिए एक संभावित प्रेमी दिखाई देता था? इस प्रकार उसकी ईर्ष्या ने ओडेट के लिए उसके मन में पहले से मौजूद सुखद, भावुक इच्छा से भी कहीं अधिक स्वान के चरित्र को बदल दिया, और दुनिया की नज़र में उसके चरित्र को समझने वाले बाहरी संकेतों को भी पूरी तरह से बदल दिया।

जिस शाम को उसने फोर्शेविल को लिखे ओडेट के पत्र को बीच में रोककर पढ़ा था, उसके एक महीने बाद, स्वान बोइस में वर्दुरिन परिवार द्वारा आयोजित एक रात्रिभोज में गया। जैसे ही पार्टी समाप्त होने लगी, उसने श्रीमती वर्दुरिन और उनके कुछ मेहमानों के बीच फुसफुसाहट भरी बातचीत सुनी, और उसे लगा कि पियानोवादक को अगले दिन चैटौ में होने वाली पार्टी में आने के लिए याद दिलाया जा रहा है; जबकि स्वान को किसी भी पार्टी में आमंत्रित नहीं किया गया था।

वेरदुरिन दंपति ने केवल फुसफुसाते हुए और अस्पष्ट शब्दों में बात की थी,

लेकिन चित्रकार ने शायद बिना सोचे-समझे चिल्लाकर कहा: "किसी भी प्रकार की कोई रोशनी नहीं होनी चाहिए, और उसे अंधेरे में चांदनी सोनाटा बजानी चाहिए, ताकि हम देख सकें।"

श्रीमती वर्दुरिन ने देखा कि स्वान पास ही में है, और उन्होंने ऐसा भाव धारण कर लिया जिसमें वक्ता को चुप कराने और श्रोता की दृष्टि में स्वयं को निष्कपट दिखाने की दोहरी इच्छा एक तीव्र शून्यता में समाहित हो जाती है; जिसमें बुद्धिमानी से की गई मिलीभगत के अडिग संकेत मासूमियत की मुस्कान से ढक जाते हैं, एक ऐसा भाव जो हमेशा उस व्यक्ति द्वारा अपनाया जाता है जिसने कोई गलती देखी हो, जिसकी भयावहता का पता उसे हो जाता है, भले ही गलती करने वाले को न हो, कम से कम उसे जिसके सामने वह गलती नहीं होनी चाहिए थी। ओडेट अचानक निराशा में डूब गई, मानो उसने जीवन की कठिन चुनौतियों से और संघर्ष न करने का फैसला कर लिया हो। स्वान बेसब्री से उन मिनटों को गिन रहा था जो उसे उस पल से अलग कर रहे थे जब रेस्तरां से निकलने के बाद, जब वह उसे घर ले जा रहा होगा, वह उससे स्पष्टीकरण मांग सकेगा, उससे वादा ले सकेगा कि या तो वह अगले दिन चैटौ नहीं जाएगी, या उसके लिए भी निमंत्रण का इंतजाम करेगी, और उसकी बाहों में अपने उस दर्द को शांत कर सकेगा जो अब भी उसे सता रहा था। आखिरकार गाड़ियाँ मंगाई गईं। श्रीमती वर्दुरिन ने स्वान से कहा:

"अलविदा, फिर। आशा है हम जल्द ही मिलेंगे," उसने अपने दोस्ताना व्यवहार और संयमित मुस्कान से उसे यह जताने से रोकने की कोशिश की कि वह वैसा नहीं कह रही थी जैसा वह हमेशा तब तक कहती आई थी:

"तो कल चैटौ में, और परसों मेरे घर पर।" श्री और श्रीमती वर्दुरिन ने फोर्शेविल को अपनी गाड़ी में बिठाया; स्वान की गाड़ी उसके पीछे खड़ी

थी, और उसने उनकी गाड़ी के चलने का इंतज़ार किया, फिर ओडेट को अपनी गाड़ी में बिठाया।

"ओडेट, हम तुम्हें ले जाएंगे," श्रीमती वर्दुरिन ने कहा, "हमने तुम्हारे लिए एम. डी फोर्शेविले के बगल में एक छोटा सा कोना विशेष रूप से आरक्षित रखा है।"

"जी हां, श्रीमती वर्दुरिन," ओडेट ने विनम्रता से कहा।

"क्या! मुझे लगा था कि मुझे तुम्हें घर छोड़ना है," स्वान ने विवेक को दरकिनार करते हुए चिल्लाया, क्योंकि गाड़ी का दरवाजा खुला था, समय कीमती था, और वह अपनी वर्तमान स्थिति में उसके बिना घर नहीं जा सकता था।

लेकिन श्रीमती वर्दुरिन ने मुझसे पूछा है...

"कोई बात नहीं, आप अकेले घर जा सकते हैं; हमने आपको इस तरह दर्जनों बार छोड़ा है," श्रीमती वर्दुरिन ने कहा।

"लेकिन मुझे श्रीमती डी क्रेसी को कुछ महत्वपूर्ण बात बतानी थी।"

"ठीक है, आप उसे लिख सकते हैं।"

"अलविदा," ओडेट ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।

उसने मुस्कुराने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह केवल बेहद निराश दिखने में ही सफल रहा।

घर पहुँचकर श्रीमती वर्दुरिन ने अपने पति से पूछा, "स्वान हमारे साथ जो नखरे दिखा रहा है, उसके बारे में आपका क्या ख्याल है?" "मुझे डर था कि वह मुझे खा जाएगा, सिर्फ इसलिए कि हमने ओडेट को वापस ले जाने की पेशकश की। यह सब वाकई बहुत बुरा है। वह सीधे-सीधे क्यों नहीं कहता कि हमारा घर अव्यवस्थित है? मुझे समझ नहीं आता कि ओडेट ऐसे व्यवहार को कैसे सहन कर सकती है। वह तो मानो हर समय यही कह रहा हो, 'तुम मेरी हो!' मैं ओडेट को साफ-साफ बताऊंगी कि

मुझे इस सब के बारे में क्या लगता है, और मुझे उम्मीद है कि वह मेरी बात समझेगी।" कुछ देर बाद गुस्से से अवाक होकर उन्होंने कहा, "नहीं, लेकिन क्या आप नहीं देखते, वह गंदा प्राणी..." अनजाने में, और शायद खुद को सही ठहराने की उसी अस्पष्ट ज़रूरत को पूरा करने के लिए—जैसे कॉम्ब्रे में फ्रांस्वा ने किया था जब मुर्गी मरने से इनकार कर रही थी—वही शब्द जो एक निर्दोष जानवर की मृत्यु की पीड़ा में उसकी आखिरी तड़प उस किसान से निकलवाती है जो उसकी जान ले रहा होता है। और जब श्रीमती वर्दुरिन की गाड़ी आगे बढ़ गई और स्वान की गाड़ी ने उसकी जगह ले ली, तो उनके कोचवान ने उनका चेहरा देखकर पूछा कि क्या वह अस्वस्थ हैं या उन्हें कोई बुरी खबर मिली है।

स्वान ने उसे विदा कर दिया; उसे पैदल चलना पसंद था, और वह पैदल ही, जंगलों से होते हुए, घर लौटा। वह अपने आप से ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहा था, उसी बनावटी लहजे में जो वह 'छोटे से केंद्र' के आकर्षण का वर्णन करते और वर्दुरिन परिवार की उदारता की प्रशंसा करते समय अपनाया करता था। लेकिन जिस तरह ओडेट की बातचीत, मुस्कान और चुंबन उसे उतने ही घृणित लगने लगे थे जितने कभी उसे आकर्षक लगते थे, अगर वे उसके अलावा किसी और के लिए होते, उसी तरह वर्दुरिन का ड्राइंग रूम, जो एक घंटे पहले तक उसे मनोरंजक, कला के प्रति सच्ची भावना से प्रेरित और एक प्रकार की नैतिक अभिजातता से परिपूर्ण लगता था, अब जब ओडेट वहाँ किसी और से मिलने और बिना किसी रोक-टोक के प्रेम करने जा रही थी, तो उसकी सारी बेतुकी बातें, मूर्खता और शर्म उसके सामने उजागर हो गईं।

उसने चतू में अगली शाम होने वाली पार्टी का एक काल्पनिक चित्र बनाया, जिसे देखकर वह घृणा से कांप उठा। "सोचो, चतू जैसी जगह पर जाना! जैसे दुकान बंद होने के बाद कपड़े बेचने वालों का झुंड हो! कसम

से, ये लोग अपनी आत्मसंतुष्टि में इतने ऊंचे हैं; ये सचमुच मौजूद नहीं हो सकते; ये सब लाबिशे के किसी नाटक से निकले होंगे!"
कॉटार्ड्स वहाँ होंगे; शायद ब्रिचोट भी। "इन नन्हे जीवों के जीवन से ज़्यादा विचित्र और क्या हो सकता है, जो इस तरह एक-दूसरे से चिपके रहते हैं। वे सोचेंगे कि वे पूरी तरह खो गए हैं, कसम से, अगर वे कल चैटौ में फिर से नहीं मिले तो!" अफसोस! वहाँ वह चित्रकार भी होगा, वह चित्रकार जिसे रिश्ते तय करने में मज़ा आता था, जो फोर्शेविल को ओडेट के साथ अपने स्टूडियो में आने का न्योता देगा। वह ओडेट को देख सकता था, जो देहात के हिसाब से बहुत ही सजी-धजी पोशाक में थी, "क्योंकि वह उस तरह से बहुत ही भद्दी है, और बेचारी, वह कितनी मूर्ख है!"
वह मैडम वर्दुरिन के रात के खाने के बाद सुनाए जाने वाले चुटकुलों को सुन सकता था, जो चाहे जिस पर भी निशाना साधा गया हो, उसे हमेशा हंसाते थे क्योंकि वह ओडेट को उन पर हंसते हुए देख सकता था, उसके साथ हंसते हुए, उसकी हंसी मानो उसकी हंसी का हिस्सा बन जाती थी। अब उसे लगा कि शायद ओडेट उसी पर हंस रही है। "मज़ाक का कितना घिनौना रूप है!" वह गुस्से से मुंह बनाते हुए बोला, उसका मुंह इतना विकृत हो गया कि उसे लगा जैसे उसके गले की मांसपेशियां कॉलर से चिपक गई हों। "भगवान के नाम पर, उनकी छवि में बना प्राणी उन घिनौने मज़ाकों पर कैसे हँस सकता है? ज़रा सी भी संवेदनशील नाक ऐसी बासी बातों से घबराकर दूर भाग जाएगी। यह मानना सचमुच असंभव है कि कोई भी इंसान यह न समझ पाए कि अपने साथी प्राणी का मज़ाक उड़ाकर, जिसने वफ़ादारी से उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ाया है, वह खुद को ऐसे दलदल में धकेल रही है जिससे दुनिया की सारी कोशिशों के बावजूद भी उसे निकालना नामुमकिन होगा। मैं उन गंदे छोटे कीड़ों से बहुत दूर रहता हूँ जो इधर-उधर रेंगते हैं और अपनी घटिया गालियाँ बकते

हैं, इसलिए मुझ पर किसी वर्दुरिन के मज़ाक का कोई असर नहीं पड़ सकता!" उसने सिर ऊपर उठाते हुए और घमंड से शरीर सीधा करते हुए चिल्लाया। "ईश्वर जानता है कि मैंने ओडेट को उस गटर से बाहर निकालने और उसे एक बेहतर और शुद्ध हवा में सांस लेना सिखाने की पूरी कोशिश की है। लेकिन इंसानी सब्र की भी एक सीमा होती है, और मेरा तो अब अंत हो चुका है," उसने यह कहते हुए अपनी बात समाप्त की, मानो ओडेट को व्यंग्यों के माहौल से दूर करने का यह पवित्र मिशन कुछ मिनटों से कहीं अधिक पुराना हो, मानो उसने इसे तभी शुरू नहीं किया हो जब उसे यह ख्याल आया कि कहीं ये व्यंग्य उसी पर तो नहीं हैं, और शायद ओडेट को उससे दूर कर दें।

वह पियानोवादक को मूनलाइट सोनाटा बजाने के लिए बैठते हुए देख सकता था, और मैडम वर्दुरिन के चेहरे पर बीथोवेन के संगीत से होने वाले मानसिक तनाव के भय से उत्पन्न भयावह भाव देख सकता था। "बेवकूफ, झूठी!" वह चिल्लाया, "और ऐसी औरत सोचती है कि उसे कला से प्यार है!" फोर्शेविल की प्रशंसा में कुछ शब्द कहने के बाद, जैसा कि वह अक्सर खुद फोर्शेविल के लिए करती थी, वह ओडेट से कहती: "ओडेट, तुम वहाँ मिस्टर डी फोर्शेविल के लिए जगह बना सकती हो, है ना?" ... "अंधेरे में! कॉडफ़िश! दलाल!" ... 'दलाद' वह नाम था जो वह उस संगीत को भी देता था जो उन्हें चुपचाप बैठने, एक साथ सपने देखने, एक-दूसरे की आँखों में देखने और एक-दूसरे के हाथों को महसूस करने के लिए आमंत्रित करता था। उनका मानना था कि कलाओं के प्रति कठोर आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने में काफी कुछ सच्चाई है, जैसा कि प्लेटो, बॉसुएट और फ्रांस में शिक्षा की पुरानी पद्धति ने अपनाया था।

संक्षेप में कहें तो, वर्दुरिन के यहाँ वे जो जीवन व्यतीत करते थे, जिसे उन्होंने अक्सर 'वास्तविक' बताया था, अब उन्हें जीवन का सबसे बुरा रूप

प्रतीत होता था, और उनका 'छोटा समूह' समाज का सबसे नीचा वर्ग। उन्होंने दोहराया, "यह वास्तव में सामाजिक सीढ़ी के सबसे निचले पायदान से भी नीचे है, दांते के सबसे निचले स्तर से भी नीचे। निःसंदेह, फ्लोरेंस निवासी के ये उदात्त शब्द वर्दुरिन परिवार के लिए ही हैं! ज़रा सोचिए, समाज में रहने वाले लोग (और यद्यपि कभी-कभार उनमें कमियाँ निकाली जा सकती हैं, फिर भी वे उस ब्लैकमेलर गिरोह से बिल्कुल अलग हैं) उनसे जान-पहचान न रखने या उनके साथ अपने हाथ भी गंदे न करने में गहरी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हैं। फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के 'नोली मी टैंगेरे' आदर्श वाक्य में कितना सटीक अंतर्ज्ञान है।"

वह बहुत पहले ही जंगल के रास्तों और गलियों से निकल चुका था, लगभग अपने घर पहुँच चुका था, और फिर भी, क्योंकि वह अभी तक शोक के नशे या अपनी बेईमानी की सनक से बाहर नहीं निकल पाया था, बल्कि अपनी ही आवाज़ के झूठे स्वर, कृत्रिम मधुरता से और भी अधिक उत्साहित होकर, वह रात के सन्नाटे में ज़ोर-ज़ोर से भाषण देता रहा: "समाज में रहने वाले लोगों में कमियाँ होती हैं, जैसा कि मुझसे बेहतर कोई नहीं जानता; लेकिन, आखिरकार, वे ऐसे लोग हैं जिनके लिए कम से कम कुछ चीजें असंभव हैं। फलाँ-फलाँ" (एक फैशनेबल महिला जिसे वह जानता था) "परिपूर्ण होने से बहुत दूर थी, लेकिन, आखिरकार, उसमें एक मूलभूत कोमलता, उसके आचरण में एक वफादारी पाई जाती थी जो उसे, चाहे कुछ भी हो जाए, किसी भी अपराध के लिए अयोग्य बनाती थी, जो उसके और वर्दुरिन जैसी बुढ़िया के बीच एक विशाल खाई पैदा करती है। वर्दुरिन! क्या नाम है! ओह, उनमें कुछ पूर्णता है, उनके स्वभाव के प्रति उनकी सच्चाई में कुछ लगभग उत्तम है; वे सबसे उत्तम नमूने हैं।" उनकी घिनौनी हरकतें! शुक्र है, अब समय आ गया था कि मैं ऐसे घिनौने, ऐसे गंदे लोगों के साथ अनैतिक यौन संबंध बनाने की प्रवृत्ति को त्याग दूं।

लेकिन, जिस प्रकार एक घंटे पहले तक उसने वर्दुरिन परिवार को जिन गुणों का श्रेय दिया था, वे पर्याप्त नहीं होते, भले ही वर्दुरिन परिवार में वास्तव में वे गुण मौजूद होते, यदि उन्होंने स्वान के प्रेम का समर्थन और संरक्षण न किया होता, जिससे स्वान उस मदहोशी की अवस्था में पहुँच गया जिसमें वह उनकी उदारता के प्रति कोमल भाव से भर गया; एक ऐसी मदहोशी जो अन्य व्यक्तियों के माध्यम से भी फैलती, तो भी उसे केवल ओडेट से ही प्राप्त हो सकती थी;—उसी प्रकार वर्दुरिन परिवार में अब उसे जो अनैतिकता (यदि वह वास्तव में मौजूद होती) मिली, वह भी शक्तिहीन हो जाती, यदि उन्होंने फोर्शेविल के साथ और उसके बिना ओडेट को आमंत्रित न किया होता, ताकि उसके क्रोध के पात्र खुल जाएँ और वह उनकी 'बदनामी' का बलिदान कर दे। निःसंदेह, स्वान की आवाज़ में उनकी अपनी आवाज़ की तुलना में कहीं अधिक सूक्ष्म अंतर्दृष्टि थी, जब उन्होंने वर्दुरिन और उनके समूह के प्रति घृणा और उनसे मुक्त होने की खुशी से भरे उन शब्दों को कृत्रिम और अलंकारिक स्वर में कहने से इनकार कर दिया, मानो उनके शब्द उनके विचारों को व्यक्त करने के बजाय उनके क्रोध को शांत करने के लिए चुने गए हों। वास्तव में, जब वे अपशब्दों में लिप्त थे, तब उनके विचार शायद, हालांकि उन्हें इसका एहसास नहीं था, किसी और ही बात में उलझे हुए थे, क्योंकि घर पहुँचते ही, जैसे ही उन्होंने सामने का दरवाजा बंद किया, उन्होंने अचानक अपना माथा पीट लिया, और अपने नौकर से दरवाजा दोबारा खुलवाकर गली में दौड़ पड़े और इस बार बिल्कुल स्वाभाविक आवाज़ में चिल्लाए, "मुझे लगता है कि मुझे कल चैटौ में होने वाले रात्रिभोज में आमंत्रित होने का एक तरीका मिल गया है!" लेकिन यह एक बुरा तरीका रहा होगा, क्योंकि श्री स्वान को आमंत्रित नहीं किया गया था; डॉ. कॉटार्ड, जिन्हें देश में एक गंभीर मामले में शामिल होने के लिए बुलाया गया था, कुछ दिनों से

वर्दुरिन परिवार से नहीं मिले थे और चैटौ में उपस्थित होने से रोक दिए गए थे, ने इस रात्रिभोज के बाद की शाम को, जब वे उनके घर पर भोजन करने बैठे, तो कहा:

"क्या हम आज शाम एम. स्वान से मिलने नहीं जा रहे हैं? वो तो सचमुच मेरे निजी मित्र हैं..." "मुझे पूरी उम्मीद है कि हम नहीं जाएँगे!" श्रीमती वर्दुरिन चिल्लाईं। "भगवान हमें उनसे बचाए; वो इतने खतरनाक हैं कि उनकी निंदा करना असंभव है, एक मूर्ख, बदतमीज़ और गंवार।"

ये शब्द सुनकर कॉटार्ड ने गहरी हैरानी और पूर्ण समर्पण का भाव प्रदर्शित किया, मानो वह किसी ऐसे वैज्ञानिक सत्य के सामने खड़ा हो जो उसके पहले के सभी विश्वासों के विपरीत था, लेकिन सबूतों के अचूक भार से समर्थित था; भयभीत भाव से उसने अपना सिर थाली पर झुका लिया और केवल इतना ही कहा: "ओह—ओह—ओह—ओह—ओह!" अपनी पूरी शक्ति को धीरे-धीरे समेटते हुए, अपनी आत्मा की गहराई में उतरते हुए, उसकी आवाज़ का पूरा विस्तार था। इसके बाद वर्दुरिन्स के यहाँ स्वान के बारे में कोई बात नहीं हुई।

और इस तरह वह ड्राइंग रूम, जिसने स्वान और ओडेट को एक साथ लाया था, उनकी मुलाकात में बाधा बन गया। अब वह उससे वैसे नहीं कहती थी, जैसे अपने प्यार के शुरुआती दिनों में कहती थी: "हम कल शाम को मिलेंगे ही; वर्दुरिन के घर पर डिनर पार्टी है," बल्कि "हम कल शाम को नहीं मिल पाएंगे; वर्दुरिन के घर पर डिनर पार्टी है।" या फिर वर्दुरिन उसे ओपेरा-कॉमिक ले जा रहे थे, 'उने नुइट डे क्लियोपेट्रा' देखने के लिए, और स्वान उसकी आँखों में उस डर को पढ़ सकता था कि कहीं वह उसे न मना कर दे, जिसे कुछ समय पहले तक वह अपनी प्रेमिका के चेहरे पर आते ही चुंबन से मना नहीं कर पाता था, लेकिन अब वह उसे व्याकुल कर रहा था। “लेकिन मैं सचमुच नाराज़ नहीं हूँ,” उसने खुद को

दिलासा देते हुए कहा, “जब मैं देखता हूँ कि वह उस शोरगुल भरे कूड़े के ढेर में भागकर कीड़ों से बचने के लिए कितनी बेताब है। मैं निराश हूँ; अपने लिए नहीं, बल्कि उसके लिए; निराश इसलिए कि छह महीने से ज़्यादा समय तक रोज़ाना मेरे संपर्क में रहने के बाद भी, वह अपने मन को इतना भी नहीं सुधार पाई है कि विक्टर मैसे के प्रति अपने लगाव को स्वतः ही मिटा सके! इससे भी बढ़कर, निराश इसलिए कि वह इस स्तर तक नहीं पहुँची है कि वह यह समझ सके कि कुछ शामें ऐसी भी होती हैं जब थोड़ी सी भी संवेदनशीलता रखने वाला कोई भी व्यक्ति मनोरंजन छोड़ने के लिए तैयार हो सकता है जब उसे ऐसा करने के लिए कहा जाए। उसे इतनी समझ तो होनी चाहिए कि वह कहे: 'मैं नहीं जाऊँगी,' भले ही यह केवल नीति के कारण ही क्यों न हो, क्योंकि अब वह जो जवाब देगी, उसी से उसकी आत्मा की गुणवत्ता हमेशा के लिए तय होगी।” और यह सोचकर कि ओडेट के आध्यात्मिक महत्व का अनुकूल आकलन करने के लिए ही वह उसे उस शाम ओपेरा-कॉमिक जाने के बजाय घर पर अपने साथ रोकना चाहता था, उसने उसके साथ भी उसी तरह का तर्क दिया, उसी बेईमानी के साथ जैसे उसने खुद के साथ किया था, या उससे भी कुछ अधिक, क्योंकि उसके मामले में वह उसके आत्मसम्मान को भी अपने वश में करने की इच्छा के आगे झुक रहा था।

"मैं तुमसे कसम खाता हूँ," उसने उससे कहा, थिएटर जाने से कुछ देर पहले, "कि तुम्हें न जाने के लिए कहने का मेरा मकसद, अगर मैं स्वार्थी होता, तो बस यही होता कि तुम मना कर दो, क्योंकि आज शाम मुझे हज़ार और काम करने हैं, और अगर तुम मुझे बताओगी कि तुम नहीं जा रही हो, तो मुझे लगेगा कि मुझे धोखा दिया गया है और मैं फँस गया हूँ, और मैं बहुत नाराज़ हो जाऊँगा। लेकिन मेरे काम, मेरी खुशियाँ ही सब कुछ नहीं हैं; मुझे तुम्हारे बारे में भी सोचना है। एक दिन ऐसा आ सकता

है जब, मुझे तुमसे हमेशा के लिए अलग होते देखकर, तुम मुझे इस बात के लिए कोस सकती हो कि मैंने तुम्हें उस निर्णायक घड़ी में चेतावनी क्यों नहीं दी जब मुझे लगा कि मैं तुम्हारे बारे में फैसला सुनाने वाला हूँ, उन कठोर फैसलों में से एक जिसका प्यार लंबे समय तक सामना नहीं कर सकता। देखो, तुम्हारी क्लियोपेट्रा की रात (क्या शीर्षक है!) का इस बात से कोई लेना-देना नहीं है। मुझे बस यह जानना है कि क्या तुम वाकई उन सबसे निचले दर्जे की मानसिकता और यहाँ तक कि आकर्षणहीन प्राणियों में से एक हो, उन तुच्छ प्राणियों में से एक हो जो... एक सुख का त्याग करना। क्योंकि यदि तुम ऐसे हो, तो तुम्हें कोई कैसे प्यार कर सकता है, क्योंकि तुम तो एक व्यक्ति भी नहीं हो, एक निश्चित, अपूर्ण, लेकिन कम से कम प्रत्यक्ष इकाई। तुम एक आकारहीन जल हो जो किसी भी ढलान से नीचे बह जाएगा, एक स्मृतिहीन मछली, एक विचारहीन मछली, जो अपने पूरे जीवन अपने एक्वेरियम में दिन में सौ बार कांच की दीवार से टकराती रहेगी, हमेशा उसे पानी समझकर। क्या तुम्हें एहसास है कि तुम्हारे उत्तर का क्या प्रभाव होगा—मैं यह नहीं कह रहा कि मैं उस क्षण से तुम्हें प्यार करना बंद कर दूंगा, यह तो स्पष्ट है, लेकिन जब मुझे एहसास होगा कि तुम एक व्यक्ति नहीं हो, कि तुम दुनिया की हर चीज से नीचे हो और खुद को एक इंच भी ऊपर उठाने की बुद्धि नहीं रखते, तो तुम मेरी आँखों में कम आकर्षक लगोगे? जाहिर है, मैं तुमसे यह पूछना पसंद करता, मानो यह कोई मामूली या नगण्य बात हो, कि तुम अपनी क्लियोपेट्रा रात्रि (क्योंकि तुम मुझे इतना नीच नाम लेने के लिए मजबूर कर रहे हो) को छोड़ दो, इस उम्मीद में कि तुम फिर भी उसमें जाओगे। कम। लेकिन, चूंकि मैंने आपको परखने का फैसला कर लिया था, और इतने गंभीर मुद्दे को आपके जवाब पर निर्भर करने का निर्णय लिया था, इसलिए मैंने आपको उचित चेतावनी देना अधिक सम्मानजनक समझा।"

इस बीच, ओडेट के भाव और अनिश्चितता बढ़ती जा रही थी। हालाँकि उसकी तीखी बातों का अर्थ उसकी समझ से परे था, पर वह समझ गई थी कि यह निंदा या विनती के दृश्यों में से एक था, ऐसे दृश्य जो पुरुषों के व्यवहार से परिचित होने के कारण, बोले गए शब्दों पर ध्यान दिए बिना ही, वह यह निष्कर्ष निकाल लेती थी कि पुरुष प्रेम में होने पर ही ऐसे दृश्य बनाते हैं; कि प्रेम में आने के क्षण से ही उनकी आज्ञा मानना व्यर्थ है, क्योंकि बाद में उनका प्रेम और भी गहरा हो जाएगा। इसलिए, वह स्वान की बात पूरी शांति से सुन लेती, यदि उसने यह न देखा होता कि देर हो रही है, और यदि वह और अधिक देर तक बोलता रहा तो वह, जैसा कि उसने उसे एक प्यारी सी मुस्कान के साथ, हठी लेकिन थोड़ी शर्मिंदा होकर कहा, "कभी भी ओवरचर के लिए समय पर नहीं पहुँच पाएगी।"

अन्य अवसरों पर उसने खुद को आश्वस्त किया था कि एकमात्र चीज़ जो उसे उससे प्रेम करना बंद करने पर मजबूर कर देगी, वह उसका झूठ बोलने की आदत को न छोड़ना होगा। "यहाँ तक कि केवल नखरे के नज़रिए से भी," उसने उससे कहा था, "क्या तुम नहीं देख सकती कि झूठ बोलकर तुम अपना कितना आकर्षण खो देती हो? खुलकर स्वीकार कर लो तो कितनी गलतियाँ सुधार सकती हो! सचमुच, तुम मेरी सोच से कहीं कम बुद्धिमान हो!" हालाँकि, स्वान ने उसे झूठ न बोलने के सभी कारण समझाने की व्यर्थ कोशिश की; वे झूठ बोलने की किसी भी सार्वभौमिक प्रणाली को उखाड़ फेंकने में सफल हो सकते थे, लेकिन ओडेट की ऐसी कोई प्रणाली नहीं थी; वह केवल इतना ही संतुष्ट रहती थी कि जब भी वह स्वान को अपने किसी काम से अनजान रखना चाहती थी, तो वह उसे इसके बारे में नहीं बताती थी। इसलिए, उसके लिए झूठ केवल एक विशेष उपाय के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली चीज़ थी; और एक चीज जो उसे यह तय करने में मदद कर सकती थी कि उसे झूठ का सहारा

लेना चाहिए या नहीं, वह एक विशेष और आकस्मिक कारण था, अर्थात् स्वान द्वारा यह पता चलने का जोखिम कि उसने उसे सच नहीं बताया था। शारीरिक रूप से, वह एक दुर्भाग्यपूर्ण दौर से गुज़र रही थी; उसका वज़न बढ़ रहा था, और उसके चेहरे पर पहले जैसी भावपूर्ण, उदास मोहकता, आश्चर्य और उदासी के भाव, जैसे उसकी जवानी के साथ ही गायब हो गए थे। नतीजा यह हुआ कि स्वान के लिए वह उस समय सबसे ज़्यादा कीमती हो गई जब उसे वह पहले से कम सुंदर लगने लगी। वह घंटों उसे निहारता रहता, उस मोहकता को फिर से पाने की कोशिश करता जो उसने कभी उसमें देखी थी और अब नहीं पा सकता था। फिर भी, यह जानकर कि इस नए और अजीब से खोल के भीतर, अभी भी वही ओडेट छिपी हुई थी, वही चंचल स्वभाव, चालाक और धूर्त, स्वान को पहले की तरह ही पूरे जुनून के साथ उसे मोहित करने की कोशिश जारी रखने के लिए काफ़ी था। फिर वह दो साल पहले खींची गई उसकी तस्वीरें देखता और याद करता कि वह कितनी खूबसूरत थी। और यह उसे उन सभी कष्टों के लिए थोड़ा सा दिलासा देता जो उसने स्वेच्छा से उसके लिए सहे थे।

जब वर्दुरिन परिवार उसे सेंट-जर्मेन, चैटौ या मेउलान ले जाता था, तो अक्सर मौसम सुहावना होने पर वे रात वहीं रुकने का प्रस्ताव रखते थे और अगले दिन तक घर नहीं लौटते थे। श्रीमती वर्दुरिन पियानोवादक की चिंताओं को दूर करने का प्रयास करती थीं, जिसकी चाची पेरिस में ही रह गई थीं: "वह एक दिन के लिए तुमसे छुटकारा पाकर बहुत खुश होंगी। भला उन्हें चिंता क्यों होगी, जब उन्हें पता है कि तुम हमारे साथ हो? खैर, मैं तुम सबका ख्याल रखूंगी; वह सारा दोष मुझ पर डाल सकती हैं।"

यदि यह प्रयास विफल हो जाता, तो एम. वर्दुरिन देश भर में तब तक यात्रा करते रहते जब तक कि उन्हें कोई टेलीग्राफ कार्यालय या किसी

अन्य प्रकार का संदेशवाहक न मिल जाए, इससे पहले वे यह पता लगा लेते कि 'वफादारों' में से किसके पास कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे उन्हें चेतावनी देनी है। लेकिन ओडेट उन्हें धन्यवाद देती और आश्वस्त करती कि उनके पास किसी के लिए कोई संदेश नहीं है, क्योंकि उन्होंने स्वान को स्पष्ट रूप से कह दिया था कि इतने सारे लोगों के सामने उन्हें संदेश भेजना उनके लिए संभव नहीं है, क्योंकि इससे उनकी पहचान खतरे में पड़ जाएगी। कभी-कभी वह कई दिनों तक अनुपस्थित रहतीं, जब वर्दुरिन दंपति उन्हें चित्रकार की सलाह पर ड्रेक्स में मकबरे दिखाने या कॉम्पीएग्ने ले जाते, ताकि वे जंगल के बीच से सूर्यास्त देख सकें—जिसके बाद वे पियरफॉन्ड्स के महल की ओर रवाना हो जाते।

"यह सोचना भी अजीब है कि वह मेरे साथ, जिसने वास्तुकला के अध्ययन में दस साल बिताए हैं, और जिसे लगातार प्रभावशाली लोग बोवे या सेंट-लूप-डी-नाउड के बजाय उन्हें ले जाने के लिए दबाव डालते रहते हैं, और जो उसके अलावा किसी और को ले जाने से इनकार करते हैं, वास्तव में ऐतिहासिक इमारतों का दौरा कर सकती है; और इसके बजाय वह सबसे नीच, सबसे क्रूर रूप से पतित प्राणियों के साथ लुई-फिलिप और वियोलेट-ले-ड्यूक के पत्थर जैसे मल-मूत्र पर आनंद लेने के लिए निकल पड़ती है! मैं कहूंगा कि ऐसा करने के लिए कला के बहुत अधिक ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती; हालांकि, निश्चित रूप से, सूंघने की विशेष रूप से परिष्कृत क्षमता के बिना भी, कोई जानबूझकर शौचालयों में छुट्टियां बिताना नहीं चाहेगा, ताकि उनकी सुगंधित गैसों के संपर्क में आ सके।"

लेकिन जब वह ड्रेक्स या पियरफॉन्ड्स के लिए रवाना होतीं—अफ़सोस, उन्हें वहाँ अपने साथ, मानो संयोगवश, आने की अनुमति दिए बिना, क्योंकि जैसा कि उन्होंने कहा था, इससे "भयानक प्रभाव पड़ेगा",—तो

वह प्रेमियों की लाइब्रेरी में मौजूद सबसे मादक रोमांस, रेलवे समय सारिणी में डूब जाते, जिससे उन्हें दोपहर, शाम और यहाँ तक कि सुबह भी उनसे मिलने के तरीके पता चलते थे। तरीके? उससे भी बढ़कर, उनसे मिलने का अधिकार, हक। क्योंकि, आखिरकार, समय सारिणी और ट्रेनें कुत्तों के लिए नहीं बनी थीं। यदि जनता को मुद्रित विज्ञापनों के माध्यम से सावधानीपूर्वक सूचित किया जाता कि सुबह आठ बजे पियरफॉन्ड्स के लिए एक ट्रेन चलती है जो वहाँ दस बजे पहुँचती है, तो इसका कारण केवल यही हो सकता था कि पियरफॉन्ड्स जाना एक वैध कार्य था, जिसके लिए ओडेट से अनुमति लेना अनावश्यक होता; इसके अलावा, यह एक ऐसा कार्य था जो ओडेट को देखने की इच्छा से बिल्कुल अलग मकसद से किया जा सकता था, क्योंकि जिन लोगों ने उसके बारे में कभी सुना भी नहीं था, वे भी इसे रोजाना करते थे, और इतनी संख्या में करते थे कि इंजनों को चलाने के श्रम और खर्च को उचित ठहराया जा सके।

तो बात यहाँ तक आ गई कि अगर वह पियरफॉन्ड्स जाना चाहे तो वह उसे रोक नहीं सकती थी। अब उसे पता चला कि वह यही करना चाहता था, और अगर वह, आम यात्रियों की तरह, ओडेट से परिचित न होता तो उस समय वही कर रहा होता। काफी समय से वह वायलेट-ले-ड्यूक के पुनर्स्थापना कार्य के बारे में और अधिक स्पष्ट राय बनाना चाहता था। और मौसम जैसा था, उसे कॉम्पीएग्ने के जंगल में दिन भर घूमने की तीव्र इच्छा हुई।

यह सचमुच बदकिस्मती थी कि उसने उसे उस जगह जाने से मना कर दिया था जहाँ आज उसका मन ललचा रहा था। आज! अगर वह उसकी मनाही के बावजूद वहाँ जाता, तो उसे उसी दिन उससे मिलने का मौका मिल जाता! लेकिन अगर पियरफॉन्ड्स में उसकी मुलाकात किसी ऐसे व्यक्ति से होती जिसका कोई महत्व नहीं होता, तो वह उसे देखकर खुशी

से कहती: "क्या, तुम यहाँ हो?" और उसे उस होटल में आने का न्योता देती जहाँ वह वर्दुरिन परिवार के साथ ठहरी हुई थी, लेकिन अगर वहाँ उसकी मुलाकात स्वान से होती, तो वह नाराज़ हो जाती, शिकायत करती कि कोई उसका पीछा कर रहा है, परिणामस्वरूप उसका प्यार कम हो जाता, और शायद उसे देखते ही गुस्से से मुँह फेर लेती। "तो फिर, मुझे एक दिन के लिए भी कहीं जाने की इजाज़त नहीं है!" वह लौटकर उसे कोसती, जबकि असल में तो उसे ही जाने की इजाज़त नहीं थी।

उन्हें अचानक यह विचार आया कि कॉम्पीएग्ने और पियरफॉन्ड्स की यात्रा का ऐसा प्रबंध किया जाए जिससे किसी को यह न लगे कि उनका उद्देश्य ओडेट से मिलना है। इसके लिए उन्होंने अपने एक मित्र, मार्क्विस डी फॉरेस्टेल से निमंत्रण प्राप्त करने का निर्णय लिया, जिनका उस इलाके में एक ग्रामीण घर था। स्वान ने अपने इस मित्र को, जिनके सामने उन्होंने अपने असली उद्देश्य का खुलासा किए बिना योजना रखी थी, खुशी से झूम उठे; उन्होंने स्वान के पंद्रह वर्षों बाद आखिरकार उनके घर आने और देखने के लिए सहमत होने पर अपना आश्चर्य नहीं छिपाया, और चूंकि उन्होंने (उन्हें बताया) वहां रुकना नहीं चाहते थे, इसलिए उन्होंने वादा किया कि वे कम से कम कुछ दिन उन्हें आसपास के इलाकों में सैर और भ्रमण पर ले जाएंगे। स्वान ने कल्पना की कि वे पहले से ही मार्क्विस डी फॉरेस्टेल के साथ वहां मौजूद हैं। ओडेट को देखने से पहले भी, भले ही वह उसे वहाँ देखने में सफल न हो पाता, उस धरती पर कदम रखना कितना आनंददायक होता जहाँ, यह जाने बिना कि वह किसी भी क्षण कहाँ मिल सकती है, वह अपने चारों ओर उसके अचानक प्रकट होने की रोमांचक संभावना को महसूस करता: शैतो के प्रांगण में, जो अब उसकी आँखों में सुंदर हो गया था क्योंकि उसी के कारण वह वहाँ गया था; शहर की सभी गलियों में, जो उसे रोमांटिक लगती थीं; जंगल के हर रास्ते पर,

सूर्यास्त की गहरी और कोमल चमक से गुलाबी;—अनगिनत और वैकल्पिक छिपने की जगहें, जहाँ वह एक साथ शरण लेने के लिए दौड़ता, अपनी आशाओं की अनिश्चित सर्वव्यापकता में, अपने खुश, घुमक्कड़ और विभाजित हृदय में। “किसी भी हालत में हमें ओडेट और वर्दुरिन परिवार से नहीं मिलना चाहिए,” वह एम. डी फॉरेस्टेल को चेतावनी देते हुए कहते थे। “मैंने अभी-अभी सुना है कि वे आज पियरफॉन्ड्स में हैं। पेरिस में उनसे मिलने के लिए बहुत समय है; अगर उनसे मिले बिना एक कदम भी न चल सकें तो यहाँ आने का कोई फायदा नहीं।” और उसका मेज़बान यह समझ नहीं पाएगा कि उस जगह पहुँचने के बाद स्वान एक घंटे में बीस बार अपनी योजनाएँ क्यों बदलेगा, कॉम्पीएग्ने के सभी होटलों के भोजन कक्षों का निरीक्षण करने के बाद भी वह किसी में भी ठहरने का निर्णय क्यों नहीं ले पाएगा, जबकि उसे वर्दुरिन परिवार का कहीं कोई सुराग नहीं मिला था। ऐसा प्रतीत होता है कि वह उसी चीज़ की तलाश में था जिससे वह बचने का दावा कर रहा था, और वास्तव में, जैसे ही वह उसे पाता, उससे बच जाता। क्योंकि अगर वह उस छोटे 'समूह' के सामने आ जाता, तो वह जानबूझकर उदासीनता दिखाते हुए तुरंत वहाँ से भाग जाता, इस बात से संतुष्ट होकर कि उसने ओडेट को देखा था और उसने उसे, खासकर इसलिए कि उसने उसे तब देखा था जब वह जाहिर तौर पर उसके बारे में नहीं सोच रहा था। लेकिन नहीं; वह तुरंत समझ जाएगी कि वह उसी के लिए वहाँ आया है। और जब एम. डी फॉरेस्टेल उसे लेने आया और जाने का समय हुआ, तो उसने बहाना बनाया: "नहीं, मुझे खेद है; मैं आज पियरफॉन्ड्स नहीं जा सकता। आप देखिए, ओडेट वहाँ है।" और स्वान इन सब बातों के बावजूद इस बात से प्रसन्न था कि यदि केवल वही उस दिन पियरफॉन्ड्स जाने का हकदार नहीं था, तो इसका कारण यह था कि वास्तव में वह ओडेट के लिए अन्य सभी मनुष्यों से भिन्न था,

उसका प्रेमी; और यह प्रतिबंध, जो केवल उसी पर लगाया गया था, उस गुलामी के अनेक रूपों में से एक था, उस प्रेम का जो उसे इतना प्रिय था। निश्चित रूप से, उससे झगड़ा करने का जोखिम न लेना, धैर्य रखना और उसके लौटने की प्रतीक्षा करना बेहतर था। वह अपने दिन कॉम्पीएग्ने के जंगल के नक्शे को ध्यान से देखने में बिताता था, मानो वह 'पेज़ डू टेंड्रे' का नक्शा हो; उसने अपने चारों ओर पियरफॉन्ड्स के महल की तस्वीरें लगा रखी थीं। जब वह दिन आया जब उसके लौटने की संभावना थी, तो उसने फिर से समय सारिणी खोली, गणना की कि उसने कौन सी ट्रेन ली होगी, और यदि उसने अपनी यात्रा स्थगित कर दी हो, तो उसके लिए कौन सी ट्रेनें बची होंगी। टेलीग्राम छूट जाने के डर से वह घर से बाहर नहीं निकला, और इस डर से सोने भी नहीं गया कि कहीं वह आखिरी ट्रेन से आकर आधी रात को उसे चौंका न दे। जी हाँ! सामने के दरवाजे की घंटी बजी। दरवाजा खोलने में कुछ देर लगी, वह चौकीदार को जगाना चाहता था, उसने खिड़की से झुककर ओडेट को आवाज़ दी, अगर वह ओडेट ही थी, क्योंकि दर्जनों बार नीचे जाकर खुद आदेश देने के बावजूद, उसे आसानी से पता चल गया होगा कि वह घर पर नहीं है। बस एक नौकर अंदर आया था। उसने गुजरती गाड़ियों की लगातार गड़गड़ाहट सुनी, जिस पर उसने पहले कभी ध्यान नहीं दिया था। वह उन्हें एक के बाद एक, दूर से, पास आते हुए सुन सकता था, बिना रुके उसके दरवाजे से गुजरते हुए, और दूर एक ऐसा संदेश ले जाते हुए जो उसके लिए नहीं था। उसने पूरी रात इंतज़ार किया, व्यर्थ, क्योंकि वर्दुरिन परिवार अप्रत्याशित रूप से लौट आया था, और ओडेट दोपहर से पेरिस में थी; उसे यह बात बताने का ख्याल ही नहीं आया था; उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, इसलिए उसने शाम अकेले एक थिएटर में बिताई, काफी देर पहले घर जाकर बिस्तर पर लेट गई और शांति से सो रही थी।

असल में, उसने कभी उसके बारे में सोचा भी नहीं था। और ऐसे पल, जिनमें वह स्वान के अस्तित्व को ही भूल जाती थी, ओडेट के लिए कहीं अधिक मूल्यवान थे, और ये पल उसके सारे विश्वासघातों से कहीं अधिक स्वान को उसके करीब लाते थे। क्योंकि इस तरह स्वान उसी पीड़ादायक बेचैनी में डूबा रहता था, जिसने एक बार पहले उसकी रुचि को प्रेम में बदल दिया था, उस रात जब वह वर्दुरिन के घर पर ओडेट को नहीं ढूंढ पाया था और पूरी शाम उसकी तलाश करता रहा था। और उसके पास (जैसा कि मेरे पास बाद में, मेरे बचपन में कॉम्ब्रे में था) ऐसे सुखद दिन नहीं थे जिनमें वह उन पीड़ाओं को भूल सके जो रात के साथ लौट आती थीं। स्वान को अपने दिन ओडेट के बिना ही गुजारने थे; और जैसा कि वह कभी-कभी खुद से कहता था, इतनी खूबसूरत महिला को पेरिस में अकेले बाहर जाने देना उतना ही नासमझी भरा था जितना कि गहनों से भरा बक्सा सड़क के बीचोंबीच छोड़ देना। इस मनोदशा में वह राहगीरों को गुस्से से घूरता था, मानो वे जेबकतरे हों। लेकिन उनके चेहरे—एक सामूहिक और निराकार समूह—उसकी कल्पना की पकड़ से परे थे, और इस प्रकार उसकी ईर्ष्या की आग को भड़काने में विफल रहे। इस प्रयास ने स्वान के दिमाग को थका दिया, यहाँ तक कि आँखों पर हाथ फेरते हुए वह चिल्ला उठा: "हे भगवान!" जैसे लोग, बाह्य जगत की वास्तविकता या आत्मा की अमरता की समस्या को सुलझाने के प्रयासों में बौद्धिक उन्माद में डूबने के बाद, अपने थके हुए दिमाग को अतार्किक आस्था के कार्य से राहत देते हैं। लेकिन उसकी अनुपस्थित प्रेमिका का विचार स्वान के दैनिक जीवन की हर सरल क्रिया में लगातार, अटूट रूप से समाया हुआ था—जब वह भोजन करता, पत्र खोलता, टहलने जाता या सोने जाता—क्योंकि उसे उसके बिना ये क्रियाएँ करनी पड़ती थीं, इसका उसे खेद था; ठीक वैसे ही जैसे फिलिबर्ट द फेयर के वे प्रारंभिक अक्षर, जिन्हें ऑस्ट्रिया

की मार्गरेट ने अपने दुःख और उसके लिए तड़प के कारण ब्रू के चर्च में हर जगह अपने अक्षरों के साथ गुंथ दिया था। कभी-कभी, घर पर रहने के बजाय, वह दोपहर के भोजन के लिए पास के एक रेस्तरां में चला जाता था, जिसकी उत्कृष्ट पाक कला ने उसे कुछ समय पहले आकर्षित किया था, लेकिन अब वह वहाँ केवल एक ऐसे कारण से जाता था, जो रहस्यमय और बेतुका दोनों था, जिसे लोग 'रोमांटिक' कहते हैं; क्योंकि इस रेस्तरां (जो, वैसे, अभी भी मौजूद है) का नाम उसी गली के नाम पर था जहाँ ओडेट रहती थी: लैपेरूस। कभी-कभी, जब वह कहीं छोटी यात्रा पर जाती थी, तो कई दिन बीत जाते थे जब तक कि वह उसे पेरिस लौटने की सूचना देने के बारे में नहीं सोचती थी। और फिर वह बड़ी सरलता से कहती थी, बिना (जैसा कि वह पहले करती थी) खुद को किसी भी कीमत पर सच से थोड़ा सा भी जोड़कर छिपाने की सावधानी बरते, कि वह अभी-अभी सुबह की ट्रेन से आई है। उसका कहा झूठ था; कम से कम ओडेट के लिए यह एक झूठ था, असंगत, जिसमें (यदि सच होता तो होता) स्टेशन पर उसके वास्तविक आगमन की स्मृति का समर्थन नहीं था; जब वह ये शब्द बोल रही थी, तब भी उसके मन में एक विरोधाभासी छवि बनी हुई थी, क्योंकि वह वास्तव में उस समय कुछ और ही कर रही थी जब वह ट्रेन से उतरने का नाटक कर रही थी। हालाँकि, स्वान के मन में ये शब्द बिना किसी विरोध के पक्के हो गए और इतने अचूक हो गए कि अगर उसका कोई दोस्त उससे कहता कि वह उसी ट्रेन से आया था और उसने ओडेट को नहीं देखा, तो स्वान को यकीन हो जाता कि उसके दोस्त ने ही दिन या समय के बारे में गलती की है, क्योंकि उसका बयान ओडेट के कहे शब्दों से मेल नहीं खाता था। ये शब्द उसे कभी झूठे नहीं लगे, सिवाय तब जब उन्हें सुनने से पहले ही उसे शक हो गया था कि वे झूठे होंगे। उसके लिए यह मानना कि वह झूठ बोल रही है, एक पूर्व संदेह

अनिवार्य था। हालाँकि, यह पर्याप्त भी था। इसके बाद, ओडेट जो कुछ भी कहती, वह उसे संदिग्ध लगता। क्या उसने किसी का नाम लिया? यह स्पष्ट रूप से उसके प्रेमियों में से किसी एक का नाम था; एक बार जब यह धारणा आकार ले लेती थी, तो वह हफ्तों तक खुद को प्रताड़ित करता रहता था; एक बार तो उसने 'जांच एजेंटों' की एक फर्म से भी संपर्क किया ताकि उस अज्ञात प्रतिद्वंद्वी का पता और पेशा पता चल सके जो तब तक उसे चैन से नहीं बैठने देगा जब तक यह साबित न हो जाए कि वह विदेश चला गया है, और जिसके बारे में (उसे अंततः पता चला) ओडेट का चाचा था, और जिसकी बीस साल पहले मृत्यु हो चुकी थी।

हालांकि वह आम तौर पर उसे सार्वजनिक समारोहों में मिलने नहीं देती थी, यह कहते हुए कि लोग बातें करेंगे, फिर भी कभी-कभार ऐसा होता था कि किसी शाम की पार्टी में, जिसमें उसे और उसे दोनों को आमंत्रित किया गया होता था—फोर्चेविल के यहाँ, चित्रकार के यहाँ, या किसी मंत्रालय में आयोजित चैरिटी बॉल में—वह खुद को उसके साथ एक ही कमरे में पाता था। वह उसे देख सकता था, लेकिन वहाँ रुकने की हिम्मत नहीं करता था, इस डर से कि कहीं वह दूसरों के साथ उसके आनंद को छुपकर देख न ले, और उसे परेशान न कर दे। ये आनंद—जब वह घोर अकेलेपन में घर लौटता था और बिस्तर पर जाता था, ठीक उसी बेचैनी से जैसे मैं कुछ साल बाद, उन शामों में बिस्तर पर जाने के लिए बेचैन होता था, जब वह कॉम्ब्रे में हमारे साथ भोजन करने आता था—उसे असीमित लगते थे क्योंकि वह उनका अंत नहीं देख पाता था। और, एक-दो बार, ऐसी शामों से उसे उस प्रकार का सुख प्राप्त हुआ जिसे कोई शांतिपूर्ण कह सकता था (यदि यह अचानक समाप्त हुई चिंता की इतनी तीव्र प्रतिक्रिया से उत्पन्न न हुआ होता), क्योंकि इसमें मन की शांति शामिल होती है: वह चित्रकार के स्टूडियो में एक पल के लिए एक उत्सव में

झाँका था, और घर जाने की तैयारी कर रहा था; वह अपने पीछे ओडेट को छोड़ रहा था, जो एक शानदार अजनबी में बदल गई थी, पुरुषों से घिरी हुई थी, जिनकी निगाहें और उसकी खुशी, जो उसके लिए नहीं थी, किसी कामुक आनंद की ओर इशारा करती प्रतीत होती थी जिसका आनंद वहाँ या कहीं और लिया जाना था (संभवतः बाल डेस इनकोहेरेंट्स में, जिसके बारे में सोचकर वह कांप रहा था कि वह बाद में वहाँ जा सकती है) जिसने स्वान को उनके वास्तविक शारीरिक मिलन के विचार से भी अधिक ईर्ष्यालु बना दिया, क्योंकि इसकी कल्पना करना अधिक कठिन था; वह जाने के लिए दरवाजा खोल ही रहा था कि तभी उसे इन शब्दों में वापस बुलाया गया (जिसने उस संभावित अंत को, जिसने उसे इतना भयभीत कर दिया था, पार्टी को ही बाद में निर्दोष बना दिया, ओडेट की घर वापसी को अब अकल्पनीय और भयानक नहीं, बल्कि कोमल और परिचित बना दिया, एक ऐसी चीज जो उसके साथ, उसकी रोजमर्रा की जिंदगी के एक हिस्से की तरह, उसकी गाड़ी में हमेशा मौजूद रहती थी; एक ऐसी चीज जिसने ओडेट के चेहरे की अत्यधिक चमक और उल्लास को छीन लिया, यह दिखाया कि यह केवल एक भेस था जिसे उसने एक पल के लिए, उसके लिए धारण किया था, किसी रहस्यमय सुख के लिए नहीं, एक ऐसा भेस जिससे वह पहले ही ऊब चुकी थी) - ये शब्द, जो ओडेट ने दहलीज पार करते ही उसके पीछे कहे: "क्या तुम मेरे लिए एक मिनट भी इंतजार नहीं कर सकते? मैं बस जा रही हूँ; हम साथ में वापस चलेंगे और तुम मुझे छोड़ देना।" यह सच था कि एक बार फोर्शेविल ने साथ में घर छोड़ने की गुजारिश की थी, लेकिन जब ओडेट के द्वार पर पहुँचकर उसने अंदर आने की अनुमति माँगी, तो ओडेट ने स्वान की ओर उंगली करते हुए कहा: "अरे! यह तो इस सज्जन पर निर्भर करता है। आपको उनसे पूछना होगा। ठीक है, अगर आप ज़िद करते हैं तो आप

एक मिनट के लिए अंदर आ सकते हैं, लेकिन ज़्यादा देर मत रुकिएगा, क्योंकि मैं आपको चेतावनी देती हूँ, उन्हें मेरे साथ चुपचाप बैठकर बातें करना पसंद है, और अगर उनके यहाँ होने पर मेरे यहाँ कोई मेहमान आता है तो उन्हें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। काश, आप उस प्राणी को उतना ही जानते जितना मैं जानती हूँ; है ना, मेरे प्रिय, तुम्हें सच में कोई नहीं जानता, है ना, सिवाय मेरे?"

और स्वान शायद इस दृश्य से और भी अधिक प्रभावित हुए कि ओडेट ने फोर्शेविल के सामने उनसे न केवल स्नेह भरे शब्दों में, बल्कि कुछ आलोचनाओं के साथ भी बात की, जैसे: "मुझे यकीन है कि आपने अभी तक अपने दोस्तों को रविवार को उनके साथ भोजन करने के बारे में नहीं लिखा है। अगर आप नहीं जाना चाहते तो कोई बात नहीं, लेकिन कम से कम शिष्टाचार तो निभा सकते थे," या "अब, क्या आपने वर्मीर पर अपना निबंध यहीं छोड़ दिया है, ताकि आप कल इस पर थोड़ा और काम कर सकें? कितने आलसी हो! मैं तुम्हें काम करवाऊंगी, मैं तुम्हें बता सकती हूं," जिससे यह साबित होता था कि ओडेट उनके सामाजिक कार्यक्रमों और साहित्यिक कार्यों से अवगत रहती थीं, और वास्तव में उनका जीवन एक जैसा था। और जब वह बोल रही थीं, तो उन्होंने उन्हें एक ऐसी मुस्कान दी जिसे उन्होंने इस अर्थ में समझा कि वह पूरी तरह से उनकी हैं। और फिर, जब वह उनके लिए संतरे का रस बना रही थी, अचानक, ठीक वैसे ही जैसे किसी खराब ढंग से लगे लैंप का परावर्तक किसी वस्तु के चारों ओर, उसके पीछे की दीवार पर, विशाल और विचित्र छायाएँ डालना शुरू कर देता है, जो समय के साथ सिकुड़ती हैं और वस्तु की छाया में ही विलीन हो जाती हैं, ओडेट के बारे में उसके मन में बनी सभी भयानक और परेशान करने वाली धारणाएँ पिघल गईं और उसके सामने खड़ी उस मनमोहक प्राणी में गायब हो गईं। उसे अचानक यह संदेह हुआ कि ओडेट

के घर में, लैंप की रोशनी में बिताया गया यह घंटा, शायद, वास्तव में, उसके विशेष उपयोग के लिए बनाया गया एक कृत्रिम घंटा नहीं था (उस डरावनी और मनमोहक चीज़ को छिपाने के उद्देश्य से जो लगातार उसके विचारों में थी, लेकिन जिसकी वह कभी संतोषजनक छाप नहीं बना पाया था, ओडेट के वास्तविक जीवन का एक घंटा, उसके जीवन का वह घंटा जब वह वहाँ नहीं था, देख रहा था) नाटकीय साज-सामान और गत्ते के फलों के साथ, बल्कि शायद ओडेट के जीवन का एक वास्तविक घंटा था; कि अगर वह खुद वहां न होता, तो वह फोर्शेविल के लिए भी वही कुर्सी आगे खींच लाती, उसके लिए कोई अनजान पेय नहीं, बल्कि वही संतरे का रस परोसती जो वह अब उन दोनों को दे रही थी; कि ओडेट की दुनिया वह भयानक और अलौकिक दूसरी दुनिया नहीं थी जिसमें उसने उसे बसाने में अपना समय बिताया था—और जो शायद केवल उसकी कल्पना में ही मौजूद थी, बल्कि वास्तविक ब्रह्मांड थी, जिसमें उदासी का कोई विशेष वातावरण नहीं था, जिसमें वह मेज भी शामिल थी जिस पर वह अभी बैठकर लिख सकता था, और यह पेय जिसे अब उसे चखने की अनुमति दी जा रही थी; वे सभी वस्तुएं जिन्हें वह जिज्ञासा और प्रशंसा के साथ-साथ कृतज्ञता से देख रहा था, क्योंकि यदि उसके सपनों में समाहित होकर उन्होंने उसे किसी जुनून से मुक्ति दिलाई थी, तो वे स्वयं भी उस समाहित होने से समृद्ध हो गई थीं; उन्होंने उसे उसकी कल्पनाओं की प्रत्यक्ष प्राप्ति दिखाई, और उन्होंने उसके मन में रुचि पैदा की; उन्होंने उसकी आंखों के सामने आकार लिया और ठोस हो गईं, और साथ ही उन्होंने उसके व्याकुल हृदय को शांत किया। आह! अगर किस्मत ने उसे ओडेट के साथ एक ही घर में रहने की इजाज़त दी होती, ताकि उसके घर में भी वह खुद को अपना समझे; अगर उसने अपने नौकर से दोपहर के खाने के बारे में पूछा होता और जवाब में उसे ओडेट के खाने की

जानकारी मिली होती; अगर ओडेट सुबह एवेन्यू डू बोइस-डी-बोलोग्ने पर टहलने जाना चाहती, तो एक अच्छे पति के रूप में उसका फर्ज बनता कि बाहर जाने की इच्छा न होने के बावजूद वह उसके साथ जाए और जब उसे गर्मी लगे तो उसका लबादा उठाए; और शाम को, खाने के बाद, अगर वह घर पर रहना चाहे और कपड़े न पहनना चाहे, तो उसे उसके पास रुकने और उसकी हर बात मानने के लिए मजबूर होना पड़ता। तो फिर स्वान के जीवन के वे सभी तुच्छ विवरण, जो अब उसे इतने निराशाजनक लग रहे थे, केवल इसलिए कि वे एक ही समय में ओडेट के जीवन का हिस्सा भी होते, उस दीपक, उस संतरे के जूस, उस आरामकुर्सी की तरह, जिसने उसके सपनों का इतना बड़ा हिस्सा सोख लिया था, जिसने उसकी इतनी सारी लालसाओं को साकार किया था, एक प्रकार की अतिप्रचुर मिठास और एक रहस्यमय दृढ़ता को कैसे ग्रहण कर लेते।

फिर भी, उसे यह संदेह होने लगा था कि जिस अवस्था की उसे इतनी तीव्र इच्छा थी, वह एक ऐसी शांति और सुकून थी जो उसके प्रेम के अनुकूल वातावरण नहीं बना पाती। जब ओडेट उसके लिए हमेशा अनुपस्थित, दुखी और कल्पना में रहने वाली प्राणी नहीं रह जाएगी; जब उसके प्रति उसकी भावना अब वह रहस्यमय बेचैनी नहीं रहेगी जो सोनाटा के उस वाक्यांश से उत्पन्न होती थी, बल्कि निरंतर स्नेह और कृतज्ञता में बदल जाएगी; जब उनके बीच वे सामान्य संबंध स्थापित हो जाएंगे जो उसके उदासी भरे पागलपन को समाप्त कर देंगे; तब, निःसंदेह, ओडेट के दैनिक जीवन की गतिविधियाँ उसके लिए बहुत कम रुचिकर प्रतीत होंगी —जैसा कि उसने कई बार महसूस किया था, उदाहरण के लिए, उस दिन जब उसने लिफाफे के माध्यम से फोर्शेविल को लिखा उसका पत्र पढ़ा था। अपनी शिकायत का वैज्ञानिक तटस्थता से विश्लेषण करते हुए, मानो उसने इसके प्रभावों का अध्ययन करने के लिए खुद को इससे प्रतिरक्षित

कर लिया हो, उसने स्वयं से कहा कि जब वह इससे मुक्त हो जाएगा, तो ओडेट जो भी करे या न करे, उसके लिए वह महत्वहीन होगा। लेकिन अपनी अस्वस्थ अवस्था में, सच कहें तो, वह मृत्यु से उतना ही भयभीत था जितना कि ऐसी स्वस्थता से, जो वास्तव में उसके अस्तित्व के पूरी तरह से अंत के समान होगी।

इन शांत शामों के बाद, स्वान का संदेह अस्थायी रूप से शांत हो जाता था; वह ओडेट के नाम को आशीर्वाद देता था, और अगले दिन सुबह, उसे सबसे आकर्षक गहने भेजने का आदेश देता था, क्योंकि रात भर में उसके द्वारा दिखाई गई दयालुता ने या तो उसके मन में कृतज्ञता जगा दी थी, या उन्हें दोहराए जाने की इच्छा पैदा कर दी थी, या उसके लिए प्रेम की एक तीव्र लहर पैदा कर दी थी जिसे इस तरह के किसी प्रकटीकरण की आवश्यकता थी।

लेकिन कभी-कभी, दुःख फिर से उसे जकड़ लेता; वह कल्पना करता कि ओडेट फोर्शेविल की प्रेमिका है, और जब वे दोनों चैटौ में होने वाली पार्टी से एक शाम पहले, बोइस में वर्दुरिन्स के लैंडौ (घोड़े की गाड़ी) की गहराई से उसे देख रहे थे, जिस पार्टी में उसे आमंत्रित नहीं किया गया था, तब उसने व्यर्थ ही उससे अपने साथ घर चलने की विनती की, उसके चेहरे पर निराशा का वह भाव था जिसे उसके कोचमैन ने भी देखा था, और फिर वह अकेला, टूटा हुआ मुँह फेर लिया—उसने फोर्शेविल का ध्यान उसकी ओर आकर्षित करने के लिए बुदबुदाते हुए कहा होगा: "देखो उसे, कितना क्रोधित है!" वही चमकीली, द्वेषपूर्ण, तिरछी, धूर्त निगाह, जैसी उस शाम थी जब फोर्शेविल ने सैनीएट को वर्दुरिन्स के घर से भगा दिया था।

ऐसे समय में स्वान को उससे नफरत हो जाती थी। "लेकिन मैं भी तो मूर्ख रहा हूँ," वह कहता। "मैं दूसरे पुरुषों के सुखों के लिए अपने पैसे खर्च कर रहा हूँ। फिर भी, उसे सावधान रहना चाहिए और बार-बार अपनी मनमानी

नहीं करनी चाहिए, वरना मैं उसे कुछ भी देना बंद कर सकता हूँ। खैर, फिलहाल के लिए हमें अतिरिक्त एहसान बंद कर देने चाहिए। सोचो, कल ही तो उसने कहा था कि वह सीजन के लिए बेयरुथ जाना चाहती है, तो मैं इतना बेवकूफ था कि मैंने हम दोनों के लिए बवेरिया के राजा के उन छोटे-छोटे आलीशान घरों में से एक बुक करने का प्रस्ताव दे दिया। लेकिन वह खास उत्सुक नहीं दिखी; उसने अभी तक हाँ या ना नहीं कहा है। उम्मीद है कि वह मना कर देगी। हे भगवान! सोचो, उसके साथ लगातार दो हफ्ते तक वैगनर का संगीत सुनना, जिसे संगीत में उतनी ही दिलचस्पी है जितनी मछली को छोटे सेबों में; कितना मज़ा आएगा!" और उसकी नफ़रत, उसके प्रेम की तरह, कर्मों में प्रकट होने की चाहत रखती थी। वह अपनी बुरी कल्पनाओं को और भी आगे बढ़ाने में मग्न रहता था, क्योंकि ओडेट पर लगाए गए विश्वासघातों के कारण वह उससे और भी अधिक घृणा करता था, और अगर यह सच साबित हो जाता—जैसा कि वह खुद को समझाने की कोशिश कर रहा था—कि वह वाकई उन विश्वासघातों की दोषी है, तो वह उसे दंडित करने का अवसर पाकर उस पर अपना सारा क्रोध उंडेल देगा। इस तरह, उसने यह भी कल्पना कर ली कि उसे ओडेट का एक पत्र मिलेगा, जिसमें वह उससे बेयरुथ का घर लेने के लिए पैसे मांगेगी, लेकिन साथ ही यह चेतावनी भी देगी कि वह खुद वहां न आए, क्योंकि उसने फोर्शेविल और वर्दुरिन परिवार को आमंत्रित करने का वादा किया था। ओह, कितना अच्छा होता अगर यह कल्पना करना भी संभव होता कि उसमें इतनी हिम्मत होगी। उसे इनकार करने में, उस प्रतिशोधी जवाब को तैयार करने में कितना आनंद आता, जिसकी शर्तों को वह चुनकर और जोर से पढ़कर खुद का मनोरंजन करता था, मानो उसे वास्तव में उसका पत्र मिल गया हो।

अगले ही दिन उसका पत्र आ गया। उसने लिखा कि वर्दुरिन परिवार और

उनके मित्रों ने वैगनर के इन प्रदर्शनों में उपस्थित होने की इच्छा व्यक्त की है, और यदि वह कृपा करके उसे पैसे भेज दें, तो वह उनके घर बार-बार जाने के बाद अंततः अपने घर में वर्दुरिन परिवार का स्वागत करने का आनंद ले सकेगी। उसने उसके बारे में एक शब्द भी नहीं कहा; यह मान लिया गया था कि बेयरुथ में उनकी उपस्थिति उसके लिए एक बाधा होगी।

फिर वह करारा जवाब, जिसका हर शब्द उसने रात भर बड़ी सावधानी से तैयार किया था, इस उम्मीद के बिना कि कभी उसका इस्तेमाल होगा, उसे यह जानकर संतोष हुआ कि वह उसे मिल गया है। अफसोस! उसे पूरा यकीन था कि उसके पास जो पैसा है, या जो वह आसानी से जुटा सकती है, उससे वह बेयरुथ में एक घर ले लेगी, क्योंकि वह ऐसा चाहती थी, वह जो बाख और क्लैपिसन के बीच अंतर नहीं कर सकती थी। तो उसे लेने दो; उसे उसमें और भी सादगी से रहना होगा, बस। उसके पास कोई साधन नहीं होगा (जैसा कि तब होता जब उसने उसे कई हज़ार फ़्रैंक के नोट भेजे होते) कि वह हर शाम अपने किराए के महल में उन शानदार छोटे भोजों का आयोजन कर सके, जिसके बाद शायद उसे फोर्शेविल की बाहों में गिरने का मन करे (जो शायद उसे कभी नहीं हुआ था)। खैर, इस घिनौने अभियान का खर्च स्वान को नहीं उठाना पड़ेगा। आह! अगर वह इसे रोक पाता, अगर वह शुरू करने से पहले अपने टखने में मोच ला पाती, अगर उसे स्टेशन ले जाने वाली गाड़ी का चालक (चाहे कितनी भी बड़ी रिश्वत क्यों न हो) उसे किसी ऐसी जगह पर चुपके से ले जाने के लिए राजी हो जाता जहाँ उसे कुछ समय के लिए एकांत में रखा जा सके, तो वह कपटी औरत, जिसकी आँखें फोर्शेविल के लिए मिलीभगत की मुस्कान से जगमगा रही थीं, जो पिछले अड़तालीस घंटों में स्वान के लिए ओडेट बन गई थी।

लेकिन वह हमेशा के लिए वैसी नहीं रही; कुछ दिनों बाद ही उसकी चमकती, चालाक आँखों की चमक और छल गायब हो गया, फोर्शेविल से कहती हुई उस घृणित ओडेट की छवि, "देखो, वह कितना क्रोधित है!", फीकी पड़ने लगी और धुंधली हो गई। फिर धीरे-धीरे पुनः प्रकट हुई और उसके सामने कोमल आभा के साथ उभरी, दूसरी ओडेट का चेहरा, उस ओडेट का चेहरा जो फोर्शेविल की ओर मुस्कुराते हुए मुड़ी, लेकिन उस मुस्कान में स्वान के लिए स्नेह के सिवा कुछ नहीं था, जब उसने कहा: "आपको ज़्यादा देर नहीं रुकना चाहिए, क्योंकि इस सज्जन को यहाँ रहते हुए मेरा मेहमानों से मिलना पसंद नहीं है। ओह! काश आप उस प्राणी को वैसे ही जानते जैसे मैं जानती हूँ!" वही मुस्कान जिससे वह स्वान को उसकी किसी शिष्टाचारपूर्ण कार्य के लिए धन्यवाद देती थी, जिसे वह बहुत महत्व देती थी, किसी सलाह के लिए जो उसने अपने जीवन के उन गंभीर संकटों में से एक में उससे माँगी थी, जब वह केवल उसी से बात कर सकती थी।

फिर, अपनी दूसरी ओडेट से वह खुद से पूछता कि आखिर किस बात ने उसे वह अपमानजनक पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया होगा, जिसके बारे में शायद तब तक उसने कभी सोचा भी नहीं था कि वह ऐसा कर सकता है। वह पत्र उसे उस ऊँचे मुकाम से नीचे गिरा देता, उस सर्वोच्च स्थान से जो उसने अपनी उदारता और वफादारी से ओडेट की नज़र में हासिल किया था। वह उसके लिए कम प्रिय हो जाता, क्योंकि इन्हीं गुणों के कारण वह उससे प्रेम करती थी, जो उसे न तो फोर्शेविल में मिले और न ही किसी और में। इन्हीं गुणों के कारण ओडेट अक्सर उसके प्रति स्नेह दिखाती थी, जो उसकी ईर्ष्या के क्षणों में नगण्य होता था, क्योंकि यह प्रेम की बजाय स्नेह का प्रमाण था। लेकिन जैसे-जैसे उसकी शंकाएँ कम होती गईं, जो अक्सर कला के बारे में पढ़ने या किसी मित्र से बातचीत

करने से उत्पन्न होती थीं, उसका स्नेह भी कम होता गया, और इस स्नेह की अपेक्षा कम होती गई, वैसे-वैसे उसे फिर से इस स्नेह का महत्व समझ में आने लगा।

अब, इस अप्रत्याशित घटना के बाद, ओडेट स्वाभाविक रूप से उस स्थान पर लौट आई थी जहाँ से स्वान की ईर्ष्या ने उसे क्षण भर के लिए विवश कर दिया था, और उसी कोण पर जहाँ वह उसे आकर्षक पाती थी। उसने अपने मन में उसकी छवि कोमल भावों से भरी, आँखों में सहमति का भाव लिए, और इतनी सुंदर कल्पना की कि वह अपने होठों को उसकी ओर बढ़ाने से खुद को रोक नहीं सका, मानो वह सचमुच कमरे में मौजूद हो और उसे चूम सके; और उसने उस मोहक, दयालु दृष्टि के लिए उसके प्रति कृतज्ञता का भाव बनाए रखा, मानो उसने सचमुच उसे इस तरह देखा हो, और यह केवल उसकी कल्पना न हो जिसने उसकी इच्छा को संतुष्ट करने के लिए ऐसा किया हो।

उसने उसे कितना कष्ट पहुँचाया होगा! निस्संदेह उसके पास अपनी नाराजगी के पर्याप्त कारण थे, लेकिन अगर वह उससे इतना प्रेम न करता, तो ये कारण उसे इतना आक्रोश महसूस कराने के लिए पर्याप्त नहीं होते। क्या उसने अन्य महिलाओं के प्रति भी उतनी ही गंभीर शिकायतें नहीं पाली थीं, जिनकी वह आज भी स्वेच्छा से सेवा करता है, और उनसे कोई क्रोध नहीं रखता क्योंकि अब वह उनसे प्रेम नहीं करता? यदि कभी ऐसा दिन आया जब वह ओडेट के प्रति भी उसी उदासीनता की स्थिति में आ गया, तो वह समझ जाएगा कि यह केवल उसकी ईर्ष्या ही थी जिसने उसे इस इच्छा में कुछ घृणित, अक्षम्य, देखने के लिए प्रेरित किया (आखिरकार, यह एक स्वाभाविक इच्छा थी, जो एक बच्चे जैसी मासूमियत और उसके स्वभाव की एक विशेष कोमलता से उत्पन्न हुई थी) कि वह भी, जब अवसर मिले, वर्दुरिन परिवार के आतिथ्य का

प्रतिफल दे सके और अपने घर में एक स्वामिनी की भूमिका निभा सके। वह दूसरे दृष्टिकोण पर लौट आया—जो उसके प्रेम और ईर्ष्या के विपरीत था, जिसका सहारा वह कभी-कभी मानसिक निष्पक्षता के बल पर और विभिन्न परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए लेता था—जिससे उसने ओडेट के बारे में एक नया निर्णय बनाने की कोशिश की, इस धारणा के आधार पर कि उसने उससे कभी प्रेम नहीं किया था, कि वह उसके लिए अन्य महिलाओं की तरह ही एक महिला थी, कि उसका जीवन (जब वह स्वयं उपस्थित नहीं होता था) अलग नहीं था, एक ऐसा ताना-बाना जो उससे अलग गुप्त रूप से बुना गया था, और उसके विरुद्ध विकृत किया गया था।

तो फिर यह कैसे माना जा सकता है कि वह फोर्शेविल या अन्य पुरुषों के साथ वहाँ उन मादक सुखों का आनंद उठाएगी जो उसने उसके साथ कभी नहीं भोगे थे, और जिन्हें उसकी ईर्ष्या ने ही अपने पूरे स्वरूप में गढ़ा था? बेयरुथ में, पेरिस की तरह, यदि फोर्शेविल ने उसके बारे में कभी सोचा भी होता, तो केवल उसे ओडेट के जीवन में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में ही याद किया होता, एक ऐसा व्यक्ति जिसके लिए उसे उसके घर में मिलने पर रास्ता बनाना पड़ता। यदि फोर्शेविल और ओडेट ने उसकी इच्छा के विरुद्ध वहाँ साथ रहकर सफलता प्राप्त की होती, तो यह उसी का किया-धरा होता जिसने उसे वहाँ जाने से रोकने का व्यर्थ प्रयास किया था। जबकि यदि उसने उसकी योजना को मंजूरी दी होती, जो कि पूरी तरह से उचित थी, तो ऐसा प्रतीत होता कि वह उसकी सलाह पर वहाँ गई है, वह स्वयं को वहाँ भेजा हुआ, उसके द्वारा वहाँ ठहराया हुआ महसूस करती, और उन लोगों का सत्कार करने से प्राप्त आनंद के लिए, जिन्होंने अक्सर उसका सत्कार किया था, उसे उसी का आभार स्वीकार करना पड़ता।

और अगर—उसे इस तरह उससे नाराज़ होकर, बिना दोबारा मिले, जाने देने के बजाय—वह उसे यह पैसा भेज देता, अगर वह उसे इस यात्रा के लिए प्रोत्साहित करता, और उसके लिए इसे आरामदायक और सुखद बनाने के लिए हर संभव प्रयास करता, तो वह दौड़कर उसके पास आती, प्रसन्न और कृतज्ञ, और उसे वह आनंद मिलता—उसके चेहरे को देखने का—जो उसने लगभग एक सप्ताह से नहीं जाना था, एक ऐसा आनंद जिसकी जगह कोई और नहीं ले सकता था। क्योंकि जिस क्षण स्वान बिना घृणा के उसका चित्र बना सका, जिस क्षण वह उसकी मुस्कान में मित्रता को फिर से देख सका, और जिस क्षण उसे हर प्रतिद्वंद्वी से छीनने की इच्छा उसकी ईर्ष्या से उसके प्रेम पर हावी नहीं हुई, उस क्षण प्रेम एक बार फिर, किसी भी चीज़ से बढ़कर, ओडेट के व्यक्तित्व से मिलने वाली संवेदनाओं का स्वाद बन गया, उस आनंद का जो उसे किसी दृश्य की तरह उसकी एक निगाह के जन्म, उसकी किसी एक मुस्कान के निर्माण, उसकी आवाज के उच्चारण की प्रशंसा करने में, या किसी घटना की तरह उस पर सवाल उठाने में मिलता था। और यह आनंद, जो अन्य सभी से भिन्न था, अंततः उसके भीतर उसकी एक आवश्यकता उत्पन्न कर गया, जिसे केवल वही, अपनी उपस्थिति या अपने पत्रों के माध्यम से, शांत कर सकती थी, लगभग उतनी ही निस्वार्थ, लगभग उतनी ही कलात्मक, उतनी ही विचित्र जितनी कि एक अन्य आवश्यकता जिसने स्वान के जीवन के इस नए दौर को चिह्नित किया था, जब पिछले वर्षों की उदासी, अवसाद के बाद एक प्रकार की आध्यात्मिक प्रचुरता आई थी, बिना यह जाने कि उसके जीवन की इस अप्रत्याशित समृद्धि का श्रेय उसे किससे मिला था, ठीक उसी तरह जैसे कोई नाजुक स्वास्थ्य वाला व्यक्ति एक निश्चित क्षण से मजबूत हो जाता है, उसका शरीर मजबूत हो जाता है, और कुछ समय के लिए पूर्ण रूप से ठीक होने की राह पर प्रतीत होता है:

- यह दूसरी आवश्यकता, जो उसके भीतर दृश्यमान, भौतिक दुनिया से स्वतंत्र रूप से विकसित हुई थी, संगीत सुनने और उसे जानने की आवश्यकता थी।

और इस प्रकार, अपनी बीमारी की रासायनिक प्रक्रिया के कारण, अपने प्रेम से ईर्ष्या उत्पन्न करने के बाद, उसके मन में ओडेट के लिए फिर से कोमलता और दया जागृत होने लगी। वह एक बार फिर पुरानी ओडेट बन चुकी थी, मनमोहक और दयालु। उसे अपने कठोर व्यवहार पर गहरा पश्चाताप था। वह चाहता था कि ओडेट उसके पास आए, और उसके आने से पहले ही वह उसके लिए कुछ सुख का प्रबंध कर दे, ताकि वह उसके चेहरे पर कृतज्ञता के भाव और मुस्कान को निखरते हुए देख सके।

इसी तरह, ओडेट को भी यकीन हो गया था कि कुछ ही दिनों में वह पहले की तरह ही कोमल और विनम्र होकर उसके पास आएगा और उससे सुलह की भीख मांगेगा। इसलिए वह भी इस बात से अभ्यस्त हो गई, उसे अब उसे नाराज करने या उसे गुस्सा दिलाने से भी डर नहीं लगता था, और जब भी उसे उचित लगता, वह उन एहसानों को ठुकरा देती थी जिन्हें वह सबसे ज्यादा महत्व देता था।

शायद उसे इस बात का एहसास नहीं था कि झगड़े के दौरान वह उसके प्रति कितना ईमानदार था, जब उसने उससे कहा था कि वह उसे कोई पैसा नहीं भेजेगा, बल्कि उसे नुकसान पहुंचाने के लिए हर संभव कोशिश करेगा। शायद उसे इस बात का भी एहसास नहीं था कि वह अब भी कितना ईमानदार है, अगर उसके प्रति नहीं तो कम से कम खुद के प्रति, उन अन्य मौकों पर जब, उनके भविष्य के संबंधों की खातिर, ओडेट को यह दिखाने के लिए कि वह उसके बिना भी रह सकता है, कि उनके बीच अलगाव अभी भी संभव है, उसने उससे दोबारा मिलने जाने से पहले कुछ समय इंतजार करने का फैसला किया।

कई बार कई दिन बीत जाते थे, इस दौरान उसने उसे कोई नई चिंता नहीं दी थी; और चूंकि आने वाली कुछ मुलाकातों से उसे पता था कि उसे कोई खास खुशी नहीं मिलेगी, बल्कि शायद कोई झुंझलाहट ही होगी जिससे उसकी शांति भंग हो जाएगी, इसलिए उसने उसे लिखा कि वह बहुत व्यस्त है और तय दिनों में उससे मिल नहीं पाएगा। इसी बीच, उसका एक पत्र उसके पत्र के साथ आया और उसने उससे अपनी एक मुलाकात स्थगित करने को कहा। उसने खुद से पूछा, क्यों? उसके संदेह और दुख ने उसे फिर से जकड़ लिया। वह अब उस नई बेचैनी में नहीं रह सकता था जिसमें वह डूब गया था, उन व्यवस्थाओं के कारण जो उसने पहले की अपेक्षाकृत शांत अवस्था में की थीं; वह उसे ढूंढने के लिए दौड़ेगा और आने वाले हर दिन उससे मिलने पर जोर देगा। और अगर उसने पहले पत्र नहीं भी लिखा होता, अगर वह केवल उसके पत्र का जवाब भी दे देती, तो भी उसे उससे मिले बिना चैन नहीं मिलता। ओडेट की स्वीकृति ने स्वान की सारी गणनाओं को उलट दिया था और उसका रवैया पूरी तरह बदल दिया था। हर उस व्यक्ति की तरह जिसके पास कोई अनमोल वस्तु होती है, ताकि वह जान सके कि क्षण भर के लिए भी उससे अलग होने पर क्या होगा, उसने उस अनमोल वस्तु को अपने मन से अलग कर दिया था, और जैसा कि उसने सोचा था, बाकी सब कुछ उसी स्थिति में था जैसा कि वह वस्तु मौजूद होने पर था। लेकिन किसी संपूर्ण वस्तु से एक भाग का अलग होना केवल आंशिक चूक नहीं है, यह अन्य सभी भागों में व्यवधान उत्पन्न करता है, एक ऐसी नई स्थिति उत्पन्न करता है जिसकी पुरानी स्थिति से कल्पना करना असंभव था।

लेकिन कभी-कभी—जब ओडेट छुट्टी पर जाने वाली होती थी—तो किसी मामूली कहासुनी के बहाने वह उसे पत्र न लिखने और उसके लौटने तक उससे न मिलने का फैसला करता था। वह ऐसा जताता था (और यही

उम्मीद करता था) कि दोनों के बीच एक गंभीर अलगाव हो गया है, जिसे शायद ओडेट अंतिम मान लेगी। यह अलगाव काफी हद तक अपरिहार्य था, क्योंकि वह जा रही थी, और वास्तव में वह इसे बस समय से थोड़ा पहले शुरू होने दे रहा था। वह तुरंत ओडेट की कल्पना कर सकता था, जो उससे न तो मिलने आई थी और न ही पत्र पाकर उलझन में, चिंतित और दुखी थी। ओडेट की यह छवि उसकी ईर्ष्या को शांत करके उसे उससे मिलने की आदत छोड़ने में मदद करती थी। कभी-कभी, निस्संदेह, उसके दिमाग के सबसे दूर के कोनों में, जहाँ उसके दृढ़ निश्चय ने उसे धकेल दिया था, और तीन सप्ताह के लंबे अंतराल के कारण, जिस पर वह सहमत हुआ था, वह इस विचार से प्रसन्न होता था कि ओडेट के लौटने पर वह उससे फिर मिलेगा। लेकिन बड़ी कम अधीरता के साथ ही उसने स्वयं से यह पूछना शुरू कर दिया कि क्या वह इतने आसान संयम की अवधि को दोगुना करने के लिए सहर्ष सहमत नहीं होगा। अब तक यह केवल तीन दिन ही चला था, जो कि ओडेट को देखे बिना और इस बार की तरह पूर्व नियोजित अलगाव के बिना, पहले अक्सर बिताए गए समय से कहीं कम था। फिर भी, उसी क्षण, उसके मन में थोड़ी सी अनिच्छा या शरीर में कमजोरी ने उसे वर्तमान को एक असाधारण क्षण के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया, एक ऐसा क्षण जो नियमों से नियंत्रित नहीं होना चाहिए, एक ऐसा क्षण जिसमें विवेक भी उसे सुख के सुखदायक प्रभावों का लाभ उठाने और अपनी इच्छाशक्ति को (जब तक कि वह समय न आ जाए जब उसके प्रयास किसी उद्देश्य की पूर्ति कर सकें) अवकाश देने की अनुमति देगा - उसकी इच्छाशक्ति की क्रिया को निलंबित कर दिया, जिसने अपना निरोधात्मक नियंत्रण समाप्त कर दिया; या फिर, इसके बिना भी, उसके मन में कुछ ऐसी जानकारी का ख्याल आया जो वह ओडेट से पूछना भूल गया था, जैसे कि क्या उसने तय कर

लिया है कि वह अपनी गाड़ी को किस रंग में रंगवाएगी, या किसी निवेश के संबंध में, क्या वह चाहती है कि वह 'साधारण' शेयर खरीदे या 'वरीयता' वाले शेयर (क्योंकि उसे यह दिखाना तो ठीक था कि वह उसे देखे बिना भी रह सकता है, लेकिन अगर उसके बाद गाड़ी को दोबारा रंगवाना पड़े, और शेयरों से कोई लाभांश न मिले, तो उसका किया हुआ कोई भला नहीं होगा), और अचानक, जैसे कोई खिंचा हुआ लोचदार टुकड़ा छूट जाता है, या किसी वायवीय मशीन की हवा फट जाती है, उसे फिर से देखने का विचार, उस दूर के समय से जिससे वह जुड़ा हुआ था, वर्तमान और तात्कालिक संभावनाओं के क्षेत्र में वापस आ गया।

यह बिना किसी और प्रतिरोध का सामना किए इस प्रकार पुनः प्रकट हुआ, वास्तव में इतना अदम्य कि स्वान को ओडेट से अलग बिताए जाने वाले पखवाड़े के धीरे-धीरे नजदीक आते अंत को देखने में उतना दुख नहीं हुआ जितना कि उस समय हुआ जब उसके कोचवान को उस गाड़ी को लाने में दस मिनट का इंतजार करना पड़ा जो उसे ओडेट के पास ले जाने वाली थी। ये मिनट उसने अधीरता और आनंद के आवेश में बिताए, जिनमें उसने ओडेट के साथ अपनी मुलाकात के उस विचार को हजार गुना अधिक पुनः प्राप्त किया, जिस पर उसने अपने स्नेह का सारा धन लुटा दिया। यह मुलाकात, एक ऐसे क्षण में जब वह इसे बहुत दूर मान रहा था, अचानक से फिर से उसके सामने आ गई और उसकी चेतना की सतह पर आ गई। असल बात यह थी कि इस विचार के रास्ते में अब उसे रोकने की इच्छा कोई बाधा नहीं रही थी। स्वान के मन में इस इच्छा का कोई स्थान ही नहीं रह गया था, क्योंकि उसने स्वयं को सिद्ध कर लिया था—या कम से कम उसे ऐसा विश्वास था—कि वह इसे आसानी से रोक सकता है। अब उसे अलगाव की योजना को टालने में कोई असुविधा नहीं दिखती थी, जिसे वह अब जब चाहे तब अमल में लाने के लिए आश्वस्त

था। इसके अलावा, उसे फिर से देखने का यह विचार उसके मन में एक नई ताजगी, एक मोहकता और एक उग्रता के साथ लौट आया था, जिसे लंबे समय की आदत ने कमजोर कर दिया था, लेकिन इस तीन दिन नहीं बल्कि पखवाड़े भर के अभाव के दौरान इसे नई शक्ति मिल गई थी (क्योंकि परहेज की अवधि को अनुमानतः निर्धारित अंतिम तिथि तक चलने वाला माना जा सकता है)। इसने उस सुख को, जिसे आसानी से त्यागा जा सकता था, एक अप्रत्याशित खुशी में बदल दिया था, जिसका विरोध करना उसके लिए असंभव था। अंततः, यह विचार उसके मन में फिर से आया, और उसकी सुंदरता इस बात से और भी बढ़ गई कि वह इस बात से अनजान था कि ओडेट ने क्या सोचा होगा, क्या किया होगा, शायद यह जानकर कि उसमें जीवन का कोई संकेत नहीं दिख रहा है, जिसके परिणामस्वरूप अब वह एक लगभग अज्ञात ओडेट के मनमोहक रहस्योद्घाटन से मिलने जा रहा था।

लेकिन उसने पहले तो यही सोचा था कि पैसे न भेजने का उसका इनकार महज़ एक बहाना है, और अब जब वह उससे गाड़ी की रंगाई या शेयर खरीदने के बारे में पूछने आया था, तो उसे उसमें भी एक बहाना ही नज़र आया। क्योंकि वह उन संकटों के विभिन्न चरणों को पूरी तरह से समझ नहीं पा रही थी जिनसे वह गुज़रा था, और उनके बारे में जो सामान्य धारणा उसने बनाई, उसमें उसने उनकी कार्यप्रणाली को समझने की कोई कोशिश नहीं की, बल्कि केवल उसी बात पर ध्यान दिया जो वह पहले से जानती थी - उनका अनिवार्य, कभी न खत्म होने वाला और हमेशा एक जैसा अंत। यह एक अपूर्ण विचार है (यद्यपि इसके परिणाम कहीं अधिक गहन हो सकते हैं), यदि इसे स्वान के दृष्टिकोण से देखा जाए, जिसने निस्संदेह यह माना होगा कि ओडेट उसे समझने में विफल रही, ठीक उसी तरह जैसे एक मॉर्फिनोमेनिया का शिकार या तपेदिक का रोगी, दोनों को

यह विश्वास होता है कि उन्हें पीछे धकेल दिया गया है - एक को किसी बाहरी घटना ने उस क्षण में जब वे अपनी पुरानी आदत से मुक्त होने वाले थे, और दूसरे को किसी आकस्मिक अस्वस्थता ने उस क्षण में जब वे अंततः ठीक होने वाले थे - खुद को उस डॉक्टर द्वारा गलत समझा हुआ महसूस करते हैं जो इन बनावटी आकस्मिकताओं को उतना महत्व नहीं देता, जो उसके अनुसार, केवल ऐसे छलावे हैं, जो उसके रोगियों को यह दिखाने के लिए अपनाए गए हैं कि एक की बुराई और दूसरे की रोगग्रस्त अवस्था वास्तव में उन पर हमेशा भारी और लाइलाज रूप से बोझ बनी हुई है, जबकि वे सामान्यता और स्वास्थ्य के अपने सपनों को संजोए हुए थे। और वास्तव में, स्वान का प्यार उस स्तर पर पहुँच गया था जहाँ चिकित्सक और (कुछ विशेष प्रकार के स्नेह के मामलों में) सबसे साहसी सर्जन भी खुद से पूछते हैं कि क्या किसी मरीज को उसकी बुराई से वंचित करना या उसे उसकी बीमारी से छुटकारा दिलाना अभी भी उचित है, या वास्तव में संभव है।

निश्चित रूप से, स्वान को अपने इस प्रेम की गहराई का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं था। जब वह इसे परखने का प्रयास करता, तो कभी-कभी पाता कि यह कम हो गया है, लगभग नगण्य हो गया है; उदाहरण के लिए, ओडेट के भावपूर्ण चेहरे और फीके रंग के प्रति जो हल्की-फुल्की पसंद, लगभग नापसंदगी के बराबर, वह कुछ दिनों में फिर से जाग उठती थी। अगले दिन वह खुद से कहता, "सचमुच, मैं काफी प्रगति कर रहा हूँ। जब मैं इस पर गहराई से विचार करता हूँ, तो पाता हूँ कि पिछली रात उसके साथ बिस्तर पर मुझे ज़रा भी आनंद नहीं आया; यह अजीब बात है, लेकिन मुझे वह सचमुच बदसूरत लगी।" और निश्चित रूप से वह सच्चा था, लेकिन उसका प्रेम शारीरिक इच्छा से कहीं अधिक व्यापक था। वास्तव में, ओडेट का व्यक्तित्व अब उसके प्रेम में कोई विशेष स्थान नहीं रखता था। जब उसकी

नज़र मेज़ पर रखी ओडेट की तस्वीर पर पड़ती, या जब वह उससे मिलने आती, तो उसे अपने मन में बसी पीड़ादायक और निरंतर चिंता के बीच उसका चेहरा पहचानने में कठिनाई होती, चाहे वह साक्षात हो या तस्वीर में। वह लगभग आश्चर्य से स्वयं से कहता, "यह वही है!" ठीक वैसे ही जैसे अचानक कोई हमें हमारी ही किसी पीड़ा का स्पष्ट, प्रत्यक्ष रूप से चित्रण कर दे और हमें उसमें अपनी पीड़ा से कोई समानता न नज़र आए। "वह?"—वह स्वयं से पूछने का प्रयास करता कि इसका क्या अर्थ है; क्योंकि यह प्रेम, मृत्यु (बीमारियों की उन अस्पष्ट धारणाओं के विपरीत) के समान है, एक ऐसी चीज़ जिस पर बार-बार प्रश्न उठाया जाता है, ताकि हम उसमें और गहराई से उतर सकें, इस डर से कि प्रश्न का कोई उत्तर न मिले, कि सार हमारी समझ से परे हो जाए—व्यक्तित्व का रहस्य। और यह बीमारी, जो स्वान का प्रेम थी, इतनी बढ़ चुकी थी, उसके सभी आदतों, सभी कार्यों, विचारों, स्वास्थ्य, नींद, जीवन, यहाँ तक कि मृत्यु के बाद की उसकी आशाओं से भी इतनी गहराई से जुड़ी हुई थी, कि उसे पूरी तरह से नष्ट किए बिना उससे अलग करना असंभव था; जैसा कि सर्जन कहते हैं, उसका मामला ऑपरेशन से परे था।

इस प्रेम के कारण स्वान अन्य सभी रुचियों से इतना विरक्त हो गया था कि जब संयोगवश वह फैशन की दुनिया में पुनः प्रकट हुआ, तो उसने स्वयं को याद दिलाया कि उसके सामाजिक संबंध, एक खूबसूरती से गढ़े गए परिवेश की तरह (हालाँकि वह इसके मूल्य का कोई सटीक अनुमान नहीं लगा पाती), ओडेट की दृष्टि में उसके स्वयं के मूल्य में थोड़ा सा इजाफा कर सकते हैं (जैसा कि वास्तव में वे कर सकते थे यदि वे स्वयं उसके प्रेम से सस्ते न हो गए होते, जो ओडेट के लिए अपने संपर्क में आने वाली हर चीज को कमतर आंकता प्रतीत होता था, ऐसी चीजों को स्वयं से कम कीमती बताकर), वह वहाँ, उन स्थानों और लोगों के बीच

होने की अपनी पीड़ा के साथ-साथ, जिन्हें वह नहीं जानती थी, उसी प्रकार के उदासीन आनंद का अनुभव करेगा जैसा कि उसे किसी उपन्यास या चित्रकला से प्राप्त होता जिसमें एक अवकाशप्राप्त वर्ग के मनोरंजन को चित्रित किया गया हो; ठीक वैसे ही, जैसे घर पर, वह अपने घर की सुचारू कार्यकुशलता, अपने कपड़ों और नौकरों की वर्दी की शान-शौकत, अपने निवेशों की सुदृढ़ता के बारे में सोचकर आनंदित होते थे, ठीक उसी तरह जैसे वे अपने प्रिय लेखकों में से एक, सेंट-साइमन की रचनाओं को पढ़ते समय वर्साय के दैनिक जीवन की कार्यप्रणाली, श्रीमती डी मेनटेनॉन के खान-पान, या लुल्ली के तीक्ष्ण लालच और भव्य वैभव के बारे में पढ़ते समय आनंदित होते थे। और जिस हद तक यह अलगाव पूर्ण नहीं था, उस नए आनंद का कारण जो स्वान अनुभव कर रहे थे, वह यह था कि वे क्षण भर के लिए अपने उन कुछ दूरस्थ हिस्सों में विलीन हो सकते थे जो उनके प्रेम और पीड़ा से लगभग अछूते रहे थे। इस लिहाज से, मेरी परदादी द्वारा उन्हें दिए गए 'युवा स्वान' के व्यक्तित्व में, जो चार्ल्स स्वान के अधिक व्यक्तिगत व्यक्तित्व से भिन्न था, अब उन्हें सबसे अधिक आनंद मिलता था। एक बार जब प्रिंसेस डी पार्म का जन्मदिन था (और चूंकि वह अक्सर ओडेट के लिए अप्रत्यक्ष रूप से उपयोगी साबित होती थीं, जैसे कि उन्हें समारोहों, जयंती समारोहों आदि में सीटें दिलवाकर), तो उन्होंने उन्हें फलों की टोकरी भेजने का फैसला किया। उन्हें ठीक से पता नहीं था कि इसे कहां से और कैसे मंगवाना है, इसलिए उन्होंने यह काम अपनी मां की एक चचेरी बहन को सौंप दिया। वह चचेरी बहन, उनके लिए यह काम करने से प्रसन्न थी, और उसने उन्हें पत्र लिखकर इस बात पर जोर दिया कि उसने सभी फल एक ही जगह से नहीं चुने हैं, बल्कि क्रैपोटे से अंगूर, जो वहां की खासियत थे, जौरेट से स्ट्रॉबेरी, और शेवेट से नाशपाती, जो हमेशा सबसे अच्छी होती थी, मंगवाई हैं। संक्षेप

में, "हर फल को मैंने खुद एक-एक करके देखा और परखा है।" और बाद में, राजकुमारी ने जिस सौहार्द से उन्हें धन्यवाद दिया, उससे वे स्ट्रॉबेरी के स्वाद और नाशपाती के पकने का अंदाजा लगा पाए। लेकिन सबसे बढ़कर, "प्रत्येक फल को स्वयं एक-एक करके देखना और परखना" ने उसके कष्टों को कम किया, क्योंकि इससे उसका मन एक ऐसे क्षेत्र में चला गया जहाँ वह शायद ही कभी जाता था, हालाँकि यह उसका अधिकार था, क्योंकि वह एक धनी और सम्मानित मध्यमवर्गीय परिवार का उत्तराधिकारी था, जिसमें पीढ़ियों से 'सही स्थानों' का ज्ञान और दुकानों से चीजें मंगवाने की कला चली आ रही थी।

सच तो यह है कि वह बहुत लंबे समय से यह भूल चुका था कि वह 'युवा स्वान' है, इसलिए जब उसने एक पल के लिए फिर से वह भूमिका निभाई, तो उसे अन्य समयों की तुलना में कहीं अधिक तीव्र आनंद का अनुभव हुआ - जबकि वास्तव में वह आनंद से ऊब चुका था; और यदि मध्यम वर्ग के लोगों की मित्रता, जिनके लिए वह हमेशा 'युवा स्वान' के अलावा कुछ नहीं था, अभिजात वर्ग की तुलना में कम जीवंत थी (हालांकि अधिक चापलूसी भरी थी, क्योंकि मध्यम वर्ग के मन में मित्रता सम्मान से अविभाज्य है), तो किसी शाही व्यक्ति का कोई पत्र, जिसमें उसे किसी शाही दावत की पेशकश की गई हो, स्वान के लिए उतना आकर्षक नहीं हो सकता था जितना कि वह पत्र जिसमें उसे अपने माता-पिता के कुछ पुराने दोस्तों के परिवार में शादी में गवाह बनने या केवल उपस्थित होने के लिए कहा गया था; उनमें से कुछ लोग, जैसे मेरे दादाजी, जो इन घटनाओं से एक साल पहले उन्हें मेरी माँ की शादी में आमंत्रित किया था, उनके संपर्क में थे, जबकि अन्य लोग उन्हें मुश्किल से जानते थे, लेकिन उनका मानना था कि दिवंगत एम. स्वान के योग्य उत्तराधिकारी, पुत्र के प्रति शिष्टाचार दिखाना उनका कर्तव्य है।

लेकिन, फैशन जगत के कई लोगों के साथ अपने लंबे समय से चले आ रहे घनिष्ठ संबंधों के कारण, वे एक तरह से उनके घर, उनकी सेवा और उनके परिवार का हिस्सा थे। जब उनका मन अपने शानदार संपर्कों के बारे में सोचता, तो उन्हें वही बाहरी सहारा, वही ठोस सुकून मिलता, जैसा कि उन्हें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली आलीशान संपत्ति, कीमती चांदी के बर्तनों और बेहतरीन टेबल-लिनेन को देखकर मिलता था। और यह सोचकर कि यदि वह अचानक बीमार पड़ जाए और घर में ही कैद हो जाए, तो उसका नौकर सबसे पहले ड्यूक डी चार्ट्रेस, प्रिंस डी रियूस, ड्यूक डी लक्ज़मबर्ग और बैरन डी चार्लस को ढूंढने दौड़ेगा, उसे वही सांत्वना मिली जो हमारी बूढ़ी फ्रांस्वा को इस ज्ञान से मिलती थी कि एक दिन उसे अपने ही उत्तम वस्त्रों में दफनाया जाएगा, जिन पर उसका नाम अंकित होगा, जो बिल्कुल भी सिले हुए नहीं होंगे (या इतने उत्कृष्ट रूप से सिले होंगे कि यह दर्जी के कौशल और धैर्य की भावना को और बढ़ा देगा), एक ऐसा कफ़न जिसकी छवि उसकी आंखों के सामने हमेशा बनी रहती थी, जिससे उसे धन और समृद्धि की वास्तविक अनुभूति न भी हो तो भी आत्मसम्मान की एक निश्चित संतोषजनक अनुभूति होती थी। लेकिन सबसे बढ़कर—क्योंकि ओडेट से संबंधित अपने हर कार्य और विचार में, स्वान लगातार इस अनकहे एहसास से दबे और प्रभावित रहते थे कि शायद वह ओडेट को कम प्रिय तो नहीं थे, लेकिन कम से कम वर्दुरिन परिवार के सबसे उबाऊ 'वफादार' लोगों की तुलना में भी कम पसंद थे—जब उन्होंने खुद को एक ऐसी दुनिया में पाया जहाँ वह सुरुचि का सर्वोपरि उदाहरण थे, एक ऐसा व्यक्ति जिसे आकर्षित करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी जाती थी, जिसे न देखकर लोग वास्तव में दुखी होते थे, तब उन्होंने एक बार फिर एक सुखी जीवन के अस्तित्व में विश्वास करना शुरू कर दिया, लगभग उसके लिए एक लालसा महसूस करने लगे,

जैसे कोई बीमार व्यक्ति जो महीनों से बिस्तर पर पड़ा हो और सख्त आहार पर हो, जब वह अखबार उठाता है और किसी आधिकारिक भोज का विवरण या सिसिली के आसपास की क्रूज यात्रा का विज्ञापन पढ़ता है।

यदि उसे अपने संभ्रांत मित्रों से मिलने न जाने के लिए बहाने बनाने पड़ते थे, तो ओडेट से मिलने के लिए वह ठीक उन्हीं मुलाकातों का बहाना ढूंढता था। वह अब भी उनसे मिलने जाता था (हर महीने के अंत में खुद से पूछता था कि क्या, यह देखते हुए कि उसने शायद ओडेट के धैर्य की परीक्षा ले ली है, और निश्चित रूप से उससे मिलने के लिए वह अक्सर जाता रहा है, क्या उसे चार हजार फ्रैंक भेजना पर्याप्त होगा?), और हर मुलाकात के लिए वह कोई न कोई बहाना ढूंढ लेता था, कोई उपहार जो उसे ओडेट के लिए लाना होता था, कोई जानकारी जिसकी उसे आवश्यकता होती थी, एम. डी चार्लस, जिससे उसकी मुलाकात ओडेट के घर जाते समय हुई थी, और जिसने स्वान को अपने साथ आने पर जोर दिया था। और, कोई बहाना न मिलने पर, वह एम. डी चार्लस से विनती करता था कि वह तुरंत ओडेट के पास जाए, और बातचीत के दौरान सहज रूप से उससे कहे कि उसे अभी-अभी कुछ याद आया है जो उसे स्वान से कहना है, और क्या वह कृपया स्वान के घर संदेश भेजकर उसे तुरंत ओडेट के पास आने के लिए कह सकती है। लेकिन आम तौर पर स्वान घर पर व्यर्थ ही इंतजार करता रहा, और एम. डी चार्लस ने उसे शाम को बताया कि उसकी योजना सफल नहीं हुई। नतीजा यह हुआ कि अब अगर वह अक्सर पेरिस से बाहर रहती थी, तो भी जब वह वहाँ होती थी तो वह उससे मुश्किल से ही मिल पाता था; जो उससे प्यार करते समय कहती थी, "मैं हमेशा खाली हूँ" और "मुझे क्या फर्क पड़ता है कि दूसरे क्या सोचते हैं?" अब, जब भी वह उससे मिलना चाहता, तो वह

शिष्टाचार का हवाला देती या किसी तरह का वादा करती। जब वह किसी चैरिटी कार्यक्रम, निजी समारोह या किसी ऐसे समारोह में जाने की बात करता जिसमें वह भी मौजूद होती, तो वह कहती कि वह उनके रिश्ते को सबके सामने ज़ाहिर करना चाहता है, कि वह उसके साथ सड़क की किसी औरत जैसा व्यवहार कर रहा है। बात इतनी बिगड़ गई कि ओडेट से कहीं भी मिलने पर पूरी तरह से रोक लगने से बचने के लिए, स्वान को याद आया कि ओडेट मेरे परदादा एडोल्फ़ को जानती थी और उनसे बहुत लगाव रखती थी, जिनके वह खुद भी मित्र थे। इसलिए एक दिन वह उनसे रू डे बेलेचासे स्थित उनके छोटे से फ्लैट में मिलने गए और उनसे ओडेट पर अपना प्रभाव डालने का अनुरोध किया। संयोगवश, जब भी वह स्वान से मेरे चाचा के बारे में बात करतीं, तो हमेशा की तरह काव्यात्मक लहजा अपना लेतीं और कहतीं: "आह, वह! वह बिल्कुल भी आपके जैसे नहीं हैं; उनकी मेरे प्रति मित्रता एक अद्भुत, महान और सुंदर बात है। वह ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जो मेरे प्रति इतनी कम परवाह रखें कि सार्वजनिक रूप से हर जगह मेरे साथ दिखाई दें।" यह बात स्वान के लिए शर्मनाक थी, क्योंकि उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि मेरे चाचा से ओडेट के बारे में बात करते समय उन्हें किस तरह के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने ओडेट की सर्वमान्य श्रेष्ठता, उनके दिव्य अलौकिक स्वरूप, उनके अवर्णनीय गुणों के प्रकटीकरण का जिक्र करते हुए अपनी बात शुरू की, जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उन्होंने आगे कहा, "मैं आपसे उनके बारे में बात करना चाहता हूँ, आप जो जानती हैं कि ओडेट सभी स्त्रियों से श्रेष्ठ, कितनी प्यारी और कितनी देवदूत हैं। लेकिन आप यह भी जानती हैं कि पेरिस में जीवन कैसा है। हर कोई ओडेट को उस नजरिए से नहीं देखता जिस नजरिए से हम दोनों को उन्हें देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसलिए कुछ लोग सोचते हैं कि मैं मूर्खतापूर्ण व्यवहार कर रहा

हूँ; वह तो मुझे थिएटर में भी बाहर मिलने नहीं देतीं। अब आप, जिन पर उन्हें इतना भरोसा है, क्या आप मेरी ओर से उनसे कुछ कह नहीं सकतीं, ताकि उन्हें यकीन हो जाए कि सड़क पर मेरे उनके सामने झुकने से उन्हें जो नुकसान हो सकता है, उसे वह बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बता रही हैं?"

मेरे चाचा ने स्वान को सलाह दी कि वह कुछ दिनों तक ओडेट से न मिले, जिसके बाद ओडेट उससे और भी ज़्यादा प्यार करने लगेगी। उन्होंने ओडेट को भी सलाह दी कि वह स्वान को हर जगह और जितनी बार चाहे मिलने दे। कुछ दिनों बाद ओडेट ने स्वान को बताया कि उसे एक कड़वी सच्चाई का सामना करना पड़ा है; उसे पता चला कि मेरे चाचा भी दूसरे पुरुषों जैसे ही हैं; उन्होंने उस पर हमला करने की कोशिश की थी। ओडेट ने स्वान को शांत किया, जो पहले तो मेरे चाचा को द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती देने को बेताब था, लेकिन दोबारा मिलने पर उसने उनसे हाथ मिलाने से इनकार कर दिया। उसे इस अनबन का और भी ज़्यादा अफ़सोस हुआ क्योंकि उसे उम्मीद थी कि अगर वह कभी मेरे चाचा एडोल्फ़ से दोबारा मिले और उनसे पूरी गोपनीयता से बात कर पाए, तो वह ओडेट के नीस में बीते दिनों के जीवन के बारे में फैली कुछ अफवाहों पर रोशनी डाल सकेंगे। मेरे चाचा एडोल्फ़ वहाँ सर्दियों में रहते थे, और स्वान को लगा कि शायद वहीं पर उनकी पहली मुलाकात ओडेट से हुई थी। किसी ने उसके कान में जो कुछ शब्द कहे थे, एक ऐसे व्यक्ति के बारे में जो ओडेट का प्रेमी प्रतीत होता था, उन्हें सुनकर स्वान स्तब्ध रह गया। लेकिन जिन बातों को वह जानने से पहले सबसे भयानक और सबसे अविश्वसनीय मानता, वे जानने के बाद उसके गहरे दुःख में समा गईं; उसने उन्हें स्वीकार कर लिया, अब वह उनके अस्तित्वहीन होने की बात को समझ ही नहीं सकता था। बस, उनमें से हर एक बात ने एक अमिट छाप छोड़ी, जिससे उसकी प्रेमिका की छवि बदल गई। एक समय

तो उसे लगा कि वह समझ सकता है कि ओडेट की यह नैतिक 'उदासीनता', जिसके बारे में उसने कभी सोचा भी नहीं था, सर्वविदित थी, और बाडेन या नीस में, जब वह अतीत में कई महीने बिताने के लिए गई थी, तो उसे एक प्रकार की प्रेम-प्रसंगिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी। उसने उनसे पूछताछ करने के लिए, उस तरह के कुछ पुरुषों से फिर से संपर्क करने का प्रयास किया; लेकिन वे जानते थे कि वह ओडेट को जानता था, और इसके अलावा, वह उनके दिमाग में उसके बारे में विचार डालने से, उन्हें एक बार फिर उसके पीछे पड़ने से डरता था। लेकिन वह, जिसे अब तक बाडेन या नीस के महानगरीय जीवन से संबंधित सब कुछ इतना उबाऊ लग सकता था, अब जब उसे पता चला कि ओडेट ने शायद कभी उन आनंद-नगरों में एक 'खुशनुमा' जीवन व्यतीत किया था, हालांकि वह कभी पता नहीं लगा सका कि क्या यह केवल पैसे की कमी को पूरा करने के लिए था, जो उसकी बदौलत अब उसे महसूस नहीं होती थी, या किसी मनमौजी प्रवृत्ति के कारण जो किसी भी क्षण उसमें पुनर्जीवित हो सकती थी, वह असहाय पीड़ा में, अंधा और चक्कर खाकर, उस अथाह खाई पर झुक जाता जिसमें उसके अपने वे वर्ष गुजर चुके थे, जिसमें समा गए थे, मैकमोहन के सप्तक काल के शुरुआती वर्ष, जिसमें कोई सर्दियों को प्रोमेनेड डेस एंग्लिस पर और गर्मियों को बाडेन के चूने के पेड़ों के नीचे बिताता था, और उन वर्षों में एक दुखद लेकिन शानदार गहराई पाता, जैसी कि एक कवि उन्हें दे सकता था; और अगर इससे उसे ओडेट की मुस्कान या आँखों में छिपी किसी ऐसी बात को समझने में मदद मिलती, जो अब भी उसे उलझन में डाल रही थी, तो वह उन दिनों कोट डी'अज़ूर पर रोज़मर्रा की ज़िंदगी के सभी महत्वहीन विवरणों के पुनर्निर्माण में उतना ही उत्साह लगाता जितना कि पंद्रहवीं शताब्दी के फ्लोरेंस के मौजूदा दस्तावेजों को खंगालने वाला कोई कला प्रेमी, जो प्राइमावेरा,

सुंदर वन्ना या बॉटिकेली की वीनस की आत्मा में गहराई से उतरने का प्रयास करता है। वह अक्सर उससे एक शब्द भी बोले बिना, बस उसे निहारता और सपने देखता रहता; और वह टिप्पणी करती: "तुम उदास लग रहे हो!" बहुत समय नहीं बीता था जब वह उसे एक उत्कृष्ट प्राणी, उन सर्वश्रेष्ठ महिलाओं के तुलनीय मानता था जिन्हें वह जानता था, इस विचार से कि वह 'रखी हुई' है, इस विचार पर आ गया था; और फिर भी, एक विपरीत प्रक्रिया से, वह ओडेट डी क्रेसी से, जो शायद छुट्टियों पर आए लोगों, नीस और बाडेन के 'महिलाओं के चहेतों' के बीच बहुत प्रसिद्ध थी, उस चेहरे पर लौट आया था, जिस पर अक्सर सौम्य भाव होते थे, उस सहज मानवीय स्वभाव पर। वह खुद से पूछता: "आखिरकार, यह कहने का क्या मतलब है कि नीस में हर कोई जानता है कि ओडेट डी क्रेसी कौन है? इस तरह की प्रतिष्ठा, भले ही वह सच हो, हमेशा दूसरों के विचारों पर आधारित होती है"; वह सोचता कि यह किंवदंती—भले ही यह प्रामाणिक हो—ओडेट से अलग थी, उसमें एक शरारती और अमिट व्यक्तित्व की तरह अंतर्निहित नहीं थी; वह प्राणी जो गुमराह हो सकता था, वह एक ऐसी महिला थी जिसकी आँखें खुली थीं, जिसका हृदय दूसरों के कष्टों के लिए दया से भरा था, एक आज्ञाकारी शरीर जिसे उसने अपनी बाहों में कसकर दबाया था और अपनी उंगलियों से छुआ था, एक ऐसी महिला जिस पर वह एक दिन पूर्ण अधिकार प्राप्त कर सकता था यदि वह खुद को उसके लिए अपरिहार्य बनाने में सफल हो जाता। वहाँ वह अक्सर थकी हुई बैठी रहती थी, अज्ञात चीजों के प्रति उस उत्सुक, बेचैन व्याकुलता के कारण उसका चेहरा क्षण भर के लिए भावहीन हो जाता था, जिससे स्वान परेशान होता था; वह दोनों हाथों से अपने बाल पीछे करती; उसका माथा, उसका पूरा चेहरा बड़ा प्रतीत होता; फिर अचानक, कोई साधारण मानवीय विचार, कोई नेक भावना, जैसी कि

सभी प्राणियों में विश्राम या ध्यान के क्षण में स्वयं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता मिलने पर पाई जाती है, उसकी आँखों से सोने की किरण की तरह चमक उठती। और तुरंत ही उसका पूरा चेहरा एक धूसर परिदृश्य की तरह जगमगा उठता, जो बादलों से घिरा होता है, और अचानक ही बादल छंट जाते हैं और सूर्यास्त के क्षण में वह नीरस दृश्य रूपांतरित हो जाता है। ओडेट का जीवन, जो ऐसे क्षणों में उसे व्यस्त रखता था, यहाँ तक कि वह भविष्य भी, जिसकी वह स्वप्निल कल्पना करती प्रतीत होती थी, स्वान उसके साथ साझा कर सकता था। किसी भी बुरी घटना का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। यद्यपि वे क्षण दुर्लभ होते जा रहे थे, फिर भी व्यर्थ नहीं गए। स्मृति की प्रक्रिया से, स्वान ने टुकड़ों को जोड़ा, उनके बीच के अंतरालों को मिटाया, पिघले हुए सोने की तरह, दया और शांति से परिपूर्ण ओडेट की छवि गढ़ी, जिसके लिए उसे बाद में (जैसा कि हम इस कहानी के दूसरे भाग में देखेंगे) ऐसे बलिदान करने थे जो दूसरी ओडेट उससे कभी नहीं जीत पाती। लेकिन वे क्षण कितने दुर्लभ थे, और अब वह उसे कितनी कम बार देख पाता था! यहाँ तक कि उनकी शाम की मुलाकातों के बारे में भी, वह उसे आखिरी क्षण तक नहीं बताती थी कि वह उससे मिल पाएगी या नहीं, क्योंकि वह मानती थी कि वह हमेशा खाली रहेगा, इसलिए वह पहले यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि कोई और उससे मिलने न आए। वह बहाना बनाती कि उसे एक अत्यंत महत्वपूर्ण उत्तर की प्रतीक्षा करनी है, और अगर स्वान को अपने घर बुलाने के बाद भी, शाम के बीच में उसके किसी दोस्त ने उसे किसी थिएटर में या बाद में रात के खाने पर साथ आने के लिए कहा, तो वह खुशी से उछल पड़ती और जल्दी से तैयार हो जाती। जैसे-जैसे उसका श्रृंगार आगे बढ़ता गया, उसकी हर हरकत स्वान को उस पल के करीब लाती गई जब उसे उससे विदा होना था, जब वह अदम्य शक्ति से उड़

जाएगी; और जब आखिरकार वह तैयार हो गई, और शीशे में झुककर, अपनी खूबसूरती को निखारने की चिंता से भरी आखिरी नज़र से होंठों पर थोड़ा सा मरहम लगाया, माथे पर बालों की एक लट को ठीक किया, और सुनहरे झालरों वाले आसमानी नीले रेशमी लबादे को मंगवाया, तो स्वान इतना दयनीय दिख रहा था कि वह अधीरता से उस पर झल्लाते हुए बोली: "तो इस तरह तुम मुझे आखिरी क्षण तक यहाँ रोकने के लिए धन्यवाद देते हो! और मैंने सोचा था कि मैं तुम्हारे साथ बहुत अच्छा व्यवहार कर रही थी। खैर, अगली बार मुझे बेहतर पता चलेगा!" कभी-कभी, उसे नाराज़ करने के जोखिम पर भी, वह ठान लेता था कि वह पता लगाएगा कि वह कहाँ गई है, और यहाँ तक कि फोर्शेविल के साथ एक रक्षात्मक गठबंधन का सपना भी देखता था, जो शायद उसे बता सकता था। लेकिन खैर, जब उसे पता होता कि वह किसके साथ शाम बिता रही है, तो ऐसा बहुत कम ही होता था कि वह अपने अनगिनत परिचितों में से किसी एक को न ढूंढ पाए जो उस आदमी को जानता हो—भले ही अप्रत्यक्ष रूप से—और उसके बारे में कोई न कोई जानकारी आसानी से हासिल कर सके। और जब वह अपने किसी मित्र को पत्र लिखकर किसी बात पर थोड़ी रोशनी डालने का अनुरोध करता, तो उसे इस बात से राहत मिलती कि अब उसे उन सवालों से परेशान नहीं होना पड़ रहा है जिनका कोई जवाब नहीं है और पूछताछ का बोझ किसी और पर डाल दिया गया है। यह सच है कि स्वान को जो भी जानकारी मिली, उससे उसे कुछ खास समझ नहीं आई। किसी बात को जानना हमेशा उसे होने से नहीं रोक सकता, लेकिन आखिरकार जो बातें हम जानते हैं, वे हमारे हाथों में न सही, तो कम से कम हमारे दिमाग में तो होती ही हैं, जहां हम उन्हें अपनी इच्छानुसार इस्तेमाल कर सकते हैं, जिससे हमें उन्हें नियंत्रित करने की शक्ति का भ्रम होता है। जब भी एम. डी चार्लस ओडेट के साथ होता,

वह बहुत खुश होता था। वह जानता था कि एम. डी चार्लस और उसके बीच कभी कुछ भी अप्रिय नहीं हो सकता, कि जब एम. डी चार्लस उसके साथ कहीं जाते थे, तो वह केवल अपनी मित्रता के कारण ही जाते थे, और वह उसे उसके द्वारा किए गए हर काम के बारे में बताने में कोई संकोच नहीं करते थे। कभी-कभी वह स्वान से इतने ज़ोर देकर कहती थी कि किसी विशेष शाम को उसका उससे मिलना असंभव है, वह किसी सैर के लिए इतनी उत्सुकता से इंतज़ार कर रही होती थी कि स्वान के लिए एम. डी चार्लस का उसके साथ जाने का उपलब्ध होना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता था। अगले दिन, एम. डी चार्लस से ज़्यादा सवाल पूछने की हिम्मत किए बिना, वह उनके पहले जवाबों को पूरी तरह न समझने का दिखावा करके उन्हें और सवाल पूछने के लिए मजबूर कर देता था, और हर सवाल के बाद उसे राहत महसूस होती थी, क्योंकि उसे बहुत जल्द पता चल जाता था कि ओडेट ने अपनी शाम सबसे सरल और सरल तरीके से बिताई थी।

"लेकिन आपका क्या मतलब है, मेरी प्यारी मेमे, मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा... आप उसके घर से सीधे म्यूज़े ग्रेविन नहीं गईं? ज़रूर आप पहले कहीं और गई होंगी? नहीं? यह तो बहुत अजीब है! आप नहीं जानतीं कि आप कितनी मनोरंजक हैं, मेरी प्यारी मेमे। लेकिन उसके बाद चैट नोइर जाने का उसका विचार कितना अजीब था; मुझे लगता है कि यह उसका ही विचार था? नहीं? आपका? यह तो अजीब है। आखिर यह बुरा विचार तो नहीं था; वह वहाँ दर्जनों लोगों को जानती होगी? नहीं? उसने किसी से बात नहीं की? कितना असाधारण! फिर आप दोनों वहाँ ऐसे ही बैठे रहे, बस आप और वह, बिल्कुल अकेले? मैं आपकी कल्पना कर सकती हूँ, वहाँ बैठे हुए! आप एक नेक इंसान हैं, मेरी प्यारी मेमे; मैं आपको बहुत पसंद करती हूँ।"

स्वान अब पूरी तरह से सहज था। उसके साथ अक्सर ऐसा होता था कि जब वह अपने उन दोस्तों से बात करता था जो उसके प्यार के बारे में कुछ नहीं जानते थे, जिन दोस्तों की वह मुश्किल से ही सुनता था, तो उसे कुछ अलग-थलग वाक्य सुनने को मिलते थे (जैसे, उदाहरण के लिए, "मैंने कल श्रीमती डी क्रेसी को देखा; वह एक ऐसे आदमी के साथ थीं जिसे मैं नहीं जानता था।"), ये वाक्य उसके दिल में उतर जाते थे और तुरंत एक ठोस अवस्था में समा जाते थे, स्टैलेग्माइट की तरह सख्त हो जाते थे, और उसे झुलसाते और चीरते थे, जैसे वे वहाँ अविभाज्य रूप से पड़े रहते थे। इसके विपरीत, ये शब्द कितने मनमोहक थे: "वह किसी को नहीं जानती थी; उसने कभी किसी से बात नहीं की।" वे उसके भीतर कितनी सहजता से बहते थे, कितने तरल थे, कितने वाष्प जैसे थे, कितने सहजता से सांस लेते थे! और फिर भी, एक क्षण बाद, वह खुद से कह रहा था कि अगर ओडेट को उसकी संगति से ज्यादा ये सुख पसंद हैं, तो वह उसे बहुत नीरस समझती होगी। और उनका महत्वहीन होना, हालांकि इससे उसे तसल्ली मिली, उसे इस तरह पीड़ा पहुँचा रहा था मानो ओडेट का इन बातों का आनंद लेना विश्वासघात हो।

भले ही वह यह पता नहीं लगा सका कि वह कहाँ गई है, फिर भी उसके उस समय के दुख को कम करने के लिए इतना ही काफी होता, जिसके लिए ओडेट की उपस्थिति, उसकी संगति का आकर्षण ही एकमात्र विशिष्ट कारण था (एक ऐसा विशिष्ट कारण जो अंततः, कई अन्य उपायों की तरह, बीमारी को और बढ़ा देता था, लेकिन कम से कम उसके कष्टों को अस्थायी रूप से राहत देता था)। इतना ही काफी होता, अगर ओडेट उसे अपने घर में रहने देती, जब तक वह बाहर न चली जाए, वहाँ उसके लौटने के समय तक प्रतीक्षा करने देती, जिसकी शांति और सन्नाटे में उन बीच के घंटों की सारी यादें घुलमिल जातीं और खो जातीं, जिन्हें किसी

जादू या शाप ने उसे बाकी घंटों से अलग होने की कल्पना करने पर मजबूर कर दिया था। लेकिन वह नहीं मानी; उसे घर लौटना ही था; उसने रास्ते में खुद को कई योजनाएँ बनाने के लिए मजबूर किया, ओडेट के बारे में सोचना बंद कर दिया; कपड़े उतारते समय भी उसके मन में तरह-तरह के सुखद विचार उमड़ रहे थे: कल अपनी पसंदीदा कलाकृति देखने की उम्मीद से उत्साहित होकर वह हल्के मन से बिस्तर पर कूद गया और बत्ती बंद कर दी; लेकिन जैसे ही वह सोने के लिए तैयार हुआ, अनजाने में ही उसने अपना संयम खो दिया, क्योंकि यह इतना अभ्यस्त हो गया था, तभी उसके शरीर में एक ठंडी कंपकंपी दौड़ गई और वह फूट-फूट कर रोने लगा। वह यह जानना नहीं चाहता था कि ऐसा क्यों हुआ, लेकिन उसने अपनी आँखें पोंछीं और मुस्कुराते हुए कहा, "यह तो बहुत सुखद है; मैं न्यूरोस्टेनिक हो रहा हूँ।" इसके बाद वह इस सोच से पूरी तरह थक गया कि अगले दिन उसे ओडेट के बारे में पता लगाने की कोशिश फिर से शुरू करनी होगी, उससे मिलने के लिए अपने सारे प्रभाव का इस्तेमाल करना होगा। निरंतर, निरंतर, निरंतर, निरंतर, निरंतर कार्य करने की यह विवशता इतनी क्रूर पीड़ा थी कि एक दिन पेट में सूजन देखकर उसे यह सोचकर सचमुच आनंद हुआ कि शायद उसे कोई ट्यूमर है जो घातक सिद्ध होगा, कि उसे अब किसी और बात की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, कि यही उसकी बीमारी है जो उसके जीवन को नियंत्रित करेगी, उसे अंत तक एक खिलौना बना देगी। यदि वास्तव में, उस समय, वह अक्सर, यद्यपि स्वयं से भी स्वीकार नहीं करता था, मृत्यु की कामना करता था, तो यह अपने कष्टों की तीव्रता से बचने के लिए नहीं, बल्कि अपने संघर्ष की एकरसता से बचने के लिए था।

फिर भी, वह उस समय तक जीना चाहता था जब वह उससे प्रेम करना छोड़ दे, जब उसके पास उससे झूठ बोलने का कोई कारण न हो, जब

अंततः वह उससे जान सके कि जिस दिन वह दोपहर में उससे मिलने गया था, उस दिन वह फोर्शेविल की बाहों में थी या नहीं। अक्सर कई दिनों तक, यह संदेह कि वह किसी और से प्रेम करती है, उसके मन को फोर्शेविल के प्रश्न से विचलित कर देता था, जिससे वह प्रश्न उसके लिए लगभग महत्वहीन हो जाता था, ठीक वैसे ही जैसे लगातार अस्वस्थता की स्थिति में होने वाले नए बदलाव कुछ समय के लिए हमें पिछली स्थिति से मुक्ति दिला देते हैं। ऐसे भी दिन थे जब उसे किसी भी संदेह से कोई पीड़ा नहीं होती थी। उसे लगता था कि वह ठीक हो गया है। लेकिन अगली सुबह, जब वह जागा, तो उसे उसी जगह पर वही दर्द महसूस हुआ, एक ऐसी अनुभूति जो उसने पिछले दिन, मानो विभिन्न अनुभवों के सैलाब में घुलमिल गई थी। लेकिन वह अपनी जगह से हिली नहीं थी। वास्तव में, इसी दर्द की तीव्रता ने उसे जगाया था।

चूंकि ओडेट ने उसे उन अत्यंत महत्वपूर्ण मामलों के बारे में कभी कोई जानकारी नहीं दी, जिनमें उसका प्रतिदिन इतना समय व्यतीत होता था (यद्यपि वह दुनिया में इतना लंबा जीवन जी चुका था कि जानता था कि ऐसे मामले केवल सुख ही होते हैं), इसलिए वह लंबे समय तक उनकी कल्पना करने का प्रयास नहीं कर पाता था; उसका मस्तिष्क खाली हो जाता था; फिर वह अपनी थकी हुई पलकों पर उंगली फेरता, जैसे वह अपना चश्मा पोंछता हो, और सोचना पूरी तरह बंद कर देता था। हालांकि, इस अनछुए क्षेत्र से कुछ ऐसे काम उभर कर आए जो समय-समय पर फिर से प्रकट होते थे, जिन्हें ओडेट अस्पष्ट रूप से दूर के रिश्तेदारों या पुराने दोस्तों के प्रति किसी दायित्व से जोड़ती थी, क्योंकि वे ही एकमात्र ऐसे लोग थे जिनका जिक्र वह अक्सर उससे मिलने में बाधा डालने वाले के रूप में करती थी, और स्वान को वे उसके जीवन की आवश्यक, अपरिवर्तनीय पृष्ठभूमि प्रतीत होते थे। जिस लहजे में वह बार-बार "जिस

दिन मैं अपनी सहेली के साथ हिप्पोड्रोम जाऊंगी" का जिक्र करती थी, उससे अगर कभी स्वान अस्वस्थ महसूस करता और सोचता, "शायद ओडेट कृपा करके मुझसे मिलने आ जाए," तो उसे अचानक याद आ जाता कि आज वही दिन है। वह खुद को सुधारते हुए कहता, "अरे नहीं! उसे आने के लिए कहना बेकार है; मुझे पहले ही सोच लेना चाहिए था, आज तो वह अपनी सहेली के साथ हिप्पोड्रोम जा रही है। हमें जो संभव है, उसी पर टिके रहना चाहिए; ऐसी बातें कहने में समय बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं जो स्वीकार्य नहीं हैं और जिन्हें पहले ही अस्वीकार कर दिया गया है।" और ओडेट पर हिप्पोड्रोम जाने का जो कर्तव्य था, जिसे स्वान ने इस तरह मान लिया, वह उसे न केवल अपरिहार्य लगता था, बल्कि उस पर अंकित आवश्यकता का निशान उससे दूर-दूर तक जुड़ी हर चीज को तर्कसंगत और वैध बना देता था। अगर ओडेट ने सड़क पर राहगीर के अभिवादन का जवाब दिया होता, जिससे स्वान को ईर्ष्या हुई थी, और उसके सवालों का जवाब देते हुए उस अजनबी को उन दो-तीन महत्वपूर्ण कर्तव्यों से जोड़ दिया होता जिनके बारे में उसने अक्सर उससे बात की थी; उदाहरण के लिए, अगर उसने कहा होता: "ये वही सज्जन हैं जो कुछ दिन पहले मेरी दोस्त के बॉक्स में थे; वही जिनके साथ मैं हिप्पोड्रोम जाती हूँ," तो यह स्पष्टीकरण स्वान के संदेह को दूर कर देता; आखिरकार, यह तो स्वाभाविक ही था कि हिप्पोड्रोम में उस दोस्त के बॉक्स में ओडेट के अलावा और भी मेहमान होते, लेकिन उसने कभी उनके बारे में कोई स्पष्ट धारणा बनाने की कोशिश नहीं की थी और न ही वह इसमें सफल हुआ था। ओह! वह उस दोस्त को कितना जानना चाहता था जो हिप्पोड्रोम जाती थी, कितना चाहता था कि वह उसे ओडेट के साथ वहाँ आमंत्रित करे। वह ओडेट से मिलने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए अपनी सारी जान-पहचान कुर्बान करने को कितना तैयार था, चाहे वह

कोई मैनीक्योरिस्ट ही क्यों न हो या किसी दुकान की लड़की। वह रानियों से भी ज़्यादा कष्ट और खर्चा उठाता। क्या वे ओडेट के जीवन के बारे में अपने ज्ञान के आधार पर उसे उसके दर्द का एकमात्र कारगर उपाय नहीं देते? वह उन साधारण लोगों में से किसी एक के साथ अपना जीवन बिताने के लिए कितना उत्सुक होता, जिनसे ओडेट ने किसी गुप्त उद्देश्य या स्वभाव की सादगी के कारण मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे थे। वह किसी साधारण लेकिन आकर्षक घर की अटारी में हमेशा के लिए अपना निवास स्थान बनाने के लिए कितना तत्पर रहता, जहाँ ओडेट जाती तो थी, लेकिन उसे कभी अपने साथ नहीं ले जाती, और जहाँ अगर वह उस छोटी, एकांतप्रिय दर्जी के साथ रहता, जिसका प्रेमी होने का वह आसानी से नाटक कर लेता, तो ओडेट लगभग प्रतिदिन उससे मिलने आती। उन लगभग झुग्गी-झोपड़ियों जैसे इलाकों में, वह कितना साधारण, दयनीय, लेकिन आनंददायक, शांति और खुशी से भरा जीवन अनिश्चित काल तक जीने के लिए तैयार हो जाता।

कभी-कभी ऐसा भी होता था कि स्वान से मिलने के बाद जब वह किसी अनजान व्यक्ति को अपनी ओर आते देखती, तो ओडेट के चेहरे पर वही उदासी का भाव स्पष्ट दिखाई देता था, जो उस दिन उसके चेहरे पर था जब फोर्शेविल की मौजूदगी में स्वान उससे मिलने आया था। लेकिन ऐसा बहुत कम होता था; क्योंकि जब भी वह अपने सारे कामों और लोगों की सोच के डर के बावजूद स्वान से मिल पाती, तो उसके व्यवहार में अब आत्मविश्वास ही प्रमुख होता था; यह एक अद्भुत विरोधाभास था, शायद अनजाने में बदला लेने जैसा, या शायद उस झिझक भरी भावना की स्वाभाविक प्रतिक्रिया, जो उसने अपनी दोस्ती के शुरुआती दिनों में स्वान की उपस्थिति में और यहां तक कि उसकी अनुपस्थिति में भी महसूस की थी, जब उसने उसे लिखे पत्र की शुरुआत इन शब्दों से की थी: "मेरे प्रिय,

मेरा हाथ इतना कांप रहा है कि मैं मुश्किल से लिख पा रही हूँ।" (कम से कम वह ऐसा दिखावा करती थी, और उस भावना में थोड़ी सच्चाई तो जरूर रही होगी, वरना वह इसे बढ़ा-चढ़ाकर बताने की कोशिश न करती।) तो उस समय स्वान उसे अच्छा लगता था। हमारे हाथ केवल अपने लिए या जिनसे हम प्यार करते हैं, उनके लिए ही कांपते हैं। जब वे हमारी खुशी को नियंत्रित करना छोड़ देते हैं, तो हम उनकी उपस्थिति में कितने शांत, कितने सहज और कितने निडर हो जाते हैं! अब उनसे बात करते समय, उन्हें लिखते समय, वह उन शब्दों का प्रयोग नहीं करती थीं जिनसे वह खुद को यह भ्रम दिलाना चाहती थीं कि वह उनके हैं, और उनके बारे में बात करते समय "मेरा" और "मेरे" कहने के अवसर पैदा करती थीं: "तुम ही हो जो दुनिया में मेरे पास हो; यह हमारी दोस्ती की खुशबू है, मैं इसे संजो कर रखूंगी," और न ही वह उनसे भविष्य, मृत्यु के बारे में, किसी ऐसे साहसिक कार्य के रूप में बात करती थीं जिसे उन्हें साझा करना होगा। उन शुरुआती दिनों में, वह उनसे जो कुछ भी कहते, वह प्रशंसा से जवाब देतीं: "जानते हो, तुम कभी दूसरे लोगों जैसे नहीं होगे!" - वह उनके लंबे, थोड़े गंजे सिर को निहारतीं, जिसके बारे में केवल उनकी सफलताओं को जानने वाले लोग सोचते थे: "अगर आप चाहें तो कह सकते हैं कि वह दिखने में बहुत अच्छे नहीं हैं, लेकिन वह बुद्धिमान हैं; वह बालों का गुच्छा, वह चश्मा, वह मुस्कान!" और, शायद उसकी प्रेमिका बनने की इच्छा से कहीं अधिक उसे उसके वास्तविक स्वरूप में जानने की जिज्ञासा से प्रेरित होकर, वह आह भरती:

काश मुझे पता चल पाता कि तुम्हारे दिमाग में क्या चल रहा है!

लेकिन अब, चाहे वह कुछ भी कहे, वह कभी चिड़चिड़ेपन भरे, कभी स्नेहपूर्ण लहजे में जवाब देती: "अरे! तो तुम कभी दूसरे लोगों जैसे नहीं बन पाओगे!"

वह उसके सिर को निहारती, जो उसकी हाल की चिंताओं से जरा भी बूढ़ा नहीं हुआ था (हालाँकि अब लोग उसके बारे में उसी मानसिक प्रक्रिया से सोचते थे जिससे कोई सिम्फनी संगीत के किसी अंश का अर्थ समझ पाता है जिसका कार्यक्रम उसने पढ़ा हो, या किसी ऐसे बच्चे में 'समानताएँ' ढूंढ पाता है जिसके परिवार को वह जानता हो: "वह बिल्कुल बदसूरत नहीं है, अगर आप चाहें तो, लेकिन वह वास्तव में काफी बेतुका है; वह चश्मा, वह बालों का गुच्छा, वह मुस्कान!" अपनी कल्पना में, सुझावों से पोषित होकर, उस अदृश्य सीमा को महसूस करते हुए जो कुछ महीनों के अंतराल पर एक उत्साही प्रेमी के सिर को एक धोखेबाज पति के सिर से अलग करती है), और कहती:

"काश, मैं तुम्हें बदल पाता; तुम्हारे दिमाग में थोड़ी अक्ल डाल पाता।"

वह हमेशा अपनी आशाओं की सच्चाई पर विश्वास करने के लिए तैयार रहता था, अगर केवल ओडेट के उसके प्रति व्यवहार में ही संदेह की गुंजाइश होती, तो वह लालच से उसके शब्दों पर भरोसा कर लेता: "अगर तुम चाहो तो कर सकती हो," वह उससे कहता।

और उसने उसे समझाने की कोशिश की कि उसे दिलासा देना, उसे नियंत्रित करना, उससे काम करवाना एक नेक काम होगा, जिसके लिए कई अन्य महिलाएं खुद को समर्पित करने की अनुमति से बेहतर कुछ नहीं मांगतीं, हालांकि यह कहना उचित होगा कि उन अन्य महिलाओं के हाथों में यह नेक काम स्वान को उसकी स्वतंत्रता का अनुचित और असहनीय अतिक्रमण ही लगता। "अगर वह मुझसे ज़रा सा भी प्यार नहीं करती," उसने खुद से कहा, "तो वह मुझे बदलना नहीं चाहती। मुझे बदलने के लिए, उसे मुझसे ज़्यादा बार मिलना होगा।" और इस तरह वह उसमें पाई गई इन कमियों में कम से कम उसकी रुचि, शायद उसके प्यार का भी सबूत ढूंढ पाया; और वास्तव में, अब वह उसे प्यार का इतना कम संकेत

देती थी कि उसे उसके प्रति उसकी रुचि के सबूत के रूप में उन विभिन्न चीजों को मानना पड़ा जिन्हें वह समय-समय पर उसे करने से मना करती थी। एक दिन उसने घोषणा की कि उसे उसका कोचवान पसंद नहीं है, क्योंकि उसे लगता था कि वह शायद स्वान को उसके खिलाफ भड़का रहा था, और वैसे भी, वह स्वान के आदेशों का वह तत्परता और सम्मान नहीं दिखाता था जो वह देखना चाहती थी। उसे लगा कि वह उससे यह सुनना चाहता है: "जब तुम मेरे पास आओ तो उसे फिर से मत लाना," ठीक वैसे ही जैसे वह उससे चुंबन चाहता हो। इसलिए, अच्छे मूड में आकर उसने यह कहा; और वह बहुत भावुक हो गया। उस शाम, एम. डी चार्लस से बात करते हुए, जिनके साथ उसे उसके बारे में खुलकर बात करने की संतुष्टि थी (क्योंकि अब वह जो भी मामूली बातें कहता था, यहाँ तक कि उन लोगों से भी जिन्होंने उसके बारे में कभी नहीं सुना था, उनमें हमेशा ओडेट का किसी न किसी रूप में जिक्र होता था), उसने उनसे कहा:

"फिर भी मुझे पूरा विश्वास है कि वह मुझसे प्यार करती है; वह अब मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार करती है, और निश्चित रूप से वह मेरे कामों में रुचि लेती है।"

और अगर, जब वह उसके घर के लिए रवाना हो रहा था, रास्ते में कहीं छोड़ने वाले अपने एक दोस्त के साथ गाड़ी में बैठ रहा था, तो उसके दोस्त ने कहा: "अरे! टीवी पर वह लोरेडन तो नहीं है?" तो स्वान ने उसे कितने उदास आनंद के साथ जवाब दिया होगा:

"अरे! हे भगवान! नहीं! मैं आपको बता दूँ, जब मैं रू ला पेरूज़ जाती हूँ तो लोरेडान को साथ ले जाने की हिम्मत नहीं कर सकती; ओडेट को पसंद नहीं है कि मैं लोरेडान के साथ जाऊँ, उसे लगता है कि वह मेरे लिए ठीक नहीं है। अब क्या करूँ? औरतें, आप जानते हैं, औरतें। मेरे प्यारे, वह तो

आग बबूला हो जाएगी। अरे भगवान, हाँ; मुझे बस रेमी को वहाँ ले जाना है; फिर तो मुझे ताने सुनने ही पड़ेंगे!"

ओडेट का स्वान के साथ अब जो नया व्यवहार था - उदासीन, सुस्त और चिड़चिड़ा - उससे स्वान को निश्चित रूप से पीड़ा हो रही थी; पर उसे इस बात का एहसास नहीं था कि वह कितनी पीड़ा सह रहा है; क्योंकि ओडेट का उसके प्रति रवैया दिन-प्रतिदिन धीरे-धीरे ठंडा होता जा रहा था, इसलिए उसके आज के व्यवहार और पहले के व्यवहार की तुलना करके ही वह इस बदलाव की गहराई को समझ सकता था। अब यह बदलाव उसका गहरा, गुप्त घाव बन गया था, जो उसे दिन-रात पीड़ा देता था, और जब भी उसे लगता कि उसके विचार इस घाव की ओर बढ़ रहे हैं, तो वह तुरंत उन्हें दूसरी दिशा में मोड़ लेता, कहीं उसे और अधिक पीड़ा न सहनी पड़े। वह अपने मन में अस्पष्ट रूप से कह सकता था: "एक समय था जब ओडेट मुझसे ज़्यादा प्यार करती थी," लेकिन उस समय की कोई स्पष्ट तस्वीर उसके मन में कभी नहीं बनी। जैसे उनके अध्ययन कक्ष में एक अलमारी थी जिसकी ओर वे कभी न देखने का प्रबंध करते थे, जिसे वे कमरे में प्रवेश करते या बाहर निकलते समय टालने के लिए एक तरफ कर देते थे, क्योंकि उसके एक दराज में उन्होंने वह गुलदाउदी का फूल बंद कर रखा था जो उसने उन्हें उन शुरुआती शामों में से एक शाम को दिया था जब वे उसे अपनी गाड़ी में घर लाए थे, और वे पत्र जिनमें उसने लिखा था: "तुम अपना दिल भी क्यों नहीं भूल गए? मैं तुम्हें वह कभी वापस नहीं देती," और "दिन हो या रात, जब भी तुम्हें मेरी ज़रूरत हो, बस मुझे एक संदेश भेज देना, और जैसा चाहो मेरा उपयोग कर लेना," ठीक उसी तरह उनके हृदय में एक ऐसा स्थान था जहाँ वे अपने विचारों को कभी भी पहुँचने नहीं देते थे, और ज़रूरत पड़ने पर उन्हें तर्क की लंबी प्रक्रिया से दूर रखते थे ताकि वे उसके पास से न गुजरें; वह स्थान जहाँ उनके सुखद

दिनों की यादें बसी हुई थीं।

लेकिन उनकी वह अत्यधिक सावधानी एक शाम उस समय विफल हो गई जब वह एक पार्टी में गए थे।

यह मार्क्विज़ डी सेंट-यूवर्टे के घर पर था, उस सीज़न की आखिरी शाम को, जब उन्होंने लोगों को उन संगीतकारों को सुनने के लिए आमंत्रित किया था जो बाद में उनके चैरिटी संगीत कार्यक्रमों में प्रस्तुति देंगे। स्वान, जो पिछली सभी शामों में बारी-बारी से जाने का इरादा रखते थे, लेकिन कभी भी अपना मन नहीं बना पाए थे, इस पार्टी के लिए तैयार होते समय, बैरन डी चार्लस उनसे मिलने आए, जो मार्क्विज़ के घर जाने का प्रस्ताव लेकर आए थे, अगर उनकी संगति स्वान को वहाँ पहुँचने पर इतना ऊब महसूस न करने में, थोड़ा कम दुखी होने में कुछ मदद कर सके। लेकिन स्वान ने उन्हें धन्यवाद देते हुए कहा:

आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि मुझे आपकी संगति से कितनी खुशी होगी। लेकिन सबसे बड़ी खुशी जो आप मुझे दे सकते हैं, वह यह होगी कि आप ओडेट से मिलने चले जाएं। आप जानते हैं कि आप पर उसका कितना गहरा प्रभाव है। मुझे नहीं लगता कि वह आज शाम कहीं जाएगी, सिवाय अपनी पुरानी दर्जी से मिलने जाने के, और मुझे यकीन है कि अगर आप उसके साथ वहां जाएं तो उसे बहुत खुशी होगी। वैसे भी, आप उसे उससे पहले घर पर पा लेंगे। उसे खुश रखने की कोशिश करें, और उसे कुछ अच्छी सलाह भी दें। अगर आप कल के लिए कुछ ऐसा इंतजाम कर सकें जिससे वह खुश हो जाए, कुछ ऐसा जो हम तीनों साथ मिलकर कर सकें। गर्मियों के लिए भी पता लगाने की कोशिश करें; देखें कि क्या वह कुछ करना चाहती है, कोई क्रूज जिस पर हम तीनों जा सकें; कुछ भी जो आपके दिमाग में आए। मुझे खुद आज रात उससे मिलने की उम्मीद नहीं है; फिर भी अगर वह चाहे कि मैं आऊं, या अगर आपको कोई रास्ता

मिल जाए, तो आप मुझे मैडम डी सेंट-यूवर्टे के पते पर आधी रात तक एक संदेश भेज दें; उसके बाद मैं यहाँ रहूँगा। मेरे लिए आप जो कुछ भी कर रहे हैं, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद—आप जानते हैं कि मैं आपके बारे में क्या सोचता हूँ!

उसके मित्र ने वादा किया कि जैसे ही वह उसे सेंट-यूवर्टे घर के दरवाजे पर छोड़ देगा, वह स्वान की इच्छा के अनुसार जाकर सब कुछ करेगा। वह इस विचार से कुछ राहत महसूस करते हुए वहाँ पहुँचा कि एम. डी चार्लस शाम को रू ला पेरूज़ में बिता रहे होंगे, लेकिन वह ओडेट से संबंधित हर चीज के प्रति, और विशेष रूप से फैशनेबल जीवन के विवरणों के प्रति, एक उदास उदासीनता की स्थिति में था, एक ऐसी स्थिति जिसने उन्हें उस आकर्षण से भर दिया जो किसी भी ऐसी चीज में पाया जाता है जो अब हमारी इच्छा का विषय नहीं रह गई है, फिर भी हमें अपने ही रूप में दिखाई देती है। अपनी गाड़ी से उतरते ही, स्वान को अपने मेहमानों को औपचारिक अवसरों पर दी जाने वाली उनकी घरेलू ज़िंदगी की काल्पनिक झलक के अग्रभाग में, जिसमें वे वेशभूषा और परिवेश की सटीकता का विशेष ध्यान रखती हैं, बाल्ज़ाक के 'बाघों' के वारिसों और उत्तराधिकारियों को देखकर आश्चर्य हुआ—जो अब 'घोड़ों की देखभाल करने वाले' थे—जो आम तौर पर अपनी मालकिन के साथ बाहर घूमने जाते थे, लेकिन अब टोपी और बूट पहने, घर के बाहर, बजरी वाली सड़क पर या अस्तबल के बाहर तैनात थे, जैसे माली अपने-अपने फूलों की क्यारियों के सिरों पर निरीक्षण के लिए खड़े होते हैं। जीवित लोगों और दीर्घाओं में रखे चित्रों के बीच समानताएं खोजने की उनकी वह विशेष प्रवृत्ति यहाँ फिर से प्रकट हुई, लेकिन अधिक सकारात्मक और व्यापक रूप में; अब जब वे समाज से अलग हो चुके थे, तो संपूर्ण समाज ही चित्रों की एक श्रृंखला में उनके सामने प्रस्तुत हुआ। क्लोकरूम में, जहाँ पुराने

दिनों में, जब वह फैशनेबल हुआ करता था, वह अपने ओवरकोट में जाता था और शाम की पोशाक में बाहर निकलता था, लेकिन वहाँ जो कुछ हुआ था, उसका उसे कोई आभास नहीं था, क्योंकि वहाँ बिताए एक-दो मिनटों के दौरान उसका मन या तो उस पार्टी में था जिसे वह अभी-अभी छोड़कर आया था, या उस पार्टी में जिसमें उसे अभी प्रवेश कराया जाने वाला था। अब, इतने देर से आए मेहमान के अप्रत्याशित आगमन से जागृत होकर, उसने पहली बार देखा कि शानदार, सहज जानवरों का बिखरा हुआ समूह, बेंचों और बक्सों पर इधर-उधर ऊंघते हुए विशालकाय नौकर, जब तक कि अपने शानदार ग्रेहाउंड जैसे चेहरों को दिखाते हुए, अपने पैरों पर खड़े नहीं हो गए और उसके चारों ओर एक घेरा बना लिया। उनमें से एक, जिसका रूप-रंग बेहद क्रूर था और जो पुनर्जागरण काल की कुछ तस्वीरों में फांसी, यातनाओं आदि को दर्शाने वाले जल्लादों से मिलता-जुलता था, स्वान की ओर निर्दयी भाव से बढ़ा ताकि उसका सामान छीन सके। लेकिन उसकी तीखी निगाहों की कठोरता उसके सूती दस्तानों की कोमलता से संतुलित हो गई, इतनी प्रभावी ढंग से कि जैसे ही वह स्वान के पास पहुंचा, ऐसा लगा मानो वह एक साथ उसके प्रति घोर तिरस्कार और उसकी टोपी के प्रति अत्यंत कोमल भाव प्रदर्शित कर रहा हो। उसने टोपी को इतनी सावधानी से उठाया कि उसकी हरकतों की सटीकता में कुछ हद तक अति-सजगता झलक रही थी, और उसकी असाधारण शक्ति के प्रमाण से उसकी कोमलता लगभग दिल को छू लेने वाली थी। फिर उसने उसे अपने एक साथी को दे दिया, जो अनुभवहीन और डरपोक था, और जो अपने ही जैसी घबराहट को हर दिशा में गुस्से भरी निगाहों से देखकर व्यक्त कर रहा था, और कैद के शुरुआती घंटों में एक जंगली जानवर की तरह मूक बेचैनी दिखा रहा था।

कुछ ही दूरी पर, वर्दी पहने एक हट्टा-कट्टा युवक सोच में डूबा खड़ा था,

गतिहीन, प्रतिमा की तरह, निष्क्रिय, ठीक उस विशुद्ध सजावटी योद्धा की तरह जिसे मांटेग्ना के सबसे उथल-पुथल भरे चित्रों में देखा जा सकता है, सपनों में खोया हुआ, अपनी ढाल पर टिका हुआ, जबकि उसके चारों ओर लड़ाई, रक्तपात और मृत्यु का माहौल है; स्वान के चारों ओर उमड़े अपने साथियों के समूह से अलग, वह उस दृश्य से बेपरवाह रहने के लिए दृढ़ संकल्पित प्रतीत होता था, जिसे वह अपनी क्रूर, हरी आँखों से अस्पष्ट रूप से देख रहा था, मानो वह मासूमों का नरसंहार हो या संत जेम्स की शहादत। ऐसा लगता था मानो वह ठीक उसी लुप्त हो चुकी जाति से आया हो—यदि वास्तव में वह कभी अस्तित्व में थी, सिवाय सैन ज़ेनो के वेदी के पीछे की दीवारों और एरेमिटानी के भित्ति चित्रों में, जहाँ स्वान का उससे संपर्क हुआ था, और जहाँ वह अभी भी सपने देख रही है—मास्टर के पडुआन मॉडलों में से किसी एक या अल्बर्ट ड्यूरर के सैक्सन द्वारा किसी शास्त्रीय मूर्ति के गर्भाधान का फल। और उसके लाल बालों की लटें, जो प्रकृति से घुंघराले थे, लेकिन ब्रिलिएंटाइन से उसके सिर से चिपके हुए थे, उन्हें उसी तरह विस्तार से दर्शाया गया था जैसे उस यूनानी मूर्ति में दर्शाया गया है जिसका मंटुआन चित्रकार लगातार अध्ययन करता रहता था, और जो, यदि अपने निर्माता के उद्देश्य में केवल मनुष्य का प्रतिनिधित्व करती है, तो कम से कम मनुष्य की सरल रूपरेखा से इतनी विविधतापूर्ण समृद्धि निकालने में कामयाब होती है, मानो सजीव प्रकृति से उधार ली गई हो, कि बालों का एक गुच्छा, अपने चमकदार लहरदार घुमावों और चोंच जैसे नुकीले सिरों से, या अपने ब्रश किए हुए बालों के पुष्प तिहरे मुकुट के आवरण से, एक ही समय में समुद्री शैवाल का गुच्छा, कबूतरों का झुंड, जलकुंभी का बिस्तर और एक सर्प की मरोड़ती हुई पीठ का आभास करा सकता है। कुछ अन्य, उतने ही विशाल, एक भव्य सीढ़ी के पायदानों पर रखे हुए थे, जो अपनी सजावटी उपस्थिति

और संगमरमर जैसी स्थिरता के कारण, डॉजेस के महल में उस देवता-मुकुट वाली सीढ़ी की तरह, 'राक्षसों की सीढ़ी' कहलाने योग्य थी। स्वान अब उस सीढ़ी पर कदम रख रहा था, इस विचार से दुखी होकर कि ओडेट कभी उस पर नहीं चढ़ी थी। आह, दूसरी ओर, वह कितनी खुशी से उस अंधेरी, दुर्गंधयुक्त, खतरनाक सीढ़ियों से उस छोटी दर्जी की दुकान तक दौड़ता, जिसके अटारी में वह ओडेट के आने पर शाम बिताने के अधिकार के लिए ओपेरा में साप्ताहिक स्टेज-बॉक्स का किराया खुशी-खुशी चुका देता, और अन्य दिनों में भी, उसके बारे में बात करने के विशेषाधिकार के लिए, उन लोगों के बीच रहने के लिए जिनसे वह उसके न होने पर अक्सर मिलती थी, और जो इस कारण से, उसकी प्रेमिका के जीवन के किसी ऐसे हिस्से को आपस में गुप्त रखते थे जो उससे कहीं अधिक वास्तविक, अधिक दुर्गम और अधिक रहस्यमय था जितना वह जानता था। जबकि उस पुरानी दर्जी की दुकान तक जाने वाली उस दुर्गंधयुक्त, लेकिन आकर्षक सीढ़ी पर, चूंकि इमारत में कोई दूसरी सीढ़ी नहीं थी, कोई अतिरिक्त सीढ़ी नहीं थी, शाम को हर दरवाजे के बाहर एक खाली, बिना धुला दूध का डिब्बा दरवाजे की चटाई पर रखा हुआ दिखाई देता था, जो सुबह के काम के लिए तैयार रखा होता था; उस घिनौनी, विशाल सीढ़ी पर, जिस पर स्वान उस समय चढ़ रहा था, उसके दोनों ओर, अलग-अलग स्तरों पर, चौकीदार के कमरे की खिड़की या कमरों के एक समूह के प्रवेश द्वार द्वारा उसकी दीवारों में बनी प्रत्येक टेढ़ी-मेढ़ी संरचना के सामने, जो उनके द्वारा नियंत्रित आंतरिक सेवा विभागों का प्रतिनिधित्व करते थे, और मेहमानों के प्रति उनका सम्मान करते हुए, एक द्वारपाल, एक मुख्य प्रबंधक, एक प्रबंधक (योग्य व्यक्ति जो सप्ताह के शेष दिन अपने-अपने क्षेत्रों में अर्ध-स्वतंत्रता में बिताते थे, छोटे दुकानदारों की तरह वहाँ अकेले भोजन करते थे, और कल किसी सफल डॉक्टर या उद्योगपति

की सामान्य सेवा में लौट सकते थे), उन सभी निर्देशों का अक्षरशः पालन करने में सतर्क थे जो उन्हें शानदार वर्दी पहनने की अनुमति देने से पहले दिए गए थे, जिसे वे केवल लंबे अंतराल पर पहनते थे, और जिसमें वे पूरी तरह से सहज महसूस नहीं करते थे, प्रत्येक अपने द्वार के मेहराब में खड़े थे, उनकी शानदार शान एक लोकतांत्रिक सौहार्द से संयमित थी, जैसे संत अपने-अपने स्थानों में, और एक विशाल स्विस गार्ड की शैली में सजे एक द्वारपाल, जो चर्च के बीडल की तरह कपड़े पहने हुए था, हर नए आने वाले व्यक्ति के गुजरने पर अपनी लाठी से फुटपाथ पर प्रहार करता था। सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुँचकर, जहाँ उसके पीछे एक पीला चेहरा और सिर के पीछे गुंथी हुई छोटी चोटी वाला नौकर चल रहा था, जो गोया के किसी चर्च के सेवक या किसी पुराने नाटक के पात्र की तरह लग रहा था, स्वान एक कार्यालय के पास से गुजरा जहाँ नौकर, अपने विशाल रजिस्टरों के सामने नोटरी की तरह बैठे हुए, गंभीरता से खड़े हुए और उसका नाम अंकित किया। इसके बाद वह एक छोटे से हॉल से गुजरा, जो —ठीक वैसे ही जैसे कुछ कमरे उनके मालिकों द्वारा किसी एक कलाकृति के लिए सजाए जाते हैं (जिससे उनका नाम पड़ा है), और अपनी सोची-समझी सादगी में, उसके अलावा और कुछ नहीं रखते—जैसे ही वह उसमें दाखिल हुआ, उसे बेनवेनुटो सेलिनी की किसी अनमोल सशस्त्र चौकीदार की मूर्ति की तरह एक युवा नौकर दिखाई दिया, जिसका शरीर थोड़ा आगे की ओर झुका हुआ था, और उसके लाल रंग के गले के ऊपर उसका चेहरा और भी लाल था, जिससे मानो आग, कायरता और उत्साह की धाराएं फूट रही थीं। जैसे ही उसने उस कमरे के दरवाजे को ढकने वाली ऑबुसन की टेपेस्ट्री को अपनी उग्र, सतर्क, हताश निगाहों से भेदा, जिसमें संगीत प्रस्तुत किया जा रहा था, एक सैनिक जैसी निर्भीकता या अलौकिक विश्वास के साथ—चेतावनी का प्रतीक, सतर्कता का अवतार,

किसी दंगे का स्मरण—ऐसा लग रहा था मानो वह किसी देवदूत या प्रहरी की तरह किसी कालकोठरी या गिरजाघर के टावर से दुश्मन के आने या आने के समय की प्रतीक्षा कर रहा हो। निर्णय। स्वान को अब केवल संगीत कक्ष में प्रवेश करना था, जिसके दरवाजे जंजीरों से लदे एक द्वारपाल ने उसके लिए खोल दिए, जिसने उसके सामने झुककर मानो उसे किसी जीते हुए शहर की चाबियां सौंप दी हों। लेकिन उसे उस घर की याद आ गई जिसमें वह उस पल हो सकता था, अगर ओडेट ने अनुमति दी होती, और दरवाजे पर पड़े खाली दूध के डिब्बे की एक झलक ने उसके दिल को झकझोर दिया।

जब पर्दे के दूसरी ओर नौकरों का दृश्य मेहमानों के दृश्य में परिवर्तित हुआ, तो उसने तुरंत ही पुरुष की सामान्य कुरूपता के अपने बोध को पुनः प्राप्त कर लिया। परन्तु चेहरों की यह कुरूपता भी, जो उसके लिए अधिकतर परिचित थी, अब कुछ नई और विचित्र सी प्रतीत हुई, क्योंकि उनके चेहरे-मोहरे—जो अब तक उसके लिए किसी व्यक्ति की पहचान के व्यावहारिक उपयोग के प्रतीक थे, जो केवल आनंद की तलाश, ऊब से बचने या शिष्टाचार का पालन करने का प्रतीक थे—अब स्थिर थे, केवल सौंदर्य संबंधी मापदंडों से मापे जा सकने वाले, उनकी वक्रता और कोणों की स्वायत्तता में। और इन लोगों में, जिनके बीच स्वान अब खुद को फंसा हुआ पा रहा था, कुछ भी ऐसा नहीं था (यहां तक कि वह मोनोकल भी जो उनमें से कई लोग पहनते थे, और जो पहले, स्वान को अधिक से अधिक यह कहने में सक्षम बनाता कि फलां व्यक्ति मोनोकल पहनता है) जो अब एक आदत के सामान्य अर्थ तक सीमित नहीं था, जो उन सभी में समान थी, बल्कि अब प्रत्येक में उसे एक व्यक्तिगतता का एहसास नहीं कराता था। शायद इसलिए कि जनरल डी फ्रोबरविले और मार्क्विस डी ब्रेओटे, जो दरवाजे के ठीक अंदर आपस में बात कर रहे थे, को वह

तस्वीर में दो आकृतियों से अधिक कुछ नहीं समझते थे, जबकि वे उनके पुराने और उपयोगी मित्र थे जिन्होंने उन्हें जॉकी क्लब में शामिल किया था और द्वंद्वयुद्ध में उनका साथ दिया था, जनरल का मोनोकल, उनके साधारण, दागदार, विजयी, अभिमानी चेहरे पर एक गोले के टुकड़े की तरह चिपका हुआ था, उनके माथे के बीचोंबीच, जिसने उनके माथे को आधा अंधा कर दिया था, साइक्लोप्स के एक आंख वाले चमकते अग्रभाग की तरह, स्वान को एक भयानक घाव जैसा प्रतीत हुआ जिसे प्राप्त करना गौरव की बात हो सकती थी लेकिन जिसे दिखाना निश्चित रूप से उचित नहीं था, जबकि एम. डी ब्रेओटे का मोनोकल, जिसे उन्होंने अपने मोती-धूसर दस्तानों, अपनी क्रश टोपी और सफेद टाई के साथ एक उत्सव के प्रतीक के रूप में पहना था, बाहर जाते समय अपने परिचित चश्मे के स्थान पर (जैसा कि स्वान स्वयं करते थे), उसके दूसरी तरफ चिपका हुआ था, जैसे माइक्रोस्कोप के लिए स्लाइड पर तैयार किया गया एक नमूना। वह सूक्ष्म निगाह जो मैत्रीपूर्ण भावनाओं से भरी हुई थी और छतों की भव्यता, पार्टियों की मनमोहकता, कार्यक्रमों की रोचकता और जलपान की उत्कृष्टता पर कभी भी चमकना बंद नहीं करती थी।

"हैलो! आप यहाँ! अरे, आपको देखे हुए तो सदियाँ बीत गईं!" जनरल ने स्वान का अभिवादन किया और उनके चेहरे पर तनाव देखकर यह अनुमान लगाया कि शायद किसी गंभीर बीमारी के कारण वे दूर रहे थे, और आगे कहा, "आप तो बिल्कुल ठीक लग रहे हैं, बूढ़े!" तभी एम. डी ब्रेउटे ने एक 'समाजवादी उपन्यासकार' की ओर मुड़कर पूछा, "मेरे प्यारे दोस्त, आप यहाँ क्या कर रहे हैं?" उस उपन्यासकार ने अभी-अभी अपनी भौंहों और गालों के बीच अपना मोनोकल लगाया था, जो उनके मनोवैज्ञानिक शोध और चरित्र के निर्मम विश्लेषण में इस्तेमाल होने वाला एकमात्र उपकरण था। अब उसने रहस्यमय और महत्वपूर्ण भाव से, 'र'

को घुमाते हुए उत्तर दिया: "मैं अवलोकन कर रहा हूँ!"
मार्क्विस डी फॉरेस्टेल का मोनोकल छोटा और बिना फ्रेम वाला था, और यह आँख पर एक अनावश्यक उपास्थि की तरह जड़ा हुआ था, जिसकी उपस्थिति वहाँ अकथनीय और उसका सार अकल्पनीय था, जिससे आँख में लगातार और दर्दनाक संकुचन होता था। इस मोनोकल ने उनके चेहरे को एक उदास परिष्कार प्रदान किया, और महिलाओं को यह मानने पर मजबूर किया कि प्रेम में वे भयानक पीड़ा सह सकते हैं। लेकिन एम. डी सेंट-कैंडे का चेहरा, शनि ग्रह की तरह एक विशाल वलय से घिरा हुआ, एक ऐसे चेहरे का केंद्र था जो हर पल दर्पण के संबंध में खुद को नए सिरे से संवारता था, जबकि उनकी उभरी हुई लाल नाक और सूजे हुए व्यंग्यात्मक होंठ अपने भावों से पॉलिश किए हुए डिस्क में चमकती बुद्धि की स्थिर लौ के स्तर तक पहुँचने का प्रयास करते थे, और उन चालाक, पतित युवतियों द्वारा दुनिया की सबसे आकर्षक आँखों से भी अधिक तरजीह पाते थे, जिन्हें यह कृत्रिम आकर्षण और कामुक आनंद के परिष्कार के सपने देखने के लिए प्रेरित करता था। और फिर, उनके पीछे, एम. डी पलांससी, जो अपने विशाल कार्प जैसे सिर और बड़ी-बड़ी आँखों के साथ उत्सवपूर्ण समारोहों की भीड़ में धीरे-धीरे ऊपर-नीचे घूम रहे थे, हर पल अपने बड़े जबड़े खोलते हुए मानो अपनी दिशा का पता लगा रहे हों, ऐसा प्रतीत होता था मानो वे अपने शरीर पर अपने एक्वेरियम की कांच की दीवार का केवल एक आकस्मिक और शायद विशुद्ध रूप से प्रतीकात्मक टुकड़ा लिए हुए हों, एक ऐसा हिस्सा जो संपूर्णता का संकेत देता हो, जो स्वान को, जो पाडुआ में गियोटो के 'बुराइयों और सद्गुणों' के एक उत्साही प्रशंसक थे, उस अन्याय की याद दिलाता था जिसके बगल में एक पत्तेदार शाखा उन जंगलों का विचार जगाती है जो उसके गुप्त ठिकाने को घेरे हुए हैं।

मैडम डी सेंट-यूवर्टे के दबाव में और बांसुरी पर बजाए जा रहे ओर्फियो के एक एरिया को सुनने के लिए स्वान कमरे में आगे बढ़ गए थे और एक कोने में बैठ गए थे, जहाँ से दुर्भाग्यवश, उनकी दृष्टि दो 'अस्पष्ट' उम्र की महिलाओं, मार्क्विज़ डी कैम्ब्रेमर और विस्काउंटेस डी फ्रैंकेटोट द्वारा सीमित थी, जो अगल-बगल बैठी थीं। वे चचेरी बहनें थीं, इसलिए पार्टियों में अपना समय कमरों में इधर-उधर घूमते हुए बिताती थीं, प्रत्येक अपने बैग को पकड़े और अपनी बेटी के साथ, रेलवे स्टेशन पर लोगों की तरह एक-दूसरे को खोजती रहती थीं, और तब तक चैन से नहीं बैठ पाती थीं जब तक कि वे अपने पंखों या रूमालों से दो अगल-बगल की कुर्सियाँ आरक्षित नहीं कर लेती थीं; मैडम डी कैम्ब्रेमर, क्योंकि वह शायद ही किसी को जानती थीं, एक साथी पाकर और भी खुश थीं, जबकि मैडम... इसके विपरीत, बेहद लोकप्रिय रहीं डी फ्रैंकेटोट ने अपने सभी दोस्तों को यह दिखाना प्रभावी और मौलिक समझा कि वह उनकी संगति की बजाय एक गुमनाम देहाती चचेरे भाई की संगति को प्राथमिकता देती हैं, जिसके साथ उनकी बचपन की यादें मिलती-जुलती थीं। व्यंग्यात्मक उदासी से भरी स्वान उन्हें देखती रहीं जब वे पियानोफोर्टे इंटर, मेज़ो (लिस्ज़्ट का 'संत फ्रांसिस पक्षियों को उपदेश देते हुए') सुन रहे थे, जो बांसुरी के बाद आया, और उस गुणी कलाकार की मदहोश कर देने वाली उड़ान का अनुसरण कर रहा था; श्रीमती डी फ्रैंकेटोट चिंतित थीं, उनकी आँखें मानो सिर से ऊपर उठ रही थीं, मानो वे कुंजियाँ जिन पर उनकी उंगलियाँ इतनी फुर्ती से चल रही थीं, ट्रैपीज़ की एक श्रृंखला हों, जिनमें से किसी से भी वह सौ फीट नीचे ज़मीन पर गिर सकते हैं, और बीच-बीच में आश्चर्य और अविश्वास भरी निगाहों से अपने साथी को देखती रहीं, मानो कह रही हों: "यह संभव नहीं है, मैंने कभी विश्वास नहीं किया होगा कि कोई इंसान यह सब कर सकता है!"; श्रीमती संगीत की अच्छी शिक्षा प्राप्त महिला डी

कैम्ब्रेमर, अपने सिर से ताल मिलाते हुए—क्षण भर के लिए एक मेट्रोनोम के पेंडुलम में बदल गईं, जिनके एक कंधे से दूसरे कंधे तक के आंदोलनों की गति और तेजी (उनकी आंखों में उस बेकाबू भाव के साथ जो एक पीड़ित व्यक्ति दिखाता है जो अब अपने दर्द का विश्लेषण करने में असमर्थ है, न ही उस पर काबू पाने के लिए उत्सुक है, और केवल कहता है "मैं कुछ नहीं कर सकती") इतनी बढ़ गई कि हर पल उनके हीरे के झुमके उनकी चोली की किनारी में फंस जाते थे, और उन्हें अपने बालों में लगे काले अंगूरों के गुच्छे को सीधा करना पड़ता था, हालांकि उनकी लगातार तेज गति में कोई रुकावट नहीं आती थी। दूसरी ओर (और थोड़ा आगे) श्रीमती के... डी फ्रैंकेटोट, मार्क्विज़ डी गैलार्डन, अपने पसंदीदा चिंतन में लीन थीं, अर्थात् गुएरमांटेस परिवार से अपने रिश्ते पर, जिससे उन्हें सार्वजनिक और निजी दोनों तरह से काफी प्रसिद्धि मिली थी, लेकिन साथ ही शर्मिंदगी भी। उस घर के सबसे शानदार लोग उनसे कुछ हद तक दूरी बनाए रखते थे, शायद इसलिए कि वह एक थकाऊ बूढ़ी औरत थीं, या इसलिए कि वह एक बदनाम बूढ़ी औरत थीं, या इसलिए कि वह परिवार की एक निम्न शाखा से थीं, या बहुत संभव है कि इसका कोई कारण ही न हो। जब वह खुद को किसी ऐसे व्यक्ति के बगल में बैठी पातीं जिसे वह नहीं जानती थीं, जैसा कि इस समय वह श्रीमती डी फ्रैंकेटोट के बगल में बैठी थीं, तो उन्हें इस बात का गहरा एहसास होता था कि गुएरमांटेस परिवार से उनके संबंध की चेतना को उन दृश्यमान अक्षरों में प्रकट नहीं किया जा सकता है जो बीजान्टिन चर्चों के मोज़ाइक में, एक के नीचे एक रखे गए, किसी पवित्र व्यक्ति के बगल में एक ऊर्ध्वाधर स्तंभ में उन शब्दों को अंकित करते हैं जिन्हें वह व्यक्ति बोल रहा होता है। इस समय वह इस बात पर विचार कर रही थी कि उसकी युवा चचेरी बहन प्रिंसेस डेस लाउम्स की शादी के छह साल बीत जाने के

बावजूद, उसे कभी कोई निमंत्रण या फोन भी नहीं आया था। यह सोचकर उसे गुस्सा भी आया और गर्व भी; क्योंकि उसने हर उस व्यक्ति को, जिसने मैडम डेस लाउम्स के घर उसे न देखकर हैरानी जताई थी, यही बताया था कि वहाँ प्रिंसेस मैथिल्डे से मिलने का खतरा था—एक ऐसा अपमान जिसे उसका अपना परिवार, जो कट्टर और निष्ठावान लेजिटिमिस्ट था, कभी माफ नहीं करता—और धीरे-धीरे उसे यकीन हो गया था कि यही उसकी युवा चचेरी बहन से न मिलने का असली कारण था। उसे याद था, यह सच है, कि उसने कई बार मैडम डेस लाउम्स से मिलने का तरीका पूछा था, लेकिन उसे यह बात अस्पष्ट रूप से याद थी, और इस थोड़ी अपमानजनक याद को उसने यह कहकर दबा दिया, "आखिरकार, पहल करना मेरा काम नहीं है; मैं उससे कम से कम बीस साल बड़ी हूँ।" और इन अनकहे शब्दों से प्रेरित होकर उसने गर्व से अपने कंधे पीछे की ओर उछाले, मानो वे उसके सीने से अलग हो रहे हों। उसका सिर, जो लगभग क्षैतिज रूप से उन पर टिका हुआ था, किसी तीतर के चिपके हुए सिर की याद दिलाता था, जिसे शाही अंदाज़ में पंखों से सजाकर मेज़ पर लाया जाता है। ऐसा नहीं था कि वह ज़रा भी तीतर जैसी दिखती थी, क्योंकि प्रकृति ने उसे छोटा, मोटा और मर्दाना शरीर दिया था; लेकिन लगातार कष्टों ने उसे पीछे की ओर झुका दिया था, जैसा कि उन पेड़ों में देखा जा सकता है जो किसी खाई के किनारे पर जड़ जमा लेते हैं और अपना संतुलन बनाए रखने के लिए पीछे की ओर बढ़ने को मजबूर हो जाते हैं। चूंकि वह खुद को इस बात से तसल्ली देने के लिए बाध्य थी कि वह बाकी गुएरमांटे परिवार के बराबर नहीं थी, इसलिए उसे लगातार खुद से यह दोहराना पड़ता था कि यह उसके सिद्धांतों और गर्व की अटूट कठोरता के कारण ही है कि वह उन्हें इतना कम देख पाती है, इस निरंतर पुनरावृत्ति ने धीरे-धीरे उसके शरीर को नया रूप दे दिया था,

और उसे एक प्रकार का 'व्यवहार' दिया था जिसे आम लोग संस्कारी होने का संकेत मानते थे, और कभी-कभी क्लबों में बैठे बूढ़े सज्जनों की थकी हुई आँखों में एक क्षणिक चमक भी पैदा कर देता था। क्या किसी ने श्रीमती... डी गैलार्डन की बातचीत को विश्लेषण के उस रूप में देखा जाता, जिसके द्वारा विभिन्न शब्दों की सापेक्ष आवृत्ति को देखकर उन्हें एक गुप्त संदेश की कुंजी मिल जाती, तो वे तुरंत यह टिप्पणी करते कि कोई भी अभिव्यक्ति, यहाँ तक कि भाषण के सबसे सामान्य रूप भी, उसमें "मेरे चचेरे भाई गुएरमांटेस के यहाँ," "मेरी चाची गुएरमांटेस के यहाँ," "एल्ज़ियर डी गुएरमांटेस का स्वास्थ्य," "मेरे चचेरे भाई गुएरमांटेस का बक्सा" जितनी बार नहीं आए थे। अगर कोई उससे किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के बारे में बात करता, तो वह जवाब देती कि यद्यपि वह उससे व्यक्तिगत रूप से परिचित नहीं थी, उसने उसे अपनी चाची गुएरमांटेस के यहाँ सैकड़ों बार देखा था, लेकिन वह यह जवाब इतने ठंडे स्वर में, इतनी खोखली आवाज़ में देती कि यह तुरंत स्पष्ट हो जाता कि यदि वह उस हस्ती को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानती थी, तो इसका कारण वे सभी हठी, अटल सिद्धांत थे जिनके सहारे उसके झुके हुए कंधे पीछे की ओर इस तरह टिके हुए थे, मानो उन सीढ़ियों में से एक पर हों जिन पर जिम्नास्टिक प्रशिक्षक हमें छाती के विस्तार के लिए 'फैलाने' का आदेश देते हैं।

ठीक उसी क्षण प्रिंसेस डेस लाउम्स, जिनके उस शाम मैडम डी सेंट-यूवर्टे के यहाँ आने की उम्मीद नहीं थी, वास्तव में आ गईं। यह दिखाने के लिए कि वह उस घर में, जहाँ वह विशेष सम्मान के कारण आई थीं, अपनी उच्च पदवी का लाभ नहीं उठाना चाहती थीं, उन्होंने अपने हाथों को बगल में दबाकर कमरे में प्रवेश किया, जबकि वहाँ न तो कोई भीड़ थी और न ही कोई उनके पास से निकलने की कोशिश कर रहा था; वह जानबूझकर

पीछे खड़ी रहीं, मानो वह अपनी उचित जगह पर हों, ठीक वैसे ही जैसे कोई राजा किसी थिएटर के दरवाजे पर प्रतीक्षारत जुलूस में खड़ा हो, जहाँ प्रबंधन को उसके आने की सूचना नहीं दी गई हो; अपनी उपस्थिति का प्रचार न करते हुए और अपने हक का दावा न करते हुए, उसने अपनी दृष्टि को सख्ती से सीमित रखते हुए कालीन या अपनी स्कर्ट के एक पैटर्न का अध्ययन किया। वह उस स्थान पर खड़ी रही जो उसे सबसे शालीन लगा (और जैसा कि वह अच्छी तरह जानती थी, जैसे ही श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे को उसकी उपस्थिति का पता चलता, वह खुशी से चिल्ला उठती और उसे वहाँ से हटा देती), श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के बगल में, जिन्हें वह जानती नहीं थी। उसने मूक अभिनय के माध्यम से अपनी पड़ोसी के संगीत प्रेम को देखा, लेकिन उसने उसकी नकल करने से परहेज किया। इसका यह अर्थ नहीं था कि श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे के घर में कुछ मिनट बिताने के लिए सहमत होने के बाद, प्रिंसेस डेस लाउम्स (ताकि मेजबान के प्रति उनके द्वारा किए गए शिष्टाचार का दुगना प्रभाव हो) यथासंभव मित्रवत और मददगार न दिखना चाहती हों। लेकिन उसे 'अतिशयोक्ति' से स्वाभाविक रूप से घृणा थी, और वह हमेशा लोगों को यह स्पष्ट करती थी कि वह अपने परिवेश के अनुरूप न होने वाली किसी भी भावना का प्रदर्शन 'बिल्कुल नहीं' करेगी, हालांकि ऐसे प्रदर्शन उस पर हमेशा प्रभाव डालते थे, क्योंकि उनमें अनुकरण की वह भावना विकसित हो जाती थी, जो झिझक के समान होती है, और जो सबसे आत्मविश्वासी व्यक्तियों में भी किसी अपरिचित वातावरण के संपर्क में आने से विकसित हो जाती है, भले ही वह वातावरण उनके अपने वातावरण से निम्न स्तर का ही क्यों न हो। वह स्वयं से पूछने लगी कि क्या ये हावभाव शायद उस संगीत का एक आवश्यक हिस्सा तो नहीं हैं जो बजाया जा रहा था, एक ऐसा संगीत जो शायद उन सभी संगीत से अलग श्रेणी का था जो उसने पहले कभी

सुना था; और क्या इनसे परहेज करना संगीत को समझने में उसकी अपनी अक्षमता और घर की मालकिन के प्रति असभ्यता का संकेत तो नहीं था? परिणामस्वरूप, अपनी दोनों परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों को एक साथ व्यक्त करने के लिए, कभी वह अपने कंधे के पट्टे सीधे करतीं या अपने सुनहरे बालों में मूंगे या गुलाबी एनामेल की छोटी-छोटी गेंदों को टटोलतीं, जिन पर छोटे-छोटे हीरे जड़े होते थे और जो उनके सरल लेकिन प्रभावी आभूषण का काम करती थीं, और अपने भावुक पड़ोसी को ठंडी रुचि से देखतीं, तो कभी वह अपने पंखे से कुछ सुर थपथपातीं, लेकिन अपनी स्वतंत्रता न खोने के लिए, वह पियानोवादक से अलग ताल बजातीं। जब उन्होंने लिस्ज़्ट इंटरमेज़ो समाप्त कर चोपिन का एक प्रील्यूड शुरू किया, तो श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने श्रीमती डी फ्रैंकेटोट की ओर एक कोमल मुस्कान के साथ देखा, जो अंतरंग यादों और प्रदर्शन से संतुष्टि (एक कुशल निर्णायक की तरह) से भरी थी। उसे बचपन से ही चोपिन के उन लंबे गले वाले, घुमावदार वाक्यांशों को सहलाने और संजोने की शिक्षा दी गई थी, जो इतने स्वतंत्र, इतने लचीले, इतने स्पर्शनीय हैं, जो अपनी शुरुआत उस दिशा से कहीं दूर और व्यापक रूप से अपने अंतिम विश्राम स्थल की तलाश में करते हैं, उस बिंदु से परे जहाँ तक उनसे पहुँचने की उम्मीद की जा सकती थी, वे वाक्यांश जो उन काल्पनिक रास्तों में भटक जाते हैं और फिर अधिक जानबूझकर - अधिक पूर्व नियोजित प्रतिक्रिया के साथ, अधिक सटीकता के साथ, जैसे किसी क्रिस्टल के कटोरे पर, जिसे अगर आप बजाते हैं, तो वह तब तक बजता और धड़कता रहेगा जब तक आप पीड़ा से चीख न उठें - और किसी के दिल को थाम लेते हैं।

एक छोटे से ग्रामीण परिवार में पली-बढ़ी, जहाँ बहुत कम दोस्त या मेहमान आते थे, और जिसे शायद ही कभी किसी पार्टी में बुलाया जाता था, वह अपने पुराने हवेलीनुमा घर के एकांत में बैठकर उन काल्पनिक

वाल्ट्ज़ नृत्य करने वाले जोड़ों के लिए, कभी धीमी, कभी जोशीली, कभी बेदम होकर नाचने की लय तय करने के बारे में सोचती रहती थी। कभी वह उन्हें फूलों की तरह इकट्ठा करती, और पल भर के लिए पार्टी रूम छोड़कर सुनती, जहाँ झील के किनारे चीड़ के पेड़ों के बीच हवा सरसराती थी। तभी अचानक उसकी ओर एक दुबला-पतला युवक बढ़ता दिखाई दिया, जो सांसारिक प्रेमियों से भी कहीं अधिक भिन्न था। उसकी आवाज़ गूंजती हुई, विचित्र और बनावटी थी, और उसने सफेद दस्ताने पहने हुए थे। लेकिन आजकल इस संगीत की पुरानी सुंदरता थोड़ी फीकी पड़ गई थी। कुछ साल पहले ही 'वास्तविक संगीत प्रेमी' लोगों का सम्मान खो देने के कारण, इसने अपनी विशिष्टता और आकर्षण खो दिया था, और यहाँ तक कि जिनका संगीत का स्वाद स्पष्ट रूप से खराब था, उन्हें भी इसमें अब एक सामान्य आनंद से अधिक कुछ नहीं मिलता था, जिसे वे शायद ही स्वीकार करना चाहते थे। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने चुपके से पीछे मुड़कर देखा। वह जानती थीं कि उनकी युवा बहू (अपने नए और कुलीन परिवार के प्रति सम्मान से भरी हुई, सिवाय बौद्धिक मामलों के, जिनमें उन्होंने हारमनी और ग्रीक वर्णमाला तक का ज्ञान प्राप्त कर लिया था) चोपिन से घृणा करती थी और जब भी उन्हें बजाते सुनती थी तो बीमार पड़ जाती थी। लेकिन कुछ दूरी पर अपने समकालीनों के समूह में बैठी इस वैग्नरियन की निगाहों से मुक्त होकर, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर ने खुद को उत्कृष्ट यादों और भावनाओं की धारा में बहने दिया। प्रिंसेस डेस लाउम्स भी भावुक हो गईं। हालाँकि उनमें संगीत की कोई स्वाभाविक प्रतिभा नहीं थी, फिर भी उन्होंने लगभग पंद्रह वर्ष पहले फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की एक संगीत शिक्षिका से संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। वह एक प्रतिभाशाली महिला थीं, जो अपने जीवन के अंतिम समय में दरिद्र हो गई थीं, और सत्तर वर्ष की आयु में उन्होंने अपने पुराने शिष्यों की बेटियों और पोतियों

को संगीत सिखाना शुरू किया था। वह महिला अब जीवित नहीं थीं। लेकिन उनकी विधि, उनके मनमोहक स्पर्श की प्रतिध्वनि, कभी-कभी उनके शिष्यों की उंगलियों में जीवंत हो उठती थी, यहाँ तक कि उन शिष्यों की भी जो अन्य मामलों में काफी साधारण थे, संगीत छोड़ चुके थे, और शायद ही कभी पियानो बजाते थे। और इसलिए श्रीमती डेस लाउम्स अपना सिर आगे-पीछे झुला सकती थीं, कारण को पूरी तरह से जानते हुए, पियानोवादक द्वारा इस प्रील्यूड को प्रस्तुत करने के तरीके की पूर्ण सराहना करते हुए, क्योंकि उन्हें यह कंठस्थ थी। उनके होठों पर पहले से ही उस वाक्यांश के अंतिम स्वर गूंज रहे थे जिसे उन्होंने शुरू किया था। और उन्होंने विशेषण के शुरुआती व्यंजनों पर जोर देते हुए धीरे से कहा, "यह कितना मनमोहक है!", यह उनकी परिष्कार का प्रतीक था जिससे उन्हें लगा कि उनके होंठ इतने रोमांटिक रूप से संकुचित हो गए हैं, जैसे किसी सुंदर, खिलते हुए फूल की पंखुड़ियाँ, कि उन्होंने सहज रूप से अपनी आँखों को सामंजस्य में लाया, उन्हें एक क्षण के लिए एक अस्पष्ट और भावुक दृष्टि से रोशन किया। इस बीच श्रीमती... डी गैलार्डन मन ही मन सोच रही थीं कि प्रिंसेस डेस लाउम्स से मिलने के इतने कम अवसर मिलना कितना निराशाजनक है, क्योंकि वह उनके अभिवादन को स्वीकार न करके उन्हें सबक सिखाना चाहती थीं। उन्हें नहीं पता था कि उनकी चचेरी बहन कमरे में मौजूद हैं। श्रीमती फ्रैंकेटोट के सिर के हिलने से राजकुमारी का पता चल गया। तुरंत ही श्रीमती डी गैलार्डन उनकी ओर दौड़ीं, जिससे उनके सभी पड़ोसी चौंक गए; हालाँकि उन्होंने एक दूरी और संयम बनाए रखने का दृढ़ निश्चय किया था, जिससे वहाँ मौजूद सभी को यह याद दिलाया जा सके कि वह उस व्यक्ति के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध नहीं रखना चाहतीं, जिसके घर में कोई भी किसी भी दिन प्रिंसेस मैथिल्डे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बैठा हो सकता है, और जिसके प्रति उनका

कोई कर्तव्य नहीं था क्योंकि वह 'उनकी पीढ़ी की' नहीं थीं, फिर भी उन्होंने अपनी गरिमा और संयम के इस भाव को कुछ ऐसे अस्पष्ट कथन से बदलने का दायित्व महसूस किया जो उनके प्रस्ताव को उचित ठहराए और राजकुमारी को बातचीत में शामिल होने के लिए बाध्य करे; और इसलिए, जब वह अपनी चचेरी बहन के पास पहुँचीं, तो श्रीमती फ्रैंकेटोट... गंभीर चेहरे और एक हाथ को इस तरह आगे बढ़ाते हुए, मानो कोई कार्ड 'ज़बरदस्ती' जीतने की कोशिश कर रही हो, डी गैलार्डन ने पूछा, "आपके पति कैसे हैं?" उसी चिंतित स्वर में जैसे वह तब बोलतीं जब राजकुमार गंभीर रूप से बीमार होते। राजकुमारी, अपनी एक खास हंसी हंसते हुए, जो एक तरफ तो सभा में मौजूद लोगों को यह दिखाने के लिए थी कि वह किसी का मज़ाक उड़ा रही हैं, और दूसरी तरफ अपने होंठों और चमकती आंखों के इर्द-गिर्द अपने चेहरे के भावों को केंद्रित करके अपनी सुंदरता को निखारने के लिए, बोलीं, "अरे; वह तो अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी इतने अच्छे नहीं रहे!" और वह हंसती रहीं।

तब श्रीमती डी गैलार्डन ने खुद को संभाला और अपने चेहरे पर और भी अधिक ठंडा भाव लाते हुए, शायद इसलिए कि वह अभी भी राजकुमार के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित थीं, अपनी चचेरी बहन से कहा:

"ओरियान," (तभी श्रीमती डेस लाउम्स ने आश्चर्य भरी मुस्कान के साथ एक अदृश्य तीसरे व्यक्ति की ओर देखा, मानो वह उसे यह गवाह बनाना चाह रही हों कि उन्होंने श्रीमती डी गैलार्डन को अपना ईसाई नाम इस्तेमाल करने की अनुमति कभी नहीं दी थी) "मुझे बहुत खुशी होगी अगर आप कल शाम को बस एक मिनट के लिए आएं और मोजार्ट द्वारा रचित क्लैरिनेट के साथ एक पंचक सुनें। मैं इस पर आपकी राय जानना चाहूंगी।"

ऐसा लग रहा था मानो वह निमंत्रण दे रही हो, न कि कृपा मांग रही हो,

और राजकुमारी की राय जानना चाहती हो कि मोजार्ट के पंचक व्यंजन के बारे में उनकी राय क्या है, ठीक वैसे ही जैसे कि यह किसी नए रसोइए द्वारा बनाया गया व्यंजन हो, जिसकी प्रतिभा का मूल्यांकन किसी व्यंजन पारखी द्वारा किया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण था।

"लेकिन मैं उस पंचक को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। मैं अभी आपको बता सकता हूँ कि मैं उसे बहुत पसंद करता हूँ।"

"आप जानती हैं, मेरे पति की तबीयत बिल्कुल ठीक नहीं है; उन्हें लीवर की समस्या है। वह आपसे मिलना चाहते हैं," श्रीमती डी गैलार्डन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, और अब राजकुमारी के लिए उनकी पार्टी में आना एक तरह का परोपकारी कार्य बन गया था।

राजकुमारी को लोगों को यह बताना कभी अच्छा नहीं लगता था कि वह उनके घर नहीं जाएंगी। हर दिन वह पत्र लिखकर अपना खेद व्यक्त करती थीं कि किसी न किसी कारणवश वह किसी ऐसे समारोह में शामिल नहीं हो पाईं, जिसमें जाने का उन्होंने कभी सपना भी नहीं देखा था—चाहे वह उनके पति की माता का अचानक आगमन हो, उनके भाई का निमंत्रण हो, ओपेरा हो, या किसी ग्रामीण भ्रमण का कार्यक्रम हो। इस तरह वह कई लोगों को यह तसल्ली देती थीं कि उनके साथ उनके घनिष्ठ संबंध हैं, कि वह खुशी-खुशी उनके घर आतीं, और वह केवल किसी शाही घटना के कारण ही नहीं आ पाईं, जिसे देखकर उन्हें अपने साधारण समारोह में प्रतिस्पर्धा करने का सौभाग्य प्राप्त होता था। और फिर, चूंकि वह उस चतुर 'गुएरमांटेस समूह' से संबंधित थीं—जिसमें मेरिमी से चली आ रही और मेलहाक और हालेवी के नाटकों में अपनी अंतिम अभिव्यक्ति पाने वाली, सभी सामान्य वाक्यांशों और पारंपरिक भावनाओं से रहित, सतर्क मानसिकता का कुछ अंश अभी भी जीवित था—उन्होंने इसके सूत्र को अपने सामाजिक कार्यक्रमों के अनुरूप ढाल लिया, इसे उस शिष्टाचार में

रूपांतरित कर दिया जो हमेशा सकारात्मक और सटीक होने, सीधे-सादे सत्य के करीब पहुंचने का प्रयास करता था। वह कभी भी किसी मेज़बान के सामने अपनी पार्टी में उपस्थित होने की उत्सुकता को विस्तार से व्यक्त नहीं करती थीं; उन्हें यह बताना अधिक सुखद लगता था कि उनकी पार्टी में आना संभव है या नहीं, इस पर निर्भर करने वाली सभी छोटी-छोटी घटनाएं क्या थीं।

"सुनिए, मैं समझाती हूँ," उसने श्रीमती डी गैलार्डन से कहना शुरू किया। "कल शाम मुझे अपनी एक दोस्त के घर जाना है, जो काफी समय से मुझसे मिलने का दिन तय करने के लिए ज़िद कर रही है। अगर वह हमें बाद में थिएटर ले जाती है, तो मैं आपके पास नहीं आ पाऊँगी, हालाँकि मुझे आने की बहुत इच्छा है; लेकिन अगर हम घर में ही रहें, तो मुझे पता है कि वहाँ कोई और नहीं होगा, इसलिए मैं चुपके से निकल सकती हूँ।"

"बताइए, क्या आपने अपने दोस्त एम. स्वान को देखा है?"

"नहीं! मेरे प्यारे चार्ल्स! मुझे पता ही नहीं था कि वह यहाँ है। वह कहाँ है? मुझे उसका ध्यान अपनी ओर खींचना ही होगा।"

"यह अजीब बात है कि वह पुराने सेंट-यूवर्टे में आया है," श्रीमती डी गैलार्डन ने आगे कहा। "ओह, मुझे पता है कि वह बहुत चतुर है," उनका मतलब 'बहुत चालाक' था, "लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; सोचो, यहाँ एक यहूदी है, और वह दो आर्कबिशप की बहन और भाभी है।"

"मुझे यह स्वीकार करते हुए शर्म आ रही है कि मैं जरा भी हैरान नहीं हूं," प्रिंसेस डेस लाउम्स ने कहा।

"मुझे पता है कि वह धर्म परिवर्तन करके यहूदी बना है, और उसके माता-पिता और दादा-दादी भी उससे पहले यहूदी थे। लेकिन लोग कहते हैं कि धर्म परिवर्तन करने वाले लोग अपने धर्म के प्रति नियमित रूप से धर्म का पालन करने वालों से भी बदतर होते हैं, कि यह सब महज़ एक दिखावा

है; क्या यह सच है, आपको क्या लगता है?"
मैं इस मामले पर कोई प्रकाश नहीं डाल सकता।
पियानोवादक, जिसे चोपिन की दो रचनाएँ बजानी थीं, ने प्रील्यूड समाप्त करने के बाद तुरंत पोलोनाइज़ बजाना शुरू कर दिया। लेकिन जैसे ही श्रीमती डी गैलार्डन ने अपने चचेरे भाई को बताया कि स्वान कमरे में है, ऐसा लगा मानो चोपिन स्वयं कब्र से उठकर अपनी सारी रचनाएँ बारी-बारी से बजा देते और श्रीमती डेस लाउम्स उन पर ज़रा भी ध्यान नहीं देतीं। वह मानव जाति के उन दो वर्गों में से एक थीं, जिनमें अपरिचित लोगों के प्रति अटूट जिज्ञासा की जगह परिचित लोगों के प्रति अटूट रुचि होती है। फाउबर्ग सेंट-जर्मेन की कई महिलाओं की तरह, वह जिस भी कमरे में होतीं, अपने समूह के किसी अन्य सदस्य की उपस्थिति, भले ही उन्हें उससे कुछ कहना न हो, उनके मन में बस जाती और बाकी सब बातों को भुला देती। उस क्षण से, इस उम्मीद में कि स्वान उसे देख लेगा, राजकुमारी के पास (एक पालतू सफेद चूहे की तरह, जिसके नाक के सामने चीनी का टुकड़ा रख दिया जाए और फिर हटा दिया जाए) अपना चेहरा, जिसमें घनिष्ठ मिलीभगत के हजारों संकेत भरे हुए थे, जिनमें से किसी का भी चोपिन के संगीत में निहित भावना से कोई संबंध नहीं था, स्वान की दिशा में मोड़ने के अलावा कोई चारा नहीं था, और यदि वह हिलता, तो वह अपनी आकर्षक मुस्कान की दिशा भी उसी के अनुसार बदल लेती।
"ओरियान, मुझसे नाराज़ मत हो," मैडम डी गैलार्डन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, जो अपनी सर्वोच्च सामाजिक महत्वाकांक्षाओं और इस उम्मीद को कभी नहीं रोक पाती थीं कि एक दिन वह ऐसी रोशनी में उभरेंगी जो दुनिया को चकाचौंध कर देगी। उन्हें तुरंत और गुप्त रूप से कुछ अप्रिय बात कहने से संतुष्टि मिलती थी, "लोग तुम्हारे एम. स्वान के

बारे में कहते हैं कि वह उस तरह का आदमी है जिसे घर में नहीं रखा जा सकता; क्या यह सच है?"
"अरे, तुम तो सबसे अच्छी तरह जानती हो कि यह सच है," प्रिंसेस डेस लाउम्स ने जवाब दिया, "क्योंकि तुमने उससे सौ बार पूछा होगा, और वह कभी तुम्हारे घर नहीं आया।"
अपनी चचेरी बहन को फिर से शर्मिंदा करते हुए, वह ज़ोर से हंस पड़ी, जिससे संगीत सुनने की कोशिश कर रहे सभी लोग चौंक गए, लेकिन मैडम डी सेंट-यूवर्टे का ध्यान आकर्षित हुआ, जो शिष्टाचारवश पियानो के पास ही खड़ी थीं और उन्होंने राजकुमारी को पहली बार देखा। मैडम डी सेंट-यूवर्टे, मैडम डेस लाउम्स को देखकर और भी प्रसन्न हुईं, क्योंकि उन्हें लगा कि वह अभी भी गुएरमांटेस में अपने बीमार ससुर की देखभाल कर रही होंगी।
"मेरी प्यारी राजकुमारी, क्या आप यहाँ हैं?"
"हां, मैं एक कोने में दुबक कर बैठ गई थी, और मुझे बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनने को मिल रही हैं।"
"क्या, तुम काफी देर से कमरे में हो?"
"ओह, हाँ, काफी लंबा समय, जो बहुत कम समय जैसा लगा; यह केवल इसलिए लंबा लगा क्योंकि मैं आपको देख नहीं पा रहा था।"
श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे ने राजकुमारी को अपनी कुर्सी भेंट की, जिसे राजकुमारी ने यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया:
"अरे नहीं, बिलकुल नहीं! आपको ऐसा क्यों करना चाहिए? मुझे ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ता कि मैं कहाँ बैठूँ।" और जानबूझकर, एक महान महिला की सादगी दिखाने के लिए, बिना पीठ वाली एक नीची कुर्सी चुनते हुए बोली: "लो, ये आसन, मुझे बस यही चाहिए। इससे मेरी पीठ सीधी रहेगी। अरे! हे भगवान, मैं फिर से शोर मचा रही हूँ; वे आपको मुझे बाहर

निकलवाने के लिए कहेंगे।"

इसी बीच, पियानोवादक ने अपनी गति दोगुनी कर दी थी, संगीत प्रेमियों का उत्साह चरम पर पहुँच रहा था। एक नौकर थाली में जलपान परोस रहा था और चम्मचों की खड़खड़ाहट कर रहा था। हर 'पार्टी की रात' की तरह, श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे उसे कमरे से बाहर जाने के इशारे कर रही थीं, जिन्हें वह कभी समझ नहीं पा रहा था। एक नवविवाहित दुल्हन, जिसे सिखाया गया था कि एक युवती को कभी ऊब नहीं दिखानी चाहिए, ज़ोर से मुस्कुरा रही थी, अपनी मेज़बान की नज़रें अपनी ओर खींचने की कोशिश कर रही थी ताकि इतने आनंददायक मनोरंजन के लिए मेज़बान के 'उसके बारे में सोचने' के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर सके। फिर भी, हालाँकि वह श्रीमती डी फ्रैंकेटोट से अधिक शांत थी, फिर भी वह कुछ बेचैनी के साथ पियानोवादक की उंगलियों को देखती रही; उसे पियानोवादक के भाग्य की चिंता नहीं थी, बल्कि पियानो के भाग्य की चिंता थी, जिस पर जलती हुई मोमबत्ती, हर तेज़ धुन पर उछलती हुई, अगर उसके पर्दे को आग नहीं लगाती, तो कम से कम उस पर मोम गिराने की धमकी दे रही थी। अंततः वह अपने आप को और रोक नहीं पाई और पियानो रखे चबूतरे की दो सीढ़ियाँ चढ़कर मोमबत्ती पर झपटी। उसका हाथ मोमबत्ती तक पहुँचा ही था कि अंतिम सुर के साथ ही संगीत समाप्त हो गया और पियानोवादक उठ खड़ा हुआ। फिर भी, इस युवती द्वारा दिखाई गई साहसिक पहल और उसके और पियानोवादक के बीच उत्पन्न हुई शर्मिंदगी भरी उलझन ने कुल मिलाकर एक सकारात्मक प्रभाव छोड़ा।

"राजकुमारी, क्या आपने अभी-अभी उस लड़की की हरकत देखी?" जनरल डी फ्रोबरविले ने पूछा, जो श्रीमती डेस लाउम्स के पास तब आए थे जब उनकी मेज़बान कुछ पल के लिए उनसे दूर चली गई थीं। "अजीब

था ना? क्या वह कलाकारों में से एक है?"
"नहीं, वह छोटी मैडम डी कैम्ब्रेमर हैं," राजकुमारी ने लापरवाही से जवाब दिया, और फिर अधिक उत्साह से बोलीं: "मैं तो बस वही दोहरा रही हूँ जो मैंने अभी-अभी सुना है; मुझे ज़रा भी नहीं पता कि किसने कहा, मेरे पीछे किसी ने कहा कि वे मैडम डी सेंट-यूवर्टे के गाँव में पड़ोसी हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि कोई उन्हें सच में जानता है। वे ज़रूर 'देहाती रिश्तेदार' होंगे! वैसे, मुझे नहीं पता कि आप हमारे सामने मौजूद इस शानदार समाज में कितने 'ऊँचे दर्जे' के हैं, क्योंकि मुझे बिल्कुल भी नहीं पता कि ये सभी अद्भुत लोग कौन हो सकते हैं। आपको क्या लगता है कि जब वे मैडम डी सेंट-यूवर्टे की पार्टियों में नहीं होते तो वे क्या करते होंगे? उन्होंने ज़रूर संगीतकारों, कुर्सियों और खाने के साथ उन्हें भी बुलाया होगा। 'हर काम करने वाले', आप जानते हैं। आपको मानना पड़ेगा, वे वाकई शानदार हैं, जनरल। लेकिन क्या उनमें हर हफ्ते उन्हीं 'सुपरवाइजरों' को काम पर रखने की हिम्मत है? यह संभव नहीं है!
"अरे, लेकिन कैम्ब्रेमर तो काफी अच्छा नाम है; पुराना भी है," जनरल ने आपत्ति जताते हुए कहा।
"मुझे इसके पुराने होने पर कोई आपत्ति नहीं है," राजकुमारी ने रूखेपन से उत्तर दिया, "लेकिन चाहे कुछ भी हो, यह मधुर नहीं है," उसने आगे कहा, जैसे कि उसने 'मधुर' शब्द को उल्टे अल्पविरामों के बीच अलग कर दिया हो, यह एक छोटी सी बनावटीपन थी जिसकी गुएरमांटे समूह को लत थी।
"आपको ऐसा नहीं लगता, है ना! वैसे तो वो बहुत प्यारी हैं," जनरल ने कहा, जिनकी निगाहें मैडम डी कैम्ब्रेमर से हटी ही नहीं थीं। "क्या आप मुझसे सहमत नहीं हैं, राजकुमारी?"
"वह बहुत ज्यादा आगे बढ़कर व्यवहार करती है; मुझे लगता है कि इतनी कम उम्र की महिला के लिए यह ठीक नहीं है—क्योंकि मुझे नहीं लगता

कि वह मेरी पीढ़ी की है," श्रीमती डेस लाउम्स ने उत्तर दिया (यह आखिरी शब्द गैलार्डन और गुएरमांटेस के लिए आम था)। और फिर, यह देखकर कि एम. डी फ्रोबरविले अभी भी श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को घूर रहे थे, उन्होंने कुछ द्वेष भाव से, कुछ जनरल को प्रसन्न करने की इच्छा से कहा: "अपने पति के लिए यह ठीक नहीं है! मुझे खेद है कि मैं उसे नहीं जानती, क्योंकि वह आपको बहुत आकर्षित करती है; मैं आपको उससे मिलवा सकती थी," राजकुमारी ने कहा, जो अगर उस युवती को जानती होती, तो शायद ऐसा कुछ नहीं करती। "और अब मुझे शुभ रात्रि कहना होगा, क्योंकि मेरी एक सहेली की जन्मदिन की पार्टी है, और मुझे जाकर उसे जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ देनी हैं," उसने विनम्रता और सच्चाई से समझाया, और जिस भव्य समारोह में वह जा रही थी, उसे एक साधारण समारोह के रूप में प्रस्तुत किया जो बेहद उबाऊ होगा, लेकिन जिसमें उसकी उपस्थिति अनिवार्य थी, और उसकी उपस्थिति में कुछ भावुकता भी होगी। "इसके अलावा, मुझे बेसिन को भी लेना है। जब मैं यहाँ थी, वह अपने उन दोस्तों से मिलने गया है—आप भी उन्हें जानते होंगे, मुझे यकीन है—जिनका नाम एक पुल के नाम पर रखा गया है—ओह, हाँ, इएना परिवार।"

"राजकुमारी, पुल बनने से पहले यह एक युद्ध था; यह एक विजय थी!" जनरल ने कहा। "मेरा मतलब है, मुझ जैसे एक पुराने सैनिक के लिए," उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए अपना चश्मा पोंछा और उसे वापस लगा लिया, मानो वह अपने गहरे घाव पर नई पट्टी लगा रहे हों, जबकि राजकुमारी ने सहज रूप से नज़रें फेर लीं, "वह साम्राज्य का कुलीन वर्ग, खैर, बेशक, यह एक जैसी बात नहीं है, लेकिन फिर भी, इसे जैसा है वैसा ही माना जाए तो, यह अपने आप में बहुत ही उत्कृष्ट है; वे सचमुच नायकों की तरह लड़ने वाले लोग थे।"

"परन्तु मैं नायकों का बहुत सम्मान करती हूँ," राजकुमारी ने थोड़ी व्यंग्यात्मकता के साथ सहमति व्यक्त की। "अगर मैं बेसिन के साथ राजकुमारी डी'इना से मिलने नहीं जाती, तो इसका कारण यह बिलकुल नहीं है; बात बस इतनी है कि मैं उन्हें जानती नहीं। बेसिन उन्हें जानता है; वह उनकी पूजा करता है। ओह, नहीं, बात वह नहीं है जो आप सोच रहे हैं; वह उससे प्रेम नहीं करता। मेरे पास विरोध करने के लिए कुछ भी नहीं है! और वैसे भी, जब मैंने कभी उनका विरोध किया है, तो उससे क्या लाभ हुआ है?" उसने उदास होकर पूछा, क्योंकि पूरी दुनिया जानती थी कि जिस दिन से राजकुमार डेस लाउम्स ने अपनी आकर्षक चचेरी बहन से शादी की थी, तब से वह लगातार उसके प्रति बेवफा रहा था। खैर, बात ये बिल्कुल नहीं है। वो लोग उसे बहुत लंबे समय से जानते हैं, उसका बहुत ख्याल रखते हैं, और ये बात मुझे बहुत पसंद है। लेकिन मुझे आपको बताना ही होगा कि उसने मुझे उनके घर के बारे में क्या बताया है; ये काफी है। सोचिए, उनका सारा फर्नीचर 'एम्पायर' ब्रांड का है!

"लेकिन, मेरी प्यारी राजकुमारी, यह तो स्वाभाविक ही है; यह उनके दादा-दादी का था।"

"मैं ये तो नहीं कह रही कि ऐसा नहीं था, लेकिन इससे ये कम बदसूरत नहीं हो जाता। मैं ये अच्छी तरह समझती हूँ कि लोगों को हमेशा अच्छी चीज़ें नहीं मिल सकतीं, लेकिन कम से कम उन्हें ऐसी चीज़ें तो नहीं चाहिए जो सिर्फ़ भद्दी हों। आपका क्या कहना है? मुझे उस घिनौने स्टाइल से ज़्यादा विनाशकारी, ज़्यादा घमंडी कुछ और नहीं सूझता—हंसों के सिरों से ढके हुए कैबिनेट, बिल्कुल बाथटब के नलों की तरह!"

लेकिन फिर भी मेरा मानना है कि उनके पास कुछ खूबसूरत चीजें हैं; क्यों, उनके पास वह प्रसिद्ध मोज़ेक टेबल जरूर होगी जिस पर संधि अंकित है...

"ओह, मैं यह नहीं मानती कि उनके पास ऐतिहासिक दृष्टि से दिलचस्प चीज़ें नहीं हैं। लेकिन ऐसी चीज़ें कभी सुंदर नहीं हो सकतीं... क्योंकि वे बेहद भयानक हैं! मेरे पास भी ऐसी ही चीज़ें हैं, जो मोंटेस्क्यू परिवार से बेसिन आई थीं। बस, वे गुएरमांटेस के अटारी में रखी हैं, जहाँ उन्हें कोई नहीं देखता। लेकिन, आखिर बात ये नहीं है, मैं बेसिन के साथ उन्हें देखने ज़रूर जाती; अगर मैं उन्हें जानती, तो मैं उनके सारे स्फिंक्स और पीतल की मूर्तियों के बीच भी उन्हें देखने जाती, लेकिन—मैं उन्हें नहीं जानती! आपको पता है, मुझे बचपन से सिखाया गया था कि अनजान लोगों के घर जाना शिष्टाचार नहीं होता।" उसने बच्चों जैसी गंभीरता से कहा। "और इसलिए मैं वही कर रही हूँ जो मुझे सिखाया गया है। क्या आप उन भले लोगों को नहीं देख सकते, जिनके घर में एक अनजान औरत अचानक घुस आए? मुझे तो बहुत ही बुरा बर्ताव झेलना पड़ सकता है।"

और उसने अपने होठों पर आई मुस्कान की खूबसूरती को और भी बढ़ा दिया, जनरल पर टिकी अपनी नीली आंखों को एक कोमल, स्वप्निल भाव देकर।

"मेरी प्यारी राजकुमारी, आप जानती हैं कि वे खुशी से झूम उठेंगे।"

"नहीं, क्यों?" उसने अत्यंत उत्साह के साथ पूछा, या तो यह जताने के लिए कि उसे पता ही नहीं था कि ऐसा इसलिए होगा क्योंकि वह फ्रांस की प्रथम महिलाओं में से एक थी, या फिर जनरल से यह सुनकर आनंद लेने के लिए। "क्यों? आपको कैसे पता? शायद उन्हें यह सबसे अप्रिय घटना लगे। मैं उनके बारे में कुछ नहीं जानता, लेकिन अगर वे मेरे जैसे हैं, तो मुझे अपने जान-पहचान वालों को देखना भी काफी उबाऊ लगता है; मुझे यकीन है कि अगर मुझे उन लोगों को देखना पड़े जिन्हें मैं अच्छी तरह से नहीं जानता, भले ही उन्होंने 'वीरों की तरह लड़ाई लड़ी हो', तो मैं पागल हो जाऊँगा। इसके अलावा, सिवाय आपके जैसे किसी पुराने दोस्त

के, जिसे मैं इसके अलावा भी अच्छी तरह जानता हूँ, मुझे नहीं लगता कि 'वीरता' समाज में बहुत आगे ले जाती है। अक्सर डिनर पार्टी देना ही काफी उबाऊ होता है, लेकिन अगर किसी को स्पार्टाकस को अपना हाथ देना पड़े, ताकि वह उसे मार गिराए...! सच में, नहीं; मैं कभी भी वर्किंगेटोरिक्स को चौदहवें सदस्य के रूप में नहीं बुलाऊँगा। मुझे पूरा यकीन है कि मैं उसे केवल अपने बड़े 'क्रश' के लिए रखूँगा। और चूंकि मैं कभी किसी को 'क्रश' नहीं देता..."

"आह! राजकुमारी, यह आसानी से देखा जा सकता है कि आप यूं ही गुएरमांटेस नहीं हैं। आपमें गुएरमांटेस की बुद्धि का पूरा अंश है!"

"लेकिन लोग हमेशा गुएरमांटे परिवार की बुद्धिमत्ता की बात करते हैं; मुझे कभी समझ नहीं आया कि क्यों। क्या आप सच में किसी और को जानते हैं जिसमें यह बुद्धिमत्ता हो?" उसने खिलखिलाती हंसी के साथ उसे उत्साहित किया, उसके चेहरे पर एकाग्रता थी, मानो उसकी जीवंतता के लिए समर्पित हो, उसकी आँखें चमक रही थीं, उल्लास की एक उज्ज्वल धूप से दमक रही थीं जो केवल ऐसे भाषणों से ही प्रज्वलित हो सकती थी - भले ही राजकुमारी को स्वयं ही ऐसे भाषण देने पड़ें - जो उसकी बुद्धिमत्ता या उसकी सुंदरता की प्रशंसा में हों। "देखो, स्वान तुम्हारी कैम्ब्रेमर महिला से बात कर रहा है; वहाँ, बूढ़े सेंट-यूवर्टे के बगल में, क्या तुम उसे नहीं देख रहे हो? उससे कहो कि वह तुम्हारा परिचय करवा दे। लेकिन जल्दी करो, लगता है वह जा ही रहा है!"

"क्या आपने ध्यान दिया कि वह कितना बुरी तरह बीमार दिख रहा है?" जनरल ने पूछा।

"मेरे प्यारे चार्ल्स? आह, आखिरकार वो आ ही गए; मुझे तो लगने लगा था कि वो मुझसे मिलना ही नहीं चाहते!"

स्वान को प्रिंसेस डेस लाउम्स से बेहद लगाव था, और उन्हें देखते ही उन्हें

कॉम्ब्रे के पास स्थित गुएरमांटेस नामक संपत्ति और उस पूरे देश की याद आ गई जिससे उन्हें बेहद प्यार था और जहाँ वे ओडेट से अलग न होने के लिए जाना बंद कर दिया था। उन्होंने अपने उस कलात्मक और प्रेमपूर्ण अंदाज़ को अपना लिया, जिससे वे हमेशा राजकुमारी का मनोरंजन कर लेते थे—यह अंदाज़ उन्हें स्वाभाविक रूप से तब आता था जब वे कुछ पल के लिए पुराने सामाजिक माहौल में डूब जाते थे—और साथ ही वे अपने देश के लिए अपने मन में उमड़ रही तड़प को शब्दों में व्यक्त करना चाहते थे, ताकि उन्हें खुद भी संतुष्टि मिले।

"आह!" उसने विस्मय से कहा, या यूँ कहें कि स्वर से कहा, ताकि उसकी आवाज़ तुरंत श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे, जिनसे वह बात कर रहा था, और श्रीमती डेस लाउम्स, जिनके लिए वह बोल रहा था, दोनों को सुनाई दे। "देखो हमारी प्यारी राजकुमारी! देखो, वह गुएरमांटेस से खास तौर पर संत फ्रांसिस का पक्षियों को उपदेश सुनने आई है, और अभी-अभी एक नन्ही चिड़िया की तरह, कुछ छोटे बेर और चींटी तोड़कर अपने बालों में लगाने का समय निकाला है; उन पर अभी भी ओस की कुछ बूँदें हैं, थोड़ी सी पाला जो नीचे डचेस को कंपकंपा रहा होगा। यह सचमुच बहुत सुंदर है, मेरी प्यारी राजकुमारी।"

"क्या! राजकुमारी जानबूझकर गुएरमांटेस से आई थीं? यह तो बहुत ही आश्चर्यजनक है! मुझे तो पता ही नहीं था; मैं तो बिल्कुल हैरान हूँ," मैडम डी सेंट-यूवर्टे ने स्वान के बोलने के तरीके से अपरिचित होने के कारण बड़ी सरलता से विरोध किया। और फिर, राजकुमारी के सिर के आभूषण को देखते हुए, "अरे हाँ, आप बिल्कुल सही कह रही हैं; यह नकल है... मैं क्या कहूँ, चेस्टनट से नहीं, नहीं, - ओह, यह एक शानदार विचार है, लेकिन राजकुमारी को कैसे पता चला होगा कि मेरे कार्यक्रम में क्या होने वाला है? संगीतकारों ने भी मुझे नहीं बताया।"

स्वान, जो किसी महिला के साथ होने पर, जिसे वह शिष्टाचारपूर्वक संबोधित करने की आदत रखता था, उसे ऐसे सूक्ष्म प्रशंसा भरे शब्दों से नवाज़ने का आदी था जिन्हें अधिकांश अन्य लोग न तो समझ पाते थे और न ही समझने की आवश्यकता थी, उसने श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे को यह समझाने की जहमत नहीं उठाई कि वह लाक्षणिक अर्थ में बोल रहा था। जहाँ तक राजकुमारी की बात है, वह ठहाकों से लोटपोट हो रही थी, क्योंकि स्वान की हास्य-व्यंग्य शैली की उसके साथियों द्वारा बहुत सराहना की जाती थी, और क्योंकि वह अपने लिए की गई किसी भी प्रशंसा को अत्यंत सूक्ष्म और बेहद मनोरंजक पाए बिना नहीं रह सकती थी।

"बिल्कुल! चार्ल्स, अगर मेरी ये छोटी-छोटी अदाएं आपको पसंद आईं तो मुझे बहुत खुशी होगी। लेकिन बताइए, आपने उस कैम्ब्रेमर नाम की महिला के सामने सिर क्यों झुकाया? क्या आप भी उसके पड़ोसी हैं?"

राजकुमारी को स्वान से बात करते हुए काफी खुश देखकर श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे वहां से चली गईं।

"लेकिन आप स्वयं ही हैं, राजकुमारी!"

"अरे! उन प्राणियों के तो हर जगह 'देश' होंगे! काश मेरे पास भी होते!"

"नहीं, कैम्ब्रेमर नहीं; उसके अपने लोग। वह लेग्रैंडिन थी और कॉम्ब्रे आती रहती थी। मुझे नहीं पता कि आपको इस बात का एहसास है या नहीं कि आप कॉम्ब्रे की कोम्टेस हैं और चैप्टर आपका ऋणी है।"

"मुझे नहीं पता कि चैप्टर मुझे कितना बकाया देता है, लेकिन मुझे इतना ज़रूर पता है कि क्यूरे मुझसे हर साल सौ फ्रैंक लेता है, जो कि एक ऐसी रकम है जिसकी मुझे बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। लेकिन इन कैम्ब्रेमर्स का नाम वाकई चौंकाने वाला है। इसका अंत तो ठीक समय पर हुआ, लेकिन बुरा हुआ!" उसने हंसते हुए कहा।

"शुरुआत भी इससे बेहतर नहीं है।" स्वान ने इस बात को समझा।

"हाँ; वही दोहरा संक्षिप्त रूप!"
"कोई बहुत गुस्से वाला और बहुत ही सभ्य व्यक्ति जिसने पहला शब्द भी पूरा करने की हिम्मत नहीं की।"
"लेकिन चूंकि वह दूसरा शुरू करने से खुद को रोक नहीं सका, तो बेहतर होता कि वह पहला खत्म कर लेता और बात खत्म कर देता। हम तो बड़े ही परिष्कृत हास्य का आनंद ले रहे हैं, मेरे प्यारे चार्ल्स—लेकिन कितना उबाऊ है कि अब मैं तुमसे कभी मिल ही नहीं पाती," उसने प्यार भरे लहजे में कहा, "मुझे तुमसे बात करना बहुत अच्छा लगता है। ज़रा सोचो, मैं उस बेवकूफ फ्रॉबरविले को यह नहीं समझा पाई कि कैम्ब्रेमर नाम में कुछ भी मज़ेदार है। मान लो कि ज़िंदगी एक भयानक काम है। जब मैं तुमसे मिलती हूँ तभी मुझे बोरियत महसूस होना बंद होती है।"
जो शायद सच नहीं था। लेकिन स्वान और राजकुमारी का जीवन की छोटी-छोटी बातों को देखने का नज़रिया एक जैसा था—जिसका परिणाम, भले ही कारण न हो, उनकी अभिव्यक्ति और उच्चारण के तरीकों में एक गहरी समानता थी। यह समानता चौंकाने वाली नहीं थी क्योंकि उनकी आवाज़ों से ज़्यादा अलग कोई दो चीज़ें नहीं हो सकती थीं। लेकिन अगर कोई स्वान के शब्दों को उनकी ध्वनि और उनके पीछे छिपी मूंछों के बिना कल्पना करने की कोशिश करे, तो पाएगा कि वे वही वाक्य थे, वही उतार-चढ़ाव थे, उनमें गुएरमांटेस का स्वर था। महत्वपूर्ण मामलों पर स्वान और राजकुमारी के विचार एक जैसे नहीं थे। लेकिन चूंकि स्वान बहुत उदास हो गया था, और हमेशा उस कांपती हुई अवस्था में रहता था जो आंसुओं के सैलाब से पहले होती है, इसलिए उसे अपने दुख के बारे में बोलने की उतनी ही ज़रूरत थी जितनी एक हत्यारे को अपने अपराध के बारे में किसी को बताने की। और जब उसने राजकुमारी को यह कहते सुना कि जीवन एक भयानक चीज़ है, तो उसे उतना ही सुकून मिला

जितना कि अगर राजकुमारी ने उससे ओडेट के बारे में बात की होती।
"हाँ, ज़िंदगी वाकई बड़ी मुश्किल है! मुझे अपने प्रिय मित्र से अक्सर मिलना चाहिए। तुम्हारी सबसे अच्छी बात यही है कि तुम खुशमिजाज नहीं हो। हम साथ में एक बहुत ही सुखद शाम बिता सकते हैं।"
"मुझे यकीन है कि हम जा सकते हैं; क्यों न हम गुएरमांटेस चलें? मेरी सास खुशी से झूम उठेंगी। कहा जाता है कि वह जगह बहुत बदसूरत है, लेकिन मुझे कहना पड़ेगा कि मुझे वह इलाका बिल्कुल भी बदसूरत नहीं लगता; मुझे तो 'मनमोहक जगहों' से नफरत है।"
"मैं इसे अच्छी तरह जानता हूँ, यह कितना रमणीय है!" स्वान ने उत्तर दिया। "यह मेरे लिए इस समय लगभग ज़रूरत से ज़्यादा सुंदर, ज़रूरत से ज़्यादा जीवंत है; यह एक ऐसा देश है जहाँ खुशी मिल सकती है। शायद इसलिए कि मैं वहाँ रह चुका हूँ, लेकिन वहाँ की चीज़ें मुझसे बात करती हैं। जैसे ही हवा का एक झोंका चलता है और खेतों में हलचल शुरू होती है, मुझे लगता है कि कोई अचानक प्रकट होने वाला है, कि मुझे कोई खबर मिलने वाली है; और पानी के किनारे बने वे छोटे-छोटे घर... मैं तो बिल्कुल दुखी हो जाऊँगा!"
"ओह! मेरे प्यारे चार्ल्स, ज़रा ध्यान रखना; वो भयानक रैम्पिलॉन औरत है; उसने मुझे देख लिया है; मुझे कहीं छुपा दो, मुझे जल्दी से फिर से बताओ कि उसके साथ क्या हुआ था; मैं बहुत उलझन में पड़ जाती हूँ; उसने अभी-अभी अपनी बेटी की शादी करवाई है, या अपने प्रेमी की (मुझे कभी याद नहीं रहता),—शायद दोनों की—एक-दूसरे से! ओह, नहीं, मुझे अब याद आया, उसके राजकुमार ने उसे छोड़ दिया है...बातचीत करने का नाटक करो, ताकि बेचारी बूढ़ी बेरेनिस आकर मुझे खाने पर न बुला ले। खैर, मैं जा रही हूँ। सुनो, मेरे प्यारे चार्ल्स, अब जब मैंने तुम्हें कभी-कभार देख लिया है, तो क्या तुम मुझे तुम्हें उठाकर प्रिंसेस डी पार्म के घर

ले जाने दोगे, जो तुम्हें देखकर बहुत खुश होंगी (तुम्हें पता है), और बेसिन भी; वह मुझसे वहीं मिलने वाला है। अगर कभी-कभी मेमे से तुम्हारी खबर न मिलती हो...याद रखना, मैं तुम्हें अब बिल्कुल नहीं देखती!"

स्वान ने मना कर दिया। उन्होंने एम. डी चार्लस को बताया था कि मैडम डी सेंट-यूवर्टे के यहाँ से निकलने के बाद वे सीधे घर चले जाएँगे, इसलिए वे प्रिंसेस डी पार्म के यहाँ जाकर उस संदेश को खोने का जोखिम नहीं उठाना चाहते थे, जिसे वे पार्टी के दौरान किसी नौकर द्वारा लाए जाने की उम्मीद कर रहे थे, और जो शायद उन्हें घर पर अपने ही कुली के पास मिलता।

"बेचारा स्वान," मैडम डेस लाउम्स ने उस रात अपने पति से कहा; "वह हमेशा आकर्षक होता है, लेकिन वह बहुत दुखी लग रहा है। आप खुद देख लेंगे, क्योंकि उसने वादा किया है कि वह किसी दिन हमारे साथ भोजन करेगा। मुझे लगता है कि यह वास्तव में बेतुका है कि उसकी बुद्धि का धनी व्यक्ति उस तरह की स्त्री के कारण दुखी हो, जो दिलचस्प भी नहीं है, क्योंकि लोग कहते हैं कि वह बिल्कुल मूर्ख है!" उन्होंने अपनी बात उस बुद्धिमत्ता के साथ समाप्त की जो आमतौर पर उन लोगों में देखी जाती है जो स्वयं प्रेम में नहीं होते, और मानते हैं कि एक बुद्धिमान व्यक्ति को केवल उन्हीं लोगों के कारण दुखी होना चाहिए जो उसके लायक हों; यह कुछ ऐसा ही है जैसे इस बात पर आश्चर्य करना कि कोई साधारण जीवाणु जैसे तुच्छ जीव के कहने पर हैजा से मरने को तैयार हो जाए।

स्वान अब घर जाना चाहता था, लेकिन जैसे ही वह भागने की कोशिश कर रहा था, जनरल डी फ्रोबरविले ने उसे पकड़ लिया और श्रीमती डी कैम्ब्रेमर से परिचय कराने के लिए कहा, और उसे श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को ढूंढने के लिए वापस कमरे में जाना पड़ा।

"मैं कहता हूँ, स्वान, मैं उस छोटी सी औरत से शादी करना ज़्यादा पसंद

करूँगा बजाय इसके कि मुझे बर्बरों द्वारा मार दिया जाए, तुम्हारा क्या कहना है?"

'बर्बर लोगों द्वारा मारे गए' ये शब्द स्वान के दुखी हृदय को भेद गए; और उन्हें तुरंत बातचीत जारी रखने की आवश्यकता महसूस हुई। "आह!" उन्होंने कहना शुरू किया, "कई महान जिंदगियां इसी तरह खो गई हैं... आपको याद होगा, वह खोजकर्ता ला पेरूज़, जिनके अवशेष डुमोंट डी'उर्विल वापस लाए थे..." (और वे तुरंत फिर से खुश हो गए, मानो उन्होंने ओडेट का नाम लिया हो)। "वह एक शानदार व्यक्तित्व थे, और ला पेरूज़ मुझे बहुत दिलचस्प लगते हैं," उन्होंने उदास स्वर में कहा।

"ओह, जी हाँ, बिल्कुल, ला पेरूज़," जनरल ने कहा। "यह काफी जाना-माना नाम है। इस नाम से एक सड़क भी है।"

"क्या आप रू ला पेरूज़ में किसी को जानते हैं?" स्वान ने उत्साह से पूछा।

"केवल श्रीमती डी चानलिवॉल्ट, जो उस भले आदमी चौसेपियर की बहन हैं। उन्होंने पिछली शाम एक बहुत ही मनोरंजक थिएटर पार्टी दी। आप देखेंगे कि वह घर एक दिन सचमुच बहुत शानदार बनेगा!"

"ओह, तो वह रू ला पेरूज़ में रहती है। यह आकर्षक है; मुझे वह गली पसंद है; यह बहुत ही शांत है।"

"बिल्कुल नहीं। आप वहां लंबे समय से नहीं रहे होंगे; अब तो बिल्कुल भी उदासी नहीं है; वहां चारों ओर निर्माण कार्य शुरू हो गया है।"

जब स्वान ने आखिरकार युवा श्रीमती डी कैम्ब्रेमर से एम. डी फ्रोबरविले का परिचय कराया, तो चूंकि यह पहली बार था जब उन्होंने जनरल का नाम सुना था, इसलिए उन्होंने अपने होठों पर खुशी और आश्चर्य की मुस्कान की एक झलक दिखाई, जिस मुस्कान के साथ वह उनका स्वागत करतीं अगर उन्होंने अपने पूरे जीवन में उनके बारे में कुछ और न सुना

होता; क्योंकि, चूंकि वह अभी तक अपने नए परिवार के सभी दोस्तों को नहीं जानती थीं, इसलिए जब भी किसी को उनसे मिलवाया जाता, तो वह मान लेतीं कि वह उनमें से ही कोई होगा, और यह सोचकर कि शादी के बाद से उन्होंने उनके बारे में बहुत कुछ सुना है, वह अपनी चतुराई का परिचय देते हुए झिझक भरे लहजे में अपना हाथ आगे बढ़ातीं, जो एक साथ उस जन्मजात संकोच का प्रमाण था जिसे उन्हें दूर करना था और उस सहज मित्रता का भी जिसने इसे सफलतापूर्वक पार कर लिया था। और इसलिए उनके सास-ससुर, जिन्हें वह अब भी फ्रांस में सबसे प्रतिष्ठित दंपति मानती थीं, ने उन्हें एक देवदूत घोषित कर दिया; इसलिए भी कि वे अपने बेटे से उसका विवाह करते समय, उसकी अपार संपत्ति की तुलना में उसके स्वाभाविक आकर्षण के प्रति आकर्षित होने का दिखावा करना अधिक पसंद करते थे।

जनरल ने मोमबत्ती वाली घटना का जिक्र करते हुए कहा, "यह आसानी से देखा जा सकता है कि आप दिल और आत्मा से एक संगीतकार हैं, मैडम।"

इसी बीच संगीत कार्यक्रम फिर से शुरू हो गया, और स्वान ने देखा कि वह नए गीत के समाप्त होने से पहले नहीं जा सकता। इन सभी लोगों के बीच बंद रहने से उसे बहुत कष्ट हुआ, जिनकी मूर्खता और बेतुकी बातें उसे और भी बुरी तरह से आहत कर रही थीं, क्योंकि वे उसके प्रेम से अनभिज्ञ थे, और यदि उन्हें इसके बारे में पता भी होता, तो वे इसमें कोई रुचि नहीं लेते, या इसे किसी बचकाने मजाक की तरह मुस्कुराने से ज्यादा कुछ नहीं करते, या इसे पागलपन का कार्य बताकर इसकी निंदा करते। उन्होंने इसे उसके सामने एक ऐसी व्यक्तिपरक स्थिति के रूप में प्रस्तुत किया जो केवल उसी के लिए विद्यमान थी, जिसकी वास्तविकता को बाहरी रूप से कोई भी पुष्ट नहीं कर सकता था; उसे असहनीय पीड़ा

हो रही थी, यहाँ तक कि वाद्ययंत्रों की ध्वनि भी उसे रुला देती थी, क्योंकि उसे इस स्थान पर अपना निर्वासन लंबा खींचना पड़ रहा था जहाँ ओडेट कभी नहीं आएगी, जहाँ कोई भी, कुछ भी उसके अस्तित्व से अवगत नहीं था, जहाँ से वह पूरी तरह अनुपस्थित थी।

लेकिन अचानक ऐसा लगा जैसे वह प्रवेश कर गई हो, और इस आभास ने उसे इतनी पीड़ा से भर दिया कि उसका हाथ अनायास ही उसके हृदय पर चला गया। हुआ यह था कि वायलिन ने ऊँचे स्वरों की एक श्रृंखला बजानी शुरू कर दी, जिस पर वह मानो किसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रही हो, एक ऐसी प्रतीक्षा जिसे उसने स्वरों को थामे हुए निरंतर बनाए रखा, उस उत्साह में जैसे उसने अपेक्षित वस्तु को निकट आते हुए देख लिया हो, और उसके आने तक निरंतर बजते रहने के लिए, स्वयं के समाप्त होने से पहले उसका स्वागत करने के लिए, अपनी शेष शक्ति से मार्ग को एक क्षण और खुला रखने के लिए, ताकि अजनबी प्रवेश कर सके, ठीक वैसे ही जैसे कोई उस दरवाजे को खुला रखता है जो अन्यथा स्वतः बंद हो जाता। और इससे पहले कि स्वान समझ पाता कि क्या हो रहा है, यह सोच पाता: "यह विंटेइल के सोनाटा का छोटा सा वाक्यांश है। मुझे इसे नहीं सुनना चाहिए!", ओडेट के उससे प्यार करने के दिनों की उसकी सारी यादें, जिन्हें वह उस शाम तक अपने भीतर गहराई में छुपाए रखने में कामयाब रहा था, प्रेम के उस मौसम के अचानक प्रतिबिंब से भ्रमित होकर, जिसका सूरज, जैसा कि उन्होंने सोचा था, फिर से उग आया था, अपनी नींद से जाग गया था, पंख फैलाकर उसके कानों में उन्माद से गा रहा था, उसकी वर्तमान उदासी के लिए बिना किसी दया के, खुशी के भूले हुए सुर।

अब तक वह अक्सर "वह समय जब मैं खुश था," "वह समय जब मुझे प्यार मिला," जैसे अमूर्त भावों का प्रयोग करता था, और बिना किसी

खास कष्ट के, क्योंकि उसकी बुद्धि उनमें अतीत का कुछ भी समाहित नहीं कर पाती थी सिवाय काल्पनिक अंशों के जिनमें वास्तविकता का कोई अंश नहीं होता था, लेकिन अब उसे वह सब कुछ याद आ गया जिसने उस खोई हुई खुशी के विशिष्ट, अस्थिर सार को अपरिवर्तनीय रूप से स्थापित कर दिया था; वह सब कुछ देख सकता था; गुलदाउदी की बर्फीली, घुमावदार पंखुड़ियाँ जो उसने उसके पीछे उसकी गाड़ी में फेंकी थीं, जिन्हें उसने अपने होठों से दबाए रखा था, नोट के कागज पर उभरा हुआ पता 'मैसन डोरे' जिस पर उसने पढ़ा था "तुम्हें लिखते समय मेरा हाथ कांप रहा है," उसकी भौंहों का सिकुड़ना जब उसने विनती भरे लहजे में कहा: "मुझे बुलाने में ज्यादा देर नहीं लगाओगे?"; वह उस नाई की गर्म इस्त्री की गंध महसूस कर सकता था जिसे वह अपने बाल संवारने के लिए बुलाया करता था जब लोरेडन उस छोटी काम करने वाली लड़की को लाने जाती थी; उसे उस वसंत ऋतु में बार-बार बरसने वाली मूसलाधार बारिश का एहसास हो रहा था, चांदनी रात में अपनी विक्टोरिया कार में बर्फीली ठंड में घर लौटने का दर्द; मानसिक आदतों, मौसमी छापों, इंद्रिय प्रतिक्रियाओं का वह जाल, जो कई हफ्तों तक एकसमान रूप से फैला हुआ था, जिससे उसका शरीर अब अविभाज्य रूप से जकड़ा हुआ था। उस समय वह उन लोगों के सुखों को जानने की अपनी कामुक जिज्ञासा को शांत कर रहा था जो केवल प्रेम के लिए जीते थे। उसने सोचा था कि वह यहीं रुक सकता है, कि उसे उनके दुखों को भी जानने की आवश्यकता नहीं होगी; ओडेट का वास्तविक आकर्षण अब उस भयानक भय की तुलना में कितना छोटा था जो उसके चारों ओर एक बादल के घेरे की तरह फैला हुआ था, दिन-रात हर पल यह न जानने की अपार पीड़ा कि वह क्या कर रही थी, हर समय और हर जगह उसे पूरी तरह से न पा पाने की पीड़ा! हाय, उसे वे लहजे याद आए जिनमें उसने

कहा था: "लेकिन मैं तुम्हें किसी भी समय देख सकती हूँ; मैं हमेशा स्वतंत्र हूँ!" - वह, जो अब कभी स्वतंत्र नहीं थी; उसके जीवन में उसकी रुचि, उसकी जिज्ञासा, और उसकी यह तीव्र इच्छा कि वह उस पर यह एहसान करे—जिसके बारे में उसे तब संदेह था, क्योंकि उसे लग रहा था कि यह उसके समय की व्यर्थ बर्बादी और उसकी व्यवस्थाओं में गड़बड़ी होगी—कि वह उसे अपने अध्ययन कक्ष में आने दे; उसे उससे विनती करनी पड़ी थी कि वह उसे वर्दुरिन्स के घर ले जाए; और जब उसने उसे महीने में एक बार आने की अनुमति दी, तो उसे पहले यह दोहराना पड़ा कि उसके लिए रोज़ाना एक-दूसरे से मिलना कितना आनंददायक होगा, जिसके लिए वह उस समय तरसती थी जब उसे यह केवल एक थकाऊ विकर्षण लगता था, जिसके लिए उसे बाद में अरुचि हो गई और उसने निश्चित रूप से इसे छोड़ दिया, जबकि उसके लिए यह एक अतृप्त, एक पीड़ादायक आवश्यकता बन गई थी। उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह कितना सच कह रहा था जब उनकी तीसरी मुलाकात में, उसने फिर से कहा: "लेकिन आप मुझे अक्सर अपने पास क्यों नहीं आने देते?" उसने हंसते हुए और बड़े ही विनम्र लहजे में उससे कहा था कि उसे एक निराशाजनक प्रेम पनपने का डर था। अब, अफसोस, कभी-कभी ऐसा होता था कि वह उसे किसी रेस्तरां या होटल से चिट्ठी लिखती थी, जिस पर पता तो छपा होता था, लेकिन अक्षरों में ऐसी आग होती थी जो उसके दिल को झुलसा देती थी। "होटल वुइलेमोंट से लिखा है। आखिर वह वहाँ किसलिए गई होगी? किसके साथ? वहाँ क्या हुआ होगा?" उसे बुलेवार्ड डेस इटैलियंस पर बुए जा रहे गैस-जेट याद आ गए, जब वह उससे मिला था, जब उस रात की सारी उम्मीदें मिट चुकी थीं, जब उस रात की भटकती परछाइयों के बीच सारी उम्मीदें खत्म हो गई थीं, जो उसे लगभग अलौकिक सी लगी थी और जो अब (उस समय की वह रात जब उसे खुद से यह भी नहीं

पूछना पड़ता था कि क्या वह उसे ढूंढकर और उसे पाकर परेशान कर रहा होगा, क्योंकि उसे इतना यकीन था कि उसे उससे मिलने और उसे घर ले जाने से बढ़कर कोई खुशी नहीं थी) वास्तव में एक रहस्यमयी दुनिया से संबंधित थी, जिसके दरवाजे बंद होने के बाद कोई कभी वापस नहीं लौट सकता। और स्वान, उस आनंदमय दृश्य के सामने, जिसमें वह फिर से जीवित हो उठा था, स्थिर खड़े होकर एक दयनीय आकृति को पहचान सका, जिसने उसे इतनी दया से भर दिया, क्योंकि उसने पहले तो यह नहीं पहचाना कि वह कौन है, कि उसे अपना सिर नीचे करना पड़ा, कहीं कोई यह न देख ले कि उसकी आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं। वह स्वयं स्वान ही था।

जब उसे यह अहसास हुआ, तो उसकी दया समाप्त हो गई; अब वह उस दूसरे स्वरूप से ईर्ष्या करने लगा जिसे वह प्यार करती थी, वह उन पुरुषों से ईर्ष्या करने लगा जिनके बारे में उसने अक्सर बिना किसी खास पीड़ा के कहा था: "शायद वह उनसे प्यार करती है," अब जब उसने प्यार के उस अस्पष्ट विचार को, जिसमें कोई प्यार नहीं होता, गुलदाउदी की पंखुड़ियों और मेसन डी'ओर के 'लेटर-हेडिंग' से बदल दिया था; क्योंकि वे प्यार से भरे हुए थे। और फिर, उसकी पीड़ा बहुत तीव्र हो गई, उसने अपना हाथ माथे पर फेरा, अपनी आंख से मोनोकल गिरा दिया और उसका शीशा पोंछ दिया। और निःसंदेह, अगर उस क्षण उसने खुद को देख लिया होता, तो वह उन मोनोकलों के संग्रह में एक और मोनोकल जोड़ देता जिन्हें उसने पहले ही पहचान लिया था, इस एक मोनोकल को, जिसे उसने एक ज़बरदस्ती, चिंताजनक विचार की तरह अपने सिर से हटा दिया, जबकि उसकी धुंधली सतह से, अपने रूमाल से, वह अपनी चिंताओं को मिटाने की कोशिश कर रहा था।

वायलिन के संगीत में—यदि कोई स्वयं वायलिन को न देखे, और

इसलिए जो कुछ वह सुनता है उसे उसके आकार से न जोड़ पाए, जो ध्वनि की पूर्णता को बदल देता है—कुछ स्वर इतने मिलते-जुलते हैं कि ऐसा भ्रम होता है मानो कोई गायिका ऑर्केस्ट्रा के बीच अपनी जगह ले चुकी हो। जब हम आँखें उठाते हैं, तो हमें केवल लकड़ी का डिब्बा दिखाई देता है, जो किसी चीनी बक्से की तरह जादुई है; लेकिन, कभी-कभी, हम फिर भी सायरन के मोहक आकर्षण से मोहित हो जाते हैं; कभी-कभी, ऐसा भी लगता है कि हम किसी बंदी आत्मा को सुन रहे हैं, जो अपने प्रभावशाली बक्से के अंधेरे में संघर्ष कर रही है, एक ऐसा बक्सा जो जादू से कांप रहा है, मानो कोई शैतान पवित्र जल के पात्र में डूबा हो; कभी-कभी, यह हवा में, विशाल रूप से, एक शुद्ध और अलौकिक प्राणी की तरह होता है जो गुजरते हुए अपने अदृश्य संदेश को कान तक पहुंचाता है। ऐसा लग रहा था मानो संगीतकार उस छोटे से वाक्यांश को बजाने के बजाय उन अनुष्ठानों का पालन कर रहे हों जिन पर वह प्रकट होने से पहले अड़ा हुआ था, मानो वे उसके प्रकट होने के चमत्कार को प्राप्त करने और कुछ क्षणों के लिए बनाए रखने के लिए आवश्यक मंत्रों का उच्चारण कर रहे हों। स्वान, जो अब उसे देखने में असमर्थ था मानो वह पराबैंगनी प्रकाश की दुनिया से संबंधित हो, जिसने उसके पास पहुँचने पर क्षणिक अंधत्व से ग्रस्त होने के बाद एक ताजगी भरे रूपांतरण का अनुभव किया, स्वान ने महसूस किया कि वह एक रक्षक देवी की तरह, उसके प्यार की विश्वासपात्र की तरह मौजूद थी, जिसने भीड़ के बीच से उसके पास आने और उससे बात करने के लिए उसे एक तरफ ले जाने के लिए खुद को ध्वनि के इस व्यापक आवरण में छिपा लिया था। और जैसे ही वह उसके पास से गुजरी, हल्की, सुखदायक, फूल की सुगंध की तरह धीमी आवाज़ में, उसे वह सब बता रही थी जो उसे कहना था, जिसका हर शब्द उसने ध्यान से पढ़ा, उन्हें इतनी तेज़ी से उड़ते हुए देखकर उसे दुख हुआ, उसने

अनजाने में अपने होठों से उस सामंजस्यपूर्ण, क्षणभंगुर रूप को चूमने का इशारा किया जो उसके पास से गुजर रहा था।

उसे लगा कि अब वह निर्वासन और अकेलेपन में नहीं है, क्योंकि उससे बात करने वाली उस लड़की ने फुसफुसाते हुए ओडेट का ज़िक्र किया था। अब उसे पहले की तरह यह आभास नहीं होता था कि ओडेट और वह उस छोटे से वाक्य से अनभिज्ञ हैं। क्या वह वाक्य अक्सर उनकी खुशियों का साक्षी नहीं रहा था? यह सच है कि उतनी ही बार उसने उसे उनकी कमज़ोरी का आगाह भी किया था। और वास्तव में, जहाँ उस पुराने समय में उसने उसकी मुस्कान में, उसकी निर्मल और निराशा भरी आवाज़ में दुख का एक अंश देखा था, वहीं आज रात उसे उसमें एक ऐसी शांति और समर्पण का आकर्षण मिला जो लगभग प्रसन्नतापूर्ण था। उन दुखों के बारे में, जिनके बारे में उस छोटे से वाक्य ने उससे तब बात की थी, जिन्हें उसने - बिना खुद उनसे प्रभावित हुए - अपने टेढ़े-मेढ़े और तेज़ रास्ते पर मुस्कुराते हुए अपने पास से गुज़रते देखा था, उन दुखों के बारे में जो अब उसके अपने हो गए थे, और जिनसे उसे कभी मुक्ति मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी, ऐसा लग रहा था जैसे वह उससे कह रहा हो, जैसे कभी उसकी खुशी के बारे में कहा था: "इन सब बातों का क्या मतलब; ये सब कुछ भी नहीं है।" और स्वान के विचार पहली बार उस विंटेइल के प्रति, उस अज्ञात, महान भाई के प्रति दया और कोमलता की लहर पर सवार हुए, जिसने भी इतना कष्ट सहा होगा; उसका जीवन कैसा रहा होगा? दुःख के किस गहरे कुएँ से उसने वह ईश्वरीय शक्ति, सृजन की वह असीमित सामर्थ्य प्राप्त की होगी?

जब उस छोटे से वाक्य ने स्वान को उसके कष्टों की व्यर्थता का एहसास कराया, तो उसे उस ज्ञान में एक मिठास मिली, जो कुछ समय पहले तक उसे असहनीय लगती थी, जब वह सोचता था कि वह इसे उन उदासीन

अजनबियों के चेहरों पर पढ़ सकता है, जो उसके प्रेम को महत्वहीन विषयांतर मानते हैं। ऐसा इसलिए था क्योंकि वह छोटा सा वाक्य, उनके विपरीत, आत्मा की इन अवस्थाओं की अल्पकालिकता के बारे में चाहे जो भी राय रखता हो, उनमें कुछ ऐसा देखता था जो अन्य सभी की तरह रोजमर्रा की घटनाओं से कम गंभीर नहीं था, बल्कि इसके विपरीत, रोजमर्रा की जिंदगी से इतना श्रेष्ठ था कि केवल उसी को व्यक्त करने का प्रयास किया जाना उचित था। गहरे दुख के उन गुणों को ही वह वाक्य अनुकरण करने, नया रूप देने का प्रयास करता था; और यहाँ तक कि उनका सार भी, भले ही वह अव्यक्त हो और उसे अनुभव करने वाले के अलावा किसी और को तुच्छ प्रतीत हो, उस छोटे से वाक्य ने पकड़ लिया था, उसे दृश्यमान बना दिया था। इतना अधिक कि इसने उन सभी दर्शकों को, जो किसी भी अर्थ में संगीत से जुड़े थे, उनके मूल्य को स्वीकार करने और उनकी दिव्य मिठास का अनुभव करने के लिए प्रेरित किया—वहीं अगले ही क्षण, वे वास्तविक जीवन में, उनकी आँखों के सामने पनपने वाले हर व्यक्तिगत प्रेम में, उन्हें अनदेखा कर देते, उन्हें अस्वीकार कर देते। निःसंदेह, जिस रूप में इसने उन गुणों को संहिताबद्ध किया था, उसका किसी तार्किक तत्व में विश्लेषण नहीं किया जा सकता था। लेकिन एक वर्ष से भी अधिक समय पहले, जब उन्होंने अपनी आत्मा की अनेक संपत्तियों को खोजा और संगीत के प्रति प्रेम का जन्म हुआ, और कम से कम कुछ समय के लिए यह उनके भीतर बस गया, तब से स्वान संगीत की धुनों को वास्तविक विचारों के रूप में देखते रहे, एक दूसरी दुनिया के, एक अलग क्रम के, छाया में छिपे हुए विचार, अज्ञात, मानव मन के लिए अगम्य, जो फिर भी एक दूसरे से पूर्णतः भिन्न थे, मूल्य और महत्व में आपस में असमान थे। वर्दुरिन के यहाँ उस पहली शाम के बाद, जब उन्हें वह छोटा सा संगीत फिर से सुनाया गया और उन्होंने अपनी

उलझी हुई धारणाओं से यह समझने की कोशिश की कि कैसे, किसी इत्र या दुलार की तरह, यह उन्हें घेर लेता है और अपने आलिंगन में ले लेता है, तो उन्होंने पाया कि यह पाँच स्वरों के बीच के अंतरालों की निकटता और उनमें से दो के निरंतर दोहराव के कारण ही उस शीतल, संकुचित मिठास का आभास देता है; लेकिन वास्तव में वे जानते थे कि वे इस निष्कर्ष को संगीत के आधार पर नहीं, बल्कि केवल कुछ समतुल्य शब्दों के आधार पर निकाल रहे थे, जिन्हें (अपने मन की सुविधा के लिए) उस रहस्यमय तत्व के स्थान पर प्रतिस्थापित किया गया था, जिसके बारे में उन्हें वर्दुरिन को जानने से पहले ही, उस पिछली पार्टी में पता चला था, जब उन्होंने पहली बार सोनाटा सुना था। वह जानता था कि पियानो की उसकी स्मृति संगीत के प्रति उसके दृष्टिकोण को और भी विकृत कर रही थी, कि संगीतकार के लिए खुला क्षेत्र सात स्वरों का एक नीरस ढाँचा नहीं है, बल्कि एक असीम कीबोर्ड है (जिसका लगभग पूरा हिस्सा अभी भी अज्ञात है), जिस पर, इसके अनछुए हिस्सों के घोर अंधकार से अलग, लाखों स्वरों में से कुछ ही स्वर - कोमलता, जुनून, साहस, शांति के स्वर - जो इसे बनाते हैं, और जिनमें से प्रत्येक एक दूसरे से इस प्रकार भिन्न है जैसे एक ब्रह्मांड दूसरे से भिन्न होता है - कुछ महान कलाकारों द्वारा खोजे गए हैं। ये महान कलाकार हमें तब सेवा प्रदान करते हैं जब वे हमारे भीतर उस विषय के अनुरूप भावना को जगाते हैं जिसे उन्होंने खोजा है, यह दिखाते हुए कि हमारी आत्मा की उस विशाल, अभेद्य काली रात में, जो अन्वेषण को हतोत्साहित करती है, कितनी समृद्धि, कितनी विविधता छिपी हुई है, जो हमसे अज्ञात है, और जिसे हम मूल्यहीन, व्यर्थ और खाली मानकर संतुष्ट रहे हैं। विंटेउइल उन्हीं संगीतकारों में से एक थे। उनके इस छोटे से वाक्य में, भले ही वह मन में धुंधला सा प्रतीत होता हो, एक ऐसी सुसंगत, इतनी स्पष्ट बात समाहित थी, जिसे यह वाक्य एक

नई, इतनी मौलिक शक्ति प्रदान करता था कि जिसने भी इसे एक बार सुना, वह इसकी स्मृति को अपने मन के खजाने में संजो कर रखता था। स्वान इसे प्रेम और सुख की एक ऐसी अवधारणा के रूप में देखते थे, जिसकी विशिष्टता को वे उतनी ही अच्छी तरह जानते थे, जितनी अच्छी तरह वे प्रिंसेस डी क्लेव्स या रेने के बारे में जानते थे, यदि उनमें से कोई भी नाम उनके मन में आता। यहां तक कि जब वे इस छोटे से वाक्य के बारे में नहीं सोच रहे होते थे, तब भी यह उनके मन में उसी तरह विद्यमान रहता था, जैसे कुछ अन्य अवधारणाएं जिनका कोई भौतिक समकक्ष नहीं होता, जैसे प्रकाश, ध्वनि, परिप्रेक्ष्य, शारीरिक इच्छा की हमारी धारणाएं, वे समृद्ध सामग्रियां जिनसे हमारा आंतरिक मंदिर विविध और सुशोभित है। शायद हम इन्हें खो देंगे, शायद ये मिट जाएंगे, यदि हम धूल में मिल जाएं। लेकिन जब तक हम जीवित हैं, हम स्वयं को ऐसी स्थिति में नहीं ला सकते जहाँ हम उन्हें न जानते हों, ठीक वैसे ही जैसे हम किसी भौतिक वस्तु के संबंध में नहीं ला सकते। उदाहरण के लिए, हम उस दीपक की चमक पर संदेह नहीं कर सकते जो अभी-अभी जलाया गया हो, कमरे में हर चीज के बदले हुए स्वरूप को देखते हुए, जहाँ से अंधेरे की स्मृति भी गायब हो गई हो। इस प्रकार विंटेइल का वाक्यांश, ट्रिस्टन के किसी विषय की तरह, जो हमें भावों की एक निश्चित प्राप्ति का प्रतिनिधित्व करता है, हमारी नश्वर अवस्था को अपना लेता है, मानवता का एक ऐसा आवरण प्रदान करता है जो पर्याप्त रूप से मार्मिक है। इसका भविष्य मानव आत्मा के भाग्य से जुड़ा हुआ था, जिसका यह एक विशेष, सबसे विशिष्ट आभूषण था। शायद ऐसा नहीं है - अस्तित्व ही सच्ची अवस्था है, और जीवन के बारे में हमारा सारा सपना अस्तित्वहीन है; लेकिन, यदि ऐसा है, तो हम महसूस करते हैं कि संगीत के ये वाक्यांश, ये अवधारणाएँ जो हमारे सपने के संबंध में विद्यमान हैं, भी कुछ नहीं हैं। हम तो नष्ट हो

जाएँगे, लेकिन हमारे साथ ये दिव्य बंदी हैं जो हमारा अनुसरण करेंगे और हमारे भाग्य में भागीदार बनेंगे। और उनके साथ मृत्यु कुछ कम कड़वी, कम अपमानजनक, शायद कम निश्चित भी होगी।

इसलिए स्वान का यह मानना गलत नहीं था कि सोनाटा का वह वाक्यांश वास्तव में अस्तित्व में था। इस दृष्टिकोण से भले ही वह मानवीय था, फिर भी वह अलौकिक प्राणियों की श्रेणी में आता था जिन्हें हमने कभी नहीं देखा, लेकिन फिर भी हम उन्हें पहचानते हैं और उत्साह से उनकी प्रशंसा करते हैं जब अदृश्य जगत का कोई अन्वेषक उनमें से किसी एक को प्रकट करने में सफल होता है, उसे उस दिव्य लोक से नीचे लाता है जहाँ उसकी पहुँच है, ताकि वह कुछ क्षणों के लिए हमारे आकाश में चमक सके। यही वह कार्य था जो विंटेउइल ने उस छोटे से वाक्यांश के लिए किया था। स्वान का मानना था कि संगीतकार (अपने पास उपलब्ध वाद्य यंत्रों के साथ) उस वाक्यांश से पर्दा हटाने, उसे दृश्यमान बनाने, उसकी रूपरेखा का इतने प्रेमपूर्ण, विवेकपूर्ण, कोमल और दृढ़ हाथों से अनुसरण और सम्मान करने में संतुष्ट थे कि ध्वनि हर क्षण बदलती रही, छाया का संकेत देने के लिए मंद होती रही, और जब उसे किसी अधिक साहसी प्रक्षेपण के वक्र का अनुसरण करना होता था तो वह फिर से जीवंत हो उठती थी। और इस बात का एक प्रमाण कि स्वान इस मुहावरे के वास्तविक अस्तित्व में विश्वास करने में गलत नहीं थे, यह था कि संगीत के प्रति थोड़ी भी संवेदनशील समझ रखने वाला कोई भी व्यक्ति इस छल को तुरंत पहचान लेता यदि विंटेइल, जो इसकी रूपों को देखने और चित्रित करने की कम क्षमता से संपन्न थे, ने अपनी दृष्टि की धुंधलापन या अपने हाथ की कमजोरी को छिपाने के लिए (यहाँ-वहाँ अपनी कल्पना से एक-दो रेखाएँ जोड़कर) छल करने का प्रयास किया होता।

वह वाक्यांश गायब हो गया था। स्वान जानता था कि यह अंतिम भाग के

अंत में, एक लंबे अंश के बाद फिर से आएगा, जिसे श्रीमती वर्दुरिन का पियानोवादक हमेशा 'छोड़' देता था। इस अंश में कुछ प्रशंसनीय विचार थे जिन्हें स्वान ने सोनाटा को पहली बार सुनते समय नहीं पहचाना था, और जिन्हें अब वह समझ पा रहा था, मानो उसकी स्मृति के कक्ष में, उन्होंने नवीनता का अपना एकरूप आवरण उतार दिया हो। स्वान ने उन सभी बिखरे हुए विषयों को सुना जो वाक्यांश की रचना में समाहित थे, जैसे उसके आधार वाक्य एक न्यायवाक्य के अपरिहार्य निष्कर्ष में समाहित होते हैं; वह इसके जन्म के रहस्य में सहायक हो रहा था। "साहस," उसने स्वयं से कहा, "शायद उतना ही प्रेरित, जितना कि लावॉइसियर या एम्पेयर का, विंटेइल का साहस जो प्रयोग कर रहा है, एक अज्ञात शक्ति को नियंत्रित करने वाले गुप्त नियमों की खोज कर रहा है, एक अनछुए क्षेत्र में उस अदृश्य टीम को एकमात्र संभावित लक्ष्य की ओर ले जा रहा है जिस पर उसने अपना विश्वास रखा है और जिसे वह शायद कभी नहीं पहचान पाएगा!" अंतिम अंश की शुरुआत में, स्वान ने पियानो और वायलिन के बीच जो संवाद सुना, वह कितना मनमोहक था! मानवीय वाणी का दमन, कल्पना को अनियंत्रित रूप से हावी होने देने के बजाय (जैसा कि कोई सोच सकता था), उसे पूरी तरह से समाप्त कर दिया था। बोली जाने वाली भाषा में कभी इतनी अटल आवश्यकता नहीं थी, कभी इतने प्रासंगिक प्रश्न और इतने स्पष्ट उत्तर नहीं थे। पहले पियानो अकेले ही शिकायत कर रहा था, मानो कोई पक्षी अपने साथी से बिछड़ गया हो; वायलिन ने उसे सुना और उत्तर दिया, मानो पास के किसी पेड़ से। यह संसार की शुरुआत जैसा था, मानो पृथ्वी पर इन दोनों के अलावा और कोई न हो, या यूँ कहें कि इस संसार में, जो बाकी सब से अलग है, अपने रचयिता के तर्क से इस प्रकार गढ़ा गया है कि इसमें इनके अलावा और कोई न हो; इस सोनाटा का संसार। क्या यह कोई पक्षी था, क्या यह उस

छोटे से वाक्यांश की अधूरी आत्मा थी, क्या यह कोई परी थी, जो कहीं अदृश्य रूप से विलाप कर रही थी, जिसकी विलाप को पियानो ने सुना और कोमलता से दोहराया? उसकी चीखें इतनी अचानक थीं कि वायलिन वादक को अपना धनुष झट से उठाकर उन्हें पकड़ने के लिए दौड़ना पड़ा। अद्भुत पक्षी! वायलिन वादक मानो उसे मोहित करना, वश में करना, रिझाना और जीतना चाहता था। वह पहले ही उसकी आत्मा में समा चुका था, वह छोटा सा वाक्यांश जो उससे उत्पन्न हुआ था, वायलिन वादक के शरीर को किसी माध्यम की तरह झकझोर रहा था, मानो उस पर किसी का साया हो। स्वान जानता था कि वह वाक्यांश उससे एक बार फिर बात करेगा। और उसका व्यक्तित्व अब इतना बँटा हुआ था कि उस क्षण की प्रतीक्षा का तनाव, जब वह एक बार फिर उस वाक्यांश के आमने-सामने होगा, उसे उन सिसकियों में से एक में जकड़ लेता था जो कविता की एक सुंदर पंक्ति या किसी भयावह समाचार से हमारे मुँह से निकल आती हैं, अकेले में नहीं, बल्कि तब जब हम उनमें से किसी एक को किसी मित्र को सुनाते हैं, जिसमें हम स्वयं को एक तीसरे व्यक्ति के रूप में प्रतिबिंबित देखते हैं, जिसकी संभावित भावना उसे शांत कर देती है। वह फिर प्रकट हुआ, लेकिन इस बार हवा में स्थिर रहा, और वहाँ केवल एक क्षण के लिए, मानो गतिहीन, क्रीड़ा करता रहा, और जल्द ही लुप्त हो गया। और इस प्रकार स्वान ने उस बहुमूल्य समय का कुछ भी नहीं खोया जिसके लिए वह रुका रहा। वह अब भी वहीं था, मानो कोई इंद्रधनुषी बुलबुला कुछ देर तक बिना टूटे तैरता रहे। जैसे इंद्रधनुष की चमक फीकी पड़ने पर मानो थम जाती है, फिर उठ खड़ी होती है और बुझने से पहले पहले से कहीं अधिक भव्यता से निखर उठती है; ठीक वैसे ही, अब तक जो दो रंग उस वाक्यांश में दिखाई दे रहे थे, उनमें अब कुछ और रंग जुड़ गए, मानो इंद्रधनुष के हर रंग से सजे स्वरों ने उन्हें गा दिया हो। स्वान हिलने की

हिम्मत नहीं कर पा रहा था, और वह कमरे में मौजूद बाकी सभी लोगों को भी चुप रहने के लिए मजबूर करना चाहता था, मानो जरा सी भी हलचल उस जादुई, अलौकिक, मनमोहक, नाजुक उपस्थिति को अस्त-व्यस्त कर दे, जो इतनी आसानी से गायब हो सकती थी। लेकिन संयोगवश, किसी ने भी बोलने की हिम्मत नहीं की। एक अकेले व्यक्ति की अवर्णनीय वाणी, जो अनुपस्थित था, शायद मृत (स्वान को नहीं पता था कि विंटेउइल अभी जीवित थे या नहीं), उन दो पुरोहितों के अनुष्ठानों के बीच निकली, जिसने तीन सौ लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए पर्याप्त थी, और उस मंच को, जिस पर एक आत्मा को इस प्रकार अस्तित्व में लाया गया था, एक अलौकिक समारोह के लिए सबसे उत्कृष्ट वेदियों में से एक बना दिया। परिणामस्वरूप, जब वह वाक्यांश अंततः समाप्त हुआ, और बाद के गीतों के बीच केवल उसकी खंडित गूँज सुनाई दी, तो यदि स्वान को पहले तो अपनी मंदबुद्धि के लिए प्रसिद्ध कोम्टेस डी मोंटेरिएंडर को सोनाटा समाप्त होने से पहले ही अपनी भावनाओं को उनसे साझा करते हुए देखकर झुंझलाहट हुई, तो भी वह मुस्कुराए बिना नहीं रह सके, और शायद उन्हें उन शब्दों में एक अंतर्निहित भाव भी मिला, जिसे वह समझ नहीं पाईं। कलाकारों की कलात्मकता से चकित होकर, काउंटेस ने स्वान से कहा: "यह आश्चर्यजनक है! मैंने इससे बेहतर कुछ नहीं देखा..." लेकिन सटीकता के प्रति अपने सजग रवैये के कारण उन्होंने अपनी पहली बात को सुधारते हुए कहा: "इससे बेहतर कुछ भी नहीं... जब से यह पासा पलटा है!"

उस शाम से स्वान समझ गया कि ओडेट के मन में उसके लिए जो भावनाएँ कभी थीं, वे अब कभी जागृत नहीं होंगी, उसकी खुशियों की उम्मीदें अब पूरी नहीं होंगी। और जिन दिनों संयोगवश उसने एक बार फिर उसके प्रति दयालु और प्रेमपूर्ण व्यवहार दिखाया था, या अगर उसने उस

पर थोड़ा ध्यान भी दिया था, तो उसने उसकी ओर से उसके प्रति दिखाई देने वाले उन भ्रामक संकेतों को उसी कोमल और संशयपूर्ण चिंता के साथ दर्ज किया, उसी हताश खुशी के साथ जो उन लोगों में होती है जो किसी असाध्य बीमारी के अंतिम दिनों में अपने किसी मित्र की देखभाल करते हुए, उन्हें अनंत मूल्य के महत्वपूर्ण तथ्यों के रूप में बताते हैं: "कल उसने स्वयं अपने हिसाब-किताब की जाँच की और वास्तव में हमारी जोड़-घटाव में हुई गलती को सुधारा; उसने आज एक अंडा खाया और उसे वह बहुत पसंद आया, अगर वह उसे ठीक से पचा लेता है तो हम कल उसे एक कटलेट खिलाने की कोशिश करेंगे,"—हालाँकि वे स्वयं जानते हैं कि अपरिहार्य मृत्यु की पूर्व संध्या पर ये बातें अर्थहीन हैं। इसमें कोई शक नहीं कि स्वान को यकीन था कि अगर वह अब ओडेट से दूर रह रहा होता तो धीरे-धीरे उसमें उसकी सारी दिलचस्पी खत्म हो जाती, इसलिए उसे यह जानकर खुशी होती कि वह हमेशा के लिए पेरिस छोड़ रही है; उसमें वहीं रहने का साहस होता; लेकिन उसमें जाने का साहस नहीं था।

वह अक्सर जाने का सोचता रहता था। अब जब वह एक बार फिर वर्मीर पर अपने निबंध पर काम कर रहा था, तो वह कम से कम कुछ दिनों के लिए हेग, ड्रेसडेन और ब्रंसविक लौटना चाहता था। उसे पूरा यकीन था कि मॉरिट्सहुइस द्वारा गोल्डश्मिट की नीलामी में निकोलस मेस की कृति समझकर खरीदी गई 'डायना का शौचालय' वास्तव में वर्मीर की कृति थी। और वह अपने विश्वास को और पुख्ता करने के लिए उस चित्र को वहीं देखना चाहता था। लेकिन ओडेट के रहते हुए, और यहाँ तक कि उसके न रहते हुए भी, पेरिस छोड़ना—क्योंकि अजनबी जगहों पर जहाँ हमारी भावनाएँ आदतों से सुस्त नहीं होतीं, हम तरोताज़ा हो जाते हैं, एक पुराने दर्द को फिर से महसूस करते हैं—उसके लिए इतना क्रूर विचार था कि

वह इसे लगातार अपने मन में बनाए रखने में सक्षम था, केवल इसलिए कि वह जानता था कि वह इसे कभी अमल में नहीं लाएगा। लेकिन ऐसा होता था कि जब वह सो रहा होता था, तो यात्रा करने का इरादा उसके मन में फिर से जाग उठता था (बिना यह याद किए कि यह यात्रा असंभव थी) और वह उसे पूरा कर लेता था। एक रात उसने सपना देखा कि वह एक साल के लिए कहीं जा रहा है; ट्रेन की खिड़की से प्लेटफार्म पर खड़े एक युवक की ओर झुकते हुए, जो उसे विदाई देते हुए रो रहा था, वह उस युवक को भी अपने साथ चलने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा था। ट्रेन चलने लगी; वह घबराकर जाग गया, और उसे याद आया कि वह कहीं नहीं जा रहा है, वह उस शाम, अगले दिन और लगभग हर दिन ओडेट से मिलेगा। और फिर, अपने सपने से अभी भी बहुत प्रभावित होकर, वह उन विशेष परिस्थितियों के लिए ईश्वर का धन्यवाद करता, जिन्होंने उसे स्वतंत्र बनाया था, जिनकी बदौलत वह ओडेट के आसपास रह सकता था, और यहाँ तक कि उसे कभी-कभी उससे मिलने की अनुमति देने में सफल भी हो सकता था; और, अपने लाभों की सूची गिनते हुए: उसकी सामाजिक स्थिति—उसकी संपत्ति, जिससे उसे अक्सर सहायता की आवश्यकता होती थी, इसलिए वह निश्चित रूप से संबंध टूटने की संभावना से पीछे नहीं हटती थी (यहाँ तक कि, लोगों के अनुसार, उसका उससे शादी करवाने का एक गुप्त इरादा भी था)—एम. डी चार्लस के साथ उसकी मित्रता, जिसे स्वीकार करना होगा कि ओडेट ने उसे कभी बहुत अधिक स्नेह नहीं दिलाया, लेकिन जिससे उसे यह सुखद अनुभूति होती थी कि वह हमेशा अपने उस सामान्य मित्र से उसके बारे में प्रशंसात्मक बातें सुनती रहती थी, जिसके लिए उसके मन में बहुत सम्मान था—और यहाँ तक कि उसकी अपनी बुद्धिमत्ता भी, जिसका वह हर दिन एक नई कहानी बुनने में उपयोग करता था, जिससे उसकी उपस्थिति, यदि सुखद न भी

हो, तो कम से कम ओडेट के लिए आवश्यक हो जाए—उसने सोचा कि यदि ये सभी लाभ न होते तो उसके साथ क्या होता, उसने सोचा कि यदि वह, कई अन्य पुरुषों की तरह, गरीब और विनम्र होता, संसाधनों के बिना, उसे जो भी काम दिया जाता उसे करने के लिए मजबूर होता, या माता-पिता या पत्नी द्वारा बंधा होता, तो उसे ओडेट से अलग होना पड़ सकता था, वह सपना, जिस आतंक का अनुभव अभी हाल ही में हुआ था, वह शायद सच ही था; और उसने मन ही मन कहा: "लोगों को पता ही नहीं चलता कि वे कब खुश हैं। वे उतने दुखी कभी नहीं होते जितना वे सोचते हैं।" लेकिन उसने सोचा कि यह जीवन कई वर्षों से चल रहा है, अब वह केवल यही आशा कर सकता है कि यह हमेशा के लिए चलता रहे, कि वह अपना काम, अपने सुख, अपने मित्र, वास्तव में अपना पूरा जीवन उस मुलाकात की दैनिक अपेक्षा के लिए बलिदान कर देगा, जो होने पर भी उसे कोई खुशी नहीं देगी; और उसने स्वयं से पूछा कि क्या वह गलत तो नहीं था, क्या जिन परिस्थितियों ने उनके संबंधों को अनुकूल बनाया और अंतिम अलगाव को रोका, उन्होंने उसके करियर को नुकसान तो नहीं पहुँचाया, क्या वांछित परिणाम वह तो नहीं था जिसके बारे में वह केवल सपनों में होने पर प्रसन्न होता था - उसका स्वयं का निधन; और उसने मन ही मन कहा कि लोगों को पता ही नहीं चलता कि वे कब दुखी हैं, कि वे उतने खुश कभी नहीं होते जितना वे सोचते हैं।

कभी-कभी वह आशा करता था कि वह किसी दुर्घटना में दर्द रहित मृत्यु प्राप्त कर ले, वह जो सुबह से शाम तक सड़कों पर व्यस्त गलियों को पार करती रहती थी। और चूंकि वह हमेशा सुरक्षित लौट आती थी, इसलिए वह मानव शरीर की शक्ति और लचीलेपन पर आश्चर्यचकित होता था, जो अपने चारों ओर मंडरा रहे सभी खतरों को लगातार नियंत्रित करने और उनसे पार पाने में सक्षम था (जो स्वान को असंख्य प्रतीत होते थे, क्योंकि

उसकी अपनी गुप्त इच्छा ने ही उन्हें उसके रास्ते में बिखेर दिया था), और इस प्रकार अपनी आत्मा को दिन-प्रतिदिन, लगभग निर्दयतापूर्वक, अपने झूठ के मार्ग पर, सुख की खोज में लिप्त होने देता था। और स्वान को उस मुहम्मद द्वितीय के प्रति गहरी सहानुभूति थी, जिसका बेलिनी द्वारा बनाया गया चित्र वह प्रशंसनीय मानता था, जिसने अपनी एक पत्नी के प्रति दीवानगी से प्रेम कर बैठने पर, जैसा कि उसके वेनिस के जीवनीकार ने सरल शब्दों में बताया है, अपनी आध्यात्मिक स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त करने के लिए उसे चाकू मार डाला था। तब उसे केवल अपने बारे में ऐसा सोचने पर शर्म आएगी, और उसकी अपनी पीड़ा अब दया के पात्र नहीं लगेगी क्योंकि वह स्वयं ओडेट के जीवन का इतनी आसानी से निपटान कर रहा है।

चूंकि वह उससे अलग हुए बिना लौटना असंभव था, कम से कम अगर वह उसे लगातार और बिना किसी अलगाव के देख पाता तो अंततः उसका दुख कम हो जाता और उसका प्यार शायद मर जाता। और जिस क्षण से उसने पेरिस को हमेशा के लिए छोड़ने की इच्छा नहीं जताई, तब से उसने आशा की थी कि वह कभी नहीं जाएगी। जैसा कि वह जानता था कि उसकी एक लंबी अनुपस्थिति, हर साल, अगस्त और सितंबर में होती है, उसके पास कई महीने पहले से ही उस अनंत काल तक अनुपस्थिति की भयावह छवि को उससे अलग करने का भरपूर अवसर था, जो प्रत्याशा के कारण उसके मन में बसी हुई थी, और जो उन दिनों से मिलती-जुलती थी जिनसे वह उस समय गुजर रहा था, उसके मन में एक ठंडी पारदर्शिता के रूप में तैरती थी, जिससे वह दुखी और निराश हो जाता था, हालांकि इससे उसे कोई असहनीय पीड़ा नहीं होती थी। लेकिन भविष्य की वह धारणा, वह बहती धारा, रंगहीन और असीमित, ओडेट के एक शब्द ने स्वान के सभी अवरोधों को भेदने के लिए पर्याप्त था, और बर्फ के एक

टुकड़े की तरह उसे स्थिर कर दिया, उसकी तरलता को जमा दिया, उसे पूरी तरह से जमा दिया; और स्वान को अचानक ऐसा लगा जैसे वह एक विशाल और अटूट बोझ से भर गया हो, जो उसकी चेतना की आंतरिक दीवारों पर इतना दबाव डाल रहा था कि मानो वह फट ही जाएगा; क्योंकि ओडेट ने लापरवाही से, उसे शरारती मुस्कान के साथ देखते हुए कहा था: "फोर्चेविल व्हिटसनटाइड पर एक शानदार यात्रा पर जा रहा है। वह मिस्र जा रहा है!" और स्वान तुरंत समझ गया कि इसका मतलब है: "मैं व्हिटसनटाइड पर फोर्चेविल के साथ मिस्र जा रहा हूँ।" और वास्तव में, अगर कुछ दिनों बाद स्वान पूछता: "उस यात्रा के बारे में जो तुमने मुझे बताया था कि तुम फोर्चेविल के साथ करने जा रही हो," तो वह लापरवाही से जवाब देती: "हाँ, मेरे प्यारे लड़के, हम 19 तारीख को निकल रहे हैं; हम तुम्हें पिरामिडों की एक तस्वीर भेजेंगे।" तब उसने ठान लिया कि वह यह जानना चाहता है कि क्या वह फोर्चेविल की प्रेमिका है, उससे सीधे-सीधे पूछेगा, और उससे सच जानने पर ज़ोर देगा। वह जानता था कि कुछ ऐसी झूठी कसमें थीं जो वह अपने अंधविश्वास के कारण नहीं खाएगी, और इसके अलावा, अब तक उसकी जिज्ञासा को नियंत्रित करने वाला डर, यानी ओडेट को सवाल पूछने पर नाराज कर देने का डर, या खुद को घृणित साबित कर देने का डर, अब खत्म हो चुका था क्योंकि उसने ओडेट द्वारा कभी भी प्यार किए जाने की सारी उम्मीद खो दी थी।

एक दिन उन्हें एक गुमनाम पत्र मिला जिसमें बताया गया था कि ओडेट अनगिनत पुरुषों (जिनमें से कई के नाम पत्र में दिए गए थे, जैसे फोर्शेविल, एम. डी ब्रेउटे और चित्रकार) और महिलाओं की रखैल रह चुकी थी और वह वेश्यालयों में जाती थी। यह जानकर वे व्याकुल हो गए कि उनके मित्रों में भी कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो उन्हें ऐसा पत्र भेज सकता है (क्योंकि कुछ विवरणों से पता चलता है कि लेखक उनके

निजी जीवन से परिचित था)। वे सोचने लगे कि यह कौन हो सकता है। लेकिन उन्हें अन्य लोगों के अज्ञात कार्यों पर कभी कोई संदेह नहीं हुआ था, ऐसे कार्य जिनका उनके कथनों से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं था। और जब वे यह जानना चाहते थे कि क्या एम. डी चार्लस, एम. डेस लाउम्स या एम. डी'ऑर्सन के स्पष्ट चरित्र के अनुरूप यह उचित नहीं था कि उन्हें उस अज्ञात क्षेत्र में जाना पड़े जहाँ इस घृणित कृत्य की उत्पत्ति हुई हो; चूंकि इनमें से किसी ने भी स्वान से बातचीत में गुमनाम पत्रों के प्रति अपना समर्थन नहीं जताया था, और उनकी कही हर बात से यही स्पष्ट था कि वे गुमनाम पत्रों को बिल्कुल नापसंद करते थे, इसलिए स्वान को इस बदनामी को किसी एक व्यक्ति से बाकी लोगों की तुलना में अधिक जोड़ने का कोई और कारण नहीं दिखा। श्री डी चार्लस थोड़े सनकी स्वभाव के थे, लेकिन मूल रूप से अच्छे और दयालु थे; श्री डेस लाउम्स थोड़े रूखे स्वभाव के थे, लेकिन नेक और सीधे-सादे थे। श्री डी'ओरसन की बात करें तो, स्वान ने कभी किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात नहीं की थी जो सबसे निराशाजनक परिस्थितियों में भी उनसे इतनी दिल से बात करता हो, इतना उचित और विवेकपूर्ण व्यवहार करता हो। इतना ही नहीं, वह एक धनी महिला के साथ श्री डी'ओरसन के संबंधों में आमतौर पर लगाए जाने वाले कुछ हद तक असभ्य व्यवहार को समझ नहीं पा रहे थे, और जब भी वह उनके बारे में सोचते थे, तो उन्हें उस बुरी प्रतिष्ठा को एक तरफ रखना पड़ता था, क्योंकि उनकी सच्ची ईमानदारी और शालीनता के इतने स्पष्ट प्रमाणों के साथ यह मेल नहीं खाती थी। एक पल के लिए स्वान को लगा कि उसका दिमाग धुंधला रहा है, और उसने कुछ और सोचने की कोशिश की ताकि उसे थोड़ी रोशनी मिल सके; जब तक कि उसे उन दूसरे विचारों पर लौटने का साहस नहीं आ गया। लेकिन फिर, किसी पर शक न कर पाने के बाद, उसे अपने सभी परिचितों पर शक

करने के लिए मजबूर होना पड़ा। आखिरकार, एम. डी चार्लस उससे बहुत प्यार करता होगा, बहुत अच्छे स्वभाव का होगा; लेकिन वह एक न्यूरोपैथ था; शायद कल, स्वान के बीमार होने की खबर सुनकर वह फूट-फूट कर रोएगा; और आज, ईर्ष्या से, या गुस्से में, या किसी अचानक आए विचार से, वह उसे जानबूझकर नुकसान पहुँचाना चाहेगा। सचमुच, ऐसा आदमी सबसे बुरा होता है। प्रिंस डेस लाउम्स, निश्चित रूप से, एम. डी चार्लस की तुलना में स्वान के प्रति बहुत कम समर्पित था। लेकिन इसी कारण से उसके मन में स्वान के प्रति वैसी संवेदनशीलता नहीं थी; और इसके अलावा, उसका स्वभाव, हालांकि निस्संदेह ठंडा था, उतना ही नीच और उदार कार्य करने में असमर्थ था। स्वान को इस बात का अफसोस था कि उन्होंने अपने जीवन में ऐसे लोगों के अलावा किसी और से कोई लगाव नहीं रखा था। फिर उन्होंने सोचा कि पड़ोसियों को नुकसान पहुंचाने से रोकने वाली चीज है सहानुभूति, और अंततः वे केवल उन्हीं लोगों के लिए जवाबदेह हो सकते हैं जिनका स्वभाव उनके जैसा हो, जैसा कि एम. डी चार्लस का स्वभाव था। स्वान को इतना कष्ट पहुंचाने का विचार मात्र ही उनके लिए घृणित होता। लेकिन प्रिंस डेस लाउम्स जैसे असंवेदनशील, एक अलग ही स्तर के इंसान के मामले में, कोई कैसे अनुमान लगा सकता था कि वह अलग स्वभाव की प्रेरणाओं से प्रेरित होकर क्या कर सकता है? अच्छा हृदय होना ही सब कुछ था, और एम. डी चार्लस का हृदय अच्छा था। लेकिन एम. डी'ओरसन में भी इसकी कमी नहीं थी, और स्वान के साथ उनके संबंध सौहार्दपूर्ण थे, पर घनिष्ठता की कमी थी। ये संबंध इसलिए बने थे क्योंकि हर बात पर उनके विचार एक जैसे थे और उन्हें आपस में बातचीत करने में आनंद आता था। ये संबंध एम. डी'चार्लस के उत्साही स्नेह से कहीं अधिक शांत थे, जो अच्छे या बुरे, किसी भी काम में तुरंत ही जोश में आ जाते थे। अगर कोई ऐसा व्यक्ति था जिसके

द्वारा स्वान को हमेशा समझा गया और (नरमी से) प्यार किया गया, तो वह एम. डी'ओरसन ही थे। हाँ, लेकिन उनका जीवन सम्मानजनक तो कहा ही नहीं जा सकता था। स्वान को इस बात का अफसोस था कि उन्होंने उन अफवाहों पर कभी ध्यान नहीं दिया, और उन्होंने खुद मजाक में स्वीकार किया था कि उन्हें कभी भी इतनी गहरी सहानुभूति या सम्मान का अनुभव नहीं हुआ जितना कि पूरी तरह से 'हानिकारक' संगति में रहने पर हुआ। “यह कोई संयोग नहीं है,” उसने अब खुद को आश्वस्त किया, “कि जब लोग अपने पड़ोसी के बारे में निर्णय लेते हैं, तो उनका फैसला उसके कार्यों पर आधारित होता है। केवल वही कार्य महत्वपूर्ण हैं, न कि हमारी कही या सोच। चार्लस और डेस लाउम्स में शायद यह या वह दोष हो, लेकिन वे सम्माननीय व्यक्ति हैं। ओरसन में शायद वही दोष न हों, लेकिन वह सम्माननीय व्यक्ति नहीं है। हो सकता है उसने एक बार फिर बेईमानी का काम किया हो।” फिर उसे रेमी पर संदेह हुआ, जिसने, यह सच था, केवल पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया होगा, लेकिन अब उसे एक पल के लिए लगा कि वह सही रास्ते पर है। सबसे पहले, लोरेडान के पास ओडेट को नुकसान पहुँचाने की इच्छा रखने के अपने कारण थे। और फिर, हम यह कैसे न मान लें कि हमारे नौकर, जो हमसे हीन स्थिति में रहते हैं, हमारी दौलत और हमारी कमजोरियों में काल्पनिक धन और बुराइयाँ जोड़ते हैं, जिनके लिए वे एक ही समय में हमसे ईर्ष्या और घृणा करते हैं, भाग्य द्वारा हमारे ही वर्ग के लोगों के लिए घृणित तरीके से कार्य करने के लिए मजबूर न हो जाएँ? उसे मेरे दादाजी पर भी संदेह हुआ। जब भी स्वान ने उससे कोई काम करने को कहा था, क्या उसने हमेशा मना नहीं किया था? इसके अलावा, मध्यमवर्गीय सम्मान की अपनी धारणाओं के साथ, उसने शायद सोचा होगा कि वह स्वान की भलाई के लिए काम कर रहा है। उसे बारी-बारी से चित्रकार बर्गोट और वर्दुरिन्स पर शक हुआ;

उसने एक पल रुककर समाज के उन लोगों की बुद्धिमत्ता की फिर से प्रशंसा की, जिन्होंने कलात्मक मंडलों में घुलने-मिलने से इनकार कर दिया था, जहाँ ऐसी बातें संभव थीं, शायद खुलेआम मज़ाक के रूप में स्वीकार भी की जाती थीं; लेकिन फिर उसे उन बोहेमियनों में देखी जाने वाली ईमानदारी की झलक याद आई और उसने उनकी तुलना उस स्वार्थपूर्ण जीवन से की, जो अक्सर छल-कपट की सीमा तक पहुँच जाता था, जिस पर धन की कमी, विलासिता की लालसा और उनके सुखों के भ्रष्ट प्रभाव ने अभिजात वर्ग के सदस्यों को धकेल दिया था। संक्षेप में, इस गुमनाम पत्र ने यह साबित कर दिया कि वह स्वयं एक ऐसे व्यक्ति को जानता था जो सबसे घिनौने आचरण करने में सक्षम था, लेकिन उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि वह बदनामी किसी ठंडे दिल की बजाय किसी गर्म दिल की गहराई में, किसी व्यापारी की बजाय किसी कलाकार की गहराई में, किसी चापलूस की बजाय किसी कुलीन व्यक्ति की गहराई में क्यों छिपी रहती है—जिसे कोई अजनबी देख न सके? अपने साथियों को परखने के लिए हमें कौन सा मापदंड अपनाना चाहिए? आखिरकार, वह जिन लोगों को जानता था, उनमें से एक भी ऐसा नहीं था जो कुछ परिस्थितियों में शर्मनाक कृत्य करने में सक्षम न हो। तो क्या उसे उन सभी को देखना बंद कर देना चाहिए? उसका मन भ्रमित हो गया; उसने अपने माथे पर दो-तीन बार हाथ फेरा, रुमाल से अपने चश्मे को पोंछा, और यह याद करते हुए कि आखिरकार, उसी जैसे अच्छे लोग एम. डी चार्लस, प्रिंस डेस लाउम्स और बाकी लोगों की संगत में रहते हैं, उसने खुद को समझाया कि इसका मतलब यह है कि अगर वे शर्मनाक काम करने में असमर्थ नहीं हैं, तो कम से कम यह मानवीय जीवन की एक आवश्यकता है, जिसे हर किसी को स्वीकार करना ही पड़ता है, कि ऐसे लोगों की संगत में रहना चाहिए जो शायद ऐसे काम करने में असमर्थ न

हों। और उसने उन सभी दोस्तों से हाथ मिलाना जारी रखा जिन पर उसे शक था, इस विशुद्ध औपचारिक संकोच के साथ कि शायद उनमें से हर कोई उसे निराशा में धकेलने की कोशिश कर रहा था। जहाँ तक पत्र की वास्तविक सामग्री का सवाल है, उससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ा; क्योंकि ओडेट के खिलाफ लगाए गए आरोपों में उसे तथ्य का जरा सा भी अंश नहीं दिखाई दिया। कई अन्य लोगों की तरह, स्वान का दिमाग स्वाभाविक रूप से आलसी था, और वह आविष्कार करने में धीमा था। वह इस बात को भली-भांति जानता था कि मानव जीवन विरोधाभासों से भरा होता है, परन्तु किसी भी व्यक्ति के मामले में वह उसके जीवन के उस भाग को, जिससे वह अपरिचित था, अपने परिचित भाग के समान ही मानता था। जो बातें उससे गुप्त रखी जाती थीं, उन्हें वह प्रकट की गई बातों के प्रकाश में देखता था। ओडेट के साथ बिताए क्षणों में, यदि उनकी बातचीत किसी अभद्र कृत्य या किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा व्यक्त की गई अभद्र भावना पर केंद्रित हो जाती, तो वह उन्हीं नैतिक सिद्धांतों के बल पर अपराधी की निर्दयतापूर्वक निंदा करती, जिन्हें स्वान ने हमेशा अपने माता-पिता से सुना था और जिनके प्रति वह स्वयं भी वफादार रहा था; और फिर, वह अपने फूलों को सजाती, चाय की चुस्की लेती और उसके काम में रुचि दिखाती। इस प्रकार स्वान ने इन आदतों को उसके शेष जीवन में भी अपना लिया; जब वह उन क्षणों का चित्र बनाना चाहता था जिनमें वह और वह अलग होते थे, तो वह इन क्रियाओं का पुनर्निर्माण करता था। यदि किसी ने उसे उसके सामने वैसे ही चित्रित किया होता जैसी वह वास्तव में थी, या यूँ कहें कि जैसी वह इतने लंबे समय से उसके साथ रही थी, लेकिन उसकी जगह किसी दूसरे पुरुष को रख दिया होता, तो वह दुखी हो जाता, क्योंकि ऐसा चित्रण उसे सजीव प्रतीत होता। लेकिन यह कल्पना करना कि वह वेश्यालयों में जाती थी, कि वह अन्य स्त्रियों के

साथ अय्याशी में लिप्त रहती थी, कि वह सबसे नीच, सबसे घृणित मनुष्य का घिनौना जीवन व्यतीत करती थी—यह मन का एक पागलपन भरा भटकन होता, जिसके साकार होने के लिए, ईश्वर का धन्यवाद, वह गुलदाउदी के फूल जिनकी वह कल्पना कर सकता था, चाय के दैनिक प्याले, वह सद्गुणी आक्रोश, समय और स्थान दोनों को नहीं छोड़ते थे। केवल, कभी-कभी, वह ओडेट को यह समझाता था कि लोग दुर्भावनापूर्ण ढंग से उसे उसके हर काम की जानकारी देते रहते हैं; और उसने ओडेट को संयोगवश पता चले किसी मामूली लेकिन सच विवरण का, मानो वह एकमात्र ऐसा अंश हो जिसे वह अनजाने में अपने होठों से निकलने दे, उसके दैनिक जीवन के उस संपूर्ण पुनर्निर्माण के अनगिनत अन्य अंशों में से, जिसे वह गुप्त रूप से अपने मन में संजोए रखता था, इस प्रकार उसे यह विश्वास दिलाया कि वह उन मामलों से पूरी तरह अवगत है, जिनके बारे में वास्तव में वह न तो जानता था और न ही उसे संदेह था। क्योंकि यदि वह अक्सर ओडेट से कहता था कि वह कभी भी सत्य से विचलित न हो या उसमें कोई परिवर्तन न करे, तो यह केवल इसलिए था, चाहे उसे इसका एहसास हो या न हो, ताकि ओडेट उसे वह सब कुछ बताए जो वह करती थी। निस्संदेह, जैसा कि वह ओडेट को आश्वस्त करता था, वह ईमानदारी से प्रेम करता था, लेकिन केवल उसी प्रकार जैसे वह किसी दलाल से प्रेम करता हो जो उसे अपनी मालकिन के दैनिक जीवन से अवगत कराता रहे। इसके अलावा, ईमानदारी के प्रति उसका प्रेम, निस्वार्थ न होने के कारण, उसके चरित्र में सुधार नहीं ला पाया था। वह जिस सत्य को संजोता था, वह वही था जो ओडेट उसे बताती थी; लेकिन वह स्वयं, उससे वह सत्य निकलवाने के लिए, झूठ का सहारा लेने से भी नहीं डरता था, वही झूठ जिसे वह ओडेट के सामने बार-बार इस प्रकार प्रस्तुत करता था कि यह प्रत्येक मनुष्य को घोर पतन की ओर ले जाता

है। संक्षेप में, वह ओडेट जितना ही झूठ बोलता था, क्योंकि उससे अधिक दुखी होने के बावजूद, वह उतना ही अहंकारी था। और जब वह उसे अपने किए गए कार्यों को दोहराते हुए सुनती, तो वह अविश्वास और आक्रोश भरी निगाहों से उसे घूरती, ताकि वह अपमानित न दिखे और अपने कार्यों के लिए शर्मिंदा न हो। एक दिन, ईर्ष्या के प्रकोप से मुक्त होकर सबसे लंबे समय तक शांत रहने के बाद, उसने प्रिंसेस डेस लाउम्स के साथ थिएटर में शाम बिताने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। अखबार खोलकर यह जानने की कोशिश करते हुए कि कौन सा नाटक चल रहा है, थियोडोर बैरियर द्वारा रचित नाटक 'लेस फिल्स डे मार्ब्रे' का शीर्षक देखते ही उन्हें इतना गहरा आघात लगा कि वे सहज ही पीछे हट गए और अपना सिर दूसरी ओर घुमा लिया। मानो मंच की रोशनी की एक कतार से जगमगाते नए परिवेश में, 'संगमरमर' शब्द, जिसे वे छपे हुए अक्षरों में बार-बार देखते-देखते पहचान नहीं पा रहे थे, अचानक फिर से दिखाई देने लगा और उन्हें ओडेट की वह कहानी याद आ गई जो उसने बहुत पहले उसे सुनाई थी। ओडेट ने उससे कहा था, "अब सावधान रहना! मुझे तुम्हें पिघलाना आता है। तुम संगमरमर की नहीं बनी हो।" ओडेट ने उसे आश्वासन दिया था कि यह सिर्फ एक मज़ाक था और उसने उस समय इसे कोई महत्व नहीं दिया था। लेकिन उस समय उसे ओडेट पर अब से कहीं अधिक भरोसा था। और उस गुमनाम पत्र में स्पष्ट रूप से इसी तरह के रिश्तों का ज़िक्र था। अखबार की ओर देखने की हिम्मत किए बिना, उसने उसे खोला, पन्ना इस तरह पलटा कि उसे 'फिल्स डे मार्ब्रे' शब्द दोबारा न दिखें, और प्रांतों से आ रही खबरें यंत्रवत पढ़ने लगा। इंग्लिश चैनल में तूफान आया था, और डिएप्पे, कैबर्ग, ब्यूज़ेवल... से नुकसान की खबरें आ रही थीं। अचानक वह फिर से भय से कांप उठा।

ब्यूज़ेवल नाम ने उन्हें उसी जिले के एक अन्य स्थान, ब्यूज़ेविले की याद

दिला दी, जिसके साथ एक हाइफ़न से जुड़ा एक दूसरा नाम, ब्रेओटे भी था, जिसे उन्होंने अक्सर नक्शों पर देखा था, लेकिन इससे पहले उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया था कि यह वही नाम था जो उनके मित्र एम. डी ब्रेओटे का था, जिन पर गुमनाम पत्र में ओडेट का प्रेमी होने का आरोप लगाया गया था। आखिरकार, एम. डी ब्रेओटे के मामले में, आरोप में कुछ भी असंभव नहीं था; लेकिन जहां तक श्रीमती वर्दुरिन का सवाल था, यह सरासर असंभव था। इस तथ्य से कि ओडेट कभी-कभी झूठ बोलती थी, यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं था कि वह कभी भी सच नहीं बोलती थी, और श्रीमती के साथ इन हंसी-मजाक भरी बातचीत में... वेरदुरिन, जिसे उसने स्वयं स्वान से दोहराया था, उसे उन अर्थहीन और खतरनाक बातों की पहचान हो गई थी जो जीवन के अनुभवहीनता और बुराइयों की अज्ञानता में अक्सर स्त्रियाँ कहती हैं (इस प्रकार अपनी निर्दोषता प्रमाणित करती हैं), जो—उदाहरण के लिए, ओडेट—दुनिया में एक-दूसरे के प्रति अनुचित स्नेह महसूस करने वाली अंतिम महिलाएं होंगी। वहीं दूसरी ओर, जिस आक्रोश के साथ उसने उन शंकाओं को दूर किया था जो उसने अनजाने में, एक क्षण के लिए, उसकी कहानी से उसके मन में पैदा कर दी थीं, वह उसकी प्रेमिका के स्वाद और स्वभाव के बारे में उसके ज्ञान से पूरी तरह मेल खाती थी। लेकिन उसी क्षण, ईर्ष्या की प्रेरणा से, ठीक उसी तरह जैसे किसी कवि या दार्शनिक को, जिसके पास अब तक केवल कुछ तुकबंदी या तटस्थ अवलोकन ही होता है, वह विचार या प्राकृतिक नियम मिल जाता है जो उसके काम को शक्ति और निपुणता प्रदान करता है, स्वान को पहली बार ओडेट की वह बात याद आई जो उसने कम से कम दो साल पहले उससे कही थी: "ओह, श्रीमती वर्दुरिन, वह अभी मेरे सिवा किसी और की बात नहीं सुन रही है। मैं उसका 'प्रेम' हूँ, और वह मुझे चूमती है, और चाहती है कि मैं उसके साथ हर जगह

जाऊँ, और उसे उसके ईसाई नाम से पुकारूँ।" इन अभिव्यक्तियों में ओडेट द्वारा दोहराई गई उन बेतुकी बातों से कोई संबंध नहीं था, जिनका उद्देश्य बुराई का माहौल बनाना था, बल्कि उसने इन्हें श्रीमती वर्दुरिन की गर्मजोशी भरी और उदार मित्रता के प्रमाण के रूप में स्वीकार किया था। लेकिन अब ओडेट के प्रति उसके स्नेह की यह पुरानी याद अचानक उसकी हाल की उस अनुचित बातचीत की याद के साथ जुड़ गई। वह अब उन्हें अपने मन में अलग नहीं कर पा रहा था, और उसे वे वास्तविकता में घुलमिलते हुए दिखाई दे रहे थे। स्नेह ने उन सुखद बातों को एक विशेष गंभीरता और महत्व दे दिया था, जिसने बदले में स्नेह की मासूमियत को नष्ट कर दिया था। वह ओडेट से मिलने गया। वह उससे कुछ दूरी बनाए रखते हुए बैठ गया। उसे गले लगाने की हिम्मत नहीं हुई, क्योंकि वह नहीं जानता था कि उसके भीतर, उसके भीतर, चुंबन से स्नेह उत्पन्न होगा या क्रोध। वह वहाँ चुपचाप बैठा रहा, उनके प्रेम को समाप्त होते हुए देखता रहा। अचानक उसने अपना मन बना लिया।

"ओडेट, मेरी प्यारी," उसने कहना शुरू किया, "मुझे पता है, मैं बहुत ही घृणित व्यवहार कर रहा हूँ, लेकिन मुझे तुमसे कुछ सवाल पूछने ही हैं। तुम्हें याद है मैंने तुम्हारे और श्रीमती वर्दुरिन के बारे में क्या सोचा था? बताओ, क्या वह सच था? क्या तुमने कभी उसके साथ या किसी और के साथ ऐसा किया है?"

उसने होंठ सिकोड़ते हुए सिर हिलाया; यह एक ऐसा संकेत है जिसका इस्तेमाल लोग आमतौर पर यह बताने के लिए करते हैं कि वे नहीं जा रहे हैं, क्योंकि उन्हें जाना उबाऊ लगेगा, जब कोई पूछता है, "क्या आप जुलूस देखने आ रही हैं?" या "क्या आप परेड में शामिल होंगी?"। लेकिन सिर हिलाने का यह तरीका, जिसका इस्तेमाल आमतौर पर किसी ऐसे कार्यक्रम में भाग लेने से इनकार करने के लिए किया जाता है जो अभी

होना बाकी है, इसी कारण से बीते हुए कार्यक्रम में भाग लेने से इनकार करने में अनिश्चितता का भाव पैदा करता है। इसके अलावा, यह किसी निश्चित अस्वीकृति या नैतिक असंभवता के बजाय व्यक्तिगत सुविधा के कारणों का संकेत देता है। जब उसने ओडेट को इस तरह यह संकेत देते हुए देखा कि यह आरोप झूठा है, तो उसे एहसास हुआ कि यह काफी हद तक सच हो सकता है।

"मैंने तुम्हें बताया है, मैंने ऐसा कभी नहीं किया; तुम अच्छी तरह जानती हो," उसने गुस्से और असहजता भरे लहजे में कहा।

"हाँ, मुझे यह सब पता है; लेकिन क्या आपको पूरा यकीन है? मुझसे यह मत कहो, 'तुम्हें अच्छी तरह पता है'; बल्कि कहो, 'मैंने किसी भी महिला के साथ ऐसा कुछ नहीं किया है।'"

उसने उसके शब्दों को ऐसे दोहराया जैसे उसने उन्हें रटा हुआ पाठ पढ़ा हो, और मानो वह इससे छुटकारा पाने की उम्मीद कर रही हो: "मैंने किसी भी महिला के साथ कभी ऐसा कुछ नहीं किया है।"

"क्या आप अपने लागेटो पदक की कसम खाकर मुझे बता सकते हैं?"

स्वान को पता था कि ओडेट उस मामले में कभी झूठी गवाही नहीं देगी।

"ओह, तुम मुझे बहुत दुखी कर देते हो," वह चिल्लाई, मानो अपने शरीर को झटका देकर उसके सवाल के बंधन से खुद को छुड़ाना चाहती हो। "क्या तुम्हारा काम लगभग खत्म हो गया है? आज तुम्हें क्या हो गया है? लगता है तुमने ठान लिया है कि मुझे तुमसे नफरत करने, तुम्हें कोसने पर मजबूर होना पड़ेगा! देखो, मैं तुमसे फिर से दोस्ती करना चाहती थी, हम साथ में पुराने दिनों की तरह अच्छा समय बिताना चाहते थे; और बदले में मुझे बस यही मिला!"

हालांकि, उसने उसे जाने नहीं दिया, बल्कि वह वहीं बैठा रहा, ठीक वैसे ही जैसे कोई सर्जन किसी ऐसे ऐंठन के शांत होने का इंतजार करता है

जिसने उसके ऑपरेशन को बाधित कर दिया है लेकिन उसे ऑपरेशन छोड़ने के लिए मजबूर नहीं करना चाहता।

"ओडेट, यह सोचना सरासर गलत है कि मैं तुमसे ज़रा भी नफ़रत करता हूँ," उसने बड़ी ही मीठी और धोखे भरी नरमी से कहना शुरू किया। "मैं तुमसे कभी भी वही बात नहीं कहता जो मुझे पहले से पता होती है, और मैं हमेशा जितना कहता हूँ उससे कहीं ज़्यादा जानता हूँ। लेकिन तुम ही अपने कबूलनामे से उस बात को शांत कर सकती हो जिसकी वजह से मैं तुमसे नफ़रत करता हूँ, बशर्ते वह बात मुझे सिर्फ़ दूसरों से पता चली हो। मेरा गुस्सा तुम्हारे कामों की वजह से नहीं है—मैं तुम्हें सब कुछ माफ़ कर सकता हूँ और करता भी हूँ क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ—बल्कि तुम्हारी झूठ बोलने की आदत की वजह से है, उस बेतुके झूठ की वजह से जो तुम्हें उन बातों को नकारने पर मजबूर करता है जिन्हें मैं सच जानता हूँ। तुम मुझसे यह उम्मीद कैसे कर सकती हो कि मैं तुमसे प्यार करता रहूँगा, जब मैं तुम्हें ऐसी बात कहते हुए देखता हूँ, जब मैं तुम्हें मुझसे झूठी कसम खाते हुए सुनता हूँ? ओडेट, इस पल को और लंबा मत खींचो जो हम दोनों को तड़पा रहा है। अगर तुम इसे तुरंत खत्म करने को तैयार हो, तो तुम इससे हमेशा के लिए आज़ाद हो जाओगी। कसम खाकर बताओ, हाँ या ना, कि क्या तुमने कभी वो काम किए हैं।"

"मैं भला कैसे बता सकती हूँ?" वह गुस्से से बोली। "शायद मैंने बहुत पहले, जब मुझे पता नहीं था कि मैं क्या कर रही हूँ, दो या तीन बार ऐसा किया होगा।"

स्वान ने हर संभावना के लिए खुद को तैयार कर लिया था। इसलिए, वास्तविकता का संभावनाओं से कोई संबंध नहीं होना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे शरीर में चाकू का वार ऊपर बादलों की धीमी गति से संबंधित नहीं होता, क्योंकि वे शब्द "दो या तीन बार" मानो उसके दिल के जीवित

ऊतकों पर एक क्रॉस उकेर रहे थे। यह वाकई अजीब बात थी कि वे शब्द, "दो या तीन बार," मात्र कुछ शब्द, हवा में बोले गए कुछ शब्द, दूर से, किसी के दिल को इस तरह चीर सकते थे, मानो सचमुच उसे छेद दिया हो, किसी को बीमार कर सकते थे, जैसे कोई जहर पी लिया हो। सहज रूप से स्वान को मैडम डी सेंट-यूवर्टे के यहाँ सुनी हुई वह बात याद आई: "टेबल पलटने के बाद से मैंने इससे बढ़कर कुछ नहीं देखा।" अब वह जो पीड़ा झेल रहा था, वह उसकी कल्पना से बिल्कुल अलग थी। न केवल इसलिए कि जब उसे उस पर सबसे ज़्यादा अविश्वास था, तब उसने शायद ही कभी इतनी भयानक बुराई की कल्पना की थी, बल्कि इसलिए भी कि जब उसने उस अपराध की कल्पना की भी, तो वह अस्पष्ट, अनिश्चित ही रहा, उसमें वह विशेष भयावहता नहीं थी जो "शायद दो या तीन बार" शब्दों में झलकती थी, उसमें वह विशिष्ट क्रूरता नहीं थी, जो उसके लिए किसी नई बीमारी की तरह थी, जिससे वह पहली बार पीड़ित हुआ हो। फिर भी, यह ओडेट, जिससे यह सारी बुराई उत्पन्न हुई थी, उसके लिए कम प्रिय नहीं थी, बल्कि इसके विपरीत, और भी कीमती थी, मानो जैसे-जैसे उसकी पीड़ा बढ़ती गई, वैसे-वैसे उस औषधि, उस औषधि की कीमत भी बढ़ती गई जो केवल इस महिला के पास थी। वह उस पर अधिक ध्यान देना चाहता था, जैसे कोई अचानक गंभीर हो चुकी बीमारी पर ध्यान देता है। वह चाहता था कि वह भयानक घटना, जो उसने उसे बताया था कि उसने "दो या तीन बार" की है, दोबारा न हो। इसके लिए, उसे ओडेट पर नज़र रखनी होगी। लोग अक्सर कहते हैं कि किसी पुरुष को उसकी प्रेमिका की कमियाँ बताने से उसका उसके प्रति लगाव और भी बढ़ जाता है, क्योंकि वह आपकी बात पर विश्वास नहीं करता; लेकिन अगर वह विश्वास कर ले तो और भी ज़्यादा असरदार होगा! लेकिन स्वान ने खुद से पूछा, वह उसे कैसे बचा सकता था? शायद वह उसे किसी एक

स्त्री के प्रभाव से बचा सकता था, लेकिन वहाँ सैकड़ों और स्त्रियाँ थीं; और उसे एहसास हुआ कि उसकी महत्वाकांक्षा कितनी पागलपन भरी थी जब उसने (उस शाम जब वह वर्दुरिन के घर ओडेट को नहीं ढूंढ पाया था) किसी और को पाने की इच्छा करना शुरू कर दिया था—मानो यह कभी संभव ही हो। स्वान के लिए सौभाग्य की बात यह थी कि उसके भीतर व्याप्त दुख के उस विशाल सागर के नीचे, जो बर्बरों की एक विजयी भीड़ की तरह उसके हृदय पर आक्रमण कर रहा था, एक स्वाभाविक आधार छिपा था, जो पुराना, शांत और चुपचाप परिश्रम करने वाला था, ठीक वैसे ही जैसे किसी घायल अंग की कोशिकाएँ तुरंत क्षतिग्रस्त ऊतकों की मरम्मत के लिए काम करना शुरू कर देती हैं, या किसी लकवाग्रस्त अंग की मांसपेशियाँ जो अपनी पुरानी गति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करती हैं। ये पुराने, ये मूल निवासी जो उसकी आत्मा में बसे हुए थे, उन्होंने स्वान की सारी शक्ति को कुछ समय के लिए उस अस्पष्ट मरम्मत के कार्य में लगा दिया, जो किसी बीमारी से ठीक होने के दौरान या ऑपरेशन के बाद आराम का भ्रम पैदा करता है। इस बार थकान के कारण तनाव में कमी का असर स्वान के दिमाग पर उतना नहीं पड़ा जितना आमतौर पर पड़ता था, बल्कि उसके दिल पर पड़ा। लेकिन जीवन में जो चीजें एक बार घटित हो चुकी हैं, वे फिर से घटित होती हैं, और एक मरते हुए जानवर की तरह जो ऐंठन के दर्द से फिर से तड़प उठता है, जो जाहिर तौर पर समाप्त हो चुका था, स्वान के दिल पर, जो केवल एक क्षण के लिए बचा था, वही पीड़ा अपने आप लौट आई और उसी राह पर फिर से चलने लगी। उसे वे चांदनी रातें याद आईं, जब वह अपनी विक्टोरिया कार में पीछे झुककर, जो उसे रुए ला पेरूज़ ले जा रही थी, प्रेम में डूबे एक व्यक्ति की भावनाओं का भरपूर आनंद लेता था, इस बात से अनजान कि ऐसी भावनाएं अंततः कितना घातक फल देती हैं। लेकिन

ये सारे विचार एक पल से ज़्यादा नहीं टिके, बस एक पल के लिए। उसने अपना हाथ अपने दिल पर रखा, साँस ली और मुस्कुराने की कोशिश की ताकि अपने दर्द को छुपा सके। उसके मन में और भी सवाल उठने लगे थे। उसकी ईर्ष्या, जिसने उसे इतना कष्ट पहुँचाया था जितना कोई दुश्मन भी नहीं उठाता, उसे इतना ज़बरदस्ती का दर्द दिया था जितना उसने पहले कभी नहीं सहा था, फिर भी उसकी ईर्ष्या संतुष्ट नहीं थी कि उसने काफ़ी कष्ट सहा है, और उसे और भी गहरा घाव देने पर तुली हुई थी। किसी दुष्ट देवता की तरह, उसकी ईर्ष्या स्वान को प्रेरित कर रही थी, उसे विनाश की ओर धकेल रही थी। यह उसकी गलती नहीं थी, बल्कि सिर्फ़ ओडेट की थी, भले ही शुरुआत में उसकी सज़ा ज़्यादा कड़ी न रही हो।

"मेरी जान," उसने फिर से कहना शुरू किया, "अब सब खत्म हो गया है; क्या यह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ हुआ जिसे मैं जानता हूँ?"

"नहीं, मैं कसम खाता हूँ कि ऐसा नहीं था; इसके अलावा, मुझे लगता है कि मैंने बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहा था, मैं वास्तव में कभी उस हद तक नहीं गया था।"

वह मुस्कुराया और फिर बोला, "जैसा आपको ठीक लगे। इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता, लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आप मुझे उसका नाम नहीं बता सकतीं। अगर मुझे उस व्यक्ति के बारे में कुछ पता चल जाता, तो मैं उसके बारे में फिर कभी नहीं सोचता। मैं यह आपकी भलाई के लिए कह रहा हूँ, क्योंकि फिर मुझे आपको इस बारे में और परेशान नहीं करना पड़ेगा। मन में चीजों की स्पष्ट तस्वीर बना पाना कितना सुकून देता है। असल में भयानक तो वह है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन आप मेरे प्रति बहुत दयालु रही हैं; मैं आपको परेशान नहीं करना चाहता। आपने मेरे लिए जो कुछ भी अच्छा किया है, उसके लिए मैं तहे दिल से आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। अब मेरी बात पूरी हो गई है।

बस एक शब्द और: कितनी बार?"
"अरे चार्ल्स! क्या तुम्हें दिख नहीं रहा, तुम मुझे मार रहे हो? ये सब तो बहुत पुरानी बात है। मैंने कभी इस बारे में सोचा ही नहीं। कोई भी कहेगा कि तुम जानबूझकर उन विचारों को मेरे दिमाग में फिर से डालना चाहते हो। और फिर तो तुम्हारा भला ही होगा!" उसने अनजाने में मूर्खता भरे लहजे में, लेकिन जानबूझकर दुर्भावना से भरी हुई बात कहते हुए अपनी बात समाप्त की।
"मैं बस यह जानना चाहता था कि क्या यह तब से हुआ है जब से मैं तुम्हें जानता हूँ। यह तो स्वाभाविक ही है। क्या यह कभी यहाँ हुआ था? क्या तुम मुझे कोई खास शाम बता सकती हो, ताकि मैं याद कर सकूँ कि उस समय मैं क्या कर रहा था? तुम समझती ही हो कि यह मुमकिन नहीं है कि तुम्हें याद न हो कि तुम किसके साथ थी, ओडेट, मेरी जान।"
"पर मुझे नहीं पता; सच में, मुझे नहीं पता। मुझे लगता है कि यह बोइस में एक शाम की बात है, जब आप द्वीप पर हमसे मिलने आए थे। आप प्रिंसेस डेस लाउम्स के साथ भोजन कर रहे थे," उसने खुशी से कहा, उसे सटीक जानकारी देने में सक्षम होने पर, जो उसकी सत्यता की गवाही देती थी। "अगली मेज पर एक महिला बैठी थी जिसे मैंने बहुत दिनों से नहीं देखा था। उसने मुझसे कहा, 'चलो उस चट्टान के पीछे चलते हैं, और पानी पर चांदनी देखो!' पहले तो मैंने जम्हाई ली और कहा, 'नहीं, मैं बहुत थकी हुई हूँ, और मैं जहाँ हूँ वहीं खुश हूँ, धन्यवाद।' उसने कसम खाकर कहा कि उसने चांदनी का ऐसा नजारा पहले कभी नहीं देखा था। 'मैंने यह कहानी पहले भी सुनी है,' मैंने उससे कहा; आप देखिए, मैं अच्छी तरह जानती थी कि वह क्या जानना चाहती थी।" ओडेट ने इस घटना को लगभग एक मजाक की तरह सुनाया, शायद इसलिए कि उसे यह बिल्कुल स्वाभाविक लगा, या इसलिए कि वह इसके महत्व को कम कर

रही थी, या फिर शर्मिंदा न दिखने के लिए। लेकिन, स्वान का चेहरा देखते ही उसने अपना लहजा बदल दिया और:

"तुम एक दुष्ट हो!" उसने उस पर चिल्लाते हुए कहा, "तुम्हें मुझे सताने में, मुझसे झूठ बुलवाने में मजा आता है, ताकि तुम मुझे शांति से रहने दो।"

स्वान पर पड़ा यह दूसरा आघात पहले से भी कहीं अधिक पीड़ादायक था। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि यह मामला इतना हाल का होगा, उसकी आँखों से छिपा हुआ, जो इसे समझने के लिए बहुत भोली थीं, न केवल उस अतीत में जिसे वह कभी जानता ही नहीं था, बल्कि उन शामों में जिन्हें वह अच्छी तरह से याद करता था, जिन्हें उसने ओडेट के साथ बिताया था, जिनके बारे में उसने खुद को इतना घनिष्ठ, इतना संपूर्ण ज्ञान समझा था, और जो अब, पीछे मुड़कर देखने पर, धूर्तता, छल और क्रूरता का रूप ले रही थीं। उनके बीच, अचानक, एक गहरी खाई खुल गई, बोइस डी बोलोग्ने द्वीप पर वह क्षण। बुद्धिमान न होते हुए भी, ओडेट में स्वाभाविक आकर्षण था। उसने उस छोटे से दृश्य को इतनी सरलता से सुनाया, इतनी सहजता से अभिनय किया कि स्वान, साँस फूलते हुए, उसे स्पष्ट रूप से देख सकता था: ओडेट जम्हाई ले रही थी, "वहाँ चट्टान,"... वह उसका उत्तर सुन सकता था—अफ़सोस, कितने हल्के-फुल्के अंदाज़ में—"मैंने यह कहानी पहले भी सुनी है!" उसे लगा कि वह उस शाम उसे और कुछ नहीं बताएगी, कि फिलहाल उससे और कोई खुलासा होने की उम्मीद नहीं है। वह कुछ देर चुप रहा, फिर उससे बोला:

"मेरी प्यारी जान, तुम्हें मुझे माफ करना होगा; मुझे पता है, मैं तुम्हें बहुत दुख पहुंचा रहा हूं, लेकिन अब सब खत्म हो गया है; मैं इसके बारे में फिर कभी नहीं सोचूंगा।"

लेकिन उसने देखा कि उसकी आँखें उन चीजों पर टिकी हुई थीं जिन्हें वह नहीं जानता था, और उनके प्रेम के उस बीते युग पर, जो उसकी स्मृति में

नीरस और सुखदायक था क्योंकि वह धुंधला था, और अब उस पल की खबर से, जैसे तलवार के घाव से छलनी हो गया था, जब वह चांदनी रात में, बोइस द्वीप पर प्रिंसेस डेस लाउम्स के साथ भोजन कर रहा था। लेकिन अब तक उन्हें जीवन में रुचि लेने और उसमें होने वाली विचित्र खोजों पर आश्चर्य करने की आदत पड़ चुकी थी। यहाँ तक कि जब वे इतनी तीव्र पीड़ा से गुज़र रहे थे कि उन्हें नहीं लगता था कि वे इसे लंबे समय तक सहन कर पाएंगे, तब भी वे मन ही मन कह रहे थे: "जीवन सचमुच आश्चर्यजनक है और इसमें कई सुखद आश्चर्य छिपे हैं; ऐसा लगता है कि बुराई उतनी व्यापक है जितना हमें बताया गया है। यहाँ एक ऐसी महिला है जिस पर मुझे पूरा भरोसा था, जो इतनी सरल और ईमानदार दिखती है, और वैसे भी, अगर मान भी लें कि उसके नैतिक मूल्य सख्त नहीं हैं, तो भी वह अपनी रुचियों और झुकावों में बिल्कुल सामान्य और स्वस्थ प्रतीत होती है। मुझ पर एक बेहद अविश्वसनीय आरोप लगाया गया है, मैंने उससे पूछताछ की, और उसने जो थोड़ा-बहुत स्वीकार किया, उससे मेरी कल्पना से कहीं अधिक बातें सामने आ गईं।" लेकिन वे केवल इन सतही टिप्पणियों तक ही सीमित नहीं रह सके। उन्होंने उस बात के महत्व का सटीक आकलन करने का प्रयास किया जो उसने अभी-अभी उन्हें बताई थी, ताकि वे यह निष्कर्ष निकाल सकें कि क्या उसने ये सब काम अक्सर किए हैं और आगे भी कर सकती है। उसने उसके शब्दों को मन ही मन दोहराया: "मैं अच्छी तरह जानती थी कि वह क्या चाहती थी।" "दो-तीन बार।" "मैंने यह कहानी पहले भी सुनी है।" लेकिन वे उसकी स्मृति में निहत्थे नहीं प्रकट हुए; उनमें से प्रत्येक के हाथ में एक चाकू था जिससे उसने उसे फिर से घायल कर दिया। काफी देर तक, एक बीमार व्यक्ति की तरह जो हर मिनट, जानबूझकर, ऐसी हरकत करने से खुद को रोक नहीं पाता जिससे उसे चोट पहुंचेगी, वह अपने आप से बुदबुदाता

रहा: "मैं जहां हूं वहीं खुश हूं, धन्यवाद," "मैंने यह कहानी पहले भी सुनी है," लेकिन दर्द इतना तीव्र था कि उसे रुकना पड़ा। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जिन कार्यों को उसने अब तक हमेशा हल्के में लिया था, यहां तक कि हंसकर टाल दिया था, वे उसके लिए किसी ऐसी बीमारी की तरह गंभीर हो गए थे जो आसानी से जानलेवा साबित हो सकती थी। वह कई ऐसी महिलाओं को जानता था जिनसे वह ओडेट पर नज़र रखने के लिए कह सकता था, लेकिन वह उनसे यह उम्मीद कैसे कर सकता था कि वे उसके नए दृष्टिकोण को अपना लेंगी और उस चीज़ पर टिकी नहीं रहेंगी जो इतने लंबे समय से उसकी अपनी थी, जिसने हमेशा उसके विलासितापूर्ण जीवन में उसका मार्गदर्शन किया था; न कि वे मुस्कुराते हुए उससे कहें: "अरे ईर्ष्यालु राक्षस, दूसरों के सुख छीनना चाहते हो!" किस जाल के अचानक खुलने से वह (जिसने पुराने दिनों में ओडेट के प्रति अपने प्रेम में केवल परम सुख ही पाया था) इस नए नरक के चक्र में फंस गया था जिससे वह कभी बाहर नहीं निकल पा रहा था। बेचारी ओडेट! वह उसका बुरा नहीं चाहता था। वह आधी ही दोषी थी। क्या उसे यह नहीं बताया गया था कि उसकी अपनी माँ ने ही उसे, जब वह अभी बच्ची ही थी, नीस में एक धनी अंग्रेज को बेच दिया था? लेकिन अल्फ्रेड डी विग्नी की 'जर्नल डी अन पोएट' की उन पंक्तियों में, जिन्हें उन्होंने पहले बिना किसी भावना के पढ़ा था, अब उनके लिए कितना पीड़ादायक सत्य छिपा था: "जब कोई किसी स्त्री के प्रेम में लीन हो जाए, तो उसे स्वयं से पूछना चाहिए, 'उसके परिवेश का क्या हाल है? उसका जीवन कैसा रहा है?' भविष्य की सारी खुशियाँ इसी उत्तर में निहित हैं।" स्वान यह देखकर चकित थे कि उनके मन में बसे हुए सरल वाक्य, जैसे "मैंने यह कहानी पहले भी सुनी है" या "मैं अच्छी तरह जानता था कि वह क्या चाहती थी", उन्हें इतना दर्द दे सकते हैं। लेकिन उन्हें एहसास हुआ कि

जिन्हें उन्होंने सरल वाक्य समझ लिया था, वे वास्तव में उस पीड़ा के विशाल भंडार का हिस्सा थे, जो उन्हें वही पीड़ा दे सकती थी जो उन्होंने ओडेट की कहानी सुनते समय महसूस की थी। क्योंकि यह वही पीड़ा थी जिसे वे अब फिर से महसूस कर रहे थे। अब उसका यह जानना व्यर्थ था —वास्तव में, समय बीतने के साथ-साथ, अपराध को आंशिक रूप से भूल जाने और पूरी तरह से क्षमा कर देने के बावजूद—जब भी वह उसके शब्दों को दोहराता, उसकी पुरानी पीड़ा उसे फिर से उसी रूप में ढाल देती, जैसा वह ओडेट के बोलने से पहले था: अज्ञानी, विश्वासयोग्य; उसकी निर्मम ईर्ष्या उसे एक बार फिर, ओडेट के स्वीकारोक्ति से उसे गंभीर रूप से आहत करने के लिए, उस व्यक्ति की स्थिति में डाल देती, जिसे अभी तक सच्चाई का पता नहीं है; और कई महीनों बाद भी यह पुरानी कहानी उसे अचानक रहस्योद्घाटन की तरह स्तब्ध कर देती। वह अपनी स्मृति की अद्भुत पुनर्रचनात्मक शक्ति पर चकित था। केवल उस सृजनात्मक शक्ति के कमजोर होने से ही, जिसकी उर्वरता उम्र के साथ घटती जाती है, वह अपनी पीड़ाओं से कुछ राहत की उम्मीद कर सकता था। लेकिन, जैसे ही ओडेट के किसी एक वाक्य की स्वान को पीड़ा पहुँचाने की शक्ति लगभग समाप्त होती प्रतीत हुई, अचानक एक और वाक्य, जिस पर उसने अब तक सबसे कम ध्यान दिया था, मानो एक नया वाक्य हो, पहले वाले को राहत देने और उसे उसी शक्ति से आघात पहुँचाने के लिए आ उठा। प्रिंसेस डेस लाउम्स के साथ भोजन करने वाली शाम की याद उसे पीड़ा पहुँचा रही थी, लेकिन यह उसके दर्द का केंद्र, उसका मूल मात्र थी। वह दर्द उसके चारों ओर अस्पष्ट रूप से रिसता रहा, पिछले और अगले सभी दिनों में समाया रहा। और चाहे वह अपनी स्मृति को जिस भी बिंदु पर टिकाना चाहता हो, वह पूरा मौसम, जिसके दौरान वर्दुरिन परिवार अक्सर बोइस द्वीप पर भोजन करने जाता था, उसे पीड़ा

पहुँचाने के लिए वापस आ जाता था। इतनी तीव्रता से कि धीरे-धीरे उसकी ईर्ष्या से उत्पन्न जिज्ञासा, उन नए कष्टों के भय से निष्क्रिय हो जाती थी जो वह अपनी ईर्ष्या को संतुष्ट करने पर स्वयं को पहुँचाएगा। उन्होंने महसूस किया कि ओडेट के जीवन का वह सारा समय जो उनसे पहली बार मिलने से पहले बीत चुका था, एक ऐसा समय जिसकी उन्होंने कभी अपने मन में कोई छवि बनाने की कोशिश नहीं की थी, वह एक निराकार अमूर्तता नहीं थी जिसे वे धुंधला देख सकते थे, बल्कि कई निश्चित, दिनांकित वर्षों से मिलकर बना था, जिनमें से प्रत्येक ठोस घटनाओं से भरा हुआ था। लेकिन अगर वे उनके बारे में और अधिक जानने की कोशिश करते, तो उन्हें डर था कि कहीं उनका अतीत, जो अब रंगहीन, परिवर्तनशील और सहनीय था, एक मूर्त, एक अश्लील रूप धारण न कर ले, जिसमें व्यक्तिगत और शैतानी विशेषताएं हों। और वे अब भी इसकी कल्पना करने से बचते रहे, अब आलस्य के कारण नहीं, बल्कि पीड़ा के भय से। उन्हें आशा थी कि किसी दिन वे 'द आइलैंड इन द बोइस' या 'प्रिंसेस डेस लाउम्स' का जिक्र बिना उस पुराने दर्द की चुभन महसूस किए सुन सकेंगे; इस बीच, उसने ओडेट को नए वाक्य, अधिक स्थानों और लोगों के नाम और विभिन्न घटनाओं के बारे में बताने के लिए उकसाना अनुचित समझा, क्योंकि जब उसकी बीमारी अभी मुश्किल से ठीक हुई थी, तो इससे वह फिर से किसी और रूप में उभर सकती थी।

लेकिन अक्सर, जो बातें वह नहीं जानता था, जिन्हें जानने से वह अब भयभीत था, उन्हें ओडेट स्वयं ही सहजता से और बिना सोचे-समझे उसे बता देती थी; क्योंकि उसके दुराचारों ने उसके वास्तविक जीवन और उस अपेक्षाकृत निर्दोष जीवन के बीच जो खाई खड़ी कर दी थी, जिसे स्वान अपनी प्रेमिका के रूप में मानता था, और अक्सर अब भी मानता है, वह उसकी कल्पना से कहीं अधिक चौड़ी थी। एक दुष्ट व्यक्ति, जो हमेशा उन

लोगों के सामने सदाचार का दिखावा करता है जिन्हें वह अपने दुराचारों के बारे में किसी भी तरह का संदेह होने से बचाना चाहता है, उसके पास कोई पैमाना या मापक नहीं होता जिससे वह यह पता लगा सके कि उसके दुराचार (जिनकी निरंतर वृद्धि उसे स्वयं भी महसूस नहीं होती) ने उसे सामान्य जीवन से कितना दूर कर दिया है। उनके सहवास के दौरान, ओडेट के मन में, स्वान से छुपाई गई अपनी उन हरकतों की यादों के साथ, उसकी अन्य, निर्दोष हरकतें धीरे-धीरे इनसे प्रभावित होने लगीं, बिना उसे उनमें कुछ अजीब लगे, बिना उसके भीतर के उस विशेष क्षेत्र में कोई विस्फोट पैदा किए जहाँ उसने उन्हें पनपने दिया था, लेकिन जब उसने उन्हें स्वान को बताया, तो वह उस कपट के खुलासे से अभिभूत हो गया जिसकी ओर वे इशारा कर रही थीं। एक दिन, वह ओडेट को चोट पहुँचाए बिना, उससे यह जानने की कोशिश कर रहा था कि क्या उसका कभी दलालों से कोई संबंध रहा है। वास्तव में, वह आश्वस्त था कि ऐसा नहीं था; गुमनाम पत्र ने यह विचार उसके मन में डाला था, लेकिन विशुद्ध रूप से यांत्रिक तरीके से; इसे वहाँ बिना विश्वास के ग्रहण किया गया था, लेकिन फिर भी यह वहाँ बना रहा, और स्वान, इस संदेह के बोझ से छुटकारा पाना चाहता था - एक भारी बोझ, लेकिन फिर भी परेशान करने वाला - और आशा करता था कि ओडेट अब इसे हमेशा के लिए मिटा देगी।

"अरे नहीं! ऐसा नहीं है कि वे मुझे उनके पास जाने के लिए प्रताड़ित नहीं करते," उसकी मुस्कान ने एक संतुष्ट घमंड को प्रकट किया जिसे वह अब स्वान के सामने वैध प्रतीत करना असंभव समझती थी। "कल उनमें से एक ने दो घंटे से ज़्यादा मेरा इंतज़ार किया, और कहा कि मैं जो भी पैसे मांगूँगी वो दे देगी। लगता है, एक राजदूत ने उससे कहा, 'अगर तुम उसे मेरे पास नहीं लाओगी तो मैं खुदकुशी कर लूँगा'—मतलब मुझे! उन्होंने

उसे बताया कि मैं बाहर गया हूँ, लेकिन वो इंतज़ार करती रही, और आखिर में मुझे खुद जाकर उससे बात करनी पड़ी, तब जाकर वो गई। काश तुम देख पाते कि मैंने उससे कैसे बात की; मेरी नौकरानी बगल वाले कमरे में थी, सुन रही थी, और उसने मुझे बताया कि मैं इतनी ज़ोर से चिल्लाई कि मानो पूरा घर ही गिर जाएगा:—'लेकिन जब तुम मुझे ऐसा कहते हुए सुनोगी तो मैं ऐसा नहीं चाहती! ऐसी बात का ख्याल ही मुझे बिल्कुल पसंद नहीं! मुझे उम्मीद है कि मैं अब भी अपनी मर्ज़ी से, जब चाहे और जहाँ चाहे कुछ भी करने के लिए आज़ाद हूँ! अगर मुझे पैसों की ज़रूरत होती, तो मैं समझ सकती थी...' कुली को हुक्म है कि उसे दोबारा अंदर न आने दे; वो उसे बता देगा कि मैं शहर से बाहर हूँ। काश, जब मैं उससे बात कर रही थी, तब तुम कमरे में कहीं छिपे होते..." उसे। मुझे पता है, तुम खुश होतीं, मेरी प्यारी। तुम्हारी छोटी ओडेट में कुछ तो अच्छाई है, आखिर, भले ही लोग उसके बारे में कितनी ही बुरी बातें कहते हों।

इसके अलावा, जब भी ओडेट ने अपनी गलतियों को स्वीकार किया, जिन्हें उसने स्वान द्वारा खोजे जाने का अनुमान लगाया था, तो इससे स्वान के पुराने संदेह दूर होने के बजाय नए संदेह पैदा हो गए। क्योंकि उसकी स्वीकारोक्तियाँ कभी भी स्वान के संदेहों से पूरी तरह मेल नहीं खाती थीं। ओडेट चाहे अपने स्वीकारोक्ति के सभी आवश्यक हिस्सों को हटा दे, फिर भी उसमें कुछ ऐसा रह जाता था जिसकी स्वान ने कभी कल्पना भी नहीं की थी, जो उसे फिर से तोड़ देता था और उसे अपनी ईर्ष्या की समस्या के स्वरूप को बदलने में सक्षम बनाता था। और इन स्वीकारोक्तियों को वह कभी नहीं भूल सका। उसकी आत्मा उन्हें अपने साथ ले जाती, उन्हें त्याग देती, फिर उन्हें नदी में बहते शवों की तरह अपने हृदय में समेट लेती। और वे उसे विषैला बना देते थे।

एक बार उसने उससे पेरिस-मर्सी उत्सव के दिन फोर्शेविल के उससे मिलने आने के बारे में बात की। "क्या! तुम उसे इतने लंबे समय से जानती हो? ओह, हाँ, बिल्कुल जानती हो," उसने खुद को सुधारते हुए कहा, ताकि यह न लगे कि उसे इस बात की जानकारी नहीं थी। और अचानक वह इस विचार से कांपने लगा कि पेरिस-मर्सी उत्सव के दिन, जब उसे वह पत्र मिला था जिसे उसने इतने ध्यान से संभाल कर रखा था, शायद वह फोर्शेविल के साथ मैसन डी'ओर में दोपहर का भोजन कर रही थी। उसने कसम खाकर कहा कि वह वहाँ नहीं थी। "फिर भी, मैसन डी'ओर मुझे किसी ऐसी बात की याद दिलाता है जो मुझे उस समय पता था कि सच नहीं थी," उसने उसे डराने की उम्मीद में अपनी बात जारी रखी। "हाँ, उस शाम मैं वहाँ बिल्कुल नहीं थी जब मैंने तुमसे कहा था कि मैं अभी-अभी वहाँ से आई हूँ, और तुम प्रिवोस्ट के यहाँ मुझे ढूँढ रहे थे," उसने जवाब दिया (उसके हावभाव से लग रहा था कि वह जानता था) दृढ़ता से, जो व्यंग्य से ज़्यादा झिझक पर आधारित थी, स्वान को नाराज़ करने के डर से, जिसे वह अपने आत्मसम्मान के कारण छिपाने की कोशिश कर रही थी, और उसे यह दिखाने की इच्छा से कि अगर वह चाहे तो पूरी तरह से स्पष्टवादी हो सकती है। और इसलिए उसने उसे एक जल्लाद की तरह पूरी तेज़ी और ताकत से मारा, फिर भी उस पर क्रूरता का आरोप नहीं लगाया जा सकता था, क्योंकि उसे ज़रा भी एहसास नहीं था कि वह उसे चोट पहुँचा रही है; वह हँसने भी लगी, हालाँकि शायद यह मुख्य रूप से उसे यह सोचने से रोकने के लिए था कि वह शर्मिंदा या भ्रमित है। "यह बिल्कुल सच है, मैं मैसन डोरे नहीं गई थी। मैं फोर्शेविल के यहाँ से लौट रही थी। दरअसल, मैं प्रिवोस्ट के यहाँ गई थी—यह कोई मनगढ़ंत कहानी नहीं है—और उन्होंने मुझे वहाँ मिला और मुझे अंदर आकर उनके प्रिंट देखने के लिए कहा। लेकिन कोई और उनसे मिलने

आया था। मैंने आपको बताया था कि मैं मैसन डी'ओर से आ रही हूँ क्योंकि मुझे डर था कि आप मुझसे नाराज़ हो सकती हैं। सच में, यह मेरी बहुत अच्छी बात थी, है ना? मैं मानती हूँ, मैंने गलती की, लेकिन कम से कम अब मैं आपको इसके बारे में सब कुछ बता रही हूँ, है ना? अगर यह सच होता, तो पेरिस-मर्सी उत्सव के दिन उनके साथ दोपहर का भोजन करने की बात आपको सीधे-सीधे न बताने से मुझे क्या फायदा होता? खासकर तब जब हम एक-दूसरे को उतना अच्छी तरह से नहीं जानते थे जितना अब जानते हैं, है ना प्रिय?"

उन दिल दहला देने वाले शब्दों ने उसे बिल्कुल बेजान बना दिया था, और अब अचानक उसमें एक कायरता भरी कमजोरी झलक रही थी। उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। और इस तरह, उन महीनों में भी, जिनके बारे में उसने दोबारा सोचने की हिम्मत नहीं की थी, क्योंकि वे महीने बहुत खुशहाल थे, उन महीनों में भी जब वह उससे प्यार करती थी, वह उससे झूठ बोल रही थी! उस पल के अलावा (वह पहली शाम जब उन्होंने शारीरिक संबंध बनाए थे) जब उसने उससे कहा था कि वह मैसन डोरे से आ रही है, ऐसे कितने और पल रहे होंगे, जिनमें से हर एक झूठ को छुपाने के लिए बोला गया था, और स्वान को ज़रा भी शक नहीं था। उसे याद आया कि एक बार उसने उससे कहा था: "मुझे बस मैडम वर्दुरिन को बताना है कि मेरी ड्रेस तैयार नहीं थी, या मेरी टैक्सी देर से आई। कोई न कोई बहाना तो होता ही है।" शायद खुद उससे भी, कई बार जब उसने बड़ी चतुराई से किसी देरी को समझाने या बैठक के लिए तय समय में बदलाव को जायज़ ठहराने के लिए ऐसे शब्द कहे होंगे, तो उन पलों में, बिना उसे ज़रा भी आभास हुए, उसका किसी दूसरे आदमी के साथ संबंध छिपा रहा होगा, उस आदमी के साथ जिससे उसने कहा होगा: "मुझे बस स्वान को यह बताना है कि मेरी ड्रेस तैयार नहीं थी, या मेरी टैक्सी देर से

आई। कोई न कोई बहाना तो हमेशा मिल ही जाता है।" और अपनी सभी सुखद यादों के नीचे, उन पुराने दिनों में ओडेट द्वारा उससे कहे गए सबसे सरल शब्दों के नीचे, उन शब्दों के नीचे जिन्हें उसने मानो किसी पवित्र ग्रंथ के शब्दों की तरह माना था, उसके द्वारा उसे बताई गई उसकी दैनिक गतिविधियों के नीचे, सबसे साधारण स्थानों के नीचे, उसके दर्जी के फ्लैट के नीचे, एवेन्यू डू बोइस के नीचे, हिप्पोड्रोम के नीचे, वह महसूस कर सकता था (वहाँ छिपा हुआ, उस अस्थायी अतिरेक के कारण जो, दिन कैसे बीता इसका सबसे विस्तृत विवरण देने के बाद भी, हमेशा कुछ न कुछ छोड़ देता है, जो कुछ अनकहे कार्यों को छिपाने की जगह के रूप में काम कर सकता है), वह झूठ की एक संभावित अंतर्धारा का संकेत महसूस कर सकता था जिसने उसके लिए उन सभी चीजों को नीचा कर दिया था जो उसके लिए सबसे कीमती रह गई थीं, उसकी सबसे सुखद शामें, स्वयं रू ला पेरूज़, जिसे ओडेट उन समयों के अलावा अन्य समयों पर लगातार छोड़ती रही होगी जिनके बारे में उसने उसे बताया था; जब उसने मेसन डोरे के बारे में उसका कबूलनामा सुना था, तब उसके मन में जो भयानक भय बैठा था, उसकी शक्ति बढ़ती जा रही थी, और 'नीनवे के विनाश' के घिनौने जीवों की तरह, उसके अतीत की पूरी इमारत को पत्थर-पत्थर करके चकनाचूर कर रही थी... अगर अब, जब भी उसकी याद मेसन डोरे के क्रूर नाम को दोहराती, तो वह मुंह फेर लेता, तो इसलिए कि वह नाम उसे अब उस सौभाग्य की याद नहीं दिलाता था, जिसे उसने बहुत पहले खो दिया था, बल्कि उस दुर्भाग्य की याद दिलाता था, जिसका उसे अब पहली बार एहसास हुआ था। फिर मेसन डोरे का भी वही हाल हुआ, जैसा कि बोइस द्वीप का हुआ था, कि धीरे-धीरे उसका नाम उसे परेशान करना बंद कर दिया। क्योंकि जिसे हम अपना प्रेम या ईर्ष्या समझते हैं, वे दोनों ही एकल, निरंतर और व्यक्तिगत भावनाएँ नहीं

हैं। ये अनगिनत प्रेमों और विभिन्न ईर्ष्याओं से मिलकर बने हैं, जिनमें से प्रत्येक क्षणभंगुर है, हालांकि इनकी निरंतर बहुलता हमें निरंतरता का आभास और एकता का भ्रम देती है। स्वान के प्रेम का जीवन, उसकी ईर्ष्या की निष्ठा, मृत्यु, बेवफाई, असंख्य इच्छाओं और असंख्य शंकाओं से उत्पन्न हुई थी, जिनका लक्ष्य ओडेट थी। यदि वह कुछ समय तक उससे मिले बिना रहता, तो जो इच्छाएँ मर चुकी थीं, उनकी जगह नई नहीं आतीं। लेकिन ओडेट की उपस्थिति स्वान के हृदय में प्रेम और संदेह के बीज बोती रही।

कुछ शामों को वह अचानक उसके प्रति ऐसी दयालुता दिखाती, जिसके बारे में वह उसे सख्ती से चेतावनी देती कि उसे तुरंत इसका लाभ उठाना होगा, अन्यथा आने वाले वर्षों तक यह दोबारा नहीं देखने को मिलेगा; उसे तुरंत उसके साथ घर चलना होगा, "एक कैटलिया करने के लिए", और उसके लिए उसकी दिखावटी इच्छा इतनी अचानक, इतनी अस्पष्ट, इतनी ज़बरदस्त थी, उसके चुंबन इतने दिखावटी और इतने अपरिचित थे, कि यह क्रूर और अस्वाभाविक स्नेह स्वान को किसी झूठ या निर्दयी कार्य की तरह ही दुखी कर देता था। एक शाम जब वह उसके आदेश का पालन करते हुए उसके साथ घर गया, और जब वह अपने सामान्य ठंडेपन के विपरीत, चुंबनों के बीच भावुक शब्द बोल रही थी, तो उसे अचानक लगा कि उसने कोई आवाज़ सुनी है; वह उठा, हर जगह ढूंढा और कोई नहीं मिला, लेकिन उसमें उसके पास वापस जाने का साहस नहीं था; जिस पर वह भयंकर क्रोध में एक फूलदान तोड़ते हुए बोली, "मैं तुम्हारे साथ कभी कुछ ठीक नहीं कर सकती, तुम असंभव व्यक्ति हो!" और वह इस बात को लेकर अनिश्चित था कि क्या उसने वास्तव में कमरे में किसी पुरुष को छिपा रखा था, जिसकी ईर्ष्या को वह चोट पहुँचाना चाहती थी, या फिर उसकी भावनाओं को उत्तेजित करना चाहती थी।

कभी-कभी वह ओडेट के बारे में कुछ जानने की उम्मीद में 'खुशनुमा' घरों में चला जाता था, हालाँकि उसका नाम लेने की हिम्मत वह नहीं करता था। "यहाँ एक छोटी सी चीज़ है, आपको ज़रूर पसंद आएगी," 'मैनेजर' उसका स्वागत करती और वह एक घंटे तक वहीं बैठा रहता, वहाँ बैठी किसी बेचारी लड़की से उदास होकर बातें करता, जो यह देखकर हैरान होती कि वह आगे क्यों नहीं बढ़ रहा। उनमें से एक, जो अभी भी काफी युवा और आकर्षक थी, ने एक बार उससे कहा, "बेशक, मैं एक सच्चा दोस्त पाना चाहूँगी, तब वह पूरी तरह आश्वस्त हो जाएगा कि मैं फिर कभी किसी दूसरे पुरुष के साथ नहीं जाऊँगी।" "सचमुच, क्या आपको लगता है कि किसी महिला के लिए किसी पुरुष के प्यार से प्रभावित होना और उसके प्रति बेवफ़ा न होना संभव है?" स्वान ने चिंता से पूछा। "क्यों नहीं! यह सब उनके स्वभाव पर निर्भर करता है!" स्वान खुद को उन लड़कियों से वही बातें कहने से नहीं रोक सका जो प्रिंसेस डेस लाउम्स को बहुत पसंद आतीं। जो दोस्त की तलाश में था, उससे मुस्कुराते हुए उसने कहा, "वाह, कितनी अच्छी बात है कि तुमने अपनी कमरबंद के साथ नीली आँखें लगा ली हैं।" "और तुमने भी नीली कलाईबंद पहन रखी है।" "इस तरह की जगह के लिए हमारी बातचीत कितनी प्यारी है! मैं तुम्हें बोर तो नहीं कर रहा हूँ? या तुम्हें रोक तो नहीं रहा हूँ?" "नहीं, मेरे पास करने को कुछ नहीं है, धन्यवाद। अगर तुम मुझे बोर कर रहे होते तो मैं कह देता। लेकिन मुझे तुम्हारी बातें सुनना अच्छा लगता है।" "मैं बहुत खुश हूँ... क्या हम अच्छे से पेश नहीं आ रहे हैं?" उसने अंदर झाँक रही 'मैनेजर' से पूछा, "हाँ, मैं भी यही सोच रही थी, ये लोग कितने समझदारी से पेश आ रहे हैं! लेकिन बात तो यही है! लोग अब मेरे घर सिर्फ़ बातें करने आते हैं। राजकुमार ने मुझे अभी कुछ दिन पहले ही बताया था कि उन्हें यहाँ अपनी पत्नी से ज़्यादा आराम मिलता है। लगता है आजकल सभी संभ्रांत

महिलाएँ ऐसी ही हैं; इसे मैं एक बड़ा घोटाला कहती हूँ। लेकिन अब मैं आपको शांति से रहने देती हूँ, मुझे पता है कि मेरी ज़रूरत नहीं है," उसने धीरे से कहा और स्वान को नीली आँखों वाली लड़की के साथ छोड़कर चली गई। लेकिन थोड़ी देर बाद वह उठा और उसे अलविदा कहा। अब उसे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं रही थी। वह ओडेट को नहीं जानती थी।

चित्रकार के बीमार होने पर, डॉ. कॉटार्ड ने समुद्री यात्रा की सलाह दी; कई वफादारों ने उनके साथ जाने की इच्छा जताई; वर्दुरिन दंपति पेरिस में अकेले रह जाने की आशंका से घबरा गए, इसलिए उन्होंने पहले एक नौका किराए पर ली और अंत में उसे खरीद लिया; इस प्रकार ओडेट लगातार समुद्री यात्रा पर जाती रहती थी। जब भी वह लंबे समय के लिए दूर रहती, स्वान को लगता कि वह उससे दूर होता जा रहा है, लेकिन मानो यह नैतिक दूरी उनके बीच की शारीरिक दूरी के अनुपात में हो, जब भी उसे पता चलता कि ओडेट पेरिस लौट आई है, तो वह उससे मिले बिना चैन से नहीं रह पाता था। एक बार, जब वे, जैसा कि सभी को लगा, केवल एक महीने के लिए दूर गए थे, या तो वे कई प्रलोभनों के शिकार हो गए, या फिर श्री वर्दुरिन ने अपनी पत्नी को खुश करने के लिए चालाकी से पहले से ही सब कुछ व्यवस्थित कर लिया था, और समय बीतने के साथ ही अपने वफादारों को अपनी योजनाओं का खुलासा किया; खैर, अल्जीयर्स से वे ट्यूनिस गए; फिर इटली, ग्रीस, कॉन्स्टेंटिनोपल, एशिया माइनर। वे लगभग एक वर्ष से अनुपस्थित थे, और स्वान पूरी तरह से सहज और लगभग खुश महसूस कर रहा था। हालाँकि एम. वर्दुरिन ने पियानोवादक और डॉ. कॉटार्ड को यह समझाने का प्रयास किया था कि उनकी चाची और रोगियों को उनकी कोई आवश्यकता नहीं है, और किसी भी स्थिति में, श्रीमती कॉटार्ड को पेरिस लौटने देना अत्यंत जल्दबाजी होगी, जहाँ श्रीमती वर्दुरिन ने उसे आश्वासन

दिया था कि अभी-अभी एक क्रांति शुरू हुई है, फिर भी वह उन्हें कॉन्स्टेंटिनोपल में उनकी स्वतंत्रता देने के लिए बाध्य था। और चित्रकार उनके साथ घर लौट आया। एक दिन, इन चार यात्रियों की वापसी के कुछ ही समय बाद, स्वान ने 'लक्ज़मबर्ग' लेबल वाली एक बस को अपनी ओर आते देखा, और वहाँ कुछ काम होने के कारण, वह उस पर चढ़ गया और खुद को श्रीमती कॉटार्ड के सामने बैठा पाया। कॉटार्ड, जो आज अपने खास लोगों से मिलने के लिए पूरे क्रम में घूम रही थीं, उनकी टोपी में एक पंख लगा था, उन्होंने रेशमी पोशाक, मफ, छाता (जो बारिश न होने पर छाते का काम करता था), ताश रखने का डिब्बा और साफ किए हुए सफेद दस्ताने पहने हुए थे। इन शान-शौकत के प्रतीकों को पहनकर, अच्छे मौसम में वे एक ही मोहल्ले में एक घर से दूसरे घर पैदल जाती थीं, लेकिन जब उन्हें किसी दूसरे इलाके में जाना होता था, तो वे बस का ट्रांसफर टिकट इस्तेमाल करती थीं। पहले एक-दो मिनट तक, जब तक उस महिला की स्वाभाविक शिष्टता डॉक्टर की पत्नी के कठोर व्यवहार को तोड़ नहीं पाई, जो खुद भी अनिश्चित थी कि क्या उसे स्वान से पहले वर्दुरिन्स का जिक्र करना चाहिए, उसने बड़ी सहजता से अपनी धीमी और अटपटी, लेकिन आकर्षक आवाज में, जो कभी-कभी बस की खड़खड़ाहट में पूरी तरह डूब जाती थी, उन विषयों पर बात की जो उसने दोपहर भर में सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते हुए दर्जनों घरों में सुने थे और जिन्हें वह दोहराती रहती थी।

"मुझे आपसे यह पूछने की ज़रूरत नहीं है, श्री स्वान, कि क्या आप जैसे आंदोलन में इतने सक्रिय व्यक्ति मिरलिटन्स गए हैं, जहाँ आपने माचार्ड द्वारा बनाया गया वह चित्र देखा है जिसके पीछे पूरा पेरिस दीवाना है। और आप इसके बारे में क्या सोचते हैं? आप किसके पक्ष में हैं, प्रशंसा करने वालों के या निंदा करने वालों के? आजकल पेरिस के हर घर में यही हाल

है, कोई भी माचार्ड के चित्र के अलावा किसी और चीज़ की बात नहीं करता; अगर आप माचार्ड के चित्र पर अपनी राय नहीं देते, तो आप न तो समझदार हैं, न ही वास्तव में सुसंस्कृत हैं, न ही आप आधुनिक युग से जुड़े हैं।"

स्वान द्वारा यह उत्तर देने पर कि उसने यह चित्र नहीं देखा था, श्रीमती कॉटार्ड को डर था कि कहीं उसने उसे यह स्वीकारोक्ति करने के लिए मजबूर करके उसकी भावनाओं को ठेस न पहुँचाई हो।

"ओह, कोई बात नहीं! कम से कम आपमें इस बारे में खुलकर बोलने का साहस तो है। माचार्ड का चित्र न देखने के कारण आप खुद को शर्मिंदा नहीं मानतीं। मुझे यह बहुत अच्छा लगा। खैर, मैंने इसे देख लिया है; राय बंटी हुई है, आप जानती हैं, कुछ लोगों को यह कुछ ज्यादा मेहनत से बनाया हुआ लगता है, जैसे फेंटा हुआ मलाई; लेकिन मुझे लगता है कि यह एकदम सही है। बेशक, वह हमारी दोस्त बिचे द्वारा बनाए गए नीले और पीले रंग की महिलाओं से बिल्कुल अलग है। यह तो साफ है। लेकिन मुझे आपको बिल्कुल साफ-साफ बताना होगा (आप मुझे बहुत पुराने ख्यालों का समझेंगी, लेकिन मैं हमेशा वही कहती हूं जो मुझे लगता है), कि मुझे उनका काम समझ नहीं आता। मुझे मेरे पति के चित्र में अच्छी बातें तो दिखती हैं; ओह, बिल्कुल; और यह निश्चित रूप से उनके बाकी चित्रों से कम अजीब है, लेकिन फिर भी उन्होंने बेचारे को नीली मूंछें क्यों दीं! लेकिन माचार्ड! अब यह सुनो, मेरी दोस्त के पति, मैं उनसे मिलने जा रही हूं..." इस पल (जिसने मुझे आपकी संगति का अत्यंत आनंद दिया है), ने उसे वादा किया है कि अगर वह अकादमी के लिए चुना जाता है (वह डॉक्टर के सहयोगियों में से एक है), तो वह माचार्ड से उसका चित्र बनवाएगा। तो उसके पास उम्मीद की किरण है! मेरी एक और दोस्त है जो ज़िद करती है कि उसे लेलॉयर से चित्र बनवाना ज़्यादा पसंद है। मैं तो

बस एक नासमझ हूँ, और मुझे इसमें कोई शक नहीं कि लेलॉयर को शायद माचार्ड से भी ज़्यादा चित्रकला का ज्ञान है। लेकिन मुझे लगता है कि एक चित्र के बारे में सबसे ज़रूरी बात, खासकर जब उस पर दस हज़ार फ़्रैंक खर्च होने वाले हों, तो यह है कि वह हूबहू दिखे, और देखने में अच्छा लगे, अगर आप समझ रहे हैं कि मेरा क्या मतलब है।

अपने पंख की भव्यता, अपने कार्ड-केस पर बने मोनोग्राम, सफाईकर्मी द्वारा अपने प्रत्येक दस्ताने के अंदर स्याही से लिखे गए छोटे नंबर और स्वान से वर्दुरिन्स के बारे में बात करने की कठिनाई से प्रेरित इस विषय पर चर्चा समाप्त होने के बाद, श्रीमती कॉटार्ड ने देखा कि उन्हें रू बोनापार्ट के कोने तक पहुँचने में अभी काफी लंबा रास्ता तय करना था, जहाँ कंडक्टर उन्हें उतारने वाला था, इसलिए उन्होंने अपने दिल की आवाज़ सुनी, जो इन शब्दों के अलावा कुछ और कहने की सलाह दे रही थी।

"जब हम श्रीमती वर्दुरिन के साथ नौका पर थे, तब आपके कान जरूर जल रहे होंगे। हम हर समय आपके बारे में ही बात कर रहे थे।"

स्वान सचमुच आश्चर्यचकित था, क्योंकि उसे लगता था कि वर्दुरिन परिवार की उपस्थिति में उसका नाम कभी नहीं लिया जाता था।

“देखिए,” श्रीमती कॉटार्ड ने आगे कहा, “श्रीमती डी क्रेसी वहाँ थीं; क्या मुझे और कुछ कहने की ज़रूरत है? जब भी ओडेट कहीं होती हैं, तो ज़्यादा देर नहीं लगती कि वो आपके बारे में बात करना शुरू कर देती हैं। और आप अच्छी तरह जानते हैं, वो कोई बुरी बातें नहीं कहतीं। क्या! आपको मेरी बात पर यकीन नहीं हो रहा!” उन्होंने आगे कहा, यह देखते हुए कि स्वान संदेह भरी नज़रों से देख रहा था। और, अपने दृढ़ विश्वास से प्रभावित होकर, बिना किसी बुरे अर्थ के, जिसका प्रयोग उन्होंने केवल उस भाव में किया जिसमें दो मित्रों के बीच स्नेह का वर्णन होता है: “अरे, वो तो आपको बहुत प्यार करती हैं! जी हाँ, बिल्कुल; मुझे यकीन है कि

उनके आस-पास रहते हुए आपके खिलाफ कुछ भी कहना ठीक नहीं होगा; आपको तुरंत अपनी औकात पता चल जाएगी! हम चाहे कुछ भी कर रहे हों, उदाहरण के लिए, अगर हम कोई तस्वीर देख रहे हों, तो वो कहतीं, 'काश वो यहाँ होते, वही बता सकते हैं कि यह असली है या नकली। उनके जैसा कोई और नहीं है।'" और दिनभर वह यही कहती रहती, 'वह अभी क्या कर रहा होगा? मुझे उम्मीद है, वह कुछ काम कर रहा होगा! इतना प्रतिभाशाली व्यक्ति इतना आलसी हो, यह बहुत दुखद है।' (मुझे माफ़ करना।) 'मैं उसे अभी इसी वक्त देख सकती हूँ; वह हमारे बारे में सोच रहा होगा, सोच रहा होगा कि हम कहाँ हैं।' सचमुच, उसने एक ऐसा वाक्य कहा जो मुझे उस समय बहुत प्यारा लगा। एम. वर्दुरिन ने उससे पूछा, 'जब वह हज़ारों मील दूर है, तो तुम कैसे देख सकती हो कि वह क्या कर रहा है?' और ओडेट ने उत्तर दिया, 'एक मित्र की नज़र में कुछ भी असंभव नहीं है।'

नहीं, मैं आपको यकीन दिलाती हूँ, मैं ये सिर्फ़ आपकी तारीफ़ करने के लिए नहीं कह रही हूँ; आपको उसमें एक सच्ची दोस्त मिली है, ऐसी दोस्त मिलना मुश्किल है। और मैं आपको बता दूँ, अगर आपको पता न हो, कि आप इकलौती हैं। श्रीमती वर्दुरिन ने खुद मुझे उनके साथ हमारे आखिरी दिन यही कहा था (आप जानते हैं, विदाई से पहले लोग ज़्यादा खुलकर बात करते हैं), 'मैं ये नहीं कहती कि ओडेट हमें पसंद नहीं करती, लेकिन हम उससे जो कुछ भी कहें, स्वान जो कहेगा उसके आगे उसका कोई महत्व नहीं है।' अरे, देखो कंडक्टर मेरे लिए रुक गया; मैं आपसे बातें करती रही और बोनापार्ट गली से आगे निकल जाती, मुझे पता भी नहीं चलता... क्या आप इतनी मेहरबानी करेंगी कि मुझे बता दें कि मेरा पंख सीधा है या नहीं?

और श्रीमती कॉटार्ड ने अपना मफ उतारकर स्वान को दे दिया, सफेद

दस्ताने पहने उस हाथ से, जिसमें से एक ट्रांसफर टिकट के साथ, बस में व्याप्त फैशनेबल जीवन का माहौल निकल आया, जो नए धुले चमड़े की तीखी सुगंध के साथ घुलमिल गया था। स्वान स्वयं को उनके साथ-साथ श्रीमती वर्दुरिन (और लगभग ओडेट के प्रति भी, क्योंकि अब उनके मन में उसके लिए जो भावना थी, उसमें दर्द का कोई अंश नहीं था, अब तो उसे प्रेम कहना भी मुश्किल था) के प्रति कृतज्ञता से भर उठा। बस के चबूतरे से वह प्रेम भरी निगाहों से उनका पीछा करता रहा, जब वह शान से रू बोनापार्ट पर अपना रास्ता बना रही थीं, उनका पंख सीधा खड़ा था, एक हाथ में उनकी स्कर्ट थी, जबकि दूसरे हाथ में उन्होंने अपना छाता और कार्ड केस पकड़ रखा था, ताकि उसका मोनोग्राम दिखाई दे सके, और चलते-चलते उनका मफ हवा में लहरा रहा था।

स्वान के मन में ओडेट के लिए जो भावनाएँ मंद पड़ चुकी थीं, उनसे प्रतिस्पर्धा करने और उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए, श्रीमती कॉटार्ड, जो इस मामले में अपने पति से कहीं अधिक बुद्धिमान चिकित्सक थीं, ने उनमें कृतज्ञता और मित्रता जैसी कुछ और सामान्य भावनाएँ उत्पन्न कर दीं। स्वान के मन में ये भावनाएँ ओडेट को फिर से अधिक मानवीय (अन्य महिलाओं के समान, क्योंकि अन्य महिलाएं भी उनमें ऐसी ही भावनाएँ जगा सकती थीं) बनाने वाली थीं, और उन्हें उस ओडेट में वापस लाने में तेजी लाने वाली थीं, जिसे वह अटूट स्नेह से प्यार करते थे, जो एक शाम चित्रकार के यहाँ मौज-मस्ती के बाद उन्हें घर ले आई थी, फोर्शेविल के साथ संतरे का रस पीने के लिए, वह ओडेट जिसके साथ स्वान ने सोचा था कि वह सुखी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

पहले, वह अक्सर इस भय से भयभीत रहता था कि एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब वह ओडेट से प्रेम करना छोड़ देगा। इसलिए उसने ठान लिया था कि वह सतर्क रहेगा और जैसे ही उसे लगेगा कि प्रेम उससे

दूर होता जा रहा है, वह उसे मजबूती से थामे रखेगा और उसे रोके रखेगा। लेकिन अब, उसके प्रेम के कमजोर पड़ने के साथ-साथ, ओडेट से प्रेम करने की उसकी इच्छा भी कमजोर होती जा रही थी। क्योंकि मनुष्य तब तक नहीं बदल सकता, यानी दूसरा व्यक्ति नहीं बन सकता, जब तक वह उस स्व के आदेशों का पालन करता रहे जिसे वह छोड़ चुका है। कभी-कभी, यदि किसी समाचार पत्र में उसकी नज़र उन पुरुषों में से किसी एक के नाम पर पड़ती, जिन्हें वह ओडेट का प्रेमी मानता था, तो उसकी ईर्ष्या फिर से जागृत हो जाती। लेकिन यह ईर्ष्या बहुत मामूली थी, और चूंकि इससे उसे यह सिद्ध हो गया था कि वह उस दौर से पूरी तरह से बाहर नहीं निकल पाया था जिसमें उसने इतना कष्ट सहा था—हालाँकि उसमें उसने अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव भी किया था—और यह कि उसके जीवन के संयोग से वह कभी-कभार, चुपके से और दूर से, इसकी सुंदरता की झलक पा सकता था, इसलिए इस ईर्ष्या ने उसे एक सुखद रोमांच दिया, ठीक वैसे ही जैसे किसी उदास पेरिसवासी को, जब वह वेनिस को पीछे छोड़कर फ्रांस लौटता है, तो एक आखिरी मच्छर यह साबित कर देता है कि इटली और गर्मी अभी भी बहुत दूर नहीं हैं। लेकिन, आमतौर पर, अपने जीवन के इस विशेष दौर से, जिससे वह बाहर निकल रहा था, जब उसने प्रयास किया, यदि उसमें बने रहने का नहीं, तो कम से कम जब तक संभव हो, उसका निर्बाध दृश्य प्राप्त करने का, तो उसने पाया कि तब तक बहुत देर हो चुकी थी; वह पीछे मुड़कर देखना चाहता था, मानो वह कोई लुप्त होता हुआ परिदृश्य हो, उस प्रेम को पहचानना चाहता हो जिससे वह विदा हो चुका था, लेकिन पूर्ण द्वैत की अवस्था में प्रवेश करना और उस भावना का सजीव दृश्य अपने सामने प्रस्तुत करना इतना कठिन है जिसे अब वह धारण नहीं कर सकता। बहुत जल्द, उसके मस्तिष्क में बादल घिरने लगते हैं, और वह कुछ भी नहीं देख पाता, वह

प्रयास छोड़ देता, चश्मा उतारकर उसे पोंछ लेता; और उसने स्वयं से कहा कि थोड़ी देर आराम करना बेहतर होगा, बाद में पर्याप्त समय होगा, और वह अपने कोने में उतनी ही कम जिज्ञासा और उतनी ही सुस्ती के साथ लौट आया, जैसे कोई ऊंघता हुआ यात्री अपनी टोपी आँखों पर खींच लेता है ताकि रेलगाड़ी के डिब्बे में कुछ नींद ले सके, जो उसे उस देश से, जहाँ वह इतने लंबे समय से रहा है, और जिसे उसने कसम खाई थी कि वह अंतिम विदाई दिए बिना अपने से दूर नहीं जाने देगा। वास्तव में, उसी यात्री की तरह, जो सीमा पार करके फ्रांस में वापस आने तक जागता नहीं है, जब स्वान को संयोगवश पास ही कुछ ऐसा मिला जिससे यह साबित हुआ कि फोर्शेविल ओडेट का प्रेमी था, तो उसने पाया कि इससे उसे कोई पीड़ा नहीं हुई, प्रेम अब पूरी तरह से दूर हो गया था, और उसे इस बात का अफसोस हुआ कि उसे उस क्षण की कोई चेतावनी नहीं मिली थी जब वह हमेशा के लिए इससे बाहर निकल आया था। और ठीक वैसे ही, जैसे ओडेट को पहली बार चूमने से पहले, उसने उस चेहरे को अपनी स्मृति में अंकित करने की कोशिश की थी जो इतने लंबे समय से परिचित था, इससे पहले कि उनके चुंबन की अतिरिक्त स्मृति से वह बदल जाए, वैसे ही वह कम से कम मन में तो यह कामना कर सकता था कि जब तक वह जीवित है, उस ओडेट को अलविदा कह सके जिसने उसमें प्रेम और ईर्ष्या दोनों को जगाया था, उस ओडेट को जिसने उसे इतना कष्ट दिया था, और जिसे अब वह फिर कभी नहीं देख पाएगा। वह गलत था। कुछ हफ्तों बाद उसे उससे फिर से मिलना तय था। यह तब हुआ जब वह सो रहा था, एक स्वप्न के धुंधलके में। वह श्रीमती वर्दुरिन, डॉ. कॉटार्ड, एक टोपी पहने युवक (जिसे वह पहचान नहीं पाए), चित्रकार, ओडेट, नेपोलियन तृतीय और मेरे दादाजी के साथ एक ऐसे रास्ते पर चल रहे थे जो तटरेखा का अनुसरण करता था और समुद्र के ऊपर लटका हुआ था, कभी बहुत

ऊँचाई पर, कभी कुछ ही फीट की ऊँचाई पर, जिससे वे लगातार ऊपर-नीचे हो रहे थे; जो लोग ढलान पर पहुँच चुके थे, वे अब भी चढ़ाई कर रहे लोगों को दिखाई नहीं दे रहे थे; जो थोड़ी सी दिन की रोशनी बची थी, वह भी ढल रही थी, और ऐसा लग रहा था मानो उन पर तुरंत ही काली रात छा जाएगी। बीच-बीच में लहरें चट्टान से टकराती थीं, और स्वान को अपने गाल पर बर्फीली फुहार महसूस होती थी। ओडेट ने उन्हें इसे पोंछने के लिए कहा, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सके, और उनकी संगति में भी भ्रमित और असहाय महसूस कर रहे थे, साथ ही इसलिए भी क्योंकि उन्होंने नाइटशर्ट पहनी हुई थी। उन्हें उम्मीद थी कि अंधेरे में यह किसी का ध्यान नहीं जाएगा; श्रीमती लेकिन वर्दुरिन ने अनंत क्षण तक विस्मय भरी निगाहों से उसे देखा, इस दौरान उसने देखा कि उसका चेहरा बदल गया है, उसकी नाक लंबी हो गई है, और उसके नीचे घनी मूंछें उग आई हैं। वह ओडेट को देखने के लिए मुड़ा; उसके गाल पीले पड़ गए थे, उन पर छोटे-छोटे लाल धब्बे थे, उसके चेहरे पर उदासी छाई हुई थी; लेकिन उसने स्नेह से भरी आँखों से उसकी ओर देखा, मानो आँसू बहकर उसके चेहरे पर गिरने को तैयार हों, और उसे लगा कि वह उससे इतना प्यार करता है कि उसे तुरंत अपने साथ ले जाना चाहता है। अचानक ओडेट ने अपनी कलाई घुमाई, अपनी छोटी घड़ी पर नज़र डाली और बोली: "मुझे जाना होगा।" उसने सभी से उसी औपचारिक ढंग से विदा ली, स्वान को अलग से लिए बिना, उसे यह बताए बिना कि वे उस शाम या अगले दिन कहाँ मिलेंगे। उसने पूछने की हिम्मत नहीं की, वह उसके पीछे जाना चाहता था, लेकिन मजबूरी में, उसकी ओर मुड़े बिना, श्रीमती वर्दुरिन के किसी प्रश्न का मुस्कुराते हुए उत्तर देना पड़ा; लेकिन उसका दिल बेतहाशा धड़क रहा था, उसे महसूस हो रहा था कि अब वह ओडेट से नफरत करता है, वह उन आँखों को कुचल देना चाहता था जिन्हें कुछ पल पहले उसने इतना प्यार

किया था, उन बेजान गालों से खून निकाल देना चाहता था। वह श्रीमती वर्दुरिन के साथ चढ़ता रहा, यानी हर कदम उसे ओडेट से दूर ले जा रहा था, जो नीचे की ओर, दूसरी दिशा में जा रही थी। एक पल बीता और उसे छोड़े कई घंटे बीत चुके थे। चित्रकार ने स्वान से कहा कि नेपोलियन तृतीय ने ओडेट के तुरंत बाद खुद को पीछे छोड़ दिया था। "उन्होंने शायद आपस में यह तय किया था," उसने आगे कहा; "वे चट्टान के नीचे मिलने के लिए सहमत हुए होंगे, लेकिन उन्होंने एक साथ अलविदा नहीं कहा; यह अजीब लग सकता था। वह उसकी प्रेमिका है।" वह अजनबी युवक फूट-फूटकर रोने लगा। स्वान ने उसे सांत्वना देने की कोशिश की। "आखिरकार, वह बिल्कुल सही है," उसने युवक से कहा, उसकी आँखों के आँसू पोंछते हुए और उसे सहज महसूस कराने के लिए उसकी टोपी उतार दी। "मैंने खुद उसे ऐसा करने की सलाह दर्जनों बार दी है। इतना परेशान क्यों होना? ज़ाहिर है, वही उसे समझने वाला आदमी था।" स्वान ने खुद से यही तर्क किया, क्योंकि जिस युवक को वह पहले पहचान नहीं पाया था, वह खुद भी था; कुछ उपन्यासकारों की तरह, उसने अपने व्यक्तित्व को दो पात्रों में बाँट दिया था - एक वह जो सपने में 'प्रथम व्यक्ति' था, और दूसरा वह जिसे उसने अपने सामने एक टोपी पहने देखा था।

नेपोलियन तृतीय के संदर्भ में, स्वान ने कुछ अस्पष्ट विचारों के जुड़ाव, फिर बैरन के सामान्य चेहरे में कुछ बदलाव, और अंत में उनकी छाती पर लीजन ऑफ ऑनर के चौड़े रिबन के कारण फोर्शेविल को यह नाम दिया था; लेकिन वास्तव में, और उनके सपने में प्रकट हुए व्यक्ति ने जो कुछ भी दर्शाया और उन्हें याद दिलाया, वह वास्तव में फोर्शेविल ही थे। क्योंकि, अपूर्ण और बदलते हुए चित्रों के एक समूह से, स्वान ने अपनी नींद में गलत निष्कर्ष निकाले, साथ ही साथ इतनी रचनात्मक शक्ति का

आनंद लेते हुए कि वे कुछ निम्न जीवों की तरह विभाजन की एक साधारण क्रिया द्वारा स्वयं को पुन: उत्पन्न करने में सक्षम थे; अपनी हथेली में महसूस की गई गर्मी से उन्होंने एक अजीब हाथ की खोखली आकृति बनाई जिसे वे थामे हुए थे, और उन भावनाओं और छापों से जिनके बारे में वे अभी तक सचेत नहीं थे, उन्होंने अचानक उतार-चढ़ाव पैदा किए जो तार्किक अनुक्रमों की एक श्रृंखला द्वारा, उनके सपने में निश्चित बिंदुओं पर, उस व्यक्ति को प्रकट करते थे जो उनका प्यार पाने वाला था या उन्हें चौंका कर जगाने वाला था। पल भर में उनके चारों ओर रात का अंधेरा छा गया; अलार्म बज उठा, निवासी अपने जलते हुए घरों से भागते हुए उसके पास से गुज़रे; वह उमड़ती लहरों की गड़गड़ाहट सुन सकता था, और साथ ही अपने दिल की धड़कन भी, जो उतनी ही तेज़ी से उसके सीने में धड़क रही थी। अचानक उसकी धड़कन की गति दोगुनी हो गई, उसे एक असहनीय दर्द और मतली महसूस हुई; बुरी तरह झुलसा हुआ एक किसान उसके पास से गुज़रते हुए बोला: "आओ और चार्लस से पूछो कि ओडेट ने अपनी सहेली के साथ रात कहाँ बिताई। वह उसके साथ जाया करता था, और वह उसे सब कुछ बताती है। आग उन्हीं ने लगाई थी।" यह उसका नौकर था, जो उसे जगाने आया था, और कह रहा था:—

"महोदय, आठ बज गए हैं और नाई यहाँ है। मैंने उसे एक घंटे बाद फिर आने को कहा है।"

लेकिन ये शब्द, नींद की उन लहरों में उतरते हुए जिनमें स्वान डूबा हुआ था, उसकी चेतना तक उस अपवर्तन से गुज़रे बिना नहीं पहुँचे जो पानी के कटोरे की तलहटी में प्रकाश की किरण को दूसरे सूर्य में बदल देता है; ठीक वैसे ही जैसे कुछ क्षण पहले, नींद की अथाह गहराई में दरवाज़े की घंटी की आवाज़ एक अलार्म की तेज़ आवाज़ में बदल गई थी और आग

लगने की घटना को जन्म दिया था। इसी बीच उसके स्वप्न-मंच का दृश्य धूल में बिखर गया, उसने अपनी आँखें खोलीं, और दूर से आती समुद्र की लहर की गड़गड़ाहट को आखिरी बार सुना। उसने अपने गाल को छुआ। वह सूखा था। फिर भी उसे ठंडी फुहार की चुभन और होठों पर नमक का स्वाद महसूस हो रहा था। वह उठा और कपड़े पहने। उसने नाई को जल्दी बुला लिया था क्योंकि उसने एक दिन पहले मेरे दादाजी को लिखा था कि वह उस दोपहर कॉम्ब्रे जा रहा है, क्योंकि उसे पता चला था कि श्रीमती डी कैम्ब्रेमर—जो पहले श्रीमती लेग्रैंडिन थीं—वहाँ कुछ दिन बिताने वाली हैं। उनकी स्मृति में ओडेट के युवा और आकर्षक चेहरे का उस ग्रामीण इलाके से जुड़ाव, जहाँ वे लंबे समय से नहीं गए थे, ने उन्हें एक ऐसा आकर्षण प्रदान किया, जिसके कारण उन्होंने अंततः कुछ समय के लिए पेरिस छोड़ने का निर्णय लिया। जिस प्रकार जीवन में विभिन्न परिवर्तन और संयोग हमें कुछ लोगों के साथ लाते हैं, वे उन समयों के साथ मेल नहीं खाते जब हम उनसे प्रेम करते हैं, बल्कि उनके साथ-साथ घटित होते हैं, प्रेम की शुरुआत से पहले भी हो सकते हैं और प्रेम के समाप्त होने के बाद भी दोहराए जा सकते हैं, उसी प्रकार जीवन में किसी ऐसे व्यक्ति की पहली झलक, जो बाद में हमें सुख प्रदान करने के लिए नियत है, हमारी दृष्टि में एक संकेत, एक चेतावनी, एक पूर्वसूचना के रूप में एक विशेष मूल्य ग्रहण करती है। इसी प्रकार स्वान अक्सर ओडेट की छवि को अपने मन में ले जाते थे, जिससे उनकी मुलाकात थिएटर में उस पहली शाम को हुई थी, जब उन्होंने उसे फिर कभी देखने का सोचा भी नहीं था—और अब उन्हें श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे के यहाँ की पार्टी याद आ रही थी, जहाँ उन्होंने जनरल डी फ्रोबरविले का परिचय श्रीमती डी कैम्ब्रेमर से कराया था। जीवन में हमारी रुचियां इतनी विविध हैं कि अक्सर ऐसा होता है कि एक ही अवसर पर, उस खुशी की नींव पड़ जाती है जो अभी अस्तित्व में

नहीं है, और साथ ही उस दुख की तीव्रता भी बढ़ जाती है जिससे हम अभी भी पीड़ित हैं। और निस्संदेह, यह बात स्वान के मन में मैडम डी सेंट-यूवर्टे के घर के अलावा कहीं और भी आ सकती थी। भला कौन कह सकता है कि अगर वह उस शाम कहीं और चला गया होता, तो उसे अन्य सुख-दुख नहीं मिलते, जो बाद में अपरिहार्य प्रतीत होते? लेकिन जो कुछ हुआ, वह उसे अपरिहार्य ही प्रतीत हुआ, और मैडम डी सेंट-यूवर्टे के घर जाने के उसके अंतिम निर्णय में उसे ईश्वरीय कृपा का अंश दिखाई देने लगा। उस शाम डी सेंट-यूवर्टे का मन, जीवन द्वारा प्रदर्शित आविष्कार की समृद्धि की प्रशंसा करने के लिए उत्सुक था, और किसी कठिन समस्या का लंबे समय तक सामना करने में असमर्थ था, जैसे कि यह पता लगाना कि वास्तव में सबसे अधिक वांछित क्या था। इसलिए वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि उस शाम उसने जो कष्ट झेले थे, और उस समय अनपेक्षित सुख, जो पहले से ही जन्म ले रहे थे, - जिनके बीच सटीक संतुलन स्थापित करना बहुत मुश्किल था - वे एक प्रकार की आवश्यकता की श्रृंखला से जुड़े हुए थे।

लेकिन जागने के एक घंटे बाद, जब वह नाई को निर्देश दे रहा था ताकि यात्रा के दौरान उसके कड़े कंघी किए हुए बाल न बिगड़ें, तो उसे एक बार फिर अपने सपने की याद आई; उसने एक बार फिर देखा, जैसे उसने उन्हें अपने पास महसूस किया था, ओडेट का पीला चेहरा, उसके पतले गाल, उसकी मुरझाई हुई नैन-नक्श, उसकी थकी हुई आँखें, वे सभी चीजें जो - स्नेह के उन लगातार आवेगों के दौरान, जिन्होंने ओडेट के लिए उसके अटूट प्रेम को उसके बारे में बनी पहली छाप की एक लंबी विस्मृति में बदल दिया था - उसने उनकी घनिष्ठता के पहले कुछ दिनों के बाद देखना बंद कर दिया था, वे दिन जिनकी याददाश्त निस्संदेह, सोते समय, उन चीजों की सटीक अनुभूति की तलाश में लौट आई थी। और उस पुरानी,

रुक-रुक कर आने वाली मूर्खता के साथ, जो अब उसके दुखी न रहने पर उसमें फिर से प्रकट हो गई थी, और साथ ही साथ उसकी नैतिकता के औसत स्तर को भी गिरा रही थी, वह अपने दिल में चिल्लाया: "यह सोचकर दुख होता है कि मैंने अपने जीवन के कई साल बर्बाद कर दिए, कि मैं मृत्यु की कामना करता रहा, कि मेरा सबसे बड़ा प्रेम उस स्त्री के लिए था जो मुझे पसंद नहीं थी, जो मेरे स्वभाव के अनुरूप नहीं थी!"

जगह के नाम

नाम

मेरी अनिद्रा की लंबी रातों के दौरान मेरे मन में जो कमरे सबसे अधिक बार आकार लेते थे, उनमें से कोई भी कॉम्ब्रे के कमरों से इतना अलग नहीं था जितना कि बालबेक के ग्रैंड होटल डे ला प्लाज में मेरा कमरा, जिसकी दीवारें रिपोलिन से धुली हुई थीं, एक ऐसे बेसिन के पॉलिश किए हुए किनारों की तरह, जिसमें पानी नीली, छिपी हुई आग से चमकता है, एक महीन, शुद्ध, नीले रंग की, नमकीन हवा से भरी हुई थीं। इस होटल के फर्नीचर का काम जिस बवेरियाई फर्नीचर निर्माता को सौंपा गया था, उसने अलग-अलग कमरों में सजावट की अपनी योजना में बदलाव किया था। जिस कमरे में मैं ठहरा था, उसकी तीन दीवारों पर कांच के सामने वाले छोटे बुककेस लगे हुए थे, जिनमें उनकी स्थिति के अनुसार, प्रकृति के किसी नियम के चलते (जिसे शायद वह ध्यान में रखना भूल गया था), समुद्र के बदलते हुए दृश्य का कोई न कोई हिस्सा प्रतिबिंबित होता था। इस तरह दीवारें समुद्री दृश्यों की एक झालर जैसी लग रही थीं, जो केवल अलमारियों की पॉलिश की हुई महोगनी की लकड़ी से ही टूट रही थीं। यह

सजावट इतनी प्रभावी थी कि पूरा कमरा उन आदर्श शयनकक्षों जैसा लग रहा था जो आजकल आवास प्रदर्शनियों में देखने को मिलते हैं। ये शयनकक्ष कलाकृतियों से सजे होते हैं, जिन्हें डिजाइनर इस तरह से सजाते हैं कि उनमें सोने वाले व्यक्ति की आंखों को सुकून मिले। इन कलाकृतियों का विषय उन घरों के परिवेश और वातावरण के साथ सामंजस्य बिठाता है जिनके लिए ये कमरे बनाए गए हैं।

फिर भी, असली बालबेक से वह दूसरा बालबेक बिल्कुल अलग था जिसका सपना मैं अक्सर तूफानी दिनों में देखता था, जब हवा इतनी तेज़ होती थी कि फ्रांस्वा, जब मुझे शैंप्स-एलिसी ले जाती थी, तो मुझे सड़क के किनारे ज़्यादा पास न चलने की चेतावनी देती थी, वरना गिरती हुई स्लेट से मेरा सिर फूट सकता था, और वह मुझे बड़े दुख भरे लहजे में अखबारों में छपी भयानक आपदाओं और जहाज़ों के डूबने की कहानियाँ सुनाती थी। मेरी सबसे बड़ी इच्छा समुद्र में तूफान देखने की थी, एक भव्य दृश्य के रूप में नहीं, बल्कि प्रकृति के सच्चे जीवन के एक क्षणिक प्रकटीकरण के रूप में; या यूँ कहें कि मेरे लिए कोई भव्य दृश्य थे ही नहीं, सिवाय उनके जिन्हें मैं जानता था कि वे मेरे मनोरंजन के लिए कृत्रिम रूप से रचे नहीं गए थे, बल्कि आवश्यक और अपरिवर्तनीय थे—जैसे कि प्राकृतिक दृश्यों की सुंदरता या कला की महान कृतियाँ। मैं जिज्ञासु नहीं था, मुझे कुछ भी जानने की प्यास नहीं थी सिवाय उसके जिसे मैं स्वयं से अधिक प्रामाणिक मानता था, जो मेरे लिए किसी महान प्रतिभा के मस्तिष्क का अंश, या प्रकृति की शक्ति या सुंदरता को, उसके पूर्णतः अपने आप में, बिना मानवीय हस्तक्षेप के प्रकट होने का सर्वोच्च गुण रखता था। जिस प्रकार उसकी मधुर आवाज, जो केवल फोनोग्राफ पर ही पुनरुत्पादित होती है, किसी व्यक्ति को उसकी माँ के खोने के दुख से कभी सांत्वना नहीं दे सकती, उसी प्रकार तूफान की यांत्रिक नकल मुझे

उतनी ही उदासीन कर देती जितनी प्रदर्शनी में जगमगाते फव्वारे। मेरी यह भी अपेक्षा थी कि यदि तूफान को पूर्णतः वास्तविक होना था, तो जिस तट से मैं उसे देख रहा था वह एक प्राकृतिक तट हो, न कि नगर पालिका द्वारा हाल ही में निर्मित तटबंध। इसके अलावा, प्रकृति, उन सभी भावनाओं के कारण जो वह मुझमें जगाती थी, मुझे मानव जाति के यांत्रिक आविष्कारों के बिल्कुल विपरीत प्रतीत होती थी। उस पर उनका प्रभाव जितना कम होता था, उतना ही वह मेरे हृदय के विस्तार के लिए स्थान प्रदान करती थी। और संयोगवश, मैंने बालबेक नाम को संरक्षित कर लिया था, जिसका उल्लेख लेग्रैंडिन ने हमें किया था, एक समुद्रतटीय स्थान के रूप में जो "उस शोकग्रस्त तट" के ठीक बीच में स्थित है, जो अपने जहाज़ों के मलबे की संख्या के लिए प्रसिद्ध है, और साल के छह महीने कोहरे और लहरों से उड़ते झाग के आवरण में लिपटा रहता है।

उन्होंने मुझसे कहा था, "वहाँ, अपने पैरों के नीचे, आपको आज भी ऐसा महसूस होता है, फिनिस्टेयर से भी कहीं ज़्यादा (भले ही अब उस पर होटल बन रहे हों, लेकिन पृथ्वी के कंकाल की उस सबसे पुरानी हड्डी को बदलने की शक्ति न रखते हुए), आपको वहाँ सचमुच फ्रांस, यूरोप, प्राचीन दुनिया के अंतिम छोर पर होने का एहसास होता है। और यह मछुआरों का अंतिम पड़ाव है, ठीक वैसे ही जैसे दुनिया की शुरुआत से रहने वाले मछुआरे, समुद्र के शाश्वत साम्राज्य - रात के कोहरे और छाया - का सामना करते हुए।" एक दिन जब मैं कॉम्ब्रे में एम. स्वान के सामने इस तट, इस बालबेक के बारे में बात कर रहा था, यह जानने की उम्मीद में कि क्या यह सबसे भयंकर तूफानों को देखने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान है, तो उन्होंने उत्तर दिया: "मुझे लगता है कि मैं बालबेक को जानता हूँ! बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में निर्मित बालबेक का गिरजाघर, जो अभी भी आधा रोमनस्क शैली में है, शायद हमारे नॉर्मन गोथिक

वास्तुकला का सबसे अनूठा उदाहरण है, और इतना असाधारण है कि इसे फारसी शैली से प्रेरित कहना उचित होगा।" और वह क्षेत्र, जो तब तक मुझे अनादि प्रकृति का एक हिस्सा मात्र प्रतीत होता था, जो भूविज्ञान की महान घटनाओं के समकालीन रहा था—और मानव इतिहास से उतना ही दूर जितना स्वयं महासागर या विशाल भालू, और उसके मछुआरों की जंगली जाति, जिनके लिए व्हेल के अलावा कोई मध्य युग नहीं था—उसे सदियों के क्रम में अचानक अपना स्थान ग्रहण करते देखना मेरे लिए अत्यंत आनंदमय था, रोमनस्क युग की अंतर्निहित चेतना के साथ, और यह जानकर कि गोथिक तिपतिया घास ने नियत समय पर उन जंगली चट्टानों को भी विविधता प्रदान कर दी थी, ठीक वैसे ही जैसे ध्रुवीय क्षेत्रों में वसंत ऋतु के आगमन पर वे नाजुक लेकिन मजबूत पौधे अपने तारे शाश्वत बर्फ में बिखेर देते हैं। और यदि गोथिक कला ने उन स्थानों और लोगों को एक ऐसा वर्गीकरण प्रदान किया, जिसकी उनमें अन्यथा कमी थी, तो उन्होंने भी बदले में उसे एक वर्गीकरण प्रदान किया। मैंने अपने मन में उन मछुआरों के जीवन की एक छवि बनाने की कोशिश की, उस डरपोक और अनपेक्षित सामाजिक मेलजोल के प्रयास की, जो उन्होंने नरक के तट पर, मृत्यु की चट्टानों के तल पर बसे एक ऊंचे टीले पर किया था; और गोथिक कला अब मुझे अधिक जीवंत प्रतीत हुई, क्योंकि इसे उन शहरों से अलग करके, जिनमें मैंने इसे तब तक कल्पना की थी, मैं देख सका कि कैसे एक विशेष उदाहरण में, जंगली चट्टानों के एक टीले पर, इसने जड़ पकड़ी और तब तक बढ़ती रही जब तक कि यह एक नुकीले शिखर में खिल नहीं गई। मुझे बालबेक में सबसे प्रसिद्ध मूर्तियों की प्रतिकृतियां देखने के लिए ले जाया गया—बालों से भरे, कुंद चेहरे वाले प्रेरित, बरामदे से वर्जिन मैरी—और इस विचार से मेरी सांसें थम गईं कि मैं स्वयं एक दिन उन्हें नमक के कोहरे की शाश्वत पृष्ठभूमि के विरुद्ध ठोस

रूप लेते हुए देख सकूंगा। उसके बाद, फरवरी की प्यारी, तूफानी रातों में, हवा - मेरे दिल में सांस भरते हुए, जिसे वह मेरे बेडरूम की चिमनी से कम हिंसक रूप से नहीं हिलाती थी, बालबेक की यात्रा की योजना को मेरे भीतर गोथिक वास्तुकला की इच्छा को समुद्र पर तूफान की इच्छा के साथ मिला देती थी।

मैं अगले ही दिन एक बजकर 22 मिनट वाली उस अच्छी और सुविधाजनक ट्रेन में बैठना चाहता था, जिसका प्रस्थान समय मैं रेलवे कंपनी के बिलों या सर्कुलर टूर के विज्ञापनों में पढ़ते ही दिल की धड़कन तेज हो जाती थी: ऐसा लगता था मानो हर दोपहर एक निश्चित बिंदु पर वह एक बेहद आकर्षक खांचा, एक रहस्यमय निशान काटती हो, जिससे गुजरते घंटे मुझे शाम की ओर, आने वाली सुबह की ओर ले जाते हों, लेकिन एक ऐसी शाम और सुबह की ओर जिसे मैं पेरिस में नहीं, बल्कि उन कस्बों में से किसी एक में देखूंगा जिनसे होकर ट्रेन गुजरती थी और जिनमें से मैं अपनी पसंद का कस्बा चुन सकता था; क्योंकि वह बायक्स, कौटांस, विट्रे, क्वेस्टैम्बर्ट, पोंटोरसन, बालबेक, लैनियन, लैम्बेल, बेनोडेट, पोंट-एवेन, क्विम्परले में रुकती थी और मुझे नामों की भरमार से भरी हुई आगे बढ़ती थी, जिससे मुझे यह तय करना मुश्किल हो जाता था कि किसे चुनूं, क्योंकि किसी एक को छोड़ना असंभव था। लेकिन अगले दिन ट्रेन का इंतज़ार किए बिना भी, अगर मेरे माता-पिता अनुमति देते, तो मैं उसी शाम जल्दी से उठकर और कपड़े पहनकर पेरिस छोड़ सकता था और बालबेक पहुँच सकता था, जब पश्चिम की ओर उग्र समुद्र पर भोर फैल रही होती, जिसकी उठती हुई लहरों से बचने के लिए मैं उस फारसी शैली के गिरजाघर में शरण लेता। लेकिन ईस्टर की छुट्टियों के नज़दीक आने पर, जब मेरे माता-पिता ने मुझे एक बार उत्तरी इटली में छुट्टियाँ बिताने देने का वादा किया, तो देखो! उन तूफ़ानों के सपनों की जगह,

जिनसे मैं पूरी तरह ग्रस्त था, और जिन्हें मैं केवल चारों ओर से आती लहरों को देखना चाहता था, जो हमेशा ऊँची उठती जाती थीं, सबसे उबड़-खाबड़ तटों पर, चट्टानों की तरह ऊबड़-खाबड़ और खड़ी गिरजाघरों के पास, जिनके मीनारों में समुद्री पक्षी विलाप कर रहे होते; अचानक, उन्हें मिटाकर, उनका सारा आकर्षण छीनकर, उन्हें अलग करके, क्योंकि वे इसके विपरीत थे और इसके प्रभाव को कमज़ोर ही कर सकते थे, मेरे मन में एक बिल्कुल विपरीत स्वप्न आ गया - सबसे रंगीन वसंत ऋतु का स्वप्न, न कि कॉम्ब्रे की वसंत ऋतु का, जो अभी भी शीत ऋतु की ठंडी चुभन से भरी थी, बल्कि उस वसंत ऋतु का, जिसने फ़िएसोले के मैदानों को लिली और एनीमोन से ढक दिया था और फ्लोरेंस को फ्रा एंजेलिको के चित्रों की तरह एक चमकदार सुनहरी पृष्ठभूमि प्रदान की थी। उस क्षण से, मुझे केवल सूर्य की रोशनी, सुगंध और रंग ही मूल्यवान लगने लगे; क्योंकि छवियों के इस परिवर्तन ने मेरी इच्छा की दिशा बदल दी थी, और - संगीत में कभी-कभी होने वाले परिवर्तनों की तरह - मेरी संवेदनशीलता के स्वर में पूर्ण परिवर्तन ला दिया था। इस प्रकार, केवल वातावरण में होने वाला परिवर्तन ही मुझमें उस परिवर्तन को उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त था, मुझे किसी ऋतु के लौटने की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं थी। अक्सर ऐसा होता है कि हमें किसी एक दिन में ऐसा क्षण मिल जाता है जो किसी दूसरे मौसम से भटककर हमें उस दूसरे मौसम में ले जाता है, हमें तुरंत अपने सामने बुला लेता है और उसके विशेष सुखों के लिए तरसा देता है, और हमारे बुने जा रहे सपनों को तोड़ देता है, मानो किसी दूसरे अध्याय से फटा हुआ यह पत्ता, अपनी बारी से पहले या बाद में, सुख के कैलेंडर में अचानक से डाल दिया गया हो। लेकिन जल्द ही ऐसा हुआ कि, उन प्राकृतिक घटनाओं की तरह जिनसे हमें आराम या स्वास्थ्य का केवल आकस्मिक और बहुत ही मामूली लाभ मिलता है, जब

तक कि विज्ञान उन पर नियंत्रण नहीं कर लेता और उन्हें अपनी इच्छा से उत्पन्न करके, हमें उनके प्रकट होने को नियंत्रित करने की शक्ति नहीं दे देता, जो संयोग के नियंत्रण से मुक्त और स्वतंत्र होती है; उसी प्रकार अटलांटिक और इटली के इन सपनों का साकार होना भी मौसमों और जलवायु के परिवर्तनों पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहा। उन्हें पुनः प्रकट करने के लिए मुझे केवल उनके नाम लेने की आवश्यकता है: बालबेक, वेनिस, फ्लोरेंस, जिनके अक्षरों में धीरे-धीरे उन स्थानों के प्रति मेरे मन में उत्पन्न हुई सारी लालसा समाहित हो गई थी जिनके लिए वे नाम अभिप्रेत थे। यहां तक कि वसंत ऋतु में भी, बालबेक के नाम पर लिखी किसी पुस्तक को देखकर ही मेरे मन में समुद्र में आने वाले तूफानों और नॉर्मन गोथिक वास्तुकला के प्रति लालसा जागृत हो जाती थी; यहां तक कि तूफानी दिन में भी फ्लोरेंस या वेनिस का नाम सुनते ही धूप, लिली के फूलों, डोगे पैलेस और सांता मारिया डेल फियोरे के प्रति लालसा जागृत हो जाती थी।

लेकिन अगर उनके नामों ने इन शहरों के बारे में मेरे मन में बनी छवि को स्थायी रूप से आत्मसात कर लिया, तो यह केवल उस छवि को रूपांतरित करके, मेरे मन में उसके पुनः प्रकट होने को अपने विशेष नियमों के अधीन करके ही संभव हुआ; और इसके परिणामस्वरूप उन्होंने इसे और अधिक सुंदर बना दिया, लेकिन साथ ही नॉर्मंडी या टस्कनी के शहरों की वास्तविकता से और भी अधिक भिन्न बना दिया, और मेरी कल्पना के मनमाने सुखों को बढ़ाकर, उस मोहभंग को और भी गहरा कर दिया जो मेरी यात्रा शुरू करने पर मेरे लिए इंतजार कर रहा था। उन्होंने पृथ्वी की सतह पर कुछ बिंदुओं के बारे में मेरे द्वारा बनाई गई धारणा को बढ़ा दिया, उन्हें और अधिक विशिष्ट और परिणामस्वरूप अधिक वास्तविक बना दिया। तब मैंने अपने लिए शहरों, परिदृश्यों, ऐतिहासिक इमारतों को

कमोबेश आकर्षक चित्रों के रूप में नहीं देखा, जो उन सभी में समान पदार्थ से इधर-उधर से काटे गए हों, बल्कि उनमें से प्रत्येक को एक अज्ञात वस्तु के रूप में देखा, जो बाकी सभी से भिन्न थी, एक ऐसी वस्तु जिसके लिए मेरी आत्मा प्यासी थी, जिसके ज्ञान से उसे लाभ होगा। नामों से नामित होने पर उनका व्यक्तित्व कितना अधिक व्यक्तिगत हो जाता था, ऐसे नाम जो केवल उन्हीं के लिए होते थे, जैसे लोगों के होते हैं। शब्द हमें चीजों के छोटे-छोटे चित्र दिखाते हैं, स्पष्ट और सामान्य, जैसे स्कूल के कमरों की दीवारों पर टंगी तस्वीरें जो बच्चों को बढ़ई की बेंच, पक्षी, चींटियों के टीले का उदाहरण देती हैं; ऐसी चीजें जो एक ही प्रकार की अन्य सभी चीजों के प्रतीक के रूप में चुनी जाती हैं। लेकिन नाम हमें - व्यक्तियों और शहरों के, जिन्हें हम व्यक्तिगत, अद्वितीय, व्यक्तियों के समान मानने के आदी हो जाते हैं - एक भ्रमित चित्र प्रस्तुत करते हैं, जो नामों से, उनकी ध्वनि की चमक या अंधकार से, उस रंग से बनता है जिसमें इसे समान रूप से चित्रित किया जाता है, जैसे उन पोस्टरों में से एक, जो पूरी तरह से नीले या पूरी तरह से लाल होते हैं, जिनमें, उनके पुनरुत्पादन में प्रयुक्त प्रक्रिया द्वारा लगाई गई सीमाओं के कारण, या डिजाइनर की सनक के कारण, न केवल आकाश और समुद्र, बल्कि जहाज, चर्च और सड़कों पर लोग भी नीले या लाल रंग के होते हैं। चार्टरेस पढ़ने के बाद, परमा नाम, उन शहरों में से एक था जहाँ मैं जाने की सबसे अधिक इच्छा रखती थी। यह नाम मुझे सघन, चमकदार, बैंगनी रंग से रंगा हुआ और कोमल प्रतीत होता था। अगर कोई परमा में किसी ऐसे घर की बात करता जहाँ मुझे ठहरना होता, तो मुझे यह सोचकर आनंद मिलता कि मैं एक सघन, चमकदार, बैंगनी रंग से रंगे हुए, कोमल घर में रहूँगी, जिसका इटली के किसी अन्य शहर के घरों से कोई संबंध नहीं होगा। ऐसा इसलिए था क्योंकि मैं इसकी कल्पना केवल परमा नाम

के उस भारी अक्षर की सहायता से ही कर सकती थी, जिसमें हवा का एक झोंका भी नहीं था, और उस नाम में मैंने स्टेंडहेलियन मिठास और बैंगनी रंग की झलक भर दी थी। और जब मैंने फ्लोरेंस के बारे में सोचा, तो वह एक चमत्कारिक रूप से संरक्षित और फूलों से भरा शहर प्रतीत हुआ, क्योंकि इसे लिली का शहर और इसके गिरजाघर को आवर लेडी ऑफ द फ्लावर कहा जाता था। बालबेक की बात करें तो, यह उन नामों में से एक था, जिसमें किसी पुराने नॉर्मन मिट्टी के बर्तन की तरह, जिस पर अभी भी उस मिट्टी का रंग बरकरार है जिससे वह बना था, किसी लंबे समय से समाप्त हो चुकी प्रथा, किसी सामंती अधिकार, किसी स्थान की पूर्वस्थिति, या भाषा के उच्चारण के किसी अप्रचलित तरीके का चित्रण दिखाई देता है, जिसने इसके असंगत अक्षरों को आकार दिया और जोड़ा था, और जिसके बारे में मुझे कभी संदेह नहीं था कि मुझे वह भाषा वहाँ बोली जाती हुई मिलेगी, यहाँ तक कि उस सराय के मालिक द्वारा भी, जिसने मेरे आगमन पर मुझे कॉफी और दूध दिया और मुझे चर्च के सामने उग्र समुद्र को देखने के लिए नीचे ले गया; जिसे मैंने किसी पुराने प्रेम उपन्यास के पात्र की तरह विवादशील, गंभीर और मध्ययुगीन रूप दिया।

यदि मेरा स्वास्थ्य निश्चित रूप से सुधर गया होता, यदि मेरे माता-पिता मुझे अनुमति दे देते, यदि वास्तव में बालबेक में रहने के लिए नहीं, तो कम से कम एक बार उस 122 ट्रेन में यात्रा करने की, ताकि मैं नॉर्मंडी या ब्रिटनी की वास्तुकला और परिदृश्यों से परिचित हो सकूँ, जिसमें मैं अक्सर कल्पना में चढ़ जाता था, तो मैं उसके सबसे सुंदर शहरों में से किसी एक पर रुकना और उतरना पसंद करता; लेकिन उनकी तुलना करना व्यर्थ ही था; कैसे कोई चुनाव कर सकता है, जैसे कि व्यक्तियों के बीच, जो एक दूसरे के समान नहीं हैं, बेयूक्स, जो अपने जंग लगे फीते के भव्य मुकुट में इतना ऊंचा है, जिसका उच्चतम बिंदु उसके दूसरे अक्षर के

पुराने सोने के प्रकाश को पकड़ता है; विट्रे, जिसका तीव्र उच्चारण उसके प्राचीन कांच को लकड़ी के हीरे के आकार से अवरुद्ध करता है; कोमल लैम्बेल, जिसकी सफेदी अंडे के छिलके के पीले से मोती जैसे भूरे रंग तक फैली हुई है; कौटांस, एक नॉर्मन गिरजाघर, जिसके अंतिम व्यंजन, समृद्ध और पीले, मक्खन के एक टावर से सुशोभित हैं; लैनियन, अपने गाँव की शांत गली में, कोच के पहिये पर बैठी मक्खी की गड़गड़ाहट और भिनभिनाहट के साथ; क्वेस्टैम्बर्ट, पोंटोरसन, हास्यास्पद रूप से मूर्ख और सरल, सफेद पंख और पीली चोंचें उन सिंचित और काव्यात्मक स्थानों की ओर जाने वाली सड़क पर बिखरी हुई; बेनोडेट, एक ऐसा नाम जो मुश्किल से ही स्थिर है, मानो नदी को अपने समुद्री शैवाल के जाल में खींचने का प्रयास कर रहा हो; पोंट-एवेन, एक नहर के हरे पानी में कांपते हुए प्रतिबिंबित, हल्के ढंग से संतुलित टोपी के पंख की बर्फीली, गुलाबी उड़ान; क्विम्परले, अधिक दृढ़ता से जुड़ा हुआ, और मध्य युग से, उन छोटी धाराओं के बीच जिनके साथ यह कलकल करता है, एक धूसर पृष्ठभूमि पर अपने मोतियों को पिरोते हुए, जैसे खिड़की पर मकड़ी के जालों के माध्यम से सूर्य की किरणों द्वारा बनाया गया पैटर्न, धूमिल चांदी के कुंद बिंदुओं में परिवर्तित हो गया हो?

ये छवियां एक और कारण से भी झूठी थीं; अर्थात्, वे अनिवार्य रूप से बहुत सरल थीं; निःसंदेह, जिस वस्तु की मेरी कल्पना आकांक्षा करती थी, जिसे मेरी इंद्रियां अपूर्ण रूप से और बिना किसी तात्कालिक आनंद के ग्रहण करती थीं, उसे मैंने नामों की सुरक्षित हिरासत में सौंप दिया था; निःसंदेह, क्योंकि मैंने वहां सपनों का एक भंडार जमा कर लिया था, इसलिए वे नाम अब मेरी इच्छाओं को आकर्षित कर रहे थे; लेकिन नाम स्वयं बहुत व्यापक नहीं होते; मैं अधिक से अधिक यही कर सकता था कि उनमें से प्रत्येक में शहर की दो या तीन मुख्य विचित्रताओं को शामिल कर

सकूं, जो बिना किसी अंतराल या विभाजन के साथ-साथ मौजूद हों; बालबेक के नाम में, जैसे समुद्र तट पर मिलने वाले पेन होल्डर में लगे आवर्धक लेंसों में, मैं फारसी शैली में बने एक गिरजाघर के चारों ओर उठती लहरों को देख सकता था। शायद, वास्तव में, इन छवियों की जबरन सरलता ही मेरे ऊपर उनके प्रभाव का एक कारण थी। एक साल जब मेरे पिता ने ईस्टर की छुट्टियों में फ्लोरेंस और वेनिस जाने का फैसला किया, तो फ्लोरेंस के नाम में उन तत्वों को शामिल करने की जगह न मिलने के कारण जो आमतौर पर एक शहर का निर्माण करते हैं, मुझे एक अलौकिक शहर को कुछ वसंतकालीन दृश्यों के प्रभाव से उभरने देना पड़ा, जिन्हें मैं मूल रूप से जियोटो की प्रतिभा मानता था। और तो और—और क्योंकि कोई नाम को समय में स्थान से कहीं अधिक विस्तारित नहीं कर सकता—जियोटो के कुछ चित्रों की तरह, जो हमें दो अलग-अलग क्षणों में एक ही व्यक्ति को अलग-अलग क्रियाओं में संलग्न दिखाते हैं, कहीं अपने बिस्तर पर लेटे हुए, कहीं अपने घोड़े पर चढ़ने वाले, फ्लोरेंस का नाम दो भागों में विभाजित हो गया। एक भाग में, एक वास्तुशिल्पीय चबूतरे के नीचे, मैंने एक भित्तिचित्र को निहारा जिस पर सुबह की धूप का एक पर्दा आंशिक रूप से फैला हुआ था, धूल भरा, तिरछा और धीरे-धीरे फैलता हुआ; दूसरी ओर (क्योंकि, चूंकि मैंने नामों को एक दुर्गम आदर्श के रूप में नहीं, बल्कि एक वास्तविक और व्यापक पदार्थ के रूप में समझा, जिसमें मैं डूबने वाला था, वह जीवन जो अभी तक जिया नहीं गया था, वह जीवन जो अक्षुण्ण और शुद्ध था और जिसे मैंने उनमें समाहित किया था, सबसे भौतिक सुखों को, सबसे सरल दृश्यों को, वही आकर्षण प्रदान करता था जो आदिम कलाकारों की रचनाओं में होता है), मैं तेजी से आगे बढ़ा—ताकि जितनी जल्दी हो सके, उस मेज पर पहुँच सकूँ जो मेरे लिए फलों और चियान्टी की एक बोतल के साथ सजी थी—

पोंटे वेकियो के उस पार जो जॉनक्विल, नरगिस और एनीमोन के फूलों से लदा था। वह (हालांकि मैं अभी भी पेरिस में था) वह था जो मैंने देखा, न कि वह जो वास्तव में मेरे चारों ओर था। यहां तक कि सबसे सरल, सबसे यथार्थवादी दृष्टिकोण से भी, जिन देशों के लिए हम तरसते हैं, किसी भी क्षण, हमारे वास्तविक जीवन में उस देश की तुलना में कहीं अधिक स्थान रखते हैं जिसमें हम वर्तमान में मौजूद होते हैं। निःसंदेह, यदि उस समय मैंने "फ्लोरेंस, पर्मा, पीसा, वेनिस जा रहा हूँ" कहते समय अपने मन में चल रही बातों पर अधिक ध्यान दिया होता, तो मुझे यह अहसास हो जाता कि जो मैं देख रहा था वह किसी भी मायने में एक शहर नहीं था, बल्कि मेरे जाने-पहचाने किसी भी चीज़ से इतना अलग था, इतना मनमोहक जितना उस मानव जाति के लिए हो सकता है जिसका पूरा जीवन सर्दियों की दोपहरों की एक श्रृंखला में बीता हो, वह अकल्पनीय चमत्कार, वसंत की एक सुबह। ये छवियाँ, अवास्तविक, स्थिर, हमेशा एक जैसी, मेरी सभी रातों और दिनों को भर देती थीं, मेरे जीवन के इस काल को इससे पहले के काल से अलग करती थीं (और एक ऐसे प्रेक्षक द्वारा आसानी से भ्रमित हो सकती थीं जो चीजों को केवल बाहर से देखता है, यानी जिसने कुछ नहीं देखा), जैसे किसी ओपेरा में एक नई धुन एक नया वातावरण बनाती है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी यदि उसने केवल गीत की रूपरेखा पढ़ी हो, और उससे भी कम यदि वह रंगमंच के बाहर रहकर केवल मिनटों को गिनता रहता। और इसके अलावा, केवल मात्रा के दृष्टिकोण से भी, हमारे जीवन में सभी दिन समान नहीं होते। दिन के अंत तक पहुँचने के लिए, मेरे जैसे थोड़े घबराए हुए स्वभाव वाले लोग, मोटर-कारों की तरह, अलग-अलग 'गति' का इस्तेमाल करते हैं। कुछ दिन पहाड़ी चढ़ाई जैसे होते हैं, जिन पर चढ़ने में अनंत समय लगता है, और कुछ दिन ढलान वाले होते हैं, जिन पर पूरी गति से, गीत

गाते हुए आगे बढ़ा जा सकता है। इस महीने के दौरान—जिसमें मैंने फ्लोरेंस, वेनिस, पीसा के इन दृश्यों को, एक धुन की तरह, बड़ी मेहनत से दोहराया, हालाँकि कभी भी पूरी तरह संतुष्ट नहीं हुआ, जिनसे मेरे भीतर एक ऐसी गहरी व्यक्तिगत इच्छा जागृत हुई जिसने मुझे किसी दूसरे व्यक्ति के लिए प्रेम की तरह गहराई से व्यक्तिगत बना दिया—मैंने कभी भी यह मानना नहीं छोड़ा कि वे एक ऐसी वास्तविकता से मेल खाते हैं जो मुझसे स्वतंत्र है, और उन्होंने मुझे एक ऐसी शानदार आशा से अवगत कराया जो आस्था के प्रारंभिक युग में, स्वर्ग में प्रवेश की पूर्व संध्या पर, एक ईसाई द्वारा संजोई जा सकती थी। इसके अलावा, मेरे इस विरोधाभास पर ध्यान दिए बिना कि मैं अपने सपनों के जादू से निर्मित उस चीज़ को अपनी इंद्रियों से देखना और स्पर्श करना चाहता था जिसे मेरी इंद्रियों ने बिल्कुल भी अनुभव नहीं किया था—यद्यपि परिणामस्वरूप, यह मेरे लिए और भी अधिक आकर्षक था, क्योंकि यह उन सभी चीजों से अलग था जिन्हें वे जानते थे—यही वह चीज़ थी जिसने मुझे इन दृश्यों की वास्तविकता की याद दिलाई, जिसने मेरी इच्छा को और भी अधिक प्रज्वलित किया क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था कि यह मेरी इच्छा की पूर्ति का संकेत दे रही है। और यद्यपि मेरे उत्साह का प्रेरक बल सौंदर्यबोध की लालसा थी, फिर भी मार्गदर्शक पुस्तकें सौंदर्यशास्त्र की पुस्तकों से कहीं अधिक सहायक थीं, और मार्गदर्शक पुस्तकों से भी कहीं अधिक, रेलवे समय-सारणी। मुझे जो बात प्रेरित करती थी, वह यह विचार था कि यह फ्लोरेंस जिसे मैं अपनी कल्पना में देख सकता था, इतना निकट होते हुए भी अगम्य, यदि वह मार्ग जो इसे मुझसे, मेरे भीतर, अलग करता है, वह नहीं है जिसे मैं पार कर सकूँ, तो भी एक चक्कर लगाकर, एक विचलन द्वारा, यदि मैं सीधे, सांसारिक मार्ग का अनुसरण करूँ, तो वहाँ पहुँचा जा सकता है। जब मैंने अपने मन में यह बात दोहराई, और जो मैं देखने जा

रहा था उसे एक विशेष महत्व दिया, कि वेनिस "जियोर्जियोन का स्कूल, टिटियन का घर, मध्य युग की घरेलू वास्तुकला का सबसे संपूर्ण संग्रहालय" था, तो मुझे वास्तव में खुशी महसूस हुई। मुझे और भी ज्यादा हैरानी तब हुई जब मैं अपनी एक सैर पर निकला और मौसम के कारण जल्दी से बाहर निकला, क्योंकि कई दिनों तक सुहावनी बसंत के बाद अचानक सर्दी का मौसम लौट आया था (ठीक वैसा ही मौसम जैसा हमें पवित्र सप्ताह में कॉम्ब्रे में हमेशा मिलता था)। सड़कों पर मैंने देखा कि शाहबलूत के पेड़, भले ही बर्फीले वातावरण में डूबे हुए थे जो पानी की धारा की तरह उनमें समाया हुआ था, फिर भी मानो समय के पाबंद मेहमानों की तरह, पार्टी के लिए सजे-धजे, और किसी भी तरह से हतोत्साहित न होते हुए, अपनी जमी हुई गांठों में उस अदम्य हरियाली को आकार दे रहे थे, तराश रहे थे और मोड़ रहे थे जिसकी निरंतर वृद्धि को ठंड की नाकाम शक्ति रोक तो सकती थी लेकिन पूरी तरह से नहीं रोक सकती थी। तभी मैंने सोचा कि पोंटे वेकियो पहले से ही जलकुंभी और एनीमोन के फूलों से लदा हुआ है, और बसंत की धूप ग्रैंड कैनाल की लहरों को इतने गहरे नीले रंग से रंग रही है, इतने शानदार पन्ना रंग से कि जब वे धुलती हैं और उन पर पड़ती हैं तो वे और भी खूबसूरत लगती हैं। टिटियन की किसी पेंटिंग के सामने रखे जाने पर भी, रंगों की भव्यता में वे उससे प्रतिस्पर्धा कर सकते थे। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब मेरे पिता, बैरोमीटर पर उंगली रखकर ठंड की शिकायत करते हुए, सबसे अच्छी ट्रेनों की तलाश करने लगे, और जब मुझे पता चला कि दोपहर के भोजन के बाद, कोयले की धूल से सनी उस प्रयोगशाला में जाकर, जहाँ जादूगर अपने परिवेश को पूरी तरह से रूपांतरित करने का काम करते थे, अगली सुबह संगमरमर और सोने के शहर में जाग सकते हैं, जहाँ "दीवार का निर्माण जैस्पर का और नींव पन्ना की थी।" इस प्रकार, वह शहर और

लिली का शहर केवल कृत्रिम दृश्य नहीं थे जिन्हें मैं अपनी कल्पना में अपनी इच्छा से बना सकता था, बल्कि वास्तव में पेरिस से एक निश्चित दूरी पर मौजूद थे, जिसे पार करना अनिवार्य था यदि मैं उन्हें पृथ्वी की सतह पर उनके नियत स्थान पर देखना चाहता था; दूसरे शब्दों में, वे पूरी तरह से वास्तविक थे। वे मेरे लिए और भी अधिक वास्तविक हो गए जब मेरे पिता ने यह कहकर: "ठीक है, तुम 20 से 29 तारीख तक वेनिस में रह सकते हो और ईस्टर की सुबह फ्लोरेंस पहुँच सकते हो," उन्हें न केवल स्थान के अमूर्त रूप से, बल्कि उस काल्पनिक समय से भी उभार दिया जिसमें हम अपनी एक नहीं, बल्कि कई यात्राओं को एक साथ रखते हैं, जो हमें बहुत अधिक थकाती नहीं हैं क्योंकि वे केवल संभावनाएं हैं, - वह समय जो खुद को इतनी प्रभावी ढंग से पुनर्निर्मित करता है कि एक शहर में बिताने के बाद दूसरे शहर में इसे फिर से बिताया जा सकता है - और उन्हें उन वास्तविक, कैलेंडर दिनों में से कुछ समर्पित कर दिया जो उन पर किए गए कार्यों की प्रामाणिकता के प्रमाण हैं, क्योंकि वे अद्वितीय दिन उपयोग में आने से समाप्त हो जाते हैं, वे वापस नहीं आते, एक बार कहीं और जीने के बाद उन्हें यहाँ फिर से नहीं जिया जा सकता; मुझे ऐसा लगा कि वह सप्ताह सोमवार से शुरू होने वाला था, जिस दिन धोबिन मेरी स्याही से सनी हुई सफेद जैकेट वापस लाने वाली थी। वे उस आदर्श समय से बाहर निकलने के कर्तव्य में व्यस्त होने की जल्दी में थे, जिस समय में वे अभी तक अस्तित्व में नहीं थे, वे दो राजसी शहर जिनके गुंबदों और मीनारों को मैं जल्द ही एक अत्यंत आकर्षक ज्यामिति के माध्यम से अपने जीवन के एक पृष्ठ पर अंकित करने में सक्षम होने वाला था। लेकिन मैं अभी भी केवल सुख के सर्वोच्च शिखर की ओर ही अग्रसर था; अंततः मैं वहाँ पहुँच गया (क्योंकि तब तक मुझे यह अहसास नहीं हुआ था कि जियोर्जियोन के भित्तिचित्रों से परावर्तित प्रकाश से लाल रंग

से रंगी हुई शोरगुल भरी सड़कों पर, जैसा कि मैंने कई बार याद दिलाने के बावजूद कल्पना की थी, वे पुरुष नहीं थे जो "समुद्र की तरह राजसी और भयानक, अपने रक्त-लाल लबादे की तहों के नीचे कांस्य की तरह चमकते कवच धारण किए हुए" अगले सप्ताह ईस्टर की पूर्व संध्या पर वेनिस में चल रहे होंगे; बल्कि मैं स्वयं वह छोटा सा व्यक्ति हो सकता हूँ जिसे सेंट मार्क के एक बड़े चित्र में, जो मुझे उधार दिया गया था, ऑपरेटर ने पोर्टिको के सामने बॉलर हैट पहने हुए चित्रित किया था), तभी मैंने अपने पिता को यह कहते सुना: "ग्रैंड कैनाल पर अभी भी काफी ठंड होगी; चाहे कुछ भी हो जाए, अपना शीतकालीन ओवरकोट और मोटा सूट पैक करना मत भूलना।" इन शब्दों से मैं एक प्रकार के परमानंद में डूब गया; जो बात मैंने तब तक असंभव समझी थी, मैंने खुद को सचमुच उन "नीलम की चट्टानों के बीच, हिंद महासागर की किसी चट्टान की तरह" प्रवेश करते हुए महसूस किया; अपनी वास्तविक शक्ति से कहीं अधिक, एक असाधारण शारीरिक बल लगाकर, मैंने अपने कमरे की हवा को, जैसे किसी बेकार खोल को उतार फेंका हो, उतार दिया और उसकी जगह उतनी ही मात्रा में वेनिस की हवा, वह समुद्री वातावरण, अवर्णनीय और अनोखा, जैसा कि मेरे सपनों में वेनिस के नाम पर बसा हुआ वातावरण होता है, भर लिया; मैं अपने भीतर एक चमत्कारिक देह-मुक्ति का अनुभव कर रहा था; इसके साथ ही उल्टी करने की वह अस्पष्ट इच्छा भी जाग उठी जो गले में खराश होने पर होती है; और मुझे इतने लगातार बुखार के कारण बिस्तर पर लेटाना पड़ा कि डॉक्टर ने न केवल मेरे माता-पिता को आश्वस्त किया कि उस वसंत में फ्लोरेंस और वेनिस की यात्रा बिल्कुल असंभव है, बल्कि उन्हें यह भी चेतावनी दी कि पूरी तरह ठीक होने के बाद भी, मुझे कम से कम एक साल तक यात्रा का कोई विचार नहीं रखना चाहिए और किसी भी ऐसी चीज से दूर रहना चाहिए जो मुझे

उत्तेजित कर सके।

और अफसोस, उन्होंने मुझे थिएटर जाने, बर्मा का संगीत सुनने से भी साफ मना कर दिया; वह महान कलाकार, जिसकी प्रतिभा का बखान बर्गोट ने किया था, शायद मुझे किसी और चीज़ से परिचित कराकर, जो शायद उतनी ही महत्वपूर्ण और सुंदर होती, मुझे फ्लोरेंस और वेनिस न जा पाने, बालबेक न जा पाने की कमी को पूरा कर सकता था। मेरे माता-पिता को मुझे हर दिन शैंप्स-एलिसी भेजने से ही संतोष करना पड़ा, एक ऐसे व्यक्ति की देखरेख में जो यह सुनिश्चित करता कि मैं थक न जाऊं; यह व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि फ्रांस्वा थी, जो मेरी चाची लियोनी की मृत्यु के बाद हमारी सेवा में आई थी। शैंप्स-एलिसी जाना मुझे असहनीय लगता था। काश बर्गोट ने अपनी किसी किताब में उस जगह का वर्णन किया होता, तो मैं निस्संदेह उसे देखने और जानने के लिए तरसता, ठीक वैसे ही जैसे कई अन्य चीजों के लिए तरसता, जिनकी एक प्रतिरूप ने पहले मेरी कल्पना में जगह बनाई थी। इससे चीजों में गर्माहट बनी रहती थी, उनमें जान आ जाती थी, उन्हें व्यक्तित्व मिलता था, और फिर मैंने वास्तविकता में उनका प्रतिरूप खोजने की कोशिश की, लेकिन इस सार्वजनिक उद्यान में ऐसा कुछ भी नहीं था जो मेरे सपनों से मेल खाता हो।

* * *

एक दिन, जब मैं लकड़ी के घोड़ों के पास, अपनी रोज़ाना की जगह से ऊब गया था, तो फ्रांस्वा मुझे सैर पर ले गई - उस सीमा के पार, जिसकी नियमित अंतराल पर जौ-चीनी बनाने वाली महिलाओं के छोटे-छोटे गढ़ पहरा देते थे - उन पड़ोसी लेकिन अनजान इलाकों में, जहाँ राहगीरों के चेहरे अजनबी थे, जहाँ बकरी की गाड़ी गुज़रती थी; फिर वह लॉरेल की झाड़ियों की ओर पीठ करके खड़ी एक कुर्सी पर अपना सामान रखने

चली गई; जब मैं उसका इंतज़ार कर रहा था, मैं चौड़े लॉन में टहल रहा था, जिसकी छोटी-छोटी कटी हुई घास धूप से पहले ही मुरझा चुकी थी, जिसके दूर छोर पर एक फव्वारे से उठती हुई एक मूर्ति थी, जिसके सामने लाल बालों वाली एक छोटी लड़की शटलकॉक से खेल रही थी; तभी रास्ते से एक और छोटी लड़की, जो अपना लबादा ओढ़ रही थी और अपने कवच को ढक रही थी, ने तीखे स्वर में कहा: "अलविदा, गिलबर्ट, मैं अब घर जा रही हूँ; मत भूलना, हम आज शाम खाने के बाद तुम्हारे पास आ रहे हैं।" गिलबर्ट नाम मेरे बहुत करीब से गुजरा, और उस लड़की की याद और भी ज़ोर से जगा दी जिसे यह नाम दे रहा था, क्योंकि यह नाम केवल उसका ज़िक्र नहीं कर रहा था, जैसे कोई किसी पुरुष की अनुपस्थिति में उसके बारे में बात करता है, बल्कि सीधे उसे संबोधित कर रहा था; यह मेरे इतने करीब से गुजरा, मानो क्रियाशील अवस्था में, एक ऐसी शक्ति के साथ जो इसके प्रक्षेप पथ के वक्र के साथ और अपने लक्ष्य के निकट आने पर बढ़ती गई;—मैं महसूस कर सकता था कि यह अपने पीछे उस व्यक्ति का ज्ञान, वह छाप छोड़ रहा था जिसे यह संबोधित था, जो मेरा नहीं बल्कि उस सहेली का था जिसने उसे पुकारा था, वह सब कुछ जो, जब वह शब्द बोल रही थी, वह कमोबेश स्पष्ट रूप से अपनी स्मृति में संजोए हुए थी, उनकी दैनिक घनिष्ठता की, उनके एक-दूसरे से मिलने की, उस अज्ञात अस्तित्व की जो मेरे लिए और भी अधिक दुर्गम, और भी अधिक पीड़ादायक था, क्योंकि इसके विपरीत, मैं इस प्रसन्न लड़की के लिए इतना परिचित, इतना आज्ञाकारी था जिसने अपने संदेश को मेरे पास से गुजरने दिया, बिना मुझे उसकी सतह को भेदने दिए, जिसने इसे हल्के-फुल्के ढंग से हवा में उछाल दिया: उस स्वादिष्ट इत्र को वातावरण में तैरने दिया जो उस संदेश ने मैडम के कुछ अदृश्य बिंदुओं से उन्हें सटीक रूप से छूकर निकाला था। आने वाली शाम से स्वान का

जीवन, जैसा कि उसके घर पर रात के खाने के बाद होगा, बच्चों और उनकी आयाओं के बीच से अपने दिव्य मार्ग पर, एक छोटे बादल का रूप धारण करता हुआ, अत्यंत सुंदर रंगों वाला, उस बादल की तरह जो पौसिन के बगीचों में से एक के ऊपर मंडराता हुआ, ओपेरा में एक बादल की तरह सूक्ष्म रूप से प्रतिबिंबित होता है, रथों और घोड़ों से भरा हुआ, देवताओं के जीवन का कुछ आभास; अंत में, उस उबड़-खाबड़ घास पर, जहाँ वह खड़ी थी (एक साथ सूखी घास का एक टुकड़ा और दोपहर के समय उस सुंदर खिलाड़ी का एक क्षण, जो तब तक शटलकॉक मारती और पकड़ती रही जब तक कि टोपी में नीले पंख वाली एक गवर्नेंस ने उसे वहाँ से नहीं बुलाया), हेलियोट्रोप के रंग की एक अद्भुत छोटी सी रोशनी की पट्टी घास पर कालीन की तरह फैल गई, जिस पर मैं उदास और बेपरवाह होकर धीरे-धीरे इधर-उधर चलने से नहीं थक रहा था, जबकि फ्रांस्वा चिल्ला रही थी: "चलो, अपना कोट बंद करो, देखो, और चलो चलते हैं!" और मैंने पहली बार ध्यान दिया कि उसकी भाषा कितनी सरल थी, और अफसोस, उसकी टोपी में नीला पंख नहीं था।

क्या वह फिर से चैंप्स-एलिसी आएगी? अगले दिन वह वहाँ नहीं थी; लेकिन मैंने उसे अगले दिनों में देखा; मैं अपना सारा समय उस जगह के आसपास घूमते हुए बिताता था जहाँ वह अपने दोस्तों के साथ खेल रही होती थी, इस हद तक कि एक बार, जब उन्हें पता चला कि वे कैदी की टुकड़ी बनाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, तो उसने उनमें से एक को मेरे पास भेजा और पूछा कि क्या मैं उनकी टुकड़ी पूरी करना चाहूँगा, और उस दिन से मैं उसके आने पर उसके साथ खेलने लगा। लेकिन ऐसा हर दिन नहीं होता था; ऐसे भी दिन थे जब वह अपने पाठों, अपनी धार्मिक शिक्षाओं, दोपहर के भोजन की पार्टी, और उस पूरे जीवन के कारण नहीं आ पाती थी, जो मेरे जीवन से अलग था, और जिसे केवल दो बार, गिल्बर्ट के नाम

से संक्षेपित किया गया था, मैंने अपने बहुत करीब से गुजरते हुए महसूस किया था, कॉम्ब्रे के पास नागफनी की गली में और चैंप्स-एलिसी के मैदान पर। ऐसे दिनों में वह हमें पहले ही बता देती थी कि हम उसे नहीं देख पाएंगे; अगर उसकी पढ़ाई की वजह से होता, तो वह कहती: "यह बहुत थकाने वाला है, मैं कल नहीं आ पाऊँगी; तुम सब मेरे बिना यहाँ खूब मज़े करोगे," उसके लहजे में थोड़ी उदासी होती, जिससे मुझे कुछ हद तक तसल्ली मिल जाती; दूसरी तरफ, अगर उसे किसी पार्टी में बुलाया गया होता, और मुझे यह पता न होता और मैं उससे पूछती कि क्या वह हमारे साथ खेलने आ रही है, तो वह जवाब देती: "बिल्कुल नहीं! मुझे उम्मीद है कि मम्मी मुझे मेरी दोस्त के घर जाने देंगी।" लेकिन इन दिनों मुझे कम से कम इतना तो पता होता था कि मैं उसे नहीं देख पाऊँगी, जबकि दूसरे दिनों में, बिना किसी सूचना के, उसकी माँ उसे घुमाने ले जाती, या कुछ ऐसा ही करती, और अगले दिन वह कहती: "ओह, हाँ! मैं मम्मी के साथ बाहर गई थी," मानो यह दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात हो, न कि किसी और के लिए सबसे बड़ा दुर्भाग्य। ऐसे भी दिन होते थे जब मौसम खराब होता था और उसकी देखभाल करने वाली, खुद के कारण बारिश से डरकर, गिलबर्ट को चैंप्स-एलिसी नहीं लाती थी।

और इसलिए, अगर आसमान में संदेह होता, तो मैं सुबह से ही उससे सवाल करना बंद नहीं करती, सारे शकुनों पर गौर करती। अगर मैं सामने वाली महिला को खिड़की के अंदर टोपी पहनते देखती, तो मैं मन ही मन सोचती: "वह महिला बाहर जा रही है; तो मौसम ऐसा होना चाहिए जिसमें बाहर जाया जा सके। गिल्बर्ट भी उस महिला की तरह क्यों न जाए?" लेकिन दिन ढलता चला गया। मेरी माँ ने कहा कि शायद फिर से आसमान साफ हो जाए, एक बार धूप निकलना ही काफी होगा, लेकिन ज़्यादा संभावना बारिश की है; और अगर बारिश हुई, तो चैंप्स-एलिसी

जाने का क्या फायदा? और इसलिए, नाश्ते के समय से ही, मेरी चिंतित निगाहें अनिश्चित, बादलों से घिरे आसमान से हटी नहीं। अंधेरा छाया रहा: खिड़की के बाहर, बालकनी धूसर थी। अचानक, उसके उदास पत्थर पर, मुझे वास्तव में कोई कम नकारात्मक रंग नहीं दिखा, बल्कि मुझे ऐसा लगा जैसे कोई कम नकारात्मक रंग की ओर प्रयास कर रहा हो, एक हिचकिचाती किरण की धड़कन जो अपना प्रकाश बिखेरने के लिए संघर्ष कर रही हो। कुछ ही क्षणों में बालकनी भोर के समय स्थिर जल की तरह फीकी और चमकदार हो गई, और उसकी रेलिंग के लोहे के काम से हजारों परछाइयाँ उस पर आकर टिक गईं। हवा के एक झोंके ने उन्हें बिखेर दिया; पत्थर फिर से गहरा हो गया, लेकिन पालतू प्राणियों की तरह, वे लौट आए; वे धीरे-धीरे, अगोचर रूप से, हल्के होने लगे, और संगीत में, किसी प्रस्तावना के अंत में, एक ही स्वर को चरम फोर्टिसिमो तक ले जाने वाले उन निरंतर बढ़ते स्वरों में से एक के साथ, जो इसे सभी मध्यवर्ती चरणों से तेजी से गुजारते हैं, मैंने इसे उन उत्तम दिनों के स्थिर, अपरिवर्तनीय सुनहरे रंग तक पहुँचते देखा, जिस पर रेलिंग के गढ़े हुए लोहे की तेज कटी हुई छायाएँ एक चंचल वनस्पति की तरह काले रंग में रेखांकित थीं, उनके छोटे से छोटे विवरणों के चित्रण में इतनी बारीकी थी जो एक जानबूझकर किए गए प्रयास, एक कलाकार की संतुष्टि को दर्शाती प्रतीत होती थी, और उनके गंभीर और सुखी समूह की शांति में इतनी राहत, इतनी मखमली चमक थी कि वास्तव में धूप की उस झील पर प्रतिबिंबित होने वाली वे बड़ी और पत्तीदार छायाएँ जानती थीं कि वे सुख और मन की शांति की प्रतिज्ञा थीं।

छोटी, मुरझाती हुई लता, चढ़ने वाली, क्षणभंगुर वनस्पति, कई लोगों के मन में दीवारों पर रेंगने या खिड़कियों को सजाने वाली सभी लताओं में सबसे रंगहीन, सबसे निराशाजनक; मेरे लिए उन सभी में सबसे प्यारी,

उस दिन से जब यह हमारी बालकनी पर प्रकट हुई, मानो गिलबर्ट की उपस्थिति की परछाई हो, जो शायद पहले से ही चैंप्स-एलिसी में थी, और जैसे ही मैं वहाँ पहुँचता, वह मेरा स्वागत करती: "चलो तुरंत शुरू करते हैं। तुम मेरे साथ हो।" नाजुक, एक साँस में बह जाने वाली, लेकिन साथ ही सामंजस्य में, मौसम के साथ नहीं, समय के साथ; उस तात्कालिक सुख का वादा जिसे दिन नकार देगा या पूरा करेगा, और इस प्रकार एक सर्वोपरि तात्कालिक सुख का, प्रेम करने और प्रेम पाने का सुख; पत्थर पर काई से भी अधिक कोमल, अधिक गर्म; जीवित, सूर्य की एक किरण जो इसके जन्म के लिए, और आनंद के जन्म के लिए पर्याप्त है, यहाँ तक कि सर्दियों के बीचोंबीच भी।

और उन दिनों जब सारी वनस्पति गायब हो चुकी थी, जब पुराने पेड़ों के तनों को ढकने वाली हरी चमड़े की बढ़िया जैकेट बर्फ के नीचे दब गई थीं; जब बर्फ गिरना बंद हो गया था, लेकिन आसमान इतना बादलों से घिरा था कि मुझे गिलबर्ट के बाहर आने की कोई उम्मीद नहीं थी, तब अचानक —मेरी माँ को यह कहने की प्रेरणा मिली: "देखो, अब मौसम बहुत अच्छा है; मुझे लगता है कि तुम शायद शैंप्स-एलिसी जाने की कोशिश कर सकती हो।"—बालकनी को ढकने वाली बर्फ की चादर पर सूरज प्रकट हुआ और सुनहरे रंग की सिलाई कर रहा था, साथ ही गहरे साये के कढ़ाईदार धब्बे भी। उस दिन हमें वहाँ कोई नहीं मिला, या फिर एक अकेली लड़की, जो जाने ही वाली थी, जिसने मुझे यकीन दिलाया कि गिलबर्ट नहीं आ रही है। प्रभावशाली लेकिन प्रेरणाहीन गवर्नेंसों के समूह द्वारा छोड़ी गई कुर्सियाँ खाली पड़ी थीं। घास के पास ही एक अधेड़ उम्र की महिला बैठी थी, जो हर मौसम में आती थी, हमेशा एक ही तरह के भव्य और गंभीर परिधानों में। उस समय, अगर मेरे बस में होता, तो मैं उससे मिलने के लिए अपने जीवन के सारे बड़े अवसर कुर्बान कर देता।

गिलबर्टे रोज़ उससे बात करने जाती थी; वह गिलबर्टे से अपनी "प्यारी माँ" के बारे में पूछती रहती थी और मुझे यह बात समझ में आई कि अगर मैं उसे जानती, तो गिलबर्टे के लिए मैं बिल्कुल अलग होती, कोई ऐसी जो उसके माता-पिता के परिवार के लोगों को जानती। जब उसके पोते-पोतियाँ थोड़ी दूरी पर खेलते, तो वह बैठकर 'डेबेट्स' पढ़ती, जिसे वह "मेरी पुरानी 'डेबेट्स'!" कहती थी। वह बड़े ही शाही अंदाज़ में पुलिस सार्जेंट या कुर्सियाँ रखने वाली महिला के बारे में कहती, "मेरा पुराना दोस्त पुलिस सार्जेंट," या "कुर्सी रखने वाला और मैं, जो पुराने दोस्त हैं।" फ्रांस्वा को ठंड के कारण खड़े रहना मुश्किल लग रहा था, इसलिए हम पोंट डे ला कॉनकॉर्ड तक पैदल गए ताकि सीन नदी को जमते हुए देख सकें। नदी पर हर कोई, यहाँ तक कि बच्चे भी, निडर होकर चल रहे थे, मानो किसी विशाल व्हेल पर फंसे हों, असहाय हों और कटने के कगार पर हों। हम शैंप्स-एलिसी लौट आए; स्थिर लकड़ी के घोड़ों और सफेद लॉन के बीच, बर्फ़ हटाकर बनाए गए काले रास्तों के जाल में फँसे होने के कारण मैं दुख से बीमार पड़ रहा था, जबकि उसके ऊपर बनी मूर्ति के हाथ में एक लंबी लटकती हुई बर्फीली डंडी थी जो उसके हावभाव को समझाती प्रतीत हो रही थी। खुद उस बूढ़ी औरत ने अपनी किताबें समेटकर, पास से गुजर रही एक आया से समय पूछा और "आपकी कृपा के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद!" कहकर उसका आभार व्यक्त किया। फिर उसने सड़क साफ करने वाले से अपने पोते-पोतियों को आने के लिए कहने का अनुरोध किया, क्योंकि उसे ठंड लग रही थी, और कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद। आपको इतनी परेशानी देने के लिए क्षमा करें!" अचानक आकाश दो भागों में फट गया: मुक्केबाज़ी और घोड़ों के बीच, खुलते क्षितिज के सामने, मैंने अभी-अभी एक चमत्कारिक संकेत की तरह मैडमोज़ेल का नीला पंख देखा था। और अब गिलबर्ट पूरी गति से मेरी

ओर दौड़ रही थी, फर से सजी टोपी के नीचे चमकती और गुलाबी, ठंड से, देर होने से, और खेल के लिए उसकी उत्सुकता से उत्साहित; मेरे पास पहुँचने से कुछ ही क्षण पहले, वह बर्फ के एक टुकड़े पर फिसल गई और, शायद अपना संतुलन वापस पाने के लिए, या इसलिए कि उसे यह सुंदर लगा, या फिर स्केटिंग करने का नाटक करते हुए, उसने मुस्कुराते हुए बाहें फैलाकर मेरी ओर बढ़ी, मानो मुझे गले लगाने के लिए। "वाह! वाह! यह तो शानदार है; 'बेहतरीन' कहना चाहिए, बिल्कुल आपकी तरह —'शानदार', शायद कहना चाहिए, लेकिन मैं तो सौ-एक साल पुरानी, पारंपरिक महिला हूँ," उस महिला ने कहा, और मौसम से डरे बिना, शैंप्स-एलिसी की खामोश भीड़ की ओर से गिलबर्ट के आने के लिए धन्यवाद दिया। "आप मेरी तरह हैं, हर कीमत पर हमारे पुराने शैंप्स-एलिसी के प्रति वफादार; हम दोनों साहसी आत्माएँ हैं! आप यकीन नहीं करेंगी, अगर मैं आपसे कहूँ कि मैं उन्हें इस हालत में भी प्यार करती हूँ। यह बर्फ (मुझे पता है, आप मुझ पर हँसेंगी), मुझे तो अर्मीन की याद दिलाती है!" और वह बूढ़ी महिला खुद भी हँसने लगी।

इन दिनों में से पहला दिन—जिस पर बर्फ, उन शक्तियों का प्रतीक जो मुझे गिल्बर्ट के दर्शन से वंचित करने में सक्षम थीं, ने एक विरह दिवस की उदासी, लगभग एक विदाई दिवस का रूप धारण कर लिया, क्योंकि इसने हमारे एकमात्र मिलन स्थल के बाहरी स्वरूप को बदल दिया और उसके उपयोग को लगभग वर्जित कर दिया, जो अब बदल गया था, मानो धूल की चादरों से ढका हुआ था—फिर भी, उस दिन ने मेरे प्रेम की प्रगति में एक महत्वपूर्ण पड़ाव को चिह्नित किया, क्योंकि एक अर्थ में, यह पहला दुख था जो उसने मेरे साथ साझा किया। हमारी छोटी सी मंडली में केवल हम दोनों ही थे, और इस प्रकार उसके साथ अकेले रहना न केवल अंतरंगता की शुरुआत जैसा था, बल्कि उसकी ओर से भी—जैसे कि वह

केवल मुझे प्रसन्न करने के लिए और ऐसे मौसम में वहाँ आई हो—यह मुझे उतना ही मार्मिक लगा जैसे कि किसी पार्टी में आमंत्रित होने के बावजूद, उसने शैंप्स-एलिसी में मेरे पास आने के लिए उस निमंत्रण को छोड़ दिया हो; मुझे उस दोस्ती की जीवंतता और भविष्य पर और भी भरोसा हो गया, जो हमारे आस-पास की सुस्ती, एकांत और क्षय के बीच भी इतनी जीवंत बनी रह सकती थी; और जब वह मेरे गले पर बर्फ के गोले गिरा रही थी, तो मैं प्यार से मुस्कुराया। मुझे लगा जैसे वह मुझे इस नई, इस बर्फीली भूमि में अपने साथी के रूप में सहन करके मेरे प्रति अपना स्नेह दिखा रही थी, और बुरे समय में भी मेरे प्रति अपनी वफादारी बनाए रख रही थी। थोड़ी देर बाद, एक-एक करके, शर्मीली चिड़ियों की तरह, उसके दोस्त बर्फ में काले होकर आ गए। हम खेलने के लिए तैयार हो गए और, चूंकि यह दिन जो इतनी उदासी से शुरू हुआ था, खुशी में समाप्त होना तय था, इसलिए खेल शुरू होने से पहले, मैं उस तीखी आवाज वाली दोस्त के पास गया, जिसे मैंने पहले दिन गिलबर्टे को नाम से पुकारते हुए सुना था, उसने मुझसे कहा: "नहीं, नहीं, मुझे यकीन है कि तुम गिलबर्टे के शिविर में रहना ज्यादा पसंद करोगे; वैसे भी, देखो, वह तुम्हें इशारा कर रही है।" दरअसल, वह मुझे बर्फीले मैदान को पार करके अपने शिविर में आने के लिए बुला रही थी, 'मैदान पर कब्जा करने' के लिए, जिसे सूरज की गुलाबी चमक और पुराने और घिसे हुए ब्रोकेड की धात्विक चमक ने सोने के कपड़े के मैदान में बदल दिया था।

जिस दिन की शुरुआत मैंने इतनी आशंकाओं के साथ की थी, संयोगवश, वह उन कुछ दिनों में से एक था जिस दिन मैं अत्यधिक दुखी नहीं था।

हालांकि अब मैं गिलबर्टे को देखे बिना एक भी दिन न गुजारने के अलावा और कुछ नहीं सोचती थी (इतना कि एक बार जब मेरी दादी रात के खाने तक घर नहीं आईं, तो मैं इस सहज विचार को रोक नहीं पाई कि अगर

सड़क पर उनका एक्सीडेंट हो गया होता और उनकी मौत हो गई होती, तो मुझे कुछ समय के लिए चैंप्स-एलिसी में खेलने की अनुमति नहीं मिलती; जब कोई प्यार में होता है तो उसके मन में किसी के लिए कोई प्यार नहीं रह जाता), फिर भी उनके साथ बिताए वे पल, जिनका मैंने पूरी रात और सुबह बेसब्री से इंतजार किया था, जिनके लिए मैं उत्साह से कांप रही थी, जिनके लिए मैं दुनिया की हर चीज कुर्बान कर देती, किसी भी तरह से सुखद पल नहीं थे; मैं यह अच्छी तरह जानती थी, क्योंकि वे मेरे जीवन के एकमात्र ऐसे पल थे जिन पर मैंने पूरी एकाग्रता और ध्यान केंद्रित किया था, और फिर भी मुझे उनमें जरा भी आनंद नहीं मिला। गिलबर्ट से दूर रहने के हर पल में, मैं उसे देखने के लिए तड़पता रहता था, क्योंकि लगातार उसकी एक मानसिक छवि बनाने की कोशिश करने के बावजूद, अंत में मैं ऐसा नहीं कर पाया था, और मुझे ठीक से पता नहीं था कि मेरा प्यार किससे मेल खाता है। इसके अलावा, उसने मुझे कभी नहीं बताया था कि वह मुझसे प्यार करती है। बल्कि इसके विपरीत, वह अक्सर शेखी बघारती थी कि वह दूसरे छोटे लड़कों को जानती है जिन्हें वह मुझसे ज़्यादा पसंद करती है, कि मैं एक अच्छा साथी हूँ, जिसके साथ वह हमेशा खेलने को तैयार रहती है, हालाँकि मैं बहुत ही खोया-खोया रहता था, खेल पर उतना ध्यान नहीं देता था। इतना ही नहीं, उसने अक्सर मेरे प्रति स्पष्ट रूप से ठंडी भावनाएँ दिखाई थीं, जिससे मेरा यह विश्वास डगमगा सकता था कि मैं उसके लिए बाकियों से अलग हूँ, अगर यह विश्वास गिलबर्ट के मेरे प्रति प्रेम पर आधारित होता, न कि मेरे उसके प्रति प्रेम पर, जिसने मेरे गिलबर्ट के बारे में सोचने के तरीके पर निर्भर रहकर संदेह के हमलों के प्रति अपने प्रतिरोध को मजबूत किया था। लेकिन उसके प्रति अपने भावों को मैंने कभी शब्दों में व्यक्त करने का साहस नहीं किया था। बेशक, मैं अपनी अभ्यास पुस्तिकाओं के हर पृष्ठ

पर उसका नाम और पता बार-बार लिखता था, लेकिन उन धुंधली रेखाओं को देखकर, जिन्हें मैं बिना उसे मेरे बारे में सोचने दिए खींच सकता था, मैं निराश हो जाता था, क्योंकि वे रेखाएँ मुझे गिलबर्ट के बारे में नहीं, बल्कि मेरी अपनी इच्छा के बारे में बताती थीं, जिसे वे अपने असली रूप में दिखाती थीं - एक विशुद्ध निजी, अवास्तविक, उबाऊ और निष्प्रभावी इच्छा के रूप में। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि हम दोनों, गिलबर्ट और मैं, एक-दूसरे से मिलें और अपने प्रेम का इज़हार करने का अवसर प्राप्त करें, जो तब तक आधिकारिक रूप से (कहने को) शुरू नहीं हुआ था। निस्संदेह, उसे देखने के लिए मेरी इतनी बेचैनी के विभिन्न कारण एक समझदार व्यक्ति को इतने ज़रूरी नहीं लगते। जैसे-जैसे जीवन आगे बढ़ता है, हम अपने सुखों की संस्कृति में इतनी निपुणता प्राप्त कर लेते हैं कि हम किसी स्त्री के बारे में सोचने मात्र से ही संतुष्ट हो जाते हैं, जैसा कि मैं गिल्बर्ट के बारे में सोच रहा था, बिना यह जाने कि छवि वास्तविकता से मेल खाती है या नहीं, और उसके प्रेम के सुख में ही संतुष्ट हो जाते हैं, बिना यह सुनिश्चित किए कि वह भी हमसे प्रेम करती है; या फिर हम उसके प्रति अपने प्रेम को प्रकट करने के सुख का त्याग कर देते हैं, ताकि उसके हमारे प्रति प्रेम को संरक्षित और बढ़ा सकें, ठीक वैसे ही जैसे जापानी माली एक परिपूर्ण फूल पाने के लिए बाकी सभी फूलों का त्याग कर देते हैं। लेकिन जिस समय मैं गिल्बर्ट के प्रेम में था, तब भी मेरा मानना था कि प्रेम वास्तव में हमारे अलावा भी विद्यमान है; कि वह हमें हमारे मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने की अनुमति देते हुए, हमें अपने आशीर्वाद इस क्रम में प्रदान करता है जिसमें हम जरा सा भी परिवर्तन करने के लिए स्वतंत्र नहीं होते। मुझे ऐसा लगा कि यदि मैंने अपनी पहल पर, स्वीकारोक्ति की मिठास के स्थान पर उदासीनता का ढोंग किया होता, तो मैं न केवल अपने आप को उन सुखों में से एक से

वंचित कर रहा होता जिनका मैंने अक्सर सपना देखा था, बल्कि मैं अपनी स्वतंत्र इच्छा से एक कृत्रिम और मूल्यहीन प्रेम गढ़ रहा होता, जिसका सत्य से कोई संबंध नहीं होता, और इस प्रकार मैं सत्य के रहस्यमय और पूर्वनिर्धारित मार्गों का अनुसरण करने से इनकार कर रहा होता।

लेकिन जब मैं चैंप्स-एलिसी पहुंचा, और जैसा कि पहली नजर में लगा, मैं अपने प्यार का सामना करने की स्थिति में था, ताकि उसमें आवश्यक बदलाव ला सकूं, उसके जीवंत और स्वतंत्र कारण के साथ—जैसे ही मैं उस गिल्बर्ट स्वान के सामने आया, जिसे देखकर मेरी थकी हुई स्मृति की खोई हुई और फिर से न मिल पाने वाली छवियां फिर से जीवित हो उठेंगी, उस गिल्बर्ट स्वान की छवि जिसके साथ मैं एक दिन पहले खेल रहा था, और जिसे मैंने अभी-अभी अभिवादन किया था, और फिर एक अंधी सहज प्रवृत्ति से पहचान लिया था, ठीक वैसे ही जैसे चलते समय हम बिना सोचे-समझे एक पैर दूसरे के आगे रख देते हैं, तब अचानक ऐसा लगा जैसे वह और वह छोटी लड़की जिसने मेरे सपनों को प्रेरित किया था, दो अलग-अलग व्यक्ति हों। उदाहरण के लिए, अगर मैंने रात भर अपनी स्मृति में गोल-मटोल और गुलाबी गालों के ऊपर दो चमकती हुई आँखें संजोए रखी होतीं, तो गिलबर्ट का चेहरा अब मुझे (और ज़ोर देकर) कुछ ऐसा दिखाता जो मुझे स्पष्ट रूप से याद नहीं था, उसकी नाक का एक विशेष तीखापन और लंबापन जो उसकी कुछ अन्य विशेषताओं के साथ तुरंत जुड़कर उन विशेषताओं का महत्व ग्रहण कर लेता जो प्राकृतिक इतिहास में किसी प्रजाति को परिभाषित करने के लिए उपयोग की जाती हैं, और उसे तीखे चेहरे वाली छोटी बच्ची में बदल देता। जब मैं इस लंबे समय से प्रतीक्षित क्षण का लाभ उठाने के लिए खुद को तैयार कर रहा था, और गिलबर्ट की उस छवि के प्रति खुद को समर्पित कर रहा था जिसे मैंने पहले से तैयार किया था लेकिन अब मेरे दिमाग में नहीं आ

रही थी, इस हद तक कि मैं अकेले बिताए जाने वाले लंबे घंटों के दौरान यह सुनिश्चित कर सकूँ कि वास्तव में यह वही है जिसके बारे में मैं सोच रहा था, कि वास्तव में यह उसके लिए मेरा प्यार था जिसे मैं धीरे-धीरे बढ़ा रहा था, जैसे कोई किताब लिखते समय बढ़ती है, तभी उसने मुझे एक गेंद फेंकी; और, उस आदर्शवादी दार्शनिक की तरह जिसका शरीर उस बाहरी दुनिया की वास्तविकता को ध्यान में रखता है जिस पर उसकी बुद्धि विश्वास करने से इनकार करती है, वही स्व जिसने मुझे उसे पहचानने से पहले ही उसे प्रणाम करने के लिए प्रेरित किया था, अब मुझे उसके द्वारा उछाली गई गेंद को पकड़ने के लिए उकसा रहा था (मानो वह कोई साथी हो जिसके साथ मैं खेलने आया हूँ, न कि कोई बहन-आत्मा जिसके साथ मेरी आत्मा बंधी हुई है), मुझे शिष्टाचारवश, जब तक कि उसे जाना न पड़ा, उससे हज़ारो विनम्र और तुच्छ बातें करने के लिए मजबूर कर रहा था, और इस प्रकार मुझे उस मौन को बनाए रखने से रोक रहा था जिसमें मैं अंततः उस अपरिहार्य, अनछुए विचार को पा सकता था, और उन शब्दों को बोलने से भी रोक रहा था जो हमारे प्रेम के मार्ग में वह निश्चित प्रगति ला सकते थे जिस पर मैं हमेशा अगली दोपहर के लिए ही निर्भर रहने को बाध्य था। हालाँकि, कभी-कभी कोई विकास भी होता था। एक दिन हम गिलबर्ट के साथ अपने खास दुकानदार के स्टॉल पर गए, जो हमेशा हमारे साथ बहुत अच्छा व्यवहार करती थी, क्योंकि एम. स्वान उसी से अपना जिंजरब्रेड मंगवाते थे। स्वास्थ्य कारणों से (उन्हें एक विशेष प्रकार का एक्जिमा और कब्ज की बीमारी थी), वे बहुत सारा जिंजरब्रेड खाते थे। गिलबर्ट ने हंसते हुए मुझे दो छोटे लड़कों की ओर इशारा किया जो बच्चों की कहानियों में वर्णित नन्हे कलाकार और नन्हे प्रकृतिवादी जैसे थे। उनमें से एक ने लाल रॉक स्टोन लेने से मना कर दिया क्योंकि उसे बैंगनी रंग पसंद था, जबकि दूसरे ने आंखों में आंसू लिए उस बेर को लेने से इनकार

कर दिया जो उसकी नर्स उसके लिए खरीद रही थी, क्योंकि अंत में उसने भावुक स्वर में कहा: "मुझे दूसरा बेर चाहिए; उसमें कीड़ा है!" मैंने दो हाफ पेनी के कंचे खरीदे। मैंने प्रशंसा भरी निगाहों से एक कटोरे में अकेले रखे उन चमकदार अगेट कंचों को देखा, जो मुझे कीमती लगे क्योंकि वे छोटी बच्चियों की तरह सुंदर और मुस्कुराते हुए थे, और क्योंकि उनकी कीमत पांच पेंस प्रति कंचा थी। गिलबर्टे, जिसे मुझसे कहीं ज़्यादा जेब खर्च मिलता था, ने मुझसे पूछा कि मुझे सबसे सुंदर कौन सी लगती है। वे इतनी पारदर्शी, इतनी तरल थीं मानो जीवन ही हो। मैं नहीं चाहती थी कि वह उनमें से एक भी कुर्बान करे। मैं चाहती थी कि वह उन्हें खरीद सके, उन सबको आज़ाद कर सके। फिर भी, मैंने एक ऐसी आँख की ओर इशारा किया जिसका रंग उसकी आँखों जैसा था। गिलबर्टे ने उसे लिया, उसे घुमाया जब तक कि वह सोने की किरण की तरह चमकने लगी, उसे प्यार से सहलाया, उसकी कीमत चुकाई, लेकिन तुरंत ही अपनी उस आँख को मुझे सौंपते हुए कहा: "इसे ले लो; यह तुम्हारे लिए है, मैं इसे तुम्हें देती हूँ, इसे अपने पास रखो ताकि तुम्हें मेरी याद आती रहे।"

एक बार, क्लासिक नाटकों में बर्मा को सुनने की तीव्र इच्छा के कारण, मैंने उनसे पूछा था कि क्या उनके पास उस पुस्तिका की एक प्रति है जिसमें बर्गोट ने रेसीन के बारे में लिखा था और जो अब छपाई में नहीं है। उन्होंने मुझसे उसका सटीक शीर्षक बताने को कहा था, और उसी शाम मैंने उन्हें एक छोटा सा टेलीग्राम भेजा, जिसके लिफाफे पर मैंने गिलबर्ट स्वान का नाम लिखा था, जिसे मैं अक्सर अपनी अभ्यास पुस्तिकाओं में ट्रेस करती थी। अगले दिन वह गुलाबी रिबन से बंधे और सफेद मोम से सील किए हुए एक पार्सल में वह पुस्तिका लेकर आईं, जिसकी एक प्रति उन्हें मिल गई थी। "देखो, यही तो तुमने मुझसे माँगा था," उन्होंने अपने मफ से मेरा भेजा हुआ टेलीग्राम निकालते हुए कहा। लेकिन उस संदेश

पर लिखे पते में—जो कल तक कुछ भी नहीं था, महज एक 'छोटा नीला' पत्र था जिसे मैंने लिखा था, और एक संदेशवाहक द्वारा गिल्बर्ट के दरबान को सौंपे जाने और एक नौकर द्वारा उसे उसके कमरे में ले जाने के बाद, वह मूल्यहीन या विशिष्ट न रह गया था, उन 'छोटे नीले पत्रों' में से एक जो उसे दिन भर में मिले थे—मुझे डाकघर में उस पर लगे गोलों के नीचे अपनी ही लिखावट की व्यर्थ, बिखरी हुई रेखाओं को पहचानने में कठिनाई हो रही थी, एक डाकिया द्वारा पेंसिल से जोड़े गए शिलालेख, प्रभावी प्राप्ति के संकेत, बाहरी दुनिया की मुहरें, जीवन का प्रतीक बैंगनी पट्टियाँ, जो पहली बार मेरे सपने को अपनाने, बनाए रखने, उठाने और आनंदित करने के लिए आई थीं।

और एक दिन उसने मुझसे कहा: "जानती हो, तुम मुझे 'गिल्बर्ट' कह सकती हो; वैसे भी, मैं तुम्हें तुम्हारे पहले नाम से ही बुलाऊंगी। ऐसा न करना बेवकूफी होगी।" फिर भी, कुछ देर तक वह मुझे औपचारिक 'वूस' कहकर ही संबोधित करती रही, और जब मैंने उसका ध्यान इस ओर दिलाया, तो वह मुस्कुराई, और फिर एक वाक्य बनाते हुए, जो विदेशी भाषाओं के व्याकरण की किताबों में सिर्फ हमें एक नया शब्द सिखाना होता है, उसे मेरे पहले नाम से समाप्त कर दिया। और जब मैंने बाद में उस समय की अपनी अनुभूति को याद किया, तो मैं उस आभास को स्पष्ट कर सका कि एक क्षण के लिए मैं उसके मुख में समाया हुआ था, नग्न अवस्था में, उन सामाजिक योग्यताओं से रहित जो उसके अन्य साथियों और, जब उसने मेरा उपनाम लिया, तो मेरे माता-पिता के लिए समान रूप से प्रासंगिक थीं। उसके होंठ—अपने पिता के लहजे में शब्दों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के उसके प्रयास से, जिन्हें वह विशेष महत्व देना चाहती थी—मुझे नंगा करने, मुझे वंचित करने का आभास दे रहे थे, जैसे कोई फल का छिलका उतारता है जिसका केवल गूदा ही मुंह में

डालने वाला होता है। वहीं, उसकी दृष्टि, उसके भाषण की तरह ही अंतरंगता के उसी नए स्तर के अनुरूप ढलते हुए, मुझ पर अधिक प्रत्यक्ष रूप से पड़ी, और उसके चेहरे पर मुस्कान के साथ-साथ उस चेतना, आनंद और कृतज्ञता की गवाही भी दे रही थी।

लेकिन उस पल मैं इन नए सुखों का महत्व नहीं समझ पा रहा था। ये सुख मुझे उस नन्ही लड़की ने नहीं दिए थे जिससे मैं प्यार करता था, बल्कि उस दूसरी लड़की ने दिए थे जिसके साथ मैं खेला करता था, मेरे उस दूसरे रूप को दिए थे जिसके पास न तो असली गिलबर्ट की यादें थीं, न ही वह स्थिर हृदय जो अकेले उस खुशी का मूल्य जान सकता था जिसकी उसे ही चाह थी। घर लौटने के बाद भी मैंने उनका स्वाद नहीं चखा, क्योंकि हर दिन, वह आवश्यकता जो मुझे यह आशा दिलाती थी कि कल मैं गिल्बर्ट के शांत, प्रसन्न और निहारने के निवेदन में पहुँच जाऊँगा, कि वह अंततः मेरे लिए अपने प्रेम का इज़हार करेगी, और मुझे उन कारणों को समझाएगी जिनके कारण वह अब तक इसे छिपाने के लिए विवश थी, वही आवश्यकता मुझे अतीत को महत्वहीन मानने, केवल आगे देखने, और उसके द्वारा मुझे दिए गए छोटे-छोटे लाभों को स्वयं में पर्याप्त न मानकर, बल्कि सीढ़ी के नए पायदानों की तरह समझने के लिए मजबूर करती थी, जिन पर मैं अपने कदम रख सकता था, जो मुझे एक कदम और आगे बढ़ने और अंततः उस खुशी को प्राप्त करने में मदद करेंगे जिसका मैंने अभी तक सामना नहीं किया था।

कभी-कभी, यदि वह मुझे अपने स्नेह के ये संकेत दिखाती थी, तो वह मुझे देखकर प्रसन्न न होने का भाव दिखाकर मुझे परेशान भी करती थी, और ऐसा अक्सर उन्हीं दिनों होता था जब मुझे अपनी आशाओं के पूरा होने की सबसे अधिक उम्मीद होती थी। मुझे यकीन था कि गिल्बर्ट शैंप्स-एलिसी आ रही है, और मैं एक ऐसी उमंग से भर गई थी जो किसी बड़ी

खुशी की मात्र प्रत्याशा प्रतीत हो रही थी, जब सुबह ड्राइंग रूम में जाकर माँ को चूमने गई, जो पहले से ही बाहर जाने के लिए तैयार थीं, उनके काले बालों की लटें करीने से संवारी हुई थीं, और उनके सुंदर, गोल-मटोल और सफेद हाथ अभी भी साबुन की खुशबू से महक रहे थे—तभी मुझे पियानो के ऊपर हवा में उठती धूल की एक अकेली स्तंभ को देखकर और खिड़की के नीचे बजते हुए बैरल ऑर्गन (एन रेवेनेंट डे ला रिव्यू) को सुनकर यह सूचना मिली कि सर्दियों को सूर्यास्त तक वसंत के एक दिन का अप्रत्याशित, उज्ज्वल आगमन मिला है। जब हम दोपहर का भोजन कर रहे थे, तभी सामने वाली महिला ने अपनी खिड़की खोलकर पलक झपकते ही मेरी कुर्सी के पास से एक सूर्य की किरण को भगा दिया—जो दोपहर के विश्राम के लिए वहाँ ठहरी थी और एक ही कदम में हमारे पूरे भोजन कक्ष में फैल गई—और फिर वहीं विश्राम करने के लिए लौट आई। स्कूल में, एक बजे की कक्षा के दौरान, सूरज की सुनहरी किरणें मेरी मेज के किनारे तक रेंगती हुई मुझे बेचैनी और ऊब से बीमार कर रही थीं, मानो किसी दावत का निमंत्रण हो, जिसमें मैं खुद तीन बजे से पहले नहीं पहुँच सकता था। तब तक, जब तक फ्रांस्वा मुझे स्कूल के गेट पर लेने नहीं आई, और हम धूप से सजी, लोगों से भरी गलियों से होते हुए शैंप्स-एलिसी की ओर चल पड़े। इन गलियों में सूरज की रोशनी से अलग होकर धुंधली सी दिखने वाली बालकनियाँ घरों के सामने सोने के बादलों की तरह तैरती हुई प्रतीत हो रही थीं। अफसोस! शैंप्स-एलिसी में मुझे गिल्बर्ट नहीं मिली; वह अभी तक नहीं पहुँची थी। अदृश्य सूर्य की किरणों से पोषित घास के मैदान पर, जहाँ-जहाँ घास की एक-दो पत्तियाँ लौ की तरह चमक रही थीं, मैं स्थिर खड़ा था। उस पर बैठी कबूतरें किसी प्राचीन मूर्ति जैसी लग रही थीं, मानो माली की कुदाल ने उन्हें पवित्र मिट्टी की सतह पर उठा दिया हो। क्षितिज पर टकटकी लगाए मैं हर पल आशा कर

रहा था कि गिलबर्ट अपनी गवर्नेंस के पीछे-पीछे उस मूर्ति के पीछे प्रकट होंगी, जो मानो अपने हाथों में बच्चे को थामे हुए है और सूर्य की रोशनी में चमक रही है, मानो सूर्य से आशीर्वाद प्राप्त कर रही हो। डिबेट्स पढ़ने वाली बूढ़ी औरत अपनी कुर्सी पर हमेशा की तरह बैठी थी और अभी-अभी एक पार्क-कीपर से हाथ हिलाते हुए दोस्ताना अंदाज़ में बोली, "कितना प्यारा दिन है!" और जब कुँवारी महिला अपना पैसा लेने आई, तो उसने अनगिनत मुस्कानों और बनावटीपन के साथ टिकट को अपने दस्ताने में इस तरह मोड़कर रख लिया, मानो वह फूलों का गुलदस्ता हो, जिसे उसने दानकर्ता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपने शरीर पर सबसे उपयुक्त जगह पर रखा हो। जब उसे वह मिल गया, तो उसने अपनी गर्दन को गोलाकार घुमाया, अपने बोआ को सीधा किया, और संग्रहकर्ता को अपनी नंगी कलाई पर उभरे पीले कागज के सिरे को दिखाते हुए, उस मोहक मुस्कान के साथ कहा, "देखो, मैंने तुम्हारे गुलाब पहने हैं!"

मैं फ्रांस्वा को घसीटते हुए गिलबर्ट की ओर आर्क डी ट्रायम्फ तक ले गया; वह नहीं मिली, और मैं इस बात से आश्वस्त होकर लॉन की ओर लौट रहा था कि वह नहीं आ रही है, तभी लकड़ी के घोड़ों के सामने, तीखी आवाज वाली छोटी लड़की मुझ पर झपटी: "जल्दी करो, जल्दी करो, गिलबर्ट को यहाँ आए पंद्रह मिनट हो गए हैं। वह अभी जा रही है। हम कैदियों के लिए एक ठिकाना बनाने के लिए तुम्हारा इंतजार कर रहे थे।"

जब मैं एवेन्यू डेस चैंप्स-एलिसीज़ से ऊपर जा रहा था, गिलबर्टे रू बोइसी-डी'एंगलास से आ गई थी, मैडमोजेल अच्छे मौसम का फायदा उठाकर अपने किसी काम से बाहर गई थीं; और एम. स्वान अपनी बेटी को लेने आ रहे थे। और इसलिए यह मेरी गलती थी; मुझे लॉन से भटकना नहीं चाहिए था; क्योंकि कोई निश्चित रूप से नहीं जानता था कि गिलबर्टे किस

दिशा से आएगी, वह जल्दी आएगी या देर से, और इस निरंतर तनाव ने न केवल संपूर्ण चैंप्स-एलिसीज़ और दोपहर के पूरे समय को, अंतरिक्ष और समय के एक विशाल विस्तार की तरह, हर बिंदु और हर क्षण में, जहां गिलबर्टे का रूप प्रकट हो सकता था, बल्कि उस रूप को भी अधिक प्रभावशाली बना दिया, क्योंकि उसके प्रकट होने के पीछे मुझे लगा कि वह कारण छिपा है जिसके कारण उसने ढाई बजे के बजाय चार बजे मेरे दिल में तीर चलाया था; खेल के लिए साधारण टोपी के बजाय, मुलाकातों के लिए एक सुंदर टोपी पहने हुए; राजदूतों के सामने, न कि दो कठपुतली शो के बीच; मैंने अनुमान लगाया कि गिलबर्ट उन कामों में से एक में शामिल हो सकती है जिनमें मैं उसका पीछा नहीं कर सकता, ऐसे काम जो उसे बाहर जाने या घर पर रहने के लिए मजबूर करते हैं; मैं उसके अज्ञात जीवन के रहस्य के संपर्क में था। यही रहस्य मुझे तब भी परेशान कर रहा था जब, तेज आवाज वाली लड़की के कहने पर, बिना किसी देरी के अपना खेल शुरू करने के लिए दौड़ते हुए, मैंने गिलबर्ट को देखा, जो हमारे साथ इतनी फुर्तीली और अनौपचारिक थी, उसने डिबेट्स वाली बूढ़ी औरत को औपचारिक रूप से प्रणाम किया (जिसने यह कहते हुए इसे स्वीकार किया, "कितना प्यारा सूरज है! ऐसा लगता है जैसे आग जल रही हो।") उससे एक शर्मीली मुस्कान के साथ बात करते हुए, एक संकोच भरे भाव के साथ जिसने मुझे उस दूसरी छोटी लड़की की याद दिला दी जो गिलबर्ट अपने माता-पिता के साथ घर पर या अपने माता-पिता के दोस्तों के साथ मिलने पर होती होगी, उसके जीवन के बाकी सभी पहलुओं में, जो मेरी समझ से परे थे। लेकिन उस जीवन के बारे में मुझ पर सबसे गहरा प्रभाव एम. स्वान ने डाला, जो अपनी बेटी को लेने थोड़ी देर बाद आए थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि वे और श्रीमती स्वान—क्योंकि उनकी बेटी उनके साथ रहती थी, क्योंकि उसकी पढ़ाई, खेल और

दोस्ती उन पर निर्भर थी—मेरे लिए, गिलबर्ट की तरह, शायद गिलबर्ट से भी कहीं अधिक, उन विषयों के अनुरूप, जिनका उस पर सर्वशक्तिशाली नियंत्रण था, जिनमें इसका स्रोत अवश्य ही निहित रहा होगा, एक अनिश्चित, एक दुर्गम उदासीपूर्ण आकर्षण का गुण समेटे हुए थे। उनसे जुड़ी हर बात मेरे लिए इतनी निरंतर चिंता का विषय थी कि जिन दिनों, जैसे कि आज के दिन, एम. स्वान (जिन्हें मैंने बहुत पहले कई बार देखा था, हालांकि उन्होंने मेरी जिज्ञासा कभी नहीं जगाई थी, जब उनके मेरे माता-पिता के साथ अच्छे संबंध थे) गिलबर्ट के लिए शैंप्स-एलिसी आते थे, तो उनकी धूसर टोपी और हुड वाले लबादे को देखकर मेरे दिल में जो धड़कनें तेज हो गई थीं, उनके शांत होने के बाद भी, उन्हें देखकर मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ता था मानो मैं किसी ऐतिहासिक व्यक्ति को देख रहा हूँ, जिस पर मैंने अभी-अभी कई किताबें पढ़ी हों, और जिसके जीवन के छोटे से छोटे विवरण को मैं उत्साह से जान रहा हूँ। कॉम्टे डी पेरिस के साथ उनके संबंध, जो मुझे कॉम्ब्रे में चर्चा के दौरान महत्वहीन लगे थे, अब मेरी नज़रों में कुछ अद्भुत बन गए, मानो ऑरलियन्स परिवार के बारे में किसी और ने कभी जाना ही न हो; उन्होंने उसे अलग-अलग वर्गों के पैदल चलने वालों की सामान्य पृष्ठभूमि के बीच एक जीवंत अलगाव में स्थापित किया, जो चैंप्स-एलिसी में उस विशेष रास्ते पर भीड़भाड़ पैदा कर रहे थे, जिनके बीच मैंने उसकी विनम्रता की प्रशंसा की, बिना किसी विशेष सम्मान की मांग किए, जो संयोगवश उनमें से किसी ने भी उसे देने का सपना नहीं देखा था, क्योंकि वह जिस गुमनामी में लिपटा हुआ था वह इतनी गहरी थी।

उन्होंने गिलबर्ट के साथियों के अभिवादन का, यहां तक कि मेरे अभिवादन का भी, विनम्रतापूर्वक जवाब दिया, हालांकि अब उनके मेरे परिवार के साथ अच्छे संबंध नहीं थे, लेकिन ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि वह मुझे

जानते हों। (इससे मुझे याद आया कि वह मुझे देश में लगातार देखता रहता था; एक स्मृति जो मैंने संजो कर रखी थी, लेकिन नज़रों से ओझल कर रखी थी, क्योंकि गिलबर्ट से दोबारा मिलने के बाद से स्वान मेरे लिए मुख्य रूप से उसके पिता बन गए थे, न कि कॉम्ब्रे स्वान; क्योंकि आजकल मैं उनके नाम से जो विचार जोड़ती हूँ, वे उस प्रणाली के विचारों से भिन्न हैं जिसमें यह नाम पहले समाहित था, जिनका उपयोग मैं अब उनके बारे में सोचने पर बिल्कुल नहीं करती, इसलिए वह एक नया, अलग व्यक्ति बन गए थे; फिर भी मैंने उन्हें एक कृत्रिम, गौण और तिरछे धागे से, हमारे पूर्व अतिथि से जोड़ रखा था; और चूंकि मेरे लिए अब किसी भी चीज़ का कोई मूल्य नहीं रह गया था सिवाय उस हद तक जहाँ तक मेरा प्यार उससे लाभ उठा सकता था, इसलिए शर्म और पछतावे की एक सिहरन के साथ कि मैं उन्हें अपनी स्मृति से मिटा नहीं पा रही थी, मैंने उन वर्षों को फिर से याद किया जिनमें, उसी स्वान की आँखों में, जो इस समय मेरे सामने चैंप्स-एलिसी में था, और जिसके लिए, सौभाग्य से, गिलबर्ट ने शायद मेरा नाम नहीं लिया था, मैं इतनी अक्सर, शाम को, मैं खुद को हास्यास्पद बना लेता था जब मैं माँ को ऊपर मेरे कमरे में आकर मुझे शुभ रात्रि कहने के लिए कहता था, जबकि वह बगीचे में मेज पर उसके साथ, मेरे पिता और मेरे दादा-दादी के साथ कॉफी पी रही होती थी। उसने गिलबर्ट से कहा कि वह एक खेल खेल सकती है; वह पंद्रह मिनट तक इंतजार कर सकता है; और, किसी और की तरह लोहे की कुर्सी पर बैठकर, उसने उसी हाथ से अपने टिकट का भुगतान किया जिसे फिलिप सप्तम ने अक्सर अपने हाथों में लिया हुआ था, जबकि हमने लॉन पर अपना खेल शुरू किया, कबूतरों को भगाते हुए, जिनके सुंदर, इंद्रधनुषी शरीर (दिल के आकार के और निश्चित रूप से, पंखों वाले साम्राज्य के बकाइन जैसे) कई पवित्र स्थानों की तरह शरण लिए हुए थे,

एक पत्थर के बड़े कुंड पर, जिस पर उसकी चोंच, किनारे के नीचे गायब होते हुए, उस पक्षी को प्रचुर मात्रा में फल या अनाज अर्पित करने का काम करती हुई प्रतीत होती थी, जिस पर वह चोंच मारती हुई दिखाई देती थी, दूसरा मूर्ति के सिर पर, जिसे वह उन तामचीनी वस्तुओं में से एक से सुशोभित करती हुई प्रतीत होती थी, जिनका बहुरंगी रंग कुछ शास्त्रीय कृतियों में पत्थर की एकरसता को बदल देता है, और एक ऐसे गुण से, जिसे जब देवी धारण करती है, तो उसे एक विशेष उपाधि प्राप्त होती है और उसे, जैसे एक अलग ईसाई नाम एक नश्वर को एक नई दिव्यता प्रदान करता है।

उन धूप भरे दिनों में से एक दिन, जब मेरी उम्मीदें पूरी नहीं हुईं, तो मुझमें गिलबर्टे से अपनी निराशा छिपाने का साहस नहीं था।

मैंने उससे कहा, "मुझे तुमसे बहुत कुछ पूछना था। मुझे लगा था कि आज का दिन हमारी दोस्ती में बहुत मायने रखेगा। और आते ही तुम चली गई! कल जल्दी आने की कोशिश करना, ताकि मैं तुमसे बात कर सकूँ।"

उसका चेहरा खुशी से चमक उठा और वह उछलते हुए बोली, "कल, मेरे प्यारे दोस्त, तुम अपना मन बना लो, मैं नहीं आऊंगी! सबसे पहले तो मेरी एक बड़ी लंच पार्टी है; फिर दोपहर में मैं एक दोस्त के घर जा रही हूँ, जहाँ से मैं खिड़की से राजा थियोडोसियस का आगमन देखूंगी; कितना शानदार होगा! और फिर, अगले दिन, मैं मिशेल स्ट्रोगॉफ के यहाँ जा रही हूँ, और उसके बाद जल्द ही क्रिसमस और नए साल की छुट्टियाँ आ जाएँगी! शायद वे मुझे दक्षिण में, रिवेरा ले जाएँ; कितना अच्छा होगा! हालाँकि मुझे यहाँ क्रिसमस ट्री की कमी खलेगी; खैर, अगर मैं पेरिस में ही रुकती हूँ, तो मैं यहाँ नहीं आऊंगी, क्योंकि मैं माँ के साथ मिलने जा रही हूँगी। अलविदा—पापा मुझे बुला रहे हैं।"

मैं फ्रांस्वाइस के साथ उन गलियों से होते हुए घर लौटा जो अभी भी धूप

से जगमगा रही थीं, मानो किसी छुट्टी की शाम को जब मौज-मस्ती खत्म हो जाती है। मैं बड़ी मुश्किल से अपने पैर घसीट पा रहा था।

"मुझे आश्चर्य नहीं है," फ्रांस्वा ने कहा, "साल के इस समय के लिए यह मौसम ठीक नहीं है; बहुत ज़्यादा गर्मी है। हे भगवान, हे भगवान, सोचो वहाँ हर जगह कितने बेचारे बीमार लोग होंगे; ऐसा लगता है जैसे ऊपर भी सब कुछ गड़बड़ हो गया हो।"

मैं अपने सिसकते हुए, मन ही मन उन शब्दों को दोहरा रही थी जिनमें गिलबर्ट ने लंबे समय तक शैंप्स-एलिसी न लौटने की खुशी ज़ाहिर की थी। लेकिन जैसे ही मैंने गिलबर्ट के बारे में सोचा, मेरे मन में एक अलग ही आकर्षण उमड़ आया, और मेरे मन में बसे एक गहरे घाव के कारण गिलबर्ट के साथ मेरा जो विशेष संबंध था, चाहे वह कितना भी कष्टदायक क्यों न हो, वह आकर्षण उसकी उदासीनता में कुछ रोमांटिक भाव जोड़ने लगा था, और आँसुओं के बीच मेरे होंठ एक ऐसी मुस्कान में ढल जाते जो सचमुच एक चुंबन की हल्की सी झलक थी। और जब डाकिया आने का समय हुआ, तो मैंने उस शाम, हर दूसरी शाम की तरह, खुद से कहा: "मुझे गिल्बर्ट का पत्र मिलने वाला है, वह आखिरकार मुझे बताएगी कि उसने मुझसे प्यार करना कभी नहीं छोड़ा, और मुझे उस रहस्यमय कारण को समझाएगी जिसके कारण उसे अब तक मुझसे अपना प्यार छिपाना पड़ा, ऐसा दिखावा करना पड़ा कि वह मुझे देखे बिना खुश रह सकती है; वह कारण जिसके लिए उसने दूसरी गिल्बर्ट का रूप धारण किया है, जो केवल एक साथी है।"

हर शाम मैं खुद को इस पत्र की कल्पना में बहलाता, मानो मैं सचमुच इसे पढ़ रहा हूँ, इसके हर वाक्य को बारी-बारी से दोहरा रहा हूँ। अचानक मैं घबराकर रुक जाता। मुझे एहसास हो गया था कि अगर मुझे गिल्बर्ट से कोई पत्र मिलना ही था, तो वह किसी भी हालत में यह पत्र नहीं हो

सकता था, क्योंकि इसे मैंने खुद लिखा था। और उस पल से मैं अपने विचारों को उन शब्दों से दूर रखने की कोशिश करता जो मैं चाहता था कि वह मुझे लिखे, इस डर से कि कहीं ऐसा न हो कि उन्हें खुद चुनकर मैं उन्हीं शब्दों को—सबसे प्यारे, सबसे ज़्यादा चाहे गए शब्दों को—संभावित घटनाओं के दायरे से बाहर कर दूँ। यहाँ तक कि अगर किसी लगभग असंभव संयोग से, गिल्बर्ट ने अपनी मर्ज़ी से मुझे वही पत्र लिखा होता जो मैंने खुद लिखा था, तब भी उसमें अपना योगदान पहचानकर मुझे यह आभास नहीं होता कि मुझे कुछ ऐसा मिल रहा है जो मेरे द्वारा उत्पन्न नहीं हुआ है, कुछ वास्तविक, कुछ नया, मेरे मन से परे, मेरी इच्छा से स्वतंत्र, प्रेम का एक उपहार।

प्रतीक्षा करते हुए मैंने एक पृष्ठ को फिर से पढ़ा, जो यद्यपि गिलबर्टे ने मुझे लिखकर नहीं दिया था, फिर भी उन्हीं से मुझे प्राप्त हुआ था। यह पृष्ठ बर्गोट द्वारा प्राचीन मिथकों की सुंदरता पर लिखा गया था, जिनसे रेसीन ने प्रेरणा ली थी, और जिसे (अगेट संगमरमर के साथ) मैं हमेशा अपने पास रखता था। मेरे मित्र द्वारा मेरे लिए पुस्तक उपलब्ध कराने की उनकी दयालुता से मैं बहुत प्रभावित हुआ। और चूंकि हर किसी को अपने प्रेम का कोई न कोई कारण ढूंढना ही पड़ता है, इतना कि वह अपने प्रिय प्राणी में ऐसे गुण पाकर प्रसन्न होता है जो (उसने पढ़कर या बातचीत से सीखे हैं) किसी पुरुष के प्रेम को जगाने योग्य होते हैं, वह उनका अनुकरण करके उन्हें आत्मसात कर लेता है और उनसे अपने प्रेम के नए कारण बना लेता है, भले ही ये गुण उन गुणों के बिल्कुल विपरीत हों जिनकी तलाश में उसका प्रेम रहा हो, जब तक कि वह सहज था—जैसे स्वान ने, मेरे समय से पहले, ओडेट की सुंदरता का सौंदर्यपरक आधार स्थापित करने का प्रयास किया था—मैं, जिसने पहले कॉम्ब्रे के दिनों में गिलबर्ट से प्रेम किया था, उसके जीवन के उन सभी अज्ञात तत्वों के

कारण जिनमें मैं पूरी तरह डूब जाना चाहता था, पुनर्जन्म से गुजर चुका हूं, अपने स्वयं के अलग अस्तित्व को एक ऐसी चीज के रूप में त्याग कर जिसका अब कोई महत्व नहीं है, मैंने अब इसे एक अमूल्य लाभ के रूप में सोचा, कि मेरे इस, मेरे अपने, मेरे अत्यधिक परिचित, मेरे तुच्छ अस्तित्व से गिलबर्ट एक दिन विनम्र सेविका, दयालु, सांत्वना देने वाली सहयोगी बन सकती है, जो शाम को मेरे काम में मेरी मदद करेगी, मेरे लिए दुर्लभ पुस्तिकाओं के पाठ संकलित करो। जहाँ तक बर्गोट की बात है, वह असीम बुद्धिमान, लगभग दिव्य वृद्ध व्यक्ति, जिसके कारण मैंने गिलबर्ट को देखे बिना ही उससे प्रेम किया था, अब मुख्यतः गिलबर्ट के कारण ही मैं उससे प्रेम करता था। रेसीन के बारे में उसने जो पन्ने लिखे थे, उन्हें पढ़ने के आनंद के साथ ही मैंने उस आवरण का अध्ययन किया, जो सफेद मोम की बड़ी-बड़ी मुहरों से लिपटा हुआ था और गुलाबी रिबन से बंधा हुआ था, जिसमें वह उन पन्नों को मेरे लिए लाई थी। मैंने उस अगेट संगमरमर को चूमा, जो मेरे प्रेम के हृदय का श्रेष्ठ भाग था, वह भाग जो तुच्छ नहीं बल्कि वफादार था, और गिलबर्ट के जीवन के रहस्यमय आकर्षण से सुशोभित होने के बावजूद, मेरे निकट ही स्थित था, मेरे कक्ष में रहता था, मेरे बिस्तर को साझा करता था। लेकिन उस पत्थर की सुंदरता, और बर्गोट के उन पन्नों की सुंदरता, जिन्हें मैं गिल्बर्ट के प्रति अपने प्रेम के विचार से जोड़कर प्रसन्न होता था, मानो उन क्षणों में जब मेरा प्रेम अस्तित्वहीन प्रतीत होता था, वे उसे एक प्रकार की स्थिरता प्रदान करते थे, मैंने महसूस किया कि वे उस प्रेम से पूर्व थे, जिससे उनका कोई सानी नहीं था; उनके तत्व लेखक की प्रतिभा या भूवैज्ञानिक नियमों द्वारा निर्धारित किए गए थे, इससे पहले कि गिल्बर्ट मुझे जानती भी थी, पुस्तक या पत्थर में कुछ भी भिन्न नहीं होता यदि गिल्बर्ट मुझसे प्रेम न करती, और इसलिए, ऐसा कुछ भी नहीं था जो मुझे उनमें खुशी का संदेश

पढ़ने का अधिकार देता। और जब मेरा प्रेम, गिलबर्ट के मेरे प्रति प्रेम की स्वीकारोक्ति के लिए कल की प्रतीक्षा में, हर शाम दिन भर के अधूरे काम को नष्ट करता, बिखेरता, तो मेरे भीतर के किसी अंधकारमय कोने में एक अज्ञात बुनकर थी जो टूटे हुए धागों को वहीं नहीं छोड़ती थी, बल्कि उन्हें इकट्ठा करके फिर से व्यवस्थित करती थी, मुझे प्रसन्न करने या मेरे लाभ के लिए परिश्रम करने की कोई परवाह किए बिना, अपने सभी कार्यों को दिए गए एक अलग क्रम में। मेरे प्रेम में कोई विशेष रुचि लिए बिना, यह तय किए बिना कि मुझे प्रेम किया जाता है, उसने गिलबर्ट के उन कार्यों को, जो मुझे समझ से परे लगते थे, और उसकी उन गलतियों को, जिन्हें मैंने माफ कर दिया था, साथ-साथ रख दिया। फिर, एक-दूसरे के साथ, उन्होंने एक अर्थ ग्रहण कर लिया। ऐसा लगा मानो यह नई व्यवस्था मुझे बता रही हो कि जब मैं गिलबर्ट को शैंप्स-एलिसी में मेरे पास आने, किसी पार्टी में जाने या अपनी गवर्नेंस के साथ काम पर जाने के बजाय देखती थी, जब मैं उसे नए साल की छुट्टियों तक चलने वाली अनुपस्थिति के लिए तैयार देखती थी, तो मेरा यह सोचना या कहना गलत था: "ऐसा इसलिए है क्योंकि वह चंचल है" या "आसानी से बहक जाती है।" क्योंकि अगर वह मुझसे प्यार करती तो वह ऐसी नहीं होती, और अगर उसे मेरी बात मानने के लिए मजबूर किया जाता तो उसके दिल में भी वही निराशा होती जो मुझे उन दिनों होती जब मैं उसे नहीं देख पाती थी। इस नई व्यवस्था ने मुझे यह भी दिखाया कि मुझे आखिरकार प्यार का मतलब जानना चाहिए, क्योंकि मैं गिलबर्ट से प्यार करती थी; इसने मेरा ध्यान उस निरंतर चिंता की ओर खींचा जो मुझे उसके सामने 'दिखावा' करने के लिए मजबूर करती थी, जिसके कारण मैंने अपनी माँ को फ्रांस्वा के लिए एक वाटरप्रूफ कोट और नीले पंख वाली टोपी दिलाने के लिए मनाने की कोशिश की, या इससे भी बेहतर, मेरे साथ शैंप्स-एलिसी जाने वाली उस

परिचारिका को भेजना बंद करने के लिए कहा जिसके साथ देखे जाने पर मुझे शर्म आती थी (जिसके जवाब में मेरी माँ ने कहा कि मैं फ्रांस्वा के साथ न्याय नहीं कर रही हूँ, वह एक उत्कृष्ट महिला है और हम सभी के प्रति समर्पित है) और साथ ही गिलबर्ट को देखने की मेरी एकमात्र, अनन्य आवश्यकता भी थी, जिसका परिणाम यह हुआ कि, महीनों पहले से ही, मैं केवल यही सोचती रहती थी कि वह किस तारीख को पेरिस छोड़ रही है और कहाँ जा रही है, यह पता लगाने के अलावा और कुछ नहीं सोच पाती थी, यह महसूस करते हुए कि दुनिया का सबसे आकर्षक देश उसके बिना निर्वासन का स्थान बन जाएगा, और केवल यही विनती करती थी कि मुझे पेरिस में हमेशा के लिए रहने की अनुमति दी जाए, बशर्ते मैं उसे शैंप्स-एलिसी में देख सकूँ; और मुझे यह समझाने में उसे कोई कठिनाई नहीं हुई कि गिलबर्ट के व्यवहार में मेरी चिंता या मेरी ज़रूरत किसी भी तरह से उचित नहीं थी। इसके विपरीत, वह अपनी गवर्नेंस से सचमुच बहुत प्यार करती थी, और इस बात की उसे कोई परवाह नहीं थी कि मैं इसके बारे में क्या सोचूँगी। अगर उसे मैडमोजेल के साथ खरीदारी के लिए जाना होता तो वह चैंप्स-एलिसी नहीं आती थी, और अगर उसे अपनी माँ के साथ कहीं बाहर जाना होता तो उसे बहुत अच्छा लगता था। और मान भी लें कि वह कभी मुझे अपने साथ छुट्टियाँ बिताने की अनुमति देती, तो भी जगह चुनते समय उसने अपने माता-पिता की इच्छाओं का ध्यान रखा, जिनके बारे में उसे हज़ारों तरह के मनोरंजन के विकल्प बताए गए थे, और इस बात का बिल्कुल भी नहीं कि वह जगह वही हो जहाँ मेरा परिवार मुझे भेजना चाहता था। जब वह मुझे यकीन दिलाती (जैसा कि कभी-कभी होता था) कि वह मुझे अपने कुछ दोस्तों से कम पसंद करती है, कल की तुलना में कम, क्योंकि मेरी नादानी की वजह से उसकी टीम खेल हार गई थी, तो मैं उससे माफ़ी माँगता, मैं उससे पूछता कि मुझे क्या

करना चाहिए ताकि वह मुझे फिर से उतना ही या उससे भी ज़्यादा पसंद करने लगे जितना वह करती है; मैं उम्मीद करता कि वह कहेगी कि मैं पहले से ही उस स्थिति में हूँ; मैं उससे विनती करता; मानो वह मेरे प्रति अपने स्नेह को अपनी या मेरी इच्छा के अनुसार बदल सकती हो, मुझे केवल अपने शब्दों से ही प्रसन्न कर सकती हो, जैसा कि मेरे अच्छे या बुरे आचरण के लिए उचित हो। क्या मैं तब तक इस बात से अनजान था कि उसके लिए मेरे मन में जो भावनाएँ थीं, वे न तो उसके कार्यों पर निर्भर थीं और न ही मेरी इच्छाओं पर?

अंततः इसने मुझे मेरे अदृश्य बुनकर द्वारा रची गई नई व्यवस्था दिखाई, कि यदि हम यह आशा करने लगते हैं कि जिस व्यक्ति ने अब तक हमें चिंता दी है, उसके कार्य शायद ईमानदार न हों, तो वे अपने पीछे एक ऐसा प्रकाश छोड़ते हैं जिसे हमारी आशाएँ बुझा नहीं सकतीं, एक ऐसा प्रकाश जिससे हमें अपनी आशाओं के बजाय यह प्रश्न पूछना चाहिए कि कल उस व्यक्ति के कार्य क्या होंगे।

ये नई सलाहें, मेरी प्रेमिका ने सुनीं और समझीं; उन्होंने उसे आश्वस्त किया कि आने वाला दिन बीते दिनों से अलग नहीं होगा; कि मेरे लिए गिल्बर्ट की भावना, जो अब इतनी गहरी हो चुकी थी कि उसमें कोई बदलाव संभव नहीं था, अब उदासीनता थी; कि गिल्बर्ट के साथ मेरी दोस्ती में, केवल मैं ही उससे प्यार करता था। "यह सच है," मेरी प्रेमिका ने उत्तर दिया, "उस दोस्ती का अब और कोई मतलब नहीं है। अब उसमें कोई बदलाव नहीं आएगा।" और इसलिए अगले ही दिन (यदि मैं किसी सार्वजनिक अवकाश का इंतजार करता, यदि कोई आने वाला होता, कोई वर्षगांठ, नया साल, शायद, उन दिनों में से एक जो अन्य दिनों से अलग होते हैं, जिन पर समय नए सिरे से शुरू होता है, अतीत की विरासत को त्यागकर, उसके दुखों की विरासत को नकारते हुए) मैं गिल्बर्ट से हमारी

पुरानी दोस्ती को समाप्त करने और मेरे साथ एक नई दोस्ती की नींव रखने का आग्रह करता।

* * *

मेरे पास हमेशा पेरिस का नक्शा रहता था, जिसमें मुझे श्रीमान और श्रीमती स्वान के घर की गली दिखाई देती थी, और मुझे लगता था मानो उसमें कोई छिपा खजाना हो। और खुद को खुश करने के लिए, साथ ही एक तरह की वीरतापूर्ण वफादारी के कारण, चाहे कोई संबंध हो या न हो, मैं उस गली का नाम बार-बार दोहराता रहता था, जब तक कि मेरे पिता, जो मेरी माँ और दादी की तरह मेरे प्यार के रहस्य से अनजान थे, मुझसे पूछते: "लेकिन तुम हमेशा उस गली के बारे में क्यों बात करते रहते हो? उसमें कुछ खास नहीं है। वह रहने के लिए एक अच्छी गली है क्योंकि वह जंगल से कुछ ही मिनटों की पैदल दूरी पर है, लेकिन वैसी ही दर्जनों और गलियाँ हैं।"

मैंने अपने माता-पिता से बातचीत में स्वान का नाम शामिल करने की हर संभव कोशिश की; बेशक, मैं मन ही मन इसे लगातार गुनगुनाता रहता था; लेकिन मुझे इसकी मधुर ध्वनि सुनने और उस स्वर को गुनगुनाने की भी ज़रूरत थी, जिसका बिना आवाज़ के उच्चारण मुझे संतुष्ट नहीं कर पाता था। इसके अलावा, स्वान का वह नाम, जिससे मैं इतने लंबे समय से परिचित था, अब मेरे लिए (जैसा कि कभी-कभी वाचाघात से पीड़ित लोगों के साथ सबसे साधारण शब्दों के मामले में होता है) किसी नई चीज़ का नाम बन गया था। यह हमेशा मेरे मन में मौजूद रहता था, फिर भी मेरा मन इससे अभ्यस्त नहीं हो पा रहा था। मैंने इसका विश्लेषण किया, मैंने इसकी वर्तनी पढ़ी; इसकी वर्तनी मेरे लिए एक आश्चर्य की बात थी। और इसकी परिचितता के साथ ही इसने अपनी मासूमियत भी खो दी थी। मुझे इसकी ध्वनि से जो आनंद मिलता था, वह मुझे इतना

दोषी लगता था कि मुझे ऐसा लगता था मानो दूसरे मेरे विचारों को पढ़ लेते हों और अगर मैं बातचीत को उस दिशा में मोड़ने की कोशिश करता, तो वे उसे बदल देते। मैं उन विषयों पर लौट आया जिनसे मुझे गिलबर्ट की याद आती थी, मैं बार-बार वही शब्द दोहराता रहा, और यह जानकर भी कोई फायदा नहीं हुआ कि वे केवल शब्द थे—उसकी अनुपस्थिति में बोले गए शब्द, जिन्हें वह सुन नहीं सकती थी, अपने आप में अर्थहीन शब्द, जो वास्तव में तथ्यों को दोहरा रहे थे, लेकिन उन्हें बदलने में असमर्थ थे—फिर भी मुझे ऐसा लगता था कि गिलबर्ट से जुड़ी हर बात को इस तरह कुरेदने, इस तरह से कुरेदने से शायद कुछ ऐसा निकल आए जो मुझे खुशी दे। मैंने अपने माता-पिता को फिर से बताया कि गिलबर्ट अपनी गवर्नेंस को बहुत पसंद करती थी, मानो यह बात सौवीं बार दोहराने से अंततः गिलबर्ट अचानक कमरे में आ जाएगी और हमेशा के लिए हमारे साथ रहने लगेगी। मैंने पहले ही बहस पढ़ने वाली उस बुजुर्ग महिला की खूब प्रशंसा की थी (मैंने अपने माता-पिता को संकेत दिया था कि वह कम से कम एक राजदूत की विधवा तो होंगी ही, भले ही वह वास्तव में कोई उच्च महिला न हों) और मैं उनकी सुंदरता, उनके वैभव, उनकी कुलीनता का बखान करता रहा, उस दिन तक जब मैंने यह उल्लेख किया कि गिलबर्ट ने उन्हें जिस तरह से पुकारा था, उससे वह श्रीमती ब्लैटिन जैसी प्रतीत होती थीं।

"ओह, अब मुझे समझ आया कि तुम किसकी बात कर रही हो," मेरी माँ चिल्लाई, और मैं शर्म से लाल हो गया। "सावधान रहो! सावधान रहो!—जैसा तुम्हारे दादाजी कहते हैं। तो क्या तुम उसे इतना अद्भुत समझते हो? अरे, वह तो बिलकुल भयानक है, और हमेशा से रही है। वह एक ज़मींदार की विधवा है। तुम्हें याद नहीं होगा, जब तुम छोटे थे, तो मुझे तुम्हारे जिमनास्टिक क्लास में उससे बचने के लिए कितनी मशक्कत करनी

पड़ती थी, जहाँ वह हमेशा मुझे पकड़ने की कोशिश करती थी—मैं उस औरत को जानता नहीं था—और कहती थी कि तुम 'लड़के के लिए बहुत ज़्यादा सुंदर दिखते हो।' उसे हमेशा से लोगों को जानने की एक अजीब सी ललक रही है, और वह बिल्कुल पागल ही होगी, जैसा कि मैंने हमेशा सोचा है, अगर वह सच में मैडम स्वान को जानती है। क्योंकि भले ही वह आम परिवार से हो, मैंने कभी उसके चरित्र के बारे में कुछ बुरा नहीं सुना। लेकिन वह हमेशा अजनबियों पर अपना ज़बरदस्ती थोपती रहती होगी। वह सच में एक भयानक औरत है, बेहद अशिष्ट, और इसके अलावा, वह हमेशा अजीबोगरीब स्थितियाँ पैदा करती रहती है।"

स्वान की बात करें तो, उसकी नकल करने की कोशिश में, मैं खाने की मेज पर सारा समय अपनी उंगली नाक पर फेरता और आंखें मलता रहता था। मेरे पिताजी कहते थे, "बच्चा बिलकुल बेवकूफ है, उसकी नकल करना नामुमकिन होता जा रहा है।" सबसे ज़्यादा तो मैं स्वान की तरह गंजा होना चाहता था। वह मुझे इतना असाधारण प्राणी लगता था कि मुझे विश्वास ही नहीं होता था कि मेरे जानने वाले और अक्सर दिखने वाले लोग भी उसे जानते होंगे, और दिन भर में कोई उससे टकरा सकता है। और एक बार मेरी माँ, जैसा कि वह हर शाम खाने पर हमें बताती थीं कि वह उस दोपहर कहाँ थीं और उन्होंने क्या किया, बस इतना कहकर: "वैसे, अंदाज़ा लगाओ मैंने ट्रोइस क्वार्टियर्स में किसे देखा—छाता काउंटर पर—स्वान!" उनकी कहानी के बीचोंबीच (जो मेरे लिए एक सूखा रेगिस्तान था) एक रहस्यमयी फूल खिल उठा। यह जानकर कितनी उदासी भरी तसल्ली मिली कि उसी दोपहर, भीड़ के बीच से अपना अलौकिक रूप दिखाते हुए, स्वान छाता खरीदने गया था। दिन भर की छोटी-बड़ी घटनाओं में से, जो सभी एक समान रूप से महत्वहीन थीं, केवल एक घटना ने मेरे भीतर वो विशेष भावनाएँ जगा दीं जिनसे गिलबर्ट

के लिए मेरा प्रेम हमेशा जागृत होता था। मेरे पिता शिकायत करते थे कि मुझे किसी भी चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं है, क्योंकि जब वे राजा थियोडोसियस की यात्रा के बाद होने वाले राजनीतिक घटनाक्रमों के बारे में बात कर रहे थे, जो उस समय फ्रांस में राष्ट्र के अतिथि और (संकेतित रूप से) सहयोगी के रूप में थे, तो मैं उनकी बात नहीं सुन रहा था। फिर भी, मुझे यह जानने में कितनी तीव्र रुचि थी कि क्या स्वान ने अपना हुड वाला लबादा पहना था!

मैंने पूछा, "क्या तुमने उससे बात की?"

“हाँ, बिलकुल,” मेरी माँ ने जवाब दिया, जो हमेशा इस बात से डरी रहती थीं कि अगर उन्होंने यह मान लिया कि स्वान के साथ हमारे संबंध बहुत अच्छे नहीं थे, तो लोग हमें मिलाने की कोशिश करेंगे, जो उन्हें मंज़ूर नहीं था, खासकर मैडम स्वान के अस्तित्व को देखते हुए, जिनसे वह मिलना नहीं चाहती थीं। “वही आए और मुझसे बात की। मैंने उन्हें देखा नहीं था।”

"तो फिर तुमने झगड़ा नहीं किया?"

"झगड़ा हुआ? आपको ऐसा क्यों लगा कि हमारा झगड़ा हुआ था?" उसने फुर्ती से जवाब दिया, मानो मैंने स्वान के साथ उसके मैत्रीपूर्ण संबंधों की झूठी कहानी पर संदेह जताया हो और उन्हें 'मिलाने' की कोशिश कर रही हो।

"हो सकता है कि वह आपसे नाराज़ हो क्योंकि आपने उसे कभी यहाँ नहीं बुलाया।"

"हर किसी को अपने घर बुलाना जरूरी नहीं है, आप जानते हैं; क्या उसने कभी मुझे अपने घर बुलाया है? मैं उसकी पत्नी को नहीं जानता।"

"लेकिन वह अक्सर कॉम्ब्रे में आया करता था।"

"मुझे तो लगता है कि उसने ऐसा किया होगा! वह कॉम्ब्रे में आया करता

था, और अब पेरिस में उसके पास कुछ बेहतर काम है, और मेरे पास भी। लेकिन मैं आपको यकीन दिला सकती हूँ, हम ज़रा भी ऐसे नहीं लग रहे थे जैसे हमारा झगड़ा हुआ हो। हमें वहाँ कुछ देर इंतज़ार करना पड़ा, जब तक कि वे उसका पार्सल नहीं ले आए। उसने तुम्हारे बारे में पूछा; उसने मुझे बताया कि तुम उसकी बेटी के साथ खेल रही थी—" मेरी माँ बोलती रहीं, और स्वान के मन में मेरे अस्तित्व के इस महत्वपूर्ण खुलासे से मैं चकित रह गई; इससे भी कहीं बढ़कर, मेरे अस्तित्व का इतना पूर्ण, इतना ठोस रूप कि जब मैं शैंप्स-एलिसी में उसके सामने प्रेम से काँपती हुई खड़ी थी, तो वह मेरा नाम जानता था, और मेरी माँ कौन थी, यह भी जानता था, और अपनी बेटी की सहेली होने के नाते मेरे साथ मेरे दादा-दादी और उनके संबंधों, हमारे रहने की जगह, हमारे बीते जीवन के कुछ विवरणों के बारे में कुछ बातें जोड़ पाया था, जिनमें से शायद मैं खुद भी नहीं जानती थी। लेकिन मेरी माँ को ट्रोइस क्वार्टियर्स के उस काउंटर में कुछ भी खास आकर्षक नहीं लगा, जहाँ उन्होंने स्वान के सामने, जिस क्षण उसने उन्हें देखा था, एक ऐसी निश्चित व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया था, जिसके साथ उसकी पर्याप्त यादें मिलती-जुलती थीं, जिसने उसे उनके पास आने और बात करने के लिए प्रेरित किया था।

न तो मेरी माँ और न ही मेरे पिता को अब स्वान के परिवार, गिल्बर्ट के दादा-दादी का ज़िक्र करने का कोई अवसर मिलता था, न ही स्टॉकब्रोकर की उपाधि का उपयोग करने का, ऐसे विषय जिनसे मुझे सबसे ज़्यादा आनंद मिलता था। मेरी कल्पना ने पेरिस के सामाजिक परिवेश में एक विशेष परिवार को अलग कर दिया था, ठीक वैसे ही जैसे उसने पेरिस की संरचना में एक विशेष घर को अलग कर दिया था, जिसके बरामदे पर उसने मूर्तियाँ बनाई थीं और उसकी खिड़कियों को अनमोल बना दिया था। लेकिन ये सजावटें केवल मेरी ही नज़र में थीं। जैसे मेरे पिता और माता

स्वान के घर को बोइस के आस-पास के उसी काल में बने अन्य घरों से मिलता-जुलता मानते थे, वैसे ही स्वान का परिवार भी उन्हें कई अन्य स्टॉकब्रोकर परिवारों की श्रेणी में ही लगता था। उनका निर्णय कमोबेश अनुकूल था, इस बात पर निर्भर करता था कि वह परिवार बाकी दुनिया में पाए जाने वाले गुणों में कितना हिस्सा रखता है, और उसमें ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे वे अद्वितीय कह सकें। दूसरी ओर, स्वान परिवार में जो गुण वे सराहते थे, वही गुण उन्हें कहीं और भी समान रूप से, या उससे भी अधिक मात्रा में, मिले। और इसलिए, यह स्वीकार करने के बाद कि घर अच्छी जगह पर स्थित था, वे किसी अन्य घर की बात करने लगते जो बेहतर स्थिति में था, लेकिन जिसका गिलबर्ट से कोई लेना-देना नहीं था, या उन फाइनेंसरों की बात करने लगते जो उसके दादा से भी बड़े थे; और अगर एक पल के लिए भी वे मेरी राय से सहमत प्रतीत हुए, तो यह एक गलती थी जो बहुत जल्द सुधर गई। क्योंकि गिलबर्ट के परिवेश में एक ऐसी अवर्णनीय गुणवत्ता को पहचानने के लिए, जो भावनाओं के पैमाने पर, रंगों के पैमाने पर जिसे अवरक्त कहा जाता है, के समान थी, एक अतिरिक्त बोध शक्ति की आवश्यकता थी, जो प्रेम ने मुझे उस समय प्रदान की थी; और यह मेरे माता-पिता में नहीं थी।

जिन दिनों गिलबर्ट मुझे बताती कि वह शैंप्स-एलिसी नहीं आ रही है, मैं अपनी सैर इस तरह से तय करने की कोशिश करता कि किसी न किसी तरह उससे मेरी मुलाक़ात हो जाए। कभी-कभी मैं फ्रांस्वा को स्वान परिवार के घर ले जाता और उससे बार-बार पूछता कि उसने गवर्नेंस से मैडम स्वान के बारे में क्या-क्या सीखा है। "लगता है, वह पदकों में बहुत विश्वास रखती है। अगर उसे उल्लू की आवाज़ सुनाई दे, या दीवार में मौत की घड़ी की आहट सुनाई दे, या आधी रात को बिल्ली दिखाई दे, या फर्नीचर चरमराए, तो वह कभी भी यात्रा पर निकलने के बारे में नहीं

सोचेगी। अरे हाँ! वह बहुत धार्मिक महिला है!" मैं गिलबर्ट के प्यार में इतना पागल था कि अगर रास्ते में मुझे उनका बूढ़ा बटलर कुत्ते को बाहर ले जाते हुए दिख जाता, तो मैं भावनाओं से स्तब्ध रह जाता, मैं उसकी सफेद मूंछों और प्रेम से भरी आँखों पर टकटकी लगाए देखता। और फ्रांस्वा मुझे जगाते हुए कहती: "अब तुम्हें क्या हुआ है, बच्चे?" और हम चलते रहते जब तक कि हम उनके द्वार पर नहीं पहुँच जाते, जहाँ एक कुली, दुनिया के हर दूसरे कुली से अलग, और अपनी वर्दी की कढ़ाई तक उसी उदासी भरे आकर्षण से सराबोर, जिसे मैंने गिल्बर्ट के नाम में छिपा हुआ महसूस किया था, मुझे ऐसे देखता जैसे वह जानता हो कि मैं उन लोगों में से एक हूँ जिनकी स्वाभाविक अयोग्यता उन्हें हमेशा के लिए अंदर के जीवन के रहस्यों में प्रवेश करने से रोकेगी, जिसकी रक्षा करना उसका कर्तव्य था, और जिसके ऊपर भूतल की खिड़कियाँ सुरक्षात्मक रूप से बंद प्रतीत होती थीं, अपने मलमल के पर्दों के भव्य मेहराबों के बीच, गिल्बर्ट की चमकती आँखों के अलावा दुनिया की किसी भी अन्य खिड़की से कहीं कम समानता रखती थीं। अन्य दिनों में हम बुलेवार्ड पर चलते, और मैं रुए डुफोट के कोने पर खुद को स्थापित कर लेता; मैंने सुना था कि स्वान को अक्सर दंत चिकित्सक के पास जाते हुए वहाँ से गुजरते देखा जा सकता था; और मेरी कल्पना ने गिल्बर्ट के पिता को बाकी लोगों से इतना अलग कर दिया था कि वास्तविक लोगों की भीड़ के बीच उनकी उपस्थिति ने उनमें एक ऐसा चमत्कारी तत्व जोड़ दिया था कि मेडेलीन पहुँचने से पहले ही मैं इस विचार से भावुक होकर कांपने लगता था कि मैं एक ऐसी गली की ओर बढ़ रहा हूँ जहाँ से वह अलौकिक आकृति किसी भी क्षण अचानक मुझ पर प्रकट हो सकती है।

लेकिन अक्सर, उन दिनों जब मुझे गिल्बर्ट से मिलने का मौका नहीं मिलता था, जैसा कि मैंने सुना था कि श्रीमती स्वान लगभग हर दिन एले

डेस अकेशियास के किनारे, बड़ी झील के चारों ओर और एले डे ला रीन मार्गुराइट में टहलती थीं, मैं फ्रांस्वा को बोइस डे बोलोग्ने की दिशा में ले जाता था। यह मेरे लिए उन चिड़ियाघरों में से एक की तरह था जिसमें विभिन्न प्रकार के वनस्पतियों और परिदृश्य में विरोधाभासी प्रभाव एक साथ एकत्रित होते हैं; जहां एक पहाड़ी से एक गुफा, एक घास का मैदान, चट्टानें, एक धारा, एक खाई, दूसरी पहाड़ी, एक दलदल तक पहुंचा जाता है, लेकिन यह जानता है कि वे वहां केवल दरियाई घोड़े, ज़ेबरा, मगरमच्छ, खरगोश, भालू और बगुले को एक प्राकृतिक या सुरम्य वातावरण में आनंद लेने में सक्षम बनाने के लिए हैं; यह बोइस, समान रूप से जटिल, अनेक छोटे-छोटे संसारों को एकजुट करता है, जो अलग-अलग और पृथक हैं—एक मंच तैयार किया गया है जिसमें लाल वृक्ष, अमेरिकी ओक, वर्जीनिया के एक प्रायोगिक वन की तरह, झील के किनारे देवदार के जंगल के बगल में, या एक वन उपवन के बगल में, जहाँ से अचानक, अपने कोमल फर के आवरण में, एक मूक जानवर की बड़ी, आकर्षक आँखों के साथ, एक तेजी से चलने वाली स्त्री प्रकट होती थी—यह स्त्री का उद्यान था; और जैसे एनेइड में मर्टल-गली, जो केवल एक ही प्रकार के वृक्षों से उनके आनंद के लिए लगाई गई थी, एले डेस अकेशिया उस समय की प्रसिद्ध सुंदरियों से भरी रहती थी। जैसे, दूर से, उस उभरी हुई चट्टान का दृश्य जहाँ से वह तालाब में गोता लगाती है, उन बच्चों को खुशी से रोमांचित कर देता है जो जानते हैं कि वे सील को देखने जा रहे हैं, अकेशिया-गली तक पहुँचने से बहुत पहले, उनकी बिखरी हुई सुगंध मुझे यह एहसास कराती थी कि मैं एक वनस्पति व्यक्तित्व की अतुलनीय उपस्थिति के निकट पहुँच रहा हूँ, जो मजबूत और कोमल है; फिर, जैसे ही मैं पास पहुँचा, उनकी सबसे ऊपरी शाखाओं का नज़ारा, उनकी हल्की-हल्की लहराती पत्तियाँ, उनकी सहज सुंदरता, उनका चंचल आकार,

उनका नाज़ुक आवरण, जिस पर सैकड़ों फूल बिछे थे, मानो कीमती कीड़ों की पंखयुक्त और धड़कती हुई कॉलोनियाँ हों; और अंत में उनका नाम ही, स्त्रीत्व से भरपूर, आलसी और मोहक, मेरे दिल की धड़कन बढ़ा दी, लेकिन एक सामाजिक लालसा के साथ, उन वाल्ट्ज़ की तरह जो हमें केवल सुंदर नर्तकियों के नामों की याद दिलाते हैं, जिन्हें बॉलरूम में प्रवेश करते समय ज़ोर से पुकारा जाता है। मुझे बताया गया था कि मुझे गली में कुछ फैशनेबल महिलाएँ मिलेंगी, जिनके पति न होने के बावजूद, उनका ज़िक्र अक्सर श्रीमती स्वान के साथ किया जाता था, लेकिन अक्सर उनके पेशेवर नामों से; उनके नए नाम, यदि कोई होते, तो एक प्रकार का गुप्त आवरण होते, एक पर्दा जिसे उनके बारे में बात करने वाले लोग सावधानी से हटा देते थे, ताकि वे खुद को समझा सकें। यह सोचकर कि सौंदर्य—नारीत्व की शालीनता के क्रम में—गुप्त नियमों द्वारा शासित था, जिनके ज्ञान में उन्हें दीक्षित किया गया था, और यह कि उनमें इसे साकार करने की शक्ति थी, मैंने उन्हें देखने से पहले ही, किसी आने वाले रहस्योद्घाटन की सच्चाई की तरह, उनके वस्त्रों, उनके रथों और घोड़ों, और उन हजारों विवरणों को स्वीकार कर लिया, जिन पर मैंने एक आंतरिक आत्मा की तरह विश्वास किया, जिसने उस क्षणभंगुर और परिवर्तनशील तमाशे को कलाकृति का सामंजस्य प्रदान किया। लेकिन यह श्रीमती थीं। स्वान, जिसे मैं देखना चाहता था, और मैं उसके गुजरने का इंतजार करता रहा, उतना ही भावुक होकर जैसे कि वह गिलबर्ट हो, जिसके माता-पिता, उसके परिवेश की हर चीज की तरह, उसके अपने विशेष आकर्षण से सराबोर थे, और मुझमें भी उतनी ही तीव्र भावना जगाते थे जितनी वह खुद जगाती थी, बल्कि उससे भी कहीं अधिक पीड़ादायक बेचैनी (क्योंकि उनका उससे संपर्क उसके जीवन के उस अंतरंग, उस आंतरिक हिस्से से था जो मुझसे छिपा हुआ था), और इसके

अलावा, जैसा कि हम आगे देखेंगे, मुझे बहुत जल्द पता चल गया कि उन्हें मेरा उसके साथ खेलना पसंद नहीं था, वह श्रद्धा का भाव जो हम हमेशा उन लोगों के लिए रखते हैं जो हमें चोट पहुंचाने की शक्ति रखते हैं और बिना किसी रोक-टोक के उसका प्रयोग करते हैं।

जब मैंने श्रीमती स्वान को सादे कपड़े की पोलोनाइज़ पोशाक पहने, सिर पर तीतर के पंख से सजी एक छोटी सी टोपी, सीने में वायलेट का गुच्छा लिए, एली डेस अकेशियास पर ऐसे तेज़ी से चलते देखा जैसे कि यह उनके घर लौटने का सबसे छोटा रास्ता हो, और गाड़ियों में बैठे सज्जनों की शिष्टाचारपूर्ण प्रतिक्रिया को एक त्वरित नज़र से स्वीकार करते हुए देखा, जो दूर से ही उनकी आकृति को पहचानकर उनके सम्मान में अपनी टोपी उठा रहे थे और आपस में कह रहे थे कि उनके जैसा सजग कोई और नहीं है, तो मैंने सौंदर्य और सामाजिक भव्यता के क्रम में सादगी को पहला स्थान दिया। लेकिन सादगी के बजाय मुझे दिखावे को ही पहला स्थान देना होगा, क्योंकि जब मैंने फ्रांस्वा को, जो अब और सहन नहीं कर सकती थी और शिकायत कर रही थी कि उसके पैर जवाब दे रहे हैं, मेरे साथ एक और घंटे तक टहलने के लिए मजबूर किया, तो अंततः मैंने पोर्ट डॉफिन से निकलते हुए एक शाही गरिमा, एक संप्रभु के आगमन का आभास दिया, एक ऐसा प्रभाव जो उसके बाद किसी भी वास्तविक रानी ने मुझे नहीं दिया, क्योंकि उनकी शक्ति के बारे में मेरी धारणा कम अस्पष्ट और अधिक अनुभव पर आधारित रही है—दो तेज घोड़ों की उड़ान के साथ, जो कॉन्स्टेंटिन गाइज़ के चित्रों में दिखाई देने वाले पतले और सुडौल थे, अपने डिब्बे पर एक विशाल कोचवान को ले जा रहे थे, जो कोसैक की तरह फर से ढका हुआ था, और उसके बगल में एक छोटा सा सेवक, टोबी जैसा, "दिवंगत ब्यूडेनॉर्ड का बाघ", मैंने देखा—या बल्कि मैंने महसूस किया कि एक साफ और घातक वार से उसकी रूपरेखा मेरे दिल

पर अंकित हो गई है—एक अद्वितीय विक्टोरिया, जो काफी ऊंची बनी हुई थी, और अत्यधिक आधुनिकता का संकेत दे रही थी। अपने पुराने दिनों की यादों में खोई हुई, श्रीमती स्वान, जिनके बाल अब एक भूरे लट के साथ बिल्कुल पीले पड़ गए थे, फूलों की एक पतली पट्टी से घिरे हुए थे, जिनमें आमतौर पर वायलेट होते थे, जिनसे लंबे घूंघट लटक रहे थे, उनके हाथ में एक बकाइन रंग की छतरी थी, उनके होठों पर एक अस्पष्ट मुस्कान थी जिसमें मुझे केवल उनकी गरिमा का सौम्य अनुग्रह दिखाई देता था, हालांकि यह मुख्य रूप से एक दरबारी की मोहक मुस्कान थी, जो वह उन पुरुषों को देती थीं जो उनके सामने झुकते थे। वह मुस्कान वास्तव में एक से कह रही थी: "ओह हाँ, मुझे अच्छी तरह याद है; यह अद्भुत था!" दूसरे से: "काश मैं भी ऐसा कर पाती! हम बदकिस्मत थे!", तीसरे से: "हाँ, अगर आपको पसंद है! मुझे बस एक मिनट के लिए लाइन में रहना होगा, फिर जैसे ही मौका मिलेगा मैं चली जाऊंगी।" जब अजनबी गुजरते, तो वह अपने होठों पर एक हल्की सी मुस्कान बनाए रखती, मानो किसी मित्र की प्रतीक्षा कर रही हो या उसे याद कर रही हो, जिससे वे कहते: "कितनी प्यारी महिला है!"। और कुछ खास पुरुषों के लिए ही उसके चेहरे पर एक कड़वी, बनावटी, शर्मीली, ठंडी मुस्कान होती, जिसका अर्थ होता: "हाँ, बूढ़े बकरे, मुझे पता है तुम्हारी ज़बान साँप जैसी है, तुम एक पल भी चुप नहीं रह सकते। लेकिन क्या तुम्हें लगता है कि मुझे तुम्हारी बातों की परवाह है?" कोक्वेलिन अपने कुछ मित्रों के साथ बातें करते हुए गुजरा, और हाथ हिलाकर गाड़ियों में बैठे लोगों को नाटकीय अंदाज में शुभ दिन कहा। लेकिन मैं केवल श्रीमती स्वान के बारे में सोच रही थी, और मैंने ऐसा दिखाया जैसे मैंने उन्हें अभी तक नहीं देखा है, क्योंकि मुझे पता था कि जब वह कबूतरों के शिकार के मैदान पर पहुँचेंगी, तो वह अपने कोचवान को गाड़ी रोकने के लिए कहेंगी, ताकि वह

पैदल वापस आ सकें। और जिन दिनों मुझे उनके पास से गुजरने का साहस होता, मैं फ्रांस्वा को उस दिशा में खींच ले जाती; जब तक कि वह क्षण नहीं आ जाता जब मैं श्रीमती स्वान को देख लेती। स्वान, अपनी बैंगनी रंग की लंबी स्कर्ट को पीछे लहराते हुए, आम धारणा के अनुसार रानियों की तरह सजी-धजी, ऐसी भव्य पोशाक में जो शायद ही कोई और महिला पहनती हो, बीच-बीच में अपनी छतरी के हैंडल को निहारती हुई, राहगीरों पर न के बराबर ध्यान देती हुई, मानो उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात, वहाँ होने का उसका एकमात्र उद्देश्य, व्यायाम करना हो, बिना यह सोचे कि उसे देखा जा रहा है और हर किसी का ध्यान उसकी ओर है। हालाँकि, कभी-कभी, जब वह अपने कुत्ते को बुलाने के लिए पीछे मुड़ती, तो लगभग अनजाने में ही चारों ओर एक नज़र डाल लेती।

जो लोग उसे जानते भी नहीं थे, उन्हें भी उसमें कुछ असाधारण, कुछ हटकर बात नज़र आती थी—या शायद किसी ऐसी टेलीपैथिक संकेत से, जिससे अनजान श्रोता भी बरमा के 'उत्कृष्ट' प्रदर्शन पर तालियों की गड़गड़ाहट से झूम उठते थे—कि वह कोई जानी-मानी हस्ती होगी। वे एक-दूसरे से पूछते, "वह कौन है?", या कभी-कभी राह चलते किसी अजनबी से पूछताछ करते, या उसके पहनावे पर ध्यान देते ताकि बाद में अपने से ज़्यादा जानकार दोस्त को उसकी पहचान बता सकें, जो तुरंत उन्हें बता देता। एक और जोड़ा, चलते-चलते आधा रुककर, आपस में पूछता:

"आप जानते हैं कि वह कौन है? श्रीमती स्वान! इससे आपको कुछ समझ नहीं आया? तो फिर ओडेट डी क्रेसी?"

"ओडेट डी क्रेसी! अरे, मुझे भी यही लगा था। वो बड़ी-बड़ी उदास आँखें... लेकिन मैं कहती हूँ, पता है, वो अब उतनी जवान नहीं रही होगी जितनी कभी थी, है ना? मुझे याद है, जिस दिन मैकमोहन का निधन हुआ था,

उसी दिन वो मेरे साथ थी।"
"अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं उसे इसकी याद नहीं दिलाता। वह अब श्रीमती स्वान हैं, जॉकी क्लब के एक सज्जन की पत्नी, जो वेल्स के राजकुमार की मित्र हैं। इसके अलावा, वह अब भी अद्भुत हैं।"
"अरे, आपको तो उस समय उसे जानना चाहिए था; हे भगवान, वह कितनी प्यारी थी! वह एक बहुत ही अजीब से छोटे से घर में रहती थी जिसमें बहुत सारा चीनी सामान था। मुझे याद है, बाहर अखबार बेचने वाले लड़के लगातार चिल्लाते रहते थे, जिससे हमें बहुत परेशानी होती थी; आखिर में उसने मुझे उठकर जाने के लिए मजबूर कर दिया।"
इन यादों को सुने बिना भी, मैं उसके चारों ओर प्रसिद्धि की अस्पष्ट फुसफुसाहट महसूस कर सकता था। मेरा दिल बेचैनी से उछल पड़ा जब मैंने सोचा कि इन सभी लोगों को, जिनमें मुझे एक खास मुलेटो बैंकर न पाकर निराशा हुई, जो (या जैसा मुझे लगा) मुझसे घृणा करता था, उस अनजान युवक को देखने में अभी कुछ ही सेकंड बाकी हैं, जिस पर उन्होंने अब तक ज़रा भी ध्यान नहीं दिया था, जो उस महिला को सलाम कर रहा था (सच था कि मैं उसे जानता नहीं था, लेकिन मुझे लगा कि मेरे पास पर्याप्त अधिकार है क्योंकि मेरे माता-पिता उसके पति को जानते थे और मैं उसकी बेटी का बचपन का साथी था)। इस महिला की सुंदरता, दुराचार और शालीनता की ख्याति सर्वत्र फैली हुई थी। लेकिन अब मैं श्रीमती स्वान के करीब था; मैंने इतनी भव्यता और लंबे इशारे से अपनी टोपी उतारी कि वह अपनी मुस्कान नहीं रोक पाईं। लोग हंस पड़े। जहां तक उसकी बात है, उसने मुझे कभी गिल्बर्ट के साथ नहीं देखा था, वह मेरा नाम भी नहीं जानती थी, लेकिन मैं उसके लिए—जैसे जंगल के रखवालों में से एक, जैसे नाविक, या झील पर बैठी बत्तखें, जिन्हें वह रोटी के टुकड़े फेंकती थी—एक मामूली किरदार था, परिचित, गुमनाम, थिएटर में काम

करने वाले किसी कलाकार की तरह, उसके रोजमर्रा के सैर-सपाटे का हिस्सा।

कुछ दिनों जब मैं उसे ऐली डेस अकेशियास में देखने से चूक जाता था, तो सौभाग्य से मुझे वह ऐली डे ला रीन मार्गुराइट में मिल जाती थी, जहाँ वे महिलाएं जाती थीं जो अकेले रहना चाहती थीं, या अकेले रहने का दिखावा करना चाहती थीं; वह ज्यादा देर तक अकेली नहीं रहती थी, जल्द ही कोई न कोई आदमी, अक्सर भूरे रंग की 'टाइल' टोपी पहने हुए, जिसे मैं नहीं जानता था, उससे मिल लेता था और कुछ देर तक उससे बातें करता रहता था, जबकि उनकी दो गाड़ियाँ धीरे-धीरे पीछे आती रहती थीं।

* * *

बोइस डे बोलोग्ने की जटिलता का वह अहसास, जिसने इसे एक कृत्रिम स्थान बना दिया था और प्राणी विज्ञान या पौराणिक अर्थों में, एक बगीचा, इस वर्ष फिर से मेरे मन में आया, जब मैं नवंबर की शुरुआत में एक सुबह ट्रियानोन जाते समय इसे पार कर रहा था। पेरिस में, अगर हम घर के अंदर ही रहें, तो शरद ऋतु के बदलते दृश्य को देखने से वंचित रहते हुए भी, जो हमारी सहायता के बिना ही इतनी तेजी से समाप्त हो रहा है, हमें गिरे हुए पत्तों के लिए एक ऐसा अफसोस होता है जो बेचैनी में बदल जाता है और शायद हमें रातों की नींद भी उड़ा देता है। मेरे बंद कमरे में वे एक महीने से मंडरा रहे थे, उन्हें देखने की मेरी इच्छा ने उन्हें वहाँ बुला लिया था, मेरे विचारों और उस वस्तु के बीच फिसलते हुए, जिस पर मैं उन्हें केंद्रित करने की कोशिश कर रहा था, मेरे सामने उन भूरे धब्बों की तरह घूम रहे थे जो कभी-कभी, हम जो कुछ भी देख रहे होते हैं, हमारी आँखों के सामने नाचते या तैरते हुए प्रतीत होते हैं। और उस सुबह, पिछले दिनों की तरह बारिश की आवाज़ न सुनकर, अपने खींचे हुए पर्दों के

कोनों पर सुहावने मौसम की मुस्कान देखकर, मानो बंद होठों के कोनों से उनकी खुशी का राज़ निकल आता हो, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं सचमुच उन पीले पत्तों को देख पा रही हूँ, जिनमें से रोशनी छनकर आ रही थी, उनकी परम सुंदरता में; और अपने आप को पेड़ों को देखने जाने से रोक न पाने की उसी तरह, जैसे बचपन में, जब चिमनी में हवा ज़ोर से चलती थी, मैं समुद्र देखने जाने की लालसा को रोक नहीं पाती थी, मैं उठी और बोइस डी बोलोग्ने से गुज़रते हुए ट्रियानोन जाने के लिए घर से निकल पड़ी। यह वह समय और मौसम था जब बोइस शायद सबसे अधिक विविधतापूर्ण प्रतीत होता है, न केवल इसलिए कि तब यह सबसे अधिक विभाजित होता है, बल्कि इसलिए कि यह एक अलग तरीके से विभाजित होता है। यहां तक कि वनविहीन भागों में भी, जहां क्षितिज विशाल है, दूर स्थित घने और अंधेरे वृक्षों के समूह की पृष्ठभूमि में, जो अब पत्तों से रहित हैं या अभी भी अपने ग्रीष्मकालीन पत्तों को अपरिवर्तित रखे हुए हैं, नारंगी-लाल शाहबलूत के पेड़ों की दोहरी पंक्ति, मानो किसी अधूरी तस्वीर में, एकमात्र ऐसी चीज प्रतीत होती है जिसे अब तक एक ऐसे कलाकार द्वारा चित्रित किया गया है जिसने अभी तक बाकी हिस्सों पर कोई रंग नहीं लगाया है, और जो पूर्ण दिन के उजाले में अपना एकांत स्थान उन मानव आकृतियों के आकस्मिक अभ्यास के लिए प्रस्तुत कर रही है जिन्हें बाद में चित्र में जोड़ा जाएगा।

कुछ दूर, एक ऐसी जगह पर जहाँ पेड़ अभी भी हरे-भरे थे, एक अकेला छोटा, अविकसित, कटा-फटा, लेकिन अपनी दृढ़ता में अडिग पेड़ हवा में लाल रंग की भद्दी लटें लहरा रहा था। कहीं और, मई के इस महीने में पत्तियों का पहला जागरण देखा जा सकता था, और एक एम्पेलोप्सिस का पौधा, एक मुस्कुराता हुआ चमत्कार, सर्दियों में खिलने वाले लाल नागफनी की तरह, उसी सुबह पूरी तरह खिल उठा था। और बोइस में एक

नर्सरी गार्डन या पार्क का अस्थायी, अधूरा, कृत्रिम रूप था, जिसमें किसी वानस्पतिक उद्देश्य से या किसी उत्सव की तैयारी में, आम पेड़ों के बीच, जिन्हें अभी तक उखाड़ा और कहीं और नहीं लगाया गया था, कुछ दुर्लभ नमूने लगाए गए थे, जिनकी पत्तियाँ अद्भुत थीं, जो अपने चारों ओर एक खाली जगह को साफ करती हुई, जगह बनाती हुई, हवा देती हुई, प्रकाश फैलाती हुई प्रतीत हो रही थीं। इस प्रकार यह वर्ष का वह समय था जब बोइस डी बोलोग्ने अन्य किसी भी समय की तुलना में अधिक विशिष्ट विशेषताओं को प्रदर्शित करता है, एक समग्र रूप में अधिक विशिष्ट तत्वों को एकत्रित करता है। दिन का समय भी ऐसा ही था। जिन स्थानों पर वृक्षों पर अभी भी पत्तियाँ थीं, ऐसा प्रतीत होता था कि सूर्य के प्रकाश के स्पर्श से उनके स्वरूप में परिवर्तन आ गया हो। सुबह के इस समय, सूर्य का प्रकाश लगभग क्षैतिज अवस्था में था, जैसा कि कुछ घंटों बाद फिर से होगा, जब गोधूलि बेला शुरू होगी और सूर्य एक दीपक की तरह प्रज्वलित होकर पत्तियों पर दूर तक एक गर्म और कृत्रिम चमक बिखेरेगा, और वृक्ष की कुछ सबसे ऊपरी शाखाओं को प्रज्वलित कर देगा, जबकि वृक्ष स्वयं अपरिवर्तित रहेगा, एक गंभीर, अज्वलनशील मोमबत्तीदान की तरह, अपनी प्रज्वलित चोटी के नीचे। एक स्थान पर प्रकाश ईंट की दीवार की तरह ठोस हो गया, और नीले रंग से सजे पीले फ़ारसी पत्थर की तरह, आकाश पर शाहबलूत के पत्तों को खुरदुरा बना दिया; दूसरे स्थान पर, इसने उन्हें आकाश से अलग कर दिया, जिसकी ओर वे अपनी घुमावदार, सुनहरी उंगलियाँ फैलाए हुए थे। जंगली लताओं से ढके एक पेड़ के तने के आधे हिस्से तक, प्रकाश ने जड़ जमाकर एक विशाल पुष्पगुच्छ को जन्म दिया था, जो इतना चकाचौंध भरा था कि उसे स्पष्ट रूप से पहचानना मुश्किल था। ऐसा लग रहा था मानो लाल फूल खिले हों, शायद कार्नेशन की किसी नई किस्म के। गर्मियों में घने हरे रंग के कारण

आसानी से भ्रमित हो जाने वाले बोइस के विभिन्न हिस्से अब स्पष्ट रूप से अलग-अलग दिखाई दे रहे थे। चमक का एक धब्बा लगभग हर हिस्से के पास आने का संकेत दे रहा था, या फिर उसके सामने पत्तों का एक शानदार समूह किसी लौ की तरह चमक रहा था। मैं रंगीन नक्शे की तरह आर्मेनोनविले, प्री कैटलन, मैड्रिड, रेस कोर्स और झील के किनारे को पहचान सकता था। कहीं-कहीं कोई अर्थहीन निर्माण, कोई नकली गुफा, कोई चक्की दिखाई देती थी, जिसके लिए पेड़ों ने पीछे हटकर जगह बनाई थी, या जो घास के मैदान के मुलायम हरे चबूतरे पर बनी हुई थी। मैं महसूस कर सकता था कि बोइस वास्तव में कोई जंगल नहीं था, बल्कि इसका अस्तित्व इसके पेड़ों के जीवन से बिल्कुल अलग उद्देश्य के लिए था। मेरी उमंग की अनुभूति केवल शरद ऋतु के रंगों की प्रशंसा से ही नहीं, बल्कि एक शारीरिक इच्छा से भी उपजी थी। एक ऐसी खुशी का भरपूर स्रोत जिसे हृदय पहले तो बिना कारण जाने, बिना यह समझे कि यह किसी बाहरी प्रेरणा से उत्पन्न नहीं होती, महसूस करता है! इस प्रकार मैं पेड़ों को एक अतृप्त लालसा से देखता रहा जो उनसे परे जाकर, अनजाने में, उन सुंदर टहलती महिलाओं की उत्कृष्ट कृति की ओर निर्देशित हो रही थी जिन्हें पेड़ हर दिन कुछ घंटों के लिए अपने घेरे में लेते थे। मैं अकासिया गली की ओर चल पड़ा। मैं वन उपवनों से गुजरा जिनमें सुबह का प्रकाश, उन्हें नए भागों में विभाजित करते हुए, पेड़ों को काट-छाँट कर अलग-अलग तनों को विवाह बंधन में जोड़ रहा था, उनकी शाखाओं से गुलदस्ते बना रहा था। यह कुशलता से पेड़ों के एक जोड़े को अपनी ओर खींच लेता था; प्रकाश और छाया की तीखी छेनी का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए, यह प्रत्येक वृक्ष के तने और शाखाओं का आधा भाग काट देता था, और शेष बचे दोनों हिस्सों को आपस में बुनकर या तो आसपास के प्रकाश से परिभाषित छाया का एक स्तंभ बना

देता था, या एक चमकदार प्रेत जैसा आकार बना देता था जिसकी कृत्रिम, कांपती हुई आकृति स्याही जैसी छायाओं के जाल में समाई होती थी। जब सूर्य की एक किरण सबसे ऊँची शाखाओं को सुनहरी चमकाती थी, तो वे भीगी हुई और अभी भी चमकती नमी से टपकती हुई प्रतीत होती थीं, मानो उस तरल, पन्ना-हरे वातावरण से अकेली निकली हों जिसमें पूरा उपवन डूबा हुआ था, मानो समुद्र के नीचे हो। क्योंकि वृक्ष अपनी स्वयं की जीवन शक्ति से जीवित रहते थे, और जब उन पर कोई पत्तियाँ नहीं रह जाती थीं, तब भी वह जीवन शक्ति उनके तनों पर बिछी हरी मखमली परत से, या चिनार के वृक्षों की सबसे ऊपरी शाखाओं तक बिखरे हुए मिस्टलेटो के सफेद गोलों से और भी अधिक चमकती थी, जो माइकल एंजेलो की 'सृष्टि' में सूर्य और चंद्रमा की तरह गोल थे। लेकिन, इतने वर्षों से एक प्रकार की प्रत्यारोपण प्रक्रिया द्वारा, स्त्री मानवता के जीवन को साझा करने के लिए विवश होकर, उन्होंने मेरे मन में अप्सरा की छवि को जगा दिया, वह सुंदर सांसारिक स्त्री, जो तेज़ी से चलती है, चमकीले रंगों से सजी है, जिसे वे अपनी शाखाओं से आश्रय देती हैं जब वह उनके नीचे से गुजरती है, और उसे, जैसा कि वे स्वयं स्वीकार करती हैं, ऋतु की शक्ति को स्वीकार करने के लिए बाध्य करती हैं; उन्होंने मुझे उन सुखद दिनों की याद दिला दी जब मैं युवा थी और आस्थावान थी, जब मैं उत्सुकता से उन स्थानों पर जाती थी जहाँ स्त्री सौंदर्य की उत्कृष्ट कृतियाँ कुछ क्षणों के लिए अचेतन, अनुकूल शाखाओं के नीचे साकार होती थीं। लेकिन वह सुंदरता जिसके लिए बोइस डी बोलोग्ने के देवदार और बबूल के वृक्षों ने मुझे तरसा दिया था, जो इस मामले में ट्रियानोन के शाहबलूत और बकाइन के वृक्षों की तुलना में कहीं अधिक बेचैन करने वाली थी, जिसे मैं देखने जा रही थी, वह मेरे बाहर किसी ऐतिहासिक काल के अवशेषों में, कलाकृतियों में, प्रेम के एक छोटे से मंदिर में,

जिसके द्वार पर सोने से जड़े शरद ऋतु के पत्तों का ढेर लगा था, कहीं स्थिर नहीं थी। मैं झील के किनारे पहुँच गई; मैं कबूतरों के शिकार के मैदान तक चलता रहा। उस पुराने समय में, मेरे भीतर पूर्णता का जो विचार था, वह मैंने एक भव्य घोड़े की ऊँचाई पर, उन घोड़ों की पतली काया पर, जो पंखों पर ततैया की तरह फुर्तीले और चंचल थे, और जिनकी आँखें डायोमेड के क्रूर घोड़ों की तरह लाल थीं, बसा दिया था। अब, उस चीज़ को फिर से देखने की तीव्र इच्छा से ग्रस्त होकर, जिसे मैंने कभी प्यार किया था, मैं उसे अपनी आँखों के सामने फिर से देखना चाहता था, ठीक उसी तरह जैसे कई साल पहले मुझे उन्हीं रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित किया था। उस पल, जब श्रीमती स्वान का विशालकाय कोचवान, जिसकी देखरेख उसकी मुट्ठी से भी छोटा एक छोटा सा नौकर कर रहा था, जो चित्र में संत जॉर्ज की तरह बचकाना था, उन उड़ते हुए, लोहे की नोक वाले पंखों की तेज़ी को रोकने की कोशिश कर रहा था, जिनसे वे ज़मीन पर गरजते हुए दौड़ रहे थे। अफसोस! अब वहाँ मूंछों वाले मैकेनिक द्वारा चलाई जा रही मोटर-कारों के अलावा कुछ नहीं था, जिनके बगल में एक लंबा-चौड़ा नौकर खड़ा था। मैं अपनी आँखों के सामने उन छोटी-छोटी टोपियों को देखना चाहता था, ताकि जान सकूँ कि क्या वे वाकई उतनी ही आकर्षक थीं जितनी स्मृति में दिखाई देती थीं, इतनी नीची कि मानो महिलाओं के माथे पर मालाओं जैसी लगती हों। अब सभी टोपियाँ विशाल थीं; फलों, फूलों और तरह-तरह के पक्षियों से सजी हुई। श्रीमती स्वान जिस सुंदर गाउन में रानी की तरह चलती थीं, उनकी जगह अब ग्रीको-सैक्सन ट्यूनिक दिखाई देने लगे थे, जिनमें तनाग्रा की तहें थीं, या कभी-कभी डायरेक्टोयर शैली में, 'लिबर्टी शिफॉन' जिन पर वॉलपेपर की तरह फूल बिखरे हुए थे। उन सज्जनों के सिर पर, जो श्रीमती स्वान के साथ एले डे ला रीन मार्गरेट में टहलने के योग्य हो सकते

थे, मुझे न तो पुरानी धूसर 'टाइल' टोपियाँ मिलीं, न ही किसी और तरह की। वे नंगे सिर घूम रहे थे। और इस दृश्य के इन सभी नए तत्वों को देखकर, मेरा वह विश्वास अब नहीं रहा जो इन्हें संगति, एकता और जीवन प्रदान करता। वे मेरे सामने एक बिखरे क्रम में, बेतरतीब ढंग से, बिना किसी वास्तविकता के गुज़र गईं, उनमें ऐसी कोई सुंदरता नहीं थी जिसे मेरी आँखें पुराने दिनों की तरह उनसे निकालकर एक चित्र में पिरो सकें। वे महज़ औरतें थीं, जिनकी शालीनता में मुझे कोई विश्वास नहीं था, और जिनके वस्त्र मुझे महत्वहीन लगते थे। लेकिन जब कोई विश्वास लुप्त हो जाता है, तो वह जीवित रहता है—और अधिक तीव्रता से, ताकि नए अनुभवों को वास्तविकता प्रदान करने की उस शक्ति की कमी को छुपा सके, जो अब हमसे खो चुकी है—उन पुरानी चीज़ों के प्रति एक मूर्तिपूजा जैसा लगाव, जिन्हें कभी हमारे विश्वास ने जीवंत किया था, मानो दैवीय चिंगारी उस विश्वास में निवास करती हो, न कि हममें, और मानो हमारे वर्तमान अविश्वास का एक आकस्मिक कारण हो—देवताओं की मृत्यु।

"ओह, भयानक!" मैंने मन ही मन कहा: "क्या सच में कोई सोचता है कि ये मोटरगाड़ियाँ पुरानी जोड़ीदार गाड़ियों जितनी शानदार हैं? मैं तो यही सोचती हूँ। मैं अब बूढ़ी हो चुकी हूँ—लेकिन मैं ऐसी दुनिया के लिए नहीं बनी थी जहाँ औरतें खुद को ऐसे कपड़ों में जकड़ लें जो कपड़े के भी नहीं बने हों। इन पेड़ों के बीच चलने का क्या फायदा, अगर अब उस सभा का कोई निशान नहीं बचा जो कभी लाल होते पत्तों की कोमल छटा के नीचे होती थी, अगर अश्लीलता और मूर्खता ने उस सुंदरता की जगह ले ली है जिसे कभी इनकी शाखाएँ सजाती थीं? ओह, कितना भयानक! मेरा दिलासा उन औरतों के बारे में सोचने में है जिन्हें मैं जानती थी, अब जब सुंदरता का कोई मानक ही नहीं बचा है। लेकिन जो लोग इन भयानक जीवों को लड़खड़ाते हुए देखते हैं, जिनके सिर पर चिड़ियों या क्यारियों से

लाई गई चीज़ों से लदी टोपियाँ हैं—वे कैसे उस आकर्षण की कल्पना कर सकते हैं जो श्रीमती स्वान को देखने में था, जब वे एक चुस्त-दुरुस्त बकाइन रंग की टोपी पहने होती थीं, या एक छोटी सी टोपी पहने होती थीं जिसमें से एक अकेली चिड़िया सिर के ऊपर अकड़कर खड़ी होती थी। क्या मैं उन्हें कभी उस भावना को समझा पाती जो मैं सर्दियों की सुबहों में महसूस करती थी, जब मैं श्रीमती स्वान से पैदल मिलती थी, ऊदबिलाव की खाल के कोट में, ऊनी टोपी में जिसमें से दो ब्लेड जैसे तीतर के पंख निकले होते थे, लेकिन साथ ही उनके अपने घर की जानबूझकर बनाई गई, कृत्रिम गर्माहट में लिपटी हुई, जिसका संकेत उनके सीने से चिपके वायलेट के गुच्छे से मिलता था, जिनके चमकीले नीले फूल, धूसर आकाश, ठंडी हवा और नंगी डालियों के बीच, मौसम और जलवायु का मात्र उपयोग करने और वास्तव में एक मानवीय वातावरण में, इस महिला के वातावरण में रहने का वही मनमोहक प्रभाव डालते थे, जैसा कि उनके ड्राइंग रूम के फूलदानों और गमलों में, धधकती आग के पास, रेशम से ढके सोफे के सामने, बंद खिड़कियों से गिरती बर्फ को देखते फूलों में होता था? लेकिन केवल पोशाकों का उन बीते वर्षों जैसा ही होना मेरे लिए पर्याप्त नहीं होता। एक समग्र छाप के विभिन्न भागों को जोड़ने वाली एकजुटता के कारण, वे भाग जिन्हें हमारी स्मृति एक संतुलित रूप में संजोए रखती है, जिसमें से हम किसी अंश को घटा या कम नहीं कर सकते, मैं उन महिलाओं में से किसी एक के साथ चाय की चुस्की लेते हुए, एक छोटे से घर में, जिसकी दीवारें गहरे रंग से रंगी हों (जैसे श्रीमती स्वान का घर उस वर्ष के बाद भी था जब इस कहानी का पहला भाग समाप्त होता है), शेष दिन बिताना चाहता था। नवंबर की शाम के धुंधलके में, उन दीवारों पर नारंगी लौ, लाल ज्वाला, गुलाबी और सफेद गुलदाउदी की टिमटिमाहट चमक रही होती, ठीक वैसे ही क्षणों में जिनमें

(जैसा कि हम आगे देखेंगे) मैं उन सुखों को नहीं पा सका था जिनकी मुझे लालसा थी। लेकिन अब, भले ही उनसे कुछ हासिल नहीं हुआ, वे क्षण मुझे अपने आप में ही काफी आकर्षक लगे। मैंने उन्हें फिर से वैसे ही पाने की कोशिश की जैसे मुझे याद थे। अफसोस! अब वहाँ लुई सोलहवीं शैली में सजे फ्लैटों के अलावा कुछ नहीं था, सभी सफेद रंग से रंगे हुए, नीले एनामेल में जड़ी हुई हॉर्टेंसिया के फूलों से सजे हुए। इसके अलावा, लोग अब बहुत बाद तक पेरिस नहीं लौटे। अगर मैंने श्रीमती स्वान से उस स्मृति के अंशों को मेरे लिए फिर से संजोने के लिए कहा होता, जिसे मैं एक दूर के युग से संबंधित महसूस करती थी, एक ऐसे समय से, जिसकी ओर फिर से बढ़ना मेरे लिए वर्जित था, उस लालसा के अंशों को, जो स्वयं उस आनंद की तरह दुर्गम हो गई थी जिसका उसने कभी व्यर्थ पीछा किया था, तो वह मुझे एक ग्रामीण घर से पत्र लिखतीं कि वह फरवरी से पहले शहर में नहीं होंगी। और मैं यह भी चाहती कि वे वही महिलाएं हों, जिनके पहनावे में मेरी रुचि थी क्योंकि, उस समय जब मुझमें अभी भी आस्था थी, मेरी कल्पना ने उन्हें व्यक्तिगत रूप दिया था और उनमें से प्रत्येक को एक किंवदंती प्रदान की थी। अफसोस! बबूल की गली में—मर्टल की संकरी गली में—मैंने उनमें से कुछ को फिर से देखा, बूढ़ी हो चुकी, अब अपने अतीत के भयानक प्रेतों से अधिक कुछ नहीं, वर्जिलियन उपवनों में इधर-उधर भटकती हुई, न जाने किस चीज की हताश खोज में। वे बहुत पहले भाग चुके थे, और मैं अब भी व्यर्थ ही सुनसान रास्तों पर सवाल करता खड़ा था। सूरज का चेहरा छिपा हुआ था। प्रकृति ने एक बार फिर उस जंगल पर अपना राज शुरू कर दिया था, जहाँ से यह विचार पूरी तरह गायब हो चुका था कि वह स्त्री का स्वर्ग है; उस दिखावटी पवनचक्की के ऊपर असली आकाश धूसर था; हवा ने ग्रैंड लेक की सतह को छोटी-छोटी लहरों में झुर्रीदार बना दिया था, मानो वह कोई असली

झील हो; बड़े पक्षी जंगल के ऊपर से तेज़ी से उड़ रहे थे, मानो किसी असली जंगल के ऊपर से, और तीखी आवाज़ों के साथ एक के बाद एक उन विशाल ओक के पेड़ों पर बैठ रहे थे, जो अपने ड्रुइडिक मुकुट के नीचे और डोडोनाइक वैभव के साथ, इस पराये जंगल के निर्जन खालीपन की घोषणा करते प्रतीत हो रहे थे, और मुझे यह समझने में मदद कर रहे थे कि किसी की स्मृति में संग्रहित चित्रों को वास्तविकता में खोजना कितना विरोधाभासी है, जो अनिवार्य रूप से स्मृति से प्राप्त आकर्षण और इंद्रियों द्वारा अनुभव न किए जाने के कारण खो देते हैं। जिस वास्तविकता को मैं जानता था, वह अब अस्तित्व में नहीं थी। इतना ही काफी था कि श्रीमती... स्वान उसी पोशाक में और उसी क्षण प्रकट नहीं हुए थे कि पूरा रास्ता बदल जाए। जिन स्थानों को हम जानते हैं, वे अब केवल उस छोटे से स्थानिक संसार का हिस्सा हैं जिस पर हम उन्हें अपनी सुविधा के लिए अंकित करते हैं। उनमें से कोई भी उस समय हमारे जीवन को रचने वाली आस-पास की छापों के बीच समाहित एक पतली सी परत से अधिक कुछ नहीं था; किसी विशेष रूप की स्मृति केवल एक विशेष क्षण के लिए खेद है; और घर, सड़कें, रास्ते, अफसोस, वर्षों की तरह क्षणभंगुर हैं।

s jeet